3

S-1

112400

❀ ओ३म् ❀





पाक्षिक

राजधर्म

युवा नेतृत्व का दायित्व

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जिनकी २३ जनवरी को पुण्य जन्म तिथि है

ईश्वर को हम क्यों मानें ?

हिन्दुस्तानी बच्चे को गदहे के बोझ से मुक्ति दिलाअ

कांग्रेसी कृषि और औद्योगिक नीतियों के दो पाटों के बीच पिसती भारतीय जनता

बडे पूंजीपतियों को सरकारी खजाने से अरबों रुपयों का उपहार

हरयाणा सरकार का बजट

प्रधान सम्पादक
स्वामी अग्निवेश

★

सह सम्पादक
गिरजेश्वर

★

जनवरी द्वितीय
वर्ष ६ : अंक २
वार्षिक शुल्क १५ रु०
एक प्रति ७० पैसे

राजधर्म प्रकाशन के लिए राजधर्म प्रेस, झज्जर रोड, रोहतक से स्वामी अग्निवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। दूरभाष : 882

सम्पादकीय

112500

ओ३म्

युवा नेतृत्व का दायित्व

स्वामी इन्द्रवेश जी के विजय ने युवा जगत को तो उत्साहित किया ही, हजारों लाखों वृद्धजन भी आह्लादित हो उठे। सबकी आकांक्षायें एक ही हैं कि अब आर्य समाज अपने विगत की गौरव गरिमा से मण्डित होकर पुनः एक बार राष्ट्र का नेतृत्व करेगा। स्वामी इन्द्रवेश जी द्वारा मनोनीत कुल ६१ व्यक्तियों में से ३५ व्यक्ति की आयु ४० वर्ष से कम है और ६१ में से ७५ व्यक्ति स्नातकोत्तर (ग्रेजुएट अथवा अधिक) योग्यता के हैं। पहली बार इतनी अधिक संख्या में पढ़े लिखे युवकों तथा प्रगतिशील विचारधारा के समर्थकों का नेतृत्व उभरकर सामने आया है। इसलिये स्वाभाविक ही है कि समस्त आर्य जगत् इस नेतृत्व से कुछ ठोस कार्यक्रम और दिशापरिवर्तन की अपेक्षा रखता है।

१७ वर्षों से जमी आ रही सड़ान्ध और शिथिलता को धोकर नवनिर्माण का युग आरंभ करना हम सबके लिये एक चुनौती भरा काम है जिसमें आज और अभी से हमें जुट जाना चाहिये। १९७४ का यह एक वर्ष ऐसे भी बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि अगले वर्ष ही आर्य समाज की स्थापना शताब्दी मनाई जायगी और आर्य समाज की उपलब्धियों के सौ सालाना इतिहास में १९७४-७५ की गतिविधियाँ विशेष महत्वपूर्ण होंगी।

आर्य समाज के आदर्शों एवं क्रांतिकारी कार्यक्रमों का मूल्यांकन आर्येतर जगत हमारे अतीत की अपेक्षा हमारे वर्तमान के व्यावहारिक उपलब्धियों से अधिक करेगा।

ऐसे तो प्रतिनिधि सभायें देश में और भी अन्य प्रान्तों में हैं तथा मौरीशस, दक्षिण अफ्रीका आदि विदेशों में भी हैं परन्तु यह सर्व विदित है कि समस्त आर्य जगत में सम्पत्ति, संस्था और आन्दोलनों में नेतृत्व की दृष्टि से इस प्रतिनिधि सभा का ही महत्व सर्वाधिक है। महर्षि दयानन्द का मिशन सार्वभौम था और अपने जीवन काल में उन्होंने भारत के पूर्व से लेकर पश्चिम प्रायः सभी प्रान्तों का भ्रमण किया था पर जो स्वागत उनके मिशन का इस क्षेत्र ने किया उतना अन्यत्र कहीं नहीं हुआ। इसी क्षेत्र को आर्य समाज के दिग्गज संन्यासी एवं संगठनकर्त्ता तेजस्वी नेताओं की कर्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानन्द, पं० लेखराम, महात्मा हंसराज, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी स्वतन्त्रतानन्द, स्वामी आत्मानन्द लाला लाजपतराय, पं. रामचन्द्र देहलवी, महात्मा नारायण स्वामी, अमर शहीद सरदार भगतसिंह, स्वामी समर्पणानन्द (पं० बुद्धदेव विद्यालंकार), भक्त फूलसिंह, दादा बस्तीराम, चौधरी छोटूराम, महाशय कृष्ण, पं. भगवद्दत्त रिसर्च स्कालर प्रभृति नेताओं एवं विद्वानों की यही कर्मस्थली रही है इन वीर हुतात्माओं के पावन रक्त से सिंचित आर्य समाज की क्रांति प्रसविनी धरती आज पुनः अंगड़ाई लेकर खड़ी हो गई है और बलिदानी क्रांतिकारियों की परम्परा को अक्षुण्ण रखने के लिये आर्य समाज की बागडोर एक तरुण संन्यासी के हाथों सौंप दी गयी है। २३ दिसम्बर के चुनाव की यह विशेषता रही है कि पिछले लगभग १०० वर्षों के इतिहास में आर्य समाज में नेतृत्व परिवर्तन के लिये इतना कड़ा और जबरदस्त संघर्ष पहली बार हुआ और पहली बार ही इतने कम आयु के युवक को आर्य समाज का कर्णधार चुना गया!

लेकिन इन सभी बातों का महत्व इस बात में है कि हम आने वाले एक वर्ष की अल्प अवधि में कितनी तेजी से और कितनी मजबूती से अपने पूर्वजों की इस धरोहर को आर्य जगत में व्याप्त परिवर्तन की महती आकांक्षा के अनुरूप ढाल कर एक नये अध्याय का सूत्रपात कर सकते हैं।

किसी काम को करने से पहले उस काम की पूरी योजना (Plan) बना लेना आवश्यक है और इसीलिये योजना निर्माण (Planning) का कार्य बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। अच्छी योजना से जहां कार्य के विभाजन और समयानुसार क्रियान्वयन में सहयोग मिल जाता है वहां अपनी प्रगति को आंकने का एक मापदण्ड भी प्राप्त हो जाता है। इसलिये सबसे पहला काम प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में कुछ वरिष्ठ किन्तु व्यावहारिक विद्वानों की एक योजना समिति का गठन होना चाहिये जो पूरे एक वर्ष के लिये समय-बद्ध (Time Bound) कार्यक्रम निर्धारित करे और उसके लिये आवश्यक साधनों का उपाय बताये। यह काम जितनी तत्परता से होगा उतनी अधिक सुविधा काम करने में होगी।

योजना की दृष्टि से कुछ अस्फुट से सुझाव मैं प्रस्तुत करता हूं जिस पर योजना समिति के विद्वान विचार कर लेंगे।

पहली बात तो संगठनात्मक दृष्टि से हमें अपने कार्य क्षेत्र को जिला उप सभाओं में संगठित करना चाहिये। हर जिले की उपसभा में २१ व्यक्ति हों जिनमें से १- प्रधान, २- उपप्रधान, १- मंत्री, १- प्रचार मंत्री, १- कोषाध्यक्ष और एक पुस्तकाध्यक्ष हों। इस तरह सात पदाधिकारियों के अतिरिक्त १४ अन्तरंग सदस्य हों। यह आवश्यक नहीं कि ये व्यक्ति पिछले चुनाव में प्रतिनिधि रहे हों। जो भी योग्य, होनहार, निष्ठावान व्यक्ति अपनी सेवायें दे सकता हो उसे आगे लाया जाय। इसके गठन में महिलाओं तथा पिछड़े वर्ग के लोगों के उचित प्रतिनिधित्व का ध्यान रखा जाय। इस उपसभा की मासिक बैठक अनिवार्य रूप से हो। उसके अपने एक कार्यालय, एक भजन मण्डली और एक उपदेशक की व्यवस्था हो। अपने जिले के आर्य समाजों से प्राप्त वेदप्रचार की राशि पर उनका अधिकार हो। अपने आय-व्यय तथा कार्य की मासिक रिपोर्ट वे प्रतिनिधि सभा को भेजते रहें।

इस कार्य के लिये हमें कम से कम ३५ उपदेशक और ३५ भजन मण्डलियों की आवश्यकता होगी। सुयोग्य उपदेशक एवं भजनीकों की सेवायें प्राप्त करने के लिये आवश्यक है कि हम इन प्रचारकों को एक तो अधिक से अधिक सम्मान दें और दूसरा आज की महंगाई को देखते हुए इनकी समुचित दक्षिणा का प्रबन्ध करें। यह बात में इसलिये कहता हूं कि मैंने देखा है कई समाजों के अधिकारी उपदेशकों से अपने नौकर जैसा व्यवहार करते हैं और दक्षिणा चपरासी की तनख्वाह से कम देते हैं। उधर प्रचारकों को भी चाहिये कि अपने आचरण, विद्या और त्याग वृत्ति से जहां अपने प्रति सम्मान पैदा करें वहां वे जिला सभा की आय में भी वृद्धि के लिये सक्रिय हों। शीघ्र ही प्रचारक मण्डल का एक शिविर भी लगना चाहिये जहां प्रचार के आधुनिक तरीकों, नये विचारों तथा नई शैलियों पर विचार विनिमय किया जा सके।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ—स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित फरीदाबाद के पास दिल्ली की सीमा पर स्थित यह विशाल ऐतिहासिक गुरुकुल आज वीरान पड़ा है। इसे आर्यसमाज की उच्चकोटि की संस्था के रूप में खड़ा किया जा सकता है। दिल्ली के निकट जी. टी. रोड पर स्थित होने के कारण इसका विशेष महत्व है। इस संस्था के माध्यम से हम आर्यसमाज के प्रचार में अनुभव कर रहे तीन विकट अभावों की पूर्ति कर सकते हैं।

पहला अभाव हमारे पास है योग्य प्रशिक्षित उपदेशकों का दूसरा अभाव है एक प्रभावशाली अनुसंधान विभाग का और तीसरा अभाव है एक योग्य प्रशिक्षण केन्द्र की।

पहले अभाव को दूर करने के लिये हमें यहां एक संस्थान खोलना चाहिये। इसका नाम हो "धर्म एवं दर्शन के तुलनात्मक अध्ययन का संस्थान" (Institute for the Comparative Study of Religion and Philosophy)। इस संस्थान को गुरुकुल विश्वविद्यालय से संबद्ध कर देने से हमें इस कार्य के लिये सरकार से अनुदान भी प्राप्त हो सकता है। यहां हम अधिक से अधिक ५० होनहार युवकों को १ वर्ष का प्रशिक्षण दें। प्रशिक्षण काल में प्रति छात्र २०० रु की छात्रवृत्ति दी जाय और प्रशिक्षण के बाद इन युवकों को आर्य समाज की सेवा के लिये उस वेतनमान पर नियुक्त किया जाय जो उस समय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (U.G.C) द्वारा कालेज के अध्यापकों के लिये निर्धारित हो। इस प्रशिक्षण के लिये आवेदकों की शैक्षणिक योग्यता कम से कम स्नातक (ग्रेजुएट) की हो और जिनकी आचार संहिता का पूरा ध्यान रखा जाय। इस प्रकार देश भर के लगभग १००० आवेदकों में से ५० युवकों को चुना जाय और आर्य जगत के श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा उनका प्रशिक्षण हो। प्रशिक्षण में युवकों को धर्म एवं दर्शन के तुलनात्मक अध्ययन के अतिरिक्त लोक सम्पर्क एवं संगठन के कार्यों में निपुण बनाया जाय ताकि वे भविष्य में हर प्रकार के नेतृत्व की क्षमता सम्पादित कर सकें। उन्हें कुशल वक्ता एवं लेखक बनाने पर भी जोर दिया जाय।

दूसरे अभाव को दूर करने के लिए हमें यहां एक ऐसे विशाल पुस्तकालय की व्यवस्था करनी चाहिए ताकि किसी भी अनुसंधानकर्त्ता को वैदिक वाङमय पर अनुसंधान करने में असुविधा न हो। प्राचीन एवं अर्वाचीन साहित्य की बहुलता में विचारकों को यहां बैठकर चिन्तन लेखन आदि करने की पूरी सुविधा होगी और नये साहित्य के सृजन की दिशा में बहुत बड़ा योगदान होगा। साथ ही प्रशिक्षण पा रहे युवकों के लिए भी पुस्तकालय एक बहुत बड़ी सुविधा होगी।

तीसरा अभाव आर्यसमाज का सचमुच बड़ा खटकता है। महर्षि दयानन्द जहां स्वयंएक बहुत बड़े योगी थे वहां उन्होंने अपने समस्त साहित्य में योगाभ्यास पर बहुत जोर दिया है। आज तो देश विदेश में योग के नाम पर बहुत बड़ा पाखण्ड फैल रहा है पर महर्षि ने वेद प्रतिपादित पातंजल योग दर्शन के आधार पर वैज्ञानिक प्रक्रियाओं को ही मान्यता दी है। दुःख इस

बात का है कि आर्यसमाज के पास एक भी ऐसा केन्द्र नहीं जहां इस विषय पर कोई प्रशिक्षण मिलता हो ? इस दिशा में हमें अवश्य सक्रिय होना चाहिए और इन्द्रप्रस्थ के विशाल प्राङ्गण में "पातञ्जल योग प्रशिक्षण केन्द्र" का भी स्थान बनना चाहिए। इससे जहां एक ओर ५० के लगभग प्रशिक्षार्थियों को स्थायी लाभ होगा वहां देश विदेश से आने वाले सच्चे जिज्ञासुओं को भी मार्ग दर्शन मिल सकेगा।

इस तरह गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ इस राष्ट्र के एक प्रबुद्ध संस्थान के रूप में बड़ा महत्वपूर्ण कार्य करेगा। इस स्थान पर वर्ष में एक बार आर्यसमाजों के मन्त्री एवं प्रधानों का भी दस दिवसीय शिविर लगाया जा सकेगा जहां वे आर्यसमाज की मान्यताओं में गहराई के साथ दीक्षित हो सकें।

ये कुछ अस्फुट विचार मैंने आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित अधिकारियों की सेवा में विचारार्थ प्रस्तुत किए हैं। इसी प्रकार के कुछ विचार हमारे प्रकाशन विभाग के लिए, अन्य गुरुकुलों एवं महाविद्यालयों के लिए, गुरुकुल विश्वविद्यालय हरिद्वार के लिए, गुरुकुल फार्मेसी के लिए इन पृष्ठों पर क्रमशः प्रकाशित किए जायेंगे। मैं आर्य जगत् के विचारशील कार्यकर्त्ताओं से भी प्रार्थना करूंगा कि वे आर्य जगत् में एक नई क्रान्ति का अभ्युदय करने के लिए संगठनात्मक, आन्दोलनात्मक, सृजनात्मक विषयों पर अपने अमूल्य सुझाव प्रेषित करें ताकि सबके सम्मिलित प्रयास से महर्षि के मिशन को पूरा करने की दिशा में हम अग्रसर हो सकें।

—अग्निवेश

पं० लेखराम बलिदान दिवस मनायें

आर्य जगत में स्वामी दयानन्द के प्रमुख सेनानी स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा हंसराज आदि नेताओं की पुण्यतिथियां तो समारोह के ढंग से आयोजित होती है पर लेखनी के धनी और मिशनरी भावना की साकार मूर्ति अमर शहीद पण्डित लेखराम जी की प्रखर प्रतिभा से नयी पीढ़ी को प्रेरित करते रहने का कोई अच्छा कार्यक्रम नहीं चल सका। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नवनिर्वाचित प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी और मंत्री श्री वीरेन्द्र जी से अनुरोध है कि वे इस महामानव के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के लिए ६ मार्च को लेखरामनगर (कादियाँ) जिला गुरदासपुर पंजाब में एक विशाल आयोजन करें। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रमुख लेखकों एवं पत्रकारों का अभिनन्दन हो तथा सभा के तत्वावधान में नये लेखक अभियान की योजना तैयार हों। प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत पं० लेखराम स्मारक निधि का विस्तार करके कोई स्थायी प्रकाशन व लेखन का कार्य सम्पादित किया जाए।

गुरदासपुर जिले के सैकड़ों उत्साही आर्य युवकों और महिला समाजों की सहायता से ६ मार्च को शहीदी मेले का आयोजन हर वर्ष नियमित मनाया जाय ताकि एक प्रेरणादायक कार्यक्रम से आने वाली पीढ़ी प्रभावित होकर आर्यसमाज की सेवा में जुट सके।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जिनकी २३ जनवरी को पुण्य जन्म तिथि है

नेता जी भारत के ऐसे वीर रत्न थे जिन पर लाखों-करोड़ों देशवासियों को गर्व है। उन्होंने एक नारा दिया—'जय हिन्द!' और भारत की सोई जनता जाग उठी। वह एक सच्चे क्रान्तिकारी, अनन्य देशभक्त, सफल शासक, सक्रिय समाज सेवक और सबसे बढ़कर स्वाधीनता संग्राम के ऐसे निडर सेनानी थे, जो देश के लिए जान तक न्यौछावर करने को सदा तत्पर रहे।

एक क्रांतिकारी और साधारण व्यक्ति में अन्तर यह होता है कि साधारण व्यक्ति कई बार बहुत अच्छी बातें सोचता है पर वह उन्हें क्रियान्वित नहीं कर पाता। एक संस्कृत कवि के अनुसार उसके मनोरथ हृदय में उठ कर ही लुप्त हो जाते हैं– वह सोचता भर है; पर क्रांतिकारी उसे करके दिखा देता है या कम से कम उसके लिए अथक प्रयास करता और उसी चेष्टा में मिट जाता है।

प्रायः यह बात नहीं समझी जाती कि अकसर क्रांतिकारी केवल आंशिक क्रांतिकारी होता है– यानी किसी विषय में तो वह क्रांतिकारी होता है और किसी अन्य क्षेत्र में क्रांतिकारी नहीं होता, हमारे इतिहास में इसके

बहुत से उदाहरण हैं। सबसे अच्छा उदाहरण है लोकमान्य तिलक और जस्टिस रानाडे का। लोकमान्य तिलक जो अपने जीवन के प्रारम्भ में राजनैतिक क्षेत्र में क्रांतिकारी विचार रखते थे, वही सामाजिक क्षेत्र में बहुत पिछड़े विचार रखते थे। वे कट्टर सनातनी थे इसके मुकाबले में जस्टिस रानाडे राजनैतिक क्षेत्र में अंग्रेजों के राज के हिमायती होते हुए भी सामाजिक क्षेत्र में ज़ात-पांत के विरुद्ध थे और वह विधवा विवाह आदि का समर्थन करते थे अर्थात् सामाजिक क्षेत्र में क्रांतिकारी थे।

इसलिए यह समझना कि कोई क्रांतिकारी है तो वह सभीक्षेत्रों में क्रांतिकारी है, यह गलत है। देखना पड़ेगा कि व्यक्ति कहां तक क्रांतिकारी है, किस क्षेत्र में क्रांतिकारी है और किसमें नहीं है।

इसके अलावा एक बात और भी होती है। वह यह कि कई लोग शुरू में बड़े क्रांतिकारी रहते हैं लेकिन बाद में घटनाओं के थपेड़े खाकर उनका क्रांतिकारित्व ठण्डा पड़ जाता है या कई बार वह खुलकर बिल्कुल प्रतिक्रियावादी रूप में सामने आते हैं। इसलिए किसी ने ४० या ५० साल पहले बम फेंका था या पिस्तौल चलायी थी या उसके विचार क्रांतिकारी थे तो आज भी वर्तमान युग के सन्दर्भ में वह क्रांतिकारी है, यह समझना गलत होगा। प्रत्येक व्यक्ति को क्रांति की समग्र कसौटी पर कस कर ही उसका मूल्यांकन करना पड़ेगा।

इसी तरह जो लोग वैज्ञानिक समाजवाद में विश्वास करते हैं वे यह मानते हैं कि सर्व प्रकार से मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का अन्त होना चाहिए। ऐसे लोग केवल विश्वविद्यालय की आराम कुर्सी पर बैठ कर ऐसे विचारों का प्रतिपादन नहीं करते बल्कि फांसी के तख्ते से, युद्ध क्षेत्र तक ऐसे विचार रखते हैं और उसके लिए दाम देने के लिए तैयार रहते हैं। ऐसे ही लोग असली और समग्र अर्थ में क्रांतिकारी हैं।

इसके अतिरिक्त एक बात यह भी देखनी पड़ेगी कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि हम जिस बात को उठा रहे हैं वह बहुत पहले ही आविष्कृत हो चुकी हो और हम फिर उसका डंका पीट रहे हों। महात्मा गान्धी बहुत बड़े चिन्तक थे और इसके लिए उन्हें दाद देनी पड़ेगी कि उन्होंने कई मामलों में अपने पूर्व हठ से हट कर प्रगति और नवीन चिन्तन को अपनाया जैसे वह लगभग ५० साल तक इसी बात की चेष्टा करते रहे कि जन्म पर आधारित वर्णाश्रम का ढाचा और चौखटा जैसा का तैसा कायम रहे और छुआछूत मिट जाय। पचास साल तक इस तरह भटकने के बाद वह १९४६ में यानी शहीद होने के लगभग २ साल पहले, एक पुस्तक की, जिसमें उनके छुआछूत-विरोधी लेखों का संग्रह था, भूमिका लिखते हुए यह कहा-यह जानने के लिए कि मैं छुआछूत पर क्या सोचता हूँ, मेरे पुराने लेखों को पढ़ने की जरूरत नहीं है मैं आज जो सोचता हूँ, वही मेरा सबसे ताजा चिन्तन है, यानि जात-पांत बिना मिटाये छुआछूत नहीं मिट सकती। इस तरह गांधी ने ५० साल भटकने के बाद उस सत्य का आविष्कार किया जिसे भारत के सुधारकों ने उनसे १०० साल पहले आविष्कार कर लिया था। इस लिए इस आविष्कार के लिए उन्हें कोई क्रांतिकारी नहीं कहा जा सकता। विज्ञान में तो यह बात हास्यास्पद समझी जाएगी कि कोई फिर से उसी तथ्य का आविष्कार करे जिसका पहले आविष्कार हो चुका है। परन्तु गांधी जी कई दूसरे अर्थों में क्रांतिकारी थे, पर साथ ही यह बात भी बता दी जाये कि वे एक हद तक ही क्रांतिकारी थे और उससे आगे जाना नहीं चाहते थे।

अतः क्रांतिकारी शब्द का प्रयोग बहुत सोच समझ कर करना चाहिए। यदि किसी के सम्बंध में यह कहा जाय कि वह क्रांतिकारी था, तो फौरन यह प्रश्न उठेगा कि वह किस क्षेत्र में क्रांतिकारी था। क्या वह सामाजिक क्षेत्र में क्रांतिकारी था या केवल राजनैतिक क्षेत्र में, क्या वह आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में भी क्रांतिकारी था और सर्वोपरि यह बात पूछनी चाहिए कि यदि उसके विचार क्रांतिकारी थे तो क्या वह उसका मूल्य देने को तैयार था-क्या वह अपने विचारों को तार्किक उपसंहार तक ले जा सका था।

इस प्रकार सुभाषचन्द्र बोस के लिए ही नहीं बल्कि संसार के सारे क्रांतिकारियों के लिए एक कसौटी प्रस्तुत करने के बाद अब हम सुभाषचन्द्र बोस के विचार और कर्म को, उनके जीवन तथा ध्येय को उपरोक्त कसौटी पर कसते हैं।

सुभाषचन्द्र बोस का आई. सी. एस. की परीक्षा में बहुत अच्छी तरह उत्तीर्ण होने के बाद आई. सी. एस. अधिकारी के रूप में जीवन न व्यतीत करने का दृढ़ निश्चय कर, राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्र में दृढ़तापूर्वक पदार्पण करना अत्यंत क्रांतिकारी पूर्ण कदम था।

परीक्षा-उत्तीर्ण करने के बाद उनके मन में द्वन्द जारी रहा। एक पत्र में उन्होंने अपनी मानसिक स्थिति

स्पष्ट करते हुए लिखा—"आई. सी. एस. से सारे सांसारिक सुख मिल सकते हैं, पर क्या यह बात सच नहीं है कि ये उपलब्धियां आत्मा को बेच कर ही प्राप्त हो सकती हैं।......आई. सी. एस. की शर्तों को मान कर चलना राष्ट्र और आध्यात्मिक कक्षाओं के साथ अप्रासंगिक है।

'सिद्धान्त रूप में मैं इस विचार को सहन नहीं कर सकता कि मैं उस महायंत्र का एक अंग बन गया हूँ, जो अपनी उपयोगिता खो चुका है और इस समय वह अपरिवर्तनवाद, स्वार्थ, हृदयहीनता और लालफीतावाद का प्रतीक है। मैं अब मोड़ पर खड़ा हूं और कोई भी समझौता सम्भव नहीं है। या तो मुझे यह गन्दी सेवा छोड़ कर देश के काम में पूरी तरह जुट जाना चाहिए या मैं अपने आदर्शों और आकांक्षाओं को छोड़ दूं और फिर इस सेवा का सदस्य होकर जीवन व्यतीत करूं।"

"यदि सी. आर. दास सब कुछ छोड़ सकते हैं और जीवन की अनिश्चितताओं का सामना कर सकते हैं तो मैं निश्चित हूं कि मेरी तरह का नौजवान जिसके ऊपर किसी तरह का सांसारिक बोझ नहीं है, उस कार्य को और भी अच्छी तरह कर सकता है।"

"अरविन्द घोष की सुपरिचित वाणी मेरी आंखों के सामने है। मैं समझता हूँ कि मैं वह त्याग करने के लिए तैयार हूं, जो इस जीवन का तकाजा है।"

इससे आगे भी उन्होंने इस पत्र में लिखा:—

"मैं समझता हूं कि हम लोगों को अगले १० साल में स्वतन्त्रता प्राप्त होगी और इससे भी पहले स्वतन्त्रता प्राप्त हो सकती है यदि उसका मूल्य देने को हम तैयार हैं। मूल्य है त्याग और कष्ट सहन। कष्ट सहन और त्याग की जमीन पर ही अपनी राष्ट्रीय अट्टालिका का निर्माण कर सकते हैं। यदि हम सबके सब अपने धंधे में लगे रहे और अपने स्वार्थ के पीछे पड़े रहे, तो मै नहीं समझता कि ५० साल में भी भारत स्वतन्त्र होगा। हमें एक राष्ट्र का निर्माण करना है।"

"मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूँ कि हम ब्रिटिस सरकार से सारे सम्बन्ध तोड़ ले। किसी सरकार को समाप्त करने का एक ही तरीका है कि हम उससे अलग हो जाएं। इसी कारण मैंने कुछ दिन पहले अपना त्यागपत्र भेज दिया।"

नेता जी की कल्पना, कामना और कर्म में एकता थी। ऐसी कल्पना और कामना का उनके जीवन में कोई स्थान नहीं था जो कर्म में परिणत न हो सके। नेताजी ने आदर्श के जिस रूप को स्वीकार किया था उसे व्यवहार में उतारा। सिद्धांत को व्यवहारिक रूप देने में बड़ी से बड़ी कीमत चुकाने के लिए वे हमेशा उद्यत रहे। उपरोक्त पत्र में व्यक्त भावना और ठीक उसके अनुरूप आचरण उनके महान क्रान्तिकारी चरित्र का प्रतीक है। उनके जीवन में प्रारम्भ से लेकर अन्त तक क्रान्तिकारी स्वरूप में निखार आया; शिथिलता और अकर्मण्यता का उनके जीवन से कोई सम्बन्ध नही था। वे हल्दी घाटी की भावना से युक्त थे। हार उनके लिए सबक था। आगे बढ़ने का सतत प्रयास उनके जीवन का अभिन्न अंग था।

उन्होंने २५ दिसम्बर १६२८ को महात्मा गाँधी और श्री अरविन्द पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए अखिल भारतीय युवक कांग्रेस के सामने कहा था "जब मैं चारों तरफ देखता हूँ तो मेरा ध्यान बरबस उन दो विचारधाराओं की तरफ जाता है जिनके सम्बन्ध में खुलकर, निर्भीक होकर बोलना मेरा कर्त्तव्य है। मैं यहां पर उन दो विचार धाराओं की बात कह रहा हूँ जिनमें से एक का केन्द्र साबरमती में है और दूसरी का केन्द्र पांडिचेरी में है। यह स्मरण रहे कि मैं यहां पर इन दो विचार धाराओं के मौलिक दर्शन पर कुछ कहने के पचड़े में नहीं पड़ूंगा। इस समय दार्शनिक बाल की खाल निकालने का मौका नहीं है। मैं आज आप युवाओं के सामने एक व्यावहारिक व्यक्ति के रूप में बात करूगा, किसी विचारधारा पर दार्शनिक बाल की खाल वाले दृष्टि कोण से बात नहीं कर रहा हूं बल्कि उसके जो वास्तविक नतीजे और परिणाम होते हैं उन्हीं को दृष्टि में रखकर विचारधारा का विवेचन करता हूँ।

"साबरमती की विचारधारा ने जो प्रचार कार्य किया है, उसका वास्तविक परिणाम यह है कि लोगों में यह भावना फैल गई है और मन पर यह छाप पड़ती है कि आधुनिकता बुरी है, बड़े पैमाने पर उत्पादन एक बुराई है, अभाव बढ़ाया नही जाना चाहिए, जीवन का मानदण्ड ऊंचा नहीं करना चाहिए और हमें यह भरसक कोशिश करनी चाहिए कि हम बैलगाड़ी के युग में लौट जाएं और यह कि आत्मा शारीरिक अनुशीलन से अच्छी है और सैनिक प्रशिक्षण की अवज्ञा की जानी चाहिए।

उधर पांडिचेरी की विचारधारा ने जो प्रचारकार्य फैला रखा है उसका वास्तविक नतीजा यह हो रहा है कि लोगों में यह भावना फैल रही है और मन पर यह छाप पड़रही है कि शान्तिपूर्वक बैठकर ध्यान लगाने से बढ़ कर कोई ऊंची या महानतर स्थिति नहीं हो सकती। योग का अर्थ प्राणायाम और धर्म है, कर्म को किसी हद तक अच्छा समझ कर सहन किया जा सकता है पर योग की यह विशेष किस्म उच्चतर और अधिकतर सुन्दर है इस प्रचार कार्य का नतीजा यह हुआ है कि कुछ लोग यह भूल गये हैं, कि वर्तमान परिस्थितियों में आध्यात्मिक प्रगति केवल निरन्तर निःस्वार्थ कार्य से ही हो सकती है। प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ तरीका लोहा लेना है और ध्यान में आंख मूंद कर बैठे रहना एक कमजोरी है जब कि हमारे चारों ओर कठिनाइयां और खतरे हैं।

इन विचारधाराओं ने वास्तविक रूप में जो कर्महीनता को प्रोत्साहन दिया, उसी के विरुद्ध मेरा प्रतिवाद है न कि उनके दर्शन शास्त्र के विरुद्ध।"

"अब हम दुनियां के एक अलग-थलग कोने में नही रह सकते। जब भारत स्वतंत्र हो जाये तो उसे अपने आधुनिक शत्रुओं का मुकाबला आधुनिक तरीकों से, चाहे वह आर्थिक हों, चाहे वह राजनैतिक क्षेत्र हो, करना पड़ेगा। बैल गाड़ियों का युग चला गया और और हमेशा के लिए चला गया। अब स्वतन्त्र हुए संसार को किसी भी परिस्थिति के लिए कमर कस कर तैयार होना है ऐसा हमें तब तक करना पड़ेगा जब तक कि संसार पूरीतरह से निरस्त्रीकरण की नीति को अपना नहीं लेता।"

इस उद्धरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि अपने राजनैतिक जीवन के प्रारंभ में ही सुभाषचन्द्र बोस यह समझ चुके थे कि उन्हें क्या करना है और कैसे चलना है। विश्व व्यक्तित्व के रूप में उभरे हुए श्री अरविन्द और उत्कृष्ट राजनैतिक नेता के रूप में प्रख्यात महात्मा गांधी पर युवा वर्ग के सामने अत्यंत युक्तिपूर्ण ढंग से स्पष्ट कहने को सत्साहस दिखलाना बहुत ही स्तुत्य था। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का सम्बन्ध बंगाल के क्रान्तिकारियों से था और इसी कारण न तो वह गांधीवाद को आत्मसमर्पण कर सकते थे, न अरविन्दवाद को।

वह समाजवाद के सिद्धांत में दृढ़ आस्था रखते थे। वह राष्ट्रीयता के साथ-२ लोकतांत्रिक समाजवाद और अन्तर्राष्ट्रीय को प्रश्रय देते थे। इसीलिए सुभाषचन्द्र बोस ने ३ मई १९२२ को पूना में महाराष्ट्र प्रान्तीय कांग्रेस की अध्यक्षता करते हुए अपने भाषण में जहां यह कहा था कि भारत के लिए लोकतन्त्र का विचार कोई नया या अपरिचित विचार नहीं है, वहीं उन्होंने यह भी कहा था:—

"साम्यवाद भी कोई पश्चिमी विचार नहीं। आसाम के खासियों में जिनका मैं पहले ही मैं जिक्र कर चुका हूँ आज आज भी निजी सम्पत्ति की कोई प्रथा नहीं है। पूरा कबीला सारी जमीन का मालिक होता है......।"

यह एक अजीब समय था कि क्रान्तिकारी समाजवाद के विचार का प्रचार कर रहे थे और साथ ही साथ वह चाहते थे देश आजाद हो। वे चाहते थे देश का आजाद होना पहली शर्त है। सुभाषचन्द्र बोस समाजवाद को सामने लाना चाहते थे पर जो लोग साम्यवादी दल बनाकर बैठे हुए थे वे आजादी की लड़ाई का यह कहकर मूर्खतापूर्ण ढग से साथ नहीं देना चाहते थे कि यह तो पूंजीपतियों की मांग और षड्यन्त्र है। कम्युनिस्टों ने १९३० के आंदोलन का विरोध इसी धारणा के वश में किया था।

ऊपर सुभाष के जिस व्याख्यान का हवाला दिया गया है, उसी में उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादियों के विचारों का दुःख के साथ प्रतिवाद किया था। उन्होंने कहा था:

"अन्तर्राष्ट्रीय श्रम तथा साम्यवाद की ओरसे राष्ट्रीयता पर आक्रमण किया जा रहा है। यह आक्रमण न केवल गलत है बल्कि इससे हमारे विदेशी शासकों का हित होता है। यह सड़क के एक साधारण आदमी के लिए भी बहुत सरल और समझ में आने वाली बात है कि नये आधार पर भारतीय समाज का पुनर्निर्माण करने के लिए, चाहे वह समाजवादी आधार हो चाहे किसी और आधार पर हो, यह जरूरी है कि हमें पहले वे अधिकार तो प्राप्त हों कि हम अपने भाग्य के निर्णायक हों। जब तक भारत ब्रिटेन के पैरों के तले पड़ा है, तब तक हमारे हाथों में वह अधिकार नहीं होगा। इसलिए मेरा यह विश्वास है कि न केवल राष्ट्रवादियों का बल्कि राष्ट्रीयता विरोधी साम्यवादियों का भी यह प्रथम कर्त्तव्य है कि जल्दी से जल्दी भारत को स्वतंत्र कराया जाए।

इसी व्याख्यान में उन्होंने एक स्वतन्त्र संघीय प्रजातन्त्र चाहने की भी बात की और कहा कि सांस्कृतिक पुनरेकीकरण के लिए वैज्ञानिक प्रशिक्षण जरुरी है। इस प्रशिक्षण से आर्थिक जागृति पैदा होती है जो धर्मान्धता को खत्म करती है। एक हिन्दू किसान और मुसलमान किसान में कहीं अधिक सामान्य चिन्तन और विचार है, बनिस्बत एक मुस्लिम किसान और मुस्लिम जमींदार के।

सुभाषचन्द्र बोस का झुकाव हमेशा क्रांतिकारी की तरफ रहा क्रान्तिकारी जतीन्द्रनाथ दास के अनशन पर महात्मा गांधी द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त न करने पर सुभाष चन्द्र बोस अत्यन्त दुःखी थे। उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा है:—"यह स्पष्ट है कि जतीन्द्रनाथ दास की शहादत से सारे देश में बहुत जोश फैल गया था, पर गांधी जी पर इसका कोई असर नहीं हुआ था। गांधी जी पत्र 'यंग इण्डिया' सारी राजनैतिक घटनाओं, यहां तक कि ऐसे ऐसे विषयों स्वास्थ्य, खाद्य आदि मन्तव्यों से भरा रहता था, पर गांधीजी ने इस विषय पर कुछ भी नहीं कहा"।

अन्त में जब जतीन्द्रनाथ दास ने किसी भी शर्त पर रिहा होना अस्वीकार कर दिया तब सुभाषबोस ने कलकत्ता से ६०० रुपये भेज दिए थे कि जब जतीन्द्रनाथ

शेषांश पृष्ठ १९ पर]

ईश्वर को हम क्यों मानें ?

स्व० गंगाप्रसाद उपाध्याय

[टिप्पणी–१२ जनवरी के अध्यात्म प्रवाह में "हम ईश्वर को क्यों मानें ? लेख बहुत बड़ा होने के कारण तीन अंकों में समाप्त होगा । चूंकि स्वर्गीय विद्वान लेखक ने अत्यन्त युक्तिपूर्ण ढंग से वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर लेख में ईश्वरीय सत्ता का प्रतिपादन किया है इसलिए लेख को पाठकों की सुविधा की दृष्टि से अनेक उपशीर्षकों द्वारा कई खण्डों में प्रकाशित करना पड़ रहा है । पाठकगण गत अंक में लेख के अन्त में क्रमशः शब्द न पाकर लेख के अधूरेपन का अवश्य अनुभव किये होंगे ।]

इसी प्रकार जो समस्त संसार तथा अपने को शून्य मानते हैं उनकी कर्त्तव्य-परायणता के लिये कौन सी ऐसी वस्तु है जो प्रेरक का काम करेगी ? शून्यवाद का प्रचार ही जातियों तथा व्यक्तियों को शून्य की ओर ले जाता है और ज्यों-ज्यों इनकी यह भावना बढ़ती जाती है त्यों-त्यों उनकी विभूति भी कृष्ण पक्ष के चन्द्रमा के समान घटते-घटते अमावस्या रूपी अन्धकार तक पहुंच जाती है ।

हम देखते हैं कि जो जातियां अपने को ईश्वर मान बैठी हैं उनका उसी प्रकार का व्यवहार नहीं होता जैसा उनका होता है जो अपने को उन्नतशील जीव मानती हैं । क्योंकि एक स्थान में उन्नति के लिये मार्ग खुला है और दूसरे में नहीं ।

इसी प्रकार जो जाति या व्यक्ति आस्तिक है उसका जीवन नास्तिकों से अवश्य भिन्न होगा और जिस प्रकार उसके आस्तिकता सम्बन्धी विचार होंगे उसी प्रकार के उसके आचरण भी होंगे ।

इसलिये यह कहना ठीक नहीं है कि आस्तिकता सम्बन्धी विचारों की मनुष्य के जीवन में कोई आवश्यकता नहीं पड़ती । **वस्तुतः ईश्वर के आस्तित्व का प्रश्न केवल मस्तिष्क सम्बन्धी व्यायाम ही नहीं है । यह प्रश्न मनुष्य जाति की उन्नति के मार्ग में मृत्यु और जीवन का प्रश्न है ।** इसलिये उपनिषत् कहती है ।

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति ।
यदिच्छन्ती ब्रह्मचर्य्यं चरन्ति तत्तेपदं संग्रहेण ब्रवीमि ।

अर्थात् जिसके पद का सब वेद गायन करते हैं, जिसके लिये सब तप आदि व्रत किये जाते हैं, जिसकी इच्छा से ही लोग ब्रह्मचर्य्य का पालन करते हैं, वही ईश्वर है । यथार्थ में **जिसका ईश्वर पर विश्वास नहीं है, जिसके सम्मुख ईश्वर प्राप्ति जैसा उच्च आदर्श नहीं है वह ब्रह्मचर्य्य जैसी कठिन तपश्चर्य्या क्यों करेगा ? उसके लिये तो ललना-लिङ्गन ही समस्त जीवन का उद्देश्य है । यही इसके पुरुषार्थ की इतिश्री है ।**

मनुष्य का उद्देश्य तथा आस्तिकता से सम्बन्ध

विचार कीजिये कि मनुष्य का उद्देश्य क्या है ? थोड़ी देर के लिये आस्तिकता के भाव को दूर रख दीजिए । ईश्वर हो या न हो । हमें उससे कुछ प्रयोजन नहीं । हम उसके विषय में सोचें ही क्यों ?

अंजुम शनास को भी खलल है दिमाग का ।
पूछो अगर जमीं की, कहे आस्मां की बात ।

हम आकाश-पाताल एक नहीं करना चाहते । सच्चे व्यवहारिक मनुष्य की भांति सोचना चाहते हैं । **मनुष्य जीवन का क्या उद्देश्य है ? दुःखों का दूर करना । यह तो निषेधवाचक वाक्य है । हमारे दुःख कैसे दूर हो सकते हैं ? फिर हममें तथा कुत्ते, बिल्ली में क्या भेद है ? वह तो दुःखों के दूर करने में ही लगे रहते हैं ।**

आहारनिद्रा भय मैथुनं च सामान्य-मेतत् पशुभिर्नराणाम् ।

दुःख के दूर करने के साधारण उपायों को दृष्टि में रखते हुये तो पशु तथा मनुष्य समान ही हैं । फिर मनुष्य का क्या उद्देश्य है ? और उसका ईश्वर-अस्तित्व के साथ क्या सम्बन्ध है ?

आधुनिक आचार शास्त्र वालों ने बिना ईश्वर की सहायता के ही मनुष्य के आचार की विवेचना की है । उनके कई मत हैं । मिल आदि अपने को 'यूटीलिटेरियन' (Utilitarian) या लाभ-वादी कहते हैं । उनका कथन है कि हमको वही काम करना चाहिये जिससे लाभ हो । परन्तु 'लाभ' अनिश्चित् शब्द है । किसका लाभ ? रुपये का, सम्पत्ति का या स्वास्थ्य का ? लाभवादी कहते हैं 'सुख का' । अच्छा ! यदि सुख ही अभीष्ट वस्तु है तो जो कुछ सुख के लिये किया जाय वह सब उचित होगा । और चोरी डाका, व्यभिचार आदि खोटे से खोटे कर्म उचित होंगे । 'अनुचित' का नाम ही न रहेगा । यदि कहो कि 'अधिक से अधिक मनुष्यों का अधिक से अधिक सुख' (greatest happiness) of the greatest number of men ही जीवन का उद्देश्य होना चाहिये

तो इसमें संदेह नहीं कि मनुष्य बहुत से अनाचारों से बचा रह सकता है। परन्तु एक मनुष्य अपनी जान को खो कर अधिक मनुष्यों के अधिक से अधिक सुख का क्यों सम्पादन करे? इसके लिये कोई समाधान नहीं है। आज यदि मैं अपनी जान दे दूं तो देश वालों का भला होगा। उनका दासत्व दूर हो जायगा, उनको स्वतन्त्रता प्राप्त हो जायगी। परन्तु ऐसा मैं क्यों करूं? मुझे इसके बदले में क्या मिलेगा? मेरे मरने के पश्चात मेरे देश वाले मेरे इस ऋण को किस प्रकार चुकायेंगे? या यदि वह न चुकायेंगे तो मुझे उसका किस प्रकार बदला मिलेगा? यह सब प्रश्न हैं जो केवल लाभवादी नहीं दे सकते। ईश्वर-वादी कह सकता है कि मृत्यु मेरा अन्त नहीं है। मुझे ईश्वर के नियमों तथा आज्ञाओं का पालन करना है। आज यदि मैं मनुष्य जाति की सेवा में प्राण देता हूँ तो मेरी आत्मा उच्च होगी। मैं ईश्वर की ओर से फल पाऊंगा। मुझे स्वयं सन्तोष होगा। लाभवादी शायद कहेंगे कि यह भी तो लाभ ही है। लाभ अवश्य है। परन्तु इस लाभ में और उनके कथित में आकाश-पाताल का अन्तर है। यह प्ररणाशक्ति बड़ी उच्च है।

जो लोग सदाचार के भवन को ईश्वर-अस्तित्व की नींव पर बनाना नहीं चाहते अथवा जो इस नींव को खोद डालना चाहते हैं वह सदाचार को एक प्रकार से नींव रहित बना रहे हैं। वह मनुष्य जाति के मनोविज्ञान से अनभिज्ञ हैं। वह यह नहीं देखते कि ईश्वर विश्वास ने सदाचार को कहां तक दृढ़ किया है।

भय सदाचार का साधन है

कुछ लोगों का आक्षेप है कि आस्तिकता ने सदाचार को दासता की कड़ियों में जकड़ दिया है। "पुण्य पुण्य के लिये (Virtue for Virtue's sake) करना चाहिए।" यह भाव लोगों में नहीं रहा। वह झूठ इस लिए नहीं बोलते कि ईश्वर दण्ड देगा, चोरी इसलिए नहीं करते कि ईश्वर अप्रसन्न होगा। इस प्रकार लोगों के हृदयों में भय बैठता जाता है और वह वास्तविक रीत्या सदाचारी नहीं बनते। परन्तु ऐसा कहने वाले गहरे नहीं जाते। वस्तुतः मनुष्यों की प्रकृति भिन्न-भिन्न है। उनके मस्तिष्क में जहां अन्य भाव हैं वहां भय भी है। भय मनुष्यों में स्वभावतः है। कहीं बाहर से नहीं आ गया। वह भावों में से एक है। उसको हम संसार से निकाल नहीं सकते। निकृष्टतम अवस्थाओं में भय अधिक होता है और उन्नतशील मस्तिष्कों में इसकी न्यूनता होती जाती है। परन्तु यह नहीं कह सकते कि भय के लिए प्रकृति में कोई स्थान ही नहीं।

यह भय क्यों है? इसका उपयोग क्या है? यदि विकासवादी डार्विन आदि से पूछा जाय तो वह कहते हैं कि भय का उन्नति के लिए उपयोग है। उनका सिद्धांत है कि बिना आवश्यकता के कोई भाव होता ही नहीं। हम भी इस बात में उनसे सहमत हैं।

अब देखना यह है कि भय का आचार-शास्त्र में क्या उपयोग है? एक नियम, जैसे सच बोलना, मनुष्य समाज के लिए उपयोगी है, इससे संसार का लाभ होगा। इससे अधिक से अधिक जनसंख्या को अधिक सुख प्राप्त होगा। इसलिये मनुष्य समाज ने नियम बनाया कि सच अवश्य बोलना चाहिए और जो पुरुष सच न बोलेगा उसको सभा, समाज या राज की ओर से दण्ड मिलेगा। जो उच्च पुरुष हैं वह दण्ड का विचार न करते हुए भी सच बोलेंगे और झूठ से घृणा करेंगे। परन्तु निकृष्ट श्रेणी के मनुष्यों को इसी दण्ड का विचार करके सच बोलना पड़ेगा। याद रखना चाहिए कि यदि हम जनता की वास्तविक दशा का पता लगावें तो मनुष्यों की उच्च से उच्च श्रेणियों में भी ऐसे निकृष्ट लोगों की संख्या मिलेगी। अब इन लोगों को भय का अनुभव कराने के क्या साधन हैं? वह निकृष्ट हैं अतः उनको भय ही नियम में रख सकता है। परन्तु सर्वव्यापी भय कहां से आयेगा? समाज-बल या राजक-बल प्रत्येक दशा में तो कृतकार्य्य हो नहीं सकता। एक मनुष्य के झूठ बोलने से ही प्राण बचते हैं। उसके झूठ का समाज या राज्य भी पता नहीं लगा सकता। अब प्रश्न यह है कि वह झूठ क्यों न बोले? ईश्वर-विश्वासी तो कहेगा। कि समाज न देखे, राजा न देखे, परन्तु जो 'पश्यत्यचक्षुश्च शृणोत्यकर्णः' अर्थात् बिना आंख के देखता और बिना कान के सुनता है, उसकी सूक्ष्म दृष्टि से मैं कैसे बच सकूंगा? इस प्रकार ईश्वर का सच्चा विश्वासी उस समय भी पाप करने से बचेगा जब उसे संसार में किसी का भय नहीं है। परन्तु जिसका ईश्वर पर विश्वास नहीं वह ऐसे समय झूठ को ही पुण्य समझेगा क्योंकि झूठ लाभदायक है। यही कारण है कि स्वतंत्र आचारवादियों ने झूठ को विशेष अवस्थाओं में विहित बताया है।

इसमें सन्देह नहीं हमारे इस दृष्टान्त में 'भय' सदाचार का साधन है। परन्तु हमारा तो सिद्धांत यह है कि निकृष्ट अवस्थाओं में 'भय' को अवश्य साधन मानना पड़ेगा। और क्यों न मानें? एक शास्त्र उपस्थित है। यदि वह अधिक से अधिक उपयोगी हो सकता है तो उसका अवश्य प्रयोग करना चाहिये।

नियमों का उल्लंघन निर्बलता का लक्षण है

परन्तु एक बात स्मरण रखनी ाहिए। ईश्वर के भय और अन्य चीजों भय में भेद है। जो ईश्वर से डरता वह वस्तुत: अन्य किसी से नहीं डरता। हु भय नहीं किंतु अभय का सब से प्रकृष्ट है इसीलिए आस्तिकवादियों ने 'खुदातस', ाडफियरिंग' (God-fearing) आदि ब्दों का निर्माण किया है। ईश्वर से रना उच्चतम गुण समझा जाता है। ोंकि जो ईश्वर से डरता है वह उसके यमों का उल्लघन नहीं कर सकता। स्तुत: नियमों का उल्लघन करना मय-चिह्न है ही नहीं। यह महान् च्चता, कायरता तथा निर्बलता का ह्न हैं।

नियमोल्लंघन तथा भय में क्या म्बन्ध है? इसके विषय में सर्व-साधा- ा में एक प्रकार का भ्रम फैला हुआ प्रायः अशिक्षित या कुशिक्षित या शिक्षित लोग यह समझते हैं कि र वह है जो नियमों को तोड़ सके। ससे अधिक भूल क्या हो सकती है? यमों के पालन करने के लिए बल ाहिए। तोड़ने के लिए क्या बल? ुष्य नियमों को तोड़ता है? इसलिए वह निर्बल है। वह प्रलोभनों का मना नहीं कर सकता। थोड़ी सी न पाते हो उसका पैर फिसल जाता कोई खाद्य पदार्थ देखा मुँह में ानी भर आया। सुन्दर युवती देखी डिगने लगा। यह सब नियमोल्लघन उदाहरण निर्भयता और वीरता के दाहरण नहीं है। यदि मनुष्य को एक दृढ़ निश्चय हो जाय कि बल और र्भयता नियमों के पालन में है न कि के उल्लंघन में, तो सैंकड़ों बड़े आदमी े बड़प्पन को प्राप्त कर सकते हैं। तु लोगों के हृदय में तो 'समरथ को नहिं दोष गुसांई' की विषैली शिक्षा बैठी हुई है। यह उनको प्रलोभनों से युद्ध नहीं करने देती। 'मैं राजा हूँ' मेरे राज में मुझसे ऊपर कोई नहीं। अतः मैं सबसे अधिक भोग विलास कर सकता हूँ। स्त्रियों के सतीत्व नष्ट कर सकता हूँ। तथा असतियों के समूह के समूह अपने महलों में रख सकता हूँ।' यह विचार क्या वीर पुरुषों के विचार हैं? क्या यह आत्मा की अभयता को सूचित करते हैं? वस्तुतः यह तो नीचे दर्जे की निर्बलता हैं। यह भय का निकृष्ट रूप है। जिन लोगों का कथन है।

परस्त्री-कुच-कुम्भेषु कुम्भेषु परदन्तिनाम्।
निपतन्ति न भीरूणां दृष्टयः शरवृष्टयः॥

वह वस्तुतः स्वयं भीरु होते हुए दूसरों को भीरु बता रहे हैं।

सच्चा अभयपन वह है जो आत्मा को संसार के बड़े से बड़े प्रलोभनों से युद्ध करने के लिए उद्यत करता है और यह अभयपन ईश्वर से भय करने से ही प्राप्त होता है। जिसको ईश्वर का भय है उसे संसार में किसका भय है? और जिसे ईश्वर का भय नहीं वह सृष्टि की तुच्छ से तुच्छ वस्तु से डरेगा। आखें खोलकर देखो और राजा तथा रंक दोनों के जीवन हमको यही उपदेश करते हैं। जिन्होंने ईश्वर से भय नहीं किया और उसके नियमों का उल्लंघन करते रहे वह अन्त में बड़ी शोचनीय अवस्था को प्राप्त हो गये।

इसलिए ईश्वर के भय की साधारण भय से तुलना करना भूल है। हम ऊपर कह चुके हैं कि निकृष्ट मनुष्यों को पाप कर्म से बचने के लिये भय बहुत उपयोगी है। परन्तु यही भय शनैः शनैः मनुष्य को प्रेम की ओर भी लाता है। जो मनुष्य ईश्वर से डरते हैं वह कुछ दिनों में उससे प्रेम भी करने लगते हैं और भय का निकृष्ट भाव प्रेम के उत्कृष्ट भाव में परिवर्तित हो जाता है। ईश्वर से डरना और ईश्वर से प्रेम करना यह दोनों अंत में मिल जाते हैं।

लोग कहते हैं कि प्रेम मनुष्य का उत्कृष्टतम भाव है। प्रेम से पूर्ण हृदय अमूल्य रत्नों का कोष है जिसके सामने संसार की समस्त विभूति पत्थर के तुल्य है। परन्तु इस उत्कृष्टतम भाव का उत्कृष्टतम विकास उसी समय होता है जब आत्मा परमात्मा के प्रेम में मग्न होता है। जब उसे न अणु-अणु और परमाणु-परमाणु में ही अपने प्यारे के दर्शन होते हैं किन्तु अपने निज आत्मा में वह अपार प्रकाश की विभूति को देखता है। उस समय उसे अपनी सुध-बुध भी नहीं रहती। उसी समय के लिए उपनिषद् कहती है: 'ब्रह्म विद् ब्रह्म एव भवति। अर्थात् ब्रह्मज्ञ हो जाता है।

आस्तिकता ही सदाचार का आधार है

वस्तुतः ईश्वर-प्रेम के अतिरिक्त मनुष्य को सदाचारी रखने के लिए और किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं, सदाचार के जो कुछ नियम बनाये जा सकते हैं वह सब ईश्वर-प्रेम के अन्तर्गत आ जाते हैं। यदि मिल या अन्य लाभवादियों के कथनानुसार हम इस बात को मान लें कि 'अधिक से अधिक मनुष्यों का अधिक से अधिक सुख' सम्पादन करना ही मनुष्य का कर्त्तव्य है तो इसके लिए ईश्वर प्रेम से अधिक और क्या साधन हो सकता है? जिसको मुझसे प्रेम है उसको मेरे बच्चों से अवश्य प्रेम होगा।

इसी दृष्टान्त के अनुकूल जिसको ईश्वर से प्रेम है उसको मनुष्य मात्र से प्रेम होगा क्योंकि वह जानता है कि समस्त प्राणी उसी परम-पिता परमात्मा के पुत्र हैं। मिल तो यह कहते है कि अधिक से अधिक मनुष्यों का सुख सम्पादन करना ही मनुष्य का कर्त्तव्य है। उनका विचार मनुष्य से आगे जा

नहीं सकता। परन्तु ईश्वर प्रेम की गति आगे चलती है। क्या केवल मनुष्य ही ईश्वर के पुत्र हैं? क्या अन्य प्राणी नहीं? क्या मनुष्य के सुख के लिए अन्य प्राणियों को दुःख दिया जा सकता है? कदापि नहीं। आस्तिक का, सच्चे आस्तिक का यह साहस कहाँ कि वह किसी प्राणी को दुःख दे सके? उसके हृदय से तो यही निकलेगा—'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे'। मैं सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखता हूँ। भाई का भाई से सीधा सम्बन्ध नहीं किन्तु अपने पितृजन के द्वारा सम्बध है। इसी प्रकार मनुष्य का अन्य मनुष्यों तथा प्राणियों से सम्बन्ध और निकटस्थ सम्बंध स्थापित करने वाला यदि कोई दृढ़तम सूत्र है तो आस्तिकता है।

कुछ लोग शायद आक्षेप करें कि आस्तिकता वस्तुतः ऐसी सार्वजनिक बूटी है तो आस्तिकों को दूसरे मनुष्य के साथ क्रूरता करते क्यों पाते हैं? क्यों ऐसा होता है कि जो मनुष्य ईश्वर की अत्यंत भक्ति करता है वही सबसे अधिक स्वार्थी, कपटी तथा क्रूर भी होता है।

इस आक्षेप में कुछ तो अत्युक्ति है और कुछ भ्रम। ऐसा नहीं देखा गया कि जो कोई ईश्वर का जितना भक्त हो उतना ही वह स्वार्थी और कपटी भी हो। वस्तुतः हम ईश्वर भक्तों को ही संसार की भिन्न-भिन्न संस्थाओं में सेवा करते पाते हैं। हाँ! कभी-कभी ऐसा होता है कि अपने को आस्तिक कहलाने वाले भी नीचता करते पाये जाते है। परन्तु इसका मुख्य कारण आस्तिकता नहीं किन्तु पाखण्ड है। संसार में बहुरुपिये बहुत हैं। वह अनेक रूप धारण करके संसार को ठगना चाहते हैं। कहीं प्रतिष्ठित पुरुषों का रूप रखते हैं और कही आस्तिकों और ईश्वर उपासकों का। परन्तु बहुरूपियों के दृष्टान्तों से हम ठीक परिणाम तक नहीं पहुँच सकते।

हरयाणा सरकार का बजट

(पृष्ठ १५ का शेषांश)

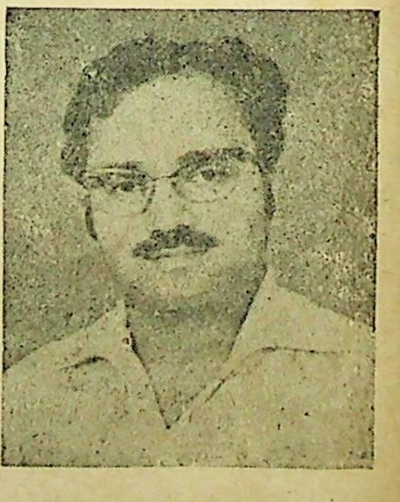
खपत तीन गुनी हो गई है। १९६७-६८ में देशी शराब की लगभग ७२ लाख बोतले और भारत में बनी विदेशी शराब की लगभग चार लाख बोतले बिकीं लेकिन १९७२-७३ में देशी शराब की सवा करोड़ बोतले एवं भारत में बनी विदेशी शराब की ग्यारह लाख बोतले बिकीं। १९६७-६८ में राज्य को देशी शराब से साढ़े पांच करोड़ और अंग्रेजी शराब से साठ लाख रुपये की आय हुई परन्तु १९७२-७३ में यह आय बढ़ कर क्रमशः सवा दस करोड़ और सवा दो करोड़ हो गई अर्थात् पांच वर्षो में शराब से आय दुगनी हो गई। आबकारी मन्त्री के दिए आकड़ों से देशी और विदेशी शराब की खपत में वृद्धि एक दम स्पष्ट है। इस खपत को दृष्टि में रख कर मंत्री महोदय ने यह भी कहा कि जब दूसरे राज्य मद्य निषेध नहीं लागू कर रहे हैं और इस राज्य की स्थानीय जनता भी मद्य निषेध के पक्ष में नहीं है तो हरयाणा सरकार ही मद्य निषेध लागू कर राजस्व में घाटा क्यों उठाये? मद्य निषेध लागू करने पर अवैध शराब का भी उत्पादन बढ़ जाता है।

सरकार की तरफ से मद्यपान का खुला समर्थन इस बात का द्योतक है कि जनता के नैतिक और चारित्रिक विकास की जिम्मेदारी सरकार की नहीं होती है। ऐसा करके हरयाणा की सरकार जनता और सरकार के बीच नवीन रिश्ते के आविष्कार द्वारा एक अभद्र आ[illegible] शास्त्र का अवलम्बन लेती है अ[illegible] यह कदम किसी भी भावी समाज [illegible] लिए अत्यंत घातक है। एडम स्मि[illegible] जैसे प्रसिद्ध भौतिकवादी अर्थशास्[illegible] ने भी शराब के उत्पादन में ल[illegible] वाले श्रम को बिल्कुल अनुत्पाद[illegible] बताया था ऐसी स्थिति में भा[illegible] जैसे आध्यात्मवादी देश में शरा[illegible] पर अवलम्बित अर्थव्यवस्था द्वा[illegible] देश के भौतिक, नैतिक तथा आध्या[illegible]त्मिक विकास करने की बात कर[illegible] देश के साथ विश्वासघात करना है[illegible]

हरयाणा सरकार का वर्तमा[illegible] बजट शहरी और ग्रामीण विषमत[illegible] को भी खत्म करने के ठोस उपा[illegible] का कुछ भी जिक्र नहीं करता है[illegible] उद्योगपतियों की अपेक्षा किसानों [illegible] भारी ब्याज पर कर्ज देना इस बात[illegible] प्रबल प्रमाण है। आज इस सरका[illegible] की कर्ज भुगतान राशि का राज्य [illegible] शिक्षा, सिचाई, परिवहन के साध[illegible] तथा बहु उद्देश्यीय प्रधान जै[illegible] महत्वपूर्ण योजनाओं पर खर्च हो[illegible] वाली राशि से अधिक होना इस बा[illegible] का स्पष्ट प्रमाण है कि यह प्रदे[illegible] आर्थिक दृष्टिकोण से प्रगति नहीं क[illegible] रहा है। सरकार आर्थिक प्रगति क[illegible] झूठा दावा करती है।

राजधर्म के पाठकों के सुपरिचित लेखक डा० वेदप्रताप 'वैदिक' इस महीने से हिन्दी के सर्वाधिक बिक्री वाले दैनिक पत्र "नवभारत टाइम्स" में सहायक सम्पादक के महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त हुए हैं। राजधर्म परिवार की ओर से हम उनका अभिनन्दन करते हुए आशा करते हैं कि वे पहले से भी अधिक सक्षम एवं उग्र होकर अंग्रेजी के साम्राज्यवाद के विरुद्ध प्रबल संघर्ष करते रहेंगे।

—सम्पादक



डा० वेदप्रताप "वैदिक"

स्वतन्त्रता के २६ वर्ष बाद भी

कांग्रेसी कृषि और औद्योगिक नीतियों के दो पाटों के बीच पिसती भारतीय जनता

भारत कृषि प्रधान देश है। प्राचीन काल में भी यह सनातन देश अपनी विशाल आबादी के कारण समृद्ध ग्रामीण परम्पराओं का देश था। दुर्भाग्य से स्वतंत्रता के उपरान्त गलत नेतृत्व के कारण पश्चिम की महत्त्वकांक्षा और उपभोग की संस्कृति का शिकार हो गया और आज देश की गरीबी को दूर करने के नाम पर गलत नेतृत्व पश्चिम की शहरी सभ्यता का अन्धानुकरण कर राष्ट्र के मानस को गहरा आघात पहुँचा रहा है। फलस्वरूप विपुल प्राकृतिक सम्पदा, उर्वरा कृषि भूमि एवं विशाल श्रम शक्ति के बावजूद, भारत पश्चिम के नकल का शिकार हो कर स्वतन्त्रता के २६ वर्षों के उपरान्त भी पूंजीवादी आर्थिक एवं औद्योगिक गलत सरकारी नीतियों के कारण, अपेक्षित गति से विकास नहीं कर सका।

स्वतन्त्रता पूर्व इस देश की ८० प्रतिशत आबादी कृषि पर अवलम्बित जीवन व्यतीत कर रही थी। स्वतन्त्रता के उपरान्त उद्योग-धंधे स्थापित होने के बावजूद भी कृषि पर आधारित जीवन व्यतीत करने वालों की संख्या के अनुपात में कोई अन्तर नहीं हुआ। दूसरे शब्दों में जहाँ स्वतन्त्रता पूर्व ४० करोड़ की आबादी में ३२ करोड़ लोग अर्थात ८० प्रतिशत आबादी कृषि पर अवलम्बित थी वहीं स्वतन्त्रता उपरान्त ५६ करोड़ की जनसंख्या में ४५ करोड़ के लगभग अर्थात् ८० प्रतिशत लोग आज भी कृषि पर अवलम्बित खेत मजदूर एवं कृषक के रुप में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अब तक २६ वर्षों में २० प्रतिशत से अधिक कृषि योग्य भूमि में वृद्धि नहीं हुई जब कि कृषि पर आधारित जनसंख्या ३२ करोड़ से बढ़कर ४५ करोड़ हो गई। देश में १ करोड़ ७५ लाख हेक्टर कृषि भूमि परती पड़ी हुई है। परती पड़ी हुई भूमि को तोड़ कर उसे आसानी से कृषि योग्य भूमि में परिवर्तित किया जा सकता है। इस तरह कृषि पर जनसंख्या में वृद्धि के साथ-साथ कृषि योग्य भूमि में भी वृद्धि की जा सकती है। परन्तु पूंजीवादी सरकार ने ऐसा नहीं किया। इसीलिए स्वतन्त्रता के २६ वर्षों के बाद भी गांवों की आर्थिक स्थिति में संतोषजनक परिवर्तन नहीं हुआ। परिणाम स्वरुप बढ़ती हुई दरिद्रता और भूमिहीनों की तादाद में वृद्धि ग्रामीण आर्थिक प्रगति की उपलब्धि रही है।

१९७१–७२ में हरित क्रांति का सरकार ने अत्यधिक प्रचार किया। सम्भावना हुई थी कि गावों की हालत में क्रांतिकारी सुधार होंगे, परन्तु दरिद्रता की सीमा रेखा के नीचे ग्रामीण जनता का प्रतिशत बढ़ गया। देश की आधी जनता भूखमरी में जी रही है। प्रति व्यक्ति आय में १९६०-६१ के मूल्यों के आधार पर नगण्य वृद्धि हुई और उसका भी बड़ा लाभ उच्च वर्ग और कुछ मध्यम वर्ग को हुआ है। यद्यपि मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग के उपभोग स्तर में भी गिरावट आयी है।

आज खेतीहर मजदूरों की संख्या और उसकी गरीबी में वृद्धि होती जा रही है। १९६१ में कुल जनसंख्या का १६.२१ प्रतिशत खेत मजदूर था, वह १९७१ में जनसंख्या की वृद्धि के साथ २५.७६ प्रतिशत हो गया। मूल्यों की वृद्धि के अनुपात में उनकी मजदूरी में नगण्य वृद्धि हुई है। चूंकि स्वतन्त्रता के २६ वर्षों के उपरान्त भी २० प्रतिशत भूमि सिंचित हो पायी है वह भी अनिश्चितता के झूले में झूलती है यद्यपि इस देश को बारह मासी नदियों के बहुलता का सौभाग्य प्राप्त है। अब तक जनसंख्या भी स्वतन्त्रता पूर्व की जनसंख्या से डेढ़-गुनी के लगभग बढ़ गयी है। यही कारण है कि आजादी के पूर्व भी अकाल था और अब भी अकाल पड़ता है।

उपरोक्त तथ्यों से यह भलि भांति स्पष्ट है कि भारत तब तक आर्थिक प्रगति नहीं कर सकता है जब तक ग्राम को इकाई बनाकर आर्थिक कार्यक्रम नहीं तय किया जाता है। कृषि पर अवलम्बित उद्योग-धंधों के विकास को प्राथमिकता नहीं दी जाती। चूंकि यह देश विशाल श्रम शक्ति और विपुल प्राकृतिक सम्पदा वाला देश है इसलिए उत्पादनवर्धक और रोजगारपरक (Production Oriented and Labour intensive,) मध्यम और लघु उद्योगों का ही अवलम्बन लेकर देश के सम्पूर्ण श्रम शक्ति और विशाल प्राकृतिक सम्पदा का समुचित उपयोग किया जा सकता है। तभी इस देश का द्रुत गति से आर्थिक

और औद्योगिक विकास हो सकता है । बेकारी की भयंकर समस्या का भी तभी समूलोच्छेदन सम्भव है। भारत जैसे देश में भारी उद्योगों के विकास का अवलम्बन मात्र आधारभूत उद्योगों (Basic and key industries) के रूप में ही किया जा सकता है। रक्षा प्रतिष्ठान आदि भी इसके अन्तर्गत आ सकते हैं। परन्तु भारी उद्योगों के विकास की प्राथमिकता द्वारा करोड़ों लोगों की बेरोजगारी को समाप्त कर देश को आर्थिक एवं औद्योगिक प्रगति की ओर नहीं ले जाया जा सकता। अर्थात् जहां तक सम्भव हो सके उपभोग प्रधान वस्तुओं का उत्पादन मध्यम तथा लघुउद्योगों द्वारा किया जाय। उत्पादक शक्तियों के विकास से सम्बंधित मशीनरी एवं बड़े पैमाने पर निर्यात किए जाने वाली वस्तुएं ही भारी उद्योगों द्वारा उत्पादित हो।

ग्रामीण जनता एवं देश हित में कृषि उन्नति और कृषि पर आधारित उद्योगों के विकास के लिए भूमि सुधार कानून का कड़ाई से लागू करना अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु दुर्भाग्य से कांग्रेसी सरकार ने भूमि सुधार नीतियों को लागू करने का आश्वासन देने के बाद भी विपरीत आचरण प्रस्तुत किया है। यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि वर्तमान सरकार पूंजीपतियों और बड़े जमीदारों की सरकार है। चौथी पंचवर्षीय योजना में केन्द्र सरकार ने भूमि सुधार पर खर्च करने के लिए ४२ करोड़, ३४ लाख की मन्जूरी दी थी। परन्तु राज्य सरकारों ने इसमें से मात्र १९ करोड़, ९० लाख रुपये ही खर्च किए। यह आंकड़े योजना मंत्री दुर्गा प्रसाद धर ने ही दिये हैं। इस हिसाब से भी प्रमाणित होता है कि भूमि सुधार में कांग्रेसी सरकारों की कितनी दिलचस्पी है।

केन्द्रीय सरकार और राज्यों के कांग्रेसी मुख्य मन्त्रियों की प्रत्येक वर्ष भूमि सुधार के लिए बैठकें हो रही हैं। परन्तु परिणाम में भूमिहीनों और खेत मजदूरों की संख्या मे वृद्धि होती जा रही है। सरकार भूमि सीमा को लागू कर गरीबों का मसला हल नहीं करना चाहती है। आज सरकार की वर्तमान नीतियों के फलस्वरूप पचहत्तर प्रतिशत किसानों के पास कुल कृषि योग्य भूमि का ३१ प्रतिशत है। शेष ६९ प्रतिशत भूमि २५ प्रतिशत बड़े जमीदारों के पास है। बिहार, उड़ीसा, गुजरात, महाराष्ट्र और मैसूर का ३० प्रतिशत कृषक परिवार एक एकड़ के आस-पास ही भूमिपति हैं। केरल और तमिलनाडू में ५० प्रतिशत कृषक परिवार एक एकड़ की जोत पर कृषि करते हैं। आसाम, बंगाल, हरयाणा और पंजाब में ऐसे कृषक ४० प्रतिशत तक हैं। बड़े किसान स्वयं खेती नहीं करते, भूमिहीन खेत मजदूर और कम जोतों वाला किसान उनके लिए अपना खून और पसीना एक करता है। भूमि सीमा अधिनियम सिद्धांत तक सीमित रह गया है। अवैध एव वैध भूमि हस्तांतरण ने इस अधिनियम की वास्तविक मंशा को भी नष्ट कर दिया है। भिन्न २ प्रदेशों में इससे सम्बन्धित नीतियां भी अलग-अलग हैं, फलस्वरूप बचने के लिए बड़े २ जमींदारों ने तलाकों के झूठे नाटकों का भी अवलम्बन लिया। चूंकि भूमि सीमा अधिनियम के अन्तर्गत विभिन्न राज्यों में भूमि सीमा ११ एकड़ से २६ एकड़ तक रही इसलिए बड़ा किसान अप्रभावित रहा। आंध्र, बंगाल, तमिलनाडु, राजस्थान व अन्य राज्यों में छीनी गई भूमि का हस्तांतरण भी नहीं हुआ। मूक और भाग्य वादी किसानों का सरकारी और भ्रष्ट नेताओं ने खुल कर शोषण किया। इस देश में केवल काश्मीर राज्य में ही प्राप्त अतिरिक्त भूमि भूमिहीनों में वितरण कियागया। देश भर में भूमि सुधार के नाम पर प्राप्त मात्र २४ लाख एकड़ अतिरिक्त भूमि में से केवल ५० प्रतिशत भूमि हीवितरित हुई है।

आज देश में जोती जाने वाली भूमि लगभग ३३ करोड़ एकड़ है और देश में पर्याप्त कृषि योग्य पर्याप्त भूमि परती पड़ी हुई है। इस तरह परती पड़ी हुई भूमि को कृषि योग्य बनाकर तथा भूमि सीमा को कड़ाई से लागू कर पर्याप्त अतिरिक्त भूमि प्राप्त की जा सकती है। उसे भूमिहीनों और बहुत ही कम जोत वाले गरीब किसानों में वितरित करके ग्रामीण बेकारी की समस्या को बहुत हद तक हल किया जा सकता है। भूमि सुधार को ठीक से लागू कर कृषि योग्य भूमि को जल्दी से जल्दी सिंचित भूमि में परिवर्तित करने के लिए जबरदस्त प्रयास होना चाहिए। परन्तु पूंजीवादी कांग्रेसी सरकार ऐसा न करके जनता को झूठे आश्वासन देती रही और आधी से अधिक जन संख्या के जीवन के साथ खिलवाड़ करती रही है।

पांच सदस्यीय परिवार के लिए १० से १५ एकड़ के बीच भूमि उत्पादकता की दृष्टि से सिंचित भूमि की सीमा होनी चाहिए। वर्तमान मूल्यों के आधार पर इससे कम की भूमि सीमा उत्पादन में बाधक होगी और पांच सदस्यीय परिवार के लिए आर्थिक दृष्टि से अपर्याप्त होगी। असिंचित भूमि की सीमा २० एकड़ से ३० एकड़ के बीच होनी चाहिए। जिनके पास उक्त सीमा से अधिक जमीन हो लेकिन वे शारीरिक रुप में मुख्य कृषि कार्यों में हिस्सा नहीं लेते हों उन्हें सीमा से कम या बराबर भी जमीन रखने की अनुमति नही देनी चाहिए। ऐसे लोग दूसरे व्यवसायों के साथ बड़े- २ जोतों के स्वामी होते हैं। ऐसे लोगों को भूमि रखने का कुछ भी अधिकार नहीं होना चाहिए। उनकी जमीने बिना किसी मुआवजे के खेतीहर मजदूरों और गरीब किसानों में वितरित कर देनी चाहिए ऐसा करके ही बहुसंख्यक ग्रामीण तबके को अधिक से अधिक उत्पादन करके अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने तथा आगे अपनी स्थिति में सुधार के लिए कठोर श्रम करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

भूमि सीमा के आधे तक की जोत वाले किसानों के भूमि स्वामित्व पर कोई हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए चाहे वे स्वयं खेती न करते हो और यहां तक कि वह छोटा-मोटा कोई दूसरा धंधा या नौकरी भी करते हों। ऐसा करके ही भूमिहीनों को भूमि देना निश्चित हो सकता है और गरीब किसानों को संरक्षण मिल सकता है। यों तो जब तक देश की कृषि पर आधारित विशाल आबादी को उद्योग-धंधो में नहीं लगायेंगे तब तक अनार्थिक जोतों पर अधिकांश जनसंख्या को लगा कर हम जनता के प्रबल औद्योगिक आग्रह (Industrial urge) को क्रियान्वित नहीं कर सकते है और देश को औद्योगिक विकास की तरफ नहीं ले जा सकते हैं।

अत: जब तक कुल कृषकों में ७५ प्रतिशत अर्थात २२.५ करोड़ कृषक को जो सम्पूर्ण कृषि योग्य भूमि का केवल ३[illegible] प्रतिशत जोतते हैं और देश की सम्पूर्ण जनसंख्या के २६ प्रतिशत से अधिक अर्थात् १५ करोड़ खेत मजदूर को जिनमें ९[illegible] प्रतिशत खेतीहर मजदूर दलित और पिछड़े वर्ग के हैं, संगठित कर उनके राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना को कर उन्नत नहीं किया जाता और उनके द्वारा वर्तमान सरकार को उखाड़ नहीं फेंका जाता तबतक सरकारी कृषि और औद्योगिक नीतियों के दो पाटों के बीच भारतीय जनता पिसती रहेगी। —गिरजेश्व[illegible]

हरयाणा सरकार का बजट

हरयाणा विधान सभा बजट अधिवेशन १८ जनवरी को खत्म हुआ। यह अधिवेशन नया वित्त वर्ष शुरु होने के पूर्व ही बुलाया गया था। हरयाणा विधान सभा ने ३१८ करोड़ का बजट आज १६ जनवरी को ध्वनि मत से पारित करदिया। इस वर्ष का योजना बजट ७५ करोड़ का था। दूसरे वर्ष यह ७६ करोड़ से अधिक का नहीं हो सकेगा जो वर्तमान में तेजी से बढते हुए मूल्यों की तुलना में इतना अपर्याप्त होगा कि इसमे 'बहुत ही कम' वर्तमान विकास दर को भी कायम रखना सम्भव नहीं है। वर्तमान बजट में गत वर्ष की तुलना में ३ करोड से अधिक का घाटा है। वर्तमान समय में सरकार ने १८ करोड़ के घाटे की पूर्ति के किसी भी स्रोत का जिक्र नहीं किया है। घाटे का बजट चाहे केन्द्र सरकार का हो अथवा प्रान्तीय सरकार का वह मुद्रास्फीत-वर्धक होता है परिणाम स्वरुप मूल्यों में वृद्धि होती है और जनसाधारण अप्रत्यक्ष करों का शिकार होता हैं। वर्तमान सरकार का घाटे की पूर्ति के स्रोतों का कुछ भी जिक्र न करना और केन्द्रीय सरकार से सहायता के आश्वासन की बात करना इस बात का प्रबल प्रमाण है कि सरकार राज्य पर भारी कराधान का अवलम्बन लेगी और राज्य की अधिकांश गरीब जनता, छोटे दूकानदार, कर्मचारी, मजदूर तथा किसान उससे अत्यधिक प्रभावित होंगे। प्रान्तीय सरकारों के घाटे के बजट का प्रभाव केन्द्रीय सरकार पर पड़ेगा और परिणाम स्वरुप केन्द्रीय सरकार भी घाटे की बजट का अवलम्बन लेगी। अब तक के पिछले बजट इस बात के प्रबल प्रमाण हैं कि केन्द्रीय सरकार घाटे की पूर्ति इजारेदार संस्थानों तथा बड़े-बड़े जमीदारों पर प्रत्यक्ष करों का अवलम्बन लेकर नहीं की है। उसने हमेशा अप्रत्यक्ष करों का अवलम्बन लेकर जन साधारण के दुःख-दर्द को बढ़ाया है। चौं. बशीलाल की सरकार का १८ करोड़ के घाटे की पूर्ति का जिक्र न करना प्रत्यक्ष कराधान से स्पष्ट इनकार करना है और बाद में अप्रत्यक्ष करों का अवलम्बन लेना है। अतः बजट अधिवेशन के बाद हरयाणा सरकार को घाटे की पूर्ति के लिए भारी करों का अवलम्बन अवश्य लेना पड़ेगा क्योंकि गत वर्ष का दो-तिहाई घाटे का बजट अभी तक किन्हीं स्रोतों से पूरा न किया जा सका है।

हरयाणा सरकार ने कहा कि इस राज्य के पास योजना को क्रियान्वित करने के लिए आय के अपने स्रोत सीमित है अतः केन्द्र और अन्यत्र से धन लेना राज्य की आर्थिक प्रगति के लिए अत्यन्त आवश्यक है। राज्य के वित्त मंत्री ने वित्त आयोग की रिपोर्ट के आधार पर कहा कि अन्य राज्यों को जैसे राजस्थान को जहां गत पांच वर्षों में ३७५ करोड़ रु. केन्द्र को चुकाने हैं वहीं हरयाणा को मात्र ६४ करोड़ रु० चुकाने है। सरकार ने चौथी पंचवर्षीय योजना में ६ प्रतिशत विकास दर प्राप्त करने की जगह ८.८ प्रतिशत विकास दर प्राप्त करने का दावा किया है।

यदि सरकार के उपरोक्त दावे सही हैं तो हरयाणा सरकार की बजट पुस्तिका में १९६०-६१ के मूल्यों के आधार पर प्रति व्यक्ति वार्षिक आमदनी १९७०-७१ में ४३७ रु. से घट कर १९७१-७२ में ४३४ रु. और १९७२-७३ में ४२६ रु. क्यों दर्ज है। हरयाणा सरकार के स्वयं के आंकड़े गत चार वर्षों से इस प्रदेश की गिरती हुई हालत को स्वतः स्पष्ट करते हैं और इसकी अतिशयोक्तिपूर्ण आर्थिक विकास के दावे को झूठा सिद्ध करते हैं। सरकार के स्वयं के आंकड़े से एक बात और स्पष्ट होती है कि वार्षिक जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में इस प्रदेश का अपेक्षित आर्थिक विकास नहीं हुआ। सरकारी आंकड़ों के अनुसार इस प्रदेश ने १९६५-६६ में बिना भारी विनियोग के ९ प्रतिशत वार्षिक विकास दर प्राप्त कर लिया था। अब जब कि भारी विनियोग हुआ है विकास दर क्यों स्थिर होकर गिरावट की ओर अग्रसर है? गत चार वर्षों में हजारों नलकूप लगे और उन्हे बिजली सप्लाई की गयी। बहुत सी सिचाई की सुविधाएं उपलब्ध की गई परन्तु इसके बावजूद राज्य में चार वर्ष बाद २७ हजार टन खाद्यान की कमी हुई।

इस कमी का मुख्य कारण यह है कि जिन स्थानों पर पानी, बिजली और खाद पहुचानी चाहिए थी वहां नहीं पहुंचाई गई वल्कि उन स्थानों पर इन सामानों की सप्लाई की गई जहां इनकी अधिक आवश्यकता नहीं थी। दूसरा कारण फिजूल खर्ची, गैर विकास योजनाओं और अनुत्पादक कार्यों को भी अधिक प्रश्रय दिया जाना है।

ऐसी स्थिति में जब विकास दर गिरावट की ओर अग्रसर हो सरकार राज्य में अनुत्पादक कार्यों में धन लगाने जारही है। प्रश्नोत्तर काल के दौरान आबकारी मंत्री श्याम चन्द्र जी ने बताया कि सरकार राज्य में शराब की एक और फैक्ट्री स्थापित करने जा रही है उन्होंने आंकड़ों द्वारा स्पष्ट किया कि पांच वर्षों में राज्य में देशी शराब की खपत दुगनी एवं भारत में बनी विदेशी शराब की

(शेषांश पृष्ठ १२ पर)

बड़े पूंजीपतियों को सरकारी खजाने से अरबों रुपयों का उपहार

कांग्रेस नेता प्रचार करते नहीं थकते कि नेहरु जी और शास्त्री जी समाजवाद कायम कर रहे थे और इन्दिरा गाँधी तो उनसे भी अधिक शक्ति से समाजवाद लाने की प्रयास कर रही हैं। काश ! इस प्रचार में जरा भी सचाई होती। असलियत तो यह है कि समाजवाद की धोखे की टट्टी की आड़ में देश के वर्तमान शासक बड़े-बड़े पूंजीपतियों को ही मालामाल करते रहे हैं और आज भी कर रहे हैं। विभिन्न सरकारी संस्थाओं द्वारा ये शासक करोड़ों रुपयों की सहायता बड़े पूंजीपतियों को देते रहे हैं। आज भी वे यह सहायता दे रहे हैं।

करोड़पतियों को अरबपति वर्तमान शासक किस प्रकार बनाते रहे हैं, उसके लिए जरा ध्यान देने की बात है। सबसे पहले इजारेदार पूंजीपतियों के ७३ घरानों को लीजिए।

७३ घरानों को दी गई आर्थिक सहायता

जिन संस्थाओं द्वारा मदद	(लाख रु. में)
यू. डी. बी. आई (३०-४-७३ तक)	२४४४१.००
आई. एफ. सी. आई. (३०-४-७३तक)	१४४४२.००
एल. आई. सी. (३१-३-७३ तक)	११४८६.००
यू. टी. आई. (३०-४-७३ तक)	४६४२.२०
आई सी. आई. सी. आई. (३१-१२-७२ तक)	१८७५५.००
कुल	७४०६६.२०

अर्थात् कांग्रेस शासकों की समाजवादी सरकार ने ७३ घरानों को लगभग ७ अरब ४१ करोड़ रुपया दिया है।

टाटा को दी गई मदद

अब जरा कुछ बड़े-बड़े पूंजीपतियों को लीजिए जिनको कांग्रेस शासको ने सरकारी संस्थाओं से करोड़ों रुपये सौप कर मालामाल बनाया है। सबसे पहले टाटा को लिजिए।

संस्थाओं के नाम	(लाख रु. में)
यू. डी. बी. आई.	२६०८.००
आई. एफ. सी. आई.	८२६.५५
एल. आई. सी.	२५४१.००
यू. टी आई.	११९४.१६
सी. आई.	३०००.००
कुल	१०१६९.७१

अर्थात "समाजवादी" शासको ने टाटा को सरकारी खजाने से लगभग १ अरब दो करोड़ रुपये दिए।

बिड़ला को दी गई मदद

वर्तमान शासकों ने बिड़ला को किस प्रकार सरकारी खजाने से रुपया सौंपा है, उसकाहिसाब लिजिए।

संस्थाओं के नाम	(लाख रु. में)
यू. डी. बी. आई.	३८७६ ००
आई. एफ. सी. आई.	११२१.१२
एल. आई. सी.	१७१५.००
यू. टी. आई.	७६५.२९
आई. सी. आई. सी. आई.	१८११ ००
कुल	९२८८.४१

अर्थात् लगभग ९३ करोड़ रुपया सेठ बिड़ला को सौंपा गया।

मफतलाल को दी गई रकम

मफत लाल पर हमारे वर्तमान शासक बड़े मेहरबान रहे हैं। अतः इनको दी गई रकम का ब्यौराः—

संस्थाओं के नाम	(लाख रु में)
यू. डी. बी. आई.	१४१३.००
आई. एफ. सी. आई.	४३९.२०
एल. आई सी.	६८७.००
यू. टी. आई.	१४५.००
आई. सी. आई. सी. आई.	१००१.००
कुल	३६८५ २०

अर्थात् सरकार ने मफतलाल को लगभग ३७ करोड़ रुपये सरकारी खजाने से दिए हैं।

बांगड़ को दी गई आर्थिक सहायता

इसी प्रकार बागड़ को लगभग ३७ करोड़ रुपये की मोटी रकम सरकारी खजाने से सौपी गई जिसका हिसाब निम्न प्रकार है—

संस्थाओं के नाम	(लाख रु. में)
यू. डी. बी. आई.	८३२.००
आई. एफ. सी. आई.	१०२३.६७
एल. आई. सी.	५६१.००
यू. टी. आई.	२३२.६४
आई. सी. आई. सी. आई.	१००९.००
कुल	३६५८.३१

दूसरे आठ भी मालामाल

इसी प्रकार दूसरे आठ बड़े पूंजीपतियों का भी हिसाब लिजिए। कांग्रेस शासक ने विभिन्न सरकारी संस्थाओं के जरिये जुग्गीलाल कमलापति (जे० के०) को ३१ करोड़ ३८.७७ लाख रुपये, ए. सी. सी. को १९ करोड़ २८.२४ लाख, आई. सी. आई. को १८ करोड़ ७.७३ लाख, मार्टिन बर्न को १६ करोड़ ४३ लाख, थापड़ को ८ करोड़ ९.१७ लाख, स हू जैन को ४ करोड़ ७६ लाख, गोयनका (डंकन ब्रदर्श को) ३ करोड़ १३.४० लाख और सूरजमल नागरमल को २ करोड़ ४४. ६० लाख रुपये सौंपे। यानी कुल बारह घरानों को उन्होंने ३४१ करोड़ ६८.५५ लाख रूपये दिए।

आम जनता की तबाही बढ़ती है। महंगाई और बेरोजगारी बढ़ती है। फिर भी हर साल उस पर प्रत्यक्ष और उससे कई गुना ज्यादा अप्रत्यक्ष करों का बोझ लादा जाता है। आवाम से छीनी गई इसी रकम को कांग्रेस शासक बड़े बड़े पूंजीपतियों को सौंपते हैं। बड़े पूंजीपति भी इनको संसद में भेजने के लिए करोड़ों रुपये खर्च करते हैं। कांग्रेस के चुनाव कोष में बड़ी बड़ी रकमें देते हैं। वे आये गये और तरह तरह के मन्त्रियों पर फल-फूल भी चढ़ाया करते हैं। इस तरह कांग्रेस शासकों और बड़े पूंजीपतियों का आपसी लेन देन चलता है। कांग्रेस शासकों के जनतांत्रिक समाजवाद का यही घिनौना रूप है। उनके इसी रास्ते के चलते सारा देश बर्बाद हो रहा है।

(स्वाधीनता से साभार)

हिन्दुस्तानी बच्चे को मदहे के बोझ से मुक्ति दिलाओ

स्व० डा० राममनोहर लोहिया

"किसी भी भाषा की अनिवार्य ढ़ाई का विरोध क्यों करते हो? भाषाएं ातनी भी सीख ली जाएं उतना ही च्छा" ऐसा कहना आज एक फैशन ना गया है और इस फैशन के शौकीन धिकांश वे बूढ़े मिलेंगे जिन्होंने दो दर्जे क उर्दू पढ़ी है, आर्य समाज के मन्त्री ंजाने पर भी जिन्होंने हिन्दी नहीं खी, खालसा-दल के सक्रिय सदस्य होते भी जो पंजाबी न सीख पाए तथा वल्ल अंग्रेजी से ही देश का उद्धार मानते भी जो ए. बी. सी. तक न सीख े।

नेहरू जी ने जब आसाम का दौरा या था तो उनसे कुछ विद्यार्थी मिले और उन्होंने अपनी राम कहानी ाई थी कि हम तो भाषाओं के बोझ मारे मरे जाते हैं। आसाम के वासी से आसामी तो हम पढ़ते ही है, ल्ल द्वारा इस क्षेत्र के प्रभावित होने कारण हमारे लिए बंगला पढ़ना भी म्मी किया हुआ है, मुसलमान होने कारण उर्दू भी हमारे गले से टी हुई है और हिन्दुस्तानी होने से ी पढ़ने को भी मजबूर हैं और फिर साबसे ऊपर सवार है अंग्रेजी। अब इए हम किस किस को याद करें। पर कम्बख्ती यह कि इन पांचों ओं की लिपियां भी अलग-अलग अत: हमें बचाइए। नेहरू जी ने तो उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया परन्तु आकर अपने एक भाषण में अपनी यारी जाहिर कर दी थी।

न्दुस्तान के विद्यार्थी की समस्या को सुलझाने की कोशिश कोई भी नहीं करता। सभी बे-अख्त्यारी जाहिर कर देते हैं। अपनी विवशता प्रकट कर देते हैं। पर अब विवशता भी प्रकट करने की जरूरत नहीं। बहाना मिल गया है कि किसी भाषा का विरोध बुरी बात है। भाषाएं जितनी भी अधिक सीख ली जाएं उतना ही अच्छा।

हिन्दुस्तान में बचपन से बुढ़ापे तक भाषा-ज्ञान यानी हिन्दी, बंगाली, संस्कृत अरबी, फारसी, अंग्रेजी आदि सीखने का जो भारी बोझ डाला जाता है उसकी वजह से भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, रसायन, भौतिकी, भूगर्भ आदि विद्याओं का ज्ञान हो ही नहीं पाता। विशेष पद-प्राप्त विदेशी भाषा अंग्रेजी को ही सीखने में विद्यार्थी सारी उमर गुजार देता है। भाषा पर अधिकार प्राप्त करने का उसे इतना ध्यान रहता है कि विषय-ज्ञान की गहराइयों तक वह पहुंच ही नहीं पाता। इसी लिए आज भारत में विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, इतिहास, भूगोल आदि अंग्रेजी की सस्ती नकल के रूप में विद्यमान है, उनका कोई मौलिक गठन नहीं। भारतीय आवश्यकताओं और समस्याओं को सुलझाने की चेष्टा नहीं और न विश्व के दूसरे मुल्कों के वैज्ञानिकों तथा अर्थशास्त्रियों के कोटि के विद्वान ही यहां पैदा होते हैं। भारतीय विद्यार्थी समाज अंग्रेजी भाषा के जंजाल में जकड़ लिया गया है।

इस सम्बन्ध में कुछ विचित्र तर्क भी सुनने को मिलते हैं। एक तर्क यह है कि बंगला, हिन्दी, पंजाबी, तमिल आदि सब देशी भाषाएं कच्ची हैं। इन से दुनियाँ का ज्ञान नहीं मिलता। इसलिए हमको एक पकी हुई यूरोपीय भाषा चाहिए। यह तर्क झूठा है। फ्रेंच की तुलना में हिन्दुस्तान की भाषाओं का भण्डार चार पांच गुणा अधिक है। अंग्रेजी से हिन्दी या बंगला का शब्द-भण्डार दुगना है। संस्कृत के समास के आधार पर इन भाषाओं में शब्द गढ़ने की अपार क्षमता है। हां एक फर्क है। पिछले डेढ़ सौ वर्ष में यूरोप की भाषाओं के शब्दों के अर्थ स्थिर हो गए हैं, मगर हमारी भाषा के शब्द बन्ध नही पाए, वे बदलते रहते हैं, उनको स्थिर करना है निरन्तर इस्तेमाल से ही अर्थ स्थिर होता हैं। यह उल्टा तर्क है कि देशी भाषाओं से ज्ञान असम्भव है। अगर रूस के वैज्ञानिकों को अंग्रेजी पढ़नी पड़ती तो स्पुतनिक का आविष्कार न हो पाता। रूसी भाषा तो तीस या चालीस साल पहले हिन्दी या बंगला जैसी थी, शायद कुछ मामलों में और भी ज्यादा गई गुजरी। एक हजार वर्ष पुरानी रूसी है। परन्तु हिन्दी, बंगला, मराठी, आदि अपनी मां संस्कृत, प्राकृत, पाली आदि के जरिये पांच या छः हजार वर्ष पुरानी हैं। लोक सरकार चाहे वह फासिस्ट या कम्युनिस्ट ही क्यों न हों, लोकभाषा में काम करती है। रूस की सरकार भी हालांकि वह लोकहित राक्षसी ढंग से चाहती है, अपनी देशी भाषा का ही प्रयोग करती है। रूस में एक हजार में एक वैज्ञानिक अंग्रेजी जानता है। जर्मन के वैज्ञानिक अंग्रेजी नहीं जानते। किसी नई खोज का अनुवाद उनकी भाषा में छप जाता है।

एक तर्क और चलता है—"चश्मा अंग्रेजी, बाल काटना अंग्रेजी, फिर कैसे और क्यों अंग्रेजी छोड़े? हम पूछते हैं

कि चश्मा अंग्रेजी है क्या ? सभी गोरी जातियों को अंग्रेजी नाम क्यों देते हो ? यह हिन्दुस्तानियों की सबसे बड़ी भूल है। दुनियां को आधुनिक वस्तुएं और पद्धतियां केवल अंग्रेजों की देन नहीं है। पैट्रोल, हवाई जहाज अमरीका का है। बिजली अंग्रेजों की है। रेडियो और चश्मा जर्मनी का है। हिन्दुस्तान में भ्रम फैला है कि सबके आविष्कारक अंग्रेज है। फिर सबकी भाषा सीखो, केवल अंग्रेजी ही क्यों ? यूरोपीय बाल काटना, विशेषकर औरतों का, वास्तव में अजंता और एलोरा पद्धति की नकल है।

आप बुनियादी सवाल को पकड़िए। व्यापार और लेन-देन कैसे चलता है ? इस के तीन विभाग हैं, वस्तु, विचार और नामकरण। बारूद एक वस्तु है जिससे पटाखा, गोली वगैरह बनती हैं। चीन ने सब से पहले बारूद बनाई। पर बहुत से लोग इसे अंग्रेजी समझते हैं और गन पाऊडर कहते हैं। अनपढ़, एम. ए. ईसाई समझते हैं कि अंग्रेजी उनकी धार्मिक भाषा हैं। ईसामसीह की भाषा अंग्रेजी नहीं थी। ईसा ने अरमैक भाषा में धर्म-प्रचार किया था। वह भाषा मर गई, पर वह हिन्दुस्तान के अधिक नजदीक थी। अरमैक लिपि का प्रभाव ब्राह्मी के द्वारा हिन्दी और बंगला आदि पर है। ईसाई धर्म का अंग्रेजी से कोई सम्बन्ध नहीं है।

अब विचार को लीजिए जैसे साम्यवाद, गांधीवाद आदि। विचार का लेन-देन बेहिचक होना चाहिए। फिर नामकरण लीजीए। मोटर में हमने दोनों को लिया, वस्तु भी और नाम भी। भाषा असल में नाम का संग्रह है। चीजों की संज्ञाओं और नामों का समूह है। चीज और विचार हम कहीं से भी ले सकते हैं पर नामकरण तो पहले हम अपनी भाषा में करेंगे। यदि आवश्यकतानुसार विदेशी नामकरण लेना भी पड़े तब भी अपने संस्कार के अनुसार उसे तोड़-मोड़ कर लेना होगा। भाषा ऐसी बनानी है जो जानदार और जोरदार हो। आज बहुत से लोग जानते हैं कि लालटेन हिन्दी है, पर यह शब्द अंग्रेजी से आया है। नामकरण में सावधान रहना चाहिए। हम दूसरों से नाम क्यों लें ? जब हमारे पास शब्द-भण्डार है। अगर हम नाम लेते हैं तो अपना नाम एडवर्ड और जान क्यों नहीं रखते। शान्ति और सीता क्यों रखते हैं ?

यदि ज्ञान हासिल करना है तो भाषा-ज्ञान की जगह विषय-ज्ञान में दिमाग लगाओ। पांच वर्ष की उमर से ही भारतीय बच्चा पागल बना दिया जाता है। अन्त तक उसकी यही हालत रहती है। उस के दिमाग पर भाषा-ज्ञान का भारी बोझ डाल दिया जाता है। विषय ज्ञान उसको नहीं मिल पाता। यही दुर्दशा हिन्दुस्तान के विश्वविद्यालयों के विद्वानों की है। वे गदहा बन गए हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि रूस और जापान के वैज्ञानिक भाषा-ज्ञान के बोझ के बिना विषय-ज्ञान के बल पर आविष्कार कर पाते हैं और हम सारी उमर भाषाएं पढ़ने में गुजार देते हैं। भाषा-ज्ञान और विषय-ज्ञान का अन्तर समझना पड़ेगा। अगर हिन्दुस्तानी बच्चे पर से भाषा-ज्ञान का अनावश्यक बोझ हटा दिया जाए तो उसका विषय-ज्ञान गहरा और विस्तृत हो जाएगा, यह एक निर्विवाद सत्य है।

हिन्दुस्तानी बच्चे को गदेह के बोझ से मुक्ति दिलाओ। सब स्कूलों और कालिजों में जबरदस्त आन्दोलन चलना चाहिए। आज अंग्रेजी जबरदस्ती पढ़ाई जाती है। सबसे ज्यादा बच्चे अंग्रेजी में फेल होते हैं। देश का रुपया और समय दोनों नष्ट किए जा रहे हैं। "जो दिमाग किसी विदेशी भाषा को न सीखे वह विषय-ज्ञान भी नहीं सीख सकता" यह गलत तर्क है। विदेशी भाषा की अनिवार्य पढ़ाई के खिलाफ एक आन्दोलन खड़ा करके कहना है कि अब हमारे दिमाग को छुट्टी दो। हमें सबल राष्ट्र बनाना है। विषय-ज्ञान हासिल करना और भाषा ज्ञान के बोझ से छुटकारा पाना है।

समचार दर्शन

चुनाव सम्पन्न

झज्जर, ७ जनवरी। रिक्शा यूनियन जज्जर की बैठक डा० कृष्णदत्त की अध्यक्षता में हुई। डा० साहब ने सभी रिक्शा चालकों को अनुशासित रहने तथा श्रमिक संगठन पर बल देते हुए विधिवत चुनाव सम्पन्न कराया।

प्रधान—डा० कृष्णदत्त, मन्त्री—ओ३म प्रकाश, कोषाध्यक्ष—नरेश कुमार

मन्त्री ओमप्रकाश ने हर मास के अन्त में रविवार को बैठक करने तथा एक रुपया मासिक सदस्यता शुल्क देने की घोषणा की। चालकों ने निर्धारित किराया लेने तथा नम्बर पर रिक्शा चलाने का निर्णय लिया।

आर्य युवक परिषद् रोहतक रोड, झज्जर

७ जनवरी ७४ को श्री मामनसिंह आर्य की अध्यक्षता में आर्य युवक परिषद् का चुनाव सम्पन्न हुआ। इसमें निम्न पदाधिकारी मनोनीत हुए।

प्रधान—श्री ओमप्रकाश सिंह व मामनसिंह। मन्त्री—श्री धर्मसिंह जी आर्य कोषाध्यक्ष—श्री पूरनचन्द्र गोयल।

शोक समाचार

दानप्रिय सर्वप्रिय आर्य जगत के प्रसिद्ध कर्मकाण्डी पुरोहित श्री जयदयाल जी का ५ जनवरी ७४ को साढ़े पांच बजे सायंकाल असामयिक निधन हो गया। उनके निधन से आर्य समाज को गहरा आघात पहुँचा है। राजधर्म परिवार की तरफ से उनकी आत्मा कीं उत्तम गति के लिए एवं शोक संतप्त आत्मीय जनों के लिए अपार दुःख को सहन करने के लिए परमात्मा से प्रार्थना करते है।

शुद्धि समारोह

स्वामी ब्रह्मानंद जी सरस्वती उड़ीसा वाले ने जिला फुलवाणी के अन्तर्गत राईकिया कसबा के पास रोमन कैथोलिक केन्द्र के निकट गांव दड़िगीया में १६ दिसम्बर ७३ को २८ परिवारों में १२० नर-नारियों और २५-१२-७३ को २४ परिवारों के १२५ नर-नारियों का आत्मशुद्धि संस्कार सम्पन्न किया।

सस्था-चुनाव समाचार

डा० क्षोत्रिय की अध्यक्षता में हुई एक बैठक में आर्य सभा, पूर्वी—जिला दिल्ली प्रदेश का गठन हुआ एवं चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान—बाबा कर्मचन्द साहनी
मंत्री—ओम प्रकाश

आर्य समाज कनीना

श्री रामपत जी की अध्यक्षता में १४ जनवरी को इस आर्य समाज की बैठक हुई जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान—श्री देवराज जी, मन्त्री—श्री माधव सिंह जी, कोषाध्यक्ष—श्री घीसाराम जी।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस······

(पृष्ठ ८ का शेषांश)

शहीद हो जाय तो उनका मृत शरीर कलकत्ता भेजा जाय। जब शव कलकत्ता पहुँचा तो वहाँ सुभाष के नेतृत्व में ६ लाख आदमी उनके जलूस के साथ थे जो बंगाल ही नहीं सारे भारत के लिए उस समय तक रिकार्ड था।

भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव की फांसी का गांधी-इर्विन पैक्ट में जिक्र न होने से वह दुःखी थे। इसीलिए उन्होंने कहा था "इस अवसर पर जवाहरलाल नेहरू की जिम्मेदारी बहुत अधिक थी। कांग्रेस अध्यक्ष होने के अलावा वह कार्य समिति के एक मात्र सदस्य थे जो वामपक्षी मत के पैरोंकार थे और यदि वह समझौते से इन्कार कर जाते, तो महात्मा और कार्यसमिति अन्तिम रूप से पैक्ट को स्वीकार नहीं कर सकते थे। दुर्भाग्य से जवाहरलाल नेहरू ने घुटने टेक दिये और इस पैक्ट को कार्य समिति की स्वीकृति मिल गई और ५ मार्च को महात्मा और लार्ड इर्विन ने इस पर अपने हस्ताक्षार कर दिए।"

पैक्ट से १८ दिन बाद २३ मार्च १९३० को भगतसिंह, सुखदेव व राजगुरु को फांसी हुई। स्पष्ट है कि यदि जवाहर लाल सुभाषचन्द्र बोस का साथ देते तो पैक्ट नहीं होता।

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस अपने रेडियो भाषणों का अन्त हमेशा भगतसिंह द्वारा दिए इन्कलाब जिन्दाबाद और आजाद हिन्द जिन्दाबाद से करते रहे। इन नारों से स्पष्ट था कि उन्होंने अपना सम्बंध निश्चित रूप से भारत के पुराने क्रान्तिकारियों के साथ कर लिया था।

नेता जी यह भली भाँति जानते थे कि स्वराज्य आज नहीं तो कल अवश्य मिलेगा इसलिए वह नौकरशाही के ढांचे और चरित्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन चाहते थे जिससे दल या मन्त्रिमण्डल को आगे चलकर अपने सिद्धान्तों को कार्यरूप में परिणित करने में कोई दिक्कत न हो। सुभाष की ही यह दूरदर्शिता थी कि स्वतंत्रता के बाद देश योजनाबद्ध ढंग से ही प्रगति कर सकता है

(क्रमशः)

पंजीयन क्रमांक RTK 28
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

राजधर्म
रोहतक
२९ जनवरी १९७४

व्यवस्थापक ·
पुस्तकालय गुरुकुल कां
विश्वविद्यालय, हरिद्वा
जि० सहारनपु

स्वामी इन्द्रवेश जी का भव्य अभिनन्दन

शक्ति नगर दिल्ली में

१० जनवरी। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नव निर्वाचित प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी का स्वागत समारोह आर्य समाज शक्ति नगर में उत्तर दिल्ली की दर्जनों आर्य समाजों व शिक्षण संस्थाओं तथा क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार 'सम्पदा' मासिक पत्रिका के सम्पादक ने की।

इस अवसर पर केन्द्रीय आर्य महिला सभा दिल्ली की प्रधाना माता ईश्वरी देवी ने एक अभिनन्दन पत्र पढ़ते हुए आर्य समाज में नव निर्माण की सम्भावना व्यक्त की तथा स्वामी इन्द्रवेश जी को तिलक लगाकर आशीर्वाद दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान लाला रामगोपाल शालवाला ने समस्त आर्य जनों को सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

नवभारत टाइम्स के समाचार सम्पादक श्री हरिदत्त शर्मा ने स्वामी इन्द्रवेश व स्वामी अग्निवेश के कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण होने को ऐतिहासिक घटना बताया।

शिवाजी कालोनी, रोहतक में

रोहतक १३ जनवरी। आर्य समाज शिवाजी कालोनी में रोहतक नगर की समस्त आर्य समाजों तथा कुमार सभा, आर्य वीर दल, सैनी सभा की तरफ से स्वामी जी का स्वागत सम्पन्न हुआ।

तहसील झज्जर [रोहतक] हरयाणा में

आर्य समाज मंदिर झज्जर में तहसील झज्जर के आर्यसमाजों, कालेज के प्राध्यापकों, किसान और मजदूरों द्वारा भव्य स्वागत समारोह १३ जनवरी को सम्पन्न हुआ। अभिनन्दन पत्र के साथ पुष्प मालाएं पहनाई गई। हजारों नर-नारियों को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने कहा कि अब आर्यसमाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है और यह परिवर्तन आप लोगों के विशेष सहयोग से ही सम्भव है।

कुरुक्षेत्र में

१९ जनवरी, आर्यसमाज मन्दिर थानेसर में आयोजित समारोह में कुरुक्षेत्र जिले की लगभग सभी आर्य समाजों द्वारा स्वामी जी का अभिनन्दन किया गया। इस स्वागत समारोह में जिले के विशेष प्रतिनिधियों के साथ-साथ पत्रकार, विश्वविद्यालय प्राध्यापक, युवक वर्ग एवं शहर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। उनके स्वागत के प्रति जनता में विशेष उत्साह था। स्वामी जी को अभिनन्दन पत्र के साथ पुष्प मालाएँ पहनाई गयीं।

स्वमी इन्द्रवेश जी और स्वामी अग्निवेश जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यसमाज पर ही अब जनता की आशाएँ केन्द्रित हैं। आर्य समाजों में युवकों को दिक्षित कर शोषण, अन्याय और भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए ठोस कदम उठाया जायेगा।

इसी तरह पलवल, जीन्द रोहतक व गोहाना तहसील की तरफ से भी भव्य अभिनन्दन समारोह का सफलता के साथ आयोजन किया गया। इन समारोहों में कालेज के प्राध्यापकगण से लेकर विधिवक्ता गण, किसान, मजदूर, छोटा दूकानदार तथा स्कूलों के अध्यापक गण विशेष तादाद में उपस्थित होकर स्वामी जी का भव्य स्वागत किये।

आर्य युवक परिषद कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा नेताजी जन्म दिवस समारोह सम्पन्न

कुरुक्षेत्र, २३ जनवरी। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का ७८वां जन्म दिवस समारोह आर्य युवक परिषद् के तत्वाधान में विद्यार्थी भवन में डा० कृपाल चन्द्र यादव (इतिहास विभाग) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस समारोह में अधिक संख्या में विद्यार्थी उपस्थित थे। समारोह के प्रमुख वक्ता डा. रामप्रकाश (पंजाब विश्व विद्यालय चण्डीगढ़) ने अपने लम्बे भाषण में क्रान्तिकारियों के क्रांति प्रयासों का विवेचन किया और युवकों का आह्वान किया कि वे शोषण मुक्त समाज की स्थापना के लिए प्राण-प्रण से सचेष्ट होकर कर्म क्षेत्र में अधिक से अधिक संख्या में पदार्पण करें। शोषण मुक्त समाज की स्थापना का सच्चा प्रयास ही क्रांतिकारियों के लिए सच्ची श्रद्धांजलि है।

डा० योगेन्द्र (जीव विज्ञान) ने कहा कि, "बिना खून बहाये आजादी मिली है" कहना क्रांतिकारियों के प्रति जघन्य अपराध है। भूपसिंह, दर्शनसिंह टाइगर और अजीत सिंह महामन्त्री आर्य युवक परिषद् ने भी अपने हृदय के उद्गार व्यक्त कर नेता जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

अध्यक्ष ने अपने अध्यक्षीय भाषण में महान नेता सुभाष चन्द्र बोस के जीवन से युवकों को कर्मठ बनने की प्रेरणा दी। अन्त में रोशन लाल संयोजक आर्य युवक परिषद् ने नेता जी को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए सभी को धन्यवाद दिया।



❀ ओ३म् ❀

पाक्षिक

राजधर्म

वर्तमान व्यवस्था के ध्वंस से ही त्रा

विज्ञान और आर्थिक नीति

अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन छेड़ दो

हम ईश्वर को क्यों मानें ?

गरीबी की असलियत और समाधा

दूषण से मुक्ति और वन

प्रधान सम्पादक
स्वामी अग्निवेश

★

सह सम्पादक
गिरजेश्वर

★

फरवरी प्रथम
वर्ष ६ : अंक ३
वार्षिक शुल्क १५ रु०
एक प्रति ७० पैसे

... के लिए राजधर्म प्रेस, झज्जर रोड, रोहतक से स्वामी अग्निवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। दूरभाष : 882

सम्पादकीय

ओ३म्

वर्तमान व्यवस्था के ध्वंस से ही त्राण

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी भारत ने गणतन्त्र दिवस मनाया। भारत के राष्ट्रपति से लेकर प्रधान मन्त्री तक ने मिथ्या आश्वासनों द्वारा भारत के सुन्दर भविष्य की कल्पना प्रस्तुत किया। वर्तमान भयंकर आर्थिक कठिनाई को अस्थायी बतला कर देश की जनता को इस संकट की घड़ी में शान्ति पूर्वक कठोर श्रम करने और सुखद भविष्य की आशा में वर्तमान कष्टमय और अभावमय जीवन झेलने का उपदेश दिया। देश की वर्तमान स्थिति और पांचवी योजना को दृष्टि में रख कर प्रधान मन्त्री के सुखद भविष्य की कल्पना का मूल्यांकन इस गणतंत्र दिवस पर करना अत्यन्त आवश्यक है।

इसके सच्चे मूल्यांकन के लिए हमें सबसे पहले सरकारी योजनाओं की उपलब्धि का विश्लेषण करना चाहिए। प्रथम योजना के शुरू में योजना आयोग ने बेरोजगारों की संख्या का आंकलन ३८ लाख किया परन्तु योजना के अन्त में यह संख्या ५३ लाख हो गई। दूसरी योजना के लिए यह घोषणा की गई कि यह योजना बेरोजगारी को समाप्त कर देगी। परन्तु इस योजना के अन्त में बेरोजगारों की संख्या बढ़ कर ७१ लाख हो गयी। तीसरी योजना के अन्त में यही संख्या ९६ लाख पर पहुंच गयी।

इसके पश्चात् सरकार ने बहाना बना कर कि बेरोजगारों की गणना का तरीका सही नहीं है, बेरोजगारों की संख्या को प्रकाशित करना बन्द कर दिया। फिर भी अगस्त १९६६ के चौथी योजना की दृष्टि में (बाद में तीन वर्ष तक योजना स्थगन का निर्णय लिया गया) यह आंका गया था कि १९६६ से १९७१ के मध्यावधि में २३० लाख नये लोगों का रोजगार के क्षेत्र में आगमन होगा।

१९७२-७३ के आर्थिक सर्वे में रोजगार के दिए गये आंकड़ों के अनुसार १९६६ से १९७१ के बीच रोजगारों की संख्या में १३ लाख लोगों की वृद्धि हुई है किन्तु इसकी तुलना पूरी तरह से ३२६ लाख बेरोजगारों (पहले के ९६ लाख तथा नवागन्तुक २३० लाख) से नहीं की जा सकती है क्योंकि आर्थिक सर्वे में कृषि में तथा गांवों में स्थित गैर-कृषि छोटी इकाइयों में रोजगारों को बाद में दिया गया है।

जो भी हो १९७१ की जन गणना से पता चलता है कि देहाती रोजगारों की संख्या में बहुत ही गिरावट आयी है। १९६१ में जब कुल ग्रामीण जनता का ४५.१ प्रतिशत भाग आर्थिक कार्यों में सक्रिय था, १९७१ में यह अनुपात गिरकर ३४.५% हो गया। अतः ग्रामीण बेरोजगारी की वृद्धि को दृष्टि में रखकर विचार करने पर कुल बेरोजगारों की संख्या निश्चित रूप से ३२६ लाख से अधिक होगी।

तीन करोड़ से पांच करोड़ के बीच

१९६१ और ७१ की जन गणना से प्राप्त काम में हिस्सेदारी की दर भी बेरोजगारी में भयंकर वृद्धि को स्पष्ट करता है। १९६१ में यह दर ४२.९८ प्रतिशत थी। १९७१ में यह घट कर ३३.५४ % हो गयी।

यदि १९६१ में रोजगार-स्तर को मापक इकाई मान लिया जाय तो १९७१ में बेरोजगारी की संख्या में ९.४४% की वृद्धि हुई है। ५४ करोड़ ७० लाख जनसंख्या का ९.४४ प्रतिशत अर्थात् ५ करोड़ १६ लाख होता है।

परन्तु बेरोजगार १९७१ में भी थे। इस तरह १९७१ में कुल बेरोजगारों की संख्या ५ करोड़ १६ लाख से कुछ लाख और अधिक होगी। यदि इसमें आधे वक्त काम करने वालों को न जोड़े तो १९७१ में बेरोजगारों की संख्या ५ करोड़ से कम नहीं थी।

यद्यपि १९७१ में भारत में कुल कितने बेरोजगार थे इसका कोई निश्चित एवं स्वीकृत आंकड़ा उपलब्ध नहीं है। परन्तु यह तीन करोड़ से पांच करोड़ के बीच कुछ भी हो सकता है।

भारत सरकार ने एक कांग्रेसी नेता श्री बी. सी. भगवती की अध्यक्षता में बेरोजगारी पर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए एक कमेटी नियुक्त किया था। मई १९७३ में इस कमेटी ने बताया कि १९७१ में बेरोजगारों की कुल संख्या एक करोड़ ८७ लाख थी। यह अत्यन्त हास्यास्पद आंकड़ा है क्योंकि इसकी पुष्टि अन्य उद्घाटित तथ्यों से बिलकुल नहीं होता।

डा. कमलेश राय ने बेरोजगारों की संख्या ३ करोड़ १० लाख आंकी थी जबकि 'लन्दन स्कूल आफ इकोनामिक्स' के प्रो. अमर्त्य सेन ने 'उत्पादन दृष्टि' के आधार पर ४ करोड़ २४ लाख बेरोजगार का अनुमान किया था।

आंकड़ों का स्वरूप कुछ भी हो, परन्तु देश में बेरोजगारी भयंकर रूप धारण कर चुकी है। हमारे देश में बेरोजगारों की संख्या इस देश के बहुत से महत्वपूर्ण राज्यों की जनसंख्या से भी अधिक हो गयी है।

उपरोक्त आकड़े इस बात के प्रबल प्रमाण हैं कि सरकार ने कभी भी समर्थ व्यक्तियों को देश के मूल्यवान साधनों के रूप में नहीं देखा है। इसने कभी भी उत्पादन कार्यों में इनका यथासम्भव उपयोग करने का प्रयास नहीं किया।

योजना का दृष्टिकोण नीचले तबके के गरीब को इकाई मान कर न बनाने के कारण तथा प्रगति के मार्ग में बाधक उत्पादन-सम्बन्धों को न खत्म करने के कारण आज देश में भयंकर बेरोजगारी है और उत्पादन वृद्धि-दर शून्य की ओर अग्रसर है। योजना आयोग के प्रतिवेदन में कहा गया है कि चौथी योजना में जबकि वृद्धि का लक्ष्य ५.७ प्रतिशित निर्धारित किया गया था, १९६९-७० में जो सबसे अधिक दर पायी गयी, वह ५.२ प्रतिशत थी। इसके बाद के वर्षों में यह क्रमश गिरती गयी। १९७०-७१ में वृद्धि की दर ४-९ प्रतिशत रही। १९७१-७२ में १·७ प्रतिशत तथा १९७२-७३ में सिर्फ ०·६ प्रतिशत।

यद्यपि कांग्रेसी सरकार निरन्तर गिरावट का कारण सूखा, अतिवृष्टि और युद्ध बताती है परन्तु सबसे अच्छे वर्ष में भी लक्ष्य की प्राप्ति न करना सरकार के उक्त कारण को मिथ्या साबित करती है। सरकार जनता के दुःख और कष्ट को मात्र बढ़ा रही है। मंहगाई आदि पर घड़ियाली आंसू बहाये जा रहे हैं किन्तु निहित स्वार्थों पर कोई चोट भी नहीं की जा रही है। मूल्य की स्थिरता के लिए अधिक उत्पादन की बात की जाती है परन्तु नियंत्रण निहित स्वार्थ वालों के हाथ में छोड़ दिया गया है। अतः यह सरकार नियत मूल्य पर उत्पादकों से वसूली करके वितरण की नियंत्रण प्रणाली द्वारा जमाखोरी और मुनाफाखोरी खत्म करने के लिए तैयार नहीं।

करोड़ों रूपयों के (एक हजार करोड़ से ऊपर) काले धन की समानान्तर अर्थ व्यवस्था कुल रुपयों की आपूर्ति पर प्रतिबन्ध के प्रयासों को विफल कर दे रही है। मुनाफाखोरी और मंहगाई के लिये इसे खत्म करना अत्यन्त आवश्यक है परन्तु सरकार इस महत्वपूर्ण कार्य में कोई रुचि लेती नहीं दिखाई पड़ती। यह काले धन के मालिकों और सरकार के सीधे सांठ-गांठ को स्पष्ट करता है।

सरकार ने उत्पादन वृद्धि के नाम पर देशी-विदेशी इजारेदारों को खुली छूट देदी है। परिणामस्वरूप उत्पादन के साधनों का संकेन्द्रण बढ़ रहा है और दूसरी ओर अधिकांश लोग साधनहीन होते जा रहे हैं। इसके बीच के दबाव से मध्यम वर्गीय जनता जो अपने सीमित साधनों से किसी प्रकार जीविका चलाती है, दबती जा रही है। साधनहीन बिना किसी काम के और बिना किसी साधन के बेरोजगार हैं। २६ वर्षों के कांग्रेसी कुशासन के फलस्वरूप चतुर्दिक घोर निराशा और भयंकर अविश्वास का वातावरण व्याप्त है।

अतः विश्वास के जो अंकुर आजादी की लड़ाई के त्याग और बलिदान के दिनों में लोगों के हृदय में उगने शुरू हुए थे, उसे कांग्रेस सरकार के क्रूर हाथों ने मसल डाला है। चारों तरफ स्वार्थ और छीना झपटी का साम्राज्य है। आज सम्पत्ति का मौलिक अधिकार दस प्रतिशत के लिए है। नब्बे प्रतिशत आबादी के लिए निजी सम्पत्ति का उन्मूलन पहले ही हो चुका है। इस तरह नब्बे प्रतिशत भारतीय जनता के दिल के दीपक बुझ चुके हैं और इसको बुझाया है कांग्रेसी सरकार ने।

किसी भी वर्ग का उत्पीड़न करने के लिए यह जरूरी है कि उसे कम से कम ऐसी सुविधाएं मिले जिससे और न सही तो वह एक गुलाम वर्ग के रूप में जिन्दा रह सके। परन्तु इस शासन में इस देश की अधिकांश जनता की हालत अत्यन्त दयनीय है। मजदूर उद्योगों की उन्नति के साथ ऊपर उठने के बजाय स्वयं अपने वर्ग के अस्तित्व के लिए आवश्यक अवस्थाओं के स्तर के नीचे गिर रहा है। वह कंगाल हो रहा है। उसकी आबादी उसकी दौलत से ज्यादा बढ़ रही है। ग्रामीण खेत-मजदूर और छोटा किसान और भी भंयकर स्थिति में है। ऐसी स्थिति में यह बिल्कुल स्पष्ट है कि पूंजीवादी वर्ग अब समाज का शासक बने रहने व समाज पर अपने अस्तित्व की अवस्थाओं को अनिवार्य नियम के रूप में लादने में असमर्थ है। अतः पूंजीवादी कांग्रेसी सरकार अब शासन करने के बिल्कुल अयोग्य है क्योंकि वह अधिकांश शासित वर्ग को एक गुलाम की भी जिन्दगी देने में असमर्थ है।

अब शोषित जनता का अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए जागरूक होना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। अस्तित्व और जागरण का घनिष्ट सम्बन्ध है। आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है। अस्तित्व कायम रखने की आवश्यकता जागरण स्वयं खोज लेगी। अब शोषित का संगठित होना लाजमी है। सामाजिक परिवर्तन की धार उनके पक्ष में है। अतः वे संगठित और जागरूक होकर वर्तमान व्यवस्था को अवश्य ध्वस्थ करेंगे। क्योंकि शोषण पर आधारित इस व्यवस्था को ध्वस्थ कर नवीन शोषण मुक्त व्यवस्था निर्माण किये बिना वे त्राण नहीं प्राप्त कर सकते हैं।

—गिरजेश्वर

स्वामी इन्द्रवेश जी का आर्यसभा के प्रधान पद से त्याग पत्र

स्वामी इन्द्रवेश जी ने पंजाब प्रतिनिधि सभा के प्रतिष्ठित प्रधान पद पर आसीन होने के बाद आर्य सभा के संस्थापक प्रधान पद से अपना त्याग-पत्र आर्य सभा के महामन्त्री स्वामी अग्निवेश जी को दे दिया है। उन्होंने आर्यसमाज जैसी धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संस्था को पूर्ण समय देकर कार्य करने का अपना दृढ़ संकल्प व्यक्त किया है। फिर भी स्वामी जी आर्य सभा के कार्यकारिणी के सक्रिय सदस्य बने रहेंगे।

पंजाब प्रतिनिधि सभा में पूर्ण समय देकर कार्य करने के कारण स्वामी इन्द्रवेश जी ने आर्य सभा के प्रधान पद से अपना त्याग-पत्र स्वामी अग्निवेश जी महामंत्री आर्य सभा को दे दिया है। उनकी इस घोषणा से दल में एक विचित्र सी स्थिति उत्पन्न हो गयी है।

आर्य सभा आर्य समाज के सिद्धांतों पर आधारित एक राजनैतिक संस्था है। स्वामी इन्द्रवेश जी सात अप्रैल १९७० से इसके संस्थापक प्रधान पद पर आसीन हैं। इनके कुशल नेतृत्व में पार्टी निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर रही। इनके सही नेतृत्व के कारण ही दल अत्यन्त अल्प अवधि में किसान, मजदूर, कर्मचारी, विद्यार्थी तथा अध्यापक आदि वर्गों की लोकप्रियता अर्जित करने में समर्थ रहा और आज पार्टी हरयाणा में कांग्रेस के विकल्प के रूप में उभर कर जनता जनार्दन की आशा-आकांक्षाओं की प्रतीक बन गयी है।

ऐसी स्थिति में आर्य सभा के प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन में, जो दिल्ली में मार्च के अन्तिम सप्ताह में सम्पन्न होगा, स्वामी जी के प्रधान पद से दिए गये 'त्याग-पत्र' पर गम्भीरता पूर्वक विचार होगा। देश की वर्तमान अत्यन्त विषम राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में त्याग-पत्र के भावी दूरगामी प्रभाव का मूल्यांकन बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। आर्य सभा की कार्यकारिणी स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में इस सम्बन्ध में जो अन्तिम फैसला लेगी वही दल को मान्य होगा और क्रियान्वित होगा।

आर्य सभा आर्य समाज को अपनी मां मानती है। आर्य समाज एक धार्मिक और सांस्कृतिक संस्था है। किसी भी संस्था द्वारा राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक चेतना का विकास तब तक सम्भव नहीं है जब तक जनता के दूषित संस्कारों एवं मनोवृत्तियों को सांस्कृतिक चेतना का विकास कर दूर नहीं कर दिया जाता है क्योंकि अन्ततः गरीबी एक परिस्थिति ही नहीं, एक विचार, एक संस्कार और एक मनःस्थिति भी है। अतः स्वामी जी द्वारा आर्यसमाज में गतिशीलता और क्रांतिकारिता से आर्य सभा को मजबूत आधार प्राप्त होगा। क्योंकि कोई मां जो रोगग्रस्त और विकारयुक्त होगी, कभी भी शक्ति सम्पन्न तथा जागरुक दल एव संस्था रूपी संतान को न जन्म दे सकेगी और न विकास ही कर सकेगी। इसलिए आर्य समाज से वर्षों की शिथिलता और अकर्मण्यता का दूर होना अत्यन्त आवश्यक है। तभी आर्य समाज अपने क्रांतिकारी सिद्धांत के अनुकूल अपने पूर्व प्रचण्ड स्वरूप एव गरिमा को प्राप्त कर १९७५ में अपनी जन्म शताब्दी मनाने में समर्थ हो सकेगी।

आर्य सभा वैदिक मान्यताओं के प्रति दृढ़ता से प्रतिवद्ध है। वह महर्षि कणाद मुनि प्रणीत 'वैशेषिक-दर्शन' के 'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धः स धर्मः' की मान्यता को चरितार्थ करने में दृढ़-विश्वास रखती है। इस सूत्र के अनुसार धर्म वे नियम है जिससे अभ्युदय और निःश्रेयस की प्राप्ति हो अर्थात जिसके अनुसार व्यवहार करने से लोक एवं परलोक दोनों सुधरजायं। लोक सुधरने का अभिप्राय है कि आवश्यकतानुसार संसार से इतना ही अर्थ और काम ग्रहण किया जाय जिससे अपनी आयु के लिए भोग मिल जाय और किसी प्राणी की आयु और भोगों में कमी न उत्पन्न हो और परलोक सुधरने का अभिप्राय है कि सृष्टि के कारणों का ज्ञान उत्पन्न हो जाय जिससे अर्थ और काम का निर्णय हो सके और सृष्टि के कारणों के भी कारण परमात्मा के साक्षात् से जन्म मरण का चक्कर छूटजाय और मोक्ष मिल जाय। आर्य धर्म का यही तात्पर्य है। क्या कोई भी विज्ञान वेत्ता सृष्टि के कारणों के जानने की जिज्ञासा को कभी एक क्षण के लिए भी बन्द कर सकता है? क्या सृष्टि के कार्य कारण भाव के जांच का नाम विज्ञान नहीं है? साथ ही क्या कोई भी राजनीतिज्ञ एक क्षण के लिए भी अपने पास से इस विचार को जुदा कर सकता है कि किस प्रकार अर्थ-काम का बटवारा किया जाय और किस प्रकार मनुष्य अपनी रहन-सहन बनावे। यही कारण है कि आर्यों ने वेदों की आज्ञानुसार धर्म को बहुत बड़ा महत्त्व दिया है और अर्थ काम और मोक्ष को उसी के आधीन रखा है।

इस तरह हम देखते हैं कि धर्म की इस मान्यता को अङ्गीकार किए बिना हम एक ऐसी शोषण मुक्त सामाजिक व्यवस्था का सृजन नहीं कर सकते जिसमें मनुष्य अपना सर्वांगीण विकास अर्थात भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति कर सकता। इससे एक बात और स्पष्ट होती है कि कोई भी धार्मिक और

सांस्कृतिक क्रान्ति यदि आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक क्रांति नहीं सम्पन्न कर सकती, तो वह नाम मात्र की धार्मिक और सांस्कृतिक क्रान्ति होगी। निम्न यजुर्वेद के मंत्र से यह बात और भी भली भांति स्पष्ट होती है।

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।
लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना॥
(यजु० २०/२५)

अर्थात् जहां ब्रह्म शक्ति और क्षात्र शक्ति साथ साथ रहती है और जहां पंच महायज्ञों का अनुष्ठान कायम रहता है वही देश पुण्य देश कहलाता है। इन दोनों शक्तियों के सामञ्जस्य से ही देश में-जनसमाज-में शान्ति स्थिर रह सकती है। अर्थात् दोनों शक्तियां जब एक दूसरे को सहायता देती हैं तभी लोक परलोक के कार्य सम्पन्न होते है। मनु भगवान कहते हैं कि

ना ऽ ब्रह्म क्षत्रमृध्नोति ना ऽ क्षत्रं ब्रह्म वर्धते।
ब्रह्म क्षत्रं च संपृक्तमिह चामुत्र वर्धते॥
(मनु० ६/३२२)

अर्थात् न बिना ब्रह्मशक्ति के क्षात्र शक्ति बढ़ सकती है और न बिना क्षात्र-शक्ति के ब्रह्म शक्ति ही बढ़ सकती है, प्रत्युत दोनों के मेल से ही लोक-परलोक की उन्नति होती है।

अतः धर्म के बिना राजनीति आत्मा रहित शरीर की भांति है। इसलिए जिस तरह बिना शरीर के आत्म उन्नति असम्भव है उसी तरह बिना राजनीति के धर्म की भी कोई उपयोगिता नही है। ऐसी स्थिति में आर्य समाज को नाम मात्र की धार्मिक और सांस्कृतिक भूमिका नहीं अदा करनी है बल्कि उसे अपने क्रांतिकारी सिद्धांत के अनुसार समाज को जागरुक और गतिशील बनाना है जिससे सैकड़ो वर्षो के शोषण से मुक्त होकर दलित, पीड़ित एवं शोषित करोड़ों की जनता शोषण मुक्त व्यवस्था कर सृजन कर सके। यह तभी सम्भव है जब आर्य सभा जैसी संस्था आर्य समाज के साथ २ शक्ति सम्पन्न होकर दृढ़ता के साथ अपनी भूमिका का निर्वाह करती रहे। —गिरजेश्वर

क्या किसी व्यक्ति विशेष के मत को धर्म कहते हैं?

धर्म सापेक्ष या धर्म निरपेक्ष

करणसिंह 'ढाका' शोध छात्र

कोई राज्य धर्म निरपेक्ष हो या उसका कोई निश्चित धर्म हो इससे पहले एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि आखिर कोई धर्म हो ही क्यों? धर्म की आवश्यकता कहां और कैसे पड़ती है? इस मौलिक प्रश्न का उत्तर हम किसी देश का इतिहास पढ़ कर या उसके सामाजिक जीवन का टिकाऊपन देख कर प्राप्त कर सकते हैं। किसी भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र के जीवन में जब कोई निश्चित व स्वस्थ जीवन दर्शन नहीं होता तो वह व्यक्ति, समाज या राष्ट्र उन्नति के शिखर पर नहीं पहुंच सकता। पहले तो ठोस जीवन दर्शन के अभाव में कोई व्यक्ति या राष्ट्र उन्नति कर ही नहीं सकता। और यदि क्षणिक विकास हो भी गया तो मार्ग दर्शन के अभाव में व लक्ष्यहीनता के कारण वह आधारहीन विकास का महल बहुत शीघ्र ही ढह जायेगा। निश्चित जीवन सिद्धांत स्वस्थ व वैज्ञानिक पद्धति (ढांचा) के बिना राष्ट्र के विकास में काम आने वाली धन शक्ति, मानव-शक्ति व बुद्धि की शक्ति ठीक दिशा में लग ही नहीं सकती, उल्टे दिशा हीनता की अवस्था में देश के विकास में लगने वाली शक्ति उसको कमजोर बनाती है। यदि और अधिक व्याख्या करें तो इसके लिए कि देश का सैनिक राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दे, किसान देश के अन्न के भण्डार को भर दे, अध्यापक ज्ञान का अमृत पिला दे और प्रत्येक व्यक्ति कर्त्तव्य पालन व सेवा करने में उद्यत रहे तो उसका व्यक्तित्व किसी ठोस दर्शन जिस को दूसरे शब्दों में धर्म भी कहते हैं, के आधार पर खड़ा करना होगा नहीं तो व्यक्ति तो क्या राष्ट्र का राष्ट्र विनष्ट हो जायेगा जैसा कि अनेको सभ्यताऐं संसार में उदय हुई और भूत के अंधेरे में अस्त हो गई। विकास ही नहीं, विकास की सुरक्षा में भी धर्म ही कारण बनता है जिसका प्रमाण हम अपने ही इतिहास में देख सकते हैं। जहां के लोगों ने हजारों सालों की गुलामी सह कर भी भारत व भारतीयता को जीवित रखा। इस प्रकार हम देखते हैं कि राष्ट्र की उन्नति, उसकी सुरक्षा व सुन्दरता का धर्म आधार बनता है।

जिस धर्म के आधार के ऊपर सारा राष्ट्र टिका हो तो यह जानना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि वह जीवन दर्शन, वह धर्म कैसा हो? धर्म का

(शेषांश पृष्ट २२ पर)

विज्ञान को आर्थिक नीति का अंग होना चाहिए

डॉ० हुसैन जहीर के अनुसार विज्ञान जगत के बड़े महारथी अपने विभागों के कार्यों का मूल्यांकन करने से कतराते हैं और इस दिशा में किये गये हर प्रयास को रोकते हैं। अपने कार्यकाल के दौरान उन्हें इस दिशा में सबसे अधिक विरोध डॉक्टर कोठारी (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) और डाक्टर भाभा परमाणु शक्ति आयोग) से मिला। उन्होंने यह भी बताया कि भारत में उपलब्ध कोयले से बिजली उत्पन्न करने के लिए प्रयुक्त छोटे विद्युत संयत्रों के निर्माण में भी रुकावटें डाली जा रही हैं। पानी और परमाणु शक्ति द्वारा विद्युत प्राप्त करने के लिए आरम्भिक व्यय बहुत होता है और इस प्रकार की योजनाएँ चालू करने में समय भी बहुत लगता है। इसलिए इन योजनाओं को द्वितीय प्राथमिकता मिलनी चाहिए। सब से बड़ी आवश्यकता तो उपलब्ध ईंधन से छोटे पैमाने पर विद्युत उत्पादन करने की थी क्योंकि बड़े 'प्लांट' से प्राप्त विद्युत को जब एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता है तो उस का कम से कम एक चौथाई भाग तो रास्ते में ही नष्ट हो जाता है। डॉ० जहीर वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान के विज्ञानकर्मी संघ और भारतीय विज्ञानकर्मी संघ द्वारा लखनऊ में आयोजित विचार गोष्ठी का उद्घाटन कर रहे थे।

गोष्ठी में डाक्टर वीर बहादुर सिंह (संसद सदस्य), श्री सुदेश कुमार त्रिखा, डॉक्टर प्रसाद सिंह, डॉक्टर वी. सी. वोहरा और श्री सुरेन्द्र सूरी इत्यादि ने कहा कि विज्ञान नीति को आर्थिक नीति का ही अङ्ग होना चाहिए क्योंकि विज्ञान तो आर्थिक नीति को कार्यान्वित करने का प्रमुख हथियार है। इसलिए भारत सरकार के विज्ञान और टेक्नोलॉजी विभाग द्वारा विज्ञान नीति पर स्वतंत्र प्रस्तावना पत्र प्रस्तुत करना वक्ताओं के अनुसार एक प्रकार से व्यर्थ सा अभ्यास है।

योजना और विज्ञान : लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्री डाक्टर वीर बहादुर सिंह, संसद सदस्य ने पांचवी पंचवर्षीय योजना के मुख्य उद्देश्यों—दरिद्रता का उन्मूलन, जनसंख्या वृद्धि की गति को कम करना तथा उत्पादन बढ़ाने पर गोष्ठी का ध्यान आमंत्रित किया जिन के द्वारा देश आर्थिक विकास की गति को ५ प्रतिशत चक्रवृद्धि दर से बढ़ाने की आशा करता है। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस बात की आवश्यकता है कि विज्ञान तथा तकनीकी नीति और आर्थिक विकास की नीति में समन्वय हो जिस के फलस्वरूप भारत विदेशी निर्भरता से मुक्त हो कर आत्मनिर्भरता प्राप्त कर सके। डॉ० सिंह का निष्कर्ष यह था कि विज्ञान और तकनीकी खोज को कृषि तथा उन उद्योगों से जोड़ा जाये जिन का जिक्र पांचवीं पंचवर्षीय योजना की तालिकाओं में किया गया है।

भारतीय प्राद्योगिकी संस्थान, कानपुर में धातु विज्ञान के प्राध्यापक डॉक्टर कमला प्रसाद सिंह ने भारत सरकार की **वैज्ञानिक एवं तकनीकी योजना की आलोचना करते हुए यह बताया कि यह योजना तो अपनी रूपरेखा में संयुक्तराष्ट्र संघ के कुछ प्रकाशनों की प्रतिलिपि सी है। आवश्यकता इस बात की है कि विज्ञान की शिक्षा का पुनर्निर्माण देश की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर किया जाये ताकि शिक्षा पद्धति की वर्तमान कृत्रिमता को दूर किया जा सके जिस में वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मी अपना पूर्ण योगदान देश की समस्याओं को सुलझाने में दे सकें।**

लखनऊ स्थित केन्द्रिय औषधि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डाक्टर बोहरा ने कहा कि मनुष्यों और पशुओं के मलमूत्र से घरेलू गैस और उपजाऊ खाद एक साथ उत्पन्न किये जा सकते हैं। इस कार्य के लिए नगरों और गांवों में मलमूत्र निकासी और छोटे संयंत्रों द्वारा उस का उपयोग करने के लिए आवश्यक कदम उठाये जाने चाहिए। **केन्द्रीय खाद्य तकनीक अनुसंधान संस्थान मैसूर के वैज्ञानिक पी. वीरराजू ने बड़े उद्योगों में व्याप्त भष्टाचार और विदेश परस्ती की भावना का विवेचन किया और इस बात पर जोर दिया कि स्वदेशी तकनीक का उपयोग छोटे उद्योग ही कर सकते हैं। इसलिए वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का प्रयास बड़े पैमाने पर दैनिक व्यवहार में आने वाली वस्तुओं का उत्पादन छोटे तथा गृह उद्योगों के द्वारा विकसित करने की दिशा में होना चाहिए।** केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के निदेशक डाक्टर एम. एल. धर ने भारत के औषधि उद्योग की दयनीय अवस्था पर प्रकाश डाला। उन्होंने **कहा कि यद्यपि दवाओं के निर्माण में कोई कानूनी बन्धन नहीं है फिर भी उपलब्ध जानकारी का उपयोग मानव कल्याण के लिए नहीं हो पा रहा है।**

विकास ऊपर से आरम्भ न होकर नीचे से होना चाहिए

विदेशी प्रभाव : वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् के विज्ञान कर्मी संघ के प्रधान तथा केन्द्रीय खाद्य तकनीक अनुसधान सस्थान, मैसूर के वैज्ञानिक डाक्टर नीरोदरजन भट्टाचार्य ने कहा है

कि अल्प विकसित देशों में विदेशों से मंगाई हुई मशीनों और तकनीकी ज्ञान पर आधारित बड़े-बड़े उद्योग स्थापित है। इस्पात, उर्वरक, तेल इत्यादि ही नहीं आम उपभोक्ता सामान जैसे कि दंत मंजन, चाकलेट, कपड़े, खिलौने इत्यादि भी विदेशी सहयोग से बनाये जाते हैं। कच्ची सामग्री और सस्ते श्रम के उपयोग पर आधारित ये उद्योग अपने लाभ का मुख्य अंश विदेश भेजते हैं और शेष समाज के उच्च वर्ग को दलाली के रूप में प्राप्त होता है जिसका उपयोग वे आमोद-प्रमोद के आधुनिकतम साधन जुटाने में करते हैं। **इस प्रकार जहां इनीगिनी अट्टालिकाएं गगन चूमने लगती हैं वहां दरिद्रता देश के अंचल में फैलती जाती हैं। देश की इस दुर्दशा से मुक्ति पाने के लिए हमें एक नयी योजना बनानी होगी जिस में विकास शृंखला ऊपर से आरंभ न हो कर नीचे से आरंभ होगी। सर्वप्रथम देश के अंचल का विकास किया जायेगा। विदेशी प्रभाव से मुक्ति छोटे उद्योगों का विस्तार कर उन्हें शक्तिशाली बनाया जायेगा और कालांतर में हम अपने पैरों पर खड़े हो कर विकास की सर्वोच्च सीढ़ी पर पहुँच जायेंगे।**

विज्ञान का उपयोग सार्वजनिक हित में होना चाहिए

शोषण और विज्ञान : विज्ञान द्वारा शोषण की उक्त प्रक्रिया का विश्लेषण करते हुए भारतीय विज्ञान कर्मी संघ के महासचिव श्री रामप्रसाद ने कहा कि आरंभ में तो विज्ञान का विस्तार जनजागरण के साथ हुआ, किन्तु सामंती अर्थव्यवस्था के समाप्त होते ही विज्ञान का उपयोग शोषणतन्त्र के साथ जुड़ गया। अल्प विकसित देशों में विज्ञान उपनिवेशवाद की धरोहर के रूप में विद्यमान है। यही कारण है कि राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी अल्प विकसित देशों का शोषण जारी है। इस मत की पुष्टि श्री रामप्रसाद ने लेंस का उदाहरण दे कर की। लेंसों की जानकारी मानव समाज को पाषाण युग से ही थी पर उनका उपयोग जनजागरण के युग में ही हुआ जब कि समाज ढोंगी उच्चवर्ग की शान-शौकत से उकता गया था। उस समय लोग पढ़ लिख कर उस वर्ग को उखाड़ फेंकने के लिए जनमत तैयार कर रहे थे। फलतः छपाई की मशीन विकसित की गयी और बुढ़ापे तक पढ़ने लिखने के लिए लेंस का उपयोग किया गया। लेंस चश्मों के रूप में आंखों पर पहने जाने लगे और कभी-कभी हाथ के लेंस और चश्मे के लेंस का साथ-साथ उपयोग किये जाने पर दूरबीन और खुर्दबीन का आविष्कार हो गया। अब विज्ञान पूँजीपतियों का दास बन गया है। उसका उपयोग लाभ बटोरने के लिए किया जाने लगा। उपनिवेश ढूँढने के लिए समुद्र यात्राएं शुरू हुईं। लड़ाई हुई और उपनिवेशों का सर्वेक्षण हुआ। समुद्र यात्रा, लड़ाईयों और सर्वेक्षण में दूरबीन और उस पर आधारित उपकरणों का महत्त्व था। फलस्वरूप इनके विकास के लिए वैज्ञानिकों को भरपूर प्रोत्साहन मिला। किन्तु भारत जैसे उपनिवेश में लेंस विज्ञान की शिक्षा एक विषय के रूप में दी गयी ताकि लोग यहां दूरबीनों, खुर्दबीनों और कैमरों के महत्व को समझ सकें और इन्हें खरीदने के लिए लालायित हों, श्री रामप्रसाद के अनुसार यह आवश्यक है कि शिक्षा और अनुसधान की समस्त संस्थाओं को विदेशी प्रभाव से मुक्त कर उनका उपयोग देश के विकास में किया जाये। इसके लिए इन संस्थाओं का विस्तार संस्थाओं के रूप में रुकना चाहिए और अंचल की सेवाओं का विस्तार देश के अंचल तक होना चाहिए। विज्ञान का उपयोग व्यक्तिगत लाभ न होकर सार्वजनिक हित में होना चाहिए। इसलिए धन संस्थाओं को न देकर विकास की विशिष्ट योजनाओं को मिलना चाहिए जो कि इन संस्थाओं में आवश्यक सेवाओं का विस्तार कर सकें। ✯

केन्द्रीय सरकार के मन्त्रियों, राज्य-मन्त्रियों और उपमन्त्रियों की हिफाजत के लिए पुलिस पर कितना खर्च होता है। उसका एक हिसाब देखिये। यह हिसाब केन्द्रीय सरकार की तरफ से लोक सभा में दिया गया था।

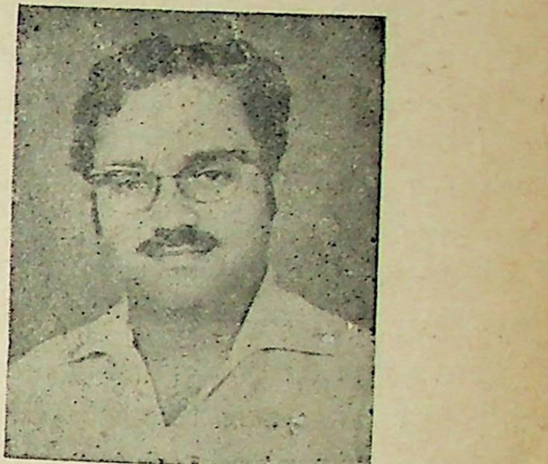
वर्ष	सब मंत्रियों की संख्या	रक्षक पुलिस वालों की सं०	कुल व्यय
१९६७	३८	१३६	३१४६२२.७५
१९६९	३८	१४६	४६१९८८.५५
१९७३	५४	३९८	९१७९६४.०[illegible]

यानी पिछले ६ वर्षों में केन्द्रीय सरकार के मन्त्रियों की हिफाजत करने वाले पुलिस मैनों की संख्या और उस पर होने वाला खर्च बढ़कर लगभग तीनगुना हो गया है। जनता से दिन-दिन विच्छिन्न होने वाले मन्त्रियों का यही हाल होता है।

'अंग्रेजी हटाओ' आन्दोलन छेड़ दो

डा० वेदप्रताप वैदिक

अंग्रेजी हटाओ का मतलब यह कतई नहीं है कि हमें अंग्रेजी से नफरत है। किसी भी भाषा या साहित्य से कोई मूर्ख ही नफरत कर सकता है। यदि कोई स्वेच्छा से अंग्रेजी या दुनियां की अन्य भाषाएं पढ़ना चाहे, उनके माध्यम से ज्ञान का दोहन करना चाहे तो हमें प्रसन्नता ही होगी। लेकिन आपत्ति तब उपस्थित होती है जब ज्ञान के एक साधन को रुतबे का, विशेषाधिकार का शोषण का हथियार बना लिया जाए।



अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन अंग्रेजी का नहीं, बल्कि उसके रुतबे का, विशेषाधिकार का, उसकी शोषणकारी प्रवृत्ति का विरोधी है। इसलिए हमने कहा 'अंग्रेजी हटाओ।' हमने यह कभी नहीं कहा कि 'अंग्रेजी मिटाओ'। अब सवाल यह है कि अंग्रेजी कहां से हटे ? न्यायालय से हटे, राज-काज से हटे, कारखानों से हटे, फौज से हटे, अस्पताल से हटे, पाठशाला-प्रयोगशाला से हटे, घर-द्वार-बाजार से हटे। हट कर कहां जाए ? पुस्तकालयों में जाए, विदेशी भाषा-शिक्षण संस्थानों में जाए। वहां भी सारी जगह घेरकर पसरे नहीं। दुनियां की अन्य भाषाओं के लिए भी थोड़ी-थोड़ी जगह खाली करे। हटना उसे सभी जगह से पड़ेगा। कहीं से थोड़ा, कहीं से ज्यादा।

लुधियाना के कुछ प्राध्यापक बन्धुओं ने मुझसे कहा कि 'अंग्रेजी हटाओ' में से निषेधात्मकता की गंध आती है। यह 'निगेटिव' नारा है। मैंने पूछा, अहिंसा क्या है, अस्तेय क्या है, अपरिग्रह क्या है, अद्वैत क्या है ? क्या ये सब निषेध के सिद्धांत नहीं है ? महात्मा गांधी का 'असहयोग' क्या था ? इन्दिरा गांधी का 'गरीबी हटाओ' क्या है ? यह नारा निषेधात्मक ही नहीं है बल्कि 'अंग्रेजी हटाओ' की भौंड़ी-सी नकल भी है (क्योंकि गरीबी तो मिटाई जानी चाहिए)। निषेध से डरिए मत। सृष्टि के नियम को समझिए। बिना ध्वंस के निर्माण नही हो सकता। छोटा-सा मकान भी बनाना हो तो नींव खोदनी पड़ती है। जो खुदाई के डर से नींव नहीं डालता, उसके मकान का अन्जाम क्या होगा ? वही होगा जो पिछले पच्चीस वर्षों में हिन्दी का हुआ। हिन्दी वाले लोग अंग्रेजी को हटाये बिना हिन्दी को लाना चाहते थे। नतीजा क्या हुआ ? अंग्रेजी अपने स्थान पर जमी रही और हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में एक नकली लड़ाई चल पड़ी। अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन इस नकली लड़ाई का विरोध करता है। वह समस्त भारतीय भाषाओं को अंग्रेजी के वर्चस्व के विरुद्ध एक सशक्त चट्टान की तरह खड़ा करना चाहता है। जब तक अंग्रेजी नहीं हटती, भारतीय भाषाएं एक नहीं होंगी।

अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन और हिन्दी चलाओ आन्दोलन में भी बुनियादी फर्क है। हिन्दी आन्दोलन वाले लोग चाहते हैं कि अंग्रेजी का स्थान हिन्दी ले ले। उन्हें इस बात की चिन्ता नहीं है कि अंग्रेजी की तरह हिन्दी भी शोषण का, विशेषाधिकार का और रुतबे का हथियार बन सकती है। अगर हिन्दी के आने का नतीजा यह हो कि अन्य भाषावालों के लिए नौकरियों का, अवसरों का, आगे बढ़ने का मार्ग दुर्गम हो जाए तो फिर हिन्दी को लाने से फायदा क्या हुआ ? वह भी अंग्रेजी की तरह देश में गैर-बराबरी को बढ़ाएगी। फर्क इतना होगा कि आज अंग्रेजी के कारण जहां दो प्रतिशत लोग सारे देश को रौंद रहे हैं, वहां ३० प्रतिशत लोग बाकी ७० प्रतिशत लोगों के साथ अन्याय करेंगे। हम हर अन्याय के विरुद्ध लड़ना चाहते हैं। चाहे वह छोटा हो या बड़ा। मैं नहीं चाहता कि मेरी मातृभाषा वही घिनौना कार्य करे जो कि अंग्रेजी कर रही है। इसीलिए हम सारे देश में हिन्दी को थोपने के विरोधी हैं।

बहुसंख्यक की भाषा ही सम्पर्क भाषा

सरल और विज्ञानिक लिपि : इसका मतलब यह नहीं है कि हमने सारे देश को जोड़नेवाली भाषा के सवाल पर विचार नहीं किया है। सारे देश को जोड़ने वाली भाषा कोई भी भारतीय भाषा हो सकती है। लेकिन इस काम के लिए हिन्दी सबसे अधिक अनुकूल भाषा होगी क्योंकि किसी भी एक भाषा की तुलना में इसके बोलने वाले सबसे ज्यादा हैं, इसकी

लिपि–देवनागरी—सरल और वैज्ञानिक है तथा यह भाषा भारत के सबसे बड़े इलाके में बोली जाती है। जहां तक हिन्दी देश की सारी भाषाओं को जोड़ती है, वहां तक हिन्दी को लाने में हमें कोई एतराज नहीं है। लेकिन हिन्दी अन्य भाषाओं का हक मारे, यह उचित नहीं है। हर प्रदेश में उस प्रदेश की भाषा पूरी तरह से चलनी चाहिए। केन्द्र में भी प्रदेशों से आनेवाले लोगों को अपनी-अपनी भाषा के जरिए नौकरी पाने, संसद में बोलने, न्याय पाने और शिक्षा पाने का पूरा अधिकार होना चाहिए। उन्नति के अवसरों में हिन्दी को आड़े नहीं आना चाहिए। हिन्दी का काम केवल विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच सम्पर्क स्थापित करना है। केन्द्रीय सरकार और केन्द्रीय संस्थानों का अपने तईं सारा काम-काज केवल हिन्दी में चल सकताहै, चलना चाहिए। लेकिन प्रदेशों से उनकी भाषा में आने वाले पत्रों को केन्द्र के द्वारा न केवल स्वीकार किया जाना चाहिऐ बल्कि उन्हीं की भाषा में उन पत्रों का जवाब दिया जाना चाहिए। किसी व्यक्ति, संस्था या प्रादेशिक सरकार को इसलिए घाटे में नहीं रखा जाना चाहिए कि वह हिन्दी में प्रवीण नहीं है।

इस कार्य को कम खर्चीला और सुगम बनाने के लिए यह वश्यक है कि हर सरकारी विभाग के साथ कुछ अनुवादक लग्न कर दिए जाएं। ऐसे अनुवादक भी हो सकते हैं, जों कि तीन-तीन, चार-चार, पांच-पांच भाषाएं एक साथ जानते हों। इन अनुवादकों पर होने वाला खर्च अनिवार्य अंग्रेजी को चलाए रखने के लिए होने वाले खर्च से निश्चित रूप से कम होगा।

सोवियत संघ और यूरोप के उन देशों में जहां अनेक भाषाएं बोली जाती हैं, वहां ऐसा ही किया जाता है। कोई भी देश अनुवाद के खर्चे के डर से किसी विदेशी भाषा को अपने आप पर नहीं लादता। देशी भाषाओं की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एक होने के कारण उनमें परस्पर अनुवाद करना इतना सरल होता है कि कुछ ही वर्षों में बहुत से लोग अपने आप कई भाषाएं सीख जाते हैं और फिर अनुवादकों की जरुरत नहीं रहती, जैसा कि स्विटजरलैंड और यूगोस्लाविया में हुआ है।

मुक्ति और सच्चे मेल-मिलाप का आन्दोलन

इस बात पर यह आपत्ति की जा सकती है कि सरकार अपना समय राज-काज में लगाए या वह इन भाषाओं के चक्कर में पड़ जाए। मैं पूछता हूँ कि अगर जनता से सीधे उसकी जुबान में उसके दुःख दर्द नहीं सुनोगे और सीधे उसकी जुबान में उसकी समस्याओं का समाधान नही दोगे तो अच्छा और सच्चा राज-काज कैसे चलाओगे ? नकली समस्याओं और उनके नकली समाधानों का राज-काज तो इस देश में पिछले पच्चीस साल से चल ही रहा है। अगर आप देश के एक औसत आदमी को यह विश्वास दिलाएंगे कि बड़े से बड़े स्तर पर भी उसकी भाषा को नीचा नहीं देखना पड़ेगा तो काम-चलाऊ हिन्दी सीखने में उसे जरा भी एतराज नहीं होगा। आज दक्षिण का आदमी हिन्दी का विरोध क्यों करता है ? सिर्फ इसलिए कि उसे डर है कि उसकी नौकरियां चली जाएंगी। वह अवसरों की दौड़ में पिछड़ जाएगा। हिन्दी आन्दोलन ने 'हिन्दी' 'हिन्दी' चिल्लाकर इस डर को बढ़ाया है। इस डर को पुख्ता तौर पर खत्म किया जाना चाहिए। यह डर तभी खत्म होगा जबकि अंग्रेजी हटेगी। अंग्रेजी हटेगी तो उत्तर भारत के लोग दक्षिण की भाषाएं सीखेंगे। अंग्रेजी रहती है तो उत्तर भारत के लोग सोचते हैं कि तमिल, तेलगु कन्नड़, मलयालम सीखकर क्या करेंगे ? अंग्रेजी में ही बात कर लेंगे। इसी प्रकार दक्षिण वाले भी सोचते हैं। जब अंग्रेजी में काम चल जाता है तो हिन्दी क्यों सीखें ? इस प्रकार अंग्रेजी की कृपा से उत्तर दक्षिण के बीच सच्चा मेल-मिलाप ही नहीं होता। अंग्रेजी के जरिये जो नकली मेल-मिलाप होता है, वह भी कितने लोगों का ? २%लोगों का भी नहीं। इन्हीं २%लोगों का काम चल रहा है। बाकी ९८ प्रतिशत लोगों का काम ठप्प है। उनके जीवन में अंधेरा ही अंधेरा है। अंधेरे वाले लोगों में दक्षिण और उत्तर की सभी साधारण जनता शामिल है। अंग्रेजी हटाओ आंदोलन देश के करोड़ों लोगों को अंधेरे से उजाले की ओर ले जाना चाहता है। वह उत्तर और दक्षिण में, पूरब और पश्चिम में कोई भेद नहीं करता। उसके लिए सारे देश की गरीब ग्रामीण, दलित, पीड़ित, विपन्न जनता एक है। वह इस सामान्य जनता की भाषाओं को आगे लाना चाहता है और एक छोटे-से-छोटे आदमी के दिल में भी यह अहसास पैदा करना चाहता है कि वह अपनी भाषा के जरिये बड़े-से-बड़े पद पर पहुँच सकता है।

इसी आधार पर मैं कहता हूं कि अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन मनुष्य मात्र की मुक्ति का आन्दोलन है। पृथ्वी के किसी भी हिस्से पर यदि किसी भी मनुष्य की आत्माभिव्यक्ति का गला घोंटा गया तो अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन चुप नहीं बैठेगा। इसीलिए इस आन्दोलन ने तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान में बांगला का, श्रीलंका में सिंहली और तमिल का, अफगानिस्तान में पश्तो और फारसी का, तन्जानिया में स्वाहिली का और उरुग्वे में गोरानी भाषा का सदा समर्थन किया है। हमने यह कभी नहीं कहा कि हम इंग्लैंड से अंग्रेजी हटाना चाहते हैं लेकिन

(शेषांश पृष्ठ २१ पर)

आध्यात्मप्रवाह–[अन्तिम भाग]

ईश्वर को हम क्यों मानें ?

स्व० गंगाप्रसाद उपाध्याय

आस्तिकता भी क्रम-क्रम से विकसित होती है

इसके अतिरिक्त दूसरी बात यह है कि अन्य गुणों के समान आस्तिकता का भी विकास होता है। आस्तिकता 'छूमंतर' जादू की लकड़ी से उत्पन्न नहीं हो जाती। जिस प्रकार शनैः शनैः कक्षा-क्रम से पढ़ते-पढ़ते ही मनुष्य को गणित, भूगोल तथा अन्य विद्यायें आती हैं उसी प्रकार ईश्वर विश्वास भी क्रमशः अभ्यास तथा अध्ययन से आता है। इसके लिए गुरु चाहिए, परिस्थिति चाहिए और शिष्य का शुद्ध आत्मा चाहिए। ईश्वर विश्वास आत्मा की उच्चतम अवस्था का नाम है। हम प्रायः लोगों को ईश्वर विश्वास की भिन्न-भिन्न श्रेणियों में पाते हैं। उनमें कुछ कपटी भी हैं जो चोरी की गाउन (चोले) पहन कर ग्रेजुएट (स्नातक) बन गए हैं। परन्तु कुछ ऐसे भी हैं जिनमें अभ्यास की कमी है और सामाजिक परिस्थिति का वह सामना नहीं कर सकते। कुछ ऐसे भी हैं जो सच्चे सिद्धान्तों के अभाव की दशा में कुछ रस्मों या पाखण्ड को ही आस्तिकता समझे हुए हैं। वह पत्थर को हीरा समझे हुए हैं अतः पत्थर का ही मूल्य उनके हाथ लगता है। हीरे का नहीं।

परन्तु इससे आस्तिकता की उपयोगिता में किसी प्रकार की कमी नहीं हो जाती। वस्तुतः उन साधारण आस्तिकों के जीवन भी, जिसमें हमको इतनी त्रुटियां मिलती हैं अत्यंत नीच होते, यदि उनको आस्तिकता तथा ईश्वर विश्वास का कुछ भी प्रकाश न मिलता।

ईश्वर-विश्वास मनुष्य को उस समय सत्य मार्ग पर दृढ़ होने के लिए बल देता है जब संसार के अनेक प्रलोभन तथा अनेक भय उसे झूठ बोलने के लिए प्रेरणा करते हैं। इश्वर विश्वासी मनुष्य फांसी पाने से भी नहीं डरता और हर्ष-पूर्वक अपने कर्त्तव्य का पालन करता है क्योंकि वह समझता है कि मृत्यु के समय भी ईश्वर का करुणामय हाथ उसके ऊपर है। ईश्वर-विश्वासी मनुष्य को सच्ची क्षमा सिखाता है। ईश्वर-विश्वास मनुष्य को दम, शम तथा इन्द्रिय निग्रह के अभ्यास में सहायता देता है। ईश्वर-विश्वास उसको पापाचरण से रोकता है। वस्तुतः यदि विचार किया जाये तो ईश्वर-विश्वास एक ऐसा पारस मणि है जिसके छूने से ही मनुष्य का जीवन कुछ का कुछ बन जाता है।

लोग कहेंगे क्या बिना ईश्वर-विश्वास के हम इन गुणों को धारण नहीं कर सकते? मैं कहता हूँ, 'नहीं। कदापि नहीं।' कम से कम इतिहास या दृष्टांतों का इस विषय में अभाव है और यह सिद्ध भी नहीं हो सकता। वस्तुतः आदि सृष्टि से अब तक ईश्वर-विश्वास किसी न किसी रूप में मनुष्य मात्र में प्रचलित रहा है। इसी के आधार पर लोगों ने आचार शास्त्र की नीव रक्खी है। और इसके आश्रय से वह नियम संसार के वायु-मण्डल में प्रविष्ट हो रहे हैं। उनका येन-केन प्रकारेण प्रत्येक मनुष्य के ऊपर प्रभाव है। इसलिए यदि कोई मनुष्य ईश्वर पर विश्वास नहीं भी करता तो भी वह नियम उसे एक सीमा तक सदाचार के नियमों को उल्लंघन नहीं करने देते और इस प्रकार पाप एक सीमा से बाहर नहीं जाने पाते। अब यदि नास्तिक ऐसे स्थान पर पहुंच सकें जहां ईश्वर-विश्वास का लवलेश भी नहीं है और वह अपने पुराने संस्कारों को भी एक प्रकार से धो डाले, तब शायद इस बात का अनुमान किया जा सकता है कि ईश्वर-विश्वास के बिना मनुष्य सदाचारी रह सकता है या नहीं। परन्तु यह कैसे होगा? मैं यह जानना चाहता हूँ कि पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के बिना भी मैं चल फिर सकता हूँ या नहीं। इसके लिए मुझे उन स्थानों पर जाना होगा जहां आकर्षण शक्ति का सर्वथा अभाव हो। क्या ऐसा अनुमान सम्भव है? कदापि नहीं। जब सम्भावना नहीं तो व्यर्थ कल्पना ही क्यों? वैज्ञानिक प्रयोग में जब कल्पना की जाती है तो उसका कोई कारण अवश्य होता है।

बाह्य विषय जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन है साध्य नही।

फिर एक बात और है। सदाचार से क्या अर्थ लेते हो? यही न कि मनुष्य झूठ न बोले, किसी को त्रास न दे, चोरी आदि न करे? थोड़ी देर के लिए मान भी लिया जाय कि केवल सामाजिक आवश्यकतायें मनुष्य को इन नियमों के पालने के लिए प्रेरक हो सकती हैं। परन्तु फिर भी तो प्रेरणा बाहर से ही आयेगी। और इस सदाचार की एक सीमा होगी। यदि सदाचार के लिए आत्म शान्ति (self-satisfaction) भी आवश्यक है तो उसकी प्राप्ति ऊपरी बातों से न होगी। परम-सुख या परम-आनन्द से मनुष्य उस समय तक वंचित ही रहेगा जब तक वह अपने में एक महती सत्ता का प्रकाश नहीं देखता। चेतन मनुष्य जड़-वस्तुओं से केवल शारीरिक दुःखों से बच सकता है और शारीरिक सुखों की ही प्राप्ति कर सकता है।

परन्तु शारीरिक सुख कितने क्षणभंगुर हैं? इसका पता प्रत्येक भोग विलास में लिप्त पुरुष को शीघ्र ही लग जाता है।

पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत् पतति भूतले—से भी तो तृप्ति नहीं होती, विलास-प्रियता की अग्नि प्रत्येक आहुति से और अधिक प्रचण्ड होती है और मनुष्य की आत्मा उसमें दग्ध हो जाती है। बाह्यविषय सुख देने के लिये नहीं किन्तु शारीरिक साधारण आवश्यकताओं की पूर्ति मात्र के लिये हैं। भूख लगे खाना खालो, जिससे शरीर काम करने योग्य बना रहे। परन्तु यदि यह समझा कि जीवन का उद्देश्य ही खाना है तो खाने से बहुत जल्दी दुःख पहुंचने लगता है और मनुष्य उन सुखों से वंचित रह जाता है जो अति सूक्ष्म और इसलिये अधिक रोचक हैं। मिल ने अपनी पुस्तक यूटीलिटेरियेनिज्म (Utilitarianism) में एक प्रश्न उपस्थित किया है कि यदि सुख चाहना ही मनुष्य का उद्देश्य हो तो उसमें और सुअर में क्या भेद रहेगा? क्योंकि जो आनन्द सुअर को कीचड़ में लेटने से होता है उससे अधिक आनन्द एक राजा को कोमल शय्या पर लेटने पर नहीं होता। फिर वही उसका उत्तर देते हैं कि आनन्द-आनन्द में भेद है। सुअर का आनंद सुअर का आनंद है और मनुष्य का आनंद मनुष्य का आनंद है। सुअर में वह शक्ति ही नहीं जो सूक्ष्मतर आनंद का अनुभव कर सके। मिल का इतना कथन तो ठीक है। परन्तु यदि मिल महोदय अपनी इस युक्ति को आगे बढ़ाते और आनंद की उत्कृष्टतम तथा सूक्ष्मतम अवस्था का विचार कर सकते तो उनको पता चलता कि जिस प्रकार मनुष्य का आनन्द सुअर के आनंद से उच्चकोटि का है, इसी प्रकार विषयों में लिप्त मनुष्य के आनंद से ईश्वर-विश्वासी का आनंद कई गुणा उच्च कोटि का है। एक गणितज्ञ को जो सुख गणित सम्बंधी प्रश्नों के समाधान में आता है वह लड्डू पेड़े में नहीं आता। परन्तु एक बालक जिसे उस सूक्ष्म आनंद का कुछ भी ज्ञान नहीं यह नहीं समझ सकता कि लड्डू पेड़े से अधिक मीठी वस्तु भी कोई हो सकती है। यही हाल बाल-बुद्धि मनुष्यों का है। वह तो इन्द्रियों की तृप्ति को ही सुखों का सारभूत समझते हैं। और यह इन्द्रियां मनुष्य को उस समय तक नाच नचाती रहती हैं जब तक चेतन-जीव अपने को उनके दासत्व में रखता है। पराई उंगली के संकेत पर नाचने से न सुख ही मिलता है, न दुःख की निवृति होती है। इसीलिए वेद में कहा है :

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्नेवानुपश्यति। सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति। यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः तत्र को मोहः कःशोकः एकत्वमपनुश्यतः। (यजुर्वेद, अ.४०,६-७)

अर्थात् जो समस्त सृष्टि को एक परमात्मा में व्याप्त देखता है उसको किसी प्रकार का मोह या शोक नहीं हो सकता।

यही कारण है कि हम ईश्वर-भक्तों को संसार के सुखों पर लात मारते तथा अपने कर्त्तव्य पालन करने में किसी का भय न करते हुए देखते हैं। लोग उनको मूर्ख कहें, इसकी उनको चिन्ता नहीं। परन्तु उनका हृदय प्रेम से पूर्ण है। वह वस्तुतः सदाचार का सच्चा आधार है।

कुछ लोगों का आक्षेप है कि जब ईश्वर निराचारी (unmoral) है तो वह हमको सदाचार कैसे सिखा सकता है? निराचारी का अर्थ शायद पाठकगण समझ गए होंगे। एक सदाचारी होता है, दूसरा दुराचारी, यह दोनों सापेक्षिक शब्द है। मनुष्य या तो सदाचारी होगा अथवा दुराचारी, परन्तु कुत्ते, बिल्ली आदि प्राणियों में सदाचार-दुराचार का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि उनका काम बुद्धि-पूर्वक नहीं होता। इस लिए उन प्राणियों की गणना आचारात्मक प्राणियों (moral beings) में नहीं है। उनको न सदाचारी कह सकते हैं, न दुराचारी। इसी प्रकार कुछ लोगों का कहना है कि ईश्वर के सम्बंध में भी आचार सम्बंधी प्रश्न नहीं उठता। वह भी आचारात्मक नहीं अर्थात् निराचारी (unmoral being) है। क्योंकि वह एक ही प्रकार के काम करता है, उनसे विपरीत नहीं कर सकता है। इस प्रकार यह लोग कहते हैं कि मनुष्य को आचार वह सिखलाये जो स्वयं आचार-युक्त हो। निराचारी सत्ता मनुष्य को सदाचारी कैसे बना सकती है?

हमारा उत्तर यह है कि जिस प्रकार पत्थर या कुत्ते, बिल्ली आदि निराचारी हैं उसी प्रकार ईश्वर नहीं है। वस्तुतः हम जिस अर्थ में एक मनुष्य को सदाचारी कह सकते हैं उसी अर्थ में ईश्वर को भी सदाचारी कहा जा सकता है। ईश्वर सत् है, अतएव उसका आचार भी सदाचार कहलायेगा। पत्थर आदि जड़ पदार्थ और कुत्ते-बिल्ली आदि प्राणी झूठ नहीं बोलते। चोरी नहीं करते। परन्तु यह केवल निषेधात्मक सदाचार है, बुद्धिपूर्वक नहीं है। ईश्वर के सभी काम बुद्धिपूर्वक होते है, अतः केवल इसलिए उसको निराचारी नहीं कह सकते कि वह दुराचार नहीं कर सकता। जिस प्रकार सत्पुरुषों के आचार मनुष्य मात्र के अनुकरणीय है, इसी प्रकार ईश्वर के दया, प्रेम परोपकार तथा न्याय भी मनुष्यों को अनुकरणीय है। ईश्वर को निराचारी (unmoral) कह कर उससे सदाचार को भिन्न करना वाक्जाल है। इसका वास्तविक अर्थ कोई नहीं।

आर० एस० आर्मस्ट्रौंग ने उचित कहा है :

"उन सत् नियमों के अनुकूल जीवन व्यतीत करना ही सदाचार है जो सत्पुरुष अर्थात् ईश्वर की ओर से है और इस अनुकूलता का अनुभव करना ही परमानन्द है।"

सदाचार की कसौटी हमारी आत्मा के भीतर है।

कुछ लोगों का कथन है कि आस्तिकों ने ईश्वर के ऐसे गुण और कर्म वर्णन किए हैं कि हम उनको सदाचार की कोटि में नहीं रख सकते। और कोई सदाचारी मनुष्य उनको मानने के लिए तैयार न होगा। फिर यह कैसे कहा जाय कि ईश्वर के कर्मों का अनुकरण करके हम सदाचारी बन जायेंगे ? मिल ने इस सम्बंध में जो कुछ लिखा है उसका तात्पर्य यह है कि यदि उनको ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण मिल जाय तो वह इसको मान लेगें। परन्तु वह उसको उन विशेषणों से पुकारने के लिए तैयार नहीं हैं जो एक सदाचारी मनुष्य के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं, चाहे ईश्वर उनको घोर नरक में ही क्यों न डाल दे। अर्थात् वह नरक की यातनायें भी सहन करने को उद्यत हैं परन्तु क्रूर सत्ता को दयालु कह कर झूठ बोलने के लिए उद्यत नहीं।

वस्तुतः यह एक वीरता-युक्त वाक्य है और इसके कहने में मिल अपने 'लाभ-वाद' की भी परवाह नहीं करते। घोर से घोर दुःख मिलने पर भी वह सत्यवादी बनना चाहते हैं। इस सत्यवाद की प्रेरणा उनको किस ओर से हो रही है ? लाभवाद (Utilitarianism) और सुख-वाद (Hedonism) जिसके वह एक कट्टर प्रचारक हैं उनको दुःख सहन करके सत्य बोलने के लिए कभी प्रेरणा नहीं करेगा। मैं तो समझता हूं कि यह प्रेरणा उसी शक्ति की ओर से हो रही है जिसको स्वामी दयानन्द ईश्वर की आवाज कह कर पुकारते हैं। वस्तुतः इस अपेक्षा से देखें तो सदाचार की कसौटी हमारी आत्मा के भीतर उपस्थित है। आत्माओं का आत्मा, प्रत्येक आत्मा को उपदेश दे रहा है कि पाप से बचो और पुण्य में निष्ठा रक्खो, चाहे तुम्हें कितने ही दुःख क्यों न सहन करने पड़ें। जिस सत्ता पर विश्वास करने के लिए मिल के पास कोई प्रमाण नहीं है, वही सत्ता मिल को उनके सिद्धांतों के विरुद्ध भी उपदेश दे रही है और मिल सुन रहे हैं कि नरक की यातना भोगना अच्छा है, परन्तु झूठ बोलना अच्छा नहीं है। डाक्टर वार्ड (Dr. Ward) ने ठीक कहा था :

'जब समय आता है तो मिल की उच्च प्रकृति उनको अपने मत के विरुद्ध भी इतने बल-पूर्वक निश्चय करने के लिए बाधित करती है।'

कैसी आनन्द की बात होती यदि कहीं मिल को यह पता लग जाता कि यह उपदेश, यह सत्य बोलने का उपदेश, यह क्रूर शक्तियों से सामना करने का उपदेश, यह कठिन दुःख उठाते हुए भी सत्य परायणता का उपदेश, जिस पर मुग्ध होकर उसकी लेखनी से ऐसे उच्च भावों का उद्‌गार निकल रहा है, उस सत्ता की आवाज है जिसने वेदों में कहा था- 'अश्रद्धामनृते दधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।' अर्थात् कि मनुष्य को झूठ में अश्रद्धा और सत्य में श्रद्धा करनी चाहिए।

परन्तु यह सम्भव नहीं है। उस समय तक सम्भव नहीं है जब तक संसार में अस्तिकता का प्रचार नहीं होता। कितने धर्म हैं, जिनमें ईश्वर को अत्यंत क्रूर और दुराचारी तक माना गया है। तुलसीदास जी रामायण के अयोध्याकांड लिखते हैं– विघन मनावहि देव कुचाली।

कौन सा पाप है जिसको पुराणों में देवों से सम्बद्ध नहीं किया गया ? कौन सी बुराई है जो देवता नहीं करते ? ईर्ष्या, डाह, व्यभिचार, झूठ, मक्कारी सभी की गाथाओं से पुराण तथा पुराण-सदृश अन्य धर्म ग्रन्थ भरे पड़े हैं। यूनान के 'इलियड' और 'ओडेसी' को पढ़िये। वहाँ भी देव और देवियों की इसी प्रकार की करतूतें पढ़ने में आती हैं। यूनान की देव माला पर विचार कीजिए, नहीं-नहीं बड़े-बड़े धर्मों के धर्म-ग्रन्थ 'बाइबिल' और 'कुरान' को पढ़िये। जो कुछ इनमें ईश्वर के विषय में कहा गया है उससे तार्किक मनुष्य के हृदय में आस्तिकता की ओर से उपरति हो ही जाती है। और जब एक बार नास्तिकता का बीज हृदय में बो दिया गया तो उसके अनेक प्रकार से पल्लवित तथा पुष्पित होने में कोई देर नहीं लगती।

आवश्यकता इस बात की है कि हम ईश्वर के सच्चे स्वरूप को देख सकें। उसी समय हमारा हृदय धर्म के सच्चे भावों में प्रपूरित होगा और उसी समय हम सच्चे सदाचारी बन सकेंगे।

सुख और दुःख आत्मा के भीतर से आता है, बाहर से नहीं।

लोगों के इस कथन में कोई सार नहीं कि सच्चे आस्तिक दुःख पाते हैं और नास्तिकों को सुख मिलता है। सुख और दुःख और चीज है तथा सुख और दुःख के आडम्बर और चीज। साधारण मनुष्य केवल ऊपरी आडम्बरों को देख कर ही सुख या दुःख की कल्पना कर बैठते हैं। वह समझते हैं कि महलों में रहने वाले सब सुखी हैं और कैद में पड़े हुए सब दुःखी। परन्तु जो सुख तथा दुःख के वास्तविक स्वरूप को समझते हैं वह

कभी ऐसी भूल नहीं करते। सुख और दुःख आत्मा के भीतर से आता है बाहर से नहीं। समस्त प्रकृति के वैभव को प्राप्त करके भी मनुष्य का हृदय महा दुःखी हो सकता है और कारागार में पड़ कर भी आत्मा को सुख की प्राप्ति हो सकती है। जो नास्तिक है उसको तो वस्तुतः यह भी पता नहीं कि सुख है क्या? वह तो चारवाकों के समान साधारण सुखों को ही सुख समझे हुए हैं। जिस समय उस पर आपत्ति आवेगी, जिस समय उसको किसी मानवीशक्ति का सहारा नहीं मिलेगा, जिस समय उसको धैर्य बंधाने के लिए कोई न होगा उस समय उसके सामने अंधकार ही अंधकार होगा, उस समय कौन उसको सान्त्वना देगा? कौन उसके तप्त हृदय से कहेगा कि "घबराओ मत, तुम्हारे साथ हूँ?" ऐसे मनुष्य के लिए तो वस्तुतः मध्याह्न भी आधी रात के तुल्य है। वह अपने बाहुबल पर भरोसा रखता है परन्तु एक घड़ी ऐसी आती है जब वह बाहु भी मनुष्य को धोखा दे बैठती है। इससे तुलना करो उस मनुष्य की जो ईश्वर का विश्वासी है। निर्जन वन हो, आधी रात हो, समुद्र हो, तूफान उठ रहा हो, कारागार हो, समस्त शरीर रोग ग्रसित हो, अग्निकुण्ड हो, चाहे कैसे ही कष्ट क्यों न हों, ईश्वर का ध्यान आया नहीं उसके आनन्द का स्रोत वहा नहीं। जलते हुए शरीर के होठों पर भी एक बार हर्ष और मुस्कराहट के चिह्न प्रकाशित हो जाते हैं। माता की गोद में रोगी बालक को भी चैन मिल ही जाता है। फिर जगदम्बा की गोद में बैठ कर, उसकी लोरियां सुन कर, उसका हाथ अपने सिर पर पाकर कौन सा सतप्त हृदय होगा जो अपने दुःखों को न भूल जाय और जिसमें आह्लाद की किरण का प्रकाश न हो सके।

नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानामेको बहूनां यो विदधाति कामान्।

तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्॥

जो लोग नित्यों में नित्य और चेतनों में चेतन परमात्मा को अपने हृदय में देख सकते हैं उन्हीं को वास्तविक सुख मिलता है अन्य को नहीं।

परन्तु कुछ लोग हैं जो इस वास्तविक आनन्द को भ्रम समझते हैं उनका कथन है:

'तुम तारों भरे आकाश' को देखकर जो आनन्द और ईश्वर-विचार प्राप्त करते हो, मुझे यह आनन्द काफीके एक प्याले में मिल जाता है। क्या पर्याप्त परिणाम में अफीम या नशीली वस्तु के खाने से स्वर्ग का द्वार नहीं खुल जाता?'

सम्भवतः ऐसे ही महानुभावों ने—'पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत्पतति भूतले' का सिद्धांत निकाला था। उनके विचार में बेहोशी का नाम आनन्द है। यदि ज्ञान का तिरोभाव ही आनन्द हो तो पाषाण, काष्ठ आदि हम से कई गुने आनन्दी होंगे। क्योंकि अफीम की पीनक तो कभी खुल भी सकती है परन्तु मेरी मेज कुर्सी को किसी अवस्था में भी दुःख का भान नहीं हो सकता। कितने मूर्ख हैं वे लोग, जो दुःख से बचने के लिये नशीली वस्तुओं का प्रयोग करते हैं। मुझे याद है कि एक महाशय को जब कोई मानसिक व्यथा सताती थी तो वह एक बोतल ब्राण्डी अपने पेट में उड़ेल लेते थे। वह समझते थे कि शराब एक तोप है जिसको देखकर दुःख दूर भाग जाता है। परन्तु दुःख कभी-कभी उनके नशे को भी दूर भगा देता था। शराब में दुःख दूर करने की शक्ति होती तो शराब की दुकान से तो दुःख कोसों दूर रहा करता। परन्तु शराबियों से पूछो कि दुःख किस प्रकार अपनी समस्त सेना के साथ उन पर आक्रमण करता है और उनका पीछा नहीं छोड़ता।

वास्तविक दुःख निवृत्ति तो तभी होती है जब हमारे हृदय की आंख खुल जाती है।

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्व संशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिंदृष्टे परावरे।

दूषण से मुक्ति के लिए वन की उपयोगिता

प्राविधिक प्रगति को रोका नहीं जा सकता। इस बात का ख्याल किए बिना कि यह अपने विकास के साथ-साथ हवा, जमीन और जल या सामान्य रूप से प्रकृति को चारों तरफ से दूषित कर रही है, यह आगे बढ़ती ही जाती है। क्या करना चाहिए ?

इसके निदान का एक ही तरीका है, मनुष्य और वातावरण के बीच विवेकसंगत सम्बंधों पर आधारित समझौता। जब आदमी प्रकृति की अवहेलना कर उसे ठुकरा नहीं देता बल्कि उसकी मदद करता है तब वह प्रकृति के साथ निश्चित रूप से एक सामंजस्य स्थापित कर लेता है। यहां एक उदाहरण है जो हमारे काल के लिए अत्यधिक लाक्षणिक है।

प्रोफेसर आई. झेलुदेव के अनुसार "जितनी चिन्ता अणु उद्योग ने दूषण-नियंत्रण के सामने पैदा कर दी है, उद्योग की किसी अन्य शाखा ने नहीं की है।" इसी का परिणाम है कि अणु शक्ति उद्योग ने आज प्रकृति के प्रति मनुष्य के सहज रवैये को जाहिर कर दिया।

*　　*　　*

शंकुधर वृक्षों वाला एक हेक्टर जंगल ३० किलोग्राम स्वास्थ्यप्रद वाष्पशील तेल एक दिन में छोड़ता है जो बहुत प्रभावकारी एण्टीबायोटिक है।

आज मास्कों के चारों तरफ एक लाख पचहत्तर हजार हेक्टर में पार्क और जंगल हैं।

*　　*　　*

जापान की राजधानी टोकियो में भयानक वायु-दूषण ने म्युनिसिपल अधिकारियों को नगर की हरियाली की सुरक्षा के लिए एक आपत्कालीन कार्यक्रम स्वीकृत करने के लिए बाध्य कर दिया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत १५ वर्ष से अधिक पुराने सभी वृक्षों को एक विशेष सेवा द्वारा अनिवार्य रूप से पंजीयित किया जायेगा।

यह सारे कदम तब उठाये गए जब विज्ञान प्रविधि विभाग ने एक खतरे का संकेत देने वाला वक्तव्य जारी किया कि यदि वायुमण्डल दूषण की वर्तमान गति रही तो टोकियो आने वाले ५० वर्षों में हरियाली से रहित हो जायेगा।

*　　*　　*

मास्को के वायु-वृत्त की २२ स्थायी केन्द्रों द्वारा नियमित रूप से निगरानी की जाती है। १९५६ की तुलना में वायु में धूल और गैसीय तत्वों के दूषण का वार्षिक औसतांक घट कर दो-तिहाई हो गया है।

*　　*　　*

क्या आपको इससे प्रसन्नता नहीं होगी कि आपके नल के पानी का स्वाद झरने की तरह लगे ? लेकिन कुछ लोग गहरी सांस के साथ दुःख प्रकट करेंगे, ऐसे दिन बीत चुके हैं, वे कहेंगे। लेकिन यह कहना ज्यादा सही होगा कि ऐसा समय अभी आया ही नहीं। यह सुविदित है कि जंगल पानी के कई तत्वों—रंग, पारदर्शिता और यहां तक कि स्वाद में भी—अच्छाई ला सकते हैं। पेय जल भण्डार वन क्षेत्र द्वारा संरक्षित होते हैं। वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि इस प्रकार के वन की लम्बाई-चौड़ाई कम से कम ५०-१०० मीटर होनी चाहिए। इससे प्रवाहित होकर जल कई प्रकार के नुकसानदेह तत्वों, जैसे अमोनिया, क्षार आदि से मुक्त हो जाता है। अनेकानेक प्रयोगों से वन के एक और आश्चर्यजनक तत्व का पता चला है। यह केवल नुकसानदेह रासायनिक तत्वों को ही नहीं बल्कि मानव जीवन के लिए खतरनाक जीवाणु को भी अलग करता है। इस प्रकार ३०-४० मीटर चौड़े वन-क्षेत्र से प्रवाहित होने वाले जल से आधे जीवाणु कम हो जाते हैं। ●

क्रान्तिकारी सुभाष चन्द्र बोस .....

(पिछले अङ्क का शेषांश)

इसलिए १७ दिसम्बर १९३८ को बम्बई के अखिल भारतीय राष्ट्रीय योजना समिति का उद्घाटन करते हुए उन्होंने यहां कहा था कि योजना से ही आगे तरक्की होनी चाहिए। योजना समिति के सामने बिजली उद्योग धातु उद्योग, भारी रसायन, यंत्र परिवहन और संचार के उद्योग जैसे रेल, तार, टेलीफोन और रेडियो सभी होंगे। उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि औद्योगिक उन्नति का अर्थ यह नहीं है कि कुटीर शिल्प खत्म कर दिया जाय।

सुभाष चन्द्र बोस १९४० में गांधी तथा नेहरू के व्यक्तिवादी तथा गलत आचरण से यह समझ चुके थे कि कांग्रेस के अन्दर अब कुछ भी उपयोगी काम नहीं हो सकता है। अतः कांग्रेस से उनकी आस्था खत्म हो गयी। वह देश के वामपक्षियों से भी निराश हो चुके थे क्योंकि वे एकताबद्ध नहीं थे। यही कारण है कि वह अपनी शक्ति

के आधार पर अब भावी कार्यक्रम के बारे में चिन्तित थे। परन्तु सुभाष चन्द्र बोस ३ जुलाई १९४० को सत्याग्रह शुरु होने के पूर्व ही गिरफ्तार हो गये। वह २६ नवम्बर तक जेल में चुप रहने के बाद आमरण अनशन कर दिये। फलस्वरुप ५ दिसम्बर को उन्हे स्वास्थ्य सम्बन्धी कारणों से रिहा कर दिया गया। घर आकर वह सभी बातों पर सोचते रहे कि आगे क्या हो? अन्त में उन्होंने भारत के हित को दृष्टि में रख कर बाहर जाने का ही दृढ़ निश्चय किया।

वह पहले बर्लिन गये या मास्को गये इस पर लोगों में मतभेद है। परन्तु इस बात पर सभी सहमत हैं कि वह पहले रूस जाना चाहते थे। कम्युनिस्ट लेखक गौतम चट्टोपाध्याय ने १९७३ के १७ फरवरी के "मैनस्ट्रीम" में यह माना है कि सुभाष भाग कर पहले मास्को जाना चाहते थे और वहां से अपना कार्य करना चाहते थे। वह जाने में असमर्थ रहकर रोम और बर्लिन जाने की बात सोचने लगे। शीलभद्र-याजी ने दावा किया है कि वह काबुल से मास्को और वहां से बर्लिन गये। मन्मथ नाथ गुप्त जी ने ११ फरवरी १९७३ को याजी जी से मिलकर यह बात जानी थी।

सुभाष पर फासिस्टवादी शक्तियों के हाथों कठपुतली होने का आरोप लगाया जाता है। भारतीय कम्युनिस्ट द्वितीय विश्व युद्ध काल में जनयुग के नारे के युग में उन्हें तोजो का कुत्ता तक कहा था तथा और भी बहुत सी गालियां दी थी। परन्तु अब कम्युनिस्टों के चिन्तन में परिवर्तन हो रहा है, गौतम चट्टोपाध्याय का यहां तक कहना है कि 'अब तक जो गवाहियां प्राप्त हो चुकी हैं उनसे यह स्पष्ट मालूम होता है कि सुभाष चन्द्र बोस बहुत ही कठिन और प्रतिकूल अवस्था में भी अपनी आजादी कायम रख सके थे और हिटलर तथा तोजो के हाथों में कठपुतली बनने से इन्कार करते रहें। इस विषय का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि उन्होंने आजाद हिन्द फौज को रूस के खिलाफ लड़ाने से इन्कार कर दिया और साथ ही उन्होंने वर्मा में ओनसान तथा उनके दल के विरुद्ध आजाद हिन्द फौज को लड़ाने से २७ मार्च १९४५ को इन्कार किया।

भारत सरकार के प्रकाशन विभाग के द्वारा प्रकाशित 'सुभाष चन्द्र बोस के चुने हुए भाषण' नामक पुस्तिका की भूमिका में आजाद हिन्द फौज के भूतपूर्व मंत्री एस. ए. अय्यर ने यह लिखा कि वह बर्लिन मास्को के जरिये गये थे।

सुभाष चन्द्र बोस के भाषणों में केवल आजादी की बात होती थी। उसमें कोई भी अंश ऐसा नहीं होता था जिससे ज्ञात हो कि वह किसी भी तरह जर्मन या जापानियों की कठ-पुतली थे। उन्होंने १९४३ के १ मार्च को बर्लिन से बोलते हुए कहा— "आजादी की लड़ाई में विदेशी सहायता लेना कोई बुरी बात नहीं है। मित्रों, इस संकट काल में निष्क्रिय या तटस्थ रहना राजनैतिक आत्म हत्या के तुल्य होगा...जहां दुश्मन एक बहुत शक्तिशाली विश्व-साम्राज्य हो वहां बाहरी सहायता की जरूरत और भी बढ़ जाती है और जहां इस शक्तिशाली विश्वसाम्राज्य ब्रितानिया की मदद में दूसरी बड़ी शक्तियां हों, हम दूसरों से सहायता न लें यह एक बहुत बड़ी बेवकूफी होगी।"

इसी भाषण में उन्होंने कहा कि जर्मनी, इटली और जापान की आन्त-रिक राजनीति से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है, वहां के लोग इस पर सर खपायेंगे। पर एक बच्चे की भी समझ में यह बात आ सकती है कि चाहे इस त्रिगुट की अन्दरुनी राजनीति कुछ भी हो, उनका उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में ब्रिटिस साम्राज्य का ध्वंस करना है, जो भारत का एक और एक मात्र दुश्मन है।

उन्होंने यह भी बताया कि ब्रिटिस साम्राज्य बिलकुल लड़खड़ा रहा और वह जल्दी ही समाप्त हो जायेगा। इस भाषण का भी अन्त वह ब्रिटिस साम्राज्य मुर्दाबाद 'आजाद हिन्द जिन्दा-बाद और 'इन्कलाब जिन्दाबाद' से किया।

अतः स्पष्ट है कि नेता जी कभी भी भारतीय स्वाधीनता के साथ किसी से समझौता नहीं किये। साम्राज्यवाद का ध्वंस और शोषण मुक्त समाज की रचना उनका ध्येय था। इस प्रकार की भावना से युक्त राष्ट्रीयता अन्तर्राष्ट्री-यता की पूरक होती है। परन्तु तत्का-लीन साम्यवादी दल की अन्तराष्ट्रीय मान्यताए साम्राज्यवादियों की शक्ति में वृद्धि करती थी।

नेता जी की यह जीवनी उस घटना के बिना असम्पूर्ण होगी जो बाद को घटित हुई। आजाद हिन्द फौज के सिपाही और अफसर गिरफ्तार हुए। उनमें से जिन पर देश के बाहर मुकदमा चला उनको फांसी आदि हुई। जब देश में शाहनवाज, ढिल्लो आदि पर मुकदमा चला तब तक जोश इतना बढ़ चुका था कि उसकी लहर अंग्रेजों की भारतीय सेना तक पहुँच चुकी थी। अंग्रेजों को यह रिपोर्ट मिलने लगी कि अब भारतीय सेना इतनी नाराज हो चुकी है कि यदि आजाद हिन्द फौज के वीरों को फांसी या इस किस्म की सजा हुई तो फौज विद्रोह कर देगी। साथ ही

(शेषांश पृष्ठ १८ पर)

गरीबी की असलियत और समाधान

कृष्णनाथ

'गरीबी हटाम्रो' का नारा १९७१ में झटके में हुए लोकसभाई चुनाव की देन है। वह पोस्टर याद है न—

वे कहते हैं इन्दिरा हटाम्रो
इन्दिरा जी कहती हैं गरीबी हटाम्रो
अब आप ही चुनिए !

शब्द में शक्ति है। शब्दों की इस लड़ाई का भी अपना महत्व है। यह कहना तो ज्यादा होगा कि १९७१ का चुनाव श्रीमती गांधी इस नारे पर जीत गई, किन्तु उनकी जीत के अनेक कारणों में एक यह भी था। यहाँ उन कारणों की जांच करने का अवसर नहीं। जो भी हो १९७१ के चुनाव की धूल बैठ गई, इस बीच बनारस में गंगा में बहुत पानी वह गया, वह पोस्टर कब का छीझ गया, किन्तु शब्द अक्षर है। 'गरीबी हटाम्रो' की गूंज आज भी है। लेकिन शब्द हवा में और आकाश में बिखर गया है, अर्थ कहने-सुनने वाले के मन में है, और गरीबी अपने आप में है। धधकती हुई भूख है। गरीबी और गैरबराबरी की नित्य अग्नि में देश के करोड़ों गरीब झुलस रहे हैं।

१९७१ के चुनाव के पहले कहा जाता था कि सिंडीकेट रोड़ा अटका रही थी। बैंकों के राष्ट्रीयकरण में बाधा थी, संविधान के संशोधन में अटक थी, राजाओं की थैली खुली थी। चुनाव के बाद बांगला देश की समस्या आ गई। फिर राज्यों में स्थिर सरकार की तलब थी। अब तो सब हो गया। संगठन कांग्रेस और अन्य विरोधी दलों की हाहाकारी हार हो गई। बैंकों का राष्ट्रीयकरण हो गया, प्रिवीपर्स का अन्त हो गया, संविधान का संशोधन हो गया, बांगला देश आजाद हो गया, शरणार्थी वापस चले गए, केन्द्र और राज्यों में सुदृढ़ अधिकार, अनन्य अधिकार हो गया, अब इस अधिकार का क्या होगा? इस से क्या होने वाला है? अब 'गरीबी हटाम्रो' में क्या विघ्न–बाधा है? अब विलम्ब किस कारण है?

बजट में, योजना में, बेंक, सहकारी समितियों में और सब दूर व्यवहार में गरीबी हटाने का कोई कार्यक्रम है? जब सरकारी स्तर पर गरीबी हटाम्रो की बात कही जाती है तो लगता है मन्त्रियों, अफसरों, विशेषज्ञों के लिए गरीबी एक शब्द- मात्र हैं। गरीबी का उन्हें अनुभव नहीं है।

गरीबी पर बहस की लंबी परंपरा

इतिहास पुराण में अपने देश में ऋषियों-मुनियों ने गरीबी का साक्षात अनुभव किया है। आश्रमों में अनशन कर अन्न और प्राण के सूक्ष्म सम्बन्धों पर गहन विचार हुआ है। गरीबी को महापातक और सब अनर्थों की जड़ कहा गया है। भूखा कौन पाप नहीं कर सकता? वार्त्ता विद्या द्वारा अन्न, वस्त्र, पशु धन, धातु और अन्य धन-धान्य अर्जित करने पर बल दिया गया है। इसके बिना लोक सांस लेता हुआ भी निर्जीव कहा गया है। पराधीन भारत में गरीबी का दुःख घना हो गया था। स्वाधीनता संग्राम में प्रारम्भ से ही दादा भाई नौरोजी, गोपालकृष्ण गोखले, रमेशचन्द्र दत्त से लगा कर महात्मा गांधी ने देश की गरीबी की ओर ध्यान खींचा। राष्ट्रीय आन्दोलन में जहां राष्ट्रीय नेता देश की बढ़ती हुई गरीबी का दुख महसूस करते थे, वहां तत्कालीन ब्रिटिश सरकार प्रति वर्ष देश की भौतिक और नैतिक प्रगति का आंकड़ा छापती थी!

गरीबी के आंकड़े बताते हुए दादा भाई नौरोजी ने १९०१ में जो किताब छपाई उसका शीर्षक है—'पावर्टी एण्ड अन-ब्रिटिश रूल इन इण्डिया' (भारत में गरीबी और अ-ब्रिटिश शासन)। शायद अब समय आ गया है जब एक और किताब लिखी जानी चाहिए— भारत में गरीबी और अभारतीय शासन!

स्वाधीन भारत के संसद में राममनोहर लोहिया ने १९६३ में गरीबी पर ऐतिहासिक बहस चलायी। उन्होंने सरकार पर लाये गए अविश्वास प्रस्तताव पर बोलते हुए कहा कि देश के ६० फीसदी यानी २७ करोड़ की आमदना तीन आना रोज है। तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि नहीं, पन्द्रह आना रोज है। यह तो सरासर गलत है? यह औसत आमदनी है, गरीब ६० सैकड़ा की आमदनी नहीं। औसत में अमीर-गरीब सब की आमदनी का औसत रहता है। यह भ्रामक है। ६० सैकड़ा गरीबों को राष्ट्रीय आय का कितना अंश मिलता है। यह महत्त्व का है। इस पर हुई बहस में तत्कालीन योजनामन्त्री श्री गुलजारी लाल नन्दा ने बताया कि न यह तीन आना है, न पन्द्रह आना, साढ़े सात आना रोज है। इस पर से ६ दिसम्बर १९६३ को राष्ट्रीय आय के वितरण पर हुई बहस में डाक्टर लोहिया ने जो तथ्य और सत्य उजागर किया वह अनदेखे में देखने की आंख देने वाला है। इस तरह दादाभाई नौराजी से लगा कर राममनोहर लोहिया तक गरीबी पर बहस प्रतिपक्ष

ने उठाई है और शासन ने उस पर लीपा-पोती की है। उपनिषद् का ऋषि कहता है सत्य का मुंह हिरण्यमय पात्र से ढंका हुआ है। हे पूषण! यह ढकना उठाओ।

गरीबी की परिभाषा देश, काल, परिस्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न की जाती है। प्रशासनिक दृष्टि से एक गरीबी की रेखा मान ली जाती है। इससे कम आयवाले वर्गों और व्यक्तियों को गरीब माना जाता है और गरीबी हटाने का मतलब गरीबों को इस रेखा के ऊपर लाना समझा जाता है। गरीबी के दो रूप भी विचारणीय रहते है। एक तो वास्तविक गरीबी औरदूसरे सापेक्षिक गरीबी, इसके अलावा गरीबी के कई जुड़े हुए पहलू हैं। आय और सम्पत्ति के मामले में अभाव, दरिद्रता गरीबी का एक महत्वपूर्ण पक्ष है, किन्तु यही सब कुछ नहीं है। सामाजिक गरीबी भी है। नस्ल या जाति, या परिवार या क्षेत्र के कारण एक वर्ग का सामाजिक दर्जा हीन बन जाता है, वह परवश होता है और अपनी हीन सामाजिक स्थिति के कारण उसके आर्थिक, राजनीतिक और मानसिक विकास की सम्भावना भी हीन और कमतर होती है। इसी तरह आजकल राजनीतिक गरीबी भी गरीबी का अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष है। राजनीतिक शक्ति न होने से आर्थिक, सामाजिक, मानसिक शक्ति नहीं आ पाती और इससे राजनीतिक दर्जा और नीचा हो जाता है। इसके साथ-साथ मानसिक गरीबी भी होती है। हीन मानसिकता से मनुष्य की कल्पना भी हीन बन जाती है। संस्कार और सपने ऐसे सिकुड़ जाते हैं कि गरीबी से मुक्त होने की इच्छा, दृष्टि, सकल्प और चेष्टा, वाणी और जीविका भी नहीं हो पाती। इस तरह आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और मानसिक गरीबी का यह चौखटा है। इसमें हमारा देश जकड़ा हुआ है। गरीबी का वास्तविक और सापेक्षिक दोनों ही रूप यहां जितना घना है, उतना संसार में कहीं नहीं है।

जरूरत है गरीबी की रेखा खीचने की

सभी प्रकार की गरीबी का माप आंकड़ों में देना सम्भव नहीं है। खास कर इसके जो गैर-भौतिक पक्ष है, उनका माप कठिन है। फिर, कितना भी शोध हो यह अन्तिम रूप से स्थिर नहीं किया जा सकता कि कितनी आय, या कौन-सा जीवन-स्तर या सामाजिक दर्जा वगैरह गरीबी का है? और कौन अमीरी का है? देश, काल, परिस्थिति के अनुसार यह माप बनता है और बदलता रहता है। फिर भी, जीवन-निर्वाह के लिए आवश्यक न्यूनतम स्तर के हिसाब से गरीबी की एक रेखा खींची जाती है। 'गरीबी हटाओ' के नारे को चले तीन वर्ष के लगभग हो गया, किन्तु सरकार ने गरीबी की रेखा कहां है, यह भी नहीं तय किया। गरीबी पर बहस ठोस और निश्चित रूप से हो इसके लिए प्रथम आवश्यकता इस बात की है कि गरीबी की रेखा खींची जाये। फिर यह देखा जाये कि देश की आबादी का कितना प्रतिशत और कौन-सा वर्ग इस गरीबी की रेखा के नीचे, बहुत नीचे है? और उसे इस रेखा के ऊपर लाने के लिए क्या करना जरूरी है?

इस सिलसिले में श्री दांडेकर और श्री रथ का एक अध्ययन 'पावर्टी इन इण्डिया' (पूना, १९७१) द्रष्टव्य है। दांडेकर और रथ ने गांव के लिए प्रति व्यक्ति १५ रुपये मासिक या १८० रु० वार्षिक और शहर के लिए २२.५ रु० मासिक या २७० रु. वार्षिक खर्च को न्यूनतम माना है। इस हिसाब से १९६०-६१ में गांव की आबादी का ४० प्रतिशत और शहर की आबादी का ५० प्रतिशत गरीबी की रेखा के नीचे है।

यह अनुमान कम प्रतीत होता है। इसका आधार राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण

(पृष्ठ १६ का शेषांश)

अंग्रेजों ने यह देखा कि हम गोरी फौज से कुछ समय तक और राज कर सकते है, पर उस हालत में हमें यह पूरा उपमहाद्वीप क्रांतिकारियों, आजाद हिन्द फौजियों, समाजवादियों के हाथों में छोड़ना पड़ेगा, जो पहला काम यह करेंगे कि हमारी सारी पूंजी आदि जब्त कर लेंगे।

इन सारे विचारों का नतीजा यह हुआ कि अंग्रेजों ने यह तय किया कि देश को दो टुकड़ों में बांट दिया जाय, इस प्रकार ये हमेशा कमजोर रहेंगे, आपस में लड़ते रहेंगे और हमारी पूंजी सुरक्षित रहेगी। अब पुराने ढंग के साम्राज्यवाद के लिए गुंजायश नहीं थी। अब आर्थिक साम्राज्यवाद चल सकता था। उसी के अनुसार अंग्रेजों ने भारत छोड़ना स्वीकार किया।

इस दृष्टि से देखने पर नेताजी सुभाष का और आजाद हिन्द फौज का बहुत बड़ा ऐतिहासिक महत्व प्रमाणित होता है। जिस यज्ञ का आरंभ मंगल पाण्डे ने १८५७ में किया था, उसमें कई सोपान हुए, क्रांतिकारी आन्दोलन हुए, जनान्दोलन हुए, सत्याग्रह हुए और अन्त में आजाद हिन्द फौज सामने आयी।

आजाद हिन्द फौज के मुकदमों के कारण भारतीय फौजों में जोश फैला और फलस्वरूप नौसैनिक विद्रोह हुआ। उसी को भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की अन्तिम घटना कहा जा सकता है।

(साभार मन्मथ नाथ गुप्त लिखित जीवनी से)

का आंकड़ा है। इसके संकलन की अपनी कुछ खामियां हैं। यूं भी सरकारी आंकड़ों में प्रायः गरीबी कम झलकती है और गरीबी-अमीरी का अन्तर कम उभरता है। फिर भी अगर सावधानी से हिसाब लगाया जाये तो सरकारी आंकड़ों से भी गरीबी और गैरबराबरी के तथ्य बोलने लगते हैं।

भारत सरकार द्वारा जुलाई, १९६२ में नियुक्त एक प्रतिष्ठित अध्ययन टोली ने इस पर विचार किया था कि राष्ट्रीय दृष्टि से न्यूनतम आवश्यक खर्च क्या है? टोली की सिफारिश थी कि १९६०-६१ की कीमतों पर प्रति व्यक्ति २० रुपये मासिक खर्च न्यूनतम आवश्यक है। इस आधार पर १९६०-६१ में भी गांव की आबादी का ६० प्रतिशत से अधिक इस रेखा के नीचे है। १९६७-६८ में गांव में गरीब ६० प्रतिशत का खर्च १९६०-६१ की तुलना में वास्तव में गिर गया है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक १९६७-६८ में सबसे निचले ५ प्रतिशत का औसत खर्च ७१ रु० साल यानी ६ रु० महीना है। यानी २० पैसे रोज! बंबई में २० पैसा में एक पैकेट सिगरेट भी नहीं मिलता और बनारस में बनारसी का पान पत्ता का खर्च भी २० पैसों से ज्यादा होता है। गांव का सबसे गरीब ५ प्रतिशत २० पैसा रोज से भी कम खर्च करता है। अगला ५ प्रतिशत ९७ रुपये साल या लगभग ८ रु. महीना यानी २७ पैसा रोज खर्च करता है। ४०-५० प्रतिशत तक की आबादी का रोज का औसत खर्च ८ आना या ५० पैसा रोज के लगभग है। श्री दांडेकर और श्री रथ ने गांव में यहीं गरीबी की रेखा खींची है। लेकिन अगर सरकारी समिति के हिसाब से भी इसे प्रति व्यक्ति २० रु. मासिक या २४० रु. साल के आसपास ले जायें, तो गांव की आबादी का ६०-७० प्रतिशत या २९ करोड़ रेखा के नीचे आता है। शहर की आबादी का ४० प्रतिशत से अधिक यानी ४-५ करोड़ इस रेखा के नीचे हैं।

सबसे गरीब तबके की घटती व्यय क्षमता

नमूना सर्वेक्षण के आंकड़ों के मुताबिक ही सबसे गरीब ५ प्रतिशत का खर्च १९६०-६१ की तुलना में १९६७-६८ में ७६ रु० साल से घटकर ७१ रु० साल रह गया है। यानी १९६०-६१ को अगर १०० मानें तो १९६७-६८ में खर्च का सूचक अंक ९४ रह गया है—२१ पैसे रोज से घट कर २० पैसे रोज रह गया है। उधर घटा कर बताने पर भी अमीर शीर्ष ५ प्रतिशत का खर्च बढ़ा है।

इसे दूसरी तरह से भी देखें। सरकार के केन्द्रीय बैंक, रिजर्व बैंक आफ इण्डिया के श्री पी. डी. ओझा के (रिजर्व बैंक आफ इण्डिया बुलेटिन : जनवरी, १९७०) एक अध्ययन के अनुसार गांव में अगर न्यूनतम १,८०० कैलोरी की की खुराक की ताकत आवश्यक है, तो इसके लिए ५१८ ग्राम अन्न की जरूरत है। १९६०-६१ में गांव में ५२ प्रतिशत आबादी इससे कम भोजन और पोषण पाती है। १९६७-६८ में खुराक की कमी की चपेट में और ज्यादा लोग आ गये। सरकारी आंकड़े के मुताबिक ७० प्रतिशत ग्रामीण आबादी खुराक के मामले में गरीबी में पल रही है। शहर में गरीबों की संख्या का बड़ा भाग भी गांव के गरीबों का है। वह कैसे खोलियों में, चालों में, झुग्गी-झोपड़ियों में, पटरी पर रहता है, यह किसी के भी अनुभव की चीज है। दीर्घकाल तक शहर में रहने पर शहरी गरीबी और खुराक की कमी का वह खास ढंग से शिकार हो जाता है। हर हालत में शहरी आबादी का ५०-६० प्रतिशत भोजन और पोषण की कमी में जीता है। शहर की गरीबी एक माने में गांव से भी ज्यादा भयावह है। सूरज की रोशनी, खुली ताजी हवा, मिट्टी, प्रकृति, परिवार से कटा हुआ शहरी गरीब और भी ज्यादा दीन, दुःखी और अवश रहता है। यह हिसाब १,८०० कैलोरी गांव के लिए और १,५०० कैलोरी शहर के हिसाब से लगाया गया है। जबकि एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए २,२५० कैलोरी की आवश्यकता है।

इसी तरह अगर मर्द के लिए २२ मीटर और औरत के लिए २५ मीटर कपड़े को न्यूनतम मानें, या सबके लिए २५ मीटर को न्यूनतम आवश्यक मानें, तो भी कपड़े की आवश्यकता से कहीं कम कपड़ा बच्चे, बूढ़े, औरत-मर्द की देह पर है। करोड़ों की गीली धोती देह पर ही सूखती है। करोड़ों औरतें दूसरा वस्त्र न होने से नहा नही पाती। एक-वस्त्रा द्रोपदी का चीर-हरण होने से इतना बड़ा महाभारत हुआ। आज तो करोड़ों का चीर-हरण नित्य हो रहा है, फिर भी कुछ नहीं हो रहा है!

गरीबी की एक और पहचान भूमि की जोत

देश की जनसंख्या का ८० प्रतिशत या लगभग ४४ करोड़ गांव में बसता है, ७० प्रतिशत खेती पर निर्भर है, राष्ट्रीय आय का लगभग ५० प्रतिशत खेती से आता है। इसलिए भूमि की जोत का आंकड़ा इस दृष्टि से महत्व का है। औसत ५ एकड़ से कम की जोत अनार्थिक मानी जाती है। कुल खेतिहर परिबारों का ७४ प्रतिशत या ५ करोड़ ३१ लाख परिवार ५ एकड़ से कम की जोंतवाले है। ये लगभग साढ़े २६ करोड़ गरीबी की रेखा के नीचे हैं। ५८ प्रतिशत या ४ करोड़ १५ लाख

खेतिहर परिवार ढाई एकड़ से कम की जोतवाले हैं। २२ प्रतिशत या १ करोड़ ५८ लाख खेतिहर परिवारों के पास एक धुर जमीन भी नहीं है। भूमिहीन है। यानी ७ करोड़ ६० लाख या लगभग ८ करोड़ लोग तो भूमिहीन हैं। ये अत्यन्त गरीब हैं।

निरक्षरता गरीबी की एक और अचूक पहचान है। १९७१ की जनगणना के अनुसार जनसंख्या के सिर्फ २४ प्रतिशत ही साक्षर हैं' ७६ प्रतिशत निरक्षर हैं। ३९ करोड़ निरक्षर हैं। सारी दुनियां में किसी देश में इतने निरक्षर नहीं हैं। जो अपना नाम तक नहीं लिख सकते, उनकी चतुर्मुखी गरीबी का क्या बखान किया जाये ?

रोजगार, मकान, दवा, मनोरंजन, के साधन, अखबार, रेडियो वगैरह के इस्तेमाल से गरीबी के और माप स्थिर किये जा सकते हैं। इसके लिए अभी अवकास और स्थान नहीं हैं। मोटी-मोटी, अगर १९६०-६१ की कीमतों पर प्रति व्यक्ति २० रु. मासिक या २४० रु. वार्षिक खर्च को न्यूनतम आवश्यक माना जाये, तो देश की आबादी का ६०-७० प्रतिशत यानी ३३-३७ करोड़ गरीबी की रेखा के नीचे हैं।

आजकल कीमतें १९६०-६१ की तुलना में लगभग दुगनी हो गई है। इस हिसाब से प्रति व्यक्ति ४० रु. मासिक को न्यूनतम आवश्यक माना जा सकता है। अपने देश में व्यक्ति इकाई नहीं है, परिवार इकाई है। अगर औसत परिवार पांच व्यक्तियों का माना जाये तो परिवार की आय २०० रु. मासिक या २,४०० रु. वार्षिक आवश्यक न्यूनतम है। परिवार के लिए २०० रु. महीना भी कुछ नहीं है। लेकिन आज की हालत में गरीबी की रेखा परिवार के लिए २०० रु. [illegible] पर खींची जा सकती है, यह रेखा सब देश, काल पात्र के लिए नहीं हैं। अमरीका में चार व्यक्तियों के परिवार के लिए ३,००० डालर या २२,००० रु. प्रति वर्ष की आमदनी तक गरीबी की रेखा खींची गई है। इसका मतलब औसत परिवार के लिए १,८३० रुपये महीना से अधिक है। यह अमरीका में गरीबी की रेखा है। इससे नीचे जो काले, गोरे परिवार हैं उन्हें निर्वाह भत्ता देकर इसके ऊपर लाने का प्रयत्न अमरीका में चल रहा है। अपने देश में १,८०० रु. से अधिक पाने वाला उच्च मध्यम वर्ग में गिना जायेगा। भारत में जो अफसर, प्रोफेसर, लेखक, पत्रकार, डाक्टर, इन्जीनियर, वकील वगैरह 'हजारी' कहलाते हैं। इतराते हैं, वे अमरीकी हिसाब से दरिद्रों की कोटि में हैं और राज्य से सहायता के पात्र हैं।

आंकड़ों से परे का यह दर्द

यहां गरीबी के आंकड़े दिये गए हैं। गरीबी का दर्द आंकड़ों के परे हैं। यह तो अनुभव का फल है। यह अनुभव देश के गरीबों से अधिकाधिक तद्रूप तदाकार होकर ही आ सकता है। यह तद्रूपता, तदाकारता, तादात्म्य गांधी की परम्परा में तो था। परन्तु देश के शासक वर्ग का तादात्म्य गरीबों से नहीं, दुनियां के शासक वर्ग से हो रहा है। राजा-प्रजा का अन्तर यहां सदा रहा है। वह अन्तर आज और भी भयावह हो गया है, और बढ़ता जा रहा है।

मुझे छोटा नागपुर के पहाड़ों और जंगलों के बंधु उड़ांव की याद आती है। बंधु उड़ांव की जंगल में झोपड़ी, रसोई मैंने १९५९ में देखी थी। अनाज के कोठिला में एक मुट्ठी मक्का भी नहीं, चूल्हे में आग बुझी हुई, राख उड़ती हुई, दो-तीन दिन से चूल्हा जला नहीं, लोढ़ा सिल से छटक कर अलग पड़ा, बासन बिना मांजे ऐसे ही लुढ़के हुए, बंधु उड़ांव इस सोच में कि क्या खाऊं ? कहां जाऊं ? ऐसे करोड़ों आदिवासी है, भूमिहीन खेत मजदूर हैं, बूढ़े और अपंग हैं, विधवाएं हैं, बेकार है, भिखमगे हैं, गैर-सरकारी साधू हैं। इनके पैर के नीचे धरती नहीं है, ऊपर वज्र है। इसकी चोट वे कैसे सहते हैं। वे ही जानते हैं।

मेरे लिए 'गरीबी हटाओ' के किसी कार्यक्रम की एक कसौटी है। क्या इस कदम से बंधु उड़ांव की रसोई में एक मुट्ठी अनाज और एक चुटकी नमक और एक किरण रोशनी की और पहुंचेगी, या जो है वह भी कम होगी। योजना या बजट या बैंक से मुझे बधु उड़ाव की भूख और परवशता में कमी आती नहीं दीखती, चौथी योजना के आंकड़ों पर अगर हिसाब भी लगाया जाये तो सबसे गरीब पांच प्रतिशत के खर्च का सूचक अंक १९६८-६९ की तुलना में १९८०-८१ में १०० से घट कर ९१ ही रह जाने वाला है. १९६०-६१ की तुलना में १९६७-६८ में १०० से घटकर ९४, और फिर १९८०-८१ में ९ फीसदी की गिरावट। इस चोट को मेरा बंधु उड़ाव, अगर अब तक अकाल में मर नहीं गया है, तो नहीं ही झेल पायेगा !

कुछ सुझाव ! कुछ कार्यक्रम

तो प्रश्न है कि गरीबी हटाने के लिए किया क्या जाये ? इसके लिए पहले तो पूरी व्यवस्था को गरीब की दृष्टि से देखा जाये। सदय, सहृदय हो कर शासक वर्ग पहले गरीबी को आमने-सामने देखे, महसूस करे, फिर गरीब को केन्द्र में रख कर दृष्टि से योजना बनायें।

प्रति परिवार २०० रुपये मासिक या २,४०० रु. वार्षिक की गरीबी रेखा

खींची जाये। इस रेखा के नीचे जो परिवार हैं, उन्हे रोजगार-धन्धा देकर या और गरीबी भत्ता देकर इस रेखा के पास उतारा जाये। साथ ही, खर्च की सीमा बाँधी जाए। कम से कम आमदनी और खर्च में इस प्रकार १:१० का अन्तर हो। यह अन्तर आगे चल कर और भी कम किया जाये। २,००० रु. मासिक से ज्यादा आमदनी और खर्च पर अंकुश लगे। इसमें भी निजी भोग और फिजूलखर्ची से ज्यादा मारक सरकारी भोग और फिजूलखर्ची है, क्योंकि उसकी कोई सीमा नहीं है। नये-राजा-रानी, साहब, सेठ, साधारण जनता से अधिकाधिक तदाकार, तद्रूप हों। भोग-विलास और फिजूलखर्ची को छोड़ कर त्याग, सादगी और संयम का व्यक्तिगत रूप से उदाहरण प्रस्तुत करें। इससे सापेक्षिक गरीबी और गैर बराबरी कम होगी और ग्रामीण और शहरी हिंसा की प्रवृत्ति भी कम होगी। अन्यथा हिंसा, हत्या, लूट-पाट को रोक सकना स्थायी से स्थायी सरकार के लिए असंभव होगा। सरकार का स्थायित्व भी चद-रोजा होगा।

इसमें गरीबी रेखा के नीचे के लोगों को रेखा के ऊपर लाने में कठिनाई हो सकती है। किन्तु अमीरी रेखा के ऊपर के लोगों को नीचे लाने में संकल्प, राज्य की शक्ति और नीति की ही आवश्यकता हैं। इससे प्रति वर्ष १५-२० अरब रुपये की बचत होगी, जो गरीबों की स्थिति बदलने में लगायी जा सकेगी।

गरीब इसलिए गरीब है कि उसके पास उत्पादन का साधन नहीं है। भूमि देश में उत्पादन का प्रधान साधन है। इसका असमान वितरण समाप्त कर जो धरती को जोते बोये, उसे ही उस का राजा बनाना जरूरी है। इसके अलावा, १ करोड़ एकड़ कृषि योग्य भूमि की भूमि सेना बना कर एक बरस के अन्दर खेती में लाया जाये। इस नवतोड़ जमीन पर भूमिहीन खेत मजदूरों को बसाया जाये। इसका स्वामित्व भी उन्हें सौंपा जाये। स्वामित्व का जादू बालू को भी सोना बना देगा।

खेती से भिन्न छोटे-छोटे ग्रामीण धंधे किसान-मजदूर की झोंपड़ी तक पहुँचाये जायें। उन्नत किस्म की छोटे पैमाने की नई टेक्नालाजी विकसित हो। हमारे देश के उत्पादन, उपभोग की प्रणाली विकेंद्रित है। इसलिए औद्योगीकरण भी विकेंद्रित ही होगा, केंद्रित नहीं।

राज्य के हाथ में शक्ति का केंद्रीकरण भी भयावह है। यह राजनीतिक गरीबी और गैरबराबरी का कारण है। राजनीतिक शक्ति का केंद्र, राज्य, जिला और गांव में बंटवारा जरूरी है।

गांव अभिमुख योजनाएं बनें

खेती से अतिरिक्त अन्न और साधन प्राप्त करना गरीबी हटाने के लिए जरूरी है। इस अतिरिक्त अन्न और साधन से ही अन्य उद्योग-धंधों और प्रतिरक्षा का विकास हो सकेगा, अन्यथा नहीं। इसलिए योजनाएं ग्राम-दृष्टि से बनाना जरूरी है। अभी तो योजनाएं गांव से विमुख और शहरों की ओर अभिमुख हैं, और शहर वाशिंगटन और मस्क्वा (मास्को), टोकियो की ओर अभिमुख हैं।

काम-धंधे के अधिकार को मौलिक अधिकारों में शामिल करना अब नहीं टाला जा सकता। बेकारों को काम या बेकारी का भत्ता मिले, न मिलने पर कचहरी में दावा करके काम का भत्ता मिलना चाहिए।

विकास की कसौटी राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि न हो कर ६० सैकड़ा गरीबों की आय में वृद्धि हो। प्रति वर्ष राष्ट्रीय आय के वितरण के आंकड़े प्रकाशित किये जायें।

यह भ्रम दूर होना चाहिए कि आर्थिक विकास के साथ अपने आप गरीबी हट जायेगी। आर्थिक विकास गरीबी हटाने के लिए आवश्यक है, किन्तु पर्याप्त नहीं है। पिछले २५ वर्षों

अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन छेड़ दो

(पृष्ठ १० का शेषांश)

हम यह जरुर चाहते हैं कि वहां वेल्स और आयरिश लोगों को अपनी भाषाओं का प्रयोग करने दिया जाए। हम यह भी नहीं चाहते कि अमरीका से अंग्रेजी हटे लेकिन हम यह अवश्य चाहते हैं कि प्युर्टोरिकी और इतालवी लोगों पर अंग्रेजी थोपी नहीं जाए। यह संयोग की बात है कि हिन्दुस्तान में अंग्रेजी एक दमनकारी भूमिका अदा कर रही है। उसके स्थान पर फ्रांसीसी, फारसी, हिस्पानी, डच आदि कोई भी भाषा हो सकती थी। जो भी होती, हम उसका उतना ही डटकर विरोध करते, जितना कि अंग्रेजी का कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन का लक्ष्य किसी भाषा-विशेष के विरुद्ध हाथ धोकर पीछे पड़ जाना नहीं है बल्कि उस दमनकारी प्रवृत्ति का विरोध करना है जिसके कारण १ छोटा सा तबका अपने स्वार्थों के लिए करोड़ों लोगों के हितों को हानि पहुचाता है और इस निकृष्ट कर्म को करने के लिए भाषा को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करता है।

अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन किसी राजनैतिक दल विशेष का आन्दोलन नहीं है। इसमें सभी दलों, सभी तबकों, सभी विचारों, सभी उपासना पद्धतियों, सभी प्रान्तों और सभी भाषाओं के लोगों का स्वागत है। इसके द्वारसभी के लिए खुले हैं। जो चाहे सो आवे।

के आर्थिक संचालन में तो गरीबी और गैरबराबरी बढ़ी है। रोजगार, शिक्षा स्वास्थ्य, नेतृत्व के समान अवसर देकर यह मिटायी भी नहीं जा सकती। इसके लिए तो गरीब वर्गों, जातियों, स्त्रियों, अल्पसंख्यकों, आदिवासियों को विशेष अवसर देकर आगे बढ़ाना होगा। हाई-स्कूल तक की शिक्षा अनिवार्य और निःशुल्क हो; विद्या अर्थकारी हो, रोजगार अभिमुख हो। प्राइमरी शिक्षा समान ढंग के स्कूल में हो। फेंसी, खर्चीले पब्लिक स्कूल, कान्वेंट कानून द्वारा खत्म किये जायें। सार्वजनिक जीवन से अंग्रेजी का प्रयोग समाप्त हो और मातृभाषा में गरीब और पिछड़े आगे बढ़ें। चित्त की शुद्धि और संस्कार पर भी ध्यान रहे। विद्या और आचरण दोनों ही का विकास हो। अस्पृश्यता उन्मूलन, जाति प्रथा का नाश, शराबबन्दी, सब धर्मों में सम्भव जो सत्य बुद्धिपूर्वक तर्कपर आधारित हो और अल्पसंख्यकों के हितों का संरक्षण जैसे कदम आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, मानसिक गरीबी को हटाने में जरूरी होंगे। ये चारों पहलू एक दूसरे में गुंथे हुए हैं।

गरीबी पर चौतरफा हमला हो

'गरीबी हटाओ' का एक अन्तर्राष्ट्रीय आयाम हो सकता है। संसार के सब देश अपनी शक्ति के मुताबिक विश्व गरीबी हटाओ कोष में चंदा दें, राष्ट्रीय आय का १६ या १.८ या १.१२ दें और इससे गरीब देश अपनी आवश्यकता के अनुसार लें।

गरीबी पर चौतरफा हमला करने की जरूरत है। आज की सरकार और समाजव्यवस्था में गरीबी के चौखटे पर चौतरफा चोट करने की शक्ति और युक्ति नहीं है। संकल्प भी नहीं है। 'गरीबी हटाओ' सिर्फ शब्द हैं वह भी आकाश और हवा और काल में बिफर गया है। सम्यक संकल्प नहीं है। इसलिए सबसे पहले तो संकल्प बने फिर तो मौजूदा व्यवस्था का विकल्प भी उभरने लगेगा। अभी तो जहां तक भविष्य में दीख पड़ता है, कोई विकल्प नहीं नजर आता। इसलिए गरीबी और गैरबराबरी के चौखटे में कसे समाज व्यक्ति में घुटन है, छटपटाहट, असहायता है। किन्तु इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि कालक्रम में यह संकल्प और विकल्प पैदा होगा, क्योंकि देश और गरीब जिंदा रहेगा और जागेगा। ●

धर्म सापेक्ष या धर्म निरपेक्ष

(पृष्ठ ९ का शेषांश)

अभिप्राय धारणा से अर्थात् किसी नियम को, किसी व्यवस्था को, किसी ढांचे को अपने जीवन में धारण करने से ढाल लेने से लिया जाता है। उस दर्शन का जिसने राष्ट्र के जीवन को निश्चित करना है, वैज्ञानिक, तर्क संगत व व्यवहारिक होना अत्यन्त आवश्यक है और क्योंकि धर्म का अस्तित्व प्रत्येक देश और काल में होना अनिवार्य है तो वह धर्म देश और काल से सिमित नहीं होना चाहिए। इस संदर्भ में हम वैदिक धर्म को अपना आधार बना सकते हैं क्योंकि सारा संसार मानता है कि वैदिक दर्शन एक व्यक्ति विशेष द्वारा निर्मित न होकर ईश्वरीय ज्ञान है, उसका आधार एक व्यक्तित्व न होकर अनुभूति है। हां यह अलग बात है कि उन मूल सिद्धांतों को देश काल और परिस्थिति के अनुसार हम लागू किस ढंग से करते हैं। सो वैदिक धर्म एक मानव धर्म होने के नाते सारे प्राणी मात्र का धर्म हो सकता है।

धर्म की आवश्यकता व उसका स्वरूप जानने के बाद समस्या उसको लागू करने की होती है। इस संदर्भ में हमारी सरकार ने अपनी धर्म निरपेक्षता की नीति अपना कर देश की जड़े तो खोखली की ही हैं साथ ही साथ धर्म का अशुद्ध अर्थ लगा कर धर्म के साथ भी घोर अन्याय किया है। बुद्ध मत, जैन मत, ईसाई मत, इस्लाम मत, सिख मत आदि व्यक्ति विशेष के पीछे चले मत विशेष या सम्प्रदायों को धर्म की संज्ञा देकर महान कायरता व गैर जिम्मेवारी का कार्य किया है। मेरा अभिप्राय यहां किसी मत की आलोचना करना नहीं है, सभी मतों में अच्छे सिद्धांत भी मिलते हैं, अच्छी बातें भी मिलती हैं किन्तु इन मतों या सम्प्रदायों को धर्म की संज्ञा नहीं दी जा सकती। ईसा मसीह से पहले ईसाई धर्म कहां था, महात्मा बुद्ध से पहले बौद्ध धर्म कहां था? महावीर से पहले जैन धर्म कहां था? मोहम्मद साहब से पहले इस्लाम कहां था? गुरु नानक से पहले सिख धर्म कहां था? क्या इन महा पुरुषों से पहले मानव सृष्टि नहीं थी? क्या इनसे पहले पैदा हुए लोगों का कोई धर्म नहीं था? क्या इनसे पहले देश का अस्तित्व नहीं था? सो इस प्रकार किसी व्यक्ति विशेष के पीछे चले मत विशेष को किसी राष्ट्र का धर्म नहीं माना जा सकता। इस प्रकार धर्म का गलत अर्थ करते हैं। (Religion) का अर्थ धर्म न होकर कोई मत होता है, अंग्रेजी भाषा में धर्म का अर्थ देने वाला कोई शब्द नहीं है)।

धर्म के विषय में तो भ्रम फैलाया ही साथ ही देश का भी भयंकर नुकसान किया। स्वार्थी लोगों ने भोली-भाली जनता के बीच तथाकथित धर्म की दिवारें खींच कर ग्राम जनता का तो शोषण किया ही साथ ही देश की एकता को व राष्ट्रीय भावना को गहरी चोट पहुंचाई। आज विभिन्न सम्प्रदायों को धर्म की संज्ञा देने के कारण और उनको खुले रूप से पनपने देने के कारण मन्दिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों व गिर्जाघरों में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। देश की एकता व लोगों के परस्पर प्रेम को तोड़ डालने के षड़यंत्र रचे जाते हैं। कौन नहीं जानता कि नागालेंड, मिजो-हिल्ज व अन्य पहाड़ी सीमा प्रान्तों में बने गिर्जाघर वहां के निवासियों को ईसाई बनाकर, विद्रोही भावना भरकर सैनिकों व देश की एकता के विरुद्ध षड़यंत्र रचने के काम आते हैं। सो इन भयंकर परिस्थितियों में देश के विद्वानों का कर्त्तव्य बनता है कि वे तर्क सम्मत, प्राकृतिक, व्यवहारिक व सनातन वैदिक धर्म जो कि किसी व्यक्ति विशेष, वर्ग विशेष, जाति विशेष या किसी देश विशेष का धर्म न होकर सदा लागू होने वाली वैज्ञानिक जीवन पद्धति है, का पक्ष लें। दूसरी तरफ हमारी सरकार का कर्त्तव्य बनता है कि वह देश व्यापी ही क्यों सारे विश्व के विद्वानों को इकट्ठा करके किसी मानव धर्म को निश्चित करे और उसको अपने देश का धर्म बना लेवे और धर्म निरपेक्षता की नपुन्सक नीति से छुटकारा पाकर विभिन्न सम्प्रदायों द्वारा धार्मिक जगत में फैलाए जा रहे भ्रम को रोककर तथा राष्ट्रीय एकता को मजबूत करके देश को महान बनावे न कि धर्म निरपेक्षता का बेसुरा रागअलाप कर देश को दिशाहीन बना दे।

—कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

आर्य सभा के प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन की तैयारियां

९ सितम्बर १९७३ का पंजाब प्रतिनिधि सभा का चुनाव कुछ अवैधानिक अनियमितताओं के कारण अनिर्णीत रहा। पंजाब और हरयाणा हाईकोर्ट चण्डीगढ़ ने २३ दिसम्बर को दोबारा गुप्त मतदान द्वारा चुनाव सम्पन्न कराने का निर्णय घोषित किया। परिणामस्वरूप १९, २० और २१ अक्टूबर को दिल्ली के दीवान हाल में होने वाले आर्य सभा के प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन को स्थगित करना पड़ा क्योंकि पंजाब प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद के प्रत्याशी आर्य सभा के संस्थापक प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी स्वयं थे। परन्तु अब चुनाव हाईकोर्ट के संरक्षण में निर्धारित समय पर विधिवत सम्पन्न हो गया और स्वामी इन्द्रवेश जी बहुमत से प्रतिनिधि सभा के प्रतिष्ठित प्रधान पद पर आसीन हो चुके हैं इसलिए आर्य सभा के प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन को मार्च के अन्तिम सप्ताह में सम्पन्न करने का निर्णय लिया गया।

आर्य सभा का हरयाणा राज्य में एक मान्यता प्राप्त राजनैतिक दल के रूप में उभर कर सामने आना और वैदिक समाजवाद की क्रांतिकारी विचारधारा से अनुप्राणित होकर देश की राजनीति में एक मौलिक स्थान प्राप्त करना—ये दोनों बातें अब इस बात की अपेक्षा करती हैं कि आर्यसभा का सारे राष्ट्र के स्तर पर गठन हो। प्रसन्नता की बात है कि देश के विभिन्न स्थानों में आर्य सभा की तदर्थ समितियां स्थापित होकर पिछले लगभग एक वर्ष से इस दिशा में सक्रिय हैं। यथा पंजाब के होशियारपुर जिले की आर्य सभा, बिहार आर्य सभा, गोरखपुर आर्य सभा, मेरठ, मुज्जफरनगर जिलों की आर्य सभा, राजस्थान के तिजारा और बहरोड अंचलों की आर्य सभा आदि। उधर मराठवाड़ा में आर्य सभा के युवक काफी सक्रिय हो गये हैं। उत्तर प्रदेश में पीलीभीत को केन्द्र बनाकर आर्यसभा का संचालन भी काफी पहले से हो रहा है। देश के अनेक भागों में आर्यसभा का गठन हो चुका है आवश्यकता अब इस बात की है कि इन सब को इकट्ठा कर एक राष्ट्रीय स्तर का संगठन बनाया जाय और उन स्थानों एवं प्रान्तों में भी आर्य सभा का गठन किया जाय जहां अभी तक इसकी विधिवत स्थापना नहीं हुई है।

इसके साथ ही आर्य सभा की अर्थनीति, शिक्षानीति, विदेशनीति आदि विषयों पर भी खुल कर बहस करके एक सुनिश्चित घोषणापत्र प्रकाशित करने की आवश्यकता है। आर्यसभा की क्रांतिकारी अर्थनीति आरंभ से विवाद का विषय रही है। इसके बारे में विरोधियों द्वारा कई प्रकार की भ्रांतियां फैलायी जा रही हैं। इस अधिवेशन के अवसर पर वैदिक अर्थनीति की मूल मान्यताओं पर जमकर बहस होगी और भावी नीतियों तथा कार्यक्रमों की घोषणा होगी।

इन सारे बहस मुबाहसों के अतिरिक्त आर्य सभा के राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय अधिकारियों का चुनाव भी इस अवसर पर होगा और नये स्थानों पर संयोजक की नियुक्तियां की जायेगी।

इस तरह यह अधिवेशन बहुत ही महत्वपूर्ण होगा। देश भर के कार्यकर्त्ताओं का आपस में तीन दिन मिलकर बैठना और नीतियों पर चर्चा करना, राष्ट्र की समस्याओं को ध्यान में रखकर उनके समाधान ढूंढना और देश की शोषित पीड़ित जनता को एक नया नेतृत्व प्रदान करना काफी बड़े उत्तरदायित्व का परिचायक होगा।

इस अवसर पर आर्यसभा के औद्योगिक मजदूर संगठनों की रूपरेखा बनाना, महिला संगठन खड़ा करना तथा युवक संगठनों का विस्तार करना इसी प्रकार अन्य कार्यक्रमों पर विचार किया जाएगा।

अतएव इस अधिवेशन की गम्भीरता एवं महत्ता को देखते हुए देश के समस्त आर्य संगठनों से हमारा यह निवेदन है कि वे अपनी संस्था और संगठन के प्रतिनिधि के रूप में अधिक से अधिक सुयोग्य व्यक्तियों को मनोनीत कर भेजें। प्रतिनिधि शुल्क १० रु. होगा और इनके सम्मिलित होने की पूर्व सूचना हमें आर्य सभा कार्यालय, रोहतक में प्राप्त हो जानी चाहिए ताकि हम उनके निवास, भोजन आदि का समुचित प्रबन्ध कर सकें।

इस अवसर पर जो भी प्रतिनिधि प्रस्ताव आदि रखना चाहते हैं उसकी प्रतिलिपि हमें १० मार्च तक कार्यालय में अवश्य प्राप्त होनी चाहिये।

इस अधिवेशन की सफलता के लिए अन्य जो भी सुझाव आप भेजना चाहें उसका हम स्वागत करते हैं।

विशेष—अधिवेशन में आर्य सभा की कार्यकारिणी स्वामी इन्द्रवेश जी के प्रधान पद से त्याग-पत्र पर गम्भीरता से विचार कर देश हित में उचित निर्णय लेगी।

—अग्निवेश

महामन्त्री आर्यसभ

पंजीयन क्रमांक RTK 28
Lic. to Post without
Pre-Payment No. P-13

राजधर्म
रोहतक
१२ फरवरी १९७४

समचार दर्शन

स्वामी अग्निवेश जी प्रस्तोता के प्रतिष्ठित पद पर आसीन

(विशेष सम्वाददाता द्वारा)

२७ जनवरी को जालन्धर में हुई पंजाब प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग की बैठक में सभा के वरिष्ठ अधिकारियों और अन्तरंग के सभी सदस्यों ने क्रांतिकारी युवा संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी को (Registrar) के प्रतिष्ठित पद पर आसीन किया। स्वामी अग्निवेश जी के इस पद पर आसीन होने से सभी शिक्षण संस्थाओं और आर्य जगत में प्रसन्नता की लहर उत्पन्न हो गई है।

प्रस्तोता को लगभग १४२ कालेज और स्कूलों के संचालन का भार वहन करना पड़ता है। ये स्कूल तथा कालेज हरयाणा से लेकर पंजाब, उत्तर प्रदेश, दिल्ली आदि प्रान्तों में दूर-दूर तक फैले हुए हैं।

पूर्ण आशा एवं विश्वास है कि स्वामी जी के इस पद पर प्रतिष्ठित होने से समस्त शिक्षण संस्थाओं की वर्षों की शिथिलता एवं अकर्मण्यता का अन्त होगा। उनके कुशल निर्देशन में वे निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होकर महर्षि दयानन्द सरस्वती की कल्पना को साकार करने में समर्थ होंगी।

प्रतिवाद-सूचना

'राजधर्म' के अंक २ में शक्ति नगर में स्वागत समाचार में कुछ भूल हो गयी है। स्वागत समारोह की अध्यक्षता श्री कृष्णचन्द विद्यालंकार के बजाय श्री कृष्णकान्त चरला द्वारा सम्पन्न हुआ था।

आर्य समाज कैलास ग्रैटर कैलास-१ नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

९, १० तथा ११ फरवरी १९७४ को आर्य समाज मंदिर, ग्रेटर कैलास-१ नई दिल्ली-४८ में वार्षिकोत्सव बड़े धूम-धाम से मनाया जायेगा जिसमें स्वामी इन्द्रवेश जी नव निर्वाचित प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, स्वामी अग्निवेश जी, लाला रामगोपाल शालवाले, प्रो. उत्तम चन्द जी शरर, श्री पं. सत्यपाल जी शर्मा वेदशिरोमणि, प्रो. रविदत्त जी, श्री केदार नाथ जी साहनी, महापौर तथा अन्य उच्चकोटि के विद्वान पधार रहे हैं।

महोत्सव के पहले दिनांक ३-८ फरवरी १९७४ तक रात्रि ८-०० से ९-०० बजे तक श्री आचार्य कृष्ण जी द्वारा वेद कथा और वेद कथा से आधा घटा पूर्व प्रभु भक्ति के गीत हुआ करेगे। प्रतिदिन प्रात: ६-३० से ७-३० बजे तक यजुर्वेद परायण यज्ञ हुआ करेगा।

इस अवसर पर अन्य महत्वपूर्ण सम्मेलनों का आयोजन भी किया जा रहा है। आइये, पधारिये और इस समारोह के सभी कार्यक्रमों में अपने परिवारजनों, बन्धुओं तथा इष्ट मित्रों सहित भाग लेकर धर्म लाभ उठाइए।

दर्शनाभिलाषी
प्रधान—शान्तिप्रकाश
मन्त्री—विश्वामित्र

भजनोपदेशक तुरन्त सम्पर्क करें—

आर्य भजन मण्डलियों की आवश्यकता

हरयाणा में आर्य समाज के प्रचार कार्य का विस्तार करने के लिए आर्य भजन मण्डलियों की तुरन्त आवश्यकता है। अत: आर्य समाज के क्षेत्र में प्रचार करने वाले प्रचारक महानुभावों से प्रार्थना है कि सभा की सेवा करने के लिए अपनी भजन मण्डलियों (तीनों महानुभावों भजनीक, सहायक भजनीक व ढोलक कलाकार) के पृथक-पृथक प्रार्थना पत्र, अपनी योग्यता, अनुभव तथा आयु आदि के विवरण सहित निम्न पते पर शीघ्र भेजने की कृपा करें। वर्तमान मंहगाई को देखते हुए योग्यता अनुसार उचित दक्षिणा दी जावेगी।

रामचन्द्र आर्य, उपमन्त्री आर्य
प्रतिनिधि सभा पंजाब
(हरयाणा वेद प्रचार मण्डल,
झज्जर रोड रोहतक।)

सूचना

गुरुकुल मटिण्डु का वार्षिक महोत्सव अत्यन्त धूम-धाम से १, २ और ३ मार्च को सम्पन्न होने जा रहा है। इसमें आर्य समाज के उच्च कोटि के विद्वान संन्यासी, वक्ता और भजनोपदेशक पधार रहें हैं। अत: सभी सज्जन इष्ट मित्रों सहित कुल भूमि में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

आर्य युवक परिषद, झज्जर

इस का चुनाव ७ जनवरी को सम्पन्न हुआ। चुनाव में निम्न पदाधिकारी मनोनीत हुए।

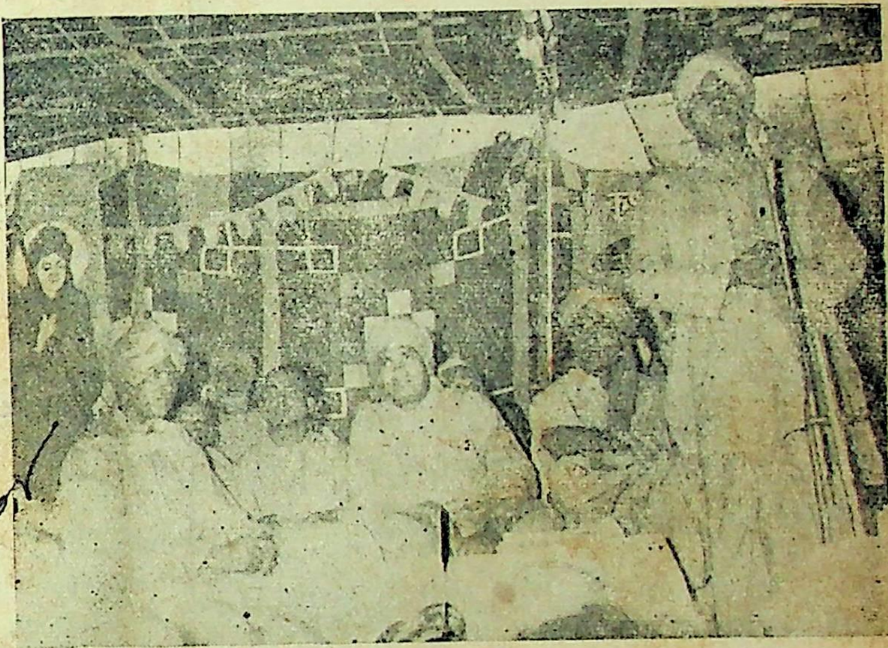
प्रधान—जयभगवान, मन्त्री—ओ३म-प्रकाश राना, कोषाध्यक्ष—जयकरन आर्य



पाक्षिक

राजधर्म

दीक्षितों को उपदेश एवं आशीर्वाद देते हुए



दीक्षा गुरु स्वामी इन्द्रवेश जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब



लाला राम... वाले वरिष्ठ उप प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रधान सम्पादक
स्वामी अग्निवेश

★

सह सम्पादक
गिरजेश्वर

★

अप्रैल प्रथम
वर्ष ६ : अंक ७
वार्षिक शुल्क १५ रु०
एक प्रति ७० पैसे

Arya Sabha For Socialisation of Means of Production

by : Staff Correspondent

(Tribune—24 March)

GURUKUL INDRAPRASTHA (Haryana) March 23-An acrimonious debate on the economic policy of the party dominated the second day's proceedings at the first national convention of the Arya Sabha here today.

Several illuminaries of the Arya Samaj and top leaders of the Arya Sabha took part in the discussion which lasted for more than five hours.

The most controversial issue was the demand for abolition of private ownership of means of production. Speakers, by and large, confined themselves to the question whether or not the right to personal property was enshrined in the Vedas

The official resolution was ultimately adopted after the mover agreed to incorporate an mendment saying no individual would have unrestricted" right to own means of production.

THE RESOLUTION, AS AMENDED, CALLED FOR "SOCIALISATION" OF ALL MEANS OF PRODUCTION WHICH WOULD BE PLACED UNDER THE "MANAGEMENT" OF THOSE WHO WERE COMPETENT TO RUN THEM. IT DEMANDED ABOLITION OF "UNRESTRICTED" PERSONAL RIGHT TO PROPERTY.

Mr. Ram Gopal 'Shalwale', a former M. P. and Vice-President of the International Arya League—the supreme body of the Arya Samaj—who spearheaded the attack on the resolution said nationalisation would stagnate the economy and retard progress. He moved an amendment calling for a "growth-oriented" economic policy in place of "slogan mongering". Communism, he observed, had failed in Russia and China and there was no point in copying them.

Swami Dharamdev 'Vidyamartand' said right to own private property was enshrined in the Vedas.

The General Secretary of the Party, Swami Agnivesh, in a hard-hitting speech said capitalism must be destroyed if the teeming millions were to be emancipated. He quoted scriptures to show that nationalisation was not against the tenets of the Vedas, The Arya Sabha, he said, was not afraid of being dubbed as Naxalite or Communist.

The convention called for decentralisation of economic and political power and suggested that means of production should be controlled by institutions like village panchayats and co-operative societies. It suggested the difference between maximum and minimum wages should not exceed the ratio of 1: 10.

Through another resolution the Arya Sabha criticised the Haryana Government for its 'anti-farmer' policies and regretted that the growers were not getting a fair return for their produce. It deplored the new land tax imposed by the State Government and said it would increase tax burden on the farmers from three to twenty times.

The convention expressed concern over suppression of civil liberties in Haryana and said the voice of dissent had been throttled by the Government. It supported the demands of the Government employees and warned that any attempt to victimise the employees might create a law and order problem in the State.

In a resolution on social and religious problems the Sabha pleaded for inter-caste marriages and end of ostentatious expenditure on marriage ceremonies. It also demanded a ban on cow slaughter.

The Arya Sabha urged for free medical aid and legal assistance and pleaded for encouraging ayurvedic and other indigenous system of medicine. 卐

सम्पादकीय

समाजवादी प्रयासों में विलम्ब अस्तित्व को चुनौती

अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति और विदेश नीति

स्वतंत्रता के २६ वर्ष उपरान्त भारत को जहां आर्थिक और औद्योगिक दृष्टि से एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरना चाहिए वहां कांग्रेसी नेतृत्व के कारण वैसा सम्भव न हो सका क्योंकि इस सरकार के कथनी और करनी में जमीन और आसमान का अन्तर था। लोकतांत्रिक समाजवादी ताकतों के अनेकों दलों में विभक्त रहने के कारण सत्तारूढ़ दल को इतने लम्बे अवधि तक निरंकुश भूमिका अदा करने में विशेष कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा। यद्यपि कांग्रेस ने अपना ध्येय लोकतांत्रिक समाजवाद घोषित किया किन्तु अंग्रेजों द्वारा निर्धारित शिक्षा प्रणाली जो उनके उपनिवेश की सुरक्षा और विकास से सम्बन्धित थी, कायम रखना आवश्यक समझा। इस तरह समाजवादी सिद्धान्तों की खाल ओढ़े पूंजीवादी भेड़िये की भूमिका अदा करने वाली कांग्रेसी सरकार ने शिक्षा और समाज के सम्बन्ध को अत्यन्त विकृत रूप में प्रतिपादित किया। किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली उसके समूचे समाज के विकास स्तर, उसकी आकांक्षाओं, प्रेरणाओं और उसके आदर्शों का सूक्ष्म संवेदनशील संकेतक हुआ करती है। अतः जो शिक्षा प्रणाली किसी उपनिवेश की सुरक्षा और विकास से सम्बन्ध रखती हो वह कदापि लोकतांत्रिक समाजवाद के अनुरूप नागरिक ढालकर समाजवादी समाज की स्थापना में योगदान नहीं प्रदान कर सकती। इस दूषित शिक्षा प्रणाली ने लोगों को व्यक्तिगत अर्थ संचय और सुविधावाद का मोहरा बनाया तथा देश में पूंजीवाद की जड़ को मजबूत किया। परिणाम स्वरूप देश में भयंकर आर्थिक और सामाजिक गैरबराबरी साकार रूप धारण की। यही कारण है कि आज देश में चतुर्दिक घोर निराशा और भयंकर अविश्वास का वाताक्षरण व्याप्त है। ऐसा देश कभी भी अपनी विशालता और महानता केअनुरूप अन्तराष्ट्रीय क्षेत्र में शान्ति और प्रगति की शक्तिशाली भूमिका नहीं अदा कर सकता। इसीलिए कांग्रेसी सरकार अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपने महान देश के अनुरूप भूमिका अदा करने में असमर्थ रही क्योंकि आर्थिक विकास की दृष्टि से भारत १०२ वें स्थान पर है।

आर्थिक और औद्योगिक दृष्टि से सक्षम न रहने के कारण भारत की विदेश नीति यथार्थवाद पर आधारित देशहित और अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्ति की प्रगति को गति देने वाली न होकर, देशहित के विपरीत मिथ्या आदर्शवाद प्रदर्शित करने वाली परावलम्बी एवं परमुखापेक्षी रही है। देश के अन्दर जहां आदर्शवाद को चरितार्थ करने का प्रश्न है वहां सरकार अत्यन्त विपरीत आचरण प्रस्तुत करती है। जब देश के युवक और अधिकांश जनता भयंकर बेरोजगारी, तथा कमरतोड़ महँगाई को समाप्त करने के लिए एवं मौलिक जनाधिकारों को प्राप्त करने के लिए जनान्दोलन करते हैं तो अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में आदर्शवाद की भूमिका अदा करने की दम भरनेवाली सरकार जनता और युवकों को अश्रु गैस से अन्धा बनाकर लाठियोंसे बर्बरता पूर्वक मारती है और गोलियों की बौछार से मौत के घाट उतार कर उनकी आवाज को हमेशा के लिए शान्त करने का पुरजोर प्रयास करती है। जिस देश के प्रतिभाशाली होनहार वैज्ञानिक, डाक्टर, इन्जीनियर तथा दूसरे विषयों के विशेषज्ञ अपना देश छोड़ कर अपनी आजीविका के लिए विदेश जा रहे हो और सामाजिक अन्याय के कारण आत्महत्या कर रहें हों वहीं भारत के प्रधान मन्त्री के लड़के को जो विदेश से अधूरी शिक्षा प्राप्त कर खाली हाथ लौटा हो, "जनता कार" निर्माण करने का लायसेंस प्रदान कर उसे करोड़पति बनाया जा रहा है। आज इसी का परिणाम है कि भारत दुर्भाग्य से खण्डित आजादी प्राप्त कर उसकी भी रक्षा नहीं कर सका है। आज भारत की हजारों वर्ग मील भूमि छीनी जा चुकी है। दुनियां में किसी भी देश की सीमाएं इतनी नहीं सिकुड़ी जितनी स्वतन्त्रता के बाद भारत की।

भारत की अत्यन्त दयनीय स्थिति के कारण ही साम्राज्यवादी कुचक्रों के परिणाम स्वरूप भारत का कृत्रिम विभाजन स्थायी रुप ग्रहण करता जा रहा है। महात्मा गांधी से लेकर सभी छोटे-बड़े नेताओं ने देश के विभाजन को अस्थायी स्वीकार किया था। परन्तु विदेश नीति उसके अनुरूप नहीं कायम की गयी। इसी का परिणाम है कि बंगला देश में १९७१ में घटित अत्यन्त भयकर अमानवीय घटनाओं के बावजूद हम ठीक समय पर उचित कदम नहीं उठा सके। इससे हमारा अर्थ तन्त्र अत्यधिक प्रभावित हुआ है। साम्राज्यवादी राष्ट्र इस विभाजन का अवलम्बन लेकर हमारे ऊपर चार युद्ध थोप चुके हैं। वे इस उपमहाद्वीप में विघटनकारी भूमिका अदा करने में तनिक भी नहीं चूकते। साम्राज्यवादी कुचक्रों का परिणाम कृत्रिम विभाजन जब तक इस दुनियां से नहीं मिटेगा, विश्व शान्ति हमेशा खतरे में रहेगी। यह विभाजन चाहे भारत उपमहाद्वीप का हो, उत्तरी-दक्षिणी कोरिया का हो, उत्तरी-दक्षिणी वियतनाम का हो या पूर्वी-पश्चिमी जर्मनी कहीं का भी हो।

१९६२ में सीमाविवाद के नाम पर चीन ने जब भारत पर बर्बर आक्रमण किया तो अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में गुट मुक्त नीति पर चलने का दम भरने वाली भारतीय सरकार मित्रविहीन हो गयी क्योंकि आर्थिक और नैतिक दृष्टि से निर्बल राष्ट्र का संकट के समय न कोई दृढ़ साथी होता है और न उसकी अन्तराष्ट्रीय नीति की कुछ महत्ता ही होती है। अमरीका सहायता करने के लिए आया परन्तु शर्त के साथ। वह काश्मीर पाकिस्तान को दिलवा कर सहायता करना चाहता था। चीन आज भारत का $22\frac{1}{2}$ हजार वर्ग मील से ऊपर भूमि हड़प चुका है। शोषण से मुक्त विश्व की कल्पना को साकार करने में विश्वास करने वाला साम्यवादी चीन तिब्बत की स्वतन्त्रता का अपहरण कर उसे अपने देश का भाग बना लिया है तथा भारत उप-महाद्वीप में कृत्रिम विभाजन को कायम रख कर स्थायित्व प्रदान करने में अपना हित समझता है। पाकिस्तान को सैनिक सहायता प्रदान करना, काश्मीर के संदर्भ में पाकिस्तानी नीति का समर्थन तथा बंगला देश के मुक्ति आन्दोलन के सम्बन्ध में उसकी नीति इस बात की प्रबल पुष्टि करती है। चीन नागालैंड के निवासियों को, समाजवादी सिद्धांतों में दीक्षित कर पूरे उपमहाद्वीप में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना का प्रेरणा देने के बजाय सैनिक प्रशिक्षण दे रहा है, मुक्ति आन्दोलन के नाम पर उनके द्वारा क्षेत्रीयता को प्रश्रय देकर हमारे राष्ट्रीय अस्तित्व को चुनौती दे रहा है। इसी तरह चीन ने हमेशा हमारे देश के उग्रवादी साम्यवादियों को अधिक प्रश्रय दिया है न कि किसी सही साम्यवादी दल को।

अब मैं उपरोक्त बातों की सच्चाई में कुछ तथ्य प्रस्तुत करना चाहता हूँ जिससे मुझ पर समाजवादी तथा साम्यवादी दलों द्वारा बे-वजह संदेह और विद्वेशपूर्ण मनोभावना का आरोप नहीं लगाया जा सके। १९६२ के युद्ध के सम्बन्ध में जो तथ्य उद्घाटित हुए हैं उसके आधार पर यह कहा जाता है कि चीन भारत के भू भाग अक्साई चीन के इलाके को अपनी सुरक्षा की दृष्टि से अपने पास रखना जरुरी समझता था। इस संदर्भ में चीन के प्रधान मन्त्री तथा तत्कालीन भारत के प्रधान मन्त्री में बातचीत हो चुकी थी, बताया जाता है। चीन इस इलाके के बदले में भारत को मानसरोवर के पास भूमि देना चाहता था। परन्तु भारत के कुछ अमरीकी मनोवृत्तियों के लोगों ने इस विवाद को आधार बना कर भारत की सेना से चीन पर आक्रमण करवाया जिससे भारत की रक्षा के नाम पर अमरीका यहां सैनिक अड्डा बना सके। यदि यह बात सही होती तो चीन को कोलम्बो प्रस्ताव के आधार पर अक्साई चीन के बदले भूमि देने की बात करता तथा उस पूरे भू-भाग को जिसे उसने बल प्रयोग द्वारा हड़प लिया था, छोड़ने में तनिक भी संकोच नहीं करता। परन्तु चीन ऐसा न करके देश की समाजवादी ताकतों को पर्याप्ति चोट पहुँचायी है। यदि चीन का उद्देश्य भारत में समाज़वादी समाज की स्थापना होती तो वह कभी भी इस उप महाद्वीप में कृत्रिम विभाजन को स्थायी नहीं स्वीकार करता। जिस तरह वह ताईवान को अपना अभिन्न भाग मानकर विदेश नीति निर्धारित किया था उसी तरह उसके विदेश नीति का आधार भी दुनियां के किसी भी कृत्रिम विभाजन का खात्मा होना चाहिए था। चीन यदि सोचता है कि पाकिस्तान को अमरीकी चंगुल से निकालने के लिए उसकी वर्तमान भूमिका अत्यन्त आवश्यक है तो मुझे इतना कहने में तनिक भी संकोच नहीं कि चीन अब अन्तराष्ट्रीय क्रांति की प्रगति का झूठा दावा करता है। उसे इस सच्चाई को स्वीकार करना चाहिए कि भारत में समाजवादी क्रांति सम्पन्न हो जाने के बाद ही शोषण मुक्त विश्व की भूमिका अदा करने में आसानी होगी।

स्थानाभाव के कारण मैं तिब्बत के विषय में इतना ही कहूंगा कि जो लोग मात्र चीनी स्रोतों से प्राप्त एकांगी सूत्रों द्वारा तिब्बत को चीन का अभिन्न भाग प्रमाणित करते हैं, उन्हें दूसरे सूत्रों से प्राप्त प्रमाणिक तथ्यों की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। तिब्बत कभी भी चीन का भाग नहीं रहा। अगर ऐसे ही तथ्यों के आधार पर राष्ट्र की सीमा का निर्धारण करेंगे तो भारत जैसा राष्ट्र समाजवादी क्रांति सम्पन्न कर एवं शक्ति सम्पन्न होकर यदि अपनी सीमा का विस्तार करेगा तो विश्व की स्थिति बड़ी दयनीय हो जायेगी क्योंकि वृहत्तर सांस्कृतिक भारत की सीमा बहुत दूर तक पहुंचती है। राष्ट्रों की मनोवृत्ति को दूषित करने वाले गलत उदाहरण विश्व क्रांति की प्रगति में बाधक होंगे।

चीन ने वर्तमान में दिएगो गार्सिया में अमरीकी सैनिक अड्डे का समर्थन कर इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि वह अपने देश की सीमा के अन्दर गैर बराबरी खत्म करने में जितना विश्वास रखता है उतना दुनियां के अन्य भागों में समाजवादी सरकार की स्थापना में तथा विश्व साम्राज्यवाद के खात्मे में नहीं, जिसका प्रतीक अमरीका है।

आज भारत चारों तरफ से शत्रुतापूर्ण मनोवृत्ति वाले राष्ट्रों से घिरा हुआ है। भारत के अस्तित्व को कायम रखने के लिए इस उपमहाद्वीप के कृत्रिम विभाजन को भी खत्म करना जरूरी है। यह तभी सम्भव होगा। जब भारत कठोर श्रम और सादगी द्वारा समतावादी व्यवस्था के लिए अविलम्ब राजनैतिक प्रयासों का अवलम्बन कर आर्थिक, सांस्कृतिक और सैनिक दृष्टि कोण से शक्ति सम्पन्न हो जाय। (समाप्त)

गिरजेश्वर

है। हरयाणा का किसान वैसे ही गरीब तथा साधनहीन है। इस वर्ष वर्षा के न होने तथा शीत लहर के द्वारा फसलों को अत्यधिक हानि पहुंचने के कारण भूखा मर रहा है किन्तु हरयाणा सरकार किसानों को दुःखी करने पर तुली हुई है। सरकार ने भूमि कर तीन गुने से लेकर बीस गुना कर दिया है। जिसे देना किसान के लिए असम्भव है। मैं प्रस्ताव रखता हूँ कि आर्य सभा आन्दोलन के द्वारा सरकार की अन्यायपूर्ण नीति का विरोध करे।

प्रस्ताव नं० ७

भारत कृषि प्रधान देश है और कृषि का आधार गऊएँ ही हो सकता हैं। हमारी सरकार ने विदेशों की नकल करके कृषि में विदेशी खाद और ट्रैक्टरों को महत्व दिया है जिसके कारण जहां खेत मजदूर बेरोजगार हुए हैं, वहां नकली खाद के कारण अनेक प्रकार की बिमारियां भी पैदा हुई हैं। राष्ट्र में कृषि को उन्नत करने में गाय का सर्वाधिक योगदान हो सकता है। गायें गोबर, पेशाब के द्वारा जहां अमूल्य खाद का निर्माण करती है, वहां बछड़ों के द्वारा कृषि आदि में सहयोग करती हैं और मरने के बाद हड्डी, चमड़ा आदि से समाज का उपकार करती है। दूध और मक्खन तो अमृत है ही। वैसे भी भारत के करोड़ों व्यक्ति गाय को धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से पूज्य मानते हैं। अतः धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से यह आवश्यक है कि गौ वंश की रक्षा की जाये। मैं प्रस्ताव रखता हूँ कि देश में गौ हत्या तुरन्त बन्द होनी चाहिए तथा गौ वंश की वृद्धि के लिए प्रोत्साहन दिया जाए।

प्रस्ताव नं० ८

समाज के संगठन को न्याय पर आधारित करने के लिए यह आवश्यक

है कि प्रत्येक मनुष्
करने का समान अ
फिर योग्यता (गुण
के अनुसार सब व
स्थिति प्राप्त करने
ऋषि दयानन्द के
के अनुसार वर्ण व्य
क्रियान्वित करने
आवश्यक समझता

१-शिक्षा पद्ध
सुधार किये जायें
सब बालकों और
शिक्षा प्राप्ति के अ
तियां एक सदृश हों

२-आर्थिक उत
व्यक्तियों का अनियं
समाज का स्वामित्व
उत्पादन के संचालन
ओर से ऐसे व्यक्ति
जिन्हें कि समाज इ
तथा उपयुक्त पाये

३-प्रत्येक व्यक्ति
(गुण, कर्म तथा स
रोजगार व कार्य प्र
उत्तरदायित्व समा
किन्हीं कारणों
को रोजगार प्रदान
तो उसे इतना भत्ता
जिससे कि वह उ
आवश्यकताओं की

४-योग्यता के अ
जो रोजगार व कार्य
लिये प्रदेय पारिश्रमि
से अधिक का अन्तर

५-शासन के
दशा में जो दो
है, उससे बचने के
है कि उसका विकेन्द्री
और आर्थिक व्यवस्थ
उत्तरदायित्व केन्द्र प

राष्ट्रीय अधिवेशन

—एक प्रेक्षक

से यहां आर्य सभा का राष्ट्रीय अधिवेशन होना है। तैयारियाँ जोरों से चल रहीं थी। पचासों केसरिया पगड़ी धारी व्यवस्था में व्यस्त थे। दक्षिण में पाठशाला, स्नानघर तथा निर्मलजल का चश्मा यहां की और विशेषता मिली। यहां से सारे भवन में पाइप लाइन जाती थी किन्तु अब तो यह पुरातत्व के मतलब का ही रह गया था। चारो ओर पहाड़ ही पहाड़। इसके समीप बगल में ही सूरज कुण्ड है जहाँ इस अन्धी सरकार ने विलास घर खोल दिया है, मदिरालय में छलकते जाम जवानों की जवानी को पी रहे हैं। एक तरफ पहाड़ पर पत्थर तोड़ने वाले मजदूरों की खपरैल की झोंपड़ियाँ हैं, दूसरी ओरइनके श्रम पर अट्टहास करने वाले जालिम खून चूसने वाले पूंजीपतियों के लिए गगन चुम्बी आकर्षक भवन। यदि किसी को साक्षात मानव मादव में जमीन आसमान का अन्तर देखना है तो यहां देखें।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में सोना भी किसी हिम्मत वाले का ही काम है। मच्छर ज्यों ही अपनी सेना के साथ आक्रमण करता है अच्छे अच्छे योद्धाओं के मोर्चे खाली करा देता है।

२२ मार्च को प्रातःकाल उठे दृश्य ही बदल गया था। चारों तरफ झण्डे ही झण्डे-द्वार-शामियाने कनातों से घिरे पण्डाल-प्रत्येक कमरे पर प्रतिनिधि आवास-महिला प्रतिनिधि आवास तथा कार्यालय आदि नाम पट्ट लगे हुए। कितने ही प्रतिनिधि पहले दिन आगए थे। प्रातः आठ बजे यज्ञशाला में पवित्र वेद की ऋचाएं गूंजने लगी, अध्यक्षता कर रहे थे एक सौ दश वर्षीय संन्यासी भीष्म स्वामी। लाउडस्पीकर पर एक-एक कार्यक्रम की घोषणा प्रारम्भ हो गई। दोपहर बारह बजे सूर्य भगवान यौवन पर खड़ा था। यहां से अधिवेशन का उद्घाटन होना था, चारो दिशाओं से आये हुए प्रतिनिधि ध्वज स्थल पर एकत्रित हो गए। स्वामी भीष्म जी ने ध्वजारोहण किया, वैदिक राष्ट्र गान हुआ, भीष्म जी ने झण्डा ऊँचा रहे हमारा का गीत गाया। अब पण्डाल में आकर पहली सभा आरम्भ होगई। व्यवस्थानुसार प्रतिनिधि-नर प्रतिनिधि, महिला प्रतिनिधि तथा दर्शकों के लिए अलग स्थान नियत थे। दोनों ओर से विशाल मच तक पहुंचने का मार्ग, एक द्वार जहां से प्रत्येक को प्रवेश-पत्र दिखा कर प्रवेश करना होता था। मंच पर सामने ओ३म् तथा दोनों ओर स्वस्तिक के ध्वज लगे हुए थे, इसी तरह से गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के भवन के अन्दर की तरफ चारो ओर ओ३म् और स्वस्तिक साथ-साथ लिखे हुए थे इस से उस भावी द्रष्टा युग

१९६२ में सीमाविवाद के नाम पर चीन ने जब भारत पर बर्बर आक्रमण किया तो अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में गुट मुक्त नीति पर चलने का दम भरने वाली भारतीय सरकार मित्रविहीन हो गयी क्योंकि आर्थिक और नैतिक दृष्टि से निर्बल राष्ट्र का संकट के समय न कोई दृढ़ साथी होता है और न उसकी अन्तराष्ट्रीय नीति की कुछ महत्ता ही होती है। अमरीका सहायता करने के लिए आया परन्तु शर्त के साथ। वह काश्मीर पाकिस्तान को दिलवा कर सहायता करना चाहता था। चीन आज भारत का $22\frac{1}{2}$ हजार वर्ग मील से ऊपर भूमि हड़प चुका है। शोषण से मुक्त विश्व की कल्पना को साकार करने में विश्वास करने वाला साम्यवादी चीन तिब्बत की स्वतन्त्रता का अपहरण कर उसे अपने देश का भाग बना लिया है तथा भारत उप-महाद्वीप में कृत्रिम विभाजन को कायम रख कर स्थायित्व प्रदान करने में अपना हित समझता है। पाकिस्तान को सैनिक सहायता प्रदान करना, काश्मीर के संदर्भ में पाकिस्तानी नीति का समर्थन तथा बंगला देश के मुक्ति आन्दोलन के सम्बन्ध में उसकी नीति इस बात की प्रबल पुष्टि करती है। चीन नागालैंड के निवासियों को, समाजवादी सिद्धांतों में दीक्षित कर पूरे उपमहाद्वीप में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना का प्रेरणा देने के बजाय सैनिक प्रशिक्षण दे रहा है, मुक्ति आन्दोलन के नाम पर उनके द्वारा क्षेत्रीयता को प्रश्रय देकर हमारे राष्ट्रीय अस्तित्व को चुनौती दे रहा है। इसी तरह चीन ने हमेशा हमारे देश के उग्रवादी साम्यवादियों को अधिक प्रश्रय दिया है न कि किसी सही साम्यवादी दल को।

अब मैं उपरोक्त बातों की सच्चाई में कुछ तथ्य प्रस्तुत करना चाहता हूँ जिससे मुझ पर समाजवादी तथा साम्यवादी दलों द्वारा बे-वजह संदेह और विद्वेशपूर्ण मनोभावना का आरोप नहीं लगाया जा सके। १९६२ के युद्ध के सम्बन्ध में जो तथ्य उद्घाटित हुए हैं उसके आधार पर यह कहा जाता है कि चीन भारत के भू भाग अक्साई चीन के इलाके को अपनी सुरक्षा की दृष्टि से अपने पास रखना जरुरी समझता था। इस संदर्भ में चीन के प्रधान मन्त्री तथा तत्कालीन भारत के प्रधान मन्त्री में बातचीत हो चुकी थी, बताया जाता है। चीन इस इलाके के बदले में भारत को मानसरोवर के पास भूमि देना चाहता था। परन्तु भारत के कुछ अमरीकी मनोवृत्तियों के लोगों ने इस विवाद को आधार बना कर भारत की सेना से चीन पर आक्रमण करवाया जिससे भारत की रक्षा के नाम पर अमरीका यहां सैनिक अड्डा बना सके। यदि यह बात सही होती तो चीन को कोलम्बो प्रस्ताव के आधार पर अक्साई चीन के बदले भूमि देने की बात करता तथा उस पूरे भू-भाग को जिसे उसने बल प्रयोग द्वारा हड़प लिया था, छोड़ने में तनिक भी संकोच नहीं करता। परन्तु चीन ऐसा न करके देश की समाजवादी ताकतों को पर्याप्त चोट पहुँचायी है। यदि चीन का उद्देश्य भारत में समाजवादी समाज की स्थापना होती तो वह कभी भी इस उप महाद्वीप में कृत्रिम विभाजन को स्थायी नहीं स्वीकार करता। जिस तरह वह ताईवान को अपना अभिन्न भाग मानकर विदेश नीति निर्धारित किया था उसी तरह उसके विदेश नीति का आधार भी दुनियां के किसी भी कृत्रिम विभाजन का खात्मा होना चाहिए था। चीन यदि सोचता है कि पाकिस्तान को अमरीकी चंगुल से निकालने के लिए उसकी वर्तमान भूमिका अत्यन्त आवश्यक है तो मुझे इतना कहने में तनिक भी संकोच नहीं कि चीन अब अन्तराष्ट्रीय क्रांति की प्रगति का झूठा दावा करता है। उसे इस सच्चाई को स्वीकार करना चाहिए कि भारत में समाजवादी क्रांति सम्पन्न हो जाने के बाद ही शोषण मुक्त विश्व की भूमिका अदा करने में आसानी होगी।

स्थानाभाव के कारण मैं तिब्बत के विषय में इतना ही कहूंगा कि जो लोग मात्र चीनी स्रोतों से प्राप्त एकाँगी सूत्रों द्वारा तिब्बत को चीन का अभिन्न भाग प्रमाणित करते हैं, उन्हें दूसरे सूत्रों से प्राप्त प्रमाणिक तथ्यों की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। तिब्बत कभी भी चीन का भाग नहीं रहा। अगर ऐसे ही तथ्यों के आधार पर राष्ट्र की सीमा का निर्धारण करेंगे तो भारत जैसा राष्ट्र समाजवादी क्रांति सम्पन्न कर एवं शक्ति सम्पन्न होकर यदि अपनी सीमा का विस्तार करेगा तो विश्व की स्थिति बड़ी दयनीय हो जायेगी क्योंकि वृहत्तर सांस्कृतिक भारत की सीमा बहुत दूर तक पहुंचती है। राष्ट्रों की मनोवृत्ति को दूषित करने वाले गलत उदाहरण विश्व क्रांति की प्रगति में बाधक होंगे।

चीन ने वर्तमान में दिएगो गार्सिया में अमरीकी सैनिक अड्डे का समर्थन कर इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि वह अपने देश की सीमा के अन्दर गैर बराबरी खत्म करने में जितना विश्वास रखता है उतना दुनियां के अन्य भागों में समाजवादी सरकार की स्थापना में तथा विश्व साम्राज्यवाद के खात्मे में नहीं, जिसका प्रतीक अमरीका है।

आज भारत चारों तरफ से शत्रुतापूर्ण मनोवृत्ति वाले राष्ट्रों से घिरा हुआ है। भारत के अस्तित्व को कायम रखने के लिए इस उपमहाद्वीप के कृत्रिम विभाजन को भी खत्म करना जरूरी है। यह तभी सम्भव होगा। जब भारत कठोर श्रम और सादगी द्वारा समतावादी व्यवस्था के लिए अविलम्ब राजनैतिक प्रयासों का अवलम्बन कर आर्थिक, सांस्कृतिक और सैनिक दृष्टि कोण से शक्ति सम्पन्न हो जाय। (समाप्त)

गिरजेश्वर

आर्यसभा के प्रथम राष्ट्रीय प्रतिनिधि अधिवेशन में निम्न प्रस्ताव पारित हुए

प्रस्ताव नं० १

विषय:- आर्य सभा का निर्माण भारतीय स्तर पर किया जाये ।

आर्य सभा के पिछले ४ वर्षों के कार्य के आधार पर यह अनुभव किया जा रहा है कि आर्य सभा का क्षेत्र हरयाणा प्रान्त से बढ़ा कर भारत के प्रत्येक प्रान्त में बनाया जाये । अतः मैं प्रस्ताव रखता हूं कि आर्यसभा का निर्माण भारतीय स्तर पर किया जाये । प्रत्येक प्रान्त के लिये आर्य सभा की तदर्थ समिति अथवा संयोजक नियुक्त किये जाये जो कि वहां प्रान्तीय सम्मेलन बुलायें और संगठन को क्रियात्मक रूप दें ।

प्रस्ताव न०. २

विषय:- वर्तमान चुनाव प्रणाली ।

वर्तमान चुनाव प्रणाली में कुछ प्रकार की व्यावहारिक गलतियां हैं जिनके कारण बिरादरीवाद, रिश्वत, शराब आदि को प्रोत्साहन मिलता है । सत्तारुढ़ दल अपने पक्ष में सरकारी मशीनरी का उपयोग करता है । पैसे का प्रभुत्व चुनाव में अधिक हो रहा है । अतः मैं प्रस्ताव रखता हूँ कि चुनाव प्रणाली में निम्न संशोधन किये जायें ।

१- चुनाव प्रत्याशी न लड़कर पार्टी अपने कार्यक्रम के आधार पर लड़े और मतदान के अनुपात से पार्टी अपने व्यक्तियों को मनोनीत करे ।

२- सेना आदि विशेष विभागों को छोड़कर सरकारी कर्मचारियों को भी राजनीति में सक्रिय भाग लेने का अवसर मिलना चाहिये।

३- चुनाव के समय राष्ट्रपति शासन होना चाहिये ।

४- अन्य विभागों की तरह राजनीति के क्षेत्र में भी ६० वर्ष की आयु के बाद सेवा निवृत आवश्यक होनी चाहिये ।

५- मतदान का अधिकार १८ वर्ष की आयु में किया जाये ।

६- दल-बदल पर प्रतिबन्ध,दल-बदलू को पुनः चुनाव लड़ना आवश्यक ।

प्रस्ताव न० ३

विषय:- राष्ट्र भाषा हिन्दी को प्रोत्साहन और देवनागरी लीपि ।

२६ साल की आजादी के बाद भी राष्ट्र भाषा हिन्दी देश की सम्पर्क भाषा के रूप में कोर्ट तथा विज्ञान आदि की शिक्षा का माध्यम के रूप में अंग्रेजी का स्थान नही ले सकी है। राष्ट्र भाषा हिन्दी की उपेक्षा के लिये एक संयोजित षड्यंत्र चल रहा है जिसमें देश की अफसरशाही तथा पूंजीपति वर्ग का निहित स्वार्थ है । मैं प्रस्ताव रखता हूं कि हिन्दी को उचित स्थान क्रियात्मक रूप से दिया जाये । साथ ही प्रान्तीयभाषाओं के संरक्षण के लिए भी विशेष ध्यान दिया जाए । देश भर की प्रान्तीय भाषाओं की लीपि देव नागरी के आधार पर बनायी जाए ।

प्रस्ताव नं० ४

विषय: — शराब बन्दी

देश की सभी राज्य सरकारें मद्यपान को प्रोत्साहन दे रही हैं जिनके कारण शराब पीने का प्रसार बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। मद्यपान के कारण अनेक प्रकार के झगड़े, सम्पत्ति और स्वास्थ्य का नाश और नैतिकता की मर्यादाओं का उल्लंघन हो रहा है, विशेषकर किसान मजदूर आदि का। निर्धनवर्ग का निर्दयतापूर्ण पतन हो रहा है । मैं प्रस्ताव रखता हूं कि शराबन्दी को अविलम्ब लागू किया जाए। यह भी प्रार्थना करता हूं कि आर्य सभा इसके लिए कोई आन्दोलन के कार्यक्रम को स्वीकार करे ।

प्रस्ताव नं० ५

विषय:—-आर्य सभा ने विद्यार्थियों, कर्मचारियों एवं किसानों की समस्याओं के लिए संघर्ष करके समाज के सभी वर्गों में विश्वास का संचार किया है। राष्ट्रीय स्तर पर जनता का नेतृत्व आर्य सभा करे यह समय की मांग है । प्रत्येक वर्ग के व्यापक समर्थन को देखते हुए यह आवश्यक है कि आर्य सभा के विद्यार्थी विंग, व्यापारी विंग, किसान विंग, मजदूर विंग एवं महिला विंग की स्थापना की जाए ।

मैं प्रस्ताव रखता हूँ कि इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए राष्ट्र के सभी वर्गों के प्रतिनिधि सगठन आर्य सभा के अन्तर्गत निर्माण किये जाये। प्रत्येक वर्ग की समस्याओं के लिए संघर्ष करने के लिए सम्बद्ध सगठन कार्य करे।

प्रस्ताव नं० ६

हरयाणा सरकार प्रदेश के किसानों के साथ जो अन्यायपूर्ण व्यवहार कर रही है, उससे हरयाणा का किसान अत्यधिक दुःखी है । सीमेंट, चीनी, खाद, तथा बीज आदि किसान उपयोगी चीजे मंहगी तथा बाजार में दुष्प्राप्य हैं। जबकि किसान के गेहूं के भाव को अपनी आतंकवादी नीतियों के द्वारा

.... का प्रयास किया जा रहा है। हरयाणा का किसान वैसे ही गरीब तथा साधनहीन है। इस वर्ष वर्षा के न होने तथा शीत लहर के द्वारा फसलों को अत्यधिक हानि पहुंचने के कारण भूखा मर रहा है किन्तु हरयाणा सरकार किसानों को दुःखी करने पर तुली हुई है। सरकार ने भूमि कर तीन गुने से लेकर बीस गुना कर दिया है। जिसे देना किसान के लिए असम्भव है। मैं प्रस्ताव रखता हूँ कि आर्य सभा आन्दोलन के द्वारा सरकार की अन्यायपूर्ण नीति का विरोध करे।

प्रस्ताव नं० ७

भारत कृषि प्रधान देश है और कृषि का आधार गऊएँ ही हो सकती हैं। हमारी सरकार ने विदेशों की नकल करके कृषि में विदेशी खाद और ट्रैक्टरों को महत्व दिया है जिसके कारण जहां खेत मजदूर बेरोजगार हुए हैं, वहां नकली खाद के कारण अनेक प्रकार की बिमारियां भी पैदा हुई हैं। राष्ट्र में कृषि को उन्नत करने में गाय का सर्वाधिक योगदान हो सकता है। गायें गोबर, पेशाब के द्वारा जहां अमूल्य खाद का निर्माण करती है, वहां बछड़ों के द्वारा कृषि आदि में सहयोग करती हैं और मरने के बाद हड्डी, चमड़ा आदि से समाज का उपकार करती है। दूध और मक्खन तो अमृत है ही। वैसे भी भारत के करोड़ों व्यक्ति गाय को धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से पूज्य मानते हैं। अतः धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से यह आवश्यक है कि गौ वंश की रक्षा की जाये। मैं प्रस्ताव रखता हूँ कि देश में गौ हत्या तुरन्त बन्द होनी चाहिए तथा गौ वंश की वृद्धि के लिए प्रोत्साहन दिया जाए।

प्रस्ताव नं० ८

समाज के संगठन को न्याय पर आधारित करने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक मनुष्य को योग्यता प्राप्त करने का समान अवसर प्राप्त हो। और फिर योग्यता (गुण, कर्म तथा स्वभाव) के अनुसार सब कोई को रोजगार एवं स्थिति प्राप्त करने का अवसर मिले। ऋषि दयानन्द के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार वर्ण व्यवस्था के मन्तव्य को क्रियान्वित करने के लिए यह सम्मेलन आवश्यक समझता है कि:—

१-शिक्षा पद्धति में इस ढंग से सुधार किये जायें जिससे कि देश के सब बालकों और बालिकाओं के लिये शिक्षा प्राप्ति के अवसर तथा परिस्थितियां एक सदृश हों।

२-आर्थिक उत्पादन के साधनों पर व्यक्तियों का अनियंत्रित स्वत्व न होकर समाज का स्वामित्व हो और आर्थिक उत्पादन के संचालन का कार्य समाज की ओर से ऐसे व्यक्ति को प्रदान किया जाये जिन्हें कि समाज इस कार्य के लिये योग्य तथा उपयुक्त पाये।

३-प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यता (गुण, कर्म तथा स्वभाव) के अनुसार रोजगार व कार्य प्रदान करने का पूर्ण उत्तरदायित्व समाज पर हो। यदि किन्हीं कारणों से किसी व्यक्ति को रोजगार प्रदान न किया जा सके, तो उसे इतना भत्ता अवश्य दिया जाये जिससे कि वह जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके।

४-योग्यता के अनुरूप व्यक्तियों को जो रोजगार व कार्य दिये जायें, उसके लिये प्रदेय पारिश्रमिक में एक और दस से अधिक का अन्तर न हो।

५-शासन के केन्द्रितकृत होने की दशा में जो दोष उत्पन्न होते है, उससे बचने के लिए यह आवश्यक है कि उसका विकेन्द्रीयकरण किया जाये और आर्थिक व्यवस्था के संचालन का उत्तरदायित्व केन्द्र पर न होकर उसके अन्तर्गत ग्राम पंचायतों एवं सहकारी समितियों सदृश अन्य ईकाईयों पर हो।

प्रस्ताव नं० ९

हरयाणा में नागरिक अधिकारों पर वैसे तो कई साल से प्रहार हो रहा है, किन्तु अब तानाशाही का शिकंजा और भी अधिक कस दिया गया है। हरयाणा में कोई भी व्यक्ति अपनी न्यायायिक मांग की आवाज भी न उठा सके, इसके लिए धारा १४४ के उल्लंघन मात्र को जघन्य अपराध की कोटि में कर दिया है। जिसके अनुसार धारा १४४ तोड़ने वाले व्यक्ति की जमानत नहीं हो सकती और वह सालों तक जेल में पड़ा सड़ता रहेगा। यह साक्षात नागरिक स्वतन्त्रता का हनन है। मैं इस प्रस्ताव के द्वारा सरकार का ध्यान आकर्षित करते हुए चेतावनी देना चाहता हूँ कि सरकार जनता को प्रजातान्त्रिक तरीकों से अधिकार मांगने के रास्ते को रोक कर व्यवस्था तोड़ने के लिए बाधित न करे।

प्रस्ताव नं० १०

हरयाणा सरकार अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ कई साल से निरन्तर दुर्व्यवहार कर रही है। हरयाणा के अध्यापकों, बिजली कर्मचारियों, प्रोफेसरों तथा अन्य कर्मचारियों के साथ बार-बार वायदे करके मुकर रही हैं जिसके कारण राज्य में उत्पादन, प्रबन्ध तथा शिक्षा के क्षेत्र में अशान्ति और अव्यवस्था फैल रही है। मैं इस प्रस्ताव द्वारा सरकार से अनुरोध करता हूँ कि वह राज्य के कर्मचारियों के साथ किये वायदों को तुरन्त पूरा करे और बढ़ते हुए अविश्वास के वातावरण को समाप्त करे। यदि समय रहते सरकार ने अपनी कुम्भकर्णी नीद को नहीं छोड़ा और कर्मचारियों की उपेक्षा इसी तरह चलती रही तो राज्य में अव्यवस्था का वातावरण पैदा हो जायगा और उसकी जिम्मेदारी सरकार की होगी।

(शेषांश पृष्ठ २० पर)

आर्यसभा का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन

—एक प्रेक्षक

२२, २३, २४ मार्च १९७४ को आर्य सभा का राष्ट्रीय प्रतिनिधि अधिवेशन दिल्ली के समीप स्थित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में बड़े ही धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। यह ऐतिहासिक गुरुकुल दिल्ली से १२ मील मथुरा रोड पर एक पहाड़ी पर बना हुआ है। दूर से ही पहाड़ी पर दुर्ग सा दिखाई दे रहा था, वही था वह इन्द्रप्रस्थ गुरुकुल जिसे अमर स्वामी श्रद्धानन्द ने कितनी भव्य योजना मन में संजोए हुए इसे बनवाया होगा। सांप की तरह बल खाती हुई टूटी फूटी सड़क ने इस पवित्र स्थली पर हमें ला खड़ा किया। एक-एक कोने को गहराई से देखने की चाह मन में लेकर हम इसके हर भाग में गए। पूर्व और पश्चिम दिशा में मुकाबले के भवन, चारो कोनों पर दो मंजिले गुम्बजो की योजना, बाहर और भीतर से देखने पर बनावट पुराने-राजे महाराजों के दुर्गों का नमूना था किंतु जब अन्दर झांक कर देखा तो संन्यासी की आन्तरिक योजनाओं का पता चला। पूर्व दिशा का भवन छात्रों का पठन कक्ष था जिसकी पूर्ण वैज्ञानिक ढग से बनी छत इतनी ऊँची जितने में आजकल भवन की दो मंजिलें बन जायें, नीचे की दीवार की चौड़ाई ढाई हाथ से ऊपर डेढ़ हाथ से कम नहीं, पश्चिम दिशा में बना भवन गौशाला था जिसे देखने से अनुमान लगता था कि महात्मा जी के हृदय में बालक और गौ के लिए समान दर्जा था। नीचे देखा तो पूरे भवन के नीचे एक फर्लांग के लगभग तहखाना है, यह किस लिए था? हमें समझ नहीं आया। भवन का दक्षिण भाग अभी नींव भर कर अधूरा था, उत्तर दिशा में व्यायामशाला तो बनगई थी। शेष भवन भी नीचे से बन कर ऊपर उठता उठता रहगया। विशाल प्रांगण के ठीक मध्य यज्ञ बेदी जहां पांच सौ के लगभग यज्ञ प्रेमी बैठ सकते हैं किंतु फिर चारो ओर दस गज और बढ़ाने की योजना लेकर तीन फुट ऊँची नींव ऊपर उठी हुई बीच में ही रुक गई। संभवतः दयानन्द के परम् शिष्य ने विदा होते होते इसे पूरा करने की सोची थी किन्तु विधि की विडम्बना, वह दिव्य आत्मा एक जालिम-कातिल के हाथ हनन हो गई थी। जी चाहता था प्रांगण के रजकणों को माथे पर चढ़ा लूँ जहां उनके चरण पड़े थे, उस कला कृति को चूम लूँ जहाँ उनका वरद हस्त रखा गया था। यहां गत बारह वर्ष से न कोई छात्र था न अध्यापक, न कोई गौमाता थी न गोपाल, यहां तो वीरान हो चला था। सारे मैदान में झाड़ झंखाड़ खड़े थे। अधिवेशनकर्त्ताओं ने ही आकर इसे साफ कराया था। नए अधिकारियों ने इसके जीर्णोद्धार की योजना बनाई है। कल से यहां आर्य सभा का राष्ट्रीय अधिवेशन होना है। तैयारियाँ जोरों से चल रहीं थी। पचासों केसरिया पगड़ी धारी व्यवस्था में व्यस्त थे। दक्षिण में पाठशाला, स्नानघर, तथा निर्मलजल का चश्मा यहां की और विशेषता मिली। यहां से सारे भवन में पाइप लाइन जाती थी किन्तु अब तो यह पुरातत्त्व के मतलब का ही रह गया था। चारो ओर पहाड़ ही पहाड़। इसके समीप बगल में ही सूरज कुण्ड है जहाँ इस अन्धी सरकार ने विलास घर खोल दिया है, मदिरालय में छलकते जाम जवानों की जवानी को पी रहे हैं। एक तरफ पहाड़ पर पत्थर तोड़ने वाले मजदूरों की खपरैल की झोंपड़ियाँ हैं, दूसरी ओरइनके श्रम पर अट्टहास करने वाले जालिम खून चूसने वाले पूंजीपतियों के लिए गगन चुम्बी आकर्षक भवन। यदि किसी को साक्षात मानव मादव में जमीन आसमान का अन्तर देखना है तो यहां देखें।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में सोना भी किसी हिम्मत वाले का ही काम है। मच्छर ज्यों ही अपनी सेना के साथ आक्रमण करता है अच्छे अच्छे योद्धाओं के मोर्चे खाली करा देता है।

२२ मार्च को प्रातःकाल उठे दृश्य ही बदल गया था। चारों तरफ झण्डे ही झण्डे-द्वार-शामियाने कनातों से घिरे पण्डाल-प्रत्येक कमरे पर प्रतिनिधि आवास-महिला प्रतिनिधि आवास तथा कार्यालय आदि नाम पट्ट लगे हुए। कितने ही प्रतिनिधि पहले दिन आगए थे। प्रातः आठ बजे यज्ञशाला में पवित्र वेद की ऋचाएं गूंजने लगी, अध्यक्षता कर रहे थे एक सौ दश वर्षीय संन्यासी भीष्म स्वामी। लाउडस्पीकर पर एक-एक कार्यक्रम की घोषणा प्रारम्भ हो गई। दोपहर बारह बजे सूर्य भगवान यौवन पर खड़ा था। यहां से अधिवेशन का उद्घाटन होना था, चारो दिशाओं से आये हुए प्रतिनिधि ध्वज स्थल पर एकत्रित हो गए। स्वामी भीष्म जी ने ध्वजारोहण किया, वैदिक राष्ट्र गान हुआ, भीष्म जी ने झण्डा ऊँचा रहे हमारा का गीत गाया। अब पण्डाल में आकर पहली सभा आरम्भ होगई। व्यवस्थानुसार प्रतिनिधि-नर प्रतिनिधि, महिला प्रतिनिधि तथा दर्शकों के लिए अलग स्थान नियत थे। दोनों ओर से विशाल मच तक पहुंचने का मार्ग, एक द्वार जहां से प्रत्येक को प्रवेश-पत्र दिखा कर प्रवेश करना होता था। मंच पर सामने ओ३म् तथा दोनों ओर स्वस्तिक के ध्वज लगे हुए थे, इसी तरह से गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के भवन के अन्दर की तरफ चारो ओर ओ३म् और स्वस्तिक साथ-साथ लिखे हुए थे इस से उस भावी दृष्टा युग

पुरुष के स्वप्नों का पता चलता है जो आज साक्षात होने प्रारम्भ हुए हैं। स्वस्तिक के बाईं ओर देव दयानंद तथा दाईं ओर योगिराज कृष्ण का चित्र लगा हुआ था। मंच पर कासाय वस्त्र धारण किये वीतराग संन्यासी भीष्म, स्वामी सच्चिदानन्द योगी, वेदों के महापण्डित धर्मदेव विद्या-मार्तण्ड, पं० ओमप्रकाश शास्त्रार्थ महारथी, प्रो० उमाकांत उपाध्याय, डा० वाचस्पति उपाध्याय, महोपदेशक पं० शोभा राम प्रेमी तथा अन्य आर्यसभा के दीवाने भजनीक महानुभाव। इन सबके स्वागत में युवा संन्यासी स्वामी इन्द्रवेश तथा स्वामी अग्निवेश जी खड़े थे। इधर आर्यसभा के वर्तमान कार्यवाहक अध्यक्ष खड़े हो हो कर अभ्यागत महानुभावों को करबद्ध नमस्कार करके यथा स्थान विराजमान करा रहे थे। पण्डाल लगभग पौना भर चुका था। स्वामी अग्निवेश महा-मंत्री ने स्टेज संभाला। पं० प्रेमपाल शास्त्री ने मनोहर वेद मन्त्रों से अधिवेशन की सफलता के लिए शुभ कामना की। स्वामी सच्चिदानन्द योगी, पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, स्वामी भीष्म, माता ईश्वरीदेवी जी ने अपना शुभाशीर्वाद दिया। स्वामी अग्निवेश जी ने विस्तार से आर्यसभा की प्रगति का वर्णन किया उसके उपरान्त आदेशानुसार आर्यसभा के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता डा० कृष्णदत्त ने आर्यसभा का राष्ट्रीय स्तर पर निर्माण करने का सत्र का प्रथम प्रस्ताव प्रस्तुत किया। यह अच्छा शुभारम्भ था। इस का समर्थन प्रो० उमाकांत उपाध्याय कलकत्ता, स्वामी वेदानन्द पंजाब, श्री खेमसिंह गोरखपुर, श्री केशवसिंह सांखला जोधपुर ने बड़ी उत्सुकता के साथ किया। स्वामी अग्निवेश ने प्रस्ताव पारित करने के लिए हाथ खड़े करा कर प्रतिनिधि महानुभावों का मत जाना। सर्वसम्मति से यह पास हुआ। दूसरा प्रस्ताव आर्य सभा के कार्यवाहक प्रधान आचार्य रामानन्द ने रखा। बड़ा महत्त्वपूर्ण तथा आवश्यक विषय था—प्रजातन्त्र की आधार भूत 'चुनाव प्रणाली में आमूल चूल परिवर्तन', साठ वर्ष की आयु के पश्चात् राजनीति से संन्यास, १८ वर्षीय मताधिकार, चुनाव भ्रष्टाचार रोकने के लिए राष्ट्रपति शासन, दलबदल वाले को पुनः चुनाव लड़ना आवश्यक तथा सभी दलों द्वारा समानुपात के ढंग से स्थान प्राप्त हों। समर्थन किया शास्त्रार्थ महारथी पं० ओ३म्प्रकाश खत्तौली वालों ने तथा डा० वाचस्पति शास्त्री दिल्ली विश्वविद्यालय ने। विपक्ष में प्रसिद्ध पत्रकार श्री विद्रोही ने जोरदार शब्दों में अपने तर्क रखे जिन का उत्तर स्वयं स्वामी अग्निवेश ने बड़ी कुशलता से दिया। मतविभाजन पर प्रस्ताव दो के विरोध के साथ प्रचण्ड बहुमत से पारित हुआ। अब पांच बज गए थे। प्रथम सत्र समाप्त हुआ।

भोजन के पश्चात सायं आठ बजे ब्र० रामकिशन, पं० चुन्नीलाल, पं० ताराचन्द 'वैदिक तोप', पं० चन्द्रभान, खेम सिंह तथा शोभाराम 'प्रेमी' ने १-१ भजन द्वारा आर्यसभा की नीति बतला कर प्रतिनिधियों को चौंका दिया। हरयाणा में यही एक शखनाद है जो नगर-नगर ग्राम-ग्राम में इस संदेश का प्रसार करता है। हमें इन उपदेशकों पर बड़ा नाज है। रात्रि को शराब बंदी का प्रस्ताव आया। स्वामी इन्द्रवेश ने आन्दोलन के लिए सत्याग्रहियों की घोषणा करने का आह्वान किया। प्रत्येक जिले से एक-एक हजार तथा रोहतक गुड़गांवा ने दो-दो हजार सत्याग्रहियों की घोषणा की। इसे प्रस्तुत किया था एडवोकेट बिशनसिंह ने जो आर्यसभा के सुलझे हुए कार्यकर्त्ता हैं। समर्थन श्री रामधारी शास्त्री ने किया था। प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ। दूसरा प्रस्ताव पं० रामचन्द्र द्वारा रखा गया, 'दहेज प्रथा बंद हो' यह भी बिना विरोध पास हुआ, इस प्रकार रात ग्यारह बजे दूसरा सत्र पूरा हुआ।

२३ मार्च प्रातः ८ बजे यज्ञ उपदेश हुआ इसके पश्चात यज्ञवेदी पर जहां पाँच वर्ष पूर्व आर्यसभा के जीवन दानियों ने यज्ञ में आहुतियाँ देकर आर्य राष्ट्र की स्थापना का कठोर व्रत लिया था वहीं पर सैकड़ों युवक एकत्रित हो गए। विषय चालू हुआ, युवा शक्ति को संगठित करने की योजना के लिए सुझाव, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामन्त्री रामधारी जी शास्त्री ने कार्यवाही संभाली। स्वामी वेदानन्द जो पंजाब शाखा के प्रधान हैं ने प्रधानता की, संस्थापक प्रधान स्वामी इन्द्रवेश, प्रधान स्वामी अग्निवेश भी यहां पहुंच गए। पर्याप्त युवकों ने अपने-अपने विचार रखे। वास्तव में आर्यसभा के व्यापक होने का मूल कारण यह तरुणाई है। पंजाब, कुरुक्षेत्र, हरयाणा के मार्सल जिला रोहतक, राजस्थान, चण्डीगढ़, गढ़, गुड़गांव, के युवक उछल उछल कर कुछ कर दिखाने को उत्सुक दिखाई दे रहे थे।

प्रारम्भ हुआ आर्य सभा के राष्ट्रीय अधिवेशन का तीसरा सत्र। आर्य नेता ला० रामगोपाल शालवाले, प्रसिद्ध पत्रकार के० नरेन्द्र, स्वामी नारायण क्रान्तिकारी, डा० सत्य-केतु विद्यालंकार जो महान इतिहासज्ञ तथा वैदिक समाजवाद के प्रकाण्ड विद्वान हैं मंचपर आ विराजमान हुए। स्वामी अग्निवेश जी द्वार पर इन सब का स्वागत कर के अगवानी करते हुए इन्हें यहां लाये। पहला प्रस्ताव स्वामी नारायण क्रान्तिकारी ने नैतिकता सम्बन्धी रखा। समर्थन श्री के० नरेन्द्र ने बड़ी कुशलता से किया। यह प्रस्ताव पारित होगया। अब एक ऐसा विषय प्रस्तुत हुआ जो अत्यन्त चर्चा का विषय था। आर्यसमाज के क्षेत्र में तो इसकी आलोचना-समालोचना प्रत्येक पत्र तथा भाषण में जोरों से आ रही थी। दो वर्ष

क्रूर पूंजीवादी शोषण खत्म करने के लिए—

सभी मेहनतकशो और शोषितो एक हो जाओ!

रंजन चौधरी

यह एक बंधा-बंधाया ढर्रा है। निजी और सरकारी, दोनों क्षेत्रों में, मालिक मजदूरों की मांग को उस समय तक अस्वीकारते रहते हैं जब तक कि वह विस्फोट के बिन्दु तक न पहुंच जाए। बौखला कर जब मजदूर हड़ताल करते हैं तो उपदेशों की झड़ी लग जाती है कि उत्पादन में रुकावट से राष्ट्रीय हितों पर धक्का लग रहा है। यह तान छिड़ जाती है कि उत्पादन बन्द करना न सिर्फ नुकसानदेह है बल्कि इससे मजदूरों की समस्याएं भी नहीं सुलझ सकतीं।

इस ओर किन्तु कभी भी संकेत नहीं किया जाता है कि आमतौर पर मालिक लोग उस वक्त तक मजदूरों की मांगों पर ध्यान नहीं देते हैं जब तक कोई विस्फोट न हो जाये। यह प्रायः देखा गया है कि शुरू में मालिक जिन मांगों को असम्भव बताकर ठुकरा देते हैं उन्हें ही हड़ताल के बाद पूरी तरह स्वीकार लेते हैं।

मजदूरों का अनुभव बताता है कि मालिक शक्ति अजमाने तक की प्रतीक्षा करते हैं। यदि मजदूर हड़ताल पर चले जाते हैं तो उनकी कुछ मांगें मान ली जाती हैं और यदि किसी वजह से वे इसमें असफल हो जाते हैं तब तो फिर उन पर कहर ढाया जाता है। राष्ट्रीय हितों को लेकर मजदूरों के खिलाफ बक-बक करने वाले कभी भी मालिकों के ऐसे रवैये की ओर संकेत नहीं करते।

हड़ताल—भूख के खिलाफ मजदूरों का अन्तिम हथियार है। अभी तो भूख के साथ ही साथ मजदूरों को लाठी गोली, गिरफ्तारी और भाड़े के गुण्डों का भी सामना करना पड़ता है। अगर समूची स्थितियों को ध्यान में रखा जाये तो यह साफ नजर आएगा कि उत्पादन में रुकावट के लिये मजदूर नहीं, मालिक जिम्मेदार हैं।

उत्पादन क्षमता और वेतन

वे यह सलाह देते हैं कि मजदूरों को अधिक उत्पादन करके ही अधिक वेतन मांगने का अधिकार प्राप्त है।

इसके बिना भी मजदूरों को अधिक मजदूरी का अधिकार प्राप्त है क्योंकि वास्तविकता यह है कि वे अधिक उत्पादन करते हैं।

उदाहरणार्थ, १९६१ में उत्पादन सूचकांक १०९·२ था जो १९७२ में बढ़कर १९९·४ हो गया है (रिजर्व बैंक आफ इण्डिया बुलेटिन, अक्टूबर १९७३), इसका अर्थ है उत्पादन में ८३ प्रतिशत की वृद्धि। दूसरी ओर खदानों, कारखानों, बिजली तथा गैस पैदा करने में लगे लोगों की संख्या मार्च १९६१ में ४३·३ लाख से बढ़कर मार्च १९७२ में ५९·५ लाख हुई है। इसमें निजी और सरकारी, दोनों क्षेत्र शामिल हैं। (आर्थिक सर्वेक्षण, १९७२-७३) इसका अर्थ है काम में लगे लोगों में ३७ प्रतिशत वृद्धि।

यह सच्चाई कि रोजगार में ३७ प्रतिशत लोगों की वृद्धि से उत्पादन में ८३ प्रतिशत वृद्धि हुई है, साफ दर्शाती है कि मजदूरों की उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

उत्पादन में लगाई गई क्षमता के मूल्य का निरंतर बढ़ रहा हिस्सा मालिक हड़प लेते हैं और मजदूरों के लिये छोटा हिस्सा छोड़ दिया जाता है। १३ अक्टूबर १९७३ के इकानामिक एण्ड पोलिटिकल वीकली में सरकारी आंकड़ों के आधार पर किये गये एक विश्लेषण में बताया गया है कि "१९४९ में लगाए गये मूल्य में मजदूरों के वेतन का अनुपात ५३·३ प्रतिशत था जो १९६१ में घट कर ३९·२ प्रतिशत हो गया तथा १९६९ में ३४·७ प्रतिशत" सिर्फ १९६७ और १९६८ को छोड़ कर, जब उन्हें ४ बिन्दुओं का लाभ हुआ था, मजदूरों की हिस्सेदारी क्रमशः कम होती जा रही है।

इसलिये उत्पादन क्षमता और उससे पैदा किये गये मूल्य में हिस्सेदारी के प्रश्न पर मजदूरों की अधिक मजूरी की मांग उचित है।

पूंजी संचय

मालिकों के बढ़ रहे हिस्से की आमतौर पर यह कह कर पैरवी की जाती है कि पूंजी के बढ़ने से वर्तमान इकाइयों के विस्तार द्वारा तथा नये कारखाने बैठा कर उत्पादन में वृद्धि होगी।

किन्तु वास्तविकता इससे अलग रही है. खुद श्रीमती गांधी ने शिकायत की थी कि उद्योगपतियों ने हड़ताल कर रखी है।

बड़े औद्योगिक घराने क्रमशः अपनी दौलत बढ़ा रहे हैं। वे अपने उद्योग में थोड़ा बहुत जो विस्तार भी करते हैं वे अपने मुनाफे के धन को लगाकर

नहीं सरकारी अर्थ संस्थानों से रुपये उधार लेकर करते हैं।

वास्तविकता यह है कि रुपये के कारण औद्योगिक विकास नहीं रुका पड़ा है, बल्कि मशीनों, कच्चामाल, तेल, ऊर्जा इत्यादि जैसे उत्पादन के वास्तविक साधनों के अभाव की वजह से औद्योगिक विस्तार नहीं किया जा रहा है। इसके लिये हमारी अर्थ व्यवस्था के व्यवस्थापक, अर्थात सरकार और पूँजीपति जिम्मेदार हैं। इस काम के लिये मजदूरों को आधा पेट रखने का कोई तुक नहीं है।

वास्तविक वेतन में गिरावट

कड़े संघर्षों के बाद मज़दूर अपनी आय में जो वृद्धि करवाते हैं वह उपभोक्ता सामग्रियों तथा सेवाओं के मूल्य में वृद्धि करके उनसे छीन ली जाती हैं। इण्डियन लेबर स्टैटिस्टिक्स के अनुसार कारखाने के मजदूर की वास्तविक आय की सूचकांक संख्या १९६१ में १०० थी जो थोड़े से उतार-चढ़ाव के बाद १९७० में ९८ थी। वर्तमान स्थिति का पता नहीं है, लेकिन हाल के वर्षों में बढ़ी महगाई से वास्तविक आय जरूर कम हुई है।

इस प्रकार हमें पता चलता है कि मजदूरों की उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई है किन्तु सामग्री और सेवा के अर्थों में अर्थात् वास्तविक अर्थों में उनकी आय में गिरावट आयी है।

वेतन और मूल्य की सम्बद्धता

वे यह तर्क देते हैं कि मजूरी बढ़ाने से उत्पादन खर्च बढ़ेगा और इससे चीजों के दाम में वृद्धि होगी। इसलिये वेतन बढ़ा कर समस्या का निदान नहीं होगा। इससे मजदूरों को कोई लाभ नहीं होगा तथा साथ ही साथ मुद्रा-बाढ़ भी आयेगी।

किन्तु यदि पूँजीपतियों तथा कच्चे माल के आपूर्तिकर्त्ताओं के मुनाफे की दर पर अकुंश लगाया जाए तो अधिक मजूरी के दामों में वृद्धि नहीं होगी। दूसरों को राष्ट्रीय हितों का उपदेश देते वक्त पूँजीपतियों और बड़े व्यापारियों को भी इसका ध्यान रखना चाहिए। उन्हें नुकसान उठाने के लिए नहीं कहा जा रहा है, सिर्फ उनके मुनाफे की ऊंची दर को थोड़ा कम करने की बात है।

किन्तु सरकार तथा पूंजीवाद के दूसरे संरक्षक मुनाफे को कम करने के प्रस्ताव को 'अवास्तविक' समझते हैं। क्यों? इसलिए कि पूँजीवाद के अन्तर्गत अधिकतम मुनाफा कमाने का निर्वाध अधिकार मूलभूत अधिकार समझा जाता है।

बहुत से कोरे पत्रकार वेतन और मूल्य की सम्बद्धता वाले तर्क को मजदूरों के खिलाफ पूँजीपतियों के औजार के रूप में समझ नहीं पाते हैं।

एक गलत उदाहरण

कुछ ऐसे कारखाने हैं जिसमें मजूरी औसत स्तर से ऊँची है। पूंजीवाद के पैरोकार इनकी ओर संकेत करते हुए बताते हैं कि मजदूरों का जीवनस्तर पहले ही काफी ऊंचा है। हालांकि वे यह भी कहते हैं कि सभी उस स्तर पर नहीं पहुँच पाए हैं। वे मजदूरों पर यह प्रभाव डालना चाहते हैं कि स्थितियों में सुधार हो रहा है।

सच्चाई कुछ और ही है। जब आवश्यकता पर आधारित वेतन की मांग की जा रही है तो सरकार और पूँजीपति यह कह कर इसका विरोध करते हैं कि वेतन में ऐसी वृद्धि से उद्योग पर प्रचण्ड भार पड़ेगा। यह तर्क ही प्रत्यक्ष रूप से प्रमाणित करता है कि मजदूरों का बड़ा हिस्सा आवश्यकता पर आधारित मजूरी से भी कम पाता है। इसका अर्थ हुआ कि ऊँचे जीवन स्तर वाले मजदूर समूचे औद्योगिक मजदूरों का एक छोटा सा हिस्सा है। उनकी स्थितियों को सभी मजदूरों के लिए सामान्य नहीं किया जा सकता है।

दो भागों में विभाजन

ये चन्द आधुनिक कारखाने अप्रचलित समाज व्यवस्था से पैदा हुए पिछड़े हुए उत्पादन के तरीकों के विराट समुद्र में बिखरे हुए टापू के रूप में खड़े हैं। हमारी अर्थ व्यवस्था में ये दो दुनियाँ पिछड़ी हुई और आधुनिक बहुत जटिल समस्यायें पैदा करती हैं। आधुनिक कारखाने के मालिक जो मुख्यत: विदेशी या भारतीय इजारेदार हैं, अधिक मजूरी देते हैं किन्तु ये हमेशा आदमी के स्थान पर मशीनें बैठाने की ताक में रहते हैं। आटोमेशन से मजदूरों की नौकरी छीन ली जाती है। इन कारखानों का उत्पादन बढ़ता है किन्तु इनमें मजदूरों की संख्या नहीं बढ़ती। कभी-कभी मजदूरों की संख्या कम भी हो जाती है। इस प्रकार मजदूरों को ऊँची मजूरी मिलती है लेकिन उनकी नौकरी की सुरक्षा चली जाती है।

दूसरी दुनिया में बेकार और पुराने औजारों से तथा साथ ही अर्थ-संकट के रहते किसी प्रकार गाड़ी हांकी जा रही है। इन इकाइयों की उत्पादन क्षमता कम रहती है। फलत: कर्मचारियों को कम वेतन मिलता है। इसके अलावा कारीगरों, किसानों तथा खेतिहर मजदूरों का गरीबी में जकड़ा हुआ बड़ा हिस्सा है। रोज बढ़ रही बेरोजगारों की कतार भी है।

इस विशेष स्थिति में दूसरी दुनियां

(शेषांश पृष्ठ १८ पर)

ज्ञान और भाषा की उत्पत्ति

स्व० पं० रघुनन्दन शर्मा

मनुष्य परमेश्वर की विशिष्ट रचना है। मनुष्य ही नहीं, प्रत्युत सभी योनियां परमेश्वर की विशिष्ट रचना हैं। यद्यपि सभी योनियां विशिष्ट प्रकार से उत्पन्न हुई हैं, तथापि यह बात प्रत्यक्ष देखी जाती है कि मनुष्य के अतिरिक्त जितने प्राणी हैं, सब बिना किसी नैमित्तिक शिक्षा के, अपने स्वाभाविक ज्ञान से ही अपनी जीवनयात्रा के समस्त आवश्यक कार्य सम्पन्न कर लेते हैं। भोजन ढूँढ़ने, मकान बनाने, सन्तति उत्पन्न करने और उसका पालन कर लेने का ज्ञान उन्हें बिना सिखाये आपसे आप आ जाता है और पैदा होने से लेकर मरने तक एक समान ही बना रहता है, घटता बढ़ता नहीं, परन्तु मनुष्य की बात सर्वथा उलटी है। वह नैमित्तिक ज्ञान के बिना न आहार पहिचाने, न वस्त्र बना सके, न घर बनाना जाने, न स्त्री पुरुष में तमीज कर सके, न सहवास जाने, न बोल सके, न खड़ा हो सके, न हाथ से पकड़ सके, न हाथ से खा पी सके और न एक दिन जी सके।

भेड़ियों की मांद से मिले हुए मनुष्य के बच्चों के देखने से मालूम होता है कि नैमित्तिक ज्ञान के बिना वे खड़े होकर चल नहीं सकते। वे पशुओं की तरह चार पांव से चलते हैं। वे बोल नहीं सकते, सिर्फ गुर्राते हैं। हाथ से पकड़कर कुछ खा पी नहीं सकते, प्रत्युत मुँह से ही खाते और पानी पीते हैं। इन बातों से पता लगता है, कि यदि मनुष्य अपनी असली स्थिति में रक्खा जाय और उसको नैमित्तिक ज्ञान न मिलें तो वह आज के पैदा हुए बच्चे की ही हालत में रहेगा। मनुष्य के बच्चे में पैदा होने के दिन से जो कुछ ज्ञान की शिक्षा होती है, वह दूसरों से ही होती है। अगर वह पशुओं की सोहबत में रहे तो उसमें पशुओं का सा ज्ञान होगा और यदि मनुष्यों की सोहबत में रहे तो मनुष्यों का सा ज्ञान होगा। मनुष्यों में भी अगर वह विद्वानों की सोहबत में रहे तो अधिक ज्ञानवान् होगा और यदि जँगली लोगों के साथ रहे तो महामूर्ख होकर पशुतुल्य हो जायगा। कहने का मतलब यह है कि मनुष्य को बिना नैमित्तिक ज्ञान के स्वयं ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता।

जो लोग कहते हैं कि मनुष्य ने क्रम क्रम से ज्ञानोन्नति की है, वे गलती पर हैं। यदि क्रम क्रम से आप ही आप ज्ञानोन्नति होती तो अण्डेमान टापू के मनुष्य भी ज्योतिष और गणित का अविष्कार कर लेते, पर आज बेचारे साबित पांच तक गिनती भी गिनना नहीं जानते। भारत में ही आज योरप निवासियों के साथ रहते हुए १५० वर्ष हो गये, पर यहां वालों ने न समझ पाया, कि बिना तार के तार कैसे जाता है और फोनोग्राम कैसे बजता है। सर जगदीशचन्द्र बोस को यदि योरोपीय विज्ञान न पढ़ाया जाता, बीसों बार ये योरप जा कर विज्ञान की उन्नति न करते तो वे भी आज कल के एम० एस० सी० जैसे होकर रह जाते। योरप को भी यदि मिश्र, यूनान, अरब और रोम न सिखलाता तो उन्हें भी शऊर न होता। इसी तरह उक्त देशों को भी यदि भारती आर्य ज्ञानोपदेश न करते तो उनके पल्ले भी कुछ न पड़ता। कहने का मतलब यह है कि बिना कुछ लक्ष्य कराये, बिना कुछ सूचना दिये—मनुष्य चाहे जितना प्रतिभावान् हो, वह आप ही आप ज्ञानोपार्जन नहीं कर सकता। जब यह हाल है तब कैसे मान लें कि मनुष्यों ने क्रम क्रम से उन्नति कर ली? अब तक वैज्ञानिक जांच ने जो कुछ सामग्री उपलब्ध की है, उससे भी नहीं मालूम होता कि ज्ञान क्रमोन्नति का फल है।

वैज्ञानिक जांच के तीन नमूने

यहां हम इसके तीन नमूने प्रस्तुत करते हैं। पहिला नमूना यह है कि अब तक प्राचीन वस्तुओं के निकालने का जो कुछ काम हुआ है, उस पर से विकासवादी अनुमान करते हैं, कि प्राचीन समय में मनुष्य महाजँगली दशा में था। क्योंकि सबसे निचली तहों में मनुष्यों के बनाये हुए जो पदार्थ मिले हैं वे पाषाण और सींग आदि के ही बने हुए हैं। इससे मालूम होता है कि उस समय उनको धातुओं का ज्ञान नहीं था, परन्तु ऊपरी तहों में धातुनिर्मित शस्त्र मिलते हैं। इससे मालूम होता है कि वे पहिलों से अधिक उन्नत थे।

यह वर्णनक्रम अच्छा था यदि सत्य होता, पर बात सर्वथा उलटी है। अब तक जहां जहां खोदाई हुई है, वहां वहां एक ही गहराई पर दोनों प्रकार के उन्नत और अवनत शस्त्र मिले हैं। इससे एक ही समय पर उन्नत और अवनत दशा पाई जाती है। इस विषय का वर्णन लो० तिलक ने अपनी पुस्तक **'आर्यों का उत्तर ध्रुवनिवास'** में बहुत ही अच्छा किया है। आप लिखते हैं कि 'यूरोप में अनेक जगह, प्राचीन छावनियों, किलों की दीवारों, श्मशानों, देवालयों और जल निवास स्थानों के खोदने से पत्थर और धातु के हजारों हथियार मिले हैं। इनमें कितने ही स्वच्छ किए हुए और

घोटे हुए, तथा कितने ही अस्वच्छ और भद्दे हैं। पुराण वस्तु शास्त्रज्ञों ने इनके तीन विभाग किए हैं। **पहिले विभाग में पाषाणशस्त्र हैं, जिसमें सींग, काष्ठ और हड्डियों का भी समावेश है। दूसरे विभाग में कांसे के शस्त्र हैं और तीसरे विभाग में लोहे के शस्त्र माने गये हैं**······परन्तु ऐसा न समझ लेना चाहिये कि उपर्युक्त तीनों स्थितियां एक दूसरी से भिन्न हैं। यह बिलकुल असत्य है कि पाषाण युग की समाप्ति हो जाने पर कांस्ययुग का आरम्भ हुआ। ये तीनों विभाग तो केवल बनावटी है। तांबे और रांगे से कांसा बनता है, इसलिये एक ताम्रयुग भी मानना पड़ता है, किन्तु ऐसा प्रमाण अब तक नहीं मिला कि ताम्रयुग और बंगयुग भिन्न भिन्न थे। इसका कारण यह है कि योरप में कांसा बनाने की मूलयुक्ति इतर आर्यों से गई है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि कोई भी युग भिन्न भिन्न देशों में भी एक ही समय विद्यमान न था'।

भिन्न २ युगों की कल्पना अवैज्ञानिक

'उदाहरणार्थ, योरप के लोग जिस समय पाषाण-युग की प्राथमिक भूमिका में थे, उसी समय अर्थात् ई० स० से करीब ६००० वर्ष पूर्व इजिप्तदेशवासी उच्चतम सभ्यता प्राप्त कर चुके थे। इसी प्रकार जिस समय ग्रीक लोग लोह-युग पर्यन्त गये थे, उस समय इटालियन लोग कांस्ययुग का ही भोग कर रहे थे और योरप के पश्चिमी भाग के लोग तो उस समय पाषाणयुग में ही पड़े हुए थे······ऊपर कहे हुए पाषाणयुग, कांस्ययुग और लोहयुग जिस प्रकार एक दूसरे से पृथक नहीं हैं, उसी प्रकार भूस्तरयुग भी एक दूसरे से भिन्न नहीं है। जिस युग को ऊपर नव पाषाणयुग के नाम से कहा गया है उसका आरम्भ कब हुआ, यद्यपि इस प्रश्न के उत्तर में भिन्न-भिन्न विद्वानों का मतभेद है, तथापि कोई विद्वान उस काल को ५००० वर्ष से पुराना नहीं कहता, परन्तु उस समय इजिप्त और चाल्डिया देश तो उन्नति के शिखर पर पहुंच चुके थे'।

यह बात सर्वथा सत्य है। अभी भी—इस समय भी—संसार के भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न भिन्न परिस्थिति अर्थात् उन्नत और अवनत दशा पाई जाती है। कहां योरप का विज्ञान और कारीगरी ! कहां अण्डेमान के नग्न ! जङ्गल में हमने एक बार किसी बाबू की घड़ी और किसी जँगली मनुष्य की चकमक पथरी एक ही जगह पड़ी हुई पाई थी। घड़ी जगल के किसी अफसर की थी और चकमक उसके सामान ढोने वाले मजदूर की। यदि वे दोनों चीजें जमीन में दब जाती और खोदने पर एक ही स्थान में मिलतीं तो क्या ऐसी दशा में यही परिणाम न निकाला जाता कि सभ्यता और असभ्यता, सज्ञानता और अज्ञानता दोनों एक ही समय में थीं ! तब फिर कैसे कहा जाता है कि मनुष्य ने ज्ञान में धीरे धीरे उन्नति की है ? पत्थरों से लोहा, तांबा निकालना क्या कोई आसान बात है ? यदि कहा जाय कि ये काम तो जंगली आदमी कर लेते हैं, इसमें ज्ञान की क्या जरूरत है ? तो ठीक नहीं। क्योंकि विद्वान से विद्वान् और सभ्य से सभ्य कारीगर भी यदि उसने कभी पत्थर से लोहा निकलते नहीं देखा तो आप से आप हर्गिज वह लोहा नहीं निकाल सकता।

एक बार हमको जङ्गल में चाँदी का पत्थर मिला। उस पत्थर का एक टुकड़ा हमने नियारिए को दिया और दूसरा कलकत्ते भेज दिया। नियारिए ने सब पत्थर फूंक दिया, पर रत्ती भर भी चांदी न निकली, किन्तु कलकत्ते से विश्लेषण का हिसाब लगाकर पुरजा आ गया कि इसमें प्रति शतक इतनी मिट्टी, इतना सीसा और इतनी चांदी है। कहने का मतलब यह, कि जिसको धातु विश्लेषण की शिक्षा मिली है, वही जानता है अन्य नहीं। इससे स्पष्ट हो गया, जिन युगों को लोग धातुयुग कहते है वे जंगली युग नहीं हैं। पत्थरों से धातु निकालकर उनको तपा तपा कर शस्त्र बनाना मूर्खता नहीं है। यह ज्ञान बहुत ऊँचे दर्जे के विज्ञानवेत्ताओं के द्वारा आविर्भूत हुआ था और साधारण लोगों को सिखाया गया था। शुद्ध धातु से मिश्रित धातु की कारीगरी तो और भी अधिक ज्ञान का फल है। हजारों में एक जानता है, कि कांस और फूल किस किस धातु से कैसे बनते हैं। ऐसी दशा में जो बात महा ज्ञान से सम्बन्ध रखती है, उसको धातुयुग के पशु-तुल्य जंगली मनुष्यों की रचना बतलाना बड़े ही अन्याय की बात है।

आदि ज्ञान नैमित्तिक था

जिन स्थानों में धातुनिर्मित शस्त्र मिलते हैं, पृथ्वी के उन्हीं स्थानों में पाषाणनिर्मित शस्त्र भी मिलते हैं। हड़प्पा और मोहनजोदड़ों की खोदाई में जहां सभ्यतासूचक पदार्थ मिले हैं, वहीं पर पत्थर के शस्त्र भी मिले हैं। संभव है कि वे जंगली लोगों के ही हों अथवा उन संन्यासियों के हों जो धातु न छूते हों—धातु का उपयोग करना बुरा समझते हों। ऐसी दशा में भौगर्भिक जांच से यह सिद्ध नहीं होता कि मनुष्य में ज्ञान की उन्नति क्रम क्रम से हुई। इसके अतिरिक्त जिस काल में—जिस धरातल में पाषाणशस्त्र मिलते हैं, उसी काल में किसी अन्य देश के अन्य धरातल में बहुत उन्नत दशा के दर्शानेवाले पदार्थ मिलते हैं। जैसे योरप में अवनत दशा के और मिश्र में उन्नत दशा के। ऐसी सूरत में भी नहीं कहा जा सकता कि मनुष्य ने क्रम क्रम से उन्नति की। इन वर्णनों से स्पष्ट मालूम होता है कि मनुष्य में हर समय उन्नत

... नहीं सकता । जितने गूँगे हैं, सब बहरे हैं, बहरे होने ही से वे गूँगे हैं। क्योंकि वे न कोई भाषा सुनते हैं, न बोलते हैं, यद्यपि इनके मुख में बोलने के सब साधन हैं और गूँगे स्कूलों में यन्त्रों के सहारे उनसे बोलवा भी दिया जाता है, पर यह सब निमित्त से ही होता है। वे स्वयं बिना सिखाए कोई भाषा बना नहीं सकते। गूँगा मनुष्य लोगों को जब मुँह फाड़ फाड़कर कुछ कहते देखता है तो वही नकल वह भी करता है। यही नहीं, किन्तु देखा गया है कि भेड़ियों की मांद से निकले हुए मनुष्य के बच्चे भी भेड़ियों की ही आवाज बोलते हैं। इन गूँगे और मांद वालों के मुँह से वर्णमाला का कोई अक्षर नहीं निकलता। अ, इ, ऊ, ऐ, ओ, अं के सिवा अर्थात् अकार के विकारों के सिवा वे कोई दूसरा वर्ण मुँह से नहीं निकाल सकते। यह भी वे दूसरों को देखकर ही निकालते हैं। गूँगा बच्चा यदि अन्धा हो तो वह यह भी नहीं निकाल सकता।

प्रो० मैक्समूलर ने 'सायन्स आफ दी लेंग्वेज' पृष्ठ ४८१ में लिखा है कि 'मिश्र के बादशाह सामीटिकस' ने दो सद्यःप्रसूत बालकों को गडरिये के सुपुर्द किया और ऐसा प्रबन्ध किया कि उनको पशुओं के अतिरिक्त मनुष्यों की भाषा सुनने को न मिले। जब लड़के बड़े हुए तो देखा गया कि उनको इ, ऊ, अं आदि स्वरों के सिवा और कुछ भी बोलना नहीं आया। इसी प्रकार सवावीन, द्वितीय फ्रेडरिक, चतुर्थ जेम्स और अकबर आदि ने भी परीक्षार्थ बच्चों को मनुष्य की भाषा से पृथक-रक्खा, पर अन्त में यह पाया गया, कि मनुष्य बिना सिखाये कोई भाषा बोल नहीं सकता'।

परन्तु पाश्चात्य विज्ञानवेत्ता कहते हैं, कि भाषा भी उसी तरह विकास का फल है, जिस प्रकार मनुष्य और उसका ज्ञान। इस प्रकार के भाषाविज्ञान से सम्बन्ध रखने वाली दो पुस्तकें, हिन्दी भाषा में, दो ही वर्ष के अन्दर निकली हैं। एक का नाम है **'भाषाविज्ञान'** जिसे नलिनीमोहन सन्याल एम० ए० ने लिखा है और दूसरी का नाम है **'तुलनात्मक भाषाशास्त्र अर्थात् भाषाविज्ञान'** जिसे डॉक्टर मङ्गलदेव शास्त्री एम० ए०, ...० एल० ने लिखा है। **पुस्तकें क्या हैं पश्चिमी विचारों का** ...े है। दोनों विद्वान आधुनिक भाषाविज्ञान के अच्छे पण्डित ...न महानुभावों ने अपनी अपनी पुस्तकों को अच्छे ढङ्ग मे ...। इनमें भाषा की उत्पत्ति कैसे हुई, उसका आदिरूप ... उसका विस्तार और परिवर्तन किस प्रकार हुआ ... भाषा परिवारों का वर्गीकरण किस प्रकार करना ... आवश्यक बातों को विस्तारपूर्वक लिखा गया ...जन भी इन्हीं सब बातों की जांच से निकाल ... हम डॉक्टर मङ्गलदेव शास्त्री की पुस्तक ... हैं कि भाषाविज्ञान का क्या सिद्धांत है?

ल
दंप
है,ोन
मनु
१४

...े मुक्ति नहीं

...ांडेय

... पहले ही मर ... लोगों ने अपनी ... अपनी पुत्रियों ...पने लड़कों को ... करार दिया। ...ली दावेदार की ...ी तादाद ज्यादा ...रिज कर दिया ... पाना कठिन हो ...ी बहन है और ...व कि उन की ... थीं। उन की ... में कई लोगों की

...धियों की जमीन ... अफसर लोग यह ...ने किसी पुत्र को ...ा देते हैं।

...नकासी

...स्या जल निकास ... संकरे तथा सटे ... लिए नाली नहीं ... का गंदा पानी ... प्रश्न को लेकर ...ड़ाई हुआ करती ... दरवाजे के पास ... आना स्वाभाविक ... दबंग से कुछ ...वश कुछ नहीं कह ... विरोधियों का ...सी भी दिन लड़ाई ...कता है और फिर ...हीं सकता। ...घर बनाने की व्यवस्था की जानी चाहिए जिन के नावदान निश्चित दिशा में खुलते हों। उधर ही सब के घरों का गंदा पानी जाया करे, किसी के दरवाजे के आगे से नाली न गुजरे। यदि संभव हो तो नालियों को भूमि के अन्दर सीमेंट से बनवा देना चाहिए।

पंचायतों के कारण झगड़े

ग्राम पंचायतों तथा न्याय पंचायतों के चुनाव कलह को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते देखे गए हैं। चुनाव के दौरान लोगों में एक ऐसी भावना भर जाती है जो सदा के लिए विरोध का बीज बो देती है। उस समय तो यह अन्दर ही अन्दर रहती है लेकिन जैसे ही कोई बहाना मिलता है, इस का विस्फ़ोट हो जाता है। यह कलह या आकस्मिक टकराव छोटीमोटी जंग का रूप ले लेता है। चुनावों में विजयी प्रत्याशी अपने आप को सर्वशक्तिमान समझ कर कलह में कूद पड़ता है, उसे तो मौका चाहिए कि वह शत्रुपक्ष से पुरानी शत्रुता का बदला ले। वह पुलिस और मारपीट में निपुण व्यक्तियों के द्वारा उन की खूब पिटाई कराता है।

एक दिन सुबह देखा, रामदीन की जमीन पर शिवलाल के बैल बंधे हैं। शिवलाल ने रातोंरात उन के बांस के घरौंडे को तोड़ कर अपना कब्जा जमा लिया था। रामदीन उन दिनों बाहर गए हुए थे। लौटने पर उन्हें आश्चर्य हुआ जब उन्होंने देखा कि वहां बैलों के लिए नांद (भूसा खिलाने का स्थान) बैठाई जा रही है। उन्हें यह बात बुरी

घोटे हुए, तथा कितने ही अस्वच्छ और भद्दे हैं। पुराण वस्तु शास्त्रज्ञों ने इनके तीन विभाग किए हैं। **पहिले विभाग में पाषाणशस्त्र हैं, जिसमें सींग, काष्ठ और हड्डियों का भी समावेश है। दूसरे विभाग में कांसे के शस्त्र हैं और तीसरे विभाग में लोहे के शस्त्र माने गये हैं**······परन्तु ऐसा न समझ लेना चाहिये कि उपर्युक्त तीनों स्थितियां एक दूसरी से भिन्न हैं। यह बिलकुल असत्य है कि पाषाण युग की समाप्ति हो जाने पर कांस्ययुग का आरम्भ हुआ। ये तीनों विभाग तो केवल बनावटी है। तांबे और रांगे से कांसा बनता है, इसलिये एक ताम्रयुग भी मानना पड़ता है, किन्तु ऐसा प्रमाण अब तक नहीं मिला कि ताम्रयुग और बंगयुग भिन्न भिन्न थे। इसका कारण यह है कि योरप में कांसा बनाने की मूलयुक्ति इतर आर्यों से गई है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि कोई भी युग भिन्न भिन्न देशों में भी एक ही समय विद्यमान न था'।

भिन्न २ युगों की कल्पना अवैज्ञानिक

'उदाहरणार्थ, योरप के लोग जिस समय पाषाण-युग की प्राथमिक भूमिका में थे, उसी समय अर्थात् ई० स० से करीब ६००० वर्ष पूर्व इजिप्तदेशवासी उच्चतम सभ्यता प्राप्त कर चुके थे। इसी प्रकार जिस समय ग्रीक लोग लोह-युग पर्यन्त गये थे, उस समय इटालियन लोग कांस्ययुग का ही भोग कर रहे थे और योरप के पश्चिमी भाग के लोग तो उस समय पाषाणयुग में ही पड़े हुए थे······ऊपर कहे हुए पाषाणयुग, कांस्ययुग और लोहयुग जिस प्रकार एक दूसरे से पृथक नहीं हैं, उसी प्रकार भूस्तरयुग भी एक दूसरे से भिन्न नहीं है। जिस युग को ऊपर नव पाषाणयुग के नाम से कहा गया है उसका आरम्भ कब हुआ, यद्यपि इस प्रश्न के उत्तर में भिन्न-भिन्न विद्वानों का मतभेद है, तथापि कोई विद्वान उस काल को ५००० वर्ष से पुराना नहीं कहता, परन्तु उस समय इजिप्त और चाल्डिया देश तो उन्नति के शिखर पर पहुंच चुके थे'।

यह बात सर्वथा सत्य है। अभी भी—इस समय भी—संसार के भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न भिन्न परिस्थिति अर्थात् उन्नत और अवनत दशा पाई जाती है। कहां योरप का विज्ञान और कारीगरी! कहां अण्डेमान के नग्न! जङ्गल में हमने एक बार किसी बाबू की घड़ी और किसी जँगली मनुष्य की चकमक पथरी एक ही जगह पड़ी हुई पाई थी। घड़ी जगल के किसी अफसर की थी और चकमक उसके सामान ढोने वाले मजदूर की। यदि वे दोनों चीजें जमीन में दब जातीं और खोदने पर एक ही स्थान में मिलतीं तो क्या ऐसी दशा में यही परिणाम न निकाला जाता कि सभ्यता और असभ्यता, सज्ञानता और अज्ञानता दोनों एक ही समय में थीं! तब फिर कैसे कहा जाता है कि मनुष्य ने ज्ञान में धीरे धीरे उन्नति की है? पत्थरों से लोहा, तांबा निकालना क्या कोई आसान बात है? यदि कहा जाय कि ये काम तो जंगली आदमी कर लेते हैं, इसमें ज्ञान की क्या जरूरत है? तो ठीक नहीं। क्योंकि विद्वान से विद्वान् और सभ्य से सभ्य कारीगर भी यदि उसने कभी पत्थर से लोहा निकलते नहीं देखा तो आप से आप हर्गिज वह लोहा नहीं निकाल सकता।

एक बार हमको जङ्गल में चाँदी का पत्थर मिला। उस पत्थर का एक टुकड़ा हमने नियारिए को दिया और दूसरा कलकत्ते भेज दिया। नियारिए ने सब पत्थर फूंक दिया, पर रत्ती भर भी चांदी न निकली, किन्तु कलकत्ते से विश्लेषण का हिसाब लगाकर पुरजा आ गया कि इसमें प्रति शतक इतनी मिट्टी, इतना सीसा और इतनी चांदी है। कहने का मतलब यह, कि जिसको धातु विश्लेषण की शिक्षा मिली है, वही जानता है अन्य नहीं। इससे स्पष्ट हो गया, जिन युगों को लोग धातुयुग कहते है वे जंगली युग नहीं हैं। पत्थरों से धातु निकालकर उनको तपा तपा कर शस्त्र बनाना मूर्खता नहीं है। यह ज्ञान बहुत ऊँचे दर्जे के विज्ञानवेत्ताओं के द्वारा आविर्भूत हुआ था और साधारण लोगों को सिखाया गया था। शुद्ध धातु से मिश्रित धातु की कारीगरी तो और भी अधिक ज्ञान का फल है। हजारों में एक जानता है, कि कांस और फूल किस किस धातु से कैसे बनते हैं। ऐसी दशा में जो बात महा ज्ञान से सम्बन्ध रखती है, उसको धातुयुग के पशु-तुल्य जंगली मनुष्यों की रचना बतलाना बड़े ही अन्याय की बात है।

आदि ज्ञान नैमित्तिक था

जिन स्थानों में धातुनिर्मित शस्त्र मिलते हैं, पृथ्वी के उन्हीं स्थानों में पाषाणनिर्मित शस्त्र भी मिलते हैं। हड़प्पा और मोहनजोदड़ों की खोदाई में जहां सभ्यतासूचक पदार्थ मिले हैं, वहीं पर पत्थर के शस्त्र भी मिले हैं। संभव है कि वे जंगली लोगों के ही हों अथवा उन संन्यासियों के हों जो धातु न छूते हों—धातु का उपयोग करना बुरा समझते हों। ऐसी दशा में भौगर्भिक जांच से यह सिद्ध नहीं होता कि मनुष्य में ज्ञान की उन्नति क्रम क्रम से हुई। इसके अतिरिक्त जिस काल में—जिस धरातल में पाषाणशस्त्र मिलते हैं, उसी काल में किसी अन्य देश के अन्य धरातल में बहुत उन्नत दशा के दर्शानेवाले पदार्थ मिलते हैं। जैसे योरप में अवनत दशा के और मिश्र में उन्नत दशा के। ऐसी सूरत में भी नहीं कहा जा सकता कि मनुष्य ने क्रम क्रम से उन्नति की। इन वर्णनों से स्पष्ट मालूम होता है कि मनुष्य में हर समय उन्नत

ज्ञान पाया जाता है, **अतः यही सिद्ध होता है कि आदि में उसको निमित्त से ही ज्ञान मिला।** जहाँ जहाँ जिस जिस समाज में उस नैमित्तिक ज्ञान के सीखने की प्रथा रही, वहां वहां रहा और जिस जिसने उसे छोड़ दिया उससे वह ज्ञान चला गया। आज भी जो पढ़ता लिखता है, वही सभ्य हो जाता है और जो नहीं पढ़ता लिखता, वह मूर्ख रह जाता है। ऐसी सूरत में कैसे कहा जाता है कि ज्ञान का विकास क्रम क्रम से हुआ?

जोन्स बोसन (Jones Bowson) ने नवम्बर सन् १६२२ के 'न्यू एज' (New age) नामी पत्र में लिखा है, कि 'यदि मनुष्यजाति का इतिहास उत्तरोत्तर विकास की ओर है तो क्यों चीनी लोग ईस्वी संवत् के पूर्व बारूद [गन पाउडर] को काम में लाते थे और समुद्रीय ध्रुवदर्शन सुई [कम्पास] को काम में लाते थे, परन्तु अब भूल गये? इसी तरह मिश्र में जब बड़े पिरामिड बने थे, उस समय वहां के लोग रेखागणित की परमसीमा तक पहुंचे थे, पर अब उनको वह विद्या क्यों मालूम नहीं है? जावाद्वीप के मन्दिरों में चढ़े हुए विशाल पत्थर पहिले समय में उठाये गये थे, पर आजकल वे क्यों उठाये नहीं जा सकते? दिल्ली की लोहे की लाट भारत में ही बनी, पर आज भारत क्या योरप भी वैसा क्यों नहीं बना सकता? इन बातों से ज्ञात होता है कि विकास नहीं, प्रत्युत ह्रास हो रहा है'। पुराने देशों में ह्रास है, पर योरप, अमेरिका आदि नवीन देशों में विकास भी हो रहा है, इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि पहिले लोग असभ्य थे और अब सभ्य हो गये हैं, अथवा पहिले सभ्य थे और अब असभ्य हो गये हैं।

ज्ञान ईश्वर प्रदत्त और अपौरुषेय है

दूसरा नमूना इससे भी अधिक रोचक है। सबने देखा होगा कि चिराग के पास पतङ्गा आता है, आंच का अनुभव करता है और भागता है। थोड़ी देर के बाद फिर आता है और उसी दीपक में जल जाता है। यदि क्रम क्रम से ज्ञान-प्राप्ति का सिद्धांत सत्य होता है तो पतङ्गा अपना पहिला अनुभव आगे के लिए सञ्चित करता और ज्ञानविस्तार का कारण बनाता और दो एक बार के अनुभव से वह जाना जाता कि चिराग के पास जाना अच्छा नहीं हैं, पर बात सर्वथा उलटी है। पतङ्गा जितनी बार बचकर चला जाता है, उतनी ही बार फिर आता है और अनुभव होने पर भी, जब तक जलकर मर नहीं जाता तब तक वह उसी चिराग के पास दौड़ता है। इन अनुभवों और वैज्ञानिक जांचों से जाना गया है, कि मनुष्य के ज्ञानार्जन का कारण क्रमविकास नहीं है। मनुष्य का ज्ञान, निमित्त-परम्परा से चला आ रहा है और जहां जो लोग वह परम्परा कायम किए हुए हैं। वहीं रहता है, अन्यथा नष्ट हो जाता है।

तीसरा नमूना यह है कि यदि विकास के द्वारा ज्ञानोन्नति हुई होती तो ज्ञान की परम्परा भी पैतृक रीति से बिना सीखे ही सन्तति को मिलती, किन्तु हम देखते हैं कि बिना पढ़े कुछ भी नहीं आता। इससे ज्ञात होता है कि ज्ञान क्रमविकास का फल नहीं है। वह नैमित्तिक गुण है, इसलिए आदि में वह परमात्मा के निमित्त से ही प्राप्त हुआ है और अब भी दूसरों के ही निमित्त से प्राप्त होता है। इस मूलज्ञान के सम्बन्ध में डिस्कारटीज कहता है कि **'जब मैं बहुत दूर और गहराई तक सोचता हूं तो ज्ञात होता है कि ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान मनुष्य आप ही आप अपने हृदय में पैदा नहीं कर सकता क्योंकि वह अनन्त है, हमारा मन शान्त है। वह व्यापक और हम एकदेशी हैं। इससे यह स्पष्ट है कि मूलविचारों को हमने स्वयं नहीं बनाया, किन्तु परमात्मा ने आदि पुरुषों के हृदय में अपने हाथ से छाप दिया है'।** मेडम् ब्लेवेट्स्की 'सिक्रेट् डाक्ट्रिन्' में कहती हैं कि 'अनेक बड़े बड़े विद्वानों ने कहा है, कि उस समय भी कोई नवीन धर्मप्रवर्तक नहीं हुआ, जब आर्यों, सेमीटिकों और तूरानियों ने नया धर्म व नवीन सचाई का आविष्कार किया था। **ये धर्मप्रवर्तक भी केवल धर्म के पुनरुद्धारक थे, मूलशिक्षक नहीं'।** 'चिप्स फ्रॉम ए जर्मन वर्कशॉप' नामी पुस्तक में प्रो० मैक्समूलर कहते हैं कि **'आदि सृष्टि से लेकर आज तक कोई भी बिलकुल नया धर्म नहीं हुआ'।** इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि ज्ञान न तो मनुष्यकृत है और न क्रमविकास से उसकी उत्पत्ति हुई है। **वह निःसन्देह ईश्वरप्रदत्त है और अपौरुषेय है।**

आदि मानव ज्ञान एवं भाषा के साथ उत्पन्न हुए

जिस मनुष्यजाति को ईश्वरप्रदत्त ज्ञान प्राप्त हुआ है, उसको भाषा भी ईश्वरीय प्रेरणा से ही प्राप्त हुई है क्योंकि ज्ञान बिना भाषा के ठहर ही नहीं सकता, अर्थात् वह वंशपरम्परा से चल ही नहीं सकता। ज्ञान और भाषा का सम्बन्ध जोड़िया भाई बहन की भाँति है। एक बिना दूसरे के रह ही नहीं सकता। जिस प्रकार ज्ञान बिना सिखाये नहीं आता, उसी तरह भाषा भी बिना सिखाये नहीं आती। मनुष्य वही भाषा बोलता है जो सुनता है। माता की गोद में या कुटुम्ब में जो भाषा सुनता है वही बोलता है। यही कारण है कि देश-देश, प्रान्त-प्रान्त और ग्राम ग्राम की भाषा में भेद है। अर्थात् मनुष्य बिना सिखाये हुए कोई भाषा बोल नहीं सकता। बिना सीखे यदि दूसरों की भाषा नहीं बोल सकता तो उसे आप ही आप कोई नई भाषा बना लेनी चाहिये, पर मनुष्य कोई नवीन

... नहीं सकता । जितने गूँगे हैं, सब बहरे हैं। बहरे होने ही से वे गूँगे हैं। क्योंकि वे न कोई भाषा सुनते हैं, न बोलते हैं, यद्यपि इनके मुख में बोलने के सब साधन हैं और गूँगे स्कूलों में यन्त्रों के सहारे उनसे बोलवा भी दिया जाता है, पर यह सब निमित्त से ही होता है। वे स्वयं बिना सिखाए कोई भाषा बना नहीं सकते। गूँगा मनुष्य लोगों को जब मुँह फाड़ फाड़कर कुछ कहते देखता है तो वही नकल वह भी करता है। यही नहीं, किन्तु देखा गया है कि भेड़ियों की मांद से निकले हुए मनुष्य के बच्चे भी भेड़ियों की ही आवाज बोलते हैं। इन गूँगे और मांद वालों के मुँह से वर्णमाला का कोई अक्षर नहीं निकलता। अ, इ, ऊ, ऐ, ओ, अं के सिवा अर्थात् अकार के विकारों के सिवा वे कोई दूसरा वर्ण मुँह से नहीं निकाल सकते। यह भी वे दूसरों को देखकर ही निकालते हैं। गूँगा बच्चा यदि अन्धा हो तो वह यह भी नहीं निकाल सकता।

प्रो० मैक्समूलर ने 'सायन्स आफ दी लेंग्वेज' पृष्ठ ४८१ में लिखा है कि 'मिश्र के बादशाह सामीटिकस' ने दो सद्यःप्रसूत बालकों को गडरिये के सुपुर्द किया और ऐसा प्रबन्ध किया कि उनको पशुओं के अतिरिक्त मनुष्यों की भाषा सुनने को न मिले। जब लड़के बड़े हुए तो देखा गया कि उनको इ, ऊ, अं आदि स्वरों के सिवा और कुछ भी बोलना नहीं आया। इसी प्रकार सवाबीन, द्वितीय फ्रेडरिक, चतुर्थ जेम्स और अकबर आदि ने भी परीक्षार्थ बच्चों को मनुष्य की भाषा से पृथक-रक्खा, पर अन्त में यह पाया गया, कि मनुष्य बिना सिखाये कोई भाषा बोल नहीं सकता'।

परन्तु पाश्चात्य विज्ञानवेत्ता कहते हैं, कि भाषा भी उसी तरह विकास का फल है, जिस प्रकार मनुष्य और उसका ज्ञान। इस प्रकार के भाषाविज्ञान से सम्बन्ध रखने वाली दो पुस्तकें, हिन्दी भाषा में, दो ही वर्ष के अन्दर निकली हैं। एक का नाम है **'भाषाविज्ञान'** जिसे नलिनीमोहन सन्याल एम० ए० ने लिखा है और दूसरी का नाम है **'तुलनात्मक भाषाशास्त्र अर्थात् भाषाविज्ञान'** जिसे डॉक्टर मङ्गलदेव शास्त्री एम० ए०, प्रो० एल० ने लिखा है। **पुस्तकें क्या हैं पश्चिमी विचारों का फोटो है**। दोनों विद्वान आधुनिक भाषाविज्ञान के अच्छे पण्डित हैं। इन महानुभावों ने अपनी अपनी पुस्तकों को अच्छे ढङ्ग से लिखा है। इनमें भाषा की उत्पत्ति कैसे हुई, उसका आदिरूप कैसा था, उसका विस्तार और परिवर्तन किस प्रकार हुआ तथा वर्तमान भाषा परिवारों का वर्गीकरण किस प्रकार करना चाहिये, आदि आवश्यक बातों को विस्तारपूर्वक लिखा गया है। हमारा प्रयोजन भी इन्हीं सब बातों की जांच से निकाल सकता है, इसलिये हम डॉक्टर मङ्गलदेव शास्त्री की पुस्तक से ही देखना चाहते हैं कि भाषाविज्ञान का क्या सिद्धांत है ?

भाषा विज्ञान का सिद्धान्त

भाषा की उत्पत्ति के विषय में पृष्ठ १७३ में आप कहते हैं कि 'भाषा की उत्पत्ति के विषय में चार मत हैं। (१) मनुष्य की सृष्टि के साथ एक दैवी शक्ति के द्वारा, एक एक अनोखे प्रकार से पूर्णरूप से निष्पन्न भाषा की सृष्टि संसार में हुई। (२) मनुष्यों ने जब यह देखा, कि हस्तादि के संकेत आदि के द्वारा वे अपने विचारों को एक दूसरे पर अच्छी तरह प्रकट नहीं कर सकते, तब उन्होंने विचार-पूर्वक स्वयं भाषा का निर्माण किया। (३) मनुष्य के विचारों और भावा का नित्य तथा अटूट सम्बन्ध होने से मनुष्य सृष्टि के आरम्भ में ही मनुष्यों के विचार, स्वभाव से ही भाषा के मूलतत्त्वस्वरूप कुछ धातुओं द्वारा प्रकट हो गए। फिर धीरे-धीरे उन धातुओं के आधार पर भाषा का विकास हुआ। (४) अनुकरणात्मक तथा हर्षक्रोधादि मनोरागव्यञ्जक शब्दों के द्वारा तथा उनके आधार पर, परस्परविचार-परिवर्तन में सरलता को उद्देश्य रखकर स्वभावतया धीरे-धीरे भाषा का विकास हुआ'।

उपर्युक्त प्रथम, द्वितीय और तृतीय मत का खण्डन करके, चतुर्थ मत के लिए आप पृष्ठ १९८ में कहते हैं कि "भाषा की उत्पत्ति एकाएक न तो मनुष्य की स्वेच्छा से, न स्वभाव से और न दैवी शक्ति की प्रेरणा से ही हो सकती है। उसकी उत्पत्ति का प्रकार यही हो सकता है, कि सभ्यता के दूसरे अङ्गों की तरह भाषा भी धीरे-धीरे विकास का फल हो। निःसंदेह आदि मनुष्यों का परस्परव्यवहार बहुत कुछ शारीरिक चेष्टाओं द्वारा ही होता रहा होगा।' इसके पश्चात् पृ० १९९–२०० में आप लिखते हैं कि पहिला सिद्धान्त यह है कि पदार्थों और क्रियाओं के पहिले-पहिले नाम जड़ चेतनात्मक बाह्यजगत की ध्वनियों के अनुकरण के आधार पर रक्खे गये, जैसे कोकील 'कूक्कू' (Cuckoo) या 'काक' (काकइति शब्दानुकृतिः। निरुक्त) ....दूसरा सिद्धांत इस प्रकार है कि हर्ष, शोक, आश्चर्य आदि के आवेश में कुछ स्वाभाविक ध्वनियां हमारे मुख से निकल पड़ती हैं, जैसे 'हाहा' 'हाय हाय' 'अहह' 'वाह वाह' इत्यादि'।

यहाँ आपने भाषा-उत्पत्ति का यह क्रम बतलाया कि पहिले इशारों से काम चला, फिर बाहर की ध्वनियों को सुनकर और उद्गारात्मक शब्दों की योग्यता से धीरे-धीरे भाषा बन गई। जैसे कूकू करने से कोयल का नाम अँगरेजी में 'कूक्कू' पड़ गया और कांव कांव करने से कौवा को संस्कृतवाले 'काक' कहने लगे। इसी तरह शब्दानुकृति से शब्द बने, परन्तु प्रश्न यह है, क्या संसार में कोई ऐसा और भी प्राणी है जो इशारे से बातें करता हो ? जहाजों में झण्डियों से, युद्ध के समय चिनगारियों से और तार में 'ट्रा टक्कू' की ध्वनियों से जो इशाराबाजी होती है, क्या यह सब जंगली दशा में होने के कारण होती है ? (क्रमशः)

आर्थिक और सामाजिक विषमता के मिटे बिना—

गांवों में कलह से मुक्ति नहीं

मुकुलचन्द पांडेय

अचानक बहुत तेज शोर सुनाई पड़ा। एक विचित्र खलबली मच गई। सभी लोग भेड़ों की तरह बिना जाने समझे पूरब की ओर भागते चले जा रहे थे। लोगों को उधर जाते देख कर मैं भी उन के साथ हो लिया। जा कर देखा कि भीड़ के बीच दो सगे भाई रामनाथ और गया प्रसाद सांडों की तरह बुरी तरह लड़ रहे थे। मनमुटाव तो काफी अरसे से चल रह था लेकिन आज अचानक उस ने यह रौद्र रूप धारण कर दोनों को एक दूसरे के खून का प्यासा बना दिया।

ऐसी घटनाएं गांवों में आए दिन हुआ करती है, जो हद तोड़ने, चकबंदी के समय खेतों का बंटवारा करने, पशुओं के चरने, नावदान बहने, फलों को तोड़ने, पेड़ों की डालें काटने तथा गन्नों आदि को नुकसान पहुचाने पर ज्यादा आधारित रहती हैं। इन कलहों की परिणति केवल मारपीट में नहीं होती बल्कि अधिकांश मामलों में कतल हो जाना भी असंभव नहीं होता। आज का गांव पहले के गांवों जैसा रागद्वेष से परे नहीं है। आज का ग्रामीण स्वरूप पहले से बहुत बदल गया है।

जमीन के झगड़े

ज्यादातर झगड़ेफसाद गांवों में जमीन को ले कर हुआ करते हैं। कभी-कभी तो ऐसा होता है कि लावारिस जमीन पर अधिकार जमाने के लिए दो प्रतिद्वंद्वी व्यक्ति उलझते हैं और तीसरा उस में कूद कर हाथ साफ कर देता है। मेरे गांव में एक निस्संतान व्यक्ति की मृत्यु हुई। उन की पत्नी पहले ही मर चुकी थी। गांव के अनेक लोगों ने अपनी बहनों को उन की बहन, अपनी पुत्रियों को उन की पुत्री और अपने लड़कों को उन का दत्तक पुत्र करार दिया। नतीजा यह हुआ कि असली दावेदार की जगह नकली दावेदारों की तादाद ज्यादा हो गई। मुकदमा खारिज कर दिया गया। यह साबित कर पाना कठिन हो गया था कि कौन उन की बहन है और कौन उन की पुत्री, जब कि उन की कोई बहन या पुत्री नहीं थी। उन की जमीन की छीनाझपटी में कई लोगों की जानें गई।

अपने निकट संबधियों की जमीन जायदाद लेने के लिए अकसर लोग यह तरकीब करते हैं कि अपने किसी पुत्र को उन का दत्तक पुत्र बना देते हैं।

पानी की निकासी

गांवों में एक समस्या जल निकास की भी है। घर इतने संकरे तथा सटे हुए रहते हैं कि सब के लिए नाली नहीं मिल पाती जिस से घर का गंदा पानी बाहर जा सके। इस प्रश्न को लेकर पड़ोसियों में बहुधा लड़ाई हुआ करती है। नावदान किसी के दरवाजे के पास से गुजरता है तो दुर्गंध आना स्वाभाविक है। कमजोर आदमी दबंग से कुछ समय तक विवशतावश कुछ नहीं कह पायेगा लेकिन उसके विरोधियों का सहारा पा कर वह किसी भी दिन लड़ाई के लिए कमर कस सकता है और फिर कलह को कोई रोक नहीं सकता।

इसके लिए ऐसे घर बनाने की व्यवस्था की जानी चाहिए जिन के नावदान निश्चित दिशा में खुलते हों। उधर ही सब के घरों का गंदा पानी जाया करे, किसी के दरवाजे के आगे से नाली न गुजरे। यदि संभव हो तो नालियों को भूमि के अन्दर सीमेंट से बनवा देना चाहिए।

पंचायतों के कारण झगड़े

ग्राम पंचायतों तथा न्याय पंचायतों के चुनाव कलह को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते देखे गए हैं। चुनाव के दौरान लोगों में एक ऐसी भावना भर जाती है जो सदा के लिए विरोध का बीज बो देती है। उस समय तो यह अन्दर ही अन्दर रहती है लेकिन जैसे ही कोई बहाना मिलता है, इस का विस्फ़ोट हो जाता है। यह कलह या आकस्मिक टकराव छोटीमोटी जंग का रूप ले लेता हैं। चुनावों में विजयी प्रत्याशी अपने आप को सर्वशक्तिमान समझ कर कलह में कूद पड़ता है, उसे तो मौका चाहिए कि वह शत्रुपक्ष से पुरानी शत्रुता का बदला ले। वह पुलिस और मारपीट में निपुण व्यक्तियों के द्वारा उन की खूब पिटाई कराता है।

एक दिन सुबह देखा, रामदीन की जमीन पर शिवलाल के बैल बंधे हैं। शिवलाल ने रातोंरात उन के बांस के घरौंडे को तोड़ कर अपना कब्जा जमा लिया था। रामदीन उन दिनों बाहर गए हुए थे। लौटने पर उन्हें आश्चर्य हुआ जब उन्होंने देखा कि वहां बैलों के लिए नांद (भूसा खिलाने का स्थान) बैठाई जा रही है। उन्हें यह बात बुरी

लगी। उन्होंने टोका तो जवाब मिला, "यह तो हमारे दादा की जमीन थी, तुम ने कब्जा जमा लिया था। मैंने लेखपाल से पूछ लिया है। अब यहां मेरे बैल रहेंगे।" रामदीन समझाते रहे लेकिन शिवलाल ने एक न सुनी। फिर दोनों ओर से लाठियां निकल आई। तड़तड़ की आवाज आई और दोनों घायल हो गए। तब गांव के लोग इकट्ठे हुए और फैसला शिवलाल के पक्ष में कर दिया गया। रामदीन का खून खौल गया और उस ने शिवलाल के पिछवाड़े की फुलवारी पर कब्जा कर लिया। फिर उनकी लड़ाई देर तक जारी रही।

हद तोड़ने की घटना जहां लोभ के वशीभूत होती है, वहां अन्यायपूर्ण फैसले उन्हें ज्यादा बढ़ावा देते हैं अगर सही फैसले हों और वृद्ध लोगों की बातें मानी जाएं तो हद तोड़ने की घटनाएं कम हो जाएं।

चकबन्दी से क्या मिला ?

बहुत दिनों के बाद साधु चौधरी से मुलाकात हुई। कुशलक्षेम के बाद बात आई चकबंदी पर। उन्होंने बड़ी ही झल्लाहट से कहा, "चकबंदी क्या आई, लड़ाईझगड़े साथ ले आई।"

चकबंदी ने सचमुच लोगों की कमर [illegible] दी है। पहले भूमि का प्रकार [illegible]ंचत कर संपूर्ण भूस्वामित्व का मूल्यांकन कर लिया जाता है, बाद में उसी के अनुसार जमीन दे दी जाती है। मान लीजिए, 'क' की जमीन बहुत अच्छी है लेकिन उसकी मालियत लगी '१२ आने' और 'ख' की खराब जमीन की मालियत लगी '१६ आने'। अब 'क' की तो अच्छे खेतों की जगह कम खेत मिलेंगे, जब कि 'ख' ने कुछ धन चकबंदी अधिकारी को नजर कर दूनी खराब जमीन ले ली क्योंकि आठ आने मालियत वाली दूनी जमीन उन्हें मिली। यह वास्तव में १६ आने की थी। चार पांच हजार रुपए प्रति बीघा वाली जमीन उन्हें २००-३०० रुपए में रिश्वत दे कर मिल गई।

इस प्रकार के उलट फेर प्रायः घातक साबित होते हैं। ये कलह के मूल कारण हैं और 'जोत चकबंदी' की निस्सारता को सिद्ध करते हैं। भ्रष्टाचार समाज का एक अटूट अंग बन चुका है। चकबंदी में इस प्रकार की धांधलियां बड़ी ही कष्टदायक होती है। दबग लोग 'चकरोड', 'क्रीड़ांगन', खलिहान, पार्क तथा ग्राम समाज की जमीन पर बलात कब्जा कर लेते हैं, इस से आए दिन कलह होते हैं।

सिंचाई की समस्या

अगहन आ गया। हमारे गांव में न तो सरकारी, निजी या सुविधा से सुलभ नलकूप हैं न नहरें। सिंचाई के लिए, पानी चाहिए तालाब या कुएं से। प्रश्न उठता है, किस के खेत में पहले पानी जाए ? बड़े बाबू एक बार आंख दिखाएंगे और उन के खेत में पानी पहले जाएगा, फिर छोटे बाबू और बेचारा रहमान नाई अन्त में पानी पाएगा, भले ही उस का खेत कुएं से सटा क्यों न हो ? ट्यूबवेल अगर चल रहा है तो फिर क्या पूछना ! राय साहब की तो दोहरी सिंचाई हो गई और राधू कुम्हार के खेत में एक बार भी पानी नहीं गया। यही समाजवाद का स्वरूप है गांवों में। फिर पीने का पानी तो जैसे अछूतों के लिए प्रभु ने दिया ही नहीं।

यदि किसी अछूत ने पंडितजी के कुएं से पानी निकाल कर पी लिया तो फिर कलह ही नहीं उस के परिवार की आफत है। पानी तो गांवों की कलह की जड़ है।

पशु चराना

बनारसी राम की बकरी इधर-उधर चरती रहती है। उन्हें इस की परवा भी नहीं। एक दिन वह जमुनापांडे के खेत में गई और चनेमटर के नन्हे पौधों को जड़ से चर कर मानो पूरा खेत सफाचट कर गई। जमुनापांडे को क्रोध आया और उन्होंने अपनी चार भैंसे बनारसीराम के खेत में छोड़ कर ऐसा चराया कि उस का सत्यानाश हो गया। किसी की कौन सुने ! उधर 'हत्यारी' (पशुओंका बिना रोक टोक चरना) का सिलसिला शुरू हुआ तो पता चला कि सब के पशु स्वच्छंदतापूर्वक विचरने लगे, जैसे जंगल में जंगली जानवर।

उस के बाद मारपीट का दौर चला और दो आदमी मार डाले गए, छःसात घायल हुए। फिर भी कितने लोगों ने अपने पशुओं को रातोंरात चराना नहीं छोड़ा, कुछ जानवर तो केवल घूम कर ही पेट भरते हैं। गायें हों तो दूध देती हैं मालिक के घर।

गांवों में इस प्रकार की अनाचार वृत्ति ने जो घर कर लिया है, वह कलह के लिए उत्तरदायी है। हरे पेड़ों की डालियां काट लेना, हरी फसलों को उखाड़ लेना, भारी मात्रा में गन्नों की चोरी तथा आगजनी से परेशान करना आदि बातें कलह को बढ़ावा देती हैं। कलह मनुष्य का स्वभाव है। यह घर घर में, गांवों में, शहरों में, देशदेश में होता है परन्तु गांवों में इस का अपना पृथक अस्तित्व है। लोगों में पुरातनपंथी भावनाओं का नाश हुए बगैर सवर्ण और अछूत, ऊँचनीच, निर्धन धनवान आदि के भेदभाव मिटे बिना इस का अन्त नहीं हो सकता।

पूर्व भी यह आर्यसभा के रोहतक अधिवेशन में आ चुका था। विषय था वेद में व्यक्तिगत सम्पत्ति के स्वामित्व का अधिकार है या नहीं। प्रस्तुतकर्त्ता डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, प्रो० उमाकांत उपाध्याय ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

चिर प्रतिक्षित आर्थिक प्रस्ताव को प्रस्तुत करते हुए डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने वैदिक संस्कृत की मूल मान्यताओं के अनुसार सार्वजनिक स्वामित्व का समर्थन अत्यन्त तर्कपूर्ण ढंग से किया। उन्होंने वर्तमान सामाजिक विकास के स्तर पर निजी स्वामित्व को शोषण का प्रतीक बताया। प्रो० उमाकान्त उपाध्याय कलकत्ता विश्वविद्यालय ने प्रस्ताव के समर्थन में वेद मंत्रों को उद्धृत करके सार्वजनिक स्वामित्व का प्रतिपादन किया।

इस प्रस्ताव पर बोलते हुए लाला रामगोपाल शाल वाले ने कहा कि यद्यपि मैं अर्थशास्त्री नही हूँ फिर भी मैं सार्वजनिक क्षेत्र के प्रबन्ध एवं उत्पादन को देखकर निजी-स्वामित्व का समर्थन करता हूँ। अतः उन्होंने प्रस्ताव के अन्तिम अंशों के लिए अपना संशोधन प्रस्तुत किया। परन्तु लाला जी वैदिक मान्यताओं के आधार पर सार्वजनिक और निजी-स्वामित्व का विश्लेषण मानव हित को दृष्टि में रखकर करने में असमर्थ रहे। लाला जी के उपरान्त वैदिक समाजवाद के उद्घोषक स्वामी अग्निवेश जी ने निजी और सार्वजनिक स्वामित्व का विश्लेषण अत्यन्त वैज्ञानिक एवं युक्तिपूर्ण ढंग से किया। उन्होंने वेद के मंत्रों तथा वैदिक विद्वानों के व्याख्याओं का अवलम्बन लेकर सार्वजनिक स्वामित्व का प्रतिपादन भलिभांति किया। स्वामी अग्निवेश जी के उपरान्त पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड ने इस प्रस्ताव पर अपना मत प्रकट किया। उन्होंने भी सम्पत्ति पर व्यक्ति के अनियन्त्रित अधिकार को अनुचित बताया परन्तु निजी स्वामित्व का सदुपयोगवाद के आधार पर समर्थन किया। राज्य को दुरुपयोग करने वालों की 'सम्पत्ति (बिना मुआवजा) जब्त करने का अधिकार है' कहकर प्रकारान्तर से सार्वजनिक स्वामित्व का समर्थन किया।

अन्त में इस प्रस्ताव पर फिर बोलते हुए डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने बड़ी योग्यता से पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड के विचारों का आदर करते हुए यम-नियम की व्याख्या से चार यमों के पालन का अधिकार राज्य के द्वारा कराये जाने का विधान बतलाया। अपरिग्रह का अर्थ धन के अधिक न संग्रह करने की व्यवस्था भी राज्य के अधीन बतलाई। डाक्टर महोदय ने पं. धर्मदेव जी के अनियन्त्रित शब्द को संशोधन के रूप में जोड़ना युक्ति संगत स्वीकार कर लिया। तत्पश्चात् मत विभाजन हुआ। केवल चार हाथ विरोध में उठे। इस प्रकार यह जटिल प्रस्ताव भारी बहुमत से पास हुआ।

सायं ८ बजे हरयाणा में किसान की दुश्मन राज्य की कर नीति के विरुद्ध प्रस्ताव श्री धर्मवीर आर्य ने रखा तथा सरकार की अप्रजातान्त्रिक धारा १४४ को जमानत के अयोग्य बना देने के विरोध वाला प्रस्ताव एडवोकेट गंगाराम ने रखा। ये सर्वसम्मति से पारित किए गए। स्वामी इन्द्रवेश जी ने जिला समितियों के चुनाव की प्रार्थना की तथा विभिन्न प्रान्तों से संयोजक और समितियों की सूची देने के लिए कहा गया। अब राष्ट्रीय स्तर पर संयोजक और हरयाणा का प्रधान चुनने का प्रस्ताव आया। स्वामी अग्निवेश निर्विरोध चुन लिए गए। प्रधान ने हफ्ताह दस दिन में कार्यकारिणी नियुक्त करने की घोषणा की। अधिवेशन की अन्तिम बैठक रात दो बजे ३५ युवकों के एक साल से तीन साल तक का समय दान करने की घोषणा के साथ समाप्त हुई।

आज २४ मार्च का दिन आगया जिसकी घोषणा अनेकों समाचार पत्रों में हो चुकी थी। आज से ठीक चार वर्ष पूर्व जिसका सूत्रपात दो युवा नेताओं ने संन्यास की दीक्षा लेकर किया था। वह परम्परा दोहराई जा रही थी। दो युवक नेता आचार्य रामानंद तथा डा० कृष्णदत्त ने भरी जवानी में सांसारिक सुख भोगों को लात मार कर आर्यराष्ट्र की भट्टी में अपने को गलाने को भेंट कर दिया। यह दृश्य अभूतपूर्व था। इसे देखने २०-२५ हजार आर्य बाल-वृद्ध, वनीता पहुँचे। सत्तर के लगभग बसें, कार, जीप, मोटर साइकिलों की लाइनें लगी थीं। यज्ञ वेदी जहाँ दीक्षा सम्पन्न हो रही थी चारो तरफ से कार्यकर्त्ताओं से घिरी हुई थी पण्डाल में कुछ भी स्थान नहीं रहा, विशाल प्रांगण भर गया। भवन के बरामदे में भी दर्शक भरगए। अपार जोश उत्पन्न हुआ। ज्यों ही दीक्षा गुरु स्वामी इन्द्रवेश जी ने संन्यासियों के क्रमशः आदित्यवेश (आ० रामानन्द), शक्तिवेश (डा. कृष्णदत्त) के नामों की घोषणा की वैदिकधर्म की जय, आर्यराष्ट्र बनायेंगे के नारे गूँजने लगे। स्वामी अग्निवेश जी अपने जोश को संभाल न सके क्योंकि इनके परिवार में तो वृद्धि हो रही थी। वे इन तीनों युवक नेताओं के त्याग की व्याख्या करके वैराग्य विभोर कर दिया। सैकड़ों दर्शकों की आखों में स्नेहाश्रु बह निकले ज्यों ही मंच पर आये स्वामी आदित्यवेश, स्वामी शक्तिवेश, नैष्ठिक ब्र० गंगाराम एडवोकेट। नारों से वातावरण गूंज उठा, ऐसा लगा युग करवट ले रहा है, महान क्रान्ति को जन्म मिल रहा है, दयानन्द के स्वप्न साकार होने जा रहे हैं।

(शेषांश पृष्ठ १८ पर)

सभी मेहनतशो और शोषितो...

(पृष्ठ १० का शेषांश)

को पिछड़ेपन से उबारने के बजाय आधुनिक कारखाने की दुनियाँ को फैलाने का मतलब होता है पिछड़े हुए लोगों को और भी दलदल में ढकेलना। सिर्फ इन आधुनिक कारखानों के राष्ट्रीय-करण तथा भूमि के सकेन्द्रण को खत्म करके ही दो अलग-अलग दुनियाँ के बीच की दीवार को तोड़ कर उनसे एक सुसम्बद्ध व्यवस्था गढ़ी जा सकती है।

गरीब भाई

पूँजीपतियों के पैरोकार इस दो दुनियां की सचाई से परिचित हैं। हाल ही में श्रीमती गांधी ने कहा कि संगठित मजदूरों को अधिक मजूरी की मांग करते वक्त खेतिहर मजदूरों जैसे अपने अभागे भाइयों का ध्यान रखना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि यदि मजदूर कम मजूरी ले तथा पूँजीपति अधिक मुनाफा पकाए तभी ये खेतिहर मजदूरों तथा ऐसे ही दूसरे तबके के बारे में कुछ कर सकते हैं।

आधुनिक कारखानों के मजदूरों को खेतिहर मजदूरों तथा अन्य गरीबों का ख्याल रखने की सलाह देने का मकसद यह है कि वे मजदूरों को न सिर्फ कम मजूरी पर संतुष्ट रहने के लिये कहते हैं बल्कि बड़े पूँजीपतियों को जीवन के निम्नतम स्तर की इस परिभाषा से प्रोत्साहित भी करते हैं कि भारत के सन्दर्भ में जीवन का निम्नतम स्तर एक किसान के स्तर के समान होना चाहिए। इससे पूँजीपतियों को दोनों दुनियाँ की सुविधाएँ मिल जायेंगी—मजूरी किसानों के स्तर की तथा उत्पादन आधुनिक स्तर की। इससे मुनाफा और बढ़ेगा। लेकिन मजदूर बेवकूफ नहीं हैं। वे ऐसी कुचालों को कभी भी सफल नहीं होने देंगे।

मजदूरों को खेतिहार मजदूरों तथा अन्य गरीबों का ख्याल दूसरे काम के लिये रखना चाहिये। सभी मेहनतकशों और शोषितों को एकजुट होकर एक ऐसी लड़ाई में उतर आना है जो क्रूर और पिछड़े हुए सामाजिक ढांचे की चिन्दियां उड़ा दें।

(शेषांश पृष्ठ १७ का)

आशीर्वाद के लिए ला० रामगोपाल शाल वाले, श्री वीरेन्द्र जी सभा मन्त्री ने भण्डार लुटा दिया। स्वामी भीष्म, स्वामी दीक्षा गुरु तथा इनके नेता स्वामी अग्निवेश ने दीक्षितों को उपदेश दिया। इसके बाद तीनों नवीन कासाय वस्त्र धारियों ने अपने संक्षिप्त भाषणों से आर्य जनता में और अधिक आशा की किरण उत्पन्न कर दी, ये बड़े ओजस्वी एवं गम्भीर सिद्ध हुए। युवक तो इतने झूम गए कि कहना नहीं बनता। वास्तव में यह दृश्य अत्यन्त प्रेरणादायक था। इसे देखकर बरबस अमर शहीद श्रद्धानन्द, पं० लेखराम, रामप्रसाद बिस्मिल, भक्तसिंह, ला० लाजपतराय, आजाद चन्द्र-शेखर के बलिदान की याद ताजा हो जाती है। अब दयानन्द का चमन खिल उठेगा। आर्य समाज रूपी माँ की गोद भर जायेगी।

भारतीय आर्य सभा के भिन्न भिन्न ईकाईयों के १९७४ के मनोनीत पदाधिकारी

हरयाणा प्रान्तीय कार्य समिति

डा० महासिंह सोनीपत, ब्र० गंगाराम एडवोकेट गोहाना, स्वामी आदित्यवेश पलवल, पं० देवीराम वल्लबगढ़, श्री धर्मवीर आर्य हिसार, आचार्य दयानन्द दादरी, डा० भूपसिंह दादरी, बिशनसिंह एडवोकेट कैथल, स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी शक्तिवेश रोहतक, श्री गिरजेश्वर अम्बाला, पं० ताराचन्द वैदिकतोप नारनौल, मा० रामपत कनीना, रामधारी शास्त्री जीन्द, ब्र० रामकिशन करनाल।

प्रधान- स्वामी अग्निवेश जी, उप प्रधान-स्वामी आदित्यवेश जी, महामन्त्री-श्री रामधारी शास्त्री, उप मन्त्री- डा. महासिंह एवं धर्मवीर, कोषाध्यक्ष-स्वामी शक्तिवेश।

आर्य सभा कार्यकारिणी जिला रोहतक

१. प्रधान पं. रामचन्द्र जी, २. उपप्रधान-जगतराम जी, ३. मंत्री-डा० धर्मवीर जी, ४. उपमंत्री-ताराचन्द जी भालौठ, ५. प्रचार मंत्री-धर्मसिंह नादान, ६. कोषाध्यक्ष-सन्तकुमार एल एल. बी. हुमायुपुर, ७. सूबेसिंह पहलवान हुमायुपुर, डा. प्रतापसिंह बराणी, ९. महाशय किशनलाल लिलोठ १०. टेकराम जी मकड़ौली, ११. राजकुमार जी वकील सीसाना, १२. जगवीर जी वकील खरकड़ा, १४. भगवान सिंह बोहर, १४. नवल सिंह सरपंच बलियाना, १५. धर्मसिंह जी सूरहा, १६. गोपीराम जी रोहणा, १७. लखन सिंह जी सांघी, १८. मांगे राम जी खरमाण, १९. आचार्य यशपाल जी, गुरुकुल मटिण्डू, २० सूरत सिंह नयाबास, २१. प्रेमदेव खूड़ण २२. जयपाल निदाणा, २३. मा. हंसराज खेड़ी सुलतान, २४. सत्यव्रत शास्त्री मकड़ौली, २५.

आर्य सभा कार्यकारिणी जिला जीन्द

१. प्रधान-रामधारी शास्त्री, २. उपप्रधान-कलीराम जी, ३. मन्त्री-वेदप्रकाश राजौंद, ४. उपमन्त्री-वीरेन्द्र कुमार एडवोकेट, ५. कोषाध्यक्ष-सौदागर चन्द्र जी जीन्द, ६. प्रचार मन्त्री-दलेल सिंह जुलाना, ७. ऋषिराम डाहोला, ८. रघुनाथ पाजूखुर्द ९. जयदेवसिंह एडवोकेट जीन्द, १०. चतरसिंह उचाना खुर्द ११. अभयसिंह जीन्द, १२. जगन्नाथ जुलाना मण्डी, १३. वीरेन्द्र कुमार एडवोकेट नरवाना, १४. कुन्दनलाल सिवाहा, १५. प्रियाराम धौंघड़िया, १६. सज्जनसिंह खटकड़, १७. मोमनसिंह बुड़ायन, १८. रणजीत सिंह अलेवा, १९. भगवानसिंह बुड़ायन, २०. टेकराम जी वकील नरवाना, २१. दयाकृष्ण अहीरका, २२. अतरसिंह बिठमड़ा, २३. रामधारी शास्त्री जीन्द, २४- कलीराम कान्हाखेड़ा, २५. माईलाल दनौदा कलां, २६ ओंकार प्रकाश नरवाना, २९. घासीराम लोहचब, २७, अभयराम घोघड़ियां,

आर्य सभा कार्यकारिणी जिला गुड़गांवा

१. राव हंसराम जी झिरी, २. महा. प्रभूदयाल जी सिरहोल, ३. ग्यासीराम जी, सोहना, ४. मुन्नीलाल जी छपेड़ा, ५. महाशय गंगा जी मंडकोला, ६. महाशय देवदत्त जी बीघावली, ७ पद्मचन्द जी नगीना, ८. छाजूराम जी सुल्तानपुर ९. पं. देवीराम जी मंत्री तिगाव, १९. सुभाष बल्लभगढ़, ११. पूरनसिंह मिर्जापुर, १२. लिखीराम जी सागरपुर, १३. बृजलाल नीमका, १४. डा. हरीसिंह फरीदाबाद, १५. राजेन्द्र दयालपुर, १६. महाशय जवरसिंह जी, १७. रामानन्द प्रधान १८. महाशय मनफूलसिंह उपप्रधान, १९. चरणसिंह घोड़ी, २० चरणसिंह घतीर कोषाध्यक्ष, २१. खड़गसिंह जी लेखा निरीक्षक,

आर्य सभा कार्यकारिणी जिला सोनीपत

१- डा० महासिंह छतेरा (प्रधान) २- गंगाराम जी वकील गोहाना, मन्त्री, ३-सुखदयाल जी आर्य गोहाना, ४ सूरजप्रकाश जी गोहाना (प्रचारमंत्री) ५- देवेन्द्र कुमार रिवाडा, ६- बलराज जी विलाना, ७- ओमप्रकाश जी रिवाडा, ८- चतरसिंह खानपुर कलां(उपप्रधान), ९-सूबेदार छोटूराम आहूलाना, १०-रणबीरसिंह मुन्डलाना, ११-श्रीचन्द कश्यप गोहाना, १२- नन्दलाल खेडी, १३- दलीपसिंह जसराणा, १४- सतीश चन्द्र नाहरी, १५- कंवलसिंह जी वकील नाथूपुर, १६- रिसाल सिंह सरपंच खेवडा, १७- ओमप्रकाश बयापुर (कोषाध्यक्ष) १८- वेदसिंह सरपंच भटाना (उपमन्त्री), १९- राजवीर सिंह वकील नांगल, २०- वैद्य धर्मसिंह बोहला, २१- नफेसिंह वकील खरखोदा, २२- महाश्य टेकचन्द कुराड, २३- भूपसिंह माहरा, २४- रामानन्द जी माजरा, २५- चन्दर सिंह हलालपुर

कार्य कारिणी जिला हिसार

१- दयाकिशन जी	गाँव कापड़ो
२- मातराम जी	गांव राखी शाहपुर
३- मगलदेव जी	गाँव हैबतपुर
४- देईचन्द जी	गांव कोथ कलाँ

५- मंगल सिंह जी	गांव माढ़ा पिछड़ा वर्ग
६- स्वामी देवानन्द सरस्वती	गांव कुरड़ी
७- डा रामसिंह जी	गांव कापड़ो
८- सूरतसिंह जी	गांव सिंघड़
९- दिवान सिंह जी	गांव पाली हरिजन
१०- रघुबीर सिंह जी	गांव सिसाए
११- वीरेन्द्र एडवोकेट	गांव हिसार
१३- केहरसिंह जी	गांव हसनगढ़
१४- विजय सिंह जी	गांव कुम्भा खेड़ा
१५- मोलु राम जी	गांव मिर्चपुर
१६- महावीर आर्य	गांव टोहाना
१७- मनफूल सिंह जी	गांव सिरसा
१८- हरलाल जी	गांव नहराना
१९- नौरंग सिंह जी	गांव सिरसा
२०- ओ३म प्रकाश जी	गांव गोरखपुर
२१- बारूसिंह जी	गांव उमरा
२२- हंसराज जी	गांव हांसी
२३- बारूसिंह जी	गांव पावड़ा
२४- धर्मवीर	गांव कोथ कलां
२५- नेकीराम जी	

प्रधान—धर्मवीर, उप प्र०—दयाकिशन (कापड़ो) मन्त्री—डा० रामसिंह कापड़ो, उप-मन्त्री—चौ० मोलुराम कोषाध्यक्ष—स्वामी देवानन्द जी गुरूकुल कुरड़ी, प्र० मन्त्री-महावीर प्रसाद आर्य टोहाना, पुस्तकाध्यक्ष–चौ मनफूल सिंह जी सिरसा।

आर्य सभा कार्यकारिणी जिला कुरुक्षेत्र

१- शेरसिंह जी, २- रोशनसिंह जी, ३- रिसालसिंह जी गुदाना, ४- जीवन दास जी, ५- श्यामसिंह, ६-लाल सिंह जी, ७-बिशनसिंह, ८-दयालसिंह जी बरसाना, ९- अतरसिंह जी, १०- बारु राम छोल, ११- हरीराम अटैल, १२- भागसिंह जी, १३-रामकिशन अभवाना, १४- शमशेर सिंह फरल, १५-गजेसिंह, १६-रामकिशन पबनावा, १७- जसमेर सिंह बकाना (थानेसर), १८- दिदार सिंह, १९- गिरधारी लाल जी, २०- खजान सिंह जड़ोला, २१- गुगुनसिंह दसोन्टी,

१- बिशन सिंह जी	प्रधान
२- शेरसिंह जी	उपप्रधान
३- रोशन सिंह जी	मंत्री
४- अतरसिंह	उप मन्त्री
५- लाल सिंह जी	प्रचार मन्त्री
६- गिरधारी लाल जी	कोषाध्यक्ष

(पृष्ठ ६ का शेषांश)

प्रस्ताव नं० ११

विषय–दहेज प्रथा तथा विवाह के अवसर पर प्रदर्शन पर प्रतिबन्ध।

आज की विषम आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक स्थिति को दृष्टिगत कर आर्य सभा अपना यह पुनीत कर्त्तव्य मानती है कि वह जनता के बीच में जातिगत भावना को समाप्त करने के लिए जनता को जन्माधारित जाति-पांति की चहार दीवारी से बाहर निकाले तथा गुण, कर्म और स्वभावानुसार विवाह को प्रश्रय दे जिससे मानव मानव के बीच से कृत्रिम विभेद की दीवार ध्वस्त हो जाय तथा दहेज प्रथा जिसके कारण आज सन्तानें परिवार के लिए असहनीय बोझ बनी हुई है, का भी खात्मा हो सके।

अतः मैं प्रस्ताव रखता हूँ कि सामाजिक विषमता और जातिगत भावना को खत्म करने के लिए अन्तर्जातीय विवाह को प्रश्रय दिया जाय। विवाह के अवसर पर प्रदर्शन के ऊपर होने वाले अपव्यय पर प्रतिबन्ध लागू हो। बारात में २० से अधिक आदमी नहीं जाना चाहिए। बारात सुबह जाकर शाम को अवश्य वापस आ जाए। रिश्तेमें एक रुपया तथा दान १०० रुपये से अधिक नहीं होना चाहिए।

आर्य सभा कार्यकारिणी भिवानी

स्वामी योगानन्द जी भिवानी-प्रधान, आचार्य हरिदेव जी गोरीपुर-उपप्रधान, आचार्य दयानन्द जी बी. ए. फरटिया मन्त्री, श्री रामचन्द्र जी अचीना-उपमन्त्री, प० आचार्य दयानन्द जी एम. ए. कितलाना-प्रचारमन्त्री, गोविन्दराम जी देवराला-कोषाध्यक्ष, ६. डा० भूपसिंह जी रावलधी ७. श्री हनुमान प्रसाद जी सिवानी, ८. डा. जुगलाल धारवाणवास पो. देवराला ९. श्री सज्जन सिंह जी मित्ताथल १०. श्री अमीलाल जी खलीफा रावलधी, ११. मौजीराम जी भिसरी, १२. भोपालसिंह जी बौंदखुर्द पो० बौंदकलां १३. करतारसिंह जी बुवानी खेड़ा, १४. महा० नत्थुराम जी दादरी, १५. पहलवान हवासिंह जी बड़ोदा कलां १६. पहलवान धर्मपाल जी खोरड़ा, १७ श्री महिपालसिंह जी बौंद खुर्द पो० बौंदकला, १८. श्री रघुवीरसिंह जी बौंद कलां, १९. श्री देशबन्धु शास्त्री भिवानी, २० ठाकुर फतहसिंह जी भिवानी, २१. ठाकुर भगवन्तसिंह जी लुहारू, २२. श्री छोटूराम जी तोसाम, २३ श्री हरकेराम जी खातीवास पो० समसपुर, २४. श्री रणसिंह जी धारवाण-बास पो० देवराला,

जिला महेन्द्रगढ़ आर्य सभा कार्यकारिणी

१. लाला ईश्वरदास जी (प्रधान)
२. वानप्रस्थी मनफूलसिंह जी (उपप्रधान)
३. पं० ताराचन्द जी (मन्त्री)
४. श्री साथी अनी आर्य जी पाहलावास (उपमन्त्री)
५. श्री रामनारायण जी (प्रचारमन्त्री)
६. श्री रामपत जी (कोषाध्यक्ष)

७. श्री घीसाराम जी सीहोर, ८. महाशय मूलचन्द जी खरोटी, ९. पं० मूलचन्द जी महोडीपुर, १०. श्री जयनारायण जी सीहोर ११. श्री ओ३मप्रकाश जी सीहोर, १२. श्री घीसाराम जी सीहोर, १३. श्री फूलचन्द सीहोर, १४. श्री रामचन्द्र न्योतामा १५. श्री देवराज जी कनीना, १७. श्री महाशय लीलाधर रेवाड़ी, १८. लाला रामेश्वरदास रेवाड़ी, १९. ला० किशनलाल रेवाड़ी, २०. श्री विजयसिंह पाहलावास, २१. श्री निहालसिंह घोहलडेन, २२. श्री हंसराज काडीपुरी २३. वैद्य महीपाल चामघेड़ा, २४. वानप्रस्थी, सुखदेव अलीपुर, २५. श्री धर्मपाल जी भागोत २६. हठी सिंह जी, बीकानेर।

आर्य सभा कार्यकारिणी जिला करनाल

१. राजेश्वरलाल चौड़ा बाजार करनाल, २. वेद प्रकाशार्य दयालपुरा, ३. सत्यप्रकाश दयालपुरा गेट, ४. सुदर्शनलाल श्रद्धानन्द अनाथालय, ५. हरीप्रसाद ३५२ सदर बाजार वकीलपुरा, ६. डा० इन्द्रभानार्य ४१६।४ पानीपत, ७. डा० दर्शनलाल आर्य पटेल नगर २३ पानीपत, ८. चौ. मुन्शीराम ६७३ माडल टाऊन पानीपत, ९. चौ. दलीप सिंह सिवाह, १०. माईराम खोतपुरा, ११. बख्तावरसिंह चौहान अमीन, १२. रणवीर सिंह अमीन, १३. कश्मीरीलाल अमीन, १४. रायस्वरूप रायपुर, १५. दलेलसिंह आर्य बीड अमीन, १६. इन्द्रसिंह अहबली, १७. रामदिया रायपुर १८. रामसिंह रायपुर, १९. जयपाल पाढा, २०. लखपत दादुपर, २१. चौ० दयासिंह खलीजा, २२. वानप्रस्थ तुलाराम अबहला।

प्रधान-ब्रह्मचारी कर्मपाल, उपप्रधान-इन्द्रभान, मन्त्री-ब्र. रामकिशन, उपमन्त्री—लखपतराय दादपुर, दलेलसिंह जी, कश्मिरीलाल जी, कोषाध्यक्ष—राजेश्वर लाल जी करनाल, कार्यालयमन्त्री—वेद प्रकाशार्य करनाल।

आर्य सभा दिल्ली प्रदेश का निर्वाचन १९७४

१. अध्यक्ष—डा. वाचस्पति उपाध्याय माडल टाउन, २. उपाध्यक्ष— श्री धीरेन्द्र शास्त्री कर्मपुरा, ३. महामन्त्री— श्री प्रेमपाल शास्त्री शक्तिनगर, ४. उपमन्त्री— श्री आनन्द कुमार आर्य स्टेट बैंक कालोनी, ५. कोषाध्यक्ष श्री— वीरव्रत शास्त्री देवनगर, ६. कार्यालय मन्त्री— श्री लक्ष्मीचन्द्र जी दीवानहाल

अंतरंग सदस्य

७. श्री कर्णदेव आर्य रमेश नगर, ८. राजसिंह आर्य आर्यपुरा, ९. राजकुमार जी चूनामण्डी पहाड़गंज, १०. ब्र. सत्यव्रत जी नरेला, ११. कृष्णलाल जी प्रतापनगर, १२. मनमोहनस्वरुप भटनागर तीमारपुर, १३. ओंकारनाथ जी शाहदरा, १४. भीमसेन चौधरी, अशोक विहार, १५. श्री अम्बुश विद्रोही, विवेकानन्द कालोनी, १५. धर्मपाल यादव, शकूरपुर, १६. बलजीतसिंह, श्रीनगर, १८. कैलाश चन्द्र शास्त्री माडल टाऊन १९. देव दत्त जी शाहदरा, २०. चौ. ओ३मप्रकाश शाहदरा २१. श्री आशानन्द जी राजेन्द्रनगर, २२. श्री कर्मचन्द महाजन राजेन्द्रनगर, २३, श्री ओमानन्द जी सत्यार्थी, २४ श्री छविकृष्ण शास्त्री राजेन्द्रनगर २५. आनन्द कुमार आर्य भू. पू. मन्त्री,

आर्य सभा तदर्थ समिति पंजाब

प्रधान-श्री स्वामी वेदानन्द जी रोपड, २. उपप्रधान-लम्भूराम जी होश्यारपुर, ३. मन्त्री-सुनील आर्य होश्यारपुर, ४. प्यारे लाल जी खन्ना ५. महेन्द्रपाल जी आर्य समाज सैक्टर २२ चन्डीगढ़, ६. वेद रत्न जी लुधियाना, ७. नन्दकिशोर जी—कोषाध्यक्ष-अमृतसर।

राजस्थान आर्य सभा तदर्थ समिति

१. संयोजक स्वामी चन्द्रवेश जी, २. धर्मपाल जी एडवोकेट झुन्झुनु, ३. डा० जयसिंह परमार्थी तिजारा, अलवर (राज०), ४. श्री मदनमोहनजी सवाईमाधोपुर, ५. श्री मोहन सिंह जी भरतपुर, ६. केशवसिंह जी सांखला जोधपुर, ७. श्री शशिकांत आर्य अजमेर, ८. श्री जयदेव जी अनल जयपुर, ९. श्री यू० एस० लेखी जयपुर, १०. वेदप्रकाश जी आर्य कोटा, ११. श्री रामचन्द्र जी आर्य गंगानगर, १२. श्री सोमदेव जी जयपुर, १३. श्री सोमानन्द जी जययुर १४. श्री सत्यदेव जी सत्यार्थी जयपुर, १५. श्री पूर्णसिंह जी प्रेमी तिजारा अलवर, १६. श्री रामचरण जी आर्य तिजारा अलवर १७. श्री भवानी सहायजी बहरोड़ अलवर, १८. श्री धर्मपाल जी तिजारा अलवर, १९. श्री शिवदयाल जी तिजारा अलवर २० श्री हरद्वारीलाल जी तिजारा अलवर, २१. श्री ओ३म प्रकाश जी तिजारा अलवर, २२. श्री भगवती प्रशाद जी जयपुर, २३ श्री सावित्री देवी जी जयपुर।

आर्य सभा तदर्थ समिति जिला अलवर (राज.)

१. प्रधान—श्री जयसिंह 'परमार्थी', २. मन्त्री—श्री पूर्णसिंह जी प्रेमी, ३. उप-प्रधान रामचरण जी आर्य, ४. प्रचारमन्त्री धर्मपाल जी आर्य, ५. जयलाल जी आर्य, ६. भवानी सहाय सहमन्त्री, ७. धर्मपाल जी, ८. मुन्शीराम जी, ९. सोमदत्त जी, १०. रामजीलाल जी, ११. सोहन सिंह जी, १२. हरि सिंह जी, १३. हरद्वारी लाल जी उपमन्त्री एवं कोषाध्यक्ष,

१४. श्री राम जी, १५. चिरंजी लाल जी, १६. चंदगीराम जी, १७. झाबर मनेन्द्र जी, १८. मुखराम जी, १९. पं. शिवदयाल जी, २०. रामफल जी, २१. किशनकाल जी, २२. रामधन जी, २३. ओमप्रकाश जी, २४. जगराम जी, २५. रायसिंह जी।

उत्तर प्रदेश प्रान्तीय तदर्थ समिति

१. श्री वेदप्रिय शास्त्री प्रधान सहारनपुर, २. श्री राम वर्ण पाण्डेय उपप्रधान गोन्डा, ३. राजपाल आर्य मन्त्री मु० नगर, ४. श्री अड़ीमल सिंह सहमन्त्री मेरठ, ५. श्री खेमसिंह आर्य प्रचारमन्त्री गोरखपुर, ६. रामगोपाल कोषाध्यक्ष बिजनौर, ७. सदस्य सर्वश्री योगेन्द्र कुमार शर्मा मु० नगर, ८. कृष्णदत्त त्यागी मु० नगर, ९. मंशाराम आर्य मेरठ, १०. रामपालसिंह मेरठ, ११. राजबलसिंह मेरठ, १२. अजब सिंह सहारनपुर, १३. मेवालाल आर्य गोरखपुर, १४. पं० ब्रह्मप्रकाश शर्मा मैंनपुरी, १५. रामपालसिंह आर्य मु० नगर, १६. ब्र० बलदेव नैष्ठिक मु० नगर, १७. जगतसिंह आर्य मेरठ, १८. शोभाराम प्रेमी मेरठ, १९. महेशचन्द्र जी मेरठ, २०. हरीशचन्द्र मेरठ, २१. हरीसिंह पुरुषार्थी सहारनपुर, २२. भारतभूषण शास्त्री वाराणसी, २३. आदर्शमित्र शास्त्री गोरखपुर, २४. राजपालसिंह आर्य मु० नगर, २५. मुरारीलाल मेरठ।

केन्द्र के लिए प्रतिनिधि

१. श्री वेदप्रिय शास्त्री जगन्नाथ आश्रम गुरुकुल रण-देवा सहारनपुर, २. श्री राजपाल आर्य ग्रा० सोहजनी जाटान डा० अलीपुर खेड़ी मु० नगर।

---

१९ अप्रैल जिनकी पुण्य जन्म तिथि है—

महात्मा हंसराज

शरर एम० ए०

ऋषि ने जिस्म जो छोड़ा वतन उदास हुआ।
बहार जब हुई रुख्सत चमन उदास हुआ॥
बढ़ा अन्धेरा हर इक सिमत नूर के बदले।
दिलों पे ग़म की घटा थी सरूर के बदले॥

कोई भी था नहीं ग़मखार भगत हैरां थे।
हर इक दिमाग़ था बेचैन दिल परेशां थे॥
थी फ़िक्र वेद का प्रचार किस तरह होगा।
जहां में सत्य का प्रसार किस तरह होगा॥

ग़म नसीबों को इक मर्दे बा खबर की तिलाश।
किसी तपस्वी की, जांबाज़दीद हवरकी तिलाश॥
सफेद कपड़ों में मल्बूस तब वह कौमी फ़कीर।
कि ढूंढने पे भी मिलती नहीं है जिसकी नज़ीर।

बढ़ा था जुरति बेबाक लेके दीवाना।
कि सूए शमा लपकता है जैसे परवाना॥
ज़माना तकता रहा होके शशदर व हैरां।
मगर रुका न किसी मोड़ पर भी अज्मे जवां॥

हज़ार रंग बदल लोभ सामने आया।
मगर विवेक ने हर बार उसको ठुकराया॥
बहार बनके वह गुलशन में मुस्करा उठा।
गुलों की आंख खुली सब्ज़ा लहलहा उठा॥

उसी की याद से मामूर है यह आज का दिन।
शरर है कौम के सरताज हंसराज का दिन।

महात्मा हंसराज के यज्ञमय जीवन का उद्घोष—

निर्धनता को उखाड़ फेंको

हमारा पहला दोष हमारी गरीबी है। यह विचित्र बात है कि भारत जैसी सर्व सम्पन्न माँ की गोद में खेलते हुए हम अत्यन्त निर्धन हैं। मेरे एक मित्र ने मुझे बताया कि भारत में कदम रखते ही उसे लगा कि जैसे वह किसी अनाथालय में आ गया हो। यह सच है कि जब हम संसार के अन्य देशों से अपनी तुलना करते हैं, तो प्रशंसा की एक बात भी नहीं पाते। हम कहीं उनके मापदण्ड में ठहरते ही नहीं। इसलिए पहली बात यह अटल निश्चय की होनी चाहिये कि हमने इस वीभत्स निर्धनता को समूल उखाड़ फेंकना है।

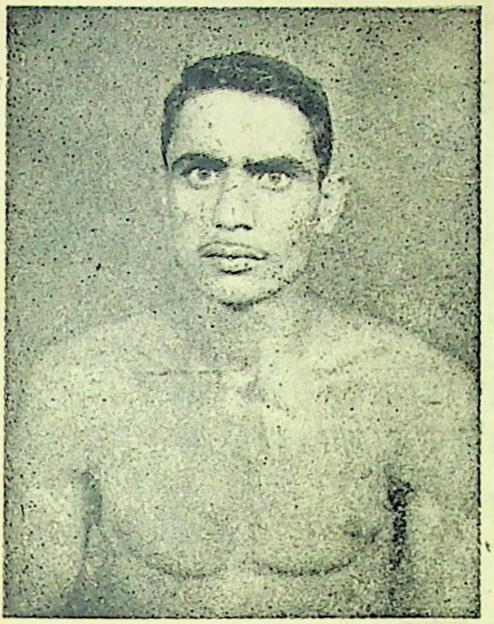
जीवन का एक ध्येय होना चाहिए

"मनुष्य जीवन का एक ध्येय होना चाहिये, एक केन्द्र, जहाँ पहुँचकर वह अपना जीवन कुर्बान कर सके, अपने धन-दौलत और बाल-बच्चों को सुविधा से छोड़ सकें। एक स्थान होना चाहिए, जहां पहुंच कर गर्व के साथ कह सकें कि चाहे प्राण चले जायें, चाहे सब ओर नाश-विनाश नाचने लगे तो भी वह लौटेगा नहीं, पीछे हटेगा नहीं। ऐसे स्थान पर ही मनुष्य का वास्तविक चरित्र और उसका असल मोल मालूम होता है।"

और हम देखते हैं कि महात्मा जी ने अपने जीवन का एक ध्येय मानकर आयु भर रहना मंजूर किया।

अतः महात्मा जी का जन्मदिन मनाते हुए यदि हम उनके पदचिन्हों पर चलने और उनके मान्यताओं को पुनर्जीवित करने का व्रत लें, तो यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

एक होनहार पहलवान हमसे छिन गया



अमर पहलवान परमानन्द

आज अचानक भाई यज्ञपाल जी शास्त्री के पत्र से यह हृदयविदारक समाचार प्राप्त हुआ कि इस देश का सर्वोच्च कोटि का पहलवान परमानन्द अब दुनियाँ में नहीं रहा। २८ वर्ष का, गठीला, छरहरे बदन का सुन्दर और सुडौल भारतीय सेना का चमकता सितारा लुप्त हो गया।

आज से १५-२० दिन पहले हम इन्द्रप्रस्थ अधिवेशन की तैयारी में लगे थे तभी श्री यज्ञपाल जी द्वारा अचानक यह पता चला कि पहलवान परमानंद जी सेना के अन्य पहलवानों के साथ कुश्तियों के लिए बेलगांव (मैसूर) गया था और २१ फरवरी को उन्हीं पहलवानों के साथ ९ बजकर ५५ मिनट पर ५७ डाउन दादर अमृतसर एक्सप्रेस से दिल्ली के लिए रवाना हुआ। सामान्य जानकारी के अनुसार उसे २२ फरवरी दोपहर तक इटारसी के समीप देखा गया। उसके बाद वह लापता हो गया है।

उनकी इस सूचना से स्वामी इन्द्रवेश जी और मैं दोनों बड़े हतप्रभ हुए। परमानन्द जी न केवल हमारे सुपरिचित पहलवान होने के कारण ही नहीं बल्कि अच्छे आर्यसमाजी विचारों के बड़े निष्ठावान और चरित्रवान आदर्श पहलवान होने के अतिरिक्त १९७१-७२ में अपने बेन्टम वेट (५७ कि.) वर्ग में स्वर्ण पदक प्राप्त कर राष्ट्रीय चेम्पियन भी रहे। जून १९७२ में रूस में उन्होंने कुश्ती लड़ी थी तथा १ नवम्बर १९७२ को ओलम्पिक स्वर्णपदक विजेता रूसी पहलवान रोमन दिमित्रेव से बराबर की टक्कर ले चुके थे जिसकी देश के प्रमुख समाचार पत्रों में बड़ी चर्चा रही। इसलिए इनके लापता होने के पीछे हमें किसी भयंकर षड्यन्त्र की गन्ध आई। स्वामी इन्द्रवेश जी ने तुरन्त संसद सदस्यों से मिलकर संसद में और रक्षामंत्रालय' में बात उठाने की कोशिश की। उधर मैंने देश के प्रमुख पत्रों तथा आकाशवाणी पर समाचार सूचना दिलाने का प्रयास किया। परमानन्द जी के बड़े भाई यज्ञपाल जी ने जो सेना में स्वयं भी पहलवान है रात दिन एक कर दिया उनका पता लगाने में। बड़े बड़े इश्तहार छपवाकर और सारे देश की पुलिस को सचेष्ट करने पर भी जब कई दिनों तक पता न चला तो यज्ञपाल जी स्वयं भोपाल, इटारसी, होशंगाबाद की तरफ गये और वहां उन्हें यह सूचना मिली कि २१ फरवरी को रेल की पटरी के पास एक अज्ञात युवक का शव मिला था। पुलिस के चित्र, कपड़े आदि के देखने से यह पुष्ट हो गया कि वह शव किसी और का नहीं, वरन होनहार पहलवान परमानन्द का था। माथे पर चोट का निशान, दाहिने कलाई पर 'ओ३म्' खुदा हुआ सारी बातें एक दम मिलती थीं।

पर अभी तक मृत्यु का सही कारण पता नहीं लग पाया है। पुलिस का कहना है कि वे सिगनल के खंभे से टकरा कर गिर पड़े और सिर फट गया। पर हमें इसमें संदिग्धता और षड्यन्त्र की बू आती है। हम आशा करते हैं कि भारत सरकार उच्च स्तर पर इस दुर्घटना की जांच करायेगी।

भाई परमानन्द जी भिवानी जिले के पंचगांव पो. गोपी के निवासी श्री शिवनारायण जी आर्य के सुपुत्र थे। उनका छोटा सा किसान परिवार, उनकी विधवा पत्नी और अबोध बच्चों पर जो विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा है उसमें सारा राजधर्म परिवार उनके साथ समवेदना प्रकट करता है। परमात्मा की कृपा से भारत का वह लाल दुबारा अपने राष्ट्र के गौरव में वृद्धि हेतु जन्म लेगा और उसी आर्यत्व की मिसाल कायम करेगा—इसी कामना के साथ।

इन्द्रवेश,
अग्निवेश

राजधर्म प्रकाशन के लिए राजधर्म प्रेस, भज्जर रोड, रोहतक से स्वामी अग्निवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। फोन : ८८२

पंजीयन क्रमांक RTK 28
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

राजधर्म
रोहतक
१२ अप्रैल १९७४

॥ ओ३म् ॥

पाक्षिक

आर्यजगत्



प्रधान सम्पादक
स्वामी अग्निवेश

★

सह सम्पादक
गिरजेश्वर

★

अप्रैल द्वितीय
वर्ष ६ : अंक ८
वार्षिक शुल्क १५ रु०
एक प्रति ७० पैसे

कितना सामाजिक न्याय ?
कितनी आत्मनिर्भरता ?

१९७४-७५ का बजट



भीख मांगने के लिए विवश एक माँ



विपन्नता की छाया में बचपन



सम्पन्नता की छाया में बचपन

कितना अन्तर ?

सम्पादकीय

सामाजिक न्याय और आत्मनिर्भरता से कटा नया बजट

१९७४-७५ का बजट वित्तमन्त्री श्री चव्हाण द्वारा २८ फरवरी को संसद में प्रस्तुत किया गया। वित्त मंत्री के रूप में उनके द्वारा प्रस्तुत यह चौथा बजट है। उन्होंने कहा कि हर एक केन्द्रीय बजट में मुख्य चिन्ता एक ही रहती है "अधिकतम सामाजिक न्याय और आत्मनिर्भरता, तेजी से विकास और स्थिरता की आवश्यकताओं में समुचित संतुलन कायम करना।" इस तरह वित्तमन्त्री ने प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी बजट प्रस्तुत किये जाने से पूर्व की घोषणा-परम्परा का भलिभांति निर्वाह किया है। प्रत्येक वर्ष की भांति उन्होंने फिर दोहराया कि यह बजट गरीबी उन्मूलन, आर्थिक समानता, मूल्यों में स्थिरता और आत्मनिर्भरता की ओर सक्रिय प्रयासों की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। अतः नया बजट इन उद्देश्यों को कहां तक हासिल करता है, इसका सही विश्लेषण करना जनता के हित के दृष्टिकोण से नितान्त आवश्यक है।

इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि भारत एक पूंजीवादी देश नहीं है। चूंकि स्वतंत्रता के उपरान्त समाजवाद और लोकतंत्र के नाम पर इस देश में लखपति, करोड़पति हुए हैं और करोड़पति, अरबपति एवं खरबपति बन गये हैं। आज सरकारी आंकड़ों के अनुसार भी देश की २२½ करोड़ जनता गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है यद्यपि वास्तविकता इसके ठीक विपरीत है। वास्तव में देश को आधी से अधिक जन संख्या गरीबी की रेखा के नीचे घोर विपन्नता में जीवन व्यतीत कर रही है। अतः भारत निःसन्देह एक पूंजीवादी राष्ट्र है क्योंकि समाजवाद में आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय साथ-साथ चलते हैं। किसी भी देश का बजट सरकार के वर्ग चरित्र का परिचायक होता है। पूंजीवादी सरकार का बजट निःसन्देह उसके वर्ग के निहित स्वार्थ की पूर्ति करता है। यद्यपि ऐसी अन्य सरकारें जनवादी पूंजीवाद के समान अवसर के सिद्धान्त को कुछ हद तक क्रियान्वित करती हैं परन्तु भारत की कांग्रेसी सरकार कम से कम इतना भी करने के लिए व्यग्र एवं जागरूक नहीं दिखलाई पड़ती। यह सरकार जनता के साथ घातक चाल चल रही है। वर्तमान बजट इस बात का अत्यन्त सजीव एवं प्रबल प्रमाण है।

सरकार की तरफ से पुरजोर प्रयास किया जा रहा है कि यह आम बजट है। इसमें किसी भी वर्ग का पक्षपात नहीं किया गया है। टैक्स की छूट देने और उसका बोझ बढ़ाने में सरकार ने समदृष्टि अपनायी है। शासक पार्टी इसे समाजवादी बजट कह कर पुकार रही है। परन्तु असलियत में यह गरीबी बढ़ाओ, गरीब हटाओ और चन्द लोगों को मालामाल करने वाला बजट है। यह बजट महंगाई बढ़ाने वाला, जनता की क्रय शक्ति क्षीण कर उसे अत्यन्त उत्पीड़ित करने वाला बजट है।

सरकार के अनुसार वर्तमान बजट द्वारा निम्न और मध्यम वर्ग को कुछ हद तक आय कर में राहत प्रदान किया गया है। करों में वृद्धि अथवा नये कर लगाने के बाद बढ़ी हुई राजस्व प्राप्ति में से करों में राहत से होने वाली हानियों को निकाल कर बजट में कुल घाटा ३११ करोड़ के बजाय १२५ करोड़ रुपया रह गया है। सरकार के अनुसार यह सब विकास व्यय को दृष्टि में रख कर करना जरूरी था। परन्तु सच्चाई इसके ठीक विपरीत है।

निम्न तथा मध्यम वर्ग को करों में थोड़ा राहत प्रदान कर सरकार ने बड़ी चतुराई से उच्चतम वर्ग का हितसम्बर्धन किया है। उच्चतम वर्ग को करों में अधिक राहत देने के लिए सरकार ने इन वर्गों को थोड़ा राहत देकर इनका मुँह बन्द करना जरूरी समझा। सरकार ने इस वर्ग के राहतों को न्यायाधीश के० एन० बांचू की अध्यक्षता में बनी प्रत्यक्ष कर जांच समिति की पुरानी सिफारिशों पर आधारित बताया है। परन्तु सरकार ने दस हजार करोड़ से ऊपर काले धन की समस्या को हल करने के लिए वांचू समिति की विमुद्रीकरण की महत्वपूर्ण सिफारिश को नहीं स्वीकार किया है यद्यपि महँगाई और मुनाफाखोरी दूर करने के लिए इसे खत्म करना अत्यन्त आवश्यक है। अतः काले धन की समस्या को स्पर्श न करना सरकार और काले धन के मालिकों के सीधे सांठ-गांठ को स्पष्ट करता है।

१९७४-७५ का वर्ष मुद्रास्फीत के विरुद्ध कहा जा रहा है। सम्भवतः यह माना गया है कि १२५ करोड़ रुपये का इस वर्ष का घाटा १९७३-७४ के ८५० करोड़ के मुकाबले में बहुत कम है। परन्तु सरकार अनुत्पादक कार्यों और गैर विकास योजनाओं पर जिस तरह से रुपये खर्च कर रही, उसे देखते हुए घाटे की अर्थ व्यवस्था खत्म होने की सम्भावना नहीं दिखाई दे रही है। चूंकि काले धन की समानान्तर अर्थ व्यवस्था से भी सरकार का सांठ-गांठ है, अतः ऐसी हालत में यदि १२५ करोड़ रुपये का घाटा फूल कर १२५० करोड़ तक पहुँच जाय तो कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि अनुत्पादक मुद्दों पर अधिक खर्च होने के कारण चौथी योजना का अनुमान भी गलत प्रमाणित हुआ था। पिछले वर्ष घाटा केवल ८५ करोड़ आंका गया था, पर वह फूल कर ८५०

सिफारिश के दौर से कोई एक तो बहुत ही ऊँचे पद पर पहुँच जाता है तो एक उम्र भर दर-दर की ठोकरें ही खाता रहता हैं। यदि किसी ऐसी नौकरी पर पहुंच भी जाता है कि जो उसकी योग्यता से निम्न स्तर की होती है तो वह अपनी योग्यतानुसार नौकरी न मिलने के कारण उस पद पर असन्तुष्ट ही रहता है। वैसे भी शिक्षा संस्था से डिग्रियां पाने के बाद मेरे देश का नवयुवक बता ही नहीं सकता कि शिक्षा संस्था ने उसे क्या बनाया है? नौकरी पाने के बाद ही वह बता पाता है कि वह क्या बना है? तो शिक्षा उसे क्या बनाती है?– शिक्षा तो कुछ नहीं बना पाती। बनाने वाली शिक्षा का नाम है–रिश्वत या सिफारिश–इसी की दौड़ से तो योग्यता बनती है।

मेरे देश के युवावर्ग को ये शिक्षा किसी भी स्तर पर शारीरिक परिश्रम करना नहीं सिखा पाती। आज यदि देश का शिक्षित युवावर्ग अन्य देशों के युवावर्ग की तरह उत्पादन के लिये मिलों एवम खेतों में हलों पर करने लगे तो मिलों एवम खेतों की दुर्दशा भी ये नहीं हो। परन्तु देश की शिक्षा प्रणाली युवावर्ग में शारीरिक परिश्रम से उत्पादन करने की भावना भरने के बजाय किसी बड़े से कार्यालय में पंखे के नीचे लम्बी चौड़ी फाईलों, कलम दानों एवम् टेलीफोन से सुसज्जित मेज के सामने ऊँची सी कुर्सी पर विराज कर नौकरों पर आदेश चलाने की भावना से प्रेरित करती है– आलस्य भरती है–परिश्रम एवम श्रम करना नहीं सिखा पाती। इसी कारण आज मेरे देश का युवा वर्ग श्रम से घबरा कर दूर भागना चाहता है और उत्पादन की बजाय केवल उपभोक्ता बनकर ही विलासिता एवम ऐशो-आराम का जीवन बिताना चाहता है।

इस शिक्षा से मे
वर्ग का उद्देश्य सिर्फ
करके डिग्रियां एकत्रित
रहता है। जो कुछ
केवल परीक्षायें पास क
से पढ़ी हुई बातों को
प्रयुक्त करना उसका
पाता। उदाहरणार्थ–
"सदा सत्य बोलो
"Always speak
सिर्फ इसी उद्देश्य से य
परीक्षा में दो अंक प्रा
परीक्षा पास करने के
जाता है कि उसे सत्य
वैसे चरित्र निर्माण ए
के लिये तो इस शिक्षा
स्थान है ही नहीं फिर
अध्यापक कक्षा में सच
दारी की वास्तविकता
खासा लम्बा चौड़ा भ
के बाद अंकगणित क
को सिखाता है "एक
एक किलो ग्राम के त
९०० ग्राम का तोल
तो ज्ञात करो उसे क
होगा।" या "दस
में दो किलो ग्राम पान
भाव से बेचने पर एक
दार को क्या लाभ हो
उन मासूम छात्रों के
एक तूफान उठता
महोदय तो कह रहे
एवम् ईमानदारी तो
बात है परन्तु यहां
प्रश्नों में लाभ होता
मानी से। अत: वे सच
दारी को हानिकारक
बेईमानी को ही लाभ
इसी की तरफ आकर्षि
और यह शिक्षा उन
मस्तिष्कों में ऐसे-ऐ
दिन प्रतिदिन उठाती

को उ
...न शर्मा
चुका हो। जब तक
तब तक वह 'शब्दा
कूक्कू शब्द तब बन
चुका था। निरुक्तक
मनुष्यों ने शब्दा
...ना यही है कि
...दानुकृति से नाम
..., में, में, में' की
...ने कट्ट से तूंबे को
...रा और बकरी में
...ति के ही आधार पर
... कट्ट सुनने पर हमारे
...हीं। निरुक्त में दोनों

काक इति शब
न शब्दानुकृति
काको अपकाल

अर्थात् एक कहता
...रन्तु दूसरा औपमन्यु
...स्पृश्यता के कारण
...तुज नाम बतलाता है
... भी नाम रक्खा जा
...ता कि आदि में शब्द
... यही पाया जाता है
... नाम रख सकते हैं,
...दि। ये नाम हम
...खकर ही रखते हैं, प
... इन वर्णों का उच्चार
...वनियों के अनुकरण
...ी ध्वनियां साफ
...जनको हम टनटन, घ
...ादि कहते हैं, क्या
...? क्या तोते के
...नबीजी भेजो' आदि
...ा ही हैं? क्या सा
...उन्हीं वर्णों को कह
...भी नहीं, हर्गिज नह
...सिवा मनुष्य के मुख
...जब तक मनुष्य के से

सम्पादकीय

सामाजिक न्याय और आत्मनिर्भरता से कटा नया बजट

१९७४-७५ का बजट वित्तमन्त्री श्री चव्हाण द्वारा २८ फरवरी को संसद में प्रस्तुत किया गया। वित्त मंत्री के रूप में उनके द्वारा प्रस्तुत यह चौथा बजट है। उन्होंने कहा कि हर एक केन्द्रीय बजट में मुख्य चिन्ता एक ही रहती है "अधिकतम सामाजिक न्याय और आत्मनिर्भरता, तेजी से विकास और स्थिरता की आवश्यकताओं में समुचित संतुलन कायम करना।" इस तरह वित्तमन्त्री ने प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी बजट प्रस्तुत किये जाने से पूर्व की घोषणा–परम्परा का भलिभांति निर्वाह किया है। प्रत्येक वर्ष की भांति उन्होंने फिर दोहराया कि यह बजट गरीबी उन्मूलन, आर्थिक समानता, मूल्यों में स्थिरता और आत्मनिर्भरता की ओर सक्रिय प्रयासों की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। अतः नया बजट इन उद्देश्यों को कहां तक हासिल करता है, इसका सही विश्लेषण करना जनता के हित के दृष्टिकोण से नितान्त आवश्यक है।

इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि भारत एक पूँजीवादी देश नहीं है। चूँकि स्वतंत्रता के उपरान्त समाजवाद और लोकतंत्र के नाम पर इस देश में लखपति, करोड़पति हुए हैं और करोड़पति, अरबपति एवं खरबपति बन गये हैं। आज सरकारी आंकड़ों के अनुसार भी देश की २२½ करोड़ जनता गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है यद्यपि वास्तविकता इसके ठीक विपरीत है। वास्तव में देश की आधी से अधिक जन संख्या गरीबी की रेखा के नीचे घोर विपन्नता में जीवन व्यतीत कर रही है। अतः भारत निःसन्देह एक पूँजीवादी राष्ट्र है क्योंकि समाजवाद में आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय साथ-साथ चलते हैं। किसी भी देश का बजट सरकार के वर्ग चरित्र का परिचायक होता है। पूँजीवादी सरकार का बजट निःसन्देह उसके वर्ग के निहित स्वार्थ की पूर्ति करता है। यद्यपि ऐसी अन्य सरकारें जनवादी पूँजीवाद के समान अवसर के सिद्धान्त को कुछ हद तक क्रियान्वित करती हैं परन्तु भारत की कांग्रेसी सरकार कम से कम इतना भी करने के लिए व्यग्र एवं जागरूक नहीं दिखलाई पड़ती। यह सरकार जनता के साथ घातक चाल चल रही है। वर्तमान बजट इस बात का अत्यन्त सजीव एवं प्रबल प्रमाण है।

सरकार की तरफ से पुरजोर प्रयास किया जा रहा है कि यह आम बजट है। इसमें किसी भी वर्ग का पक्षपात नहीं किया गया है। टैक्स की छूट देने और उसका बोझ बढ़ाने में सरकार ने समदृष्टि अपनायी है। शासक पार्टी इसे समाजवादी बजट कह कर पुकार रही है। परन्तु असलियत में यह गरीबी बढ़ाओ, गरीब हटाओ और चन्द लोगों को मालामाल करने वाला बजट है। यह बजट महंगाई बढ़ाने वाला, जनता की क्रय शक्ति क्षीण कर उसे अत्यन्त उत्पीड़ित करने वाला बजट है।

सरकार के अनुसार वर्तमान बजट द्वारा निम्न और मध्यम वर्ग को कुछ हद तक आय कर में राहत प्रदान किया गया है। करों में वृद्धि अथवा नये कर लगाने के बाद बढ़ी हुई राजस्व प्राप्ति में से करों में राहत से होने वाली हानियों को निकाल कर बजट में कुल घाटा ३११ करोड़ के बजाय १२५ करोड़ रुपया रह गया है। सरकार के अनुसार यह सब विकास व्यय को दृष्टि में रख कर करना जरूरी था। परन्तु सच्चाई इसके ठीक विपरीत है।

निम्न तथा मध्यम वर्ग को करों में थोड़ा राहत प्रदान कर सरकार ने बड़ी चतुराई से उच्चतम वर्ग का हितसम्वर्धन किया है। उच्चतम वर्ग को करों में अधिक राहत देने के लिए सरकार ने इन वर्गों को थोड़ा राहत देकर इनका मुँह बन्द करना जरूरी समझा। सरकार ने इस वर्ग के राहतों को न्यायाधीश के० एन० वांचू की अध्यक्षता में बनी प्रत्यक्ष कर जांच समिति की पुरानी सिफारिशों पर आधारित बताया है। परन्तु सरकार ने दस हजार करोड़ से ऊपर काले धन की समस्या को हल करने के लिए वांचू समिति की विमुद्रीकरण की महत्वपूर्ण सिफारिश को नहीं स्वीकार किया है। यद्यपि महँगाई और मुनाफाखोरी दूर करने के लिए इसे खत्म करना अत्यन्त आवश्यक है। अतः काले धन की समस्या को स्पर्श न करना सरकार और काले धन के मालिकों के सीधे सांठ-गांठ को स्पष्ट करता है।

१९७४-७५ का वर्ष मुद्रास्फीत के विरुद्ध कहा जा रहा है। सम्भवतः यह माना गया है कि १२५ करोड़ रुपये का इस वर्ष का घाटा १९७३-७४ के ८५० करोड़ के मुकाबले में बहुत कम है। परन्तु सरकार अनुत्पादक कार्यों और गैर विकास योजनाओं पर जिस तरह से रुपये खर्च कर रही, उसे देखते हुए घाटे की अर्थ व्यवस्था खत्म होने की सम्भावना नहीं दिखाई दे रही है। चूँकि काले धन की समानान्तर अर्थ व्यवस्था से भी सरकार का सांठ-गांठ है, अतः ऐसी हालत में यदि १२५ करोड़ रुपये का घाटा फूल कर १२५० करोड़ तक पहुँच जाय तो कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि अनुत्पादक मुद्दों पर अधिक खर्च होने के कारण चौथी योजना का अनुमान भी गलत प्रमाणित हुआ था। पिछले वर्ष घाटा केवल ८५ करोड़ आंका गया था, पर वह फूल कर ८५०

करोड़ हो गया। अतः मुद्राविस्तार गत आठ माह के ९.६ प्रतिशत की दर से होने वाले मुद्राविस्तार से अधिक होने की पूरी सम्भावना है। इधर दो वर्षों से औद्योगिक उत्पादन वृद्धि और आर्थिक विकास की दर शून्य की ओर अग्रसर होते देख कर विकास व्यय अधिक बढ़ने की सम्भावना नहीं है। अतः करोड़ों बेकारों को इस बजट द्वारा कुछ भी राहत का कोई संकेत नहीं मिलता। आज करोड़ों बेरोजगारों की संख्या में १०,००० व्यक्ति प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। इस पूरी परिस्थिति को दृष्टि में रख कर सोचने पर आंखों के सामने और भी भयानक चित्र उपस्थित होता है।

अब हमें थोड़ा सा ध्यान बजट पूर्व वित्तमंत्रालय के आर्थिक सर्वेक्षण पर डालना चाहिए। आर्थिक सर्वे में स्वीकार किया गया है कि आगामी वर्ष आर्थिक प्रगति और मूल्यों की स्थिरता की दृष्टि से बहुत ही कठिनाई का वर्ष होगा। इसमें स्पष्ट स्वीकारोक्ति है कि सरकार द्वारा आर्थिक कठिनाई दूर करने के लिए उठाए गए प्रत्येक कदम असफल सिद्ध हुए हैं। इसमें यह भी स्वीकार किया गया है कि यद्यपि अन्न उत्पादन १९७३ में १९७२ की अपेक्षा अधिक हुआ था परन्तु इसका प्रभाव खाद्य पदार्थों के मूल्यों पर तनिक भी नहीं हुआ। अतः सरकार के हरित क्रान्ति का दावा खोखला सिद्ध हो गया है।

उपरोक्त तथ्यों से यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यह सरकार मात्र अधिक उत्पादन की बात करती है परन्तु नियन्त्रण निहित स्वार्थ वालों के हाथ में छोड़ देती है। सरकार द्वारा अन्न के थोक व्यापार के अधिग्रहण को छोड़ देना नियत मूल्य पर उत्पादकों से वसूली करके वितरण की नियन्त्रण प्रणाली द्वारा जमाखोरी और मुनाफाखोरी न समाप्त करने का प्रबल प्रमाण है। परन्तु जब तक जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से सम्बन्धित सभी वस्तुओं का व्यापार सरकार पूर्ण रूप से अपने हाथ में नहीं लेती और मूल्यों को सम्पूर्ण जनता के क्रय शक्ति के अन्तर्गत नहीं लाती तब तक बड़े-बड़े उत्पादक बाजार में आने वाली सभी वस्तुओं पर अपना नियन्त्रण कायम रखेंगे। और ऐसा नहीं करने से देश के लिये सर्वांगीण योजनाएं बनाना भी असम्भव है।

सर्वेक्षण ने इस्पात, खाद, बिजली तथा ऊर्जा सम्बन्धी संसाधनों के असंतोषजनक उत्पादन सम्बन्धी समस्याओं की तरफ भी ध्यान आकर्षित किया है। सर्वेक्षण के अनुसार इस वर्ष इन अनिवार्य मूलभूत वस्तुओं का उत्पादन बहुत ही कम होगा। आज देश उर्जा की कमी की विकट समस्या से ग्रस्त है। अतः देश के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि इस्पात, बिजली तथा कोयले के उत्पादन वृद्धि के मार्ग में आने वाली बाधाओं को सबसे पहले दूर करें। यह तभी सम्भव है जब इस क्षेत्र में अधिक से अधिक विनियोग हो। सिंचाई के क्षेत्र में भी अधिक विनियोग की आवश्यकता है। यह सब मुद्राविस्तार और घाटे की अर्थव्यवस्था की भयंकर समस्या को दृष्टि में रख कर ही करना होगा।

इस सर्वेक्षण की अत्यन्त महत्वपूर्ण स्वीकारोक्ति है कि भारत जैसे गरीब देश में औद्योगिक उत्पादन क्षमता का आंशिक उपयोग देश के सामाजिक तथा आर्थिक विकास के लक्ष्यों को पूरा करने में अत्यन्त बाधक है। यह बात पूंजीवादी आर्थिक विकास की मूलभूत समस्या है। आज सभी पूंजीवादी राष्ट्र इस समस्या के भयंकर शिकार हैं। पूंजीवादी आर्थिक प्रणाली के अन्तर्गत अत्यधिक उत्पादन (जो विशाल जनसमुदाय की आवश्यकता की तुलना में बहुत कम है) अर्थात् भावी क्षमता विस्तार की सम्भावना कम क्योंकि पहले ही निर्धारित क्षमता से कम उत्पादन हो रहा है, ले-आफ, मजदूर-कर्मचारियों की छटनी, ताला बन्दी तथा मिलों एवं फैक्ट्रियों को बिल्कुल बन्द कर देना आम बात है। परिणाम स्वरूप इस पूंजीवादी उत्पादन सम्बन्ध से बेरोजगारी बढ़ कर दिन प्रति दिन भयंकर रूप धारण करती जा रही है। अतः जब तक यह पूंजीवादी उत्पादन सम्बन्ध कायम है तब तक बेरोजगारी एवं मंहगाई जैसी भयंकर समस्या से मुक्ति प्राप्त करना असम्भव है।

आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार चालू वर्ष में घाटे की अर्थ व्यवस्था एक वास्तविकता है क्योंकि सरकार द्वारा अनुत्पादक तथा गैर विकास योजनाओं पर अत्यधिक खर्च, रेलवे की शोचनीय आर्थिक स्थिति, राजस्व प्राप्ति में निराशाजनक गिरावट, खाद्य पदार्थों की कमी के कारण होने वाले खर्च एवं वेतन आयोग की सिफारिशों को लागू करने में होने वाले खर्चों से घाटे की अर्थव्यवस्था को अत्यधिक बल मिलेगा। वस्तुएं मंहगी हो जायेंगी। आज भाव ३० प्रतिशत प्रतिवर्ष की रफ्तार से बढ़ रहे हैं और हर चीजें दुर्लभ होती जा रही हैं। सर्वे के अनुसार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों में अब अधिक वृद्धि की कोई सम्भावना नहीं है। अतः पूंजी एकत्र करने के दूसरे अतिरिक्त स्रोतों को ढूढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। सार्वजनिक संस्थानों द्वारा ऐसी बहुत सी-वस्तुओं का उपयोग किया जाता है, जिन पर राज्यकर और चुंगी लगता है। इसलिए सरकार द्वारा भी चुंगी तथा राज्यकर का एक भाग सार्वजनिक संस्थाओं के उपयोग में आने वाली वस्तुओं के कारण देना पड़ता है। अतः सरकार द्वारा प्राप्त राजस्व पूंजी के अतिरिक्त स्रोतों का सही माप दण्ड नहीं है।

इस आर्थिक सर्वे में एक बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य जिस पर ध्यान नहीं दिया गया, यह है कि सार्वजनिक और निजी संस्थानों द्वारा प्रयुक्त वस्तुओं पर जो राज्यकर एवं चुंगी के रूप में अतिरिक्त भार पड़ता है, उसका परिणाम इनके द्वारा उत्पादित उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि होना है। जनता की क्रयशक्ति उनकी आमदनी न बढ़ने के कारण वैसे ही निम्न स्तर की है, ऐसी स्थिति में उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्य बढ़ने से उनकी स्थिति अत्यन्त दयनीय हो जाती है। अतः देश में दिन

प्रति दिन बढ़ती भयंकर बेरोजगारी, जनसंख्या के विशाल तबके की अत्यधिक गरीबी और जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से सम्बन्धित वस्तुओं के आकाश छूने वाले मूल्य ने समाज के विशाल जनसमुदाय की क्रय शक्ति इतनी घटा दी है कि देश में आन्तरिक बाजार खत्म होता जा रहा है। चूंकि विकसित औद्योगिक क्षमता वाले देशों के तीव्र प्रतिस्पर्धा के कारण विदेश के बाजार में देशीय मालों का विक्रय होना सम्भव नहीं है, अतः जब तक देश का आन्तरिक बाज़ार विकसित नहीं होगा विकासशील देश और अविकसित देशों का कल्याण होना असम्भव है। यह तभी सम्भव है जब अधिकांश जनता की क्रय शक्ति बढ़े और इसके लिए अत्यधिक मुनाफे पर आधारित पूंजीवादी उत्पादन सम्बन्धों को खत्म करना बहुत ही जरूरी है।

आज १९६०-६१ की अपेक्षा राष्ट्रीय आमदनी १५० अरब रु० से बढ़कर ३३० रु० अरब हो गई है अर्थात् दुगुनी। परन्तु इस बीच जीवनोपयोगी वस्तुओं के मूल्य दो गुने से ज्यादा बढ़ गए। इस तरह हम देखते हैं कि वास्तविक आमदनी यदि घटी नहीं तो बढ़ी भी नहीं है। लेकिन इस बीच जनसंख्या में १२ करोड़ की वृद्धि भी हुई है। दूसरी तरफ मोटर गाड़ियां, टेलीफोन, टेलीविजन, रेफ्रीजिरेटर, एयरकण्डीशनर और विलासिता की बहुसंख्यक वस्तुओं को खरीदने की क्षमता रखने वालों की संख्या भी बढ़ी है। अतः विलासितापूर्ण वस्तुओं का उत्पादन भी बढ़ा है। जब वास्तविक आय बढ़ी नहीं तो विलासिता के उपभोग के साधन कहां से आये। कुछ तो विदेशों से मिले क्योंकि आज भारत पर विदेशों का एक खरब के लगभग विदेशी कर्ज है। परन्तु इसका अधिक हिस्सा उन लोगों के पास से आया जिनकी आमदनी मात्र जीवित रहने के लिए पर्याप्त नहीं है। १९४७ में भारत का ब्रिटेन पर १६ अरब रुपये का कर्ज था। आज भारत खुद विदेशी कर्जों के बोझ से दबा हुआ है। चूंकि इस पूंजीवादी राष्ट्र में राष्ट्रीय आमदनी का एक तिहाई हिस्सा इस देश के ६०-७० लाख सम्पन्न वर्ग हड़प जाते हैं। एक तिहाई के करीब केन्द्रीय तथा राज्यस्तर के कर्मचारी हड़प जाते हैं। अतः एक तिहाई हिस्से में इस देश के विशाल जन समुदाय को जीवन यापन करना पड़ता है। चूंकि पिछले दो वर्षों से औद्योगिक उत्पादन और आर्थिक विकास शून्य की ओर अग्रसर है, अतः वर्तमान आर्थिक ढांचे में अमीर का अधिक अमीर होना और गरीब का अधिक गरीब होना लाजमी है। मध्यम वर्ग भी इन दो पाटों के बीच में बेहद परेशान है और अपनी क्रय क्षमता खोता जा रहा है। इस पूरी परिस्थिति को दृष्टि में रखकर सोचने पर देश के "आन्तरिक मार्केट" की स्थिति की भयानकता एवं अधिकांश जनता की गिरती क्रय शक्ति का विशेष पता चलता है।

चौथी योजना का प्रथम वर्ष—अब इस पृष्ठ भूमि में योजना के प्रथम वर्ष पर भी दृष्टिपात करना अत्यन्त आवश्यक है। पांचवी योजना में ३७२५० करोड़ रुपये सार्वजनिक क्षेत्र के लिए रक्खा गया है। इस क्षेत्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि योजना के प्रथम वर्ष में कम से कम ५२०० करोड़ रु० अर्थात् १४ प्रतिशत व्यय किया जाय तभी हम हर साल १०००–१२०० करोड़ की वृद्धि करते हुए योजना के अन्तिम वर्ष में १०,००० करोड़ रुपये का विनियोग कर पायेंगे। इस सम्बन्ध में राष्ट्रीय विकास परिषद् के अध्यक्ष का हवाला देते हुए प्रो. मिन्हास ने कहा कि योजना की सफलता के लिए परमावश्यक है कि प्रथम दो वर्षों में विनियोग की रफ्तार बढ़ायी जाए। उन्होंने कहा कि वर्तमान बजट में अगले साल की योजना के लिए ४७०० करोड़ की जो राशि निर्धारित की गई है, उसका १९७२-७३ की कीमतों पर वास्तविक मोल २९०० करोड़ रुपये का है, जो पिछले साल की ३९०० करोड़ रुपये की योजना से १००० करोड़ रुपये कम है।

हम किस दिशा में जा रहे हैं? चालू वर्ष में कीमतें ३० प्रतिशत की दर से बढ़ी हैं। वास्तविक साधनों में आयी इस कमी से हम योजना के लक्ष्यों को कैसे प्राप्त कर सकते हैं? पहले वर्ष में २९०० करोड़ रुपये की योजना बनाकर ३७२५० करोड़ रुपये का विनियोग लक्ष्य कैसे पूरा किया जा सकेगा? चौथी योजना के दौरान चालू खाते की बचत १६२५ करोड़ रुपये आंकी गई थी, जो अब सिकुड़ कर २३६ करोड़ रुपये रह गई है। पांचवीं योजना के लिए यह राशि ५६१२ करोड़ रुपये निर्धारित की गई है। चूंकि उपयुक्त वित्तीय अनुशासन और कीमतों की स्थिरता वर्तमान व्यवस्था में असम्भव है अतः इसका भी वही हाल होगा जो चौथी योजना का हुआ था।

विदेशी सहायता—प्रो. मिन्हास ने १९७४-७५ के लिए विदेशी व्यापार के ३७८ करोड़ रुपये के घाटे को अल्प अनुमानित बताया। उन्होंने बताया कि आयात किए जाने वाले माल की कीमतों में आशातीत वृद्धि हुई है। बढ़ी हुई कीमतों को ध्यान में रखा जाए तो विदेशी व्यापार का घाटा कम से कम ५२० करोड़ रुपये का होगा। इसके अलावा हमें लगभग ५८० करोड़ रुपये विदेशी मुद्रा में भुगतान व उस पर ब्याज के लिए जुटाने पड़ेंगे। हम ये एक हजार करोड़ रुपये कहाँ से लायेंगे? यदि इतनी सहायता उपलब्ध हो भी तो क्या योजना काल के अन्त तक शून्य विदेशी सहायता के लक्ष्य से इसकी संगति बैठेगी? अतः विदेशी सहायता पर देश को अधिक से अधिक आश्रित होना पड़ेगा।

प्रो० मिन्हास ने ५.५ प्रतिशत की वार्षिक राष्ट्रीय आय वृद्धि दर को कल्पना की एक अतिरंजित उड़ान बताया। उन्होंने कहा कि इसके लिए ६१००० करोड़ रुपये का विनियोग करना पड़ेगा। यद्यपि इतनी बड़ी राशि भारत जैसे देश के लिए कोई बड़ी बात नहीं है। क्योंकि यहां काला धन ही १०,००० करोड़ रुपये से ऊपर है। अधिकतम आय की सीमा निर्धारित कर तथा अनुत्पादक और गैर विकास योजनाओं के व्यय को रोक कर २ खरब से ज्यादा की और राशि आसानी से जुटायी जा सकती है। परन्तु इसके लिए दृढ़ राजनैतिक इच्छा शक्ति और कठोर कदम उठाने की जरूरत होगी। यह काम वर्तमान पूंजीवादी सरकार नहीं करेगी क्योंकि इससे उसके निहित स्वार्थों पर घनी चोट लगेगी। यह काम पूंजीवादी उत्पादन सम्बन्धों को बदल कर समाजवादी क्रांति द्वारा ही सम्भव हो सकता है। ★ (पृष्ठ ९९ भी देखें।) —गिरजेश्वर

"शिक्षाप्रणाली दोषी है—युवा वर्ग नहीं"

कुमारी प्रमोद अंचल, बी०ए० बी०एड० भिवानी

आज मेरे देश का शिक्षित युवा वर्ग—

क्यों हाथों में जलती हुई मशालें लेकर शिक्षा संस्थाओं तक को जलाने चलता है ?

क्यों दीक्षान्त समारोह में ही प्राप्त की गई डिग्रियां फाड़कर फेंकता है ?

क्यों उत्पादन के लिये मिलों में मशीनों पर और खेतों में हलों पर कार्य करने जाना नहीं चाहता ?

क्यों ईमानदारी, सच्चाई, शराफत, एवं इन्सानियत की बातें छोड़कर झूठ, फरेब, धोखे, बेईमानी एवं हैवानियत की बातें करता है ?

क्यों आलस्य भरी विलासिता एवम् ऐशो-आराम की जिन्दगी पसन्द करता है ?

आज अगर उपर्युक्त सभी बातों पर मूलरूप से ध्यान दिया जाये तो एकमात्र दोष मेरे देश की मलीन, दूषित एवं प्रदूषित शिक्षा प्रणाली का ही है—

—मगर कैसे ?

जब धार्मिक संस्थाओं से भी पवित्र शिक्षा संस्थाओं पर मेरे देश का युवा वर्ग पत्थर फेंकता है, तोड़ना और आग लगाकर जला देना चाहता है तो क्यों ? यदि किसी भी शिक्षा संस्था के भवन का निर्माण ही उसे शिक्षा संस्था के ढग से हुआ नहीं जंचता तो उस भवन को किसी भी दूकान, निवास स्थान, होटल या रैस्टोरैन्ट आदि के लिये प्रयुक्त करने को कहा जा सकता है। भौतिक क्षति करना तो उचित नहीं। परन्तु कारण ये नहीं। शिक्षा संस्थाओं के साम्प्रदायिक नाम अर्थात् जाट, वैश्य, ब्राह्मण आदि नामों पर चल रही शिक्षा संस्थाओं में अन्य जाति के नवयुवकों के साथ तो उचित व्यवहार किया ही नहीं जाता, यहां तक कि ये कहना भी अनुचित नहीं है कि चन्द पूंजीपतियों के हाथों से चल रही सरकार की राजकीय शिक्षा संस्थाएं भी साम्प्रदायिक ही बनी हुई हैं क्योंकि सरकार भी चन्द दौलत के मारे राजनैतिक महन्तों की ही एक साम्प्रदायिक जाति का नाम है। इसी साम्प्रदायिकता के कारण भी आज का युवा वर्ग इन शिक्षा संस्थाओं को तबाह करना चाहता है, परन्तु यदि शिक्षा संस्थाओं के नाम देश के शहीदों के नामों पर रक्खे जायें या जिन शिक्षा संस्थाओं के नाम अपने देश के शहीदों के नामों पर रक्खे भी गये हैं, उनकी तरफ जलती हुई मशाल लेकर आग लगाने जा रहे युवा वर्ग के हृदय में उस शिक्षा के नाम से ही एक तूफान उठ खड़ा नहीं होता, मशाल हाथों से छूट नहीं जाती और वह उसी शिक्षा संस्था से इस प्रकार जा कर लिपट नहीं जाता जैसे कि एक रोता हुआ बच्चा अपनी मां के सीने से जा लिपटता है। उसका हृदय कह नहीं उठता कि यह किसी साम्प्रदायिक जाति का नहीं—मेरे देश के शहीद के नाम पर आधारित संस्था है। मगर ऐसा भी नहीं होता क्योंकि शिक्षा संस्थाओं में पढ़ाई जाने वाली शिक्षा अपनी संस्कृति एवम् सभ्यता के बिलकुल प्रतिकूल है। ऐसी शिक्षा जिसे पाकर मेरे देश का युवावर्ग उसी शिक्षा संस्था को तबाह-ओ-बर्बाद करना चाहता है जिसमें वह यह शिक्षा प्राप्त करता है, इसमें दोष उस युवावर्ग का नहीं बल्कि उस शिक्षा का जो उसने प्राप्त की है और जो उसे सामाजिक अपनत्व की भावना नहीं बल्कि व्यक्तिगत अपनत्व की भावना की बात सिखाती है और उसका दृष्टिकोण होता है कि मेरा अपना क्या जायेगा ? क्षति तो अमुक साम्प्रदायिक सस्था की ही होगी। इस दृष्टिकोण से वह सामाजिक क्षति होने की नहीं सोचता बल्कि उसका क्षेत्र व्यक्तिगत हो जाता है— भावना क्रियात्मक नहीं, विनाशात्मक हो जाती है। राष्ट्रवादी एवं देश भक्ति की भावना भरने वाली शिक्षा ही आज मेरे देश के युवावर्ग को नहीं मिलती।

दीक्षान्त समारोहों में युवावर्ग डिग्रियां फाड़कर फेंकते हुये चिलाता है, "हमें डिग्रियां नहीं, नौकरियां चाहियें" लेकिन क्यों ? क्योंकि मेरे देश की शिक्षा उन्हें किसी भी पद के योग्य तो नहीं बना पाती है। अच्छे से अच्छे अंकों में सफलता प्राप्त करने वाले नवयुवकों के, भूखे पेट, फटे हुए वस्त्रों और टूटे हुये जूतों में, सड़कों पर नौकरी के लिये घूमते हुए पैर टूट जाते है, कार्यालयों के दरवाजे खटखटाते हुए हाथ घायल हो जाते हैं परन्तु योग्यता और आवश्यकता होने पर भी नौकरी उपलब्ध नहीं हो पाती जबकि निजी अट्टालिकाओं से ही हजारों रुपये किराया कमाने वाला, बड़े-बड़े मिलों व फैक्ट्रियों से लाखों की आमदनी प्राप्त करने वाला, कई एकड़ भूमि का निजी स्वामित्व रखने पर भी अयोग्य और अनावश्यक होते हुए अच्छे से अच्छे पद की नौकरी पर आसीन हो जाता है। और बराबर शिक्षा पाने वाले भिन्न भिन्न नवयुवकों में से रिश्वत एवम

सिफारिश के दौर से कोई एक तो बहुत ही ऊँचे पद पर पहुँच जाता है तो एक उम्र भर दर-दरकी ठोकरें ही खाता रहता हैं। यदि किसी ऐसी नौकरी पर पहुंच भी जाता है कि जो उसकी योग्यता से निम्न स्तर की होती है तो वह अपनी योग्यतानुसार नौकरी न मिलने के कारण उस पद पर असन्तुष्ट ही रहता है। वैसे भी शिक्षा संस्था से डिग्रियां पाने के बाद मेरे देश का नवयुवक बता ही नहीं सकता कि शिक्षा संस्था ने उसे क्या बनाया है ? नौकरी पाने के बाद ही वह बता पाता है कि वह क्या बना है ? तो शिक्षा उसे क्या बनाती है ?–शिक्षा तो कुछ नहीं बना पाती। बनाने वाली शिक्षा का नाम है–रिश्वत या सिफारिश–इसी की दौड़ से तो योग्यता बनती है।

मेरे देश के युवावर्ग को ये शिक्षा किसी भी स्तर पर शारीरिक परिश्रम करना नहीं सिखा पाती। आज यदि देश का शिक्षित युवावर्ग अन्य देशों के युवावर्ग की तरह उत्पादन के लिये मिलों एवम खेतों में हलों पर करने लगे तो मिलों एवम खेतों की दुर्दशा भी ये नहीं हो। परन्तु देश की शिक्षा प्रणाली युवावर्ग में शारीरिक परिश्रम से उत्पादन करने की भावना भरने के बजाय किसी बड़े से कार्यालय में पंखे के नीचे लम्बी चौड़ी फाईलों, कलम दानों एवम् टेलीफोन से सुसज्जित मेज के सामने ऊँची सी कुर्सी पर विराज कर नौकरों पर आदेश चलाने की भावना से प्रेरित करती है– आलस्य भरती है–परिश्रम एवम श्रम करना नहीं सिखा पाती। इसी कारण आज मेरे देश का युवा वर्ग श्रम से घबरा कर दूर भागना चाहता है और उत्पादन की बजाय केवल उपभोक्ता बनकर ही विलासिता एवम ऐशो-आराम का जीवन बिताना चाहता है।

इस शिक्षा से मेरे देश के युवा वर्ग का उद्देश्य सिर्फ परीक्षायें पास करके डिग्रियां एकत्रित करना ही बना रहता है। जो कुछ भी वह पढ़ता है केवल परीक्षायें पास करने के ही उद्देश्य से पढ़ी हुई बातों को अपने जीवन में प्रयुक्त करना उसका उद्देश्य नहीं बन पाता। उदाहरणार्थ–मैट्रिक का छात्र "सदा सत्य बोलो" की अंग्रेजी "Always speak the truth" सिर्फ इसी उद्देश्य से याद करता है कि परीक्षा में दो अंक प्राप्त कर ले और परीक्षा पास करने के बाद वह भूल जाता है कि उसे सत्य भी बोलना है। वैसे चरित्र निर्माण एवम आत्मिक बल के लिये तो इस शिक्षा प्रणाली में कोई स्थान है ही नहीं फिर भी यदि कभी कोई अध्यापक कक्षा में सच्चाई एवम ईमानदारी को वास्तविकता पर एक अच्छा खासा लम्बा चौड़ा भाषण दे चुकने के बाद अंकगणित का एक प्रश्न छात्रों को सिखाता है "एक बेईमान दुकानदार एक किलो ग्राम के तोल के स्थान पर ९०० ग्राम का तोल प्रयुक्त करता हो तो ज्ञात करो उसे क्या प्रतिशत लाभ होगा।" या "दस किलो ग्राम दूध में दो किलो ग्राम पानी मिलाकर उसी भाव से बेचने पर एक बेईमान दूकानदार को क्या लाभ हो सकता है ?" तो उन मासूम छात्रों के नाजुक मस्तिष्कों में एक तूफान उठता है कि अध्यापक महोदय तो कह रहे थे कि सच्चाई एवम् ईमानदारी तो बहुत ही अच्छी बात है परन्तु यहां तो अंकगणित के प्रश्नों में लाभ होता है—झूठ और बेईमानी से। अतः वे सच्चाई एवम् ईमानदारी को हानिकारक मान कर झूठ तथा बेईमानी को ही लाभकारी समझते हुये इसी की तरफ आकर्षित होते जाते हैं और यह शिक्षा उन मासूम एवम् नाजुक मस्तिष्कों में ऐसे-ऐसे अनेकों तूफान दिन प्रतिदिन उठाती हुई उन्हें गुमराह करके गलत रास्तों पर चलाती रहती है।

इसी कारण यह कहना पड़ता है कि आज मेरे देश की शिक्षा प्रणाली युवावर्ग को शिक्षित नहीं और भी अधिक अशिक्षित बना रही है। लार्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली को जो उसके उपनिवेश के सुरक्षा और विकास से सम्बंधित थी, स्वतंत्रता के बाद अपना कर भारत की कांग्रेसी सरकार ने यह स्पष्ट कर दिया कि लोकतांत्रिक समाजवादी राष्ट्र की स्थापना उसका ध्येय नहीं क्योंकि वह जिस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है, उस वर्ग का हित देश में पूंजीवाद के विकास से है। अतः सरकार ने अंग्रेजों से विरासत में प्राप्त शिक्षा प्रणाली को ही प्रश्रय दिया। इस शिक्षा प्रणाली से उसे गुलाम मनोवृत्ति के सेवक मिल जाते हैं जो उसके पूंजीवादी ढाँचे के सुरक्षा और विकास में योगदान देते हैं। परन्तु आज इस दूषित शिक्षा प्रणाली द्वारा पूंजीवादियों ने देश को अत्यन्त भयंकर आर्थिक संकट में पहुंचा दिया है। इस आर्थिक संकट से निकलने के लिए अब देश के सामने समाजवादी क्रान्ति ही एक मात्र विकल्प है क्योंकि वर्तमान उत्पादन सम्बन्धों के आधार पर देश की समस्या का समाधान असम्भव है। अत. अधिक से अधिक मुनाफा कमाने वाली पूंजीवादी मनोवृत्ति देश के विपुल प्राकृतिक सम्पदा तथा अत्यधिक श्रम के स्रोतों के उपयोग में पूर्णतया असमर्थ है। आज समाजवादी उत्पादन सम्बन्धों के द्वारा ही देश का आर्थिक, नैतिक और सांस्कृतिक विकास सम्भव है।

अतः आज मेरे देश की मलीन, दूषित एवं प्रदूषित शिक्षा प्रणाली का आमूल–चूल परिवर्तन करना अत्यन्त आवश्यक है। आज ऐसी शिक्षा प्रणाली

(शेषांश पृष्ठ १४ पर)

ज्ञान और भाषा की उत्पत्ति

स्व० पं० रघुनन्दन शर्मा

भाषा विज्ञान का सिद्धांत

क्या नृत्य करते समय नर्तक अपने गीत का जो अर्थभाग इशारों से करता है, वह जंगली है? हम और आप कभी काम पड़ने पर 'उँगली अक्षर, चुटकी मात्रा' के सिद्धान्त से जो इशारा करते हैं तो क्या हमको आपको बोलना नहीं आता? जब हर प्रकार से यह सिद्ध हो रहा है कि बोलने की शक्ति रखते हुए भी इशारा करना बहुत ऊँचे ज्ञान का फल है, तब कैसे कहा जाता है कि आदिम मनुष्य ज्ञान में पशुतुल्य थे और इशारे से ही मनोभाव व्यक्त करने की योग्यता रखते थे? हम तो देख रहे हैं कि इशारे से बातचीत करना भाषाज्ञान से भी अधिक सूक्ष्म और उच्च है।

गूंगे मनुष्य जो इशारे से बातचीत करके अपना मतलब समझा देते हैं, वह इसलिए कि उनको अन्य ज्ञानवालों से उस तरह के इशारे से बातचीत करने की शिक्षा मिलती है। इशारे से समझना और समझाना सहज नहीं है। यह काम अधिक चतुर पुरुषों का है। गाने वाले जो अर्थभाव बताने की भी विद्या जानते हैं, कितने परिश्रम के बाद बताना सीख पाते हैं और वह उनका भाव समझने वाले भी चतुर ही होते हैं। यह सब पर विदित है कि इशारे से समझना और समझाना बहुत बड़ी बुद्धिमानी में दाखिल है। प्रायः लोग कहा करते हैं कि तुम्हारी यह इशारेबाजी हम समझते हैं। इशारे के पहले बुद्धि का पूर्ण विकास होने पर ही इशारे के अर्थ नियत हो सकते हैं, पर आफत तो यह है कि बिना भाषा के बुद्धि का पूर्ण विकास हो ही नहीं सकता। हम देखते हैं कि जितनी जल्दी, जितनी आसानी से और जितनी गूढ़ शिक्षा सर्वसाधारण लड़कों को दी जाती है, उतनी जल्दी, उतनी आसानी से और उतनी गूढ़ शिक्षा गूंगों के स्कूलों में गूंगे बच्चों को नहीं दी जा सकती। सूक्ष्म, वैज्ञानिक और दार्शनिक ज्ञान तो उनको कराया ही नहीं जा सकता और न वे गूंगे किसी अन्य को उच्च शिक्षा दे सकते हैं। ऐसी दशा में कैसे कह सकते हैं कि भाषा के पहले बुद्धि का पूर्ण विकास हो सकता है? जब तक भाषा उत्पन्न न हो जाय और उस भाषा के द्वारा बुद्धि का पूर्ण विकास न हो जाय, तब तक इशारे हो ही नही सकते।

वर्णोच्चारण के बाद ही शब्दानुकृति सम्भव

रही यह बात कि 'कूकू' शब्द से 'कुक्कू' और 'काव काव' से 'काक' शब्द बना लिए गये। यह बिल्कुल गलत है। कुक्कू और 'काक' शब्द तो तब बन सकेंगे, जब पहिले 'क' उच्चारण बन चुका हो। जब तक मनुष्य के मुख से वर्ण न निकल चुके हों, तब तक वह 'शब्दानुकृति' कर ही नहीं सकता। अंग्रेजी का कुक्कू शब्द तब बन पाया है जब 'क' का उच्चारण करना आ चुका था। निरुक्तकार का यह कहना नहीं है कि आदिसृष्टि में मनुष्यों ने शब्दानुकृति से उच्चारण सीखा। उनका कहना यही है कि जब वर्णोच्चारण हो जाता है, तब शब्दानुकृति से नाम रक्खे जा सकते हैं। 'कट्ठु, सर्र, गद्द, में, में, में' की कथा बच्चे रोज कहा करते हैं चूहे ने कट्ट से तूंबे को काटा, वह सर्र से चला, गद्द से पीठ पर गिरा और बकरी में में करने लगी। यह सारी कथा शब्दानुकृति के ही आधार पर बनी है, परन्तु क्या इसका यह अर्थ है कि कट्ट सुनने पर हमारे मुंह से 'क' और 'ट' निकले? कभी नहीं। निरुक्त में दोनों प्रकार के मत स्पष्ट रुप से लिखे हुए हैं—

> काक इति शब्दानुकृतिस्तदिदं शकुनिषु बहुलम।
> न शब्दानुकृतिर्विद्यते इत्यौपमन्यवः,
> काको अपकालयितव्यो भवति ॥ (निरुक्त ३।१८)

अर्थात् एक कहता है, 'काक' नाम शब्दानुकृति से रक्खा गया, परन्तु दूसरा औपमन्यु कहता है, कि काक शब्द अपकालयितव्यता-अस्पृश्यता के कारण रक्खा गया है। यहां औपमन्यु उसका धातुज नाम बतलाता है, किन्तु पहिला कहता है कि शब्दानुकृति से भी नाम रक्खा जा सकता है। इस वर्णन से यह नहीं पाया जाता कि आदि में शब्दानुकृति से ही नाम रक्खे गये है। इससे तो यही पाया जाता है कि हमारे पास वर्ण हैं और हम अनुकृति से नाम रख सकते हैं, जैसे खांसना, धमाधम, तड़तड़, चटपट आदि। ये नाम हम रोज मनमानी रीति से शब्दानुकृति को देखकर ही रखते हैं, परन्तु प्रश्न तो यह है कि आदि में मनुष्य ने इन वर्णों का उच्चारण कैसे किया? यदि हो, कि बाहर की ध्वनियों के अनुकरण से किया तो प्रश्न यह है, कि क्या बाहर की ध्वनियां साफ साफ वर्णात्मक हैं? बाहर की ध्वनियां जिनको हम टनटन, धमधम, खटखट, पूं पूं, म्यूं और झनझन आदि कहते हैं, क्या वास्तव में वे उन वर्णों से बनी हुई होती हैं? क्या तोते के मुख से निकलने वाले 'सत्त गुरुदत्त' या 'नबीजी भेजो' आदि वर्ण ठीक ठीक स, त, ग, द, और न, ब, ज ही हैं? क्या सारंगी से निकला हुआ गीत दर असल उन्हीं वर्णों को कह रहा है, जिन वर्णों से वह गीत बना है? कभी नहीं, हर्गिज नहीं। मनुष्य के मुख से निकलने वाले वर्ण, सिवा मनुष्य के मुख के, दूसरे स्थान से निकल नहीं सकते। जब तक मनुष्य के से कण्ठ, तालु, मूर्धा, ओष्ठ, तथा जिह्वा का

प्रयत्न दूसरी जगह न हो तब तक वहां से वे वर्ण स्पष्टतया निकल नहीं सकते। हमारे पास 'ट' और 'न' हैं, इसलिए हम बाहरी टनटन की आवाज को टनटन कहते हैं, पर जिन कौमों में टवर्ग नहीं है वे 'टनटन' न कहकर 'तनतन' कहेंगे। यदि उनमें 'न' की आवाज भी न हो तो न जाने वे 'टनटन' को क्या कहें? हम मुर्गे की आवाज को कुकड़ूं कूं कहते हैं, पर अंग्रेज उसे 'काक ए डूडिल डू' कहते हैं। मालूम हुआ कि मुर्गा के मुंह से स्पष्ट वर्ण नहीं निकलते, अतएव हम जो बाह्य ध्वनियों की नकल करते हैं, उसका कारण बाहर की ध्वनियाँ नहीं, प्रत्युत हमारे पास वर्णों का होना है।

इस बात को और भी अधिक स्पष्ट रीति से समझिये। अंग्रेजों से भ. ख, घ, ढ, त, आदि अक्षर नहीं कहते बनता। अरबी पढ़ने वालों की तरह दूसरों से 'ऐन' और 'हे' का उच्चारण नहीं करते बनता। महाराष्ट्रों का सा 'च' भला कोई बोल तो दे? अग्निमीले पुरोहितं में जो 'ल' अक्षर है, इसको युक्तप्रान्त और बंगाल का रहने वाला बोल तो दे? नहीं बोल सकता। क्योंकि उसने बाल्यावस्था से वे उच्चारण नहीं सुने। जब हम बोलने की शक्ति रखते हुए भी, भिन्न भिन्न वर्णों के उच्चारण नहीं कर सकते, जो बिल्कुल स्पष्ट और मनुष्य के मुखोच्चारण हैं, तब आदि में मनुष्य ने जंगल, पहाड़, पशु और पक्षी आदि की आवाजों से जो बिल्कुल ही अस्पष्ट हैं, वर्णोच्चारण सीख लिया, यह कितने बड़े आश्चर्य की बात है! ग्रन्थकार के सामने यह प्रश्न बड़े जोरसे खड़ा हुआ था। बगैर इस विषय में कुछ कहे उनके लिए आगे बढ़ना कठिन था, इसीलिए दबी जबान आप पृ० २०४ में कहते हैं कि 'अनुकरण कहने से हमारा मतलब किसी प्रकार की ध्वनियों की हूबहू ठीक ठीक नकल से नहीं है। न तो ऐसा हो ही सकता है और न इसकी आवश्यकता ही है। अवर्णात्मक या अव्यक्त शब्द का वर्णात्मक शब्द के द्वारा अनुकरण ठीक ठीक नहीं बन सकता। वर्णात्मक शब्द में अव्यक्त ध्वनि का थोड़ा सा दृश्य ही उसके स्मरण कराने के लिए पर्याप्त होता है। किस ध्वनि के लिए किस प्रकार के वर्णात्मक शब्द को नियत किया जावेगा, यह बहुत कुछ भिन्न व्यक्तियों पर और भिन्न दशाओं पर निर्भर होता है। एक ही ध्वनि भिन्न भिन्न व्यक्तियों को भिन्न भिन्न प्रकार की प्रतीत होती है। इसी कारण एक सी ही ध्वनि के लिए भिन्न-भिन्न भाषाओं में भिन्न-भिन्न प्रकार के अनुकरणात्मक शब्द पाये जाते हैं।

यहां आप 'हूबहू नकल' नहीं बतलाते। आप यह भी स्वीकार करते हैं कि एक ही ध्वनि भिन्न भिन्न व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रतीत होती है। आप कहते हैं कि 'अव्यक्त ध्वनि का थोड़ा सा दृश्य ही स्मरण कराने के लिए पर्याप्त है।' न हूबहू ध्वनि होती है और न वह सबको एक समान सुनाई ही पड़ती है, तब स्मरण किस बात का कराती है? स्मरण तो भूली हुई बात का कराया जाता है। क्या आदिपुरुष कोई भाषा भूल गये थे? भूलेंगे क्या? उन्हें तो अभी नये सिरे से वर्णोच्चारण करना सीखना है, इसलिए यह प्रश्न ज्यों का त्यों उपस्थित है, कि आदि में वर्णोच्चारण की शिक्षा कैसे मिली? बाह्य ध्वनियों के द्वारा वर्णोच्चारण की शिक्षा नहीं मिल सकती। पर हां, अभी एक उत्तर बाकी है। आप मानते हैं कि मनुष्य बिना सुने हुए भी वर्णोच्चारण कर सकता है। पृ० २०० में आप लिखते हैं कि 'हर्ष, शोक, आश्चर्य आदि के भावों के आवेश में कुछ स्वाभाविक ध्वनियां हमारे मुख से निकल जाती हैं जैसे—हा हा, हाय हाय, अहह, वाह-वाह इत्यादि।'

बाह्य ध्वनियों और भावावेश से वर्ण उत्पत्ति असम्भव

पर यह सिद्धान्त भी अशुद्ध है। गूंगे मनुष्य को कभी किसी ने हाय हाय, अहह, हा हा, वाह वाह इत्यादि करते नहीं सुना। आप उनसे 'ह' और 'व' के उच्चारण कराकर सुन सकते हैं। जब आप ही आप उद्गारात्मक 'ह' 'व' आदि वर्ण नहीं निकल सकते, तब फिर प्रश्न होता है कि ये उद्गार मनुष्य के मुख से कैसे निकले? आप पृ० १९४ में कहते हैं कि 'दो दुधमुंहे बच्चे यदि एकान्त में रक्खे जाएँ, तो वे कोई न कोई टूटी फूटी भाषा बना लेंगे।' हम कहते हैं कि इस आरोप में छल भरा हुआ है। दो दुधमुंहे बच्चे यदि अकेले छोड़ दिए जाए तो वे दो दिन भी जी नहीं सकते। यदि किसी की संरक्षता में छोड़े जाए तो वे अपने संरक्षक की भाषा बोलने लगेंगे। यदि ऐसा प्रबन्ध करें कि न तो संरक्षक बोले और न किसी की आवाज वहां पहुंचे तो निश्चय है कि बच्चे कुछ भी न बोल सकेंगे। ऐसा तजुरबा अकबर आदि अनेक राजाओं ने कर लिया है जिसका फल कुछ भी नहीं हुआ। प्रो० मैक्समूलर ने इन घटनाओं को 'सायंस आफ दि लैंग्वेज' नामी पुस्तक में लिख दिया है, अतएव ऊपर कहे हुए दोनों सिद्धान्तों से भाषा की उत्पत्ति सिद्ध नहीं होती। न तो बाह्य ध्वनियों से वर्णनकल किये जा सकते हैं और न अपने उद्गारों से ही वर्णों की उत्पत्ति हो सकती है। तब नहीं ज्ञात होता है कि डाक्टर साहब विकासक्रम से भाषा की उत्पत्ति कैसे सिद्ध करते हैं?

आप इस लचर सिद्धांत पर कैसे भरोसा करते हैं, कि मनुष्य बाहर की ध्वनि की हूबहू नकल तो नहीं कर सकता, पर सुनकर और स्वभाव से वर्णोच्चारण कर सकता है? क्या बोलने के पूर्व उसमें बोलने की शक्ति थी? यदि कहो हाँ, तो कहना चाहिए कि आप यह कहना चाहते हैं, कि मनुष्य के आंख तो थी मगर

देखता नहीं था ! देखता नहीं था, तो आंख के होने का विश्वास आपको कैसे हुआ ? जिस प्रकार यह असम्भव है, उसी तरह यह भी असम्भव है, कि बोलता नहीं था, पर बोलने की शक्ति थी। इस उलझन को न तो डाक्टर साहब सुलझा सकते हैं, न उनकी योरोपीय गुरुमण्डली। डाक्टर साहब ने विकासक्रम से भाषोत्पत्ति की सिद्धि न होते देख, हार मानकर उसमें परमेश्वर को ला जोड़ा है। आप पृ० १८३ में लिखते हैं कि 'इन युक्तियों के आधार पर भाषा का ईश्वरप्रदत्त होना ऊपर के अर्थ में ठीक नहीं हो सकता। हां, एक आशय से भाषा को हम ईश्वर-प्रदत्त कह सकते हैं . भाषा केवल मनुष्यों में ही पाई जाती है। ऐसी कोई मनुष्य जाति नहीं है जो कोई न कोई भाषा न बोलती हो। साथ ही मनुष्य को छोड़ ऐसा कोई और प्राणी नहीं जिसमें भाषा पाई जाती हो, इसीलिए भाषा को हम मनुष्य जाति का एक सार्वभौम और विशेष लक्षण कह सकते हैं। जिस प्रकार मानव समाज की सारी की सारी सभ्यता की सामग्री, सृष्टि के आदि से ही न होने पर भी इस आशय से ईश्वरप्रदत्त कही जा सकती है, कि उसका सम्पादन मनुष्य ने सृष्टि के आरम्भ से ही बीजरूप से ईश्वरप्रदत्त शक्तियों और योग्यताओं के आधार पर किया है। उदाहरणार्थ, लेखनकला या गृहवस्त्रादि निर्माण करने की कलाओं के विषय में यह कोई नहीं कह सकता; कि इनको सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने मनुष्यों को सिखलाया तो भी इनके विकास का सम्भव ईश्वरप्रदत्त शक्तियों के आधार पर ही हो सका। इसी आशय से भाषा को भी हम ईश्वरप्रदत्त कह सकते हैं। यह स्पष्ट है, कि ऐसा मानने से ईश्वर के महत्त्व में कोई अन्तर न आकर वह ज्यों का त्यों बना रहता है।'

डाक्टर साहब ! आप भाषा को ईश्वर के साथ न जोड़िये—ईश्वर की छीछालेदर न कीजिए। अभी थोड़ी ही देर पहिले आप ईश्वर के विषय में पृ० १८५ में कह आये हैं, कि 'इसका उत्तर यही है, कि ईश्वर के सामर्थ्य के नाम पर ही यदि इस बात को सिद्ध किया जावेगा, तब तो संसार में कोई भी बात सिद्ध की जा सकती है। सत्य है ! आप तो बिना ईश्वर की सहायता के ही भाषा की उत्पत्ति सिद्ध करें, तभी आप की खूबी है। जब विकासक्रम में ईश्वर की मान्यता ही नहीं है, तब आप इतना कष्ट क्यों करते हैं ? आप लोग तो गाड़ी रुकने पर ही ईश्वर की मदद लेते हैं।

अभी हाल ही में महाशय गोविन्दप्रसाद द्विवेदी ने "माधुरी" में भाषा उत्पत्ति विषय का एक लेख लिखा है। उसमें भी उन्होंने इसी तरह ईश्वर को ला घसीटा है। वे 'माधुरी' आषाढ़ तु० सं० ३०४, पृ० ७३८ में लिखते हैं कि 'भाषा की उत्पत्ति के विषय में यह सोचना स्वाभाविक है, कि परमात्मा ने ही रचकर हमें भाषा उसी भांति दी है जैसे जलवायु आदि, परन्तु वस्तुतः ऐसा नहीं है। पशुपक्षी शब्दों द्वारा अपने उद्गार प्रकट करते हैं, परन्तु वह भाषा नहीं। भाषाशास्त्र का मत है, कि आरम्भिक अवस्था में मनुष्यों की भाषा संबंधी दशा पशु पक्षियों की सी थी। वे भी अपने विचारों को उद्गारबोधक शब्दों में प्रकट करते होंगे, परन्तु परमात्मा ने मनुष्य को उन्नति करने की बुद्धि प्रदान की है और विभिन्न उच्चारण करने की शक्ति दी है। ये दोनों पशुपक्षियों में नहीं। इन्हीं दोनों के कारण मनुष्य भाषानिर्माण में सफल हुआ है। मनुष्यों ने कण्ठ से ओष्ठपर्यंत अवयवों का उपयोग कर 'अ' से 'म' पर्यन्त शब्दों का उच्चारण किया और इस प्रकार स्वर-व्यंजनों की रचना हुई। साथ ही भाषा का उद्देश्य सुधारने के लिये विवक्षित अर्थों के संकेत स्वरूप कुछ और भी सरल उच्चारण निकाले। ये संकेत आरम्भिक अवस्था में बहुत थोड़े थे, अतः उनका उच्चारण बार बार होता रहा। भाषाशास्त्र के मत में ये संकेत अस्, दा, भू, स्था आदि क्रियाएँ थीं। इसी प्रकार डॉक्टर मङ्गलदेव जी पृ० २ में कहते हैं, कि 'भाषा ही मनुष्यजाति के दूसरे प्राणियों से ऊँचे स्थान का चिन्ह है। यही उसकी सारी उन्नति का मुख्य साधन है। ठीक अर्थों में समाज का संगठन भाषा के बिना असंभव है और सामाजिक संगठन पर ही मनुष्यजाति की सारी उन्नति निर्भर है' आगे पृ० १७३ में आप ही कहते हैं, कि 'सभ्यता की सामग्री का संपादन मनुष्य ने आदिसृष्टि से ही बीजरूप से ईश्वरप्रदत्त शक्तियों और योग्यताओं के आधार पर किया है, इसी आशय से हम भाषा को ईश्वरप्रदत्त कह सकते हैं।'

आदि ज्ञान और आदि भाषा परमात्मा की ओर से

हम पूछते हैं, कि परमेश्वर इस झमेले में क्यों पड़ गया ? समस्त जीव जन्तुओं के विकास के समय तो चुप चाप बैठा रहा, पर मनुष्यजाति ज्यों ही वानर का रूप बदलकर इस रूप में आई, त्यों ही वह उन्नति का पहाड़ लेकर क्यों चढ़ बैठा ? आप लोग कहते हैं, कि ईश्वर को मनुष्य की उन्नति मंजूर है। उन्नति बिना भाषा के हो नहीं सकती, इसीलिए उसने मनुष्य के मुँह में वर्णोच्चारण की शक्ति दी है। जब ये सब बातें ठीक हैं तो साफ साफ कहने में आप लोगों की कौन सी पोजीशन कम हुई जाती है, कि परमेश्वर ने मनुष्य को उसकी उन्नति के लिए भाषा दी है ? संसार का कोई पशु पक्षी अपनी बोली छोड़कर दूसरे की बोली नहीं बोलता। तब मनुष्य ही क्यों प्राकृतिक ध्वनियों अथवा पशुओं की बोली बोलने लगा होगा ?

मैक्समूलर ने ठीक ही कहा है, कि 'मनुष्य की भाषा ध्वनि अथवा पशुओं की बोली से नहीं बनी'। लाक ऐडम स्मिथ और ड्यूगल्ड स्टुअर्ट आदि कहते हैं, कि मनुष्य बहुत काल तक गूँगा रहा। वह संकेत और भ्रूप्रक्षेप से काम चलाता

रहा। जब काम न चला तो भाषा बना ली और परस्पर संवाद करके शब्दों के अर्थ नियत कर लिए।' इसका उत्तर देते हुए प्रो. मैक्समूलर ने लिखा है, कि 'मैं नहीं समझता कि बिना भाषा के उनमें कैसे संवाद जारी रह सका। क्या अर्थ नियत करने के पूर्व संवाद निरर्थक ही चला आता था? अमुक ध्वनि का अमुक अर्थ नियत करना उस समय कैसे सुलभ हो सकता है जिस समय उनके पास कोई भी सार्थक ध्वनि उपस्थित नहीं थी? कैसे एक ने दूसरे से कहा कि रोटी को 'चूं चूं' कहना और समझना चाहिए और कैसे दूसरों ने यह सारा अभिप्राय समझ लिया? बात तो असल यह है कि न बिना ज्ञान के भाषा बन सके और न बिना भाषा के ज्ञान हो सके।। नाम और नामी या रूप और शब्द का घनिष्ट सम्बन्ध हैं। इनमें से एक दूसरे को छोड़कर अकेला रह ही नहीं सकता। ऐसी दशा में यही तथ्य उपलब्ध होता है कि आदिम मनुष्य ज्ञान और भाषा सहित ही पैदा हुए।

पर यही सवाल यहां भी आता है कि जब बिना निमित्त के ज्ञान और भाषा का बोध नहीं होता, तब आदि में, जिसके पूर्व कोई ज्ञान और भाषा थी ही नहीं, उस समय, मनुष्यों में किस निमित्त से ज्ञान और भाषा का आविर्भाव हुआ? इसका उत्तर यही है कि आदिज्ञान और आदिभाषा का अविर्भाव परमात्मा की ओर से हुआ। जिस प्रकार हिपनोटिज्म करने वाला अपने सब्जेक्ट के मुंह से केवल मानसिक प्रेरणा से ऐसी ऐसी भाषाओं के शब्द बोलवा सकता है जिनको सब्जेक्ट ने पहले कभी नहीं सुना, उसी प्रकार सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान परमात्मा ने आदि में मूलपुरुषों के हृदय में ज्ञान और भाषा का प्रकाश किया। आदिसृष्टि में पैदा होनेवाले ईश्वरपुत्र आर्य पूर्ण ज्ञानी आत्मा होते हैं। उनको अपने व्यापकत्व से परमात्मा पूर्ण प्राप्त ज्ञान और भाषा की याद देता है, इसलिए उनमें ज्ञान और भाषा का प्रकाश हो जाता है।

महात्मा सुकरात कहा करते थे, कि 'कोई किसी को नया ज्ञान नहीं सिखलाता, प्रत्युत भूले हुए ज्ञान की याद दिलाता है'। सच है जिनमें कभी कोई ज्ञान था ही नहीं, उसमें ज्ञान का आविर्भाव किया ही नहीं जा सकता। दीवारों और पत्थर की चट्टानों को किसी ने क्यों ज्ञानी नहीं बना दिया? जो प्राणी पहिले कभी ज्ञानी रह चुके हैं, उनको ही ज्ञान दिया जा सकता है, अन्यों को नहीं। इसी सिद्धान्तानुसार परमात्मा ने भी आदिपुरुषों को अपनी व्यापकता और शक्तिमत्ता से ज्ञान और भाषा प्रदान की। कोलरिक कहता है, कि 'भाषा मनुष्य का एक आत्मिक साधन है। इस सूत्र की पुष्टि आर. सी. ट्रीनिच डी. डी. ने अपनी पुस्तक 'स्टडी आफ वर्डस में की है, कि ईश्वर ने मनुष्य को वाणी उसी प्रकार दी है, जिस प्रकार बुद्धि दी है क्योंकि मनुष्य का विचार ही शब्द है, जो बाहर प्रकाशित होता है।' इन सबसे आगे बढ़कर प्रो० मैक्समूलर कहते हैं, कि 'भिन्न भिन्न भाषापरिवारों में जो चार पांच सौ धातु मूलतत्त्वरूप से शेष रह जाती हैं, वे न तो मनोरागव्यञ्जक ध्वनियां ही हैं और न केवल अनुकरणात्मक शब्द ही। हम उनको वर्णात्मक शब्दों का सांचा कह सकते हैं। एक मानसविज्ञानी या तत्त्वज्ञानी उनका कैसा ही व्याख्यान करे, पर भाषा के विद्यार्थी के लिए तो ये धातुएँ अन्तिम तत्त्व ही हैं। प्लेटों के साथ हम यह कह सकते हैं, कि वे स्वभाव से ही विद्यमान हैं। बल्कि इतना हम और जोड़े देते हैं, कि स्वभाव से कहने का हमारा आशय ईश्वर की शक्ति से है। इन सब कोटिक्रमों से स्पष्ट होता है, कि भाषा ईश्वरप्रदत्त है, क्रम क्रम से विकास का फल नहीं। ❊

आर्य राष्ट्र बनाएंगे

जयदेव 'अनल'

शोणित से अपने सींच-सींच कर, गुलशन नया बसाएंगे।
मानवता के उत्थान हेतु हम "आर्य राष्ट्र बनाएंगे।।

देखे हमने सब दिवा स्वप्न और देखा है वह 'राम-राज्य'।
फुटपाथों पर सड़ रहे राम, हम किसे बताएं दशा आज?
भूखी सीता चौराहे पर, हर अङ्ग के दाम लगाती है।
फिर भी क्षुधार्त्त तन की खातिर दो रोटी भी न जुटा पाती है।

मां, बहनों पर ये जुल्म कभी, हम सहन नहीं कर पाएंगे।
निज प्राणों की भी बलि देकर, उनका सम्मान बचाएंगे।।

हम रुधिर पसीने में परिणत कर, धरती की मांग सजाते है।
वे हमें भूख से तड़पा कर, खुद माल लूट का खाते हैं।
हम पेट पर अपने पत्थर रख, जब उनके ढिंग जाते हैं।
वे 'बागी' नाम हमें देकर, हम पर गोली बरसाते हैं।

कर छिन्न-भिन्न तिमिरावस्था, स्वर्णिम प्रभात अब लाएंगे।
शोषण और कुण्ठा को समाप्त कर, पूंजीवाद मिटाएंगे।।

गो-रक्त बह रहा सड़कों पर, घी-दूध के दर्शन है दुर्लभ।
दारु बिकती है सस्ते में, हैं अण्डे-मांस सर्वत्र सुलभ।
है सुरा वैध, गोमांस वैध और वेश्यावृत्ति भी वैध यहां।
हैं दुराचार, व्यभिचार वैध, बाकी सब वस्तु अवैध यहां।

निज हाथों में लेकर कुठार, शोषक-जन को संहारेंगे।
फिर 'वैदिक राज्य' बना, हर घर पर ओ३म्-ध्वजा फहराएंगे।।

आर्य युवक परिषद्, जयपुर

दहेज की वर्तमान कुप्रथा ने लाखों कन्याओं का भविष्य अंधकारमय बना दिया है

ओ३म्प्रकाश त्यागी
सभा मन्त्री एवं सदस्य राज्य सभा

आज भारत में अनेकों सुपठित एवं सुयोग्य कन्याओं का भविष्य अन्धकारमय बना हुआ है क्योंकि उनके माता पिता निर्धन होने के कारण उनके विवाह में दहेज देने में असमर्थ हैं। उनके पास जो कुछ भी पूंजी थी वह उन्होंने उच्चतम शिक्षा दिलाने में लगा दी परन्तु अब उनके विवाह की समस्या ने उनकी सुख शांति तथा नींद को छीन लिया है। स्वयं कन्याऐं भी अपने माता-पिता की दयनीय अवस्था को देख कर दुःखी हैं। नित्य समाचार पत्रों में ऐसी लड़कियों द्वारा की गई आत्महत्या तथा विधर्मियों के साथ भाग जाने की घटनायें प्रकाश में आती रहती है जो वर्तमान सामाजिक कुरीतियों से तंग आकर अपनी आत्मा के विरुद्ध आचरण करने पर विवश हो जाती हैं। यदि आर्य जाति के कर्णधारों ने शीघ्र ही इस सामाजिक कुप्रथा को समाप्त करने का प्रयत्न नहीं किया तो इससे लाखों बहनों का जीवन ही संकट में नहीं पड़ेगा अपितु समूची आर्यजाति की प्रगति व सुरक्षा को बड़ा आघात पहुंचेगा।

विवाह में अपनी कन्या को अपनी सामर्थ्यानुसार वस्त्र भूषण धन आदि देना एक पुनीत कार्य है और प्रत्येक माता पिता को ऐसा करना चाहिये। परन्तु दहेज को विवाह का आधार बनाना किसी भी अवस्था में उचित नहीं कहा जा सकता है। वर्तमान समय में दहेज की प्रथा ने ऐसा उग्र रूप धारण कर लिया है कि विवाह के नाम पर लड़के के माता-पिता अपने लड़के की खुली नीलामी करते हैं और जहां अधिक दहेज मिलता है वहीं सम्बन्ध करते हैं। इस प्रकार निर्धन परिवारों की कन्या सुयोग्य होने पर भी अविवाहित रह जाती हैं और अयोग्य होने पर भी धनी परिवारों की कन्याएं दहेज के बल पर विवाहित हो जाती हैं।

दहेज का प्रदर्शन और भी घातक सिद्ध हो रहा है। यदि दहेज देने या लेने वाले व्यक्ति गुप्त रूप से उसे लेकर अपनी समाज घातक मनोवृत्ति की तृप्ति कर लें तो भी इसके कुप्रभाव से निर्धन परिवारों को बचाया नहीं जा सकता है परन्तु धनी परिवार जानबूझ कर दहेज का प्रदर्शन करते हैं और इससे निर्धन परिवारों के समक्ष एक समस्या उत्पन्न हो जाती है अर्थात् उनकी कन्याओं का भविष्य अन्धकारमय हो जाता है।

दहेज की कुप्रथा की बुराई को अनुभव करते हुए सरकार ने जनता की आंखों में धूल झोंकने के लिए एक कानून बनाया है जिसके अनुसार दहेज लेने व देने वाले को दण्डनीय माना गया है परन्तु उसे इस रूप में बनाया गया है कि आज तक एक भी व्यक्ति उस कानून के अन्तर्गत पकड़ा नहीं गया है जब कि दहेज की कुप्रथा दिन व दिन वृद्धि पर है। जबतक सरकार दहेज प्रथा को अपराध मान कर अपनी ओर से स्वयं अन्य अपराधों की भांति दोषियों को दण्डित नहीं करती तब तक इस प्रथा की समाप्ति असम्भव है।

दहेज की कुप्रथा कानून से नहीं अपितु देशभक्त नवयुवक व नवयुवतियों द्वारा ही समाप्त की जा सकती है। जब तक देश की नवयुवक शक्ति इस कुप्रथा के विरुद्ध विद्रोह नहीं करेगी अर्थात् बिना दहेज लिये विवाह की प्रतीज्ञा नहीं करेगी तब तक धन के लोभी माता-पिता इसका परित्याग न कर सकेंगे। और लड़कों के विक्री का व्यापार बराबर चलता रहेगा।

अत: देश भक्त नवयुवक और नवयुवतियों से प्रार्थना है कि वह जहां गुजरात विहार आदि प्रान्तों में भ्रष्टाचार, घूसखोरी आदि बुराइयों के विरुद्ध अपनी जागरूकता प्रगट कर रहे हैं वहां उन्हें इस दिशा में भी अपना कदम उठाना चाहिए क्यों कि भ्रष्टाचार के द्वारा तो केवल मंहगाई आदि की वृद्धि होती है और धन का अपहरण होता है परन्तु दहेज कुप्रथा के द्वारा तो लाखों बहनों का जीवन ही संकट में पड़ जाता है।

आशा है राष्ट्र भक्त युवा शक्ति अपने कर्त्तव्य का पालन करेगी तथा जो नवयुवक और नवयुवतियां दहेज कुप्रथा के विरुद्ध आन्दोलन में भाग लेना चाहते हैं, अर्थात् दहेज को छोड़ कर विवाह करने के इच्छुक हों वह अपना नाम, पता, शिक्षा, योग्यता आदि का विवरण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१ के पते पर शीघ्र भेज दें ताकि सभा उन्हें इस पुनीत, कार्य में अपना सहयोग प्रदान कर सके।

स्वामी इन्द्रवेश जी की गिरफ्तारी लोकतंत्र पर प्रहार

स्वतन्त्रता के २६ वर्ष उपरान्त देश में जहां लोकतंत्र की जड़े मजबूत होनी चाहिए, वहां देश में लोकतांत्रिक मूल्यों का अवमूल्यन किसी के लिए भी अत्यन्त लज्जास्पद है। अब तक लोकतंत्र न तो वक्तव्य की स्वतंत्रता में परिलक्षित हुआ है और न तो प्रेस की स्वतंत्रता में ही। नागरिक अधिकारों की सुरक्षा आज अत्यन्त उपहास्यास्पद स्थिति में पहुंच गयी है। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की गारण्टी आज इस सरकार के लिए अमानवीय-कृत्य बन गयी है। संगठन कायम कर आर्थिक एवं सामाजिक विषमता मिटा कर शोषण मुक्त समाज की स्थापना की बात करने वाला आज अपराधी के कटघरे में खड़ा किया जा रहा है। मानव जीवन की प्रारंभिक और बुनियादी मूल्यों की स्थापना से मुकर जाने के कारण आज सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का लोप हो गया हैं। यही कारण है कि जहां बालिग मताधिकार कम से कम सिद्धांन्त रूप में देश के सभी नागरिकों के बीच एक बुनियादी मामले में पूर्ण समता को प्रतिष्ठित करता है वहीं आर्थिक-सामाजिक विषमता इतनी है कि वह इस समता पर हावी हो कर नागरिकों के मत के मूल्य को असमान बना दिया है। आज सरकार १८ वर्ष तक के आयु वाले युवकों को मताधिकार देने से कतराती है। इतने वर्षों में यदि सरकार चाहती तो समता के क्षेत्र का विस्तार कर और विषमता को घटाकर बालिक मताधिकार की सैद्धान्तिक समता को व्यवहार में प्रतिष्ठित कर चुकी होती। परन्तु अब तक सरकार समाजवाद और लोकतंत्र के नाम पर जन-जीवन के साथ खिलवाड़ करती रही है।

यही कारण है कि हरयाणा की सरकार ने स्वामी इन्द्रवेश जी को जो अब आर्य सभा के संस्थापक प्रधान पद से त्यागपत्र दे चुके हैं और आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पद पर आसीन हैं, को कुरुक्षेत्र के निकट लाडवा में ८ अप्रैल को, उनके अन्य कार्यकर्त्ताओं के साथ गिरफ्तार करने में तनिक भी संकोच नहीं की। चूंकि स्वामी जी आज लोगों में सांस्कृतिक और सामाजिक चेतना का विकास करने के लिए गांवों-गांवों में चक्कर काट रहे हैं। क्योंकि स्वामी जी इस प्रदेश की सरकार से शराब बन्दी लागू करने की बात करते हैं तथा हरियाणा में शीघ्रातिशीघ्र अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को प्रतिष्ठित करने की बात करते हैं, किसानों और समाज के पिछड़े वर्गों के साथ सहानुभूति प्रकट कर उनके अधिकारों को देने की बात करते हैं और ऐसा न करने पर कठोर कदम उठाने की बात करते हैं इसीलिए सरकार बौखला कर उन्हें गिरफ्तार करती है।

आर्य सभा ने अपने संस्थापक प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी की गिरफ्तारी की तीव्र भर्त्सना की है और कहा है कि इस प्रकार की गिरफ्तारी लोकतंत्र को खुली चुनौती है। आज देश में लोकतांत्रिक मूल्यों का अवसान होता जा रहा है। मिसा, पी.डी.ए., डी.आई.आर. आदि गैर प्रजातांत्रिक आपत्कालीन कानूनी धाराओं का अवलम्बन लेकर सरकार जन-जीवन के अस्तित्व को प्रबल चुनौती दे रही है। दफा १०७ तथा १५१ में किसी को कभी भी बिना पूर्व सूचना के गिरफ्तार करना आम बात हो गयी है। अतः ऐसी स्थिति में समाज के प्रगतिशील जनवादी तबकों को सगठित हो कर शोषित जनता को सगठित करना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। जब तक इस देश के छोटे तथा मध्यम वर्ग के किसानों, भूमिहीन किसानों, खेत मजदूरों, मिल मजदूरों, कर्मचारियों, अध्यापकों, विद्यार्थियों और छोटे दूकानदारों को संगठित कर उनके सामाजिक और राजनैतिक चेतना को विकसित नहीं किया जायेगा तब तक जनता के लिए लोकतन्त्र और शोषणमुक्त समाज की स्थापना, दिवा स्वप्न होगी।

आज की अत्यन्त विषम स्थिति में आर्य समाज जैसी धार्मिक तथा सामाजिक संस्था को बहुत बड़ी जिम्मेदारी की भूमिका अदा करनी है। आज सौभाग्य से आर्य समाज को स्वामी इन्द्रवेश जैसा युवा क्रांतिकारी नेतृत्व प्राप्त है। उसे अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए जनता के सांस्कृतिक और नैतिक स्तर का विकास कर उसकी आर्थिक और राजनैतिक दासता की मनोवृत्ति को खत्म कर देनी चाहिये। धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से उन्नत समाज कभी भी आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक विषमता को नहीं बर्दाश्त कर सकता है। ये विषमताएं मानव जाति के लिए अभिशाप है। इसे खत्म कर ही शोषणमुक्त समाज की स्थापना की जा सकती है और समाज को भौतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से उन्नत बनाया जा सकता है। ★

आर्य समाज फरीदकोट

हमारे आर्य समाज फरीदकोट का वार्षिक चुनाव दिनांक २७ मार्च ७४ को लाला रामनारायण जी एडवोकेट प्रधान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारी चुने गए —

प्रधान : ला० रामनारायण जी
मन्त्री : वीरेन्द्रकुमार गुप्ता
कोषाध्यक्ष : श्री जगदीश लाल

१९७४–७५ का रेलवे बजट

रेलवे बजट इस वर्ष हर बार की तरह ठीक समय पर नहीं प्रस्तुत किया गया। यह एक उल्लेखनीय घटना इस बार हुई है। उत्तर प्रदेश और उड़ीसा के चुनाव को दृष्टि में रखकर कांग्रेसी सरकार ने ऐसा किया। सरकार जानती थी कि रेल के भाड़े (यात्री और माल दोनों में) की जाने वाली भारी वृद्धि से उत्तर प्रदेश और उड़ीसा आदि के लोगों की प्रतिक्रिया कांग्रेस के प्रतिकूल होगी और चुनाव मैंदान में उतरे उनके उम्मीदवारों के वोटों पर इसका असर पड़ेगा। और इसीलिए चुनाव खत्म होने के बाद ही रेलवे बजट को संसद में प्रस्तुत किया गया। अतः यह स्पष्ट है कि कांग्रेसी सरकार स्थितियों और समस्याओं का सीधे सामना करने से कतराती है। किसी भी सरकार के लिए इससे घृणित हथकण्डा और क्या हो सकता है? सरकार कब तक इन हथकण्डों से जनता की आंखो में धूल झोकती रहेगी?

रेलवे-बजट आम बजट के एक दिन पूर्व आया। इस के अन्तर्गत रेल-किराये बढ़े और माल भाड़े में औसतन १० प्रतिशत की वृद्धि हो गई। आम बजट आने के अगले ही दिन पेट्रोल, मिट्टी के तेल, खाना बनाने की गैस सहित पेट्रोलियम उत्पादनों की कीमतों में वृद्धि की घोषणा की गई। इस तरह तीन दिन तक सरकारी आदेश से कीमतों में बढ़ोतरी का अभूतपूर्व दौर चलता रहा।

यद्यपि रेल का भाड़ा गत वर्ष भी बढ़ाया गया था लेकिन इस वर्ष गत वर्ष से तीन गुना बढ़ा दिया गया है। १९७३-७४ के रेल बजट में यात्री भाड़े और माल भाड़े में वृद्धि से कुल ४४.३५ करोड़ रुपये वसूल करने की व्यवस्था की गई थी परन्तु इस बार १३६.३८ करोड़ रु. वसूल करने की व्यवस्था की गई हैं। गत वर्ष यात्री भाड़े में कुल २६.२० करोड़ रु. की वृद्धि की गई थी किन्तु इस बार केवल तीसरे दर्जे के यात्रियों से ३४.५४ करोड़ की अतिरिक्त रकम वसूल की जायेगी। गत वर्ष तीसरे दर्जे के भाड़े में एक रुपये के अन्दर वृद्धि की गई थी, इस बार आठ-आठ रुपये बढ़ाया गया है।

तीसरे दर्जे के यात्रियों की कठिनाई यहीं तक सीमित नहीं। तीन टायर शयनागार का भाड़ा पहलीरात को एक रुपया तथा दूसरी रात को २ रुपया और प्लेटफार्म टिकट का दाम २५ पैसे से ५० पैसा कर दिया गया है। इस बजह से डेढ़ दो वर्षों में घर जानेवाले गरीबों को कुछ समय और घर से बाहर रहना पड़ेगा। गरीबों के प्रति सहानुभूति रखने वाली हितचिंतक सरकार का यह हाल है।

रेलवे बजट के पक्ष में पैरवी करने वाले शासकों द्वारा कहा जा रहा है कि उन्होंने भाड़ा सिर्फ थर्ड क्लास का ही नहीं, फर्स्ट क्लास का भी बढ़ाया है। यही नहीं वे थर्ड क्लास के यात्रियों को छूट देने का भी दावा करते हैं और कहते हैं कि रेलवे के सीजन टिकट का भाड़ा नहीं बढ़ाया गया है। परन्तु तथ्यों पर नजर डालते ही शासकों के इन दावों का खोखलापन सामने आ जाता है।

पहले दोनों दर्जों के भाड़ों की वृद्धि पर नजर डालना चाहिए। कलकत्ते से लेकर दिल्ली तक फर्स्ट क्लास का भाड़ा १४६.५० रु० से बढ़ाकर १५६ रु० किया जा रहा है अर्थात् कुल ९.५० रु० बढ़ाये जा रहे हैं अर्थात् ६.५% लेकिन थर्ड क्लास का ४०.८५ रु० से बढ़ाकर ४४.८५ रु० किया जा रहा है अर्थात् ४ रु० या ९.७% की वृद्धि की जा रही है। इस प्रकार स्पष्ट है कि औसतन भाड़ा तीसरे दर्जे का ज्यादा बढ़ाया गया है। भाड़े की वृद्धि की तुलना यदि हम यात्रियों की आमदनी से करें तो गरीबों पर बढ़ाया गया बोझ और भी साफ हो जाता है। फर्स्ट क्लास के लखपति करोड़पति यात्रियों के लिए ९.५० रु. की वृद्धि कोई भी बड़ी बात नहीं, लेकिन दो वक्त पेट भर भोजन भी न पाने वाले थर्ड क्लास के यात्रियों के लिए ४ रु० की वृद्धि बहुत बड़ी बात है। यह उनके भूखे बाल-बच्चों के मुख से भोजन छीनना है।

रही बात सीजन टिकट की। पिछले बजटों से देखा जाता है कि हर दूसरे वर्ष सरकार सीजन टिकट की कीमत बढ़ाती है। इसी नियम के अनुसार इसे छोड़ दिया गया है। परन्तु अगले वर्ष उसका भी नम्बर आ जायेगा।

आम बजट में आम आदमी के इस्तेमाल की अनेक वस्तुओं पर टैक्स बढ़ा दिए गये हैं। अब तक वस्तुओं पर किया गया कराधान लगभग ५० वस्तुओं तक पहुंच गया है। इन वस्तुओं में आम जनता के इस्तेमाल की भी अधिक वस्तुएँ जैसे डाक सम्बन्धी वस्तुएँ, रबर, टूथपेस्ट, प्लास्टिक आदि। गरीब आदमी के पत्र के माध्यम पोस्ट-कार्ड की की कीमत में ५०% वृद्धि अत्यन्त चौकानेवाली बात है। इसी तरह लिफाफे और अन्तर्देशी की कीमत में ५-५ पैसे की बढ़ोतरी कर दी गई है। संचार-साधनों यानी डाक-तार और टेलीफोन की बढ़ी हुई दरें साधारण नागरिकों को एवं छोटे व्यवसायियों को अधिक प्रत्यक्ष रूप से महसूस होगी।

यद्यपि बजट में खाने-पीने की वस्तुओं, यहाँ तक कि शक्कर को भी सीधे तौर पर नहीं छुआ गया है लेकिन बजट का विश्लेषण करते समय सबसे बड़ा सवाल भोजन के सम्बन्ध में ही उठता है। बजट में भोजन के लिए आर्थिक सहायता के रूप में मात्र १०० करोड़ रु० का ही प्रावधान

रक्खा गया है जब कि चालू वर्ष में इस मुद्दे पर २२५ करोड़ रु० के खर्च का अनुमान है। क्या इसका अर्थ यह है कि सरकार सार्वजनिक वितरण व्यवस्था के अन्तर्गत अपने दायित्वों को कम करने की योजना बना रही है? या फिर राशन में मिलने वाली चीजों के दाम बढ़ाने की सोच रही है। इन दोनों में से सरकार जो भी कदम उठायेगी उसके गम्भीर आर्थिक और सामाजिक परिणाम होंगे।

परिवहन खर्च और उत्पादन शुल्कों में वृद्धि से सभी तरह के खेतिहर और औद्योगिक वस्तुओं के लागत मूल्य बढ़ जायेंगे। केवल कोयले के माल भाड़े में वृद्धि से ८८ करोड़ रुपया प्राप्त होगा जिससे परिवहन व्यय १२ प्रतिशत बढ़ जायेगा। मूलभूत आवश्यकताओं से सम्बन्धित सभी वस्तुओं जैसे तेल, चीनी, केक, जलाने वाली लकड़ी, चारकोल, चीनी, मिट्टी का तेल, सरसों का तेल आदि वस्तुओं के माल भाड़े में वृद्धि हो गयी है। इसी तरह खनिज लौह, जिप्सम, आमोनियम सल्फेट, कास्टिक सोडा, सीमेन्ट मैंगनीज, पिग आयरन, यूरिया, लोहा, स्टील तथा कच्चे सूती माल के भाड़े में वृद्धि से औद्योगिक वस्तुओं के लागत मूल्य बढ़ेंगे।

इस बजट में गत वर्ष के १७०० कुछ करोड़ रु० की अपेक्षा सुरक्षा पर १९१५ करोड़ रु० खर्च किया जा रहा है परन्तु बिजली तथा सिंचाई जैसे अत्यन्त महत्वपूर्ण मद पर ६१ करोड़ रु० खर्च किया जारहा है जब कि गत वर्ष १०० करोड़ रु० खर्च किया गया था। आज बिजली संकट की विकट स्थिति में इस मद पर अधिक खर्च करने के बजाय कम खर्च करना सरकार की गलत औद्योगिक विकास नीति का पता चलता है।

सरकार सभी वर्गों पर समदृष्टि रखने का दावा करती है। इसका उदाहरण देते हुए वह कहती है कि हमने सबका व्यक्तिगत टैक्स कम कर दिया है। लेकिन व्यक्तिगत टैक्स देने वाले कौन हैं? अधिकतर उच्चतम वर्ग के लोग तथा कुछ मध्यम वर्ग के लोग। व्यक्तिगत टैक्स में कमी से करोड़ों गरीबों को क्या लाभ? इससे देश का सम्पन्न वर्ग ही लाभान्वित होगा। यही नहीं करोड़पतियों को रियायत देने का एक और ऐलान सरकार ने किया है कि कुछ निश्चित उद्योगों में विकास के नामपर दी जाने वाली छूट इन लोगों को मिलती रहेगी।

अन्त में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि वर्तमान बजट यथास्थितिवादी, मुद्रास्फीत वर्धक, अनुत्पादक और सरकारी खर्चे में बढ़ोतरी को पूरा करने वाला, उत्पादन तथा विकास को गतिहीन बनाने वाला और इजारेदार संस्थानों को लूट की खुली छूट देने वाला गैर समाजवादी बजट है। बजट अप्रत्यक्ष करों पर अधिक अवलम्बित है जिससे जन साधारण अत्यधिक प्रभावित होता है। इस बार भी गत वर्ष की तरह शराब को बख्श दिया गया है। कीमतों की बोझ से कराह रही जनता की पीड़ा को घटाने वाले कदमों को उठाने के बजाय फिजूल खर्ची और काले धन को पनपने में सहायता देने वाला बजट है। इसमें गरीबों से अधिकांश रकम वसूल कर मुट्ठी भर करोड़पतियों - अरबपतियों को करोड़ों रुपये देने की व्यवस्था है अतः यह देश में आर्थिक विषमता को और अधिक बढ़ाने वाला, गरीबों को उत्पीड़ित करने वाला सामाजिक न्याय और आत्मनिर्भरता से कटा गैर समाजवादी बजट है। ● गिरजेश्वर

बैंकों में 'सैल्फ' अथवा मुझे

महोदय,

अब सैकड़ों व्यक्ति बैंकों से अपने पत्र व्यवहार में तथा बैंकों आदि में हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं। अनेक बैंक अपने ग्राहकों से हिन्दी में पत्र व्यवहार का स्वागत भी करते हैं। इस प्रसंग में अनेक ग्राहकों के मन में यह शंका रहती है कि चैक काटते समय उसमें 'सेल्फ' की बजाय हिन्दी में क्या शब्द लिखें? कई व्यक्ति 'सेल्फ' की जगह 'मुझे' शब्द प्रयोग करते रहे हैं। वह शब्द ठीक ही है। अब सभी बैंक हिन्दी में लिखे चेक स्वीकार करते हैं। उसमें राशि तथा नाम आदि आसानी से हिन्दी में लिखे जा सकते हैं और हिन्दी के हस्ताक्षर भी स्वीकार्य हैं। आशा है अब ग्राहक अपने चैक निःसंकोच हिन्दी में काटेंगे। भवदीय

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिद,

(पृष्ठ ६ का शेषांश)

की आवश्यकता है जो जीवन में कठोर श्रम और सादगी को अधिक महत्व दे, आर्थिक और सामाजिक विषमता का पूर्णतया खात्मा जिसका मूल लक्ष्य हो और जो मानव का शारीरिक तथा मानसिक विकास के साथ उसका आत्मिक एवं सांस्कृतिक विकास कर उसमें सामुदायिक विकास की भावना को ओत-प्रोत करने वाली हो। अर्थात् ऐसी शिक्षा प्रणाली जो मानव का शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास कर उसमें विषमता मुक्त सामाजिकता की प्रबल भावना को दृढ़ कर दे। यह तभी सम्भव है जब वर्तमान व्यवस्था, का ध्वंस हो जाय क्योंकि वर्तमान व्यवस्था शिक्षा का राष्ट्रीयकरण और उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर अपने वर्ग के निहित स्वार्थ की ही पूर्ति करेगी। अतः वर्तमान सरकार से शिक्षा के राष्ट्रीयकरण की बात न करके बल्कि उसके समाजीकरण तथा लोकतांत्रिककरण की बात करके ही हम देश को समाजवादी क्रांति की ओर अग्रसर कर सकते हैं। इस क्रान्ति के उपरान्त समाजवादी सरकार ही शिक्षा का राष्ट्रीयकरण कर उसे पुनीत वैज्ञानिक वैदिक मान्यताओं से ओत-प्रोत कर मानव का सर्वांगीण विकास करने वाली शिक्षा प्रणाली लागू कर समाजवादी समाज की स्थापना को चरितार्थ करेगी।

समाचार दर्शन

आर्य हायर सेकण्डरी स्कूल लुधियाना

आवश्यकता है:—

(१) दो प्रशिक्षित स्नातक बी. ए. बी. टी. या बी. एड. एक ए. बी. कोर्स तथा अन्य हायर श्रेणियों को इन्गलिश तथा सामाजिक शिक्षा पढ़ाने की योग्यता रखता हो।

(२) चार जे. बी. टी. (ज्ञानी पास को प्राथमिकता दी जाएगी)

(३) एक ट्रेंड पी. टी. आई.

(४) एक टाइप क्लर्क (द्वितीय श्रेणी तथा पंजाबी में मैट्रिक पास)।

इन सभी पदों के लिए मैट्रिक में हिन्दी में पास होना अनिवार्य है।

प्रार्थी ५-५-७४ तक प्रबन्धक श्री आशानन्द प्रबन्धक कमेटी आर्य हायर सेकण्डरी स्कूल लुधियाना के नाम प्रार्थना पत्र भेजें।

केवल वही उम्मीदवार प्रार्थना-पत्र भेजें, जो शीघ्र पद ग्रहण कर सकते हों।

आपका शुभचिन्तक
आशानन्द मैनेजर
आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल
लुधियाना

महर्षि दयानन्द स्मारक बनाने का प्रयास

आर्य समाज नला बाजार अजमेर त्तत्वाधान में अजमेर जिले के समस्त र्य समाजों कि प्रतिनिधियों का एक म्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें महर्षि ानन्द सरस्वती के निर्वाण स्थल म नाय कोठी) को प्राप्त कर उसमें ामी जी का विशाल स्मारक बनाने निर्णय किया गया।

सम्मेलन में स्मारक के निर्माण एवं के संचालन हेतु महर्षि दयानन्द रक ट्रस्ट बनाने का भी निर्णय ा गया। साथ ही ट्रस्ट का संचालन करने तथा धन संग्रह करने के लिए दो समितियों का भी गठन कर दिया गया जिन्होंने अपना कार्य उत्साह पूर्वक प्रारम्भ कर दिया है।

भवदीय
मोहनलाल वीरुप आर्य
संयोजक
महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट
आर्यसमाज नला बाजार, अजमेर

हड़ोदा व हड़ोदी में आर्यसमाज की स्थापना

इसमें निम्न पदाधिकारी मनोनीत हुए

प्रधान—श्री रिछपालार्य
मन्त्री—श्री शुभदारार्य
कोषाध्यक्ष—श्री हवासिंह आर्य

नोट:—दोनों गांवों का मिला जुला आर्य समाज बनाया है।

आर्यसमाज औरंगाबाद मितनौल

आर्य समाज औरंगाबाद मितनौल का वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गए।

प्रधान–श्री रामजीलाल कम्पाउन्डर
मन्त्री–श्री मा. दुर्गाप्रसाद जी
कोषाध्यक्ष–श्री श्रीचन्द जी

आर्य समाज खूडण [रोहतक]

खूडण में आर्य समाज की स्थापना की गई जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गए।

प्रधान–महेन्द्र सिंह आर्य
मन्त्री–नफेसिंह
कोषाध्यक्ष–कवर लाल आर्य

आर्यसमाज बजाज नगर, जयपुर

आर्यसमाज बजाज नगर का वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार दिनांक १६-२-७४ को सम्पन्न हुआ और उसमें निम्न पदाधिकारियों को चुना गया।

प्रधान–श्री रणजीत एम. ए.
मन्त्री–श्री [illegible] आर्य
कोषाध्यक्ष–श्री भूदयालसिंह एम. ए.

आर्य समाज गुडान जिला चूरू

दिनांक २४ मार्च १९७४ को आर्य समाज गुडान का चुनाव कार्य सम्पन्न हुआ। चुनाव में निम्न पदाधिकारी मनोनीत हुए।

प्रधान–श्री यादराम जी आर्य विद्यावाचस्पति, मन्त्री–श्री क्रान्तिकारी हवासिंह आर्य विद्यावाचस्पति, कोषाध्यक्ष—महावीर सिंह आर्य।

करनाल में हरयाणा की समस्त आर्यसमाजों की आवश्यक बैठक

आप को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हरयाणा की समस्त आर्य समाजों की आवश्यक बैठक १९ मई रविवार १० बजे से ४ बजे तक अग्रवाल धर्मशाला के सामने रेलवे रोड पर रामलीला भवन करनाल में सभा प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में होगी। ला. रामगोपाल शालवाले उपप्रधान, श्री वीरेन्द्र जी मन्त्री, स्वामी अग्निवेश जी प्रस्तोता आदि नेता आर्य जनता का मार्ग दर्शन करेंगे। बैठक में प्रत्येक आर्य समाज के प्रधान, मन्त्री, मुख्य कार्यकर्त्ता, विद्वान, संन्यासी, उपदेशक, गुरुकुलों के आचार्य, आर्य कालेजों और स्कूलों के प्रधानाचार्य, आर्य युवक परिषद, आर्य वीर दल के कार्यकर्त्ता तथा आर्य जगत के पत्रकार भाग लेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा का भावी कार्यक्रम तथा आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह को प्रान्त स्तर पर मनाने की योजना तैयार होगी। इस अवसर पर आप की उपस्थिति विशेष रूप से आवश्यक है। कृपया अवश्य पधार कर आर्य समाज के संगठन का परिचय दें। दोपहर भोजन का प्रबन्ध स्थानीय आर्य समाज की तरफ से होगा।

निवेदक
रामचन्द्र आर्य
उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

पंजीयन क्रमांक RTK 28
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

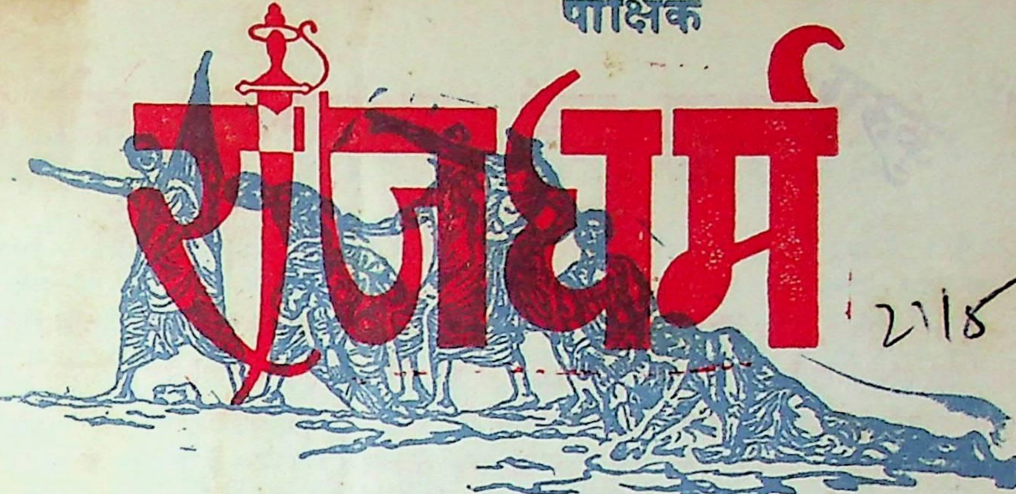
राजधर्म
रोहतक
२७ अप्रैल १९७४

१८ श्री कुलपति जी,
गुरुकुल कांगड़ी
सहारनपुर (उ० प्र०)



पाक्षिक

राजधर्म



व्यापक जनाक्रोश और हमारा दायित्व

पांचवीं योजना : एक मायूस भविष्य

विज्ञान की पढ़ाई और अँग्रेजी

युवा आक्रोश और मराठवाड़ा

हिन्दी और हरियाणा

विज्ञानवेत्ता आस्तिक पं० गुरुदत्त जी

प्रधान सम्पादक
स्वामी अग्निवेश

★

सह सम्पादक
गिरजेश्वर

★

मई प्रथम
वर्ष ६ : अंक ६
वार्षिक शुल्क १५ रु०
एक प्रति ७० पैसे

आर्यसभा एवं आर्यसमाज को वर्तमान व्यवस्था से सबक

आज आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से देश की स्थिति अत्यन्त नाजुक है। देश की जनता का घोर सांस्कृतिक और नैतिक पतन इस देश की स्थिति को और भी अधिक विकट और निराशाजनक बना दिया है। जनता के नैतिक और आत्मिक पतन ने देश कों ऐसी स्थिति में डाल दिया है जिसमें बुनियादी सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक परिवर्तन अत्यन्त कठिन हो गया है। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि इस दयनीय स्थिति में देश में क्रांतिकारी परिवतंन असम्भव है।

मनुष्य श्रेष्ठ सामाजिक प्राणी है। समाज के बाहर मानवीय मूल्यों के साथ मानव का अस्तित्व असम्भव है। इससे स्वतः प्रमाणित हो जाता है कि मानवीय मूल्यों से सम्बंधित सभी समस्याएँ सत्ता से अर्थात् आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक ढाचें से जुड़ी हुई हैं क्योंकि सत्ता से ही समाज का संचालन होता है। चूंकि मनुष्य एक नैमित्तिक प्राणी (Moral Instructable Animal) है अतः सत्ता के वर्ग चरित्र तथा देश में उपलब्ध आर्थिक व्यवस्था के द्वारा जो शिक्षा-दीक्षा जनता को मिलेगी, वही उसका आदर्श एवं व्यवहार होगा।

उपरोक्त तथ्यों से यह बिलकुल स्पष्ट है कि शोषण पर आधारित सत्ता कभी समाज के सांस्कृतिक और नैतिक थान को नहीं प्रश्रय दे सकती है किं मानव द्वारा मानव के शोषण को खत्म करना सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का प्राथमिक दायित्व है।

अतः धार्मिक और सामाजिक उत्थान के लिए भी यह आवश्यक है कि आर्य समाज जैसी धार्मिक संस्था अपना लक्ष्य सामाजिक परिवर्तन के साथ सत्ता परिवर्तन से भी जोड़े अन्यथा आध्यात्मिक और नैतिक उन्नति मात्र प्रचार तक सीमित रह जायेगी।

उपर्युक्त तथ्यों की पृष्ट-भूमि में चुनाव के उपरान्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थिति पर विचार करना अति आवश्यक है। १७ वर्षों के विवाद के उपरान्त उच्च न्यायालय की देख-रेख में गुप्त मतदान प्रणाली द्वारा चुनाव सम्पन्न हुआ। इसमें स्वामी इन्द्रवेश जी बहुमत से प्रधान चुने गये। अब विरोध पक्ष का नैतिक दायित्व हो जाता है कि वह आ० प्रति० सभा पं० के भावी उत्कर्ष में हार्दिक सहयोग प्रदान करें। विशेषकर एक धार्मिक एव सामाजिक संस्था के कारण हमारे विरोध का आधार मानव समाज को अग्रगति प्रदान करना होना चाहिए। परन्तु चुनाव के चार मास बाद भी विरोध पक्ष का अत्यन्त घृणित व्यवहार बहुत ही निन्दनीय है। इस पर हरयाणा सरकार का खुले रूप में उनके अवांच्छनीय एवं घृणित कार्यों में सहयोग देना किसी भी सरकार के लिए अत्यन्त लज्जाजनक है। इस सरकार को जहां प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तर्गत आने वाली संस्थाओं के चार्ज दिलवाने में सहयोग करना चाहिए वहीं सरकार अत्यन्त विपरीत आचरण प्रस्तुत कर रही है। स्वामी अग्निवेश जी को जो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तर्गत आने वाली संस्थाओं के संचालन के लिए प्रस्तोता चुने गये हैं, को आर्य कालेज पानीपत में ४मई को उनके अन्य पांच सहयोगियों सहित गिरफ्तार कर लोकतांत्रिक और संवैधानिक मान्यताओं का खुला उल्लंघन किया है। किसी भी शिक्षण संस्था में पुलिस भेज कर उसके व्यवस्था में व्यवधान डालना तथा उच्च पदस्त शिक्षाधिकारी को अकारण गिरफ्तार करना कहां का न्याय है। दिन प्रतिदिन लोकतांत्रिक मर्यादाओं का उल्लंघन इस देश की सरकार के लिए आम बात हो गयी है।

आर्यसभा अपने नवनिर्वाचित प्रधान की गिरफ्तारी की प्रबल भर्त्सना करती है और आर्य समाज को आगाह करती है कि जब तक सत्ता शोषकों के हाथों में होगी तब तक नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान की बात करना निरर्थक होगा। हमें देश के जन मानस को शोषण अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध अन्तिम दम तक सतत लड़ते रहने की शिक्षा देनी होगी, जब तक शोषण मुक्त व्यवस्था का सृजन होकर मानव समाज से शत्रुतापूर्ण अन्तर्विरोधों का समूलोच्छेदन न हो जाय। आज शोषित जनों के दूषित संस्कार को हमें धोना है जिसके कारण वे दास मनोवृत्त का होकर कीड़े-मकोड़ों की घुटन भरी जिन्दगी व्यतीत कर रहे हैं। अर्थ-शौच की ही भित्ति पर आत्मशुद्धि की दृढ़ बुनियाद कायम हो सकेगी इस सम्बन्ध में मनुस्मृति का निम्न श्लोक हृदयंगम करना चाहिए।

सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परंस्मृतम
यो ऽर्थेशुचिर्हि सशुचिनं मृद्वारि शुचिः
शुचिः ।

मनुस्मृति ५।१०६

अर्थात् संसार के सब शौचों (शुद्धियों) में अर्थ शौच (न्यायपूर्वक कमाया गया धन) ही सर्वश्रेष्ठ शौच है। जो अर्थ शौच से युक्त है, वहीं वास्तव में शुद्ध है.........। वैदिक सिद्धांत म सात्त्विक प्रवृत्ति वाले खाद्य पदार्थों को मानव के

(शेषांश पृष्ठ १३ पर)

सम्पादकीय

व्यापक जनाक्रोश और हमारा दायित्व

कांग्रेसी प्रशासन के लगातार २६ वर्षों के शोषण ने देश को आर्थिक दृष्टि से अत्यंत विकट स्थिति में पहुँचा दिया है। आज जरूरी वस्तुओं के मूल्यों की आशातीत वृद्धि ने जन-जीवन को अत्यन्त कष्टदायक बना दिया है। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से सम्बन्धित वस्तुएं जनता की क्रयशक्ति से बाहर हो गई हैं। बढ़ती भयंकर बेरोजगारी के कारण लोगों के हृदय में घोर निराशा और भयंकर अविश्वास का वातावरण व्याप्त है। थोक व्यापारियों और काला बाजारियों ने कृत्रिम अभाव उत्पन्न कर, अनाज बाजार से गायब कर अधिकांश लोगों के जीवन को दूभर बना दिया है। सरकार आवश्यक वस्तुओं को उचित मूल्य पर सरकारी न्यायोचित वितरण प्रणाली द्वारा लोगों को मुहैया करने में असमर्थ रही है क्योंकि सरकार आवश्यक वस्तुओं के नियन्त्रण को निहित स्वार्थ वालों के हाथ में छोड़ दी है। सरकार नियत मूल्य पर उत्पादकों से वसूली करके नियन्त्रित वितरण प्रणाली द्वारा जमाखोरी और मुनाफाखोरी खत्म करने के लिए तैयार नहीं है। सरकार शिक्षा प्रणाली में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर उसे शोषण मुक्त व्यवस्था के निर्माण में सहायक नहीं बनाना चाहती जिससे आर्थिक और सामाजिक विषमता खत्म हो, लोगों को मूलभूत आवश्यकताओं की गारंटी मिले तथा जिससे समाज दिन प्रतिदिन सामाजिक उन्नति के साथ आध्यात्मिक उन्नति करता रहे। व्यापक भ्रष्टाचार के कारण जीवन के सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का लोप हो गया है। चारों तरफ स्वार्थ और छीना-झपटी का साम्राज्य है। परिणाम स्वरूप गुजरात की भांति बिहार और मराठवाड़ा तथा इसी तरह समस्त देश आज जनाक्रोश की ज्वालामुखी की तरफ बढ़ता जा रहा है।

अतः आज समाज की जड़ता खत्म हो रही है। अब लोग वर्तमान कांग्रेसी शासन द्वारा ग्रहण की गई नीतियों के परिणामों का देर तक इन्तजार नहीं करेंगे। देश की वर्तमान परिस्थिति में कांग्रेस द्वारा जनता को राहत देने की असफलता के कारण असंतोष बढ़ता जायेगा। आज विभिन्न राज्यों में जन-आक्रोश का विस्फोटक रूप धारण करना इस बात का प्रबल प्रमाण है। गुजरात में इस जन-असंतोष और जन-आक्रोश ने जंगी रूप धारण किया था। वहाँ दो महीने से भी अधिक समय तक जनता सड़कों पर निकल कर कांग्रेसी निरंकुश शासन के विरुद्ध अपने आक्रोश व्यक्त किए। जमाखोर अनाज को तहखानों से बाहर निकालने के लिए मजबूर कर दिए गए। कांग्रेसी शासन ने इस आन्दोलन को अत्यन्त बेरहमी से दमन करना चाहा।

आन्दोलन के पहले दिन से ही एक ओर इस आन्दोलन को प्रतिक्रियावादियों का षडयन्त्र बताने की कोशिश की जाने लगी और दूसरी तरफ आन्दोलन का दमन करने के लिए सेना सहित दमन की सरकारी मशीनरी का इस्तेमाल किया जाने लगा। मात्र डेढ़ माह में वहां डेढ़ सौ आदमियों को गोली मार कर हत्या की गई। दूसरे सैकड़ों आदमियों को जख्मी बनाया गया। दमन की क्रूर मशीनरी के इतने नृशंस उपयोग के बाद भी गुजरात की जनता को नहीं दबाया जा सका। यद्यपि वहां आन्दोलन अनाज की मांग को लेकर शुरू हुआ परन्तु बाद में यह आन्दोलन, मात्र आर्थिक मांगों की सीमा तक नहीं बंधा रह सका। आन्दोलनकारियों ने भ्रष्ट कांग्रेसी चिमन भाई पटेल मन्त्रीमण्डल के पदत्याग और विधान सभा भंग करने की मांग उठायी। अन्त में पर्याप्त खून खराबी के उपरान्त सरकार को जनता की इन दोनों मांगों के सामने झुकना पड़ा।

बिहार में भी इसी प्रकार की घटनाएं घट रहीं हैं। बिहार में केवल पांच दिन में ही २७ आदमियों को गोली मारकर मौत के घाट उतार दिया गया। इनमें अनेक छात्र भी शामिल हैं। आन्तरिक सुरक्षा अधिनियम (मिसा) के अन्तर्गत व्यापक गिरफ्तारियां हुई हैं। गफूर सरकार की बर्बरता के खिलाफ बिहार की जनता ने एक दिन की आम हड़ताल भी की है। गफूर सरकार ने दमन के पिछले सारे रिकार्ड तोड़ दिए हैं। विधान सभा की लाबी में गोली वर्षा संसदीय जनतंत्र के इतिहास में पहली घटना है। बिहार में भी गुजरात की भांति विधायक त्याग पत्र देना प्रारम्भ कर दिए है। अब तक २४ विधायकों ने त्याग पत्र दे दिये हैं।

आज मात्र बिहार ही नहीं जहां कि स्थिति विस्फोटक हो गयी है बल्कि सम्पूर्ण देश ही विस्फोट के कगार पर खड़ा है। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से सम्बंधित प्रायः अधिकांश वस्तुएँ बाजार से गायब हैं और कहीं उपलब्ध भी हैं तो उनके मूल्य जनता की क्रय शक्ति से बाहर हैं। सरकार उचित मूल्यों पर अनाज और अन्य उपभोक्ता वस्तुओं की अपनी वितरण व्यवस्था की बात बड़े जोर-शोर से करती है परन्तु भारतीय उपभोक्ता परिषद ने जो सर्वेक्षण किया है, उसमें कहा गया है कि देश के किसी भी भाग में प्रशासन या निर्माताओं द्वारा निर्धारित या घोषित मूल्य पर कोई भी सामान नहीं मिल रहा है।

परिषद ने अपनी सर्वेक्षण रिपोर्ट में कहा है कि उत्पादनकर्त्ता (कारखानेदार) और थोक व्यापारी कृत्रिम अभाव पैदा कर उपभोक्ताओं को अधिक मूल्यों पर सामान खरीदने को मजबूर कर रहे हैं। फलस्वरूप छोटी आय वाले अधिकांश तबके के लोगों की हालत दयनीय होती जा रही है। इस रिपोर्ट में निश्चित आय वाले वर्गों की भी स्थिति विकट बतायी गयी है। वे खुदरा व्यापार पर निर्भर करते हैं और खुदरा व्यापारी उनसे मनमाना पैसा वसूल करते हैं। खुदरा व्यापारी भी ऐसा करने के लिए मजबूर हैं क्योंकि थोक व्यापारी उन्हें रोक-रोक कर और अत्यधिक चढ़े दाम पर माल देते हैं।

उक्त रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, बम्बई आदि बड़े शहरों में चोरबाजारी और जमाखोरी बड़े पैमाने पर हो रही है। इन शहरों में सभी चीजें चोर बाजार में तो मिल जाती हैं लेकिन आम दूकानों में उचित

मूल्य पर कभी नहीं मिलती हैं। ऐसी बात नहीं कि सरकार इन सब बातों से अनभिज्ञ हो। बल्कि सच्चाई यह है कि उत्तर प्रदेश के चुनाव के बीतते ही कांग्रेस सरकार ने गेहूं के थोक व्यापार को पूंजीपतियों के हवाले कर दिया। अब ये थोक व्यापारी अच्छी तरह जनता के भूख का व्यापार करेंगे और यदि जनता इनके विरुद्ध आक्रोश व्यक्त करेगी तो इनकी पोषक एवं संरक्षक सरकार उन्हें गोलियों से भून कर रख देगी।

बिहार आज इन तमाम स्थितियों से गुजर रहा है। बिहार में कांग्रेस की नीतियों ने भूख और अभाव को जन्म दिया है। पूंजीपतियों और बड़े जमीदारों के साथ कांग्रेसी नेता, मंत्री तथा अफसर खूब लूट-खसोट कर रहे हैं। यही कारण है कि बिहार की जनता का आन्दोलन भूख, अभाव, अत्याचार, बेकारी, भ्रष्टाचार तथा इन स्थितियों को उत्पन्न करने वाले सम्पूर्ण कांग्रेसी प्रशासन के विपरीत हैं।

वक्तव्य की स्वतंत्रता की संवैधानिक गारण्टी के बावजूद भारत की प्रधान जयप्रकाश नारायण जैसे वरिष्ठ नेता के मुँह को भी बन्द करना अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझती हैं। यद्यपि जयप्रकाश नारायण और श्रीमती इन्दिरा गान्धी की कोई तुलना नहीं है। जयप्रकाश के सामने इन्दिरा का देश के लिए कोई मूल्य नहीं है। काश! १९४२ के त्याग बलिदान की क्रांतिकारी भावना से ओत-प्रोत जयप्रकाश देश का नेतृत्व करते। यह देश का दुर्भाग्य है कि स्वतन्त्रता संग्राम का श्रेष्ठ सेनानी एवं जन नेता स्वतन्त्रता के उपरान्त भटक गया। वर्तमान परिस्थितियों से विक्षुब्ध होने के कारण आज वह बेचैन हैं। आज उनके वैचारिक भटकाव को एक जबरदस्त झटका लगा है। शायद देश की विषम स्थिति और कांग्रेसी सरकार का दुर्व्यवहार उनमें सही सोच पैदा कर दे और वह देश के प्रगतिशील जनवादी तबके का नेतृत्व अपने हाथ में लेने का प्रयास करें। यदि ऐसा होता है तो देश के लिए जयप्रकाश जी सार्थक सिद्ध होंगे अन्यथा वे इस देश के प्रगति के मार्ग में एक भयंकर रोड़ा एवं मठाधीश गांधीवादी बने रहेंगे।

कुछ दिन पूर्व जयप्रकाश नारायण ने अपने एक वक्तव्य में कहा था कि—"मुनाफाखोरों, जमाखोरों और काले-बाजारियों से सख्ती से निपटने, गलत सरकार को बदलने और शिक्षा पद्धति में परिवर्तन के सवाल को लेकर संघर्ष करने का अब समय आ गया है............। भ्रष्ट और गलत सरकारों को बरदास्त करने के लिए हमने आजादी की लड़ाई नहीं लड़ी थी।" जयप्रकाश नारायण ने बिहार में भूख से मौत और भूख से घबड़ा कर आत्महत्या करने वालों के कई उदाहरण देते हुए कहा था कि यदि शान्तिपूर्ण विरोध के अधिकार का हनन किया गया तो मैं खुद जलूस का नेतृत्व करूंगा।

उनकी ये बातें प्रधान मंत्री को अधिक अखरीं। आश्चर्यजनक रुप से प्रधान मंत्री जी उनके सक्रिय रुप से राजनीति में पदार्पण करने का विरोध कर रही हैं। प्रधान मन्त्री जी ने कहा कि "दुर्भाग्य की बात है कि कुछ लोग जिनमें सामाजिक कार्यकर्त्ता भी शामिल हैं, ग्रामीण उन्नति में दिलचस्पी नहीं रखते और अब सक्रिय राजनीति में कूदना चाहते हैं।" इस बात से प्रधानमन्त्री के संकीर्ण मनोवृत्ति की स्पष्ट झलक मिलती है। श्रीमती इन्दिरा जी प्रधान मन्त्री का पद अपनी बपौती समझती हैं। इन बातों से सत्तारुढ़ दल की दलीय तानाशाही के खतरे की स्पष्ट गंध आ रही है। इसका विरोध लोकतन्त्र में आस्था रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति करेंगे। इसी भांति कांग्रेसी प्रशासन की निरंकुशता भी अपनी चरम सीमा लांघ गयी है। बिहार में आन्दोलन शुरू होने के पूर्व कर्पूरी ठाकुर आदि कई नेताओं की गिरफ्तारी तथा संयुक्त समाजवादी दल के नेता श्री राजनारायण आदि का बिहार से निष्कासन सत्तारुढ़ दल के हास्यास्पद जनतांत्रिक मूल्यों को स्पष्ट करता है।

उपरोक्त बातों से यह भली भांति स्पष्ट है कि वर्तमान सरकार हर तरह से लोकतांत्रिक अधिकारों का हनन कर रही है। जनता जब अपनी न्यायोचित मांगों के लिए आगे बढ़ती है तो उसे गोलियों की बौछार और लाठियां मिलती हैं। घोर सरकारी दमनकारी प्रवृत्ति के बावजूद भी जनान्दोलन प्रान्त तक सीमित न रह कर देश व्यापी उग्र रूप धारण करता जा रहा है। आज समाज का प्रत्येक वर्ग जैसे डाक्टर, इन्जीनियर, स्कूलों-कालेजों के शिक्षक, महिला, किसान, मजदूर, कर्मचारी आदि सभी मैदान में उतरे हैं। इस पूँजीवादी व्यवस्था में देश की समस्या का समाधान नहीं हो सकता है। अब पूँजीवाद विरोधी समाजवादी क्रांति में पहुँचे बिना देश का आर्थिक और नैतिक विकास असम्भव है। ऐसी स्थिति में देशव्यापी जनाक्रोश को सही दिशा में संचालित करने के लिए जनता के सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना को विकसित करना होगा। जहां हम जनता के अनिवार्य न्यायोचित मांगों के लिए संघर्ष करें वहीं हमें उन्हें इन मांगों के मार्ग में आने वाली रुकावटों को भी उन्हें ठीक से समझाना होगा जिससे वे मांगों की सीमा से आगे बढ़ कर क्रांतिकारी परिवर्तन की लड़ाई लड़ सकें। उन्हें हमें बताना होगा कि भूमि सुधार को जब तक ठीक से क्रियान्वित नहीं किया जायेगा तब तक खाद्य समस्या का समाधान सम्भव नहीं। कृषि पर आधारित उद्योग धंधे जब तक नहीं विकसित होंगे, ग्रामीण बेकारी बनी रहेगी। देश का ८० प्रतिशत आदमी गांवों में रहता है और उनमें से जब तक ७०-७५ प्रतिशत लोगों की क्रय शक्ति नहीं बढ़ेगी तब तक देश में आन्तरिक बाजार नहीं विकसित होगा और बिना इसके देश का द्रुतगति से औद्योगिकरण सम्भव नहीं है।

परन्तु यह तभी सम्भव है जब देश में एक शक्तिशाली क्रान्तिकारी दल हो जो अपनी सांगठनिक शक्ति से जनान्दोलन को तेज कर सही राजनैतिक दिशा, विकल्प नीति तथा कार्यक्रम दे सके। चूँकि देश में प्रगतिशील जनवादी दलों में कोई भी दल इतना सक्षम नहीं है अतः समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन में विश्वास रखने वाले दलों को राष्ट्रीय स्तर पर एक स्वीकृत कार्यक्रम तय करना होगा जिससे वे संगठित होकर जनता में राजनैतिक तथा सामाजिक चेतना विकसित कर सकें। जनता में क्रान्तिकारी चेतना भरने के उपरान्त ही हम आमूल-चूल परिवर्तन की लम्बी लड़ाई लड़ सकते हैं। आर्यसभा क्रान्तिकारी परिवर्तन से युक्त कार्यक्रमों के आधार पर आज की स्थिति में जनता की लड़ाई लड़ना जरूरी समझती है जिससे जनाक्रोश को सही दिशा में संचालित कर अपने दायित्व का निर्वाह कर सके और जनता को जन-विरोधी कांग्रेसी सरकार तथा प्रतिक्रियावादी शक्तियों से जल्दी मुक्ति दिला सकें। *

गिरजेश्वर

पांचवीं पंचवर्षीय योजना: एक मायूस भवि

० विष्णुगुप्त

पांचवीं पंचवर्षीय योजना अभी से अविश्वसनीय लगने लगी है। यहां तक कि मुख्यमन्त्रियों तक ने ८ और ९ दिसम्बर को राष्ट्रीय विकास परिषद् की बैठक में इस योजना में गम्भीरता और दिलचस्पी का अभाव बताया।

कांग्रेसी मुख्यमन्त्रियों ने इस बैठक में चापलूसों की तरह श्रीमती इन्दिरा गाधी की हर कही बात पर मुहर लगाई ताकि अपने राजनीतिक भविष्य को सुरक्षित रखा जा सके । इसीलिए उन्होंने योजना से सम्बन्धित मसलों पर दिमाग खपाना ही जरूरी नहीं समझा।

कोरी लफ्फाजी

लम्बी चौड़ी कोरी लफ्फाजी कांग्रेसी नेताओं का चरित्र बन गया है। परिषद की बैठक में एक प्रस्ताव पास किया गया जिसमें "आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से बढ़ने तथा सामाजिक और आर्थिक विषमता को कम करने के लिए" सालाना वृद्धि की दर को ५.५ प्रतिशत तक लाने पर बल दिया गया है।

यहां किन्तु इसका विश्लेषण नहीं कियागया कि इन मामलों में चौथी योजना क्यों असफल रही। इसीलिए बीते समय से कोई सबक लेने तथा असफलता के कारणों को पूरा करने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता। साफ है कि पांचवीं योजना को सफल बनाने की सरकार की कोई इच्छा ही नहीं है। मन्त्री बेचैन जनता के सामने नई आशाओं के माया-जाल बुनने में जुटे हुए हैं।

योजना आयोग के प्रतिवेदन में कहा गया है कि चौथी योजना में, जबकि वृद्धि का लक्ष्य ५.७ प्रतिशत निर्धारित किया गया था, १९६९-७० में सबसे अधिक दर जो पायी गयी, वह थी ५.२ प्रतिशत। इसके बाद के वर्षों में यह क्रमशः गिरती गई। १९७०-७१ में वृद्धि की दर ४.२ प्रतिशत रही। १९७१-७२ में १.७ प्रतिशत तथा १९७२-७३ में सिर्फ .६ प्रतिशत रही।

इस लगातार गिरावट की सफाई सूखे के वर्ष या युद्ध की बातों से नहीं की जा सकती। यहां तक कि सबसे अच्छे वर्ष में भी लक्ष्य की प्राप्ति नहीं की जा सकी है।

वृद्धि की दर में गिरावट तो सिर्फ एक पहलू है। जनता की दृष्टि में अधिक महत्वपूर्ण पहलू है— आय में बढ़ती विषमता, बेरोजगारी और महगाई से पीड़ित जन-जीवन, जबकि इसी समय देशी-विदेशी बड़े उद्योगपति तथा देहातों के धनी लोग और अधिक धनी हुए हैं।

किसान और मजदूर

कांग्रेस दल का दो वर्ष पहले चुनाव घोषणापत्र में किया गया भूमि-सुधार का वादा सिर्फ वादा ही रह गया। राष्ट्रीय विकास परिषद की बैठक में प्रधान मंत्री और योजना मंत्री ने इसकी चर्चा तक नहीं की।

लेकिन श्रीमती गांधी मजदूरों को नहीं भूलीं। उन्होंने मजदूरों से कमजोर तबके विशेषकर खेतिहर मजदूरों के बारे में सोचने के लिए कहा। साफ है कि उनका अगला कदम मजदूरों की वेतन वृद्धि पर रोक लगाने वाला होगा। क्या इन मन्त्रियों को उस समय खेत-मजदूरों का सवाल आता है जब वे जनता पर कर-भार लादकर आराम फरमाया करते हैं।

यदि देहातों के गरीब
बांट दी जाय और उन्हें कृ
वाले साधनों से सहायता
उत्पादन में वृद्धि के सा
बेरोजगारी और आय की
भी कमी आयेगी। किन्तु
लोगों की हथियायी जमीन
लगायेगी।

निहित स्वार्थों की

महंगाई आदि पर घ
बहाये जा सकते हैं किन्तु
पर कोई चोट नहीं की जा
जरूरी चीजों की "स्थिर
आपूर्ति का नुस्खा निकाल
अधिक उत्पादन परन्तु नि
साफ है कि सरकार नि
उत्पादकों से वसूली करके
नियन्त्रण प्रणाली द्वारा ज
मुनाफाखोरी को समाप्त क
तैयार नहीं है।

विकास परिषद में
मसला भी नहीं उठाया
रुपये के काले धन की स
व्यवस्था कुल रुपयों क
प्रतिबन्ध के प्रयासों क
रही है। मुनाफाखोरी औ
नियन्त्रण के लिए इसे
एकदम जरूरी है। लेकि
इस कार्य से कोई लेन दे
मन्त्रियों और काले धन
सांठ-गांठ को ही दर्शाता

सरकार ने उत्पादन
पर देशी-विदेशी इजा
छूट दे दी है। इससे अ
और सिमटेगी जिसके
नेताओं ने सैद्धान्तिक
आश्वासन दिये हैं।

महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री वी. पी. नाइक ने परिषद की बैठक में कहा कि "बड़े औद्योगिक घराने कृत्रिम कमी पैदा कर रहे हैं और उनके द्वारा पैदा की गई समस्याओं से दृढ़ता के साथ सुलटने की आवश्यकता है।" (इकानामिक टाइम्स, ६ दिसम्बर ७३) इन्दिरा गांधी की सरकार की "दृढ़ता" को तो हम पहले ही देख चुके हैं कि उसने इन्हीं इजारेदारों को आगे और अधिक मजबूत होने का मौका दिया है।

इस प्रकार इजारेदारों और गांव के धनियों को और मजबूत बनाने की वही पुरानी नीति जारी है। इस नीति पर खड़ी पांचवीं योजना से जनता के लिए कोई आशा शेष नहीं रह जाती है।

पूंजीवाद लाने के लिए सरकारी क्षेत्र

प्रधानमन्त्री और योजनामन्त्री, दोनों ने "मूल" क्षेत्र (इस्पात, उर्जा, तेल, खाद आदि) की वृद्धि पर बल दिया। किन्तु एक भी मन्त्री ने स्पष्ट तौर पर यह नहीं बताया कि इनका विकास सरकारी क्षेत्र में होगा। इसका अर्थ यही है कि किसी न किसी बहाने बड़े औद्योगिक घरानों को 'मूल' क्षेत्र में आने दिया जायेगा।

इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि यदि ये उद्योग सरकारी क्षेत्र के अन्तर्गत ही विकसित किये जाते हैं, तब भी यह निजी क्षेत्र को बढ़ने में ही मदद जुटायेंगे। यही पिछली योजनाओं में हुआ है। कांग्रेसी शासन के अन्तर्गत सरकारी क्षेत्र पूंजीवादी विकास के आधार के रूप में ही काम करेगा।

अतिरिक्त भार

संसद में पेश मसौदे के अनुसार यह समूची योजना ५३,४११ करोड़ रुपये की है जिसमें ३७,२५० करोड़ रुपये सरकारी क्षेत्र में और १६,१६१ करोड़ रुपये निजी क्षेत्र में लगाये जायेंगे।

योजना आयोग में एक विवाद खड़ा हुआ कि क्या वर्तमान परिस्थितियों में एक ऐसी विराट योजना सम्भव है। श्रीमती गांधी और दुर्गाप्रसाद धर का मत बड़ी योजना के पक्ष में हैं क्योंकि जनता की नैतिकता को उठाने के लिए राजनीतिक दृष्टि से यही होना चाहिए।

निश्चित रूप में ऐसी बड़ी योजना सम्भव है यदि सभी क्षेत्र के निहित स्वार्थों पर कस कर आघात पहुंचाया जाय। किन्तु वर्तमान परिस्थितियों में, जबकि अर्थ व्यवस्था पर शोषकों का कब्जा है, योजना के साधनों में बढ़ोत्तरी का अर्थ जनता पर और अधिक भार है।

पांचवीं योजना में ६८५० करोड़ रुपये के अतिरिक्त करों का प्राविधान है। यदि इसकी पहले की योजनाओं के अतिरिक्त कर भार से तुलना की जाय, तब यह लम्बी छलांग स्पष्ट हो जायेगी। आंकड़े इस प्रकार हैं:

योजनाओं में अतिरिक्त कर

		रु. (करोड़ में)
दूसरी योजना	(वास्तविक)	१०५२
तीसरी "	(वास्तविक)	२८६२
चौथी "	(अनुमानित)	३७२८
पांचवीं "	(प्रस्तावित)	६८५०

(पूर्व योजनाओं के लिए राशि स्रोत, मुद्रा और अर्थ पर रिपोर्ट, १९७१-७२, वक्तव्य ५७)

धीरे-धीरे कुल कर के बड़े हिस्से को परोक्ष कर द्वारा वसूला जायेगा। वित्त-मन्त्री श्री चह्वाण ने राष्ट्रीय विकास परिषद की बैठक में इस ओर संकेत किया है। इसका मतलब है कि मालों और सेवाओं पर कर लगाये जायेंगे। उत्पादक दाम बढ़ा कर इसके भार को जनता पर लाद देते हैं। सरकार मुंह बाये देखती रहती है।

आत्मनिर्भरता के दावों का भी एक ही हाल है।

उदास भविष्य

सरकार अब तक सभी लक्ष्यों की प्राप्ति में असफल रही है। ऊंचे दाम, आपूर्ति में सामंजस्य का अभाव, अक्षमता, भ्रष्टाचार और निहित स्वार्थों द्वारा अनियन्त्रित मुनाफाखोरी आदि किसी भी योजना को चबा जायेंगे। सरकार निहित स्वार्थों के साथ इस कदर जुड़ी हुई है कि योजना की आवश्यकता को सख्ती के साथ पूरा करने की इसकी "राजनीतिक इच्छा" नहीं हो सकती।

योजना की बड़ी-बड़ी बातों के पीछे देशी-विदेशी इजारेदार और जमींदार और अधिक शक्तिशाली होंगे तथा जनता का और निर्मम शोषण करेंगे। इस वर्तमान उदासी को समाप्त करने के लिए कुछ भी नहीं किया जा रहा है। *

आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रचार कार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा ने जिस संलग्नता और तीव्रता से देश की राजनैतिक सामाजिक और आर्थिक गंद को निकालने का प्रचार द्वारा कार्यक्रम प्रारम्भ किया है, उस के अन्तर्गत ३, ४, ५ मई को ग्राम छारा त० झज्जर जि० रोहतक में आर्यवीर श्री विक्रम सिंह जी प्रचारक तथा आर्यवीर डा० धर्मवीर जी उपदेक के मनोहर भजन तथा उपदेशों से ग्रामीण जनता बड़ी प्रभावित हुई। ग्राम निवासियों ने आर्य समाज ग्राम छारा को १४५ रु० दान दिया। और बड़े सुखद वातावरण में समस्त कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

मांगेराम दलाल मन्त्री
आर्य समाज छारा
(रोहतक)

विज्ञान की पढ़ाई और अँग्रेजी

डॉ० वेदप्रताप वैदिक

अंग्रेजी के कुछ अन्धभक्त लोगो ने देश में यह विचार भी फैलाया कि अंग्रेजी के बिना विज्ञान की पढ़ाई नहीं हो सकती । विज्ञान की सब ऊँची पुस्तक अंग्रेजी में हैं। अगर अंग्रेजी हट गई तो विज्ञान भी हट जाएगा।

सच पूछा जाय तो बात उलटी ही है। अंग्रेजी शिक्षा और विज्ञान में तो छत्तीस (३६) का आंकड़ा रहा है। एक का मुँह इधर तो दूसरे का मुँह उधर! ऑक्सफोर्ड और केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के पुराने बही-खाते निकालकर देखें तो मेरी बात समझ में आ जाएगी। अंग्रेजी शिक्षा के इन गढ़ों में विज्ञान और गणित की पढ़ाई की बड़ी उपेक्षा होती थी, क्योंकि विज्ञान तर्क करना सिखाता है और तर्क मजहब का दुश्मन है और मजहबी लोग ही इन शिक्षा-केन्द्रों को अपने अनुदान से जीवित रखते थे। ऐसी स्थिति में विज्ञान और गणित की पढ़ाई घरों में ही चलती थी। जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे प्रसिद्ध दार्शनिक और गणितज्ञ ने विश्वविद्यालय जाने के बजाय घर में बैठकर पढ़ना-लिखना ज्यादा अच्छा समझा। आपने माइकेल फेराडे का नाम सुना होगा, जिसने बिजली का आविष्कार किया। इस आदमी ने कभी ऑक्सफोर्ड या केम्ब्रिज का मुँह तक नहीं देखा। ऑक्सफोर्ड और केम्ब्रिज का यह विज्ञान की उपेक्षावाला रूख भारत में भी आया, क्योंकि बम्बई, मद्रास, और कलकत्ता में अंग्रेज ने जो विश्वविद्यालय कायम किए, वे उन्हीं की नकल पर थे। इन भारतीय शिक्षा-केन्द्रों में भी ज्यादा जोर "अंग्रेजी भाषा, साहित्य और धर्म-विद्या" को पढ़ाने पर था। यहाँ भी विज्ञान, गणित आदि विषयों की उपेक्षा की गई। इस विषय पर डॉ० बीना मजूमदार ने अच्छी खोज की है। अंग्रेज को इससे कोई मतलब नहीं था, खासकर हुकूमत करनेवाले अंग्रेज को, कि भारतीय प्रतिभा का विकास हो। वह तो अंग्रेजभक्त नकलचियों की फौज खड़ी करना चाहता था। इसके बावजूद भी भारत में जैसे-तैसे विज्ञान की कुछ न कुछ प्रगित हुई ही। प्रयोग करते रहने की मनुष्य की अदम्य इच्छा को आखिर कहाँ तक दबाया जा सकता?

अगर भारत की प्रयोगशीलता को दबाया नहीं गया होता, अंग्रेजों के द्वारा, मुगलों के द्वारा तथा अन्य आगन्तुकों के द्वारा, तो मेरा विश्वास है कि चाँद पर आदमी को भेजने का काम सबसे पहले भारत ही करता। भारत में तो आदि काल से इस बात का ज्ञान और यह मान्यता रही है कि इस पृथ्वी के अलावा अन्य ग्रहों में भी जीवन है। 'विमानशास्त्र' नामक प्राचीन ग्रन्थ को देखकर मैं दंग रह गया। उसमें ध्वनि की गति से उड़ने वाले विमानों का, उनकी बनावट का, उनके सिद्धान्तों का विशद् वर्णन किया गया है। मैं कहानी-किस्सों की बात नहीं कर रहा हूं। पोगापन्थ और गप्पों में मेरा जरा भी विश्वास नहीं है। मैं आपसे आर्यभट्ट के गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त और लीलावती के गणित की बात कर रहा हूं, जिन्हें सारी दुनियाँ ने मान्यता दी है। चरक और सुश्रुत की बात कर रहा हूँ, वागभट्ट की बात कर रहा हूँ। पिछले दिनों डॉ० रघुवीर के पुत्र डॉ० लोकेशचन्द्र ने जावा, बाली, सुमात्रा, साइबेरिया आदि स्थानों से लाएहुए अनेकों ग्रन्थ, चित्र और पदार्थ दिखाए। मैं यह देखकर चकित हो गया कि भारतीय शल्य-चिकित्सा का प्रचार इन सारे इलाकों में था। आज से कई हजार वर्ष पूर्व भारतीय शल्य-चिकित्सा काफी विकसित थी। इसी तरह से रसायन शास्त्र और भौतिक विद्या में भी भारतीयों ने उल्लेखनीय प्रगति की थी। इसे उल्लेखनीय इसलिए कहता हूँ कि उसी काल में अन्य देशों की तुलना में विशेष करके ब्रिटेन की तुलना में, भारत हजारों मील आगे था। लेकिन मुख्य प्रश्न यह है कि इस प्रगति को लकवा क्यों मार गया? यह प्रगति अपने तर्कसंगत मार्ग पर क्यों नहीं चल सकी?

इसके कई कारण हो सकते हैं, लेकिन एक प्रमुख कारण है—बाहरी शासकों द्वारा हमारे देश में चलने वाली शिक्षा और शोध की परम्परा को नष्ट-भ्रष्ट करना। दूसरे आततायियों की बात यहाँ छोड़ दें। अंग्रेजों के प्रयत्नों के बारे में मैं पहले ही कह चुका हूं। अंग्रेजों ने अंग्रेजी को ज्यादा महत्व दिया और विज्ञान को कम। अगर अंग्रेजों के मन में अंग्रेजी के प्रति विशेष आग्रह नहीं होता तो विज्ञान की पढ़ाई और प्रयोगों पर अधिक जोर दिया जाता। अंग्रेजी के जरिये विज्ञान पढ़ाने के कारण बच्चों ने विज्ञान कम पढ़ा और अंग्रेजी ज्यादा।

अँग्रेजी से विज्ञान की पढ़ाई को धक्का

जब एक विदेशी भाषा के जरिये बच्चों को विज्ञान पढ़ाया जाता है तो वह बोझिल, नीरस और अरुचिकर हो जाता है। विज्ञान क्या है? प्रयोग का दूसरा नाम ही विज्ञान है। जब बच्चा प्रयोग करता है तो उसके और उपकरणों के बीच भाषा की कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। भाषा को

दासी की तरह सेवा करनी चाहिए। भाषा को साधने की जरूरत नहीं होनी चाहिए। लेकिन जब अंग्रेजी में विज्ञान पढ़ाया जाता है तो एक विद्यार्थी प्रयोग प्रारम्भ करे, उसके पहले उसे अंग्रेजी से कुश्ती लड़नी पड़ती है। पहले भाषा समझे, फिर प्रयोग करे! एक आठवीं कक्षा के बच्चे को अगर अंग्रेजी में यह कहा जाए कि "होल्ड द टेस्ट-ट्यूब-अपराइट" तो इस आदेश का पालन करने के पहले उसे समझना पड़ेगा कि 'होल्ड' का मतलब क्या है, 'टेस्ट-ट्यूब' का मतलब क्या है और 'अपराइट' का मतलब क्या है तथा इन सब शब्दों को एक साथ रखने पर क्या मतलब निकलता है? यह सब ठीक ठीक समझे बिना वह प्रयोग नहीं कर सकता जबकि दूसरी कक्षा के एक बच्चे से आप हिन्दी में कहें कि 'परख-नली को सीधा पकड़ो' तो वह तत्काल, बिना किसी कठिनाई के, उस आदेश का पालन करेगा और प्रयोग कर लेगा। ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिए होता है कि जब वह एक-डेढ़ साल का था, तभी से उसने अपनी माँ के मुख से इसी भाषा में इसी तरह के कई वाक्यों को सुना है और उसका पालन किया है। उसे भाषा को साधने की जरूरत नहीं है। वह तो उसे जन्म-घुट्टी में पिलाई गई है। अब आप ही बताइये, प्रयोग या शोध किस भाषा में आसानी से हो सकता है? मातृ-भाषा में या विदेशी भाषा में? विडम्बना यह है कि विज्ञान के बगीचे के मीठे फल तो प्रत्येक मनुष्य खाना चाहता है लेकिन भारत में उस बगीचे तक पहुँचने के लिए एक छात्र को अंग्रेजी का जलता हुआ मरुस्थल पार करना पड़ता है। कुछ सी. वी. रमन और कुछ हरगोविन्द खुराना और कुछ नार्लीकर जैसे अदम्य साहसी लोग तो उस मरुस्थल को भी हँसते-हँसते पार कर जाते हैं और अपना जौहर दुनियां को दिखा देते हैं लेकिन एक औसत विद्यार्थी या तो फल पाने की इच्छा ही नहीं करता है या रास्ते में ही दम तोड़ देता है या अपनी पूरी जिन्दगी मरुस्थल पार करने में ही लगा देता है। स्वयं रमन जैसे वैज्ञानिकों ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि यदि भारत में विज्ञान मातृ-भाषा के जरिए पढ़ाया गया होता तो आज भारत दुनियां के अग्रगण्य देशों में होता।

जो दुनिया के देश आज विज्ञान में आगे बढ़े हुए हैं, क्या वहां विदेशी भाषाओं के जरिये विज्ञान की पढ़ाई होती है? कतई नहीं। इन्गलेन्ड और अमेरिका में अंग्रेजी में, जर्मनी में जर्मन में फ्रांस में फ्रांसीसी में, रूस में रूसी में और जापान में जापानी भाषा में विज्ञान पढ़ाया जाता है। रूस के बड़े-बड़े वैज्ञानिक अंग्रेजी का एक काला अक्षर भी नहीं जानते। फिर दूसरे देशों में होनेवाली वैज्ञानिक प्रगति के बारे में उन्हें जानकारी कैसे मिलती होगी? उस जानकारी को प्राप्त करने के लिए ये वैज्ञानिक अंग्रेजी सीखने में अपना समय बर्बाद नहीं करते। हर देश में अनुवादकों का एक समूह होता है जो न केवल एक भाषा से बल्कि अनेकों भाषाओं से विज्ञान की सामग्री देशी भाषा में ले आता है। यदि वैज्ञानिक स्वयं विदेशी भाषाएं सीखना भी चाहें तो कितनी विदेशी भाषाएं सीख सकते हैं जबकि अनुवादक तो कई भाषाओं के हो सकते हैं। इसलिए यह तर्क तो बिलकुल थोथा है कि अंग्रेजी के बिना विज्ञान की पढ़ाई को धक्का लगेगा। बल्कि मै तो उल्टी बात कहता हूं। वह यह कि अंग्रेजी के कारण विज्ञान की पढ़ाई को धक्का लग रहा है।

संस्कृति और भाषा

जब किसी राष्ट्र पर एक विदेशी भाषा हावी होने लगती है तो उस राष्ट्र की संस्कृति के लिए सबसे बड़ा खतरा उपस्थित हो जाता है। संस्कृति क्या है? हमारे पूर्वजों ने विचार और कर्म के क्षेत्र में जो कुछ भी श्रेष्ठ किया है, उसी धरोहर का नाम संस्कृति है। यह सस्कृति अपनी भाषा के ज़रिये जीवित रहती है। यदि भाषा नष्ट हो जाए तो संस्कृति का कोई नामलेवा-पानीदेवा नहीं रहता। संस्कृति ने जिन आदर्शों और मूल्यों को हजारों सालों के अनुभवों के बाद निर्मित किया है, वे विस्मृति के गर्भ में विलीन हो जाते हैं। भाषा संस्कृति का अधिष्ठान है। संस्कृति भाषा पर टिकी हुई है।

मैं तो इससे भी एक कदम आगे जाना चाहता हूं। मैं चाहता हूँ कि हमारे पूर्वजों ने जो कुछ बुरा सोचा या किया है, वह भी हमारे सामने होना चाहिए। इसे आप चाहे विकृति कह लीजिए। इससे भी हम अपना भविष्य सुधार सकते हैं। यह भी भाषा की मोहताज है। अपनी संस्कृति और विकृति दोनों से परिचित होने के लिए अपनी भाषा की धारा निरन्तर बहती रहनी चाहिए। अगर अपनी भाषा नहीं होगी तो हमें न तो अपनी अच्छाइयों का पता चलेगा और न ही बुराइयों का।

आज जो बच्चे अनिवार्य अंग्रेजी पढ़ रहे हैं और यह समझकर पढ़ रहे हैं कि वह उत्कृष्ट भाषा है, उनका ध्यान भारत की विरासत से हट रहा है। वे शेक्सपियर पढ़ेंगे, मिल्टन पढ़ेंगे, शैली पढ़ेंगे लेकिन कालिदास, तुलसी, सूर, कबीर, बिहारी उनके लिए अजनबी बन जाएंगे। हो सकता है कि, कॉन्वेन्ट' की अंग्रेजी पुस्तकों में शकुन्तला के बारे में या भरत के बारे में या कन्हैया की रासलीला के बारे में थोड़ा-बहुत पढ़ा दिया जाए। लेकिन जब ये बच्चे बड़े होंगे तो ये अपनी प्यास बुझाने के लिए ग्रन्थों को मूल रूप में पढ़ना चाहेंगे, घटनाओं के बारे में विस्तार से जानना चाहेंगे। मगर जानेंगे कैसे? ये सारे

ग्रन्थ अंग्रेजी में तो नहीं लिखे गए हैं। तब क्या होगा ? ये बच्चे बड़े होकर या तो अपने ही ग्रन्थों के अंग्रेजी अनुवाद पढ़ेंगे और राम को 'रामा', कृष्ण को 'कृष्णा' तथा कुन्ती को 'कुन्टी' कहेंगे या फिर इनका ध्यान पूरी तरह से अंग्रेजों की संस्कृति को प्रतिबिम्बित करने वाले अंग्रेजी ग्रन्थों की ओर चला जाएगा। शेक्सपियर के हेमलेट के हर वर्ष नये संस्करण निकलेंगे और तुलसी के 'रामचरित मानस' को दीमक खाया करेंगी। हॉब्ज का 'लेवियाथन' गर्म पकोड़े की तरह बिकेगा और कौटिल्य का अर्थशास्त्र बासी डबलरोटी की तरह सड़ता रहेगा।

मैं हेमलेट या मेकबेथ पढ़ने का विरोधी नहीं हूँ। मैं तो चाहता हूं कि आधुनिक भारत के नौजवान-भँवरे—दांते, अरस्तू, शेक्सपियर, हीगल, काम, सार्त्र, तॉल्सताय, येवतुशेन्को सभी का रस पीने लायक बनें लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि भाषा रेल की पटरी की तरह होती है। जिधर पटरी जाती है, रेल भी उधर ही जाती है। अगर पटरी खंडवा स्टेशन की तरफ जा रही है तो लाख कोशिश करने के बाद भी रेल इस सभा में शरीक होने के लिए माणिक्य वाचनालय में नहीं आ सकती ! आज हिन्दुस्तान की शिक्षा को रेल की अंग्रेजी की पटरी पर दौड़ाया जा रहा है। यह रेल कहाँ जाएगी ? यह रेल गंगा के घाट पर या कालिंदी के कूल पर या अयोध्या की गलियो में हजार साल की यात्रा के बाद भी कभी नहीं आएगी। यह जाएगी और सीधी जाएगी टेम्स के किनारे या ट्राफलगर स्क्वेयर या बकिंघम के राजमहल के पास ! क्यों ? क्योंकि वह अंग्रेजी की पटरी पर दौड़ रही है। याद रखिये,, भाषा जितनी अच्छी सेविका है, वह उतनी ही कठोर स्वामिनी भी है।

आदर्श एवं मूल्य अपनी ही भाषा में सरक्षित

जब आप विदेशी भाषा के साथ इश्क फरमाते हैं तो वह उसकी पूरी कीमत वसूलती है। वह अपने आदर्श, अपने मूल्य आप पर थोपने लगती है। यह काम धीरे-धीरे होता है। सौन्दर्य के उपमान बदलने लगते हैं, दुनियां को देखने की दृष्टि बदल जाती है। आदर्श और मूल्य बदल जाते हैं। आदर्श और मूल्य बदलें और तार्किक ढंग से बदलें तो मुझे कुछ आपत्ति नहीं है। विदेशी भाषा कुछ बेहतर मूल्य भी हमें दे सकती हैं लेकिन अपत्ति तो तब होती है जबकि एक खंडित चिन्तन का, एक दो मुँहे व्यक्तित्व का निर्माण होने लगता है। आप रहते तो हैं भारतीय परिवेश में और बौद्धिक रूप से समर्पित होते हैं, अंग्रेजी परिवेश के प्रति ! ऐसा व्यक्तित्व सृजनशील नहीं बन पाता। उदाहरण के लिए यूरोप का आदमी बादलों को देखकर प्रायः प्रसन्न नहीं होता। पहले से ही वे ठंडे देश हैं। फिर बादल आ जायें, आसमान कुछ-कुछ गहराने लगे तो मातम-सा छा जाता है। इसके विपरीत भारत में ज्यों ही बादल मँडराए कि मन-मयूर नांचने लगता है। मेघदूत की रचना होती है। हमारा देश सूरज का देश है, धूप का देश है। यूरोप धूप के लिए तरसता है और हम बादलों के लिए ! अब बताइए अंग्रेजी में कविता लिखने वाला हिन्दुस्तानी क्या करेगा ? अगर वह बादलों की तारीफ करेगा तो उसकी कविता उसके पश्चिमी स्वामियों के गले नहीं उतरेगी और अगर वह कड़ाके की धूप पर गीत लिखेगा तो घटाओं पर झूमनेवाला उसका दिल उसका साथ कहां तक देगा ?

भाषा के बदलने से मूल्य भी बदल जाते हैं। [हिन्दी में बड़ों को आप, बराबरी वालों को तुम और छोटों को तू कहने की सुविधा है लेकिन अंग्रेजी में सपाट सम्बोधन है—'यू'। पिताजी के लिए, पत्नी के लिए बच्चे के लिए-सबके लिए एक ही चाबुक है। उसी से हांकिये ! हमारे यहाँ देवर भाभी, जेठ, देवरानी, जेठानी, मौसा, मौसी, चाचा, फूफा, भानजा, भतीजा, साला, जीजा—सब सम्बन्धों के लिए निश्चित शब्द हैं। शब्दों से सम्बन्ध निश्चित होते हैं। जब मुझे कहा जाए कि ये आपके साले हैं तो मै तत्काल समझ जाऊँगा कि ये मेरी पत्नी के भाई हैं और जब यह कहा जाये कि ये आपके जीजा हैं तो मैं तत्काल समझ जाऊँगा कि ये मेरी बहिन के पति हैं लेकिन अंग्रेजी में तो सब घोटाला है। साला और जीजा दोनों के लिए एक ही शब्द है—ब्रदर इन-लॉ। इसका कारण स्पष्ट है। मानवीय सम्बन्धों की जिन बारीकियों का महत्त्व हमारी संस्कृति में है, वह पश्चिम में नहीं है। जॉर्जिया विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक डॉ० ललितकुमार सेठी ने बताया कि एस्किमो लोगों की भाषा में बर्फ के लिए लगभग १०० शब्द हैं जबकि हमारी भाषा में पाँच-सात ! बर्फ से हमारा उतना सबका नहीं पड़ता जितना एस्किमो का ! ब्रह्म के लिए, जगत के लिए, मोक्ष के लिए— एक-एक शब्द के लिए हमारे यहां जितने भिन्न-भिन्न शब्द हैं, उतने शब्द सारी यूरोपीय भाषाओं में कुल मिलाकर नहीं है ! और सिर्फ शब्द ही नही है, शब्दों के पीछे गहरी अनुभूतियाँ हैं। इस प्रकार संस्कृति से भाषा प्रभावित होती है और जैसा कि ऊपर कह आये हैं, भाषा से संस्कृति प्रभावित होती है। अपनी भाषा को छोड़कर विदेशी भाषा के पिछलग्गू बनने के पहले विद्वानों को इन तथ्यों पर विचार करना चाहिए !

महाराष्ट्र के हृदय से—

युवा आक्रोश और मराठवाड़ा

(हमारे विशेष संवाददाता श्री जयप्रकाश माने द्वारा)

सम्प्रति देश की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। हर एक प्रांत में स्थानीय प्रश्नों पर आंदोलन, तोड़-फ़ोड़ तथा व्यक्तिगत आतंकवाद शुरु है। ऐसी विषम प्रश्नांकित स्थिति बनाने के वे लोग ही जबाबदार है, जो सत्ता के पिपासू है।

२७ मार्च को मराठवाड़ा के परभणी जिले के बसमत तहसील में होने जा रहे 'जायकवाडी प्रकल्प' के लिए वॉच इन्सपेक्टर प्रशिक्षणार्थियों की १२० जगह भरनी थी, जिसके लिए परभणी जिले के बेकार उम्मीदवारों को एक ही दिन मुलाकात के लिए बुलाया गया था। सेवा योजन कार्यालय (एम्पलायमेंट ग्राफिस) की ओर से एकदम १६०० सो उम्मीदवारों को कॉल किया गया। व्याज आदि से पैसे निकालकर पूरे के पूरे उम्मीदवार २७ मार्च को बसमत एम्पलायमेन्ट ऑफिस पर उपस्थित हुये, पर इसके पहले ही १०० प्रशिक्षणार्थियों की भर्ती घूस लेकर की गयी थी जिसका परिणाम केवल उम्मीदवारों को नाटक के रूप में उनकी पूछताछ कर निकाल दिये। इससे बाहर के युवक संतप्त हो गये और आफिसर को अच्छी तरह इन्टरव्यू लेने की सलाह दी। इस पर आफीसर झट ऑफिस बन्द कर चल दिया। इधर जमाव अधिक प्रक्षुब्ध बन ऑफीसर पर पत्थरबाजी शुरू कर दिया। ऑफीसर ने फोन करके एस. आर. पी. फोर्स बुलाकर जमाव हटाने की कोशिश की, इसके परिणाम स्वरूप सारे शहर में तोड़-फोड़ शुरू हुई। इस पर गोली चलने से दो मुलाकात उम्मीदवार मारे गये तथा सात युवक घायल हुये।

उपरोक्त घटना पर लातूर की 'क्रांतिकारी जनवादी युवक सभा' नामक संगठन ने सर्वप्रथम सरकार के विरोध में पत्र निकालकर जाहिर निषेध एवं रोष प्रकट किया था। साथ ही महामंत्री जयप्रकाश माने 'आक्रोश' ने न्यायायिक जांच की मांग कर योग्य निर्णय न देने पर महाराष्ट्र को गुजरात बनाने का इशारा दिया था।

पिछले कई वर्षों से चला आया वाद-'मराठवाड़ा को ही मुख्यमंत्रीपद चाहिए' को लेकर उन लोगों ने या उनके पक्ष के संबंधियों ने बसमत घटना को माध्यम (साधन) बनाकर मराठवाड़ा में आन्दोलन चलाने का षड्यन्त्र रचा। इस समय दो एप्रिल से मराठवाड़ा विद्यापीठ से संलग्न अस्सी कॉलेजों में वार्षिक परीक्षायें चल रही थीं। आन्दोलन प्रमुखों ने प्रमुख विद्यार्थियों को साथ में लेकर परीक्षाओं पर बहिष्कार डालना शुरू किया। पूर्वयोजित आन्दोलनकारियों ने प्रथम परभणी बसमत के कालेजों में घुसकर परीक्षार्थियों को बाहर निकाला इसके पश्चात्, प्रश्न-पत्रों को जलाया। इस घटना की पुनरावृत्ति नांदेड जिला, बीड, औरंगाबाद तथा उस्मानाबाद जिलों के कॉलेजों में हुई। इस पर विद्यापीठ कुलगुरु श्री आर. पी. नाथ को भी परीक्षा स्थगन का निर्णय लेने के लिए बाध्य होना पड़ा।

आन्दोलन पर्यवसान; औरंगाबाद में गोली चली?

हिंसा और विध्वंस के लिए लोकतन्त्र में कोई स्थान नहीं है और प्रत्येक लोकतान्त्रिक सरकार का यह कर्त्तव्य है कि वह उसे हर तरह से रोके—चाहे फिर इसके लिए किन्हीं विशिष्ट परिस्थितियों में गोली का भी आश्रय लेना पड़े। पर इस आधार पर औरगाबाद में पुलिस द्वारा निहत्थी जनता पर किये गये इस गोली काण्ड के औचित्य को सिद्ध करना मुश्किल है जिसके परिणाम स्वरूप चार व्यक्तियों को तो जान से हाथ धोना पड़ा और मराठवाड़े के अन्य स्थानों पर ४५३ घायल हो गये।

आंदोलनकारी जनता विशेषकर छात्रों को पत्थरबाजी और आगजनी का आश्रय नहीं लेना चाहिए था—यह ठीक है, किंतु सवाल यह है कि, क्या महाराष्ट्र सरकार उन्हें इस बिंदु तक लाने के लिए जिम्मेदार नहीं है। उनका मन कितने क्षोभ एव रोष से व्याप्त होगा इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि, कर्फ्यू और दफा १४४ की कोई परवाह न करके उन्होंने ऐसा किया। आदमी जान पर खेलकर तभी कुछ करता है जब उसका क्षोभ सीमा पार कर जाता है और उसे यह विश्वास हो जाता है कि सीधे तरीके से कुछ होने वाला नहीं है। इसलिए इस प्रसंग में केवल छात्रों अथवा जनता को दोषी ठहराने से काम नहीं चलेगा।

एक अरसे से मराठवाड़ा के लोग यह मांग कर रहे हैं कि उनके क्षेत्र का त्वरित विकास होना चाहिए। मराठवाड़ा सन १९५६ से पहले हैदराबाद राज्य का भाग था और निजाम ने उसे कितना पिछड़ा हुआ रखा था, इसकी कल्पना इसी से की जा सकती है कि आबादी के लिहाज से बारह-पन्द्रह करोड़ रुपये का अधिकारी होते हुए भी प्रथम योजना की सारे राज्य के लिए निर्धारित ४५ करोड़ राशि में से उसके विकास के लिए केवल ढाई करोड़ रखा गया था। विडम्बना तो यह है कि वह भी खर्च नहीं किया गया। द्वितीय योजना में बंबई राज्य के एक अङ्ग के रूप में कुल सौ करोड़ की योजना में उसके लिए २५ करोड़ जरूर रखे गये थे, किन्तु तिसरी योजना में उसके विकास पर केवल ७६ करोड़ रुपये खर्च किये गये, जबकि कुल राज्य पर लगभग साढ़े चार अरब रुपये।

पिछले वर्ष मराठवाड़ा विकास परिषद् ने एक ज्ञापन देकर यह मांग की कि मराठवाड़ा के लिए एक क्षेत्रीय विकास बोर्ड स्थापित किया जाय और वह एक समयवद्ध कार्यक्रम निर्धारित करे। वह चाहती थी कि जिस तरह आंध्र में तेलंगाना को स्थान दिया गया और उसके विकास के लिए प्रधानमंत्री ने पांचसूत्री कार्यक्रम रखा वैसा ही कुछ मराठवाड़ा के लिए भी किया जाय। उसकी यह शिकायत है कि कोई राष्ट्रीय योजना तो क्या राज्यीय योजना के लिए भी उसे नहीं चुना गया। क्षेत्रीय तथा जिला योजनाओं पर अमल नहीं किया गया। नीतियां इस प्रकार निर्धारित की गयीं कि निजी क्षेत्र भी वहां पैसा लगाने को उत्साहित नहीं हुआ। ऐसी हालत में वहां क्षोभ का जो ज्वालामुखी फूटा है उसके लिए महाराष्ट्र सरकार से भिन्न और कौन जिम्मेदार हो सकता है?

काँग्रेस की जबावदेही

राजनैतिक पक्ष का कमजोर तथा नैराश्य से रोगग्रस्त बन जाना, और युवक वर्ग का, व्याप्त भ्रष्टाचार निर्मूलन के लिए खुद बखुद आवाज उठाना केवल मराठवाड़ा में ही नहीं हो रहा है। गुजरात में यही हुआ। बिहार में यही हो रहा है, और मराठवाड़ा में जो कुछ हो रहा है इससे कोई अलग चीज नहीं है, सुदैव से बिहार विद्यार्थी आन्दोलनकारियों के नेतृत्व के लिए सर्वोदय नेता जयप्रकाश नारायण आगे आये हैं। इस योग्यता और हिम्मत का कोई नेता अभी तक मराठवाड़ा के विद्यार्थियों को नहीं मिला है। परन्तु कदाचित कल तक मिल जायेगा, या ऐसे नेता के सिवाय ही विद्यार्थी आन्दोलन आगे चलता रहेगा? समय बतायेगा। परन्तु व्याप्त भ्रष्टाचार के वातावरण में जब महँगाई और बेरोजगारी अपनी विकरालता से समाज के पिछड़े तबके को अपने चपेट में ले रही हों उस समय विद्यार्थी वर्ग में इन समस्याओं से कोई आक्रोश न हो जो उनके तथा उनके परिवार के जीवन से सम्बन्धित है, बिलकुल असम्भव है। परन्तु जब विद्यार्थी मजबूर होकर मैदान में आता है तो सरकार उनकी आवाज गोलियों और लाठियों से दबाना चाहती है ऐसी स्थिति में विद्यार्थी तोड़-फोड़, आगजनी का अवलम्बन लेते हैं तो सरकार उसके लिए उन्हें ही क्यों जिम्मेदार मानती है? जबकि इसके लिए सरकार स्वयं जिम्मेदार है।

विपक्षियों की कार्यगति

महाराष्ट्र में विद्यार्थियों का ही नहीं बल्कि सर्वसामान्य लोगों का उद्रेक होने जैसी परिस्थिति नहीं है ऐसा तथाकथित उच्चपदस्थों का अनुमान है। परन्तु यह अनुमान मिठे के साथ अत्यन्त शोकदायक साबित होगा। कृत्रिम (टंयाई) अभाव, महँगाई और बेरोजगारी से महाराष्ट्र के लोग गुजरात-बिहार की अपेक्षा कम त्रस्त हैं ऐसा नहीं कहा जा सकता। जखीरेबाजी व भ्रष्टाचार का बोलबाला महाराष्ट्र में भी व्यापक है यह सर्वज्ञात है। 'गार्डियन' पत्र के प्रतिनिधि स्वार्भ ने कुछ दिन पहले कहा था कि महाराष्ट्र इस सम्बन्ध में पीछे नहीं है। पिछले दिनों बंबई का अहमदाबाद और महाराष्ट्र को गुजरात बनाने की कल्पना तथा वलगना बहुत ही फैल चुकी थी। पर बहुभाषी बम्बई शहर का वातावरण इस वलगना का प्रतिबंधक होगा, ऐसा दिखाई दिया। दक्षिण महाराष्ट्र में यह असंतोष सीमा-विवाद पर भड़क कर उसकी राख बन गई। पश्चिम महाराष्ट्र में श्रीमती इंदिरा गांधी और पुणे भेंट के विरोध ने इस असंतोष का गला घोंट दिया। इधर विदर्भ में असंतोषी विदर्भवादी चलवल का गाड़ा ओढणे का उद्योग खासदार जांबुवंतराव धोटे कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में जब विरोधपक्ष कमजोर हो, विद्यार्थियों ने महँगाई, बेरोजगारी तथा भ्रष्टाचार के विपरीत आवाज बुलन्द करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेकर जनजागरण का अत्यन्त पुनीत कार्य किया है।

आंदोलन मराठवाड़ा में ही क्यों?

पहले से ही मराठवाड़ा आर्थिक दृष्टि से तथा राजकीय दृष्टि से उपेक्षित समझा जाता है। साथ ही विपक्षी नेताओं का यहां अधिक प्रभाव नहीं है। फिर भी यहां के विद्यार्थी अधिक संगठित है। डॉ० अम्बेडकर जी ने अपने शैक्षणिक अभियान के लिए औरंगाबाद को ही केन्द्र बनाया था। परिणामतः यहां का युवक वर्ग सतर्क है। विशेषता यह है कि पहले हैदराबाद के तेलंगाना के आन्दोलन का मराठवाड़ा पर बहुत दिनों

तक प्रभाव नहीं पड़ा। परन्तु अब यहां के लोग विद्यार्थियों के नेतृत्व में संगठित होकर आगे बढ़ रहे हैं क्योंकि महाराष्ट्र में आज ऐसे एक भ्रष्टाचार विरोधी अभियान की अत्यन्त आवश्यकता है।

विद्यार्थियों को समाज के विरोधी तत्वों से सतर्क रहना चाहिए। ये तत्व अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति में आन्दोलन की गरिमा को चोट पहुंचाने का प्रयत्न करते हैं। यहां तक कि सरकार ऐसे तत्वों से तोड़-फोड़, आगजनी और लूटपाट करवाकर आन्दोलन को क्रूरता से दमन करने का हथकण्डा अपनाती है। अतः जनता के सामाजिक तथा राजनैतिक चेतना को विकसित कर विद्यार्थियों को अब आमूल-चूल परिवर्तन के लिए शक्ति लगानी चाहिए क्योंकि अब पूंजीवादी उत्पादन सम्बन्धों के आधार पर किसी भी समस्या का समाधान असम्भव है। प्रत्येक देश में समाजविकास के हर चरण में विद्यार्थी और युवा ही आगे बढ़ते हैं, क्रान्तिकारी विचारधारा से उत्प्रेरित होकर, सराबोर होकर और पूरी तरह से समर्पित होकर, जन साधारण के पास जाते हैं, जनता को जगाते हैं, हजारों की तादाद में संगठित करते हैं और उनमें राजनैतिक ताकत बनाते हैं। तब समय आता है जनता के संघर्ष करने का, जिसे हम क्रान्ति कहते हैं। अतः विद्यार्थियों को परिवर्तन की धार को तीव्र कर शोषण मुक्त समाज की रचना में अपनी पूरी शक्ति लगानी चाहिए। *

हिन्दी और हरियाणा

विजयपालसिंह विद्यालंकार एम०ए०

कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय हरियाणा का ऐसा विश्वविद्यालय है जहां से संस्कृति का प्रचार प्रसार होता है। आज तक कुरुक्षेत्र—विश्वविद्यालय में हिन्दी एक अनिवार्य विषय के रूप में रही है। आज जब सभी हरियाणा के महाविद्यालय इस विश्वविद्यालय से सम्बन्धित होने जा रहे हैं, हिन्दी की अनिवार्यता समाप्त की जा रही है। आश्चर्य की बात तो यह है कि इंगलिश को अनिवार्य विषय के रूप में ही स्वीकार किया जा रहा है।

मैं शिक्षा मन्त्री, मुख्य मन्त्री, राज्यपाल एवं सम्बंधित अधिकारियों का ध्यान इस तरफ आकर्षित करना चाहता हूं। हरियाणा हिन्दी भाषी प्रदेश है। इसमें बोलने वालों की संख्या इंगलिश से हिन्दी वालों की अधिक है। अतः हिन्दी को वैकल्पिक विषय क्यों बनाया जा रहा है? आज जब प्रदेश में इंगलिश को विकल्प में रखा जाना चाहिए था हिन्दी की दुर्दशा देखी नहीं जाती। यह विषय जहां हरियाणा-वासियों के लिए खेद का है, वहाँ प्रत्येक हिन्दी प्रेमी के लिए यह चिन्ता का विषय है। अतः संपूर्ण हिन्दी प्रेमी वर्ग इसका खुलकर विरोध करें और हिन्दी को हरियाणा में तथावत बनाये रखें।

आर्य सभा हरियाणा में नवयुवकों के कर्णधार के रूप में कार्य कर रही है। समस्त नवयुवक आर्य सभा की तरफ अपना ध्यान केन्द्रित किए हुए हैं। आर्य सभा ने मद्य निषेध आन्दोलन, किसान आँदोलन, अध्यापक आँदोलन एवं बिजली कर्मचारी आदि आंदोलनों में पूर्ण तत्परता से योग दान दिया है। अतः आज भी नवयुवक वर्ग अपने नवयुवक आर्यसभा के नेताओं से हिन्दी के हित की आशा करता है। यदि हरियाणा में हिन्दी को अनिवार्य विषय न रखा गया तो इसके लिए आंदोलन छेड़ दिया जायेगा। अंग्रेज जरूर चले गये परन्तु ये काले अंग्रेज न जाने कब अपनी संस्कृत को समझ पायेंगे।

—हिन्दी विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

हरयाणा में पुलिस द्वारा विभत्स अत्याचार

स्वामी अग्निवेश प्रधान आर्य सभा ने हरयाणा में पुलिस राज की तीव्र भर्त्सना करते हुए कहा कि रिवासा में पुलिस द्वारा अद्वितीय अमानवीय घटना का तुरन्त न्यायिक जांच न कराना, इस प्रदेश के मुख्यमन्त्री की घोर नीचता और मूर्खता का प्रबल प्रमाण हैं। जिस देश की प्रधान मन्त्री एक महिला हो उसमें महिलाओं की बेईज्जती एवं उनकी दर्दनाक हत्या एक अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है।

रिवासा से अधिक अपमान जनक काण्ड और क्या हो सकता है और फिर भी हरियाणा की जनता का खून नहीं खौला, यह शर्म की बात है। विद्यार्थी रिवासा काण्ड को कभी नहीं भूलेगा। वह हरियाणा में पुलिस तथा सरकार की दमनकारी नीतियों के आगे संगठित होकर उनका मुकाबला करने के लिए अवश्य आगे बढ़ेगा।

आशा है कि २६ मई ७४ को साढ़े दस बजे किरोड़ीमल पार्क भिवानी में सर्व खाफ (सर्व जातीय) पंचायत में भाग लेने के लिए लोग अधिक से अधिक संख्या में पहुंचेगे। इस पंचायत में पश्चिमी यू. पी., दिल्ली, हरयाणा तथा साथ लगती हुई राजस्थान एवं पंजाब के सर्व खाफों के प्रतिनिधि भाग लेंगे। इसमें, गाँव बेरी में महंगाई को देखते हुए ब्याह-शादियों पर किए जा रहे खर्चों पर रोक लगाने के लिए पारित प्रस्तावों पर जहां विस्तृत रूप से विचार होगा, वहां भिवानी

जिला के गांव रिवासा में पुलिस द्वारा किए गये विभत्स अत्याचारों पर भी गम्भीरता से विचार होगा। इस गांव में पुलिस ने वृद्ध महिला श्रीमती रामजोत विधवा हरनाम सिंह आयु ८२ वर्ष को अत्यन्त बेरहमी के साथ पीटकर मौत के घाट उतारा और उसके उपरान्त उसे जला दिया जिसमें उसके घर की सारी सम्पत्ति जल कर राख की ढेर हो गई। इतने पर भी जब उसे संतोष नहीं हुआ तो इसी बुढ़िया के दो पुत्र एवं एक पुत्री (बहिन और भाइयों) को एक दूसरे के आमने सामने नंगा करके थाना सदर भिवानी में अपमानित किया गया तथा पीटा गया। इस तरह पुलिस ने खुलेयाम मानव समाज को कलंकित किया है। इस घटना पर अत्यन्त संजीदगी से विचार करके पंचायत ऐसे जुल्मों को रोकने के लिए कठोर से कठोर कदम उठायेगी। सामाजिक सुधार करना और अन्याय के विरुद्धसंघर्ष करना इस पंचायत का पुनीत कर्त्तव्य है।

(आवरण पृष्ठ २ का शेषांश)

सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक ठहराया गया है। आर्थिक विषमता वाले समाज में आर्थिक शुद्धिगौण हो जाती है। वर्तमान सामाजिक विकास की प्रक्रिया को दृष्टि में रखकर निजी स्वामित्व द्वारा मनुष्य को उनके मूलभूत आवश्यकताओं की गारंटी देना सम्भव नहीं रह गया है। और इसके बिना मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति की बात करना निरर्थक है। अतः इस प्रकार के भोजन की व्यवस्था तथा मानव के स्वभाव तथा उद्देश्य के अनुकूल शिक्षा प्रणाली अपनाना एक शोषण मुक्त व्यवस्था के द्वारा ही सम्भव है। अतः वर्तमान सत्ता को ध्वस्त करना ऐसे नवीन समाज के निर्माण के लिए अत्यन्त आवश्यक है। आर्य समाज तथा आर्य सभा को इस ऐतिहासिक गुरु-तर दायित्व का निर्वाह करना होगा। आज की विषम स्थिति में यह कुशल नेतृत्व और अनुशासन बद्ध मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पित सगठन द्वारा ही सम्भव हो सकता है। आर्य समाज तथा आर्य सभा को प्राप्त युवा नेतृत्व इस दिशा में प्राण-प्रण से सचेष्ट है, यह प्रसन्नता की बात है।

विज्ञानवेत्ता आस्तिक पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

योरुप और अमरीका के बहुत से विद्वान संस्कृत, वेद और योग से प्रेम रखते आये हैं। जहां हम योरप वालों की उनके स्वाध्याय के कारण प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते, वहां हम यह कहे बिना भी नहीं रह सकते कि विदेशियों ने बहुत से साहित्य का ठीक अर्थ न समझ सकने के कारण अपूर्व ज्ञान के भण्डार वेद के साथ काफी खिलवाड़ करने की कोशिश की। उन्होंने जहां गूढ़ साहित्य का रहस्य साधारण जनता तक पहुँचाने का प्रयत्न किया, वहां उन्होंने साथ में ऐसी चालबाजी को अपनाया कि लोग उससे तुरन्त घृणा भी करने लग जायें। उनकी इस नीति में बहुत से कारण छिपे हो सकते हैं। हम यहां इसकी चर्चा करना उपयुक्त नहीं समझते। मोनियर विलियम्ज नामक विद्वान ने "Indian Wisdom" (भारतीय बुद्धिमत्ता) की एक पुस्तक लिखी। इस पर गुरुदत्त ने बहुत से व्याख्यान दिये और इसमें जो त्रुटियां थीं उनको प्रकट किया।

एक बड़ा काम जो पं० गुरुदत्त जी ने किया वह उनका स्वर विद्या को पढ़ना और वेदमन्त्रों के उच्चारण की शुद्ध रीति जारी करना था। यदि वह और कुछ न भी करते तो यही काम उनको महापुरुष की पदवी प्रदान कर सकता था।

वेदों के सच्चे अर्थों से शून्य होकर ब्राह्मण लोगों ने वेदों को कलंकित कर दिया था। वेदों पर से बहुत से लोगों की श्रद्धा जाती रही थी। नवीन शिक्षा से शिक्षित लोग वेदों के सम्बन्ध में हजारों भांति भांति के प्रश्न किया करते थे। उन सब का युक्ति युक्त, विज्ञान-सिद्धि उन्हीं के ढंग पर उत्तर देने के लिए एक व्यक्ति की भारी आवश्यकता थी। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये पं. गुरुदत्त सोलहो आने ठीक उतरे। उन्होंने वेदों का स्थान आधुनिक साइन्स से उच्चतर प्रमाणित किया। सन् १८८८ में लाहौर आर्य समाज के उत्सव पर व्याख्यान देते हुए आपने कहा—"आधुनिक विज्ञान में चाहे कितने भी गुण क्यों न हों, वह चाहे हजारों वर्ष तक चीर फाड़ करता रहे, परन्तु वह जीवन की समस्या का हल नहीं निकाल सकता। जीवन की समस्या का हल वेदों की सहायता के बिना नहीं हो सकता।" यह शब्द उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे बड़े तत्ववेता पं० गुरुदत्त के हैं जिन्होंने पाश्चात्य विद्याओं के आधार पर वेदों के महत्व का दिग्दर्शन कराया। स्वामी दयानन्द अंग्रेजी भाषा में प्रवीण न होने के कारण पाश्चात्य विद्वानों के सम्पर्क में पूरी तरह न आ सके थे। गुरुदत्त ने इस काम को पूरा करके वेदों की सर्वश्रेष्ठता का सिक्का पश्चिम के लोगों पर जमाया।

मृत्यु के समय पण्डित गुरुदत्त २६ वर्ष के युवक थे। ऋषि दयानन्द के निर्वाण के बाद आप ६ वर्ष जीवित रहे। इन छः वर्षों में आपने वैदिक साहित्य की बड़ी भारी सेवा की, आर्य समाज का प्रचार किया। अपने शरीर तक का इन कामों के लिए ध्यान न रक्खा। आपने कुछ उपनिषदों का अनुवाद किया था। जिसे 'पार्लियामेण्ट आफ रिलिजन्स' के अवसर पर अमरीका भेजा गया था। किसी अमरीकन ने उसे प्रकाशित कराया है। आपने 'वेद का शब्दकोष' लिखा था, जो आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी में पढ़ाया जाता है। यह कार्य इस बात के साक्षी हैं कि मुनिवर पं. गुरुदत्त अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर रहे थे, परन्तु निष्ठुर मृत्यु ने उन्हें असमय में ही छीन लिया।

परन्तु गुरुदत्त का जीवन आर्य युवकों के लिए एक आदर्श वस्तु है, जिसके अन्दर उच्च प्रेरणाओं की काफी सामग्री मौजूद है। आशा है भारत के होनहार युवक पं० गुरुदत्त के पद-चिन्हों पर चल कर उनको अमर बना देंगे।

समाचार दर्शन

हरयाणा आर्य युवक परिषद् के तत्त्वावधान में

ब्रह्मचर्यप्रशिक्षणशिविर

वैदिक आश्रम दिल्ली रोड, रेवाड़ी

१० जून से १६ जून १९७४ तक

इसमें चुने हुए प्रतिभाशाली एवं निष्ठावान युवक भाग लेंगे। प्रवेश शुल्क दस रु० प्रति युवक होगा। योग्य व्यायाम आचार्यों के द्वारा दण्ड, बैठक आसन, प्राणायाम, लाठी, मल्लखभ आदि का प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा विभिन्न विषयों के विद्वानों द्वारा बौद्धिक प्रशिक्षण का समुचित प्रबन्ध होगा। प्रत्येक युवक को खाकी नेकर, सफेद सैण्डो बनियान, केसरिया लंगोट, एक लाठी, सफेद फ्लीट, सफेद जुराब, डायरी, पेन तथा ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लाना होगा। शिविर प्रशिक्षणार्थियों को ३१मई तक योग्यता सहित अपने प्रार्थना-पत्र ऊपर लिखे पते पर भेजने चाहिये।

संयोजक

–शक्तिवेश

शुद्धि-पत्र

पाठक वृन्द ! वैदिक समाजवाद पुस्तक में

१- "शहीद भगत सिंह की हुंकार में" "असेम्बली बम केस में दिए गये १९२६ के ब्यान से" इस वाक्य में १९२६ के बजाय १९२९ पढ़ें।

२- पाठक गण ! राजधर्म के अप्रैल द्वितीय अंक के सम्पादकीय के दूसरे पैरा ग्राफ में को "इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि भारत एक पूंजीवादी देश नहीं है" के बजाय पूंजीवादी देश है पढ़ें।

आर्य समाज अबोहर

आर्य समाज अबोहर के वार्षिकोत्सव पर आयोजित राष्ट्र-रक्षा-सम्मेलन की यह वृहद सभा पूर्ण विचार-विनिमय के उपरान्त अनुभव करती है कि राष्ट्र में व्याप्त दुराचार, अनाचार एवं भ्रष्टाचार के लिये आज की अर्थव्यवस्था ही उत्तरदायी है। जिसमें कि सम्पत्ति का अधिकार कर्म के आधार पर न होकर जन्म के आधार पर है। आर्य समाज ने वर्णव्यवस्था और जाति परम्परा को भी जन्म से न मानकर गुण-कर्म-स्वभाव से माना है।

अतः सभी आर्थिक समस्याओं के समुचित समाधान तथा वर्तमान अव्यवस्था से बचाव का यही एक मात्र उपाय है कि सम्पत्ति का अधिकार भी गुण-कर्म-स्वभाव के आधार पर हो। प्रत्येक व्यक्ति की सम्पूर्ण स्वार्जित सम्पत्ति आजीवन उसके पास रहे, किन्तु मरणोपरान्त वह सारी स्वतः राष्ट्र के आधीन हो जाए। प्रत्येक बालक को शिक्षाकाल में संपूर्ण शिक्षा प्रबंध तथा सफल जीवन-उपयोगी साधन राष्ट्र से समान रूप में प्राप्त हों। और निःशुल्क न्याय, स्वास्थ्य, आजीविका एवं विचार स्वातन्त्र्य को मौलिक अधिकार माना जाए। इसप्रकार व्यक्ति अपने कर्म के द्वारा न्यायपूर्वक सम्पत्ति अर्जित करके आजीवन त्यागपूर्वक उपभोग करने का अधिकारी रहे किन्तु उस सम्पत्ति का वास्तविक स्वामी व्यक्ति को नहीं, राष्ट्र को माना जाए तथा सब आय स्रोत राष्ट्राधीन हों।

यह सभा सर्व सम्मति से इस प्रस्ताव को सहर्ष पारित करती हुई भारत सरकार से प्रबल अनुरोध करती है कि वह वर्तमान ढांचे में आमूल परिवर्तन करके उक्त वैदिक व्यवस्था को अविलम्ब लागू करे।

चुनाव समाचार

आर्यसमाज कपूरथला

आर्य समाज कपूरथला का वार्षिक चुनाव दिनांक २-४-७४ रविवार को सर्व सम्मति से इस प्रकार हुआ।

प्रधान—महाशय दरबारी लाल जी

मंत्री —श्री हरीसिंह जी

कोषा०—श्री रोशन लाल जी सहगल

आर्य समाज मिसरी [चरखी दादरी]

महाशय मौजीराम जी व शान्ता कुमार आर्य के सफल प्रयास से गांव मिसरी (चरखी दादरी) में २५-४-७४ को नई आर्य समाज की स्थापना की गई। जिसके पदाधिकारी निम्नलिखित हैं :—

प्रधान–श्री सूरजभान यादव

मन्त्री–वैद्य मोहरसिंह आर्य हितैषी

कोषाध्यक्ष–श्री शेरसिंह जी

पुस्तकाध्यक्ष– प० चिरंजीलाल जख्मी

संरक्षक–श्री सूरतसिंह सरपंच

आर्यसमाज औराद शहाजनी

आर्य समाज औराद शहाजानी का निर्वाचन २१-४-७४ को सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी मनोनीत हुए।

प्रधान—श्री शिवाजी राव जाधव

मंत्री—श्री गणपत राव जी

निरमनाले

कोषाध्यक्ष—श्री गोविन्द लाल जा

चण्डक

महेन्द्रगढ़ जिला की आर्यसमाजें

उत्सव, शिविर, संस्कार आदि में भजन मण्डली, उपदेशक, शिक्षक, पुरोहित एवं विद्वान वक्ताओं की व्यवस्था के लिये निम्न पते पर सम्पर्क करें।

स्वामी शक्तिवेश

वैदिक आश्रम-दिल्ली रोड,

रेवाड़ी

महेन्द्रगढ़ जिला आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह नारनौल में सम्पन्न

महेन्द्रगढ़ जिले का आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह इस जिले के समस्त आर्य समाजों की तरफ से खरखड़ी मोहल्ला नारनौल के प्रांगण में बड़े धूमधाम के साथ २७-२८ अप्रैल को सम्पन्न हुआ। इस समारोह के अवसर पर २७ अप्रैल को एक विशाल जलूस निकाला गया जिसमें ऊँटों, हाथियों, बैल गाड़ियों, मोटर साइकिलों, ट्रैक्टरों के अतिरिक्त दस हजार आर्य जनता ने भाग लिया। ओ३म् के झण्डों और केसरियाँ पगड़ियों द्वारा जलूस विशेष शोभायमान हो रहा था।

आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी, आर्य सभा प्रधान स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी शक्तिवेश जी, गंगाराम एडवोकेट, उत्तम चन्द शरर, वैद्य रामकिशोर, एवं ब्र० रामकिशन जी, खेमसिंह तथा अन्य प्रसिद्ध भजनमण्डलियों ने इस अवसर पर जनता को अपने विचार दिए। इस सम्मेलन के सयोजक पं० ताराचन्द वैदिक तोप तथा ईश्वरदास आर्य आदि अनेकों आर्य समाज के निष्ठावान कार्य-कर्त्ताओं ने समारोह को सफल बनाने के लिए प्रशंसनीय कार्य किया।

ओवरलाक मजदूर सभा लुधियाना का विशाल अधिवेशन

यह सा० गुरमीत सिंह जी की अध्यक्षता में १ मई १९७४ को सम्पन्न हुआ। इसमें ज्ञानी गुरदय सिंह जी ने ध्वजा-रोहण किया। श्री सुदेश कुमार तथा सा० बकशीस सिंह जी के ओजस्वी भजन हुए।

लुधियाना आर्य सभा के प्रधान ओमप्रकाश गुप्ता, श्री दीवान रामसरण दास, सोसलिस्ट नेता मुरारी लाल निर्मल, प्रो० आनन्द किशोर जी ने अपने विचार रखे। अन्त में श्री विक्रम सिंह विवेकी जी का बहुत ही प्रभावशाली भाषण सुनने के लिये हजारों की संख्या में लोग उमड़ पड़े। उन्होंने कहा कि जब तक कुछ गिने-चुने पूंजीपति देश की सत्ता नहीं छोड़ते तब तक हमें डट कर लड़ना होगा और अपना अधिकार छीनना पड़ेगा। अन्त में उन्होंने सभी को आह्वान किया कि सभी एक ओ३म् के झन्डे के नीचे आये ताकि महर्षि स्वामी दयानन्द जी के सपनों का भारत बनाया जा सके।

वेदरत्न आर्य, सभा मन्त्री

राजधर्म प्रकाशन के लिए राजधर्म प्रेस, भज्जर रोड, रोहतक से स्वामी अग्निवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। फोन : ८८२

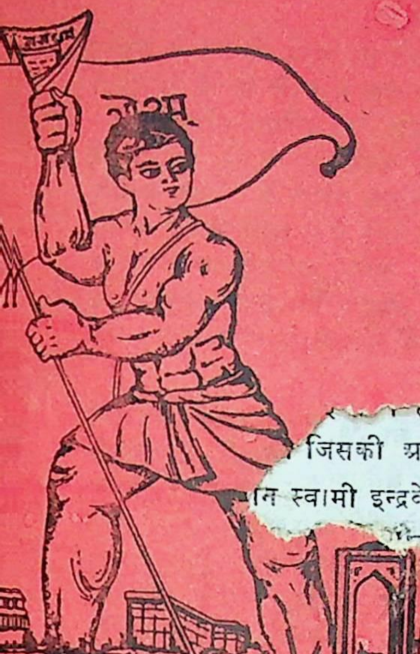
पंजीयन क्रमांक RTK 28
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

राजधर्म
रोहतक
१२ मई १९७४

॥ ओ३म् ॥

पाक्षिक

राजधर्म



विश्व शान्ति और आणविक शक्ति का एकाधिकार

रेल हड़ताल और जनता

भाषा आन्दोलन और पेट की लड़ाई

पशुसंवर्धन बनाम गो-माँस का निर्यात

फिल्मी अश्लीलता का दुष्प्रभाव

आर्य कार्य कर्त्ताओं का सम्मेलन—एक दृष्टि

प्रधान सम्पादक
स्वामी अग्निवेश

सह सम्पादक
गिरजेश्वर

मई द्वितीय
वर्ष ६ : अंक १०
वार्षिक शुल्क १५ रु०
एक प्रति ७० पैसे

रेल हड़ताल और जनता

स्वतन्त्रता के २६ वर्ष उपरान्त भी भारत की कांग्रेसी सरकार मजदूर-कर्मचारियों के वेतन और काम की शर्तों में समानता नहीं ला सकी। यह किसी भी सभ्य सरकार के लिए अत्यन्त लज्जाजनक बात है। आर्यसभा रेलवे मजदूर कर्मचारियों के न्यायोचित मांगों का हार्दिक समर्थन करती है और भारतीय सरकार की रेलवे मजदूर कर्मचारियों के साथ अपनाए गए घोर दमनकारी हथकण्डों की प्रबल भर्त्सना करती है तथा भारत के किसान, मजदूर, शिक्षक, विद्यार्थी एवं छोटे दूकानदार आदि सभी तबके के लोगों से रेलवे हड़ताल के दृढ़ समर्थन की आशा करती है।

यह रेलवे हड़ताल देश के मजदूर आन्दोलन में एक ऐतिहासिक कदम हैं। सरकार के गलत रवैये के कारण रेल मजदूर कर्मचारियों को विवश होकर हड़ताल का अवलम्बन लेना पड़ा। किसी भी देश के रेलवे जैसे महत्वपूर्ण संस्थान में यदि मानवीय मूल्यों की महत्ता स्वीकार कर कर्मचारियों और मजदूरों के साथ मनुष्य जैसा व्यवहार न किया जाय तो यह बड़े शर्म की बात है। आज भी रेल मजदूरों के एक हिस्से को दिन में १४-१४ घण्टे काम करने पड़ते हैं। आजादी के २६ वर्ष बाद भी गरीबी हटाने का नारा देने वाली सरकार से लोको के मजदूरों को दस घण्टे काम के लिए हड़ताल द्वारा लड़ाई लड़नी पड़े, कितने दुःख की बात है। सरकार और रेलवे बोर्ड अब भी दस घण्टे काम करने के समझौतों को खत्म करने पर तुली हुई है। वेतन आयोग की रिपोर्ट के अनुसार रेलवे के निचले दर्जे के कर्मचारियों और दूसरे सरकारी क्षेत्रों में काम करने वाले कर्मचारियों के वेतनों में भारी अन्तर है। उदाहरण स्वरूप रेलवे के चपरासी को मात्र १५० रु० महीने मिलता है जबकि दूसरे सरकारी क्षेत्रों में काम करने वाले चपरासी को ३०० रुपये से भी अधिक मिलता है।

ऐसी स्थिति में आज जब कमर तोड़ महंगाई से जीवन दूभर बन गया है, मुद्राविस्तार से लोगों की क्रय शक्ति क्षीण होती जा रही हो और उस पर नौकरशाही और व्याप्त भ्रष्टाचार जीवन की आशाओं पर पानी फेर रहा हो तथा जब मजदूरों के जीवन की बुनियादी माँगों पर बात चीत सरकारी तानाशाही प्रवृत्ति के कारण टूट चुकी हो, रेलवे कर्मचारी मजदूरों के सामने हड़ताल करने के सिवाय क्या विकल्प बच रहता है? रेलवे मजदूरों ने जो भी मांगे प्रस्तुत की हैं, वे जीवन की बुनियादी मांगे है, उस पर किसी भी सभ्य सरकार को गम्भीरता से विचार करना चाहिए। परन्तु बात को बीच में खत्म कर सरकार तीस हजार से ज्यादा कर्मचारियों को अब तक गिरफ्तार कर चुकी है और कम से कम एक हजार कर्मचारियों को इकतरफा तौर पर बर्खास्त कर चुकी है। सरकार की इस बर्बरता और ज्यादती के बावजूद उनके घर की औरतों ने जो बहादुरी दिखाई है वह बेमिशाल है। घोर सरकारी दमन के बावजूद रेलवे कर्मचारियों ने जिस अनुशासन और दृढ़ता का परिचय दिया है वह बेजोड़ ऐतिहासिक घटना है संसद सदस्यों और राजनीतिक नेताओं को बन्दी नेताओं से मिलने की अनुमति नहीं दी गई। गृह-मन्त्रालय के अधिकारियों ने जार्जफर्नाडीज के पत्र को दैनिक पत्रों में छपने रोकने का घृणित प्रयास किया जिसमें उन्होंने रेल मन्त्री को जेल के अन्दर ही दोबारा बात-चीत करने के लिए लिखा था। इन सारी बातों से सरकार के असली मंसूबों का स्वतः पता चल जाता है।

सरकार ने रेल कर्मचारियों को वेतन भी देने से इंकार कर दिया है यद्यपि ये वेतन हड़ताल से पहले के हैं। इससे सरकार के घोर तानाशाही प्रवृत्ति का परिचय मिलता है। सरकार रेल कर्मचारियों और उनके परिवारों को भूखों मारना चाहती है। सरकार हड़ताल तोड़ने के लिए प्रत्येक घृणित प्रयास का अवलम्बन ले रही हैं। इसने भारत सुरक्षा कानून और आन्तरिक सुरक्षा कानून का हड़ताल तोड़ने में खुल कर इस्तेमाल किया है। यद्यपि इस उप महाद्वीप में भारत - पाक - बंगलादेश समझौता होने के बाद उसका अब कोई औचित्य नहीं रह गया है।

स्वतन्त्रता के २६ [illegible] मजदूरों ने वर्तमान समय में जो भी मांगें र[illegible] भी प्रकार की अस्वभाविकता नहीं है [illegible] अनुसार वेतन प्राप्त करना कर्मचारी-[illegible] का स[illegible] मांग हैं। आठ घण्टे काम के बाद आवश्यकतानुसार वेतन प्राप्त किए बिना वे मुद्रास्फीत, महंगाई एवं मालिक और सरकार के षड्यन्त्रों से नहीं बच सकते। इस बुनियादी मांग को मजदूर वर्ग के हर हिस्से को हासिल करना है। इस मांग के अन्तर्गत मजदूर वर्ग पूरे समाज के लिए लड़ रहा है। केजुअल मजदूरों को स्थायी करना और आठ घण्टे काम का नियम चालू करना ये सब प्राथमिक मांगें हैं जिन्हें कोई भी सभ्य सरकार नहीं ठुकरा सकती है।

आवश्यकता के अनुसार वेतन की मांग के फैसले के पहले रेल-मजदूरों को सरकारी क्षेत्र के उद्योगों के बराबर वेतन और बोनस तथा ट्रेड यूनियन के पूरे अधिकारों का माना जाना मात्र रेल मजदूरों के लिए ही नहीं बल्कि पूरे ट्रेड यूनियन आंदोलन के लिए बड़े महत्व का है। रेल मजदूरों को डिपार्टमेण्टल मजदूर मानना, कितने ही तरह की आजादी से उन्हें वंचित रखना और सामान्य ट्रेड यूनियन आन्दोलन से उन्हें दूर रखना—इन बातों से सामान्य आन्दोलन को बहुत हानि पहुँचती है। इन प्रतिबंधों को समाप्त करना पड़ेगा।

इसके साथ ही जो और जरूरी माँग है, वह आन्दोलन में हिस्सा लेने के लिए मजदूरों पर चलाए गये सभी मुकदमों को वापिस लेना है। सस्ते दाम में गल्ले की दूकानें और वैज्ञानिक ढंग से काम का मूल्यांकन भी जरूरी मांगें हैं।

रेलवे मजदूरों की उपरोक्त मांगें अत्यन्त बुनियादी मांगें हैं। जनता के सस्ते यातायात को चालू रखने वाले कर्मचारियों की ये न्यायोचित मांगे अवश्य पूरी होनी चाहिए। इसमें संदेह नहीं कि रेल की हड़ताल से जनता को बड़ी परेशानी हो रही है। होने वाली परेशानी से लाभ उठाकर सरकार जनता को मजदूरों के विरोध में भड़का रही है। परन्तु जनता को ऐसे बेरहम सरकार द्वारा मजदूरों पर जुल्म नहीं ढाने देना चाहिए। रेल मजदूर जनता के ही अङ्ग हैं समाज का गुलाम मानकर उन्हें दूसरों की तरह ही उचित मजदूरी, बराबर मजदूरी के अधिकारों से वंचित नहीं रहने देना चाहिए। यह हड़ताल हमारे देश की जनता के संघर्ष का अङ्ग है। समाज के सभी हिस्सों को इसका पूरी तरह से समर्थन करना चाहिए जिससे इस संघर्ष को कुचलने की सरकारी कोशिशों को नाकामयाब किया जा सके।

करनाल में आर्य कार्यकर्त्ता

१९ मई को प्रातः पांच बजे जब मैंने अपने साथियों के साथ बस द्वारा करनाल सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए प्रस्थान किया तो मेरे दिल में विविध कल्पनायें पैदा हो रही थी। जब हम ९ बजे रामलीला भवन सम्मेलन स्थल पर पहुंचे तो स्वामी अग्निवेश जी यज्ञ पर अपना उपदेश देकर कार्यकर्त्ताओं को विभोर कर रहे थे। स्वामी अग्निवेश जी ने बताया कि यज्ञ हमें आत्म समर्पण की भावना द्वारा संगठन में बन्ध कर चलना सिखाता है। प्रातः काल की वेला में मधुर तथा प्रेरणाप्रद उपदेश सुनकर लोगों के दिल में एक अपार खुशी छाई हुई थी। ठीक दस बजे सम्मेलन का कार्यक्रम शुरू हो गया जिसकी अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी ने की। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वीरेन्द्र जी ने लोगों को अतीत कालीन कटुता भुलाकर इकट्ठे होकर चलने का आह्वान किया। प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने इन्द्रप्रस्थ आदि उजड़ी हुई संस्थाओं के सुधार की योजना रखते हुए बताया शीघ्र ही इन्द्रप्रस्थ में एक उपदेशक विद्यालय शुरू हो रहा है।

इसी बीच में प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वीरेन्द्र जी ने सभा के कार्यक्रम को गतिशीलता देने के लिए एक घोषणा पत्र पढ़कर सुनाया। इस घोषणा पत्र में आर्यसमाज के विस्तृत कार्यक्रम पर विचार किया गया है। आर्य समाज की शिक्षा संस्थाओं में धर्म शिक्षा, देश भक्ति, चरित्र आदि की भावना भरकर युवकों को आर्य समाज के प्रचार के लिए तैयार किया जाएगा। शारीरिक, बौद्धिक और सामाजिक शिक्षा द्वारा आर्य युवकों का एक प्रचण्ड संगठन बनाया जाएगा, जो आर्य समाज रूपी माँ के लिए जिऐंगे और मरेंगे। प्रचार प्रणाली को सुधारने तथा उसमें गतिशीलता लाने के लिए उपदेशक विद्यालय तथा कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिबरों की व्यवस्था होगी जिससे आर्य समाज के लिए प्रशिक्षित, आत्मसमर्पण की भावना रखने वाले होनहार देशभक्त, पुरोहित और उपदेशक तैयार किए जा सकें। घोषणापत्र की एक और विशेषता थी कि उसमें माताओं को भी उनके उचित अधिकारों से वंचित न करके सभी कार्यों में प्राथमिकता दी जाए। जन आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए बेरोजगार तथा साधनहीन व्यक्तियों के लिए निर्वाह की व्यवस्था की जाये। मंच से कही गई एक और बात जो सबसे ज्यादा मेरे दिल को छू गई, यह थी—आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों को सहायता दी जाए और दलित भाइयों के बच्चों को यथाशक्ति गुरुकुल आदि में पढ़ाने की व्यवस्था

ंग और

ातें कहीं तो हर की
ाष्ट्र बनाना चाह
कत्सा, न्याय, भो
रोजगार का मौ
ागरिक को निि
। उस विराट भ
सिक्ख भाई थे
न्द कर रहे थे
। पूंजीवाद मिटायें
भावनाओं को व्य

१-१२ मई को नं
के अधिवेशन
मुझे वहां दिखाई
मैं तो कहना चाह
स्थापना करके वहां
ार्यराष्ट्र'' की भा
हुआ देखना चाहते

मार विवेकी

के अन्दर समाज
के प्रति विद्रोह
ो हैं, उन नौजवान
एकजुट होकर का
रूरत है। कुछ नौज
देकर वहां आर्यराष्
ा हैं। जगह जग
अतीत शिथिलता
ला हुआ है, जहां ह
न्देश लेकर पहुँचन
स्याओं के समाधान
भी हमें वहां वहान
आहों पर वाह, वा
टाने का संकल्प लेकर
ाज जरूरत है।

रेल हड़ताल और जनता

स्वतन्त्रता के २६ वर्ष उपरान्त भी भारत की कांग्रेसी सरकार मजदूर:कर्मचारियों के वेतन और काम की शर्तों में समानता नहीं ला सकी। यह किसी भी सभ्य सरकार के लिए अत्यन्त लज्जाजनक बात है। आर्यसभा रेलवे मजदूर कर्मचारियों के न्यायोचित मांगों का हार्दिक समर्थन करती है और भारतीय सरकार की रेलवे मजदूर कर्मचारियों के साथ अपनाए गए घोर दमनकारी हथकण्डों की प्रबल भर्त्सना करती है तथा भारत के किसान, मजदूर, शिक्षक, विद्यार्थी एवं छोटे दूकानदार आदि सभी तबके के लोगों से रेलवे हड़ताल के दृढ़ समर्थन की आशा करती है।

यह रेलवे हड़ताल देश के मजदूर आन्दोलन में एक ऐतिहासिक कदम है। सरकार के गलत रवैये के कारण रेल मजदूर कर्मचारियों को विवश होकर हड़ताल का अवलम्बन लेना पड़ा। किसी भी देश के रेलवे जैसे महत्वपूर्ण संस्थान में यदि मानवीय मूल्यों की महत्ता स्वीकार कर कर्मचारियों और मजदूरों के साथ मनुष्य जैसा व्यवहार न किया जाय तो यह बड़े शर्म की बात है। आज भी रेल मजदूरों के एक हिस्से को दिन में १४-१४ घण्टे काम करने पड़ते हैं। आजादी के २६ वर्ष बाद भी गरीबी हटाने का नारा देने वाली सरकार से लोको के मजदूरों को दस घण्टे काम के लिए हड़ताल द्वारा लड़ाई लड़नी पड़े, कितने दुःख की बात है। सरकार और रेलवे बोर्ड अब भी दस घण्टे काम करने के समझौतों को खत्म करने पर तुली हुई है। वेतन आयोग की रिपोर्ट के अनुसार रेलवे के निचले दर्जे के कर्मचारियों और दूसरे सरकारी क्षेत्रों में काम करने वाले कर्मचारियों के वेतनों में भारी अन्तर है। उदाहरण स्वरूप रेलवे के चपरासी को मात्र १५० रु० महीने मिलता है जबकि दूसरे सरकारी क्षेत्रों में काम करने वाले चपरासी को ३०० रुपये से भी अधिक मिलता है।

ऐसी स्थिति में आज जब कमर तोड़ महंगाई से जीवन दूभर बन गया है, मुद्राविस्तार से लोगों की क्रय शक्ति क्षीण होती जा रही हो और उस पर नौकरशाही और व्याप्त भ्रष्टाचार जीवन की आशाओं पर पानी फेर रहा हो तथा जब मजदूरों के जीवन की बुनियादी माँगों पर बात चीत सरकारी तानाशाही प्रवृत्ति के कारण टूट चुकी हो, रेलवे कर्मचारी मजदूरों के सामने हड़ताल करने के सिवाय क्या विकल्प बच रहता है? रेलवे मजदूरों ने जो भी मांगे प्रस्तुत की हैं, वे जीवन की बुनियादी मांगे हैं, उस पर किसी भी सभ्य सरकार को गम्भीरता से विचार करना चाहिए। परन्तु बात को बीच में खत्म कर सरकार तीस हजार से ज्यादा कर्मचारियों को अब तक गिरफ्तार कर चुकी है और कम से कम एक हजार कर्मचारियों को इकतरफा तौर पर बर्खास्त कर चुकी है। सरकार की इस बर्बरता और ज्यादती के बावजूद उनके घर की औरतों ने जो बहादुरी दिखाई है वह बेमिसाल है। घोर सरकारी दमन के बावजूद रेलवे कर्मचारियों ने जिस अनुशासन और दृढ़ता का परिचय दिया है वह बेजोड़ ऐतिहासिक घटना है संसद सदस्यों और राजनीतिक नेताओं को बन्दी नेताओं से मिलने की अनुमति नहीं दी गई। गृह-मन्त्रालय के अधिकारियों ने जार्जफर्नाडीज के पत्र को दैनिक पत्रों में छपने रोकने का घृणित प्रयास किया जिसमें उन्होंने रेल मन्त्री को जेल के अन्दर ही दोबारा बात-चीत करने के लिए लिखा था। इन सारी बातों से सरकार के असली मंसूबों का स्वतः पता चल जाता है।

सरकार ने रेल कर्मचारियों को वेतन भी देने से इंकार कर दिया है यद्यपि ये वेतन हड़ताल से पहले के हैं। इससे सरकार के घोर तानाशाही प्रवृत्ति का परिचय मिलता है। सरकार रेल कर्मचारियों और उनके परिवारों को भूखों मारना चाहती है। सरकार हड़ताल तोड़ने के लिए प्रत्येक घृणित प्रयास का अवलम्बन ले रही हैं। इसने भारत सुरक्षा कानून और आन्तरिक सुरक्षा कानून का हड़ताल तोड़ने में खुल कर इस्तेमाल किया है। यद्यपि इस उप महाद्वीप में भारत - पाक - बंगलादेश समझौता होने के बाद उसका अब कोई औचित्य नहीं रह गया है।

स्वतन्त्रता के २६ [illegible] मजदूरों ने वर्तमान समय में जो भी मांगें र[illegible] भी प्रकार की अस्वभाविकता नहीं है [illegible] अनुसार वेतन प्राप्त करना कर्मचारी-[illegible] का [illegible] मांग हैं। आठ घण्टे काम के बाद आवश्यकतानुसार वेतन प्राप्त किए बिना वे मुद्रास्फीत, महंगाई एवं मालिक और सरकार के षड्यन्त्रों से नहीं बच सकते। इस बुनियादी मांग को मजदूर वर्ग के हर हिस्से को हासिल करना है। इस मांग के अन्तर्गत मजदूर वर्ग पूरे समाज के लिए लड़ रहा है। केजुअल मजदूरों को स्थायी करना और आठ घण्टे काम का नियम चालू करना ये सब प्राथमिक मांगें हैं जिन्हें कोई भी सभ्य सरकार नहीं ठुकरा सकती है।

न शरीर को
[illegible] है।

आवश्यकता के अनुसार वेतन की मांग के फैसले के पहले रेल-मजदूरों को सरकारी क्षेत्र के उद्योगों के बराबर वेतन और बोनस तथा ट्रेड यूनियन के पूरे अधिकारों का माना जाना मात्र रेल मजदूरों के लिए ही नहीं बल्कि पूरे ट्रेड यूनियन आंदोलन के लिए बड़े महत्व का है। रेल मजदूरों को डिपार्टमेण्टल मजदूर मानना, कितने ही तरह की आजादी से उन्हें वंचित रखना और सामान्य ट्रेड यूनियन आन्दोलन से उन्हें दूर रखना—इन बातों से सामान्य आन्दोलन को बहुत हानि पहुँचती है। इन प्रतिबंधों को समाप्त करना पड़ेगा।

इसके साथ ही जो और जरूरी मांग है, वह आन्दोलन में हिस्सा लेने के लिए मजदूरों पर चलाए गये सभी मुकदमों को वापिस लेना है। सस्ते दाम में गल्ले की दूकानें और वैज्ञानिक ढंग से काम का मूल्यांकन भी जरूरी मांगें हैं।

रेलवे मजदूरों की उपरोक्त मांगें अत्यन्त बुनियादी मांगें हैं। जनता के सस्ते यातायात को चालू रखने वाले कर्मचारियों की ये न्यायोचित मांगे अवश्य पूरी होनी चाहिए। इसमें संदेह नहीं कि रेल की हड़ताल से जनता को बड़ी परेशानी हो रही है। होने वाली परेशानी से लाभ उठाकर सरकार जनता को मजदूरों के विरोध में भड़का रही है। परन्तु जनता को ऐसे बेरहम सरकार द्वारा मजदूरों पर जुल्म नहीं ढाने देना चाहिए। रेल मजदूर जनता के ही अङ्ग हैं समाज का गुलाम मानकर उन्हें दूसरों की तरह ही उचित मजदूरी, बराबर मजदूरी के अधिकारों से वंचित नहीं रहने देना चाहिए। यह हड़ताल हमारे देश की जनता के संघर्ष का अङ्ग है। समाज के सभी हिस्सों को इसका पूरी तरह से समर्थन करना चाहिए जिससे इस संघर्ष को कुचलने की सरकारी कोशिशों को नाकामयाब किया जा सके।

सम्पादकीय

विश्व शान्ति और आणविक शक्ति का एकाधिकार

हमारे देश के वैज्ञानिकों ने १८ मई ७४ को आठ बजकर पांच मिनट पर पश्चिमी भारत में सौ मीटर की गहराई पर शान्तिपूर्ण कार्यों के लिए प्रथम सफल भूमिगत विस्फोट कर परमाणु के क्षेत्र में पांच बड़े राष्ट्रों के एकाधिकार को समाप्त कर दिया। आर्य सभा भारतीय वैज्ञानिकों को उनकी सफलता के लिए हार्दिक बधाई देती है और आशा करती है कि वे अपनी कुशल वैज्ञानिक प्रतिभा द्वारा देश को तकनीकी दृष्टि से सक्षम एवं आत्म निर्भर बनाकर देश के नेतृत्व की परनिर्भरता की भावना को खत्म कर देंगे। परमाणु शक्ति के क्षेत्र में प्रवेश न करने के कारण पश्चिमी देश अब तक भारत का ब्लैकमेल करते रहे हैं। अब त[illegible] शक्ति के क्षेत्र में घुसने की उपेक्षा करना भारत के गरिमा पर भयंकर चोट थी।

अ[illegible]त से हो रहा ह[illegible]क के बाद दूस[illegible]निकों द्वारा सफल भूमिगत विस्फोट का परीक्षण स्वागत योग्य है। यद्यपि प्रथम भारतीय [illegible], व्यापारी वर्ग द्वा[illegible]ाक्त बड़े संकट में[illegible]ांकन करना तब तक कठिन है जब तक सभी तथ्य प्रकाश में न आ जायें। परन्तु जितनी जानकारी उपलब्ध है, उसके आधार पर एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह निकाला जा सकता है कि भूगर्भ में परमाणु विस्फोट की टेक्नालोजी को विकसित करने में पांचों परमाणविक राष्ट्रों का आठ से दस वर्ष का समय लगा जबकि भारतीय वैज्ञानिकों ने पृथ्वी के ऊपर किसी प्रकार का विस्फोट किए बिना ही चार वर्ष के भीतर ही भूगर्भ में अन्तः विस्फोट की आधुनिक टेक्नालोजी का सहारा लेकर शान्तिकालीन सफल परीक्षण किया। उपसला स्वीडन की वेधशाला में इस अन्तः विस्फोट की गुरुता को चीन द्वारा १९६९ में किए गए भूगर्भीय परीक्षण के बराबर बताया गया हैं।

इस विस्फोट के पूर्व यह अनुमान लगाया जाता था कि एक परीक्षण करने पर लगभग १८ लाख रु० खर्च होंगे। भारतीय वैज्ञानिकों ने इस कार्य को तीन लाख रु० के खर्च से ही पूरा कर दिखाया है। इस परीक्षण से अनेकों शान्तिकालीन लाभ है। रूस तथा अमेरिका ने, जो कार्य करोड़ों रुपयों के खर्च से कई वर्षों में पूरा किया जा सकता था, उसे बहुत थोड़े समय में ही परमाणु शक्ति का उपयोग कर सम्पन्न कर लिया। अतः भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा बिना किसी हानि के अत्यन्त घातक पदार्थ प्लूटोनियम द्वारा सफल भूमिगत विस्फोट करना भारत के लिए अनेकों दृष्टि कोण से बहुत ही महत्वपूर्ण है।

पश्चिमी देशों का शान्ति के नाम पर भारत के शान्तिपूर्ण सफल परीक्षण का विरोध उनके निहित स्वार्थ का परिचायक है। मात्र अणु अस्त्रों के अप्रसार पर जोर देते रहना एक प्रकार का साम्राज्यवादी कुचक्र है। पूंजीवाद और साम्राज्यवाद को जीवन प्रदान करने वाले मात्र अस्त्रों के खात्मे की बात करके अन्याय, शोषण और उत्पीड़न से पीड़ित विश्व की अधिकांश जनता का ध्यान हटाना चाहते हैं। यह विचारना अत्यन्त युक्तिसंगत हैं कि हथियार या अस्त्र किस लिए हैं। हथियार अन्याय और जुल्म ढाने के लिए हैं या दबाने के लिए हैं। अतः मात्र हथियार खत्म करने की बात करना अपने गुनाहों को छिपाना है। यदि हथियार खत्म हो जाते हैं और साथ ही साथ अन्याय एवं शोषण भी तो एक अच्छी दुनियां बन सकती है। परन्तु यदि हथियार खत्म हो जाते हैं और अन्याय बने रहते हैं तो उससे विश्व को कुछ भी लाभ प्राप्त नहीं होगा। चूंकि विकसित तकनीकी ज्ञान विद्यमान है अतः अस्त्रों का उत्पादन किसी भी क्षण शुरू हो सकता है। ऐसी स्थिति में अणु-अप्रसार संधि द्वारा अणु अस्त्र सम्पन्न राष्ट्र दूसरे विकसित और विकासशील राष्ट्रों पर जो उसे बनाने की क्षमता रखते हों, पाबन्दी कायम करना चाहते हैं। ये अणु सम्पन्न राष्ट्र अणु शक्ति के रहस्य को दूसरे राष्ट्रों को नहीं बताना चाहते हैं। अतः इस असमान प्रकृति वाली संधि का विश्वकल्याण से कुछ भी सम्बध नहीं है। दुनियां के विकासशील और अविकसित राष्ट्रों को इस साम्राज्यवादी कुचक्र से सावधान रहना चाहिये।

अणु अस्त्रों के एकाधिकार के खात्मे से ही बड़े 'राष्ट्रों द्वारा आतंक के सन्तुलन' का खात्मा होगा। जितने ही अधिक अणु सम्पन्न राष्ट्र होंगे, शान्ति की सम्भावनाएं उतनी ही अधिक दृढ़ होंगी। इससे विश्व के अधिकांश जनता को शोषण, विषमता तथा अन्याय से मुक्ति की लड़ाई में बल मिलेगा। साम्राज्यवादी देशों के दमन से उत्पीड़ित एशियाई, अफ्रीकी और लातिन अमरीकी जनता को इससे साम्राज्यवाद को दफनाने में विशेष मदद मिलेगी। आज अणु अस्त्रों के एकाधिकार के खात्मे से ही ऐतिहासिक करारी हार खाकर भी बर्बरता में दानवीय शक्ति को मात देने वाला अणु अस्त्रों से सम्पन्न राष्ट्र अमरीका उत्तरी वियतनाम पर अणु अस्त्र का प्रयोग नहीं कर सका। द्वितीय महायुद्ध में मात्र अमरीका ही अणु

... ने अपने अणु अस्त्र प्रयोग के बाद प्रति उत्तर में अस्त्र प्रयोग का भय नहीं ... हिरोशिमा और नागासाकी पर एटम बम्बों का प्रयोग किया। वियतनाम में एटम बम के प्रतिउत्तर का भय था क्योंकि उत्तरी वियतनाम का पक्षधर रूस अणु अस्त्रों से सम्पन्न था। यही कारण है कि धन-जन की भारी क्षति उठाकर भी अमरीका वियतनाम पर अणु बम प्रयोग की हिम्मत न कर सका।

आज दुनियां के तमाम देशों के सामने इसके सिवाय अन्य कोई विकल्प नहीं है कि वे अन्याय, शोषण एवं उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष तेज करें और उसे अन्तिम परिणत तक पहुँचाए क्योंकि अणुयुद्ध और विश्व युद्ध के खतरों से मुक्ति पाने का यही एक रास्ता हैं। सच्ची शान्ति तब तक नहीं आ सकती जब तक शान्ति को भंग करने वालों के खिलाफ संघर्ष न किए जाय और जब तक गुलामी की शान्ति को अस्वीकार न किया जाय और उत्पीड़कों के शासन को उखाड़ न फेंका जाय।

यद्यपि परमाणविक शक्ति के रहस्यों की जानकारी एवं उसके उपयोग की शक्ति के बिना भारत में तीव्र गति से औद्योगिक उत्थान सम्भव नहीं है परन्तु समाजवादी समाज की स्थापना के बिना इस क्षेत्र में अधिक धन का विनियोग सम्भव नहीं है। अतः इस देश की सत्ता का देश में पूंजीवाद की जड़ को अत्यन्त मजबूत करने का प्रयास करना इस देश को इस दिशा में द्रुतगति से आगे बढ़ने में रुकावट डालना है। आज विश्व स्तर पर उत्पादन का पूंजीवादी सम्बन्ध और उत्पादन की पूंजीवादी नीयत परित्यक्त बन गई है। क्योंकि ये उत्पादक शक्तियों के विकास में बाधक हो चुके हैं। इसी वजह से देश ... संकट में फसता जा रहा है। जब देश की सत्ता एक संकट से उबरने का प्रयास करती है तो वह दूसरे और अपेक्ष... आ फसती हैं और इस तरह हमारी आर्थिक व्यवस्था एक दुष्ट चक्र (Vicious Circle) के चंगुल में आ फंसी है। विकास के लिए उसे उन्मुक्त अवसर न मिल सकता है और न मिल रहा है। यह एक प्रतिक्रियाशील पूंजीवाद है, वर्तमान पतनशील और मृतप्राय विश्वपूंजीवादी व्यवस्था का यह एक अभिन्न अंग है। इसका चरित्र अठारहवीं शताब्दी के पूंजीवाद के चरित्र से भिन्न है। उस समय पूंजीवाद ने उन्मुक्त प्रतियोगिता के आधार पर उन्नति की थी। तत्कालीन अन्तराष्ट्रीय पूंजीवाद की भूमिका और चरित्र प्रगतिशील था। उस समय पूंजीवाद को आन्तरिक और बाह्य बाजार का लाभ प्राप्त था। विकास की इस प्रारम्भिक अवस्था में पूंजीवाद स्वतन्त्रता—व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य एवं जनतन्त्र से जुड़ा हुआ था। उस समय पूंजीवाद नौकरशाही एवं युद्धवाद का शिकार नहीं था। परन्तु अब एक विश्व व्यवस्था के रूप में पूंजीवाद पतनशील और मृतप्राय बन गया है। अब वह अपने विकास के सर्वोच्च बिन्दु पर पहुँच गया है। यह बिन्दु है साम्राज्यवाद का। इन पूंजीवादी राष्ट्रों के साम्राज्यवादी प्रभाव ने दुनियां के अधिकांश हिस्से को शोषण और उत्पीड़न की चक्की में पीसकर अत्यन्त पतित बना दिया है। आज पूंजीवाद अपने आन्तरिक असाधारण संकट में पहुंच गया है। इसीलिए वह एक के बाद दूसरे संकटों को जन्म दे रहा है। इस गतिरोध से मुक्ति पाने के लिए कोई रास्ता न पाकर उसने अर्थव्यवस्था के निरन्तर समरीकरण (Militarisation) का रास्ता अपना लिया है। परिणामस्वरूप पूंजीवाद का सम्बन्ध आज जंगबाजी, नौकरशाही, संकट और युद्ध से अत्यधिक घनिष्ट हो गया है। प्रायः हर देश में चाहे वह देश विकसित हो अथवा अर्द्ध विकसित हो पूंजीवाद का किसी न किसी स्तर पर यही हाल है। इसलिए इन संकटों का और आर्थिक क्षेत्र की अस्थिरता का प्रभाव समाज के सैद्धान्तिक ढांचे और समाज के नैतिक तथा सांस्कृतिक क्रिया कलाप पर भी प्रतिफलित हो रहा है। आज मनुष्य इस ढांचे में दो शत्रुतापूर्ण अन्तविरोधी वर्गों में विभक्त हो चुका है, जिन्हें हम शोषक या शोषित अथवा आर्य या दस्यु की संज्ञा से विभूषित कर सकते हैं। आज देश का सांस्कृतिक और नैतिक उत्थान शोषण पर आधारित वर्तमान ढांचे के खात्मे से जुड़ गया है। अत्यधिक मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति एवं निजी स्वामित्व पर आधारित उत्पादन सम्बन्धों को खत्म किए बिना देश की सम्पूर्ण प्राकृतिक सम्पदा और विशाल श्रम स्रोत का पूरा उपयोग होना असम्भव है।

अतः भारत जैसे देश को परमाणविक शक्ति सम्पन्न राष्ट्र के रूप में उभर कर विश्व की प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों को मुंह तोड़ उत्तर देने के लिए एक समाजवादी राष्ट्र के रूप में जन्म लेना पड़ेगा अन्यथा देश की प्रतिष्ठा और सुरक्षा के नाम पर पूंजीवादी सत्ता इस देश की अधिकांश जनता को गरीबी की रेखा से ऊपर नहीं उठने देगी। आज इस देश की आधी से अधिक आबादी घोर विपन्नता में जीवन यापन करती है। अणु अस्त्रों की इजारेदारी की समाप्ति के साथ यदि भारत में पूंजीवाद विरोधी समाजवादी क्रांति सम्पन्न होकर शोषण मुक्त व्यवस्था का सृजन नहीं हो जाता तो यह देश आणविक शक्ति की दृष्टि से उतना सम्पन्न नहीं हो सकता जितने से यह अपने अस्तित्व की रक्षा अणु अस्त्र सम्पन्न राष्ट्रों से करने में सक्षम हो।

इसलिए आर्य सभा जहाँ अणु अस्त्रों के एकाधिकार के खात्मे को विश्व शान्ति के लिए अत्यन्त आवश्यक समझती है वहीं भारत जैसे वीर वैदिक परम्पराओं से युक्त देश के लिए परमाणु शक्ति सम्पन्न होकर साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष और अन्तराष्ट्रीय श्रमिक (मानसिक एवं शारीरिक) वर्ग के साथ संगठित होकर क्रांतिकारी संघर्ष द्वारा वैदिक समाजवाद पर आधारित समाज की स्थापना करना इस युग की प्रमुख विशेषता मानती है।

—गिरजेश्वर

आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में हरयाणा की समस्त आर्य समाजों का प्रतिनिध सम्मेलन

इस सम्मेलन के अवसर पर निम्न सामयिक क्रांतिकारी प्रस्ताव पारित हुए।

१. भ्रष्टाचार विरोधी प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आयोजित हरयाणा की समस्त आर्य समाजों का यह प्रतिनिधि सम्मेलन आज देश में व्याप्त भ्रष्टाचार की भयंकर स्थिति पर गम्भीर चिन्ता व्यक्त करता है। सामान्य नागरिक जीवन में नैतिक मूल्यों का तीव्रगति से हो रहा ह्रास, राजपुरुषों में बढ़ रही रिश्वत खोरी, व्यापारी वर्ग द्वारा अपनाए जा रहे मिलावट, जमाखोरी एवं मुनाफाखोरी के कारण आज सारा देश काले धन की अर्थव्यवस्था में जकड़ गया है, इस सब का दुष्परिणाम यह हो रहा है कि देश के लाखों करोड़ों व्यक्ति जो मेहनत और ईमानदारी की रोटी में विश्वास करते हैं और आर्यत्व के आदर्शों का पालन करना चाहते हैं वे दिन प्रति दिन बढ़ रही महंगाई और आर्थिक विषमता में पिसकर बुरीतरह निराश हो गए हैं।

आर्य समाज आरम्भ से ही भ्रष्टाचार की अनैतिक और असामाजिक प्रवृति के विरुद्ध एक प्रचण्ड आन्दोलन चलाता रहा है। इसी लिएआज समाज की इस विकराल समस्या का सामना करना यह अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता है। अतः इस सम्मेलन का यह निश्चित मत है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ भावना रखने वाली सभी शक्तियों का संगठन करके जीवन के हर पहलू में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरुद्ध प्रबल अभियान प्रारम्भ किया जाए। इस अभियान की सफलता तभी सम्भव है जब हम आर्यों के अपने जीवन में रिश्वतखोरी, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, मिलावट आदि किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार को प्रश्रय न मिलता हो।

आर्य समाज के नेतृत्व में भ्रष्टाचार विरोधी अभियान चलाने के लिए भ्रष्टाचार विरोधी समितियों का गठन करना चाहिए और भ्रष्ट राजनीतिक कर्मचारी व भ्रष्ट व्यापारी का सामाजिक बहिष्कार व शान्ति पूर्ण उपायों द्वारा उसके विरुद्ध जनमत तैयार करना चाहिए।

प्रस्ताव—२

हरयाणा के प्रबुद्ध आर्यों का यह सम्मेलन कतिपय राष्ट्र विरोधी एवं समाज द्रोही तत्वों द्वारा आर्य समाज के प्रवर्तक एवं राष्ट्र के उन्नायक महर्षि दयानन्द के पावन चरित्र को कलंकित करने के निकृष्ट उद्देश्य से जो कलेण्डर छापा है, उसकी तीव्र भर्त्सना करता है और सरकार से यह मांग करता है कि ऐसे कैलेण्डर को तुरन्त जब्त करके अपराधियों को कठोर दण्ड दे। सरकार की ओर से यदि इस दिशा में कोई ढील हुई तो आर्य समाज को मजबूर होकर आन्दोलन का रास्ता अपनाना होगा।

प्रस्ताव—३

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आयोजित हरयाणा के आर्य अधिकारियों का यह सम्मेलन भारत सरकार द्वारा इस देश की वीर वैदिक परम्पराओं के अनुरूप आणविक शस्त्रों से सुसज्जित होने के निर्णय का हार्दिक स्वागत करता है। हम आशा करते हैं कि इस राष्ट्र की अखण्डता और सार्वभौमिकता की सुरक्षा के लिए भारत सरकार उत्तरोत्तर अग्रसर होती रहेगी। आर्य समाज अपने सौ वर्ष के पिछले गौरवमयी इतिहास के अनुरूप भविष्य में भी इस राष्ट्र की रक्षा के लिए बड़ा से बड़ा बलिदान करने के लिए तैयार रहेगा।

४—मद्यपान विरोधी प्रस्ताव

हरयाणा प्रान्त आर्य समाज के प्रचार का गढ़ रहा है लेकिन दुर्भाग्य से अनार्य शासकों की अवैदिक नीतियों के कारण जिस हरयाणा में पहले दूध-दही की नदियां बहा करती थी आज वहां शराब की नदियां बह रही हैं। सामाजिक और धार्मिक पतन के साथ यहाँ का किसान और मजदूर बुरी तरह आर्थिक विपन्नता की चक्की में पिसता जा रहा है। हरयाणा की समस्त आर्य समाजों का यह प्रतिनिधि सम्मेलन सरकार से यह पुनः अनुरोध करता है कि वैदिक धर्म की मान्यताओं के अनुसार तथा हमारे संविधान में निहित निर्देशक सिद्धान्तों के अनुसार शीघ्र ही हरयाणा में पूरी शक्ति के साथ शराब बन्दी कानून लागू करें। इस क्रियान्वयन में आर्य समाज पूरी तरह से सहयोग करने का आश्वासन देता है। इस सम्बन्ध में यह सम्मेलन हरयाणा सरकार द्वारा दो चार स्थानों पर खोले गए दुग्ध केन्द्रों की बड़ी सराहना करता है और इस प्रकार के केन्द्रों के अधिकाधिक खोलने की मांग करता है। शराब को बन्द करके दूध-दही-घी-मक्खन के प्रचार से जहां एक ओर लोगों का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य निखर उठेगा वहां दूसरी ओर सरकार को भी प्रचुर आमदनी होगी और अपराधों की संख्या में बहुत कमी आ जायेगी। (शेषांश पृष्ठ १२ पर)

करनाल में आर्य कार्यकर्त्ताओं का सम्मेलन—एक दृष्टि

१९ मई को प्रातः पांच बजे जब मैंने अपने साथियों के साथ बस द्वारा करनाल सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए प्रस्थान किया तो मेरे दिल में विविध कल्पनायें पैदा हो रही थी। जब हम ९ बजे रामलीला भवन सम्मेलन स्थल पर पहुंचे तो स्वामी अग्निवेश जी यज्ञ पर अपना उपदेश देकर कार्यकर्त्ताओं को विभोर कर रहे थे। स्वामी अग्निवेश जी ने बताया कि यज्ञ हमें आत्म समर्पण की भावना द्वारा संगठन में बन्ध कर चलना सिखाता है। प्रातः काल की वेला में मधुर तथा प्रेरणाप्रद उपदेश सुनकर लोगों के दिल में एक अपार खुशी छाई हुई थी। ठीक दस बजे सम्मेलन का कार्यक्रम शुरू हो गया जिसकी अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी ने की। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वीरेन्द्र जी ने लोगों को अतीत कालीन कटुता भुलाकर इकट्ठे होकर चलने का आह्वान किया। प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने इन्द्रप्रस्थ आदि उजड़ी हुई संस्थाओं के सुधार की योजना रखते हुए बताया शीघ्र ही इन्द्रप्रस्थ में एक उपदेशक विद्यालय शुरू हो रहा है।

इसी बीच में प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वीरेन्द्र जी ने सभा के कार्यक्रम को गतिशीलता देने के लिए एक घोषणा पत्र पढ़कर सुनाया। इस घोषणा पत्र में आर्यसमाज के विस्तृत कार्यक्रम पर विचार किया गया है। आर्य समाज की शिक्षा संस्थाओं में धर्म शिक्षा, देश भक्ति, चरित्र आदि की भावना भरकर युवकों को आर्य समाज के प्रचार के लिए तैयार किया जाएगा। शारीरिक, बौद्धिक और सामाजिक शिक्षा द्वारा आर्य युवकों का एक प्रचण्ड संगठन बनाया जाएगा, जो आर्य समाज रूपी माँ के लिए जिऐंगे और मरेंगे। प्रचार प्रणाली को सुधारने तथा उसमें गतिशीलता लाने के लिए उपदेशक विद्यालय तथा कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिवरों की व्यवस्था होगी जिससे आर्य समाज के लिए प्रशिक्षित, आत्मसमर्पण की भावना रखने वाले होनहार देशभक्त, पुरोहित और उपदेशक तैयार किए जा सकें। घोषणापत्र की एक और विशेषता थी कि उसमें माताओं को भी उनके उचित अधिकारों से वंचित न करके सभी कार्यों में प्राथमिकता दी जाए। जन आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए बेरोजगार तथा साधनहीन व्यक्तियों के लिए निर्वाह की व्यवस्था की जाये। मंच से कही गई एक और बात जो सबसे ज्यादा मेरे दिल को छू गई, यह थी—आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों को सहायता दी जाए और दलित भाइयों के बच्चों को यथाशक्ति गुरुकुल आदि में पढ़ाने की व्यवस्था की जाएगी। आर्यसमाज ने दलितों के लिए हमेशा कार्य किया और आज भी मेरे पिछड़े भाइयों को गले लगाने का क्रान्तिकारी कदम उठाकर महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकाररूप रूप देने का प्रयास किया गया है। गरीबी की भट्ठी में जलती हुई जनता आज आर्य समाज के बदलते हुए नवीन इतिहास की ओर आशाभरी दृष्टि से देख रही है कि कितनी जल्दी वह स्वर्णिम युग आ रहा है, जिसमें, पीड़ितों व शोषितों के चेहरों पर खुशी मुस्कान आएगी और तभी दयानन्द का उद्देश्य पूरा हो सकेगा।

सम्मेलन में विविध प्रस्ताव भी रखे गए। प्रथम भारत सरकार के वैज्ञानिकों को आणविक आविष्कार के लिए बधाई का प्रस्ताव पास किया गया। महर्षि दयानन्द पर दूषित कैलेण्डर को जब्त करने का प्रस्ताव पास करते हुए जन सहयोग की भावना को दोहराया। देश में बढ़ते हुए आर्थिक-धार्मिक और राजनैतिक भ्रष्टाचार को रोकने के लिए क्रान्तिकारी कदम उठाना आदि महत्वपूर्ण प्रस्तावों पर विचार विमर्श करने के बाद सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश जी हरयाणा प्रान्त के कोने-कोने से आए हुए आर्य समाज के कार्य कर्त्ताओं को आर्य समाज के संगठन को मजबूत करने के लिए भावी कार्यक्रम रखा। हरयाणा में शताब्दी समारोह २८-२९ सितम्बर को पानीपत में मनाने का निश्चय किया गया। स्वामी इन्द्रवेश जी की अपील पर लोगों ने प्रचुर मात्रा में सहयोग देने के वचन दिए। आर्य जनता में एक अद्भुत उत्साह दिखाई पड़ रहा था, सभी आर्य समाजों के मन्त्री, प्रधान, कार्यकर्त्ता, आर्यवीर दल तथा आर्य युवक परिषद् के युवक, संस्थाओं के आचार्य व प्राध्यापकों ने बड़े उत्साह के साथ प्रोग्राम को अपने कन्धों पर लिया। रात्रि को एक विशाल जनसभा हुई जिसमें बड़े क्रान्तिकारी विचार रखे गए। ब्रह्मचारी रामकिशन जी ने गरीब जनता का प्रतिनिधित्व करते हुए अपने ओजस्वी भजन रखे। सभी मंत्री श्री वीरेन्द्र व स्वामी इन्द्रवेश जी ने अपने सुलझे विचारों से जनता को कृतार्थ किया। वैदिक समाजवाद का प्रचण्ड शंखनाद करते हुए स्वामी अग्निवेश जी ने देश की समस्याओं को लेकर अपने विस्तृत विचार रखे और समाज से अज्ञान, अभाव, अन्याय और शोषण को मिटाने के संकल्प को दोहराते हुए आर्य राष्ट्र निर्माण का आह्वान किया। हरयाणा के इस ऐतिहासिक सम्मेलन में विविध कार्यकर्त्ताओं ने अपने विचार रखे। इस तरह आशा तथा उत्साह के वातावरण में आर्य समाज के भावी स्वरूप की एक स्पष्ट झलक इस सम्मेलन में दिखाई पड़ रही थी।

रामधारी शास्त्री
महामन्त्री आर्य सभा

पंजाब में आर्यसभा की मांग और हमारी जिम्मेदारियाँ

पंजाब की आर्यजनता से परिचितहोने का सौभाग्य मुझे उस समय मिला जब कि पंजाब की आर्यसामाजिक गतिविधियों के केन्द्र वैदिक साधुआश्रम रोपड़ के महोत्सव पर वहां के कर्मठ साधु श्री स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती के निमन्त्रण पर ५ अप्रैल को मैं गया। आर्य सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री स्वामी इन्द्रवेश जी भी वहां पहुंचे हुए थे। जब उन्होंने और मैंने आर्यराष्ट्र स्थापना की चर्चा को लेकर कुछ शब्द कहे तो वहां के आर्य दिलों की धधकती आग प्रचण्ड हो उठी जो पहले ही श्री इन्द्रवेश जी और श्री अग्निवेश जी द्वारा सुलगाई हुई थी। "वैदिक समाजवाद" पर आधारित आर्यराष्ट्र की स्थापना हेतु पंजाब की तरुणाई अंगड़ाई लेकर बेहयाई को मिटाने के लिए आज मचल रही है।

इसका अनुमान मुझे तब लगा जब वहीं पर ही लुधियाना में १ मई को होने वाले मजदूर दिवस पर कुछ कहने के लिए श्री वेदरत्न जी द्वारा आदेश प्राप्त हुआ और साथ ही श्री वृजेन्द्र जी द्वारा खन्ना में युवक परिषद् के आयोजन पर तथा श्री पृथ्वीसिंह जी व समाज के प्रधान श्री आसकरण जी द्वारा नंगल के वार्षिक महोत्सव पर आर्यराष्ट्र सम्बन्धी चर्चा करने के लिए मुझे बुलाया गया।

रोपड़ आश्रम के महोत्सव पर आर्य राष्ट्र के लिये केवल नौजवानों में ही नही बल्कि माताओं और बहनों में भी अपार जोश तो देखने को मिला ही पर जब लुधियाना में १ मई को सम्पन्न होने वाले मजदूर दिवस पर मुझे जाने का मौका मिला और वहां मजदूरों के बीच में मैंने शोषण, भ्रष्टाचार और अत्याचार को मिटाने वाले "वैदिक समाजवाद" की बातें कहीं तो हर कीमत पर वे सब ऐसा राष्ट्र बनाना चाहते थे जिसमें शिक्षा, चिकित्सा, न्याय, भोजन, भवन, बसन एवं रोजगार का मौलिक अधिकार प्रत्येक नागरिक को निश्चित रूपेण मिलता हो। उस बिराट आयोजन में अधिकतर सिक्ख भाई थे जो इस प्रोग्राम को पसन्द कर रहे थे और आर्य राष्ट्र बनायेंगे! पूंजीवाद मिटायेंगे! के नारों से अपनी भावनाओं को व्यक्त कर रहे थे।

इसके बाद ११-१२ मई को नंगल टाउनशिप समाज के अधिवेशन पर जाने पर जो गर्मी मुझे वहां दिखाई दी उसके आधार पर मैं तो कहना चाहूंगा कि आर्यसभा की स्थापना करके वहां के लोग शीघ्र ही "आर्यराष्ट्र" की भावनाओं को साकार हुआ देखना चाहते हैं।

विक्रम कुमार विवेकी

सैंकड़ों नौजवानों के अन्दर समाज की गली सड़ी व्यवस्था के प्रति विद्रोह की भावनायें भड़क रही हैं, उन नौजवानों को संगठित करके एकजुट होकर काम करने की आज जरूरत है। कुछ नौजवान अपना समय देकर वहां आर्यराष्ट्र का निर्माण चाहते हैं। जगह जगह आर्य समाज की अतीत शिथिलता के कारण असन्तोष फैला हुआ है, जहां हमें नवनिर्माण का सन्देश लेकर पहुँचना होगा और सब समस्याओं के समाधान 'आर्यसभा' की हवा भी हमें वहां बहानी होगी। गरीबों की आहों पर वाह, वाह करने वालों को मिटाने का संकल्प लेकर धमाका करने की आज जरूरत है।

आर्यसमाज के ऊपर अगर आज कोई सबसे बड़ी जिम्मेदारी है तो वह आर्यराष्ट्र बनाने की है। जिस महोद्देश्य को भुलाकर आज हम आकर्षण हीन बन गये हैं और हमारी मान्यतायें अधर में ही लटक रहीं हैं। इन पंक्तियों के द्वारा लेखक समाज के अधिकारियों से निवेदन करना चाहता है कि वे पूर्ण शक्ति आर्यसभा के समर्थन में लगायें। प्रत्येक प्रान्त की प्रतिनिधि सभायें एवं हमारी शिरोमणि सार्वदेशिक सभा शीघ्र ही आर्यसभा को मान्यता प्रदान करे। कहते हैं जब भी आंख खुल जायें तभी से प्रभात समझना चाहिए। १०० साल तक तो हम इस उद्देश्य से उपेक्षित रहे ही, पर अब तो हमारी आँखें खुलनी चाहिये। सुबह का भूला हुआ शाम को घर लौट आये तो उसे भूला हुआ नहीं समझना चाहिए, इसलिए शताब्दी की सांझ भी अब बीतकर दूसरा दिन सिरपर चढ़ने को है। अब भी हम नहीं चेते तो फिर कब चेतेंगे। स्थापना शताब्दी तक भी हम इस उद्देश्य को यदि नहीं अपना सके तो इतिहासकार मोटे अक्षरों में लिखेगा कि आर्यसमाज सुबह से भूल गया था और ऐसा भूला कि सांझ को भी घर नहीं लौट सका। अपने एकमात्र उद्देश्य से भटक कर वह पथ भ्रष्ट हो गया।

इसलिए विवेकशील आर्यनेताओं से निवेदन है कि खुलकर दल-बल के साथ मैदान में आयें। जबकि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की ऐतिहासिक धरती पर "अखिल भारतीय आर्यसभा" की स्थापना हो चुकी है और सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में अराजकता फैली हुई है तो इससे सुनहरा अवसर और क्या हो सकता है?

क्या भाषा आन्दोलन पेट की लड़ाई को कमजोर करता है ?

स्व० डा० राममनोहर लोहिया

भाषा समस्या की विभीषिका ने सरकार को इतना संत्रस्त कर डाला है कि वह इसकी अहमियत ही नकारने लगी है। समाधान खोजने के स्थान पर इससे जनता का ध्यान हटा रही है। "इसे रोटी की समस्या के सुलझाव में बाधक बता रही है। "इस समस्या से हमारा वह मोर्चा जहां से हम भर पेट रोटी पाने के लिए, गरीबी हटाने के लिए और बेरोजगारी मिटाने के लिए लड़ाइयां लड़ रहे हैं, कमजोर होता है।" ऐसा प्रचार सरकार की ओर से लगातार हो रहा है। "यद्यपि गरीबी, बेरोजगारी के खात्मे और भरपेट रोटी दिलाने के लिए सरकार सही माने में जद्दोजहद कर भी रही है या नहीं" यह भी एक सवाल है परन्तु इस समय इस पर कुछ न कह कर दिमाग और पेट का, भाषा और रोटी का रिश्ता दिखाना और इस समस्या के महत्व को बताना ही हमारा लक्ष्य है।

आज दिमाग की समस्या एक बड़ी सीमा तक पेट के सवाल से कटी दीख रही है और इसलिए शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए या भाषा की समस्या पर सरकार का ध्यान खींचने के लिए जनसमाज या छात्र वर्ग की ओर से जब भी कोई मोटा प्रयत्न किया जाता है तो न केवल सरकार अपितु कई विरोधी दल भी उसके स्वर में स्वर मिलाकर चिल्लाने लगते हैं कि यह क्या झूठे-मूठे का सवाल खड़ा किया है ? पहले पेट का सवाल हल करो।

असल में पेट और दिमाग का यह विभाजन ही गलत है। आज राजनीतिक दलों के गलत रवैए के कारण पेट और दिमाग में दीवार बन गई है। परन्तु वास्तविकता यह है कि दोनों सवाल एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

मजदूर चाहे वह सरकारी व गैर सरकारी किसी भी कम्पनी या फैक्टरी में काम करते हैं प्रायः अपनी यूनीयनें बनाते हैं। इन यूनीयनों का पत्र व्यवहार प्रायः अंग्रेजी में होता है। कितने मजदूर जानते हैं उनमें से अंग्रेजी ? मजदूरों की तरफ की उनके पेट के सवाल ऐसी भाषा में लिखे जाते हैं जिसे वे खुद नहीं समझते। फलस्वरूप मजदूरों के अन्दर से नेता नहीं निकल पाते। जड़ ही कट गई है। जमीन ही नहीं, जिस पर खड़े हो कर खुद नेता बनें।

सरकार का सारा काम, सोचने का तरीका अगर कम लोगों की भाषा में चलता है तो उन थोड़े लोगों का हित ही उनके सामने रहता है। आज सरकार का मुख किधर है ? पचास करोड़ में पचास लाख की भाषा अंग्रेजी है, सरकार का मुख पचास लाख की ओर है। बाकी जनता की ओर पीठ है। सरकार पचास करोड़ के सवालों की बिलकुल अवहेलना करती है। उसके लिए पचास लाख के सवाल ही सार्वजनिक सवाल बन गए हैं।

चावल या गेहूं के दामों का सवाल, किसानों को सस्ते बीज, खाद और पानी की व्यवस्था के सवाल तब तक हल नहीं हो सकते जब तक अंग्रेजी रहेगी। सरकार देख रही है पचास लाख की ओर। करोड़ों के सवाल उस के सामने आते ही नहीं। जिन नदियों में करोड़ों आदमी नहाते हैं और लाखों आदमी जिनका पानी पीते हैं उनका पानी शहरों की नालियां डालकर गन्दा किया जाता है। महिलाओं के लिए विशेषकर गांव की महिलाओं के लिए शौचालयों के लिए कोई व्यवस्था नहीं है। इन सवालों को कोई नहीं उठाता। सरकार के लिए भी ये छोटे और मामूली सवाल हैं। अंग्रेजी पढ़े लिखे पचास लाख लोगों के नुमाइंदे भारत की गद्दी पर कब्जा जमाए बैठे हैं। उनके लिए अंग्रेजी भाषा डूबते हुए के लिए तिनके के सहारे के समान है। वे जानते हैं कि अंग्रेजी हटाने से सरकार को, कानून को, मजदूर संगठनों और सार्वजनिक संस्थाओं को नेताओं को, सभी को पचास करोड़ की ओर उन्मुख होना पड़ेगा। वह महान क्रांति होगी। सामन्त शाही का सारा ढांचा ढीला हो जाएगा।

फौज की मिसाल लीजिए। फौज में कर्नल के ऊपर के सभी अफसरों की नौकरी के लिए क्या कसौटी है ? कसौटी लड़ाई का हुनर नहीं, अंग्रेजी भाषा का ज्ञान है। अंग्रेजी में नोट लिखना, मैस के अन्दर अंग्रेजी में बोलना, छुरे कांटे से खाना कसौटी है। अफसरों की कसौटी वीरता नहीं, युद्ध कला का ज्ञान भी नहीं, अंग्रेजी की छिछली जानकारी है। मामूली लोग हवलदार बनते हैं हवलदार के बाद दरवाजा बन्द है। इससे आगे नहीं जा सकते। अगर आज की परिपाटी खत्म हो जाए तो ऐसे लोग कर्नल होंगे जिन को युद्ध कला की दक्षता प्राप्त है। ऐसे ही जीवन के प्रत्येक अंग में देखो, क्या जबरदस्त नतीजे निकलेंगे। एक दम परिवर्तन आ जाएगा।

अब आप पेट वाली चीज को लें। हिन्दुस्तान का अब तक का जीवन किन लोगों का है ? अधिकतर हिन्दुस्तानी

दातून या कोयले से ही दांत साफ करते हैं। यहां टूथ पेस्ट, मोटर, पाउडर और क्रीम कौन खरीदते हैं? अखबारों में इन चीजों के ही विज्ञापन रहते हैं। आज के हिन्दुस्तान में आधुनिक वस्तुओं की खपत इन्हीं पचास लाख लोगों से सीमित है। देहात से आकर शहर में काम करने वाले लोग भी इन से जुड़े हैं। कुल मिलाकर लगभग डेढ़ करोड़ समझ लो। अब आप ही उत्तर दीजिए कि देश का जीवन किन के लिए बन गया है? आज देश का जीवन पैदावार और खपत के मामलों में इन्हीं पचास लाख के सीमित समुदाय पर आधारित हैं। इन्हीं के हित और अनहित के सवाल सार्वजनिक सवाल बन कर आते हैं। सरकार इन्हीं सवालों में उलझी रहती है और बाकी लोगों की उपेक्षा करती है। "जनता कार" आखिर और किस जनता के लिए हैं?

आज देश का सारा सामाजिक ढांचा ही नकली हो गया है। धनी गरीब का भेद, शिक्षित-अशिक्षित का भेद, ऊंची-नीची जाति का भेद। ऊंची जाति में आठ करोड़ लोग हैं। ऊपर के भेदों में विभाजित होती हुई यह ऊंची जाति अंग्रेजी पढ़े और बे पढ़े तक घटते-घटते चार या पांच लाख रह जाती है। आज देश की और प्रदेशों की गद्दी पर ये चार पांच लाख लोग कब्जा जमाए बैठे हैं और भारत की शेष जनता की छाती पर मूंग दल रहे हैं। आज यदि दिमाग के सवाल को पेट के सवाल से अलग न किया जाए तो देश में एक जबरदस्त मन्थन होगा। तब ऊँची जाति वाले भी बच जाएंगे। एक होगा धोती और कुर्ते वाला ब्राह्मण और दूसरा चूड़ीदार पायजामा; या पतलून वाला। धोती वाला ब्राह्मण कलकत्ते और दूसरे शहरों में ट्राम मजदूर, कण्डक्टर, दरबान और जमादार का काम करता है या गांव में भीख मांगता है। पतलून और चूड़ीदार पायजामा वाला ब्राह्मण लखनऊ और दिल्ली की गद्दी पर है जब यह भेद साफ होगा तब जबरदस्त हलचल मचेगी। आज धोती वाला ब्राह्मण चूड़ीदार पायजामे वाले और पतलून वाले ब्राह्मण से अपना रिश्ता मानता है। अहीर जाट, कुर्मी या दूसरी मेहनतकश जाति वाले से नहीं। लेकिन तब चूड़ीदार पतलून वाले से अपना झूठा रिश्ता छोड़ कर धोती वाला ब्राह्मण देश की गरीब जनता से अपना सीधा रिश्ता जोड़ लेगा और तब साफ होगा कि इस देश में केवल दो जातियां हैं। एक सामन्ती ऊँची जाति और दूसरी दरिद्र ऊँची जाति। देश का कल्याण इस मन्थन से होगा। इस मन्थन के लिए यह जरूरी है कि हम पेट के सवाल के साथ-साथ दिमाग का सवाल भी उठावें। दिमाग के सवाल को दूर रखकर हम पेट की समस्या हल नहीं कर सकते।

वास्तव में, रोटी की और भाषा की समस्याएं एक दूसरे से जुड़ी हुई है अंग्रेजी हटाने का आन्दोलन जितना मस्तिष्क की स्वतन्त्रता का आंदोलन है, उतना ही पेट के स्वावलम्बन का भी। इस आन्दोलन का प्रचार जीवन के साथ कीजिए। ★

पशुसंवर्धन बनाम गौ-माँस का निर्यात

यह बहुत ही खेदजनक स्थिति है कि एक ओर तो हमारी सरकार घरेलू ईंधन के लिए गाय के गोबर से गैस बनाने की योजनाओं पर तेजी से अमल करना चाहती है दूसरी ओर गोमांस का बड़ी भारी मात्रा में निर्यात करने की बात सोचती है। यह बात सोचते समय संभवतः सरकार के समझ में देश के बहुमत की भावनाओं का कोई महत्व नहीं रह जाता।

गाय हमारे लिए कितना उपयोगी पशु है, यह बात बार-बार दोहराने की नहीं है। गाय से न केवल हम दूध घी ही प्राप्त करते है, वरन इसका गोबर भी बहुत उपयोगी सिद्ध हो चुका है। बैलों ने सामान ढोने और खेती के कार्य को बहुत बड़ी मात्रा में सुलझाया हुआ है। कहने का आशय यह है कि अन्य किसी दृष्टिकोण से न सोचें तो भी आर्थिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सोचने पर भी गाय की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता।

केन्द्रिय व्यापार मंत्री श्री डी. पी. चट्टोपाध्याय ने कुवैत के शेख की इस मांग को काफी गंभीरता से लिया है कि शेख भारत को तेल का निर्यात करेगा और भारत उसे गोमांस का निर्यात करे। आश्चर्य की बात यह है कि मंत्री महोदय श्री चट्टोपाध्याय इस निष्कर्ष पर पहुचे हैं कि गोमांस के निर्यात से बड़ीभारी मात्रा में विदेशी मुद्रा प्राप्त की जा सकती है। अकेले गोमांस के निर्यात से ७०० करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा अर्जित की जा सकती है। उनके अनुसार देश में २३० करोड़ पशु हैं जिनमें से ३० लाख किसी भी प्रकार से उपयोगी नहीं हैं।

देश में ३० करोड़ एकड़ भूमि पर खेती के लिए २० बैल प्रति १०० एकड़ के हिसाब से ६ करोड़ बैल चाहिए जबकि हमारे पास केवल ६ करोड़ ही है।

गाय कितना दूध देती है, प्रश्न इस बात का नहीं है। दूध तो देती है।

(शेषांश पृष्ठ १३ पर)

फिल्मी अश्लीलता का दुष्प्रभाव

बी० आर० शर्मा

आजकल भारतीय फिल्मों में अश्लीलता बड़ी ही तीव्रता से पनपती जा रही है तथा फिल्मों का स्तर हमारी सामाजिक, मानवीय तथा सांस्कृतिक यथार्थताओं और जीवन की वास्तविकताओं से बहुत दूर जाता प्रतीत होता है। हमारी फिल्मों में अश्लील गानों और घिनौने नृत्यों की भरमार होती जा रही है, भद्दे वार्तालाप तथा गन्दे हावभाव जोर पकड़ते जा रहे हैं। और अपहरण तथा बलात्कार के दृश्यों का आधिक्य है। हमारी फिल्मों में भोगवादी प्रवृत्ति बड़ी द्रुत गति से बढ़ती जा रही है। अधिकतर फिल्में पश्चिमी सभ्यता के कूड़ेकरकट पर आधारित हैं और पश्चिमी सभ्यता की नग्नता तथा कामुकता का नंगा नाच दिखाना इन फिल्मकारों का उद्देश्य प्रतीत होता है। प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से इन फिल्मों का लक्ष्य प्रेमप्रलाप तथा रंग रलियां मनाना ही परिलक्षित होता है। समाज तथा मानवता की सीमाओं की उपेक्षा करके मानव के अन्दर कामुकता तथा वासना की पाशविक प्रवृत्तियों को भड़का कर पैसा बटोरना ही वे अपना परमधर्म समझते हैं।

ऐसा महसूस होता है कि फिल्मकार देश तथा समाज के प्रति अपनी कोई जिम्मेदारी नहीं समझता और नैतिक मूल्यों को ताक में रखने पर किंचित मात्र भी नहीं हिचकिचाता। अश्लीलता को बेचकर खूब धन अर्जित करना ही वह अपना परम पावन कर्त्तव्य समझता है। आप किसी भी फिल्म को देखिये उसमें त्याग, बलिदान, ईमान, आदर्श और सिद्धान्त की बात तो खोजने से भी नहीं मिलती और बलात्कार, अपहरण, सेक्संस-सयोजन, मारपीट, शराब नोशी, तस्करी, ठगी, डाकेजनी और खून का दौर दौरा अक्सरस भी फिल्मों में मिल जाता है।

इस फिल्मी अश्लीलता के दुष्परिणाम भी हमारे समक्ष आने प्रारम्भ हो गये हैं। हमारे समाज में बढ़ते हुए व्यभिचार, भ्रष्टाचार, दुराचार, अनाचार तथा पापाचार के लिए काफी हद तक हमारे फिल्मी दुनियां के ठेकेदार जिम्मेदार हैं। महिलाओं तथा लड़कियों को बाजारों तथा सड़कों व सार्वजनिक स्थानों में निकलना दूभर है। फिल्मी दुनियां के पुजारी गन्दे तथा घिनौने बोल बोलते अक्सर सुने जाते हैं। गुण्डागर्दी तो पराकाष्ठा पर पहुँच रही है। काफी मनचले मजनूं कई बार चौराहों पर जूते खाते देखे जाते हैं। सिनेमाओं से प्रेरणा प्राप्त करके चोरियाँ की जाने लगी तथा सुनियोजित डाके डाले जाने लगे हैं। चोरबाजारी, लूट, धोखा, प्रपंच, सस्ती चालाकी व धूर्तता को भी फिल्मकारों ने उत्साह प्रदान किया है। हिंसक घटनायें, लड़ाई तथा मुक्केबाजी के दृश्य भी हमारे सामाजिक जीवन में अक्सर अपना चमत्कार दिखा ही देते हैं। फिल्मी जगत के कुत्सित प्रभाव ने सारे वातावरण को ही विषाक्त बना दिया है।

समारोहों और जलसों में अश्लील फिल्मी गानों का अनुराग बढ़ता जा रहा है। यही नहीं सड़कों, गलियों तथा स्नानागारों में छोटे छोटे बच्चों से लेकर वृद्धों तक जिनमें स्त्री पुरुष दोनों शामिल हैं, अश्लील गाने गाते सुने जा सकते हैं। कई बार ऐसा देखा गया है कि पिता, पुत्री, पुत्र तथा माता सभी एक ही अश्लील गाने को गुनगुनायें जा रहे हैं। कभी कभी तो ऐसा लगने लगता है कि हमारे छोटे छोटे बच्चे, विद्यार्थीगण, अध्यापकवृन्द तथा सम्भ्रान्त परिवारों के प्रतिष्ठित लोग टांगा तथा रिक्शा चालकों को अश्लील फिल्मी गानों में मात देने के लिए निरन्तर रिहर्सल (तैयारी) कर रहे हों। मेरे पास समय नहीं है कि इन निरर्थक तथा अश्लील गानों की सूची प्रस्तुत कर सकूं। यह अश्लीलता हमारे सामाजिक तथा दैनिक जीवन में बड़ी तेजी से प्रविष्ट होती जा रही है। धार्मिक और सामाजिक उत्सवों में अश्लील फिल्मी गानों का बोल-बाला है। भजन भी फिल्मी तर्जों पर गाये जाते हैं। अगर यह प्रभाव इसी प्रकार बढ़ता रहा तो हमारी आगामी पीढ़ी की गतिविधियों का अन्दाज सहज ही लगाया जा सकता है। फिल्मी अश्लीलता हमारी रगों में इस कदर घुसती जा रही है कि हमें इतना भी विवेक नहीं है कि हमारे लिए क्या उचित है और क्या अनुचित।

लोग समय और रुपये के बदले खरीदते हैं अनैतिकता, अश्लीलता और चरित्रहीनता। हमारे पूंजीपति तो इस अश्लीलता, विलासिता तथा ऐशोआराम का ठेका ही लिए हुए हैं परन्तु फिल्मी अश्लीलता का शिकार और भी लोग होते जा रहे हैं। हमारा नवयुवक वर्ग अपना तन-मन तथा धन सिनेमा हालों को अर्पण करना अपने लिए परमसौभाग्य की बात समझता है। कमरतोड़ महंगाई से जूझता हुआ हमारा गरीब तथा मजदूर वर्ग भी फिल्मी अश्लीलता का शिकार हुए बिना नहीं बचा। उसे दो समय खाने को पर्याप्त भोजन मिले या न मिले परन्तु सिनेमा घरों में अपनी हाजिरी वह नियमित

रूप से देता है। हमारे फिल्म निर्माताओं को यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारा देश आर्थिक और चारित्रिक संकट से गुजर रहा है जबकि पश्चिमी संसार में इस प्रकार की कोई समस्या नहीं है। लोगों में अश्लील फिल्मों का भूत इतना सवार हो चुका है कि वह लोगों में अनेक मानसिक मनोविकार पैदा कर रहा है जिसका कुत्सित प्रभाव हमारे समाज पर पड़े बिना नहीं रहता। ज्ञात हुआ है कि चण्डीगढ़ के एक नवयुवक ने "बॉबी" फिल्म को ८७ बार देखा और पागल हो गया, तत्पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई। इसी पागलपन के शिकार अनेक लोग हो रहे हैं। इस अश्लीलता प्रदत्त मनोविकारों के शिकार लोग हजारों की संख्या में हैं जो कि अपने जीवन को तो स्वाहा करते ही हैं समाज में भी भ्रष्टाचार फैलाते हैं। हमारे युवक युवतियों में जो हिप्पीवाद चल पड़ा है इस अभियान में भी हमारे फिल्मकारों ने जी जान से सहयोग प्रदान किया है। भारत की नंगी भूखी जनता को जिस प्रकार सैक्स और शराब का प्रलोभन देकर फिल्मकार लूट रहे हैं यह मानवता के साथ गद्दारी और हमारे समाज पर कुठाराघात नहीं तो और क्या है?

उपचार—आज फिल्मी अश्लीलता इतना उग्ररूप धारण करती जा रही है कि यह एक ज्वलन्त समस्या बन गई है। फिल्मी अश्लीलता के दुष्प्रभाव ने एक भयानक स्थिति पैदा कर दी है। यह समस्या इतनी गम्भीर हो गई है कि प्रत्येक बुद्धिजीवी, भारतीयता के पुजारी और मानवतावादी तथा हरेक समाजवादी को इस समस्या पर गम्भीर चिन्तन करके इसका समाधान खोजने के लिए विवश कर दिया है।

हाल ही में सुप्रसिद्ध सिनेमा निर्देशक तथा प्रख्यात पत्रकार ख्वाजा अहमद अब्बास ने कहा है कि आज जब मैं कालेज जलसों में छात्रों को फिल्मी गानों की नकल करते देखता हूँ तो मुझे बड़ा दुःख होता है। हमारे राष्ट्रपति महोदय का ध्यान भी इस बढ़ती हुई फिल्मी अश्लीलता की तरफ आकर्षित हुआ है। वी० वी० गिरी ने इस दिशा में अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हुए कहा है कि फिल्मी दुनियां में बढ़ती हुई अश्लीलता तथा अनैतिकता को सहन करना असम्भव है।

प्रत्येक जनवादी तथा विचारशील व्यक्ति को इस ओर ध्यान देने की परमावश्यकता है। फिल्में मानव मन पर अमिट छाप छोड़ती हैं इसलिए उनका सदुपयोग करना जरूरी है। फिल्मी उद्योग को नई दिशा देने की जरूरत है। हम चाहते हैं कि हमारा फिल्मी उद्योग दिन दूनी रात चौगनी उन्नति करें परन्तु यह उन्नति नैतिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक और मानवता की मान्यताओं के मोल पर नही होनी चाहिए वरना यह सौदा बहुत मंहगा पड़ेगा।

१. सैंसर की कैंची तेज हो

सैंसर को कड़ा करने की जरूरत है और उसे कड़ाई से लागू करने की। अनावश्यक आलिंगन व चुम्बन, बलात्कार, हिंसा व तस्करी के नूतन से नूतन तरीकों से परिपूर्ण फिल्मों पर सैंसर की कैंची नहीं चलती। क्या सैंसरबोर्ड के प्रतिनिधि आखें बन्द करके फिल्म देखते हैं? मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि सैंसरबोर्ड अपने कर्त्तव्य के प्रति उदासीन हैं। सैंसर बोर्ड का काम केवल नग्न दृश्य को काटने तक ही सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि उन्हें चाहिए कि देखें कि क्या उचित है और क्या अनुचित। उसे स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक दृश्यों पर भी विचार करना चाहिए। बहुधा फ़िल्में देखने पर प्रतीत होता है कि सैंसर बोर्ड के प्रतिनिधियों ने उसे देखा ही नहीं और अगर देखा है तो उन्हें उचित अनुचित को समझने की क्षमता नहीं है।

२. फिल्मनिर्माताओं तथा निर्देशकों को भारतीय नैतिक शास्त्र का प्रशिक्षण अपरिहार्य

हमारे फिल्मकारों को पश्चिमी सभ्यता के कूड़े में नहीं बहना चाहिए। क्या यह सच नहीं है कि हमारे फिल्मकार विदेशी फिल्मों की ९० फीसदी तक कापी करते हैं। पश्चिमी जगत की कामुकता, उच्छृङ्खलता, स्वच्छन्दता, नग्नता व अश्लीलता हमारे अनुकूल नहीं हैं। अतः भारतीय फिल्मकारों को भारतीय नैतिक शास्त्र से अवगत होना जरूरी है तथा उन्हें नैतिकता का प्रशिक्षण देना अपरिहार्य होना चाहिए जिससे अपने आदर्शों और सीमाओं का ध्यान रखा जा सके। भारतीय फिल्मकारों को धार्मिक तथा आध्यात्मिक परम्पराओं का तिरस्कार कर अपनी सांस्कृतिक सीमाओं का उल्लंघन करने की कुचेष्टा कदापि नहीं करनी चाहिए वरना लेने के देने पड़ जायेंगे।

३. अध्यादेश

यह हर्ष का विषय है कि हमारे राष्ट्रपति महोदय का ध्यान फिल्मी अश्लीलता की तरफ गया है। अगर वे सचमुच चाहते हैं कि नग्नता, कामुकता, भोगवाद, विलासिता तथा अनैतिकता को सहन नहीं किया जाना चाहिए और इस समाज को अश्लीलता के जहर से बचा कर व पतन के गढ़ से उबार कर सही दिशा देनी है तो राष्ट्रपति महोदय को चाहिए कि वे इस दिशा में कदम उठायें। अच्छा ही होगा अगर राष्ट्रपति महोदय शीघ्र इस दिशा में अध्यादेश जारी कर अश्लीलता के दुष्प्रभाव को रोकने का प्रशंसनीय प्रयास करें। (क्रमशः)

(पृष्ठ ५ का शेषांश)

प्रस्ताव—५

हरयाणा सरकार द्वारा स्वामी अग्निवेश प्रस्तोता आर्य विद्यापरिषद, प्रो० उत्तमचन्द शरर, श्री बलजीतसिंह आर्य, श्री गंगाराम एडवोकेट, श्री सत्यव्रत, श्री दयानन्द, श्री राधेश्याम व महेन्द्रपाल भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा की गिरफ्तारी एक ऐसा निन्दनीय कुकर्म है जिस पर जितना भी रोष प्रकट किया जाये कम है। यह गिरफ्तारियां बिना किसी कारण के और बिना किसी आधार के की गई हैं। आर्य समाज इन्हें अपने लिए एक चुनौती समझता है। यह सम्मेलन हरयाणा सरकार को यह चेतावनी देता है कि यदि उसने आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं के विरुद्ध अपना अभियान बन्द न किया तो सारा आर्यजगत इस चुनौती को स्वीकार करते हुए क्षेत्र में उतर आयेगा। उस अवस्था में जो भी परिस्थितियां पैदा होंगी तो उनका उत्तरदायित्व हरयाणा सरकार पर होगा। ★

हरयाणा में जनतन्त्र खत्म तानाशाही लागू

हरयाणा किसान मजदूर सभा के संयोजक तथा जिला आर्य सभा के जनरल सेक्रेटरी गंगाराम एडवोकेट ने बताया कि हरयाणा की जेलों में आन्दोलनकारियों तथा सत्याग्रहियों के साथ बहुत बुरा सलूक किया जा रहा है। उनके सम्बंधियों रिश्तेदारों तथा वकीलों तक को जेल में मुलाकात की इजाजत नहीं दी जा रही है। बी. क्लास के अधिकारियों को सी. क्लास में डाल रखा है। तथा गन्दे से गंदा खाना दिया जा रहा है। बंसीलाल सरकार—बिजली कर्मचारियों से, सरकारी अध्यापकों से, रोडवेज कर्मचारियों से, हरिजनों, किसानों तथा अन्य संगठनों के साथ किए गए वायदों से मुकर रही है तथा अपने दुर्व्यवहार से जनता को विवश किया जा रहा है कि वह हड़ताल कर, तोड़फोड़ करे, तथा आग लगाकर सरकार को रास्ता दिखा दे। हरयाणा पुलिस गरीब आदमियों के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रही है। रिवाशा गांव में निर्दोष औरत को पुलिस ने जान से मार दिया। यह कहानी रोंगटे खड़े करने वाली है।

गंगाराम जी ने हरयाणा की श्रमजीवी, बुद्धिजीवी जनता को तथा विद्यार्थियों को आह्वान किया है कि वे न्याय की लड़ाई लड़ने के लिए इकट्ठे हो जायें। उन्होंने सरकार द्वारा न्यायालयों में किए जा रहे हस्तक्षेप की घोर निन्दा की है। तथा पी. सी. पण्डित को सुपरसीड करके नरूला को नियुक्ती की अन्यायपूर्ण बात कही है। इससे तमाम जनता का विश्वास अदालत से उठ जायेगा। तथा सरकार द्वारा उठाये गये ऐसे कदमों से परेशान होकर जनता न्याय व्यवस्था को अपने हाथ में ले लेने के लिए बाध्य होगी।

गंगाराम जी ने वकीलों से, अध्यापकों से, विद्यार्थियों से, किसान-मजदूरों से, तथा बुद्धिजीवियों से आग्रह किया है कि बन्सीलाल की धक्केशाही को खत्म करने के लिए एकजुट होकर असहयोग आन्दोलन शुरू करना चाहिए तथा सरकार को राजसत्ता छोड़ने के लिए मजबूर किया जाये।

गंगाराम जी ने हरयाणा रोडवेज की मांगों का पूरा समर्थन किया तथा रोहतक में पुलिस द्वारा निर्दोष रोडवेज कर्मचारियों की, की गई पिटाई की घोर निन्दा की। तथा सरकार को चेतावनी दी है कि या तो इनकी मांगे मान ली जायें वरना हरयाणा की तमाम जनता संघर्ष में कूद पड़ेगी।

उन्होंने बताया कि बंसीलाल सरकारी कर्मचारियों में फूट डाल कर हड़तालें असफल करना चाहता है। अतः तमाम सरकारी कर्मचारी संगठनों को एक साथ मिल कर संघर्ष करना चाहिए। ★

भवदीय

गंगाराम एडवोकेट, गोहाना

चुनाव सूचना

आर्य सभा अजमेर जिला समिति

आर्य सभा अजमेर जिला समिति का अधिवेशन २३ अप्रैल १९७४ को स्वामी ओमाश्रित (नसीराबाद) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें इस वर्ष के लिए निम्न पदाधिकारी सर्व सम्मति से निर्विरोध निर्वाचित हुए—

अध्यक्ष—श्री शशिकान्त आर्य
महा मन्त्री—श्री कृष्णकुमार वर्मा
कोषाध्यक्ष—श्री चंचलदास जी आर्य

आर्यसमाज आसौदा का चुनाव

दिनांक १५-५-७४ को आर्यसमाज आसौदा का चुनाव श्री रघुवीरसिंह जी आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए

प्रधान-श्री रघुवीरसिंह जी आर्य (नम्बरदार)
मन्त्री-श्री दयानन्द जी आर्य
कोषाध्यक्ष-श्री महेन्द्रसिंह जी आर्य

आर्य युवक परिषद रामा मंडी

रामा मण्डी आर्य युवक परिषद् की स्थापना की गई जिसमें निम्न लिखित पदाधिकारी चुने गये हैं।

प्रधान-डा० आनन्द प्रकाश जी
मन्त्री-श्री बलदेव आर्य
कोषाध्यक्ष-श्री पवन कुमार जी

आर्य समाज कैथल कुरुक्षेत्र

आर्य समाज क्योडक गेट कैथल का चुनाव ५-५-७४ को निम्न प्रकार से हुआ। उसमें निम्नांकित पदाधिकारी चुने गये—

प्रधान : श्री राममूर्ति जी
मन्त्री : श्री सोहनलाल जी
कोषा० : श्री वजीरचन्द जी सिगंला

आर्य युवक परिषद सुलतानपुर लोधी का चुनाव

स्थानीय आर्य युवक परिषद् का चुनाव १५ मई को श्री पन्डित नरसिंह देव जी की अध्यक्षता में हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये।

प्रधान—श्री रोशन अरोड़ा
मन्त्री—श्री पवन देव सेठी
कोषाध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र पसरीचा

चुनाव के पश्चात् परिषद् की मीटिंग श्री रोशन अरोड़ा की अध्यक्षता में

ा में अपने आचरण से

हुई जिसमें स्वामी ो भावना पैदा करने
गिरफ्तारी की कड़ी जाये।
तथा हरयाणा सरकार आर्य समाज के लिए
थी कि वह स्वामी अग्नि
मुकदमा वापस ले अन्य ो के लिए चरित्र-
सकती हैं। रित किया जाये।
र आध्यात्मिक

पंजाव आर्य युवक प

पंजाब आर्य युवक प्रचलित व्यक्ति-
षिक बैठक स्वामी वेदानन्द स्नेह और
जी की अध्यक्षता में रोपड़
१९७४-७५ के लिए निम्नलि को प्रातः
धिकारियों का निर्वाचन किया

प्रधान-स्वामी वेदानन्द जी स
मंत्री—श्री वृजेन्द्र मोहन आर्य गुरुकुल,
कोषाध्यक्ष—श्री सोमदेव आर्य सफलता
वर्ग में

अमृतसर में मई में होने वाल
में इसका और विस्तार किया ज
उपरोक्त नव निर्वाचित पदाधिकारि ों की
'आर्य समाज' के अन्य संगठनों से ।
दार अपील किया कि आर्य समाज
होने वाली शताब्दी समारोह को सुस या
बनाने के लिए आपस में मिलकर क ों
करना चाहिए।

(पृष्ठ ९ का शेषांश)

नहीं भी देती तो भी उसे एक दम अनुपयोगी नहीं कहा जा सकता। देश में उपलब्ध बैलों से लगभग ४००० करोड़ यूनिट अश्व शक्ति प्राप्त होती है, जिसका मूल्य १५०० करोड़ रु० होता है। समस्त दुग्ध उत्पादन का ४५% हम देश की गायों से प्राप्त करते हैं। गाय का गोबर ही ६ रु० प्रति मन के हिसाब से बिकता है इस प्रकार वर्ष भर उपलब्ध होने वाले गोबर का मूल्य ५०० करोड़ रु० है।

विश्व के देशों की आंखें सदैव से हो हमारे देश के गोधन पर रही हैं। कारण, हमारे देश की गौओं के मांस का स्वाद उनके देश की गौओं के मांस के स्वाद से कहीं अच्छा है।

कहने का अभिप्राय यह है कि देश के आर्थिक विकास में देश के पशुधन की उपेक्षा उचित नहीं। जब देश में दूध, घी, गोबर इत्यादि की अत्यधिक आवश्यकता अनुभव की जा रही है, तब सरकार का यह नैतिक दायित्व हो जाता है कि पशु संबर्धन की ओर विशेष ध्यान दें। नयी-नयी नस्लें तैयार की जाए ताकि दुग्ध उत्पादन बड़ी तेजी से देश की मांग के अनुसार बढ़ा सकें। गोबर से भी ईंधन की समस्या को सुलझाने का सक्रिय प्रयास किया जाना चाहिए।

(साभार सम्पदा)

स्वदेशाभिमान का अभाव

अब देश में कुछ नहीं हो सकेगा। मैं इसलिए ऐसा कह रहा हूँ, क्योंकि इस देश में अब उन झक्की और पागल लोगों की कमी हो गयी है, जिन पर देशप्रेम का पागलपन और नशा सवार था, जिन्होंने इस देश के स्वाभिमान को मैनचेस्टर और लंका शायर के कपड़ों को जलाकर उभाड़ा था, जिन्होंने आर्थिक विकेन्द्रीकरण की बात कह कर भारत के गांवों को एक व्यक्तित्व दिया था, जिनकी श्वास-श्वास और रग-रग में यह भाव समाया हुआ था कि भारत की आत्मा भारत के मैले-कुचैले अनपढ़ दलित और शोषित लोगों के हृदयों में धड़कती है और भारत को अपनी एक भाषा, अपने स्वाभिमान की धड़कनों को छूने के लिए चाहिए।

—डा० राममनोहर लोहिया

(पृष्ठ ५ का शेषांश)

प्रस्ताव–५

हरयाणा सरकार द्वारा स्वामी अग्निवेश प्रस्तोता आर्य विद्यापरिषद, प्रो० उत्तमचन्द शरर, श्री बलजीतसिंह आर्य, श्री गंगाराम एडवोकेट, श्री सत्यव्रत, श्री दयानन्द, श्री राधेश्याम व महेन्द्रपाल भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा की गिरफ्तारी एक ऐसा निन्दनीय कुकर्म है जिस पर जितना भी रोष प्रकट किया जाये कम है। यह गिरफ्तारियां बिना किसी कारण के और बिना किसी आधार के की गई हैं। आर्य समाज इन्हें अपने लिए एक चुनौती समझता है। यह सम्मेलन हरयाणा सरकार को यह चेतावनी देता है कि यदि उसने आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं के विरुद्ध अपना अभियान बन्द न किया तो सारा आर्यजगत इस चुनौती को स्वीकार करते हुए क्षेत्र में उतर आयेगा। उस अवस्था में जो भी परिस्थितियां पैदा होंगी तो उनका उत्तरदायित्व हरयाणा सरकार पर होगा। ★

हरयाणा में जनतन्त्र खत्म तानाशाही लागू

हरयाणा किसान मजदूर सभा के संयोजक तथा जिला आर्य सभा के जनरल सेक्रेटरी गंगाराम एडवोकेट ने बताया कि हरयाणा की जेलों में आन्दोलनकारियों तथा सत्याग्रहियों के साथ बहुत बुरा सलूक किया जा रहा है। उनके सम्बंधियों रिश्तेदारों तथा वकीलों तक को जेल में मुलाकात की इजाजत नहीं दी जा रही है। बी. क्लास के अधिकारियों को सी. क्लास में डाल रखा है। तथा गन्दे से गंदा खाना दिया जा रहा है। बंसीलाल सरकार–बिजली कर्मचारियों से, सरकारी अध्यापकों से, रोडवेज कर्मचारियों से, हरिजनों, किसानों तथा अन्य संगठनों के साथ किए गए वायदों से मुकर रही है तथा अपने दुर्व्यवहार से जनता को विवश किया जा रहा है कि वह हड़ताल कर, तोड़फोड़ करे, तथा आग लगाकर सरकार को रास्ता दिखा दे। हरयाणा पुलिस गरीब आदमियों के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रही है। रिवाशा गांव में निर्दोष औरत को पुलिस ने जान से मार दिया। यह कहानी रोंगटे खड़े करने वाली है।

गंगाराम जी ने हरयाणा की श्रमजीवी, बुद्धिजीवी जनता को तथा विद्यार्थियों को आह्वान किया है कि वे न्याय की लड़ाई लड़ने के लिए इकट्ठे हो जायें। उन्होंने सरकार द्वारा न्यायालयों में किए जा रहे हस्तक्षेप की घोर निन्दा की है। तथा पी. सी. पण्डित को सुपरसीड करके नरूला की नियुक्ती की अन्यायपूर्ण बात कही है। इससे तमाम जनता का विश्वास अदालत से उठ जायेगा। तथा सरकार द्वारा उठाये गये ऐसे कदमों से परेशान होकर जनता न्याय व्यवस्था को अपने हाथ में ले लेने के लिए बाध्य होगी।

गंगाराम जी ने वकीलों से, अध्यापकों से, विद्यार्थियों से, किसान-मजदूरों से, तथा बुद्धिजीवियों से आग्रह किया है कि बन्सीलाल की धक्केशाही को खत्म करने के लिए एकजुट होकर असहयोग आन्दोलन शुरू करना चाहिए तथा सरकार को राजसत्ता छोड़ने के लिए मजबूर किया जाये।

गंगाराम जी ने हरयाणा रोडवेज की मांगों का पूरा समर्थन किया तथा रोहतक में पुलिस द्वारा निर्दोष रोडवेज कर्मचारियों की, की गई पिटाई की घोर निन्दा की। तथा सरकार को चेतावनी दी है कि या तो इनकी मांगे मान ली जायें वरना हरयाणा की तमाम जनता संघर्ष में कूद पड़ेगी।

उन्होंने बताया कि बंसीलाल सरकारी कर्मचारियों में फूट डाल कर हड़तालें असफल करना चाहता है। अतः तमाम सरकारी कर्मचारी संगठनों को एक साथ मिल कर संघर्ष करना चाहिए। ★

भवदीय

गंगाराम एडवोकेट, गोहाना

चुनाव सूचना

आर्य सभा अजमेर जिला समिति

आर्य सभा अजमेर जिला समिति का अधिवेशन २३ अप्रैल १६७४ को स्वामी ओमाश्रित (नसीराबाद) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें इस वर्ष के लिए निम्न पदाधिकारी सर्व सम्मति से निर्विरोध निर्वाचित हुए—

अध्यक्ष—श्री शशिकान्त आर्य
महा मन्त्री—श्री कृष्णकुमार वर्मा
कोषाध्यक्ष—श्री चंचलदास जी आर्य

आर्यसमाज आसौदा का चुनाव

दिनांक १५-५-७४ को आर्यसमाज आसौदा का चुनाव श्री रघुवीरसिंह जी आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए

प्रधान-श्री रघुवीरसिंह जी आर्य (नम्बरदार)
मन्त्री-श्री दयानन्द जी आर्य
कोषाध्यक्ष-श्री महेन्द्रसिंह जी आर्य

आर्य युवक परिषद रामा मंडी

रामा मण्डी आर्य युवक परिषद् की स्थापना की गई जिसमें निम्न लिखित पदाधिकारी चुने गये हैं।

प्रधान-डा० आनन्द प्रकाश जी
मन्त्री-श्री बलदेव आर्य
कोषाध्यक्ष-श्री पवन कुमार जी

आर्य समाज कैथल कुरुक्षेत्र

आर्य समाज क्योडक गेट कैथल का चुनाव ५-५-७४ को निम्न प्रकार से हुआ। उसमें निम्नांकित पदाधिकारी चुने गये—

प्रधान : श्री राममूर्ति जी
मन्त्री : श्री सोहनलाल जी
कोषा० : श्री वजीरचन्द जी सिगंला

आर्य युवक परिषद सुलतानपुर लोधी का चुनाव

स्थानीय आर्य युवक परिषद् का चुनाव १५ मई को श्री पन्डित नरसिंह देव जी की अध्यक्षता में हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये।

प्रधान—श्री रोशन अरोड़ा
मन्त्री—श्री पवन देव सेठी
कोषाध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र पसरीचा

चुनाव के पश्चात् परिषद् की मीटिंग श्री रोशन अरोड़ा की अध्यक्षता में हुई जिसमें स्वामी अग्निवेश जी की गिरफ्तारी की कड़ी आलोचना की गई तथा हरयाणा सरकार से अपील की गई थी कि वह स्वामी अग्निवेश से सम्बंधित मुकदमा वापस ले अन्यथा हालात बिगड़ सकती हैं।

पंजाब आर्य युवक परिषद् रोपड़

पंजाब आर्य युवक परिषद् की वार्षिक बैठक स्वामी वेदानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में रोपड़ में हुई जिसमें १६७४-७५ के लिए निम्नलिखित पदाधिकारियों का निर्वाचन किया गया।

प्रधान-स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती
मंत्री—श्री वृजेन्द्र मोहन आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री सोमदेव आर्य

अमृतसर में मई में होने वाली बैठक में इसका और विस्तार किया जायगा। उपरोक्त नव निर्वाचित पदाधिकारियों ने 'आर्य समाज' के अन्य संगठनों से जोर दार अपील किया कि आर्य समाज की होने वाली शताब्दी समारोह को सुसफल बनाने के लिए आपस में मिलकर काम करना चाहिए।

(पृष्ठ ६ का शेषांश)

नहीं भी देती तो भी उसे एक दम अनुपयोगी नहीं कहा जा सकता। देश में उपलब्ध बैलों से लगभग ४००० करोड़ यूनिट अश्व शक्ति प्राप्त होती है, जिसका मूल्य १५०० करोड़ रु० होता है। समस्त दुग्ध उत्पादन का ४५% हम देश की गायों से प्राप्त करते हैं। गाय का गोबर ही ६ रु० प्रति मन के हिसाब से बिकता है इस प्रकार वर्ष भर उपलब्ध होने वाले गोबर का मूल्य ५०० करोड़ रु० है।

विश्व के देशों की आंखें सदैव से ही हमारे देश के गोधन पर रही हैं। कारण, हमारे देश की गौओं के मांस का स्वाद उनके देश की गौओं के मांस के स्वाद से कहीं अच्छा है।

कहने का अभिप्राय यह है कि देश के आर्थिक विकास में देश के पशुधन की उपेक्षा उचित नहीं। जब देश में दूध, घी, गोबर इत्यादि की अत्यधिक आवश्यकता अनुभव की जा रही है, तब सरकार का यह नैतिक दायित्व हो जाता है कि पशु संबर्धन की ओर विशेष ध्यान दें। नयी-नयी नस्लें तैयार की जाए ताकि दुग्ध उत्पादन बड़ी तेजी से देश की मांग के अनुसार बढ़ा सकें। गोबर से भी ईंधन की समस्या को सुलझाने का सक्रिय प्रयास किया जाना चाहिए।

(साभार सम्पदा)

स्वदेशाभिमान का अभाव

अब देश में कुछ नहीं हो सकेगा। मैं इसलिए ऐसा कह रहा हूँ, क्योंकि इस देश में अब उन भक्की और पागल लोगों की कमी हो गयी है, जिन पर देशप्रेम का पागलपन और नशा सवार था, जिन्होंने इस देश के स्वाभिमान को मैंनचेस्टर और लंका शायर के कपड़ों को जलाकर उभाड़ा था, जिन्होंने आर्थिक विकेन्द्रीकरण की बात कह कर भारत के गांवों को एक व्यक्तित्व दिया था, जिनकी श्वास-श्वास और रग-रग में यह भाव समाया हुआ था कि भारत की आत्मा भारत के मैले-कुचैले अनपढ़ दलित और शोषित लोगों के हृदयों में धड़कती है और भारत को अपनी एक भाषा, अपने स्वाभिमान की धड़कनों को छूने के लिए चाहिए।

—डा० राममनोहर लोहिया

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का घोषणा-पत्र १९७४-७५

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का लक्ष्य महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक मान्यताओं के अनुसार एक ऐसे राष्ट्र की स्थापना करना है:—

१. जिसमें जन्म के आधार पर स्थापित राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं को समाप्त कर सबको उन्नति के समान अवसर प्रदान किए जायेंगे।

२. जिसमें मनुष्य के द्वारा मनुष्य के शोषण की वर्तमान दूषित व्यवस्था को समाप्त कर वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक को उसकी योग्यता (गुण, कर्म, स्वभाव) के अनुसार समाज में प्रतिष्ठित किया जायेगा।

३. जिसमें समाज के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त पाखण्ड, अन्ध-विश्वास, रूढ़िवाद एवं भोगवाद की परम्पराओं पर प्रबल प्रहार करते हुए राष्ट्र में भौतिक उन्नति के साथ आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति का वातावरण तैयार किया जायेगा।

कार्य-क्रम

उपरोक्त उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हरियाणा, दिल्ली, पंजाब व हिमाचल प्रान्त की आर्य समाजें आगामी एक वर्ष में निम्नलिखित कार्य-क्रम को क्रियान्वित करने का प्रयास करेंगी।

१. जिला स्तर पर आर्य उप-प्रतिनिधि सभाओं का निर्माण करके प्रत्येक जिले में कम से कम १०० आर्यसमाजों की स्थापना करना।

२. जिला उप-सभा में २५ सभासदों की एक समिति होगी जो जिले का प्रबन्ध सचालन करेगी।

३. प्रत्येक जिले में दो भजन मण्डली, दो उपदेशक और एक जिला अधिष्ठाता की नियुक्ति होगी।

४. जिला उप-सभा जिले की समाजों के उत्सवों, वेद-प्रचार, संस्कार आदि का प्रबन्ध करेगी तथा जिले स्तर के सम्मेलनों का आयोजन करेगी।

शिक्षण संस्थायें

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में चल रहे स्कूल, कालेज, गुरुकुल आदि के माध्यम से जहां शिक्षा के प्रसार-प्रचार में महत्वपूर्ण योग दान दिया जा रहा है वहां छात्र-छात्राओं को आर्य समाज की मान्यताओं में शिक्षित कर उन्हें वैदिक धर्म की सेवा में प्रवृत्त करने के लिए निम्न-लिखित कार्य कर्मों पर बल दिया जायेगा।

१. प्रत्येक शिक्षण संस्था में आसन, प्राणायाम तथा व्यायाम सम्बन्धी प्रशिक्षण देने की अनिवार्य रूप से व्यवस्था होगी।

२. बालक बालिकाओं को यज्ञोपवीत धारण करने के लिए प्रेरित किया जायेगा।

३. शिक्षा के सभी स्तर पर छात्र-छात्राओं की योग्यता, अभिरुचि को देखते हुए धर्म शिक्षा का पाठ्य-क्रम लागू किया जायेगा।

४. विद्वान उपदेशकों के प्रवचनों का समय समय पर प्रबन्ध कर विद्यार्थियों में वैदिक धर्म, चरित्र, देशभक्ति, ब्रह्मचर्य की निष्ठा उत्पन्न की जायेगी।

आर्य युवक संगठन

आर्य समाज के क्षेत्र में युवकों का अधिक से अधिक प्रवेश हो सके इसके लिए निम्न कार्य-क्रम अपनाये जायेंगे।

१. प्रत्येक आर्य समाज में आर्य कुमार सभा, युवक परिषद्, तथा वीर दल की स्थापना अवश्य की जायेगी।

२. ग्रामों तथा नगरों में युवकों की दैनिक शाखा और साप्ताहिक बौद्धिक का आयोजन किया जायेगा।

३. वार्षिक उत्सवों पर युवक सम्मेलनों, वाद-विवाद तथा व्याख्यान प्रतियोगिता द्वारा युवकों में सामाजिक नेतृत्व एवं वक्तृत्व कला का विकास किया जायेगा।

४. युवक संगठनों का गणवेश निर्धारित करके एक वर्ष में एक हजार गणवेशधारी प्रशिक्षित युवक तैयार किए जायेंगे।

दलित वर्ग में प्रचार कार्य

आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों में आर्य समाज प्रमुख रूप से कार्य करता रहा है किन्तु कुछ समय से शिथिलता आ गई है। इस दिशा में निम्न कार्य-क्रम लागू किए जायेंगे।

१. दलित वर्ग के बन्धुओं को अधिकाधिक आर्य समाज के सदस्य बनाया जाये।

२. वार्षिक उत्सव के अवसर पर प्रीतिभोज में स्नेह सम्मान पूर्वक आमन्त्रित किया जाये।

३. प्रत्येक आर्य समाज अस्पृश्य कहे जाने वाले कम से कम एक बालक को छात्रवृत्ति देकर गुरुकुल आदि में पढ़ाने को भेजें।

४. शिक्षण संस्था दलित वर्ग के बालकों के लिए कुछ सुरक्षित स्थान घोषित करे और भोजन वस्त्रादि का सब व्यय वहन करे।

५. ऋषिबोधोत्सव, कृष्णजन्माष्टमी आदि पर्वों की तरह आर्य समाजें महर्षि बाल्मीकि तथा सन्त रविदास जन्म को धूम-धाम से मनावें।

६. आर्थिक समस्याओं को दूर करने में सहयोग प्रदान किया जाये।

प्रचार प्रणाली

१. प्रत्येक आर्य समाज अपना वार्षिक उत्सव अवश्य करे।

२. उत्सव में नगर कीर्तन का आयोजन अवश्य किया जाये।

३. साप्ताहिक सत्संगों और उत्सव आदि में वैदिक सिद्धान्तों पर ही प्रवचन होने चाहिए और उन्हें चालू राजनीति से मुक्त रखना चाहिए।

४. भजनों, व्याख्यानों, तथा कथाओं में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए कि वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार ही भाव हों।

५. आर्य समाज स्थापना दिवस, ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि), महर्षि निर्वाण दिवस को सामूहिक रूप से विशेष धूमधाम से मनाया जाए।

६. प्रत्येक नगर तथा ग्रामों की दीवारों पर निम्न नारे सुन्दर प्रकार से लिखवाये जायें।

१. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।
२. वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।
३. वेद का पढ़ना पढ़ाना सब आर्यों का परम धर्म है।
४. शराब पीना पाप है।
५. आर्य राष्ट्र बनायेंगे, भ्रष्टाचार मिटायेंगे।

उपदेशक विद्यालय तथा कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज के सम्पूर्ण आन्दोलन तथा वैदिक कर्मकाण्ड को जन सामान्य तक पहुँचाने का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व आर्य सन्यासियों उपदेशकों और कार्यकर्त्ताओं पर है। सुसंस्कृत योग्य उपदेशक एवं कार्यकर्त्ता निर्माण के लिए निम्न योजना बनायी जायेगी।

१. वैदिक सिद्धान्तों के योग्य उपदेशक तैयार करने के लिए एक ऐसा प्रशिक्षण केन्द्र बनाया जाए जिसमें कम से कम शास्त्री या बी. ए. संस्कृत की योग्यता के व्यक्ति प्रवेश किये जायें।

२. प्रशिक्षण के समय का पूर्ण व्यय आर्य समाज वहन करें।

३. आर्य जगत के अपने अपने विषय के उच्चकोटि के विद्वानों की सेवा लेकर उन्हें शिक्षित दीक्षित किया जाये।

४. प्रशिक्षण के बाद सम्मानित दक्षिणा के साथ प्रचार क्षेत्र में कार्य सौंपा जाये।

५. वर्ष में कम से कम १० दिन का एक शिविर आर्य समाजों के प्रधान, मन्त्री तथा कार्यकर्त्ताओं का अवश्य लगे जिसमें उन्हें मन्त्रों के उच्चारण सत्संग और सभाओं का संयोजन तथा अन्य सैद्धान्तिक जानकारी दी जाये।

६. वैदिक संस्कारों के निर्वहन के लिए योग्य पुरोहितों का भी निर्माण किया जाए और प्रत्येक आर्य समाज में एक योग्य पुरोहित की व्यवस्था की जाये।

७. आर्य समाज के वानप्रस्थ एवं सन्यासी महानुभावों के प्रति आर्यजन विशेष आदर भाव रखें और सन्यासी महानुभाव भी उच्च आदर्शों की स्थापना जनता में अपने आचरण से करें।

८. युवकों में चरित्र एवं व्यायाम की भावना पैदा करने के लिए भी शिविरों का आयोजन किया जाये।

९. हजारों व्यक्ति ऐसे तैयार हों जो आर्य समाज के लिए निष्काम भाव से समयदान करें।

१०. वानप्रस्थ एवं सन्यास की दीक्षा लेने के लिए चरित्रवान, कार्यशील योग्य आर्य महानुभावों को प्रेरित किया जाये।

११. सन्यासी वर्ग के द्वारा स्थान स्थान पर आध्यात्मिक योग साधना केन्द्रों का सचालन किया जाये।

१२. उपदेशक महानुभावों, आर्य बन्धुओं में प्रचलित व्यक्तिगत निन्दा करने की प्रवृत्ति को रोकें और परस्पर स्नेह और सौहार्द का वातावरण बनायें।

१३. आर्य छात्रावासों की स्थापना करके युवकों को प्रातः सायं वैदिक कर्मकाण्ड से दीक्षित किया जाए।

महिला वर्ग में प्रचार कार्य

वैसे तो आर्य समाज की ओर से अनेक कन्या गुरुकुल, कन्या विद्यालय तथा स्त्री आर्य समाजों का संचालन सफलता पूर्वक हो रहा हैं। किन्तु पुरुषों की अपेक्षा महिला वर्ग में पर्याप्त कम जागृति है जिसके लिए आवश्यक है कि:—

१. आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्य समाजों की तरह आर्य स्त्री समाजों को भी मान्यता प्रदान की जाए।

२. महिलायें अपने साप्ताहिक सत्संग अवश्य करें।

३. वार्षिक उत्सव पर महिला सम्मेलन अवश्य किया जाय।

४. गुरुकुलों की स्नातिका आदि शिक्षित बहनों को मंचों पर व्याख्यान देने के लिए प्रेरित किया जाए।

जन आन्दोलनों का नेतृत्व

१. प्रत्येक आर्य समाज तथा आर्य बन्धु का यह परम कर्त्तव्य है कि वह समाज में फैले अज्ञान, अन्याय और भ्रष्टाचार के विरुद्ध निर्भीकता के साथ संघर्ष करे।

२. रिश्वत लेने वाले राज्य कर्मचारियों तथा भ्रष्ट प्रशासन के अधिकारियों के विरोध में वातावरण तैयार करें।

३. अपने सामाजिक और आर्थिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ लोगों का संगठन बनाकर जनता में जागृति पैदा करें।

४. मद्यपान आदि महाविनाशक व्यसनों के विरोध में जनमत तैयार करें।

५. स्थानीय लोगों की दैनिक समस्याओं को सुनने के लिए आर्य समाज मन्दिरों में कार्यालय बनाये जाए और भ्रष्टाचार विरोध समिति बनाकर अन्याय के विरुद्ध मोर्चा लगा कर जनता का मार्ग दर्शन किया जाये।

६. बेरोजगारी व साधनहीन व्यक्तियों के लिए निर्वाह की व्यवस्था की जाये।

७. आर्य समाज मन्दिरों में ऋषि लंगर की व्यवस्था तथा अतिथि सेवा का प्रबन्ध किया जाये।

पंजीयन क्रमांक **RTK 28**
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

राजधर्म
रोहतक
२७ मई १९७४

३१० व्यवस्थापक पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार (उ. प्र.)

... रोहतक से स्वामी अग्निवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। फोन : ८८२



पाक्षिक

राजधर्म

छत्रपति शिवाजी की पुण्य स्मृति

आर्य सम्मेलन का आर्यों को आह्वान्

फिल्मी अश्लीलता तथा उपचार

"अमर" (एक मर्मस्पर्शी नाटक)

आज स्वामी दयानन्द की उपादेयता

गरीबी हटाओ बनाम गरीबी बढ़ाओ

प्रधान सम्पादक
स्वामी अग्निवेश

सह सम्पादक
गिरजेश्वर

जून प्रथम
६ : अङ्क ११
वार्षिक शुल्क १५ रु०
एक प्रति ७० पैसे

सम्पादकीय

छत्रपति शिवाजी की पुण्य स्मृति

छत्रपति शिवाजी की पुण्य स्मृति में आज देश भर में उनकी राज्याभिषेक त्रि-शताब्दी मनाई जा रही है। ऐसे समारोह के आयोजन से हम जहां अपने महान नेता द्वारा अदा की गई भूमिका का तत्कालीन देश की परिस्थितियों के अनुसार मूल्यांकन करते है, वहीं हम अपने महान नेता का आज की नई परिस्थितियों के संदर्भ में भी मूल्यांकन कर उससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं। आज जब देश सांस्कृतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक दृष्टि से एक होकर धर्म के नाम पर दो भागों में विभक्त है, यद्यपि आज उसका तीन भाग बन चुका है; छत्रपति शिवाजी के अखण्ड भारत के स्वप्न का मूल्यांकन अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। शिवाजी पर बहुत से देशी-विदेशी लेखक 'अन्ध हिन्दू राष्ट्र भक्त' होने का आरोप लगाते हैं। इन लेखकों की मनोभावना हिन्दू-मुस्लिम विभेद की दिवार खड़ा कर अपने निहित स्वार्थ की पूर्ति करना रहा है। आज हमें प्रत्येक दृष्टिकोण से ठीक तर्क संगत विश्लेषण कर देश के इतिहास की व्याख्या करने की आवश्यकता है, जिससे हम अपने अतीत से सबक लेकर अपने वर्तमान और भविष्य को उन्नतशील बना सके।

१८५७ का प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम अंग्रेजों के विरुद्ध हिन्दू-मुसलमानों ने कन्धे से कन्धा मिला कर लड़ा। इस संग्राम के विफलता के बाद अंग्रेजों ने हिन्दू-मुस्लिम एकता को अपने साम्राज्य के ऊपर भयंकर प्रहार समझा। अत: उन्होंने इस देश के इतिहास को गलत चित्रित कर हिन्दू-मुस्लिम विभेद उत्पन्न करना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझा। उन्होंने समस्त मुस्लिम जगत को समस्त हिन्दुत्व को मिटाने वाले के रूप में चित्रित किया और अपने को मात्र सौदागर के रूप में। परिणाम स्वरूप गलत इतिहास पढ़कर हिन्दू मुस्लिम पागल होकर एक दूसरे को अपना जानी दुश्मन समझते हैं। आज हिन्दू-मुस्लिम दंगे तो होते हैं परन्तु हिन्दू-ईसाई दंगे सुनने को भी नहीं मिलने यद्यपि अंग्रेजों भी ने इस देश का भयंकर शोषण और अत्यधिक बर्बादी की है।

जब एक आक्रमणकारी मुगल मुसलमान तैमूरलंग इस देश पर आक्रमण करता है तो वह दिल्ली में हिन्दुओं की अपेक्षा पठान मुसलमानों का अधिक संख्या में कत्ल करता है। मुसलमान होने के कारण मुगल, पठानों पर रहम नहीं करते हैं। इसी भांति जब इरानी मुसलमान नादिरशाह आता है तो वह हिन्दुओं की अपेक्षा दिल्ली में मुगलों का अत्यधिक संख्या में कत्लयाम करता है। इससे प्रमाणित होता है कि एक धर्म में दीक्षित होने के कारण एक आक्रमणकारी मुसलमान दूसरे मुसलमान को नहीं बख्सता है। अंग्रेज इतिहासकारों द्वारा "समस्त मुस्लिम जगत द्वारा समस्त हिन्दुत्व को मिटाने की बात, चित्रित करना आजीवन हिन्दू-मुस्लिम शत्रुता की भावना को दृढ़ करना रहा है जिससे वे अपने साम्राज्य को अधिक दिन तक यहां कायम रख सकें। सही ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इसकी व्याख्या देशी और परदेशी के बीच लड़ाई का रहा है। परन्तु अंग्रेजों ने इतिहास को विकृत कर हिन्दू-मुस्लिम समस्या को जटिल बना दिया है। छत्रपति शिवाजी भी अंग्रेजों इतिहासकारों के इस व्याख्या से नहीं बच सके। आज भारतीय मुसलमान उन्हें अपना शत्रु मानता है। यद्यपि उन्होंने अपने जीवन में किसी भी अहिन्दू महिला का अपमान एक क्षण भी सहन नहीं किया है। उनके पिता जी की एक मुस्लिम पत्नी सुल्तान नूरुद्दीन पूना में पूर्ण सम्मान के साथ रहती थी। शिवाजी भारतीय मुसलमानों के अधिकारों का हनन करना देश हित में नहीं समझते थे। स्वयं मुसलमान इतिहासकारों ने स्वीकार किया है कि भारत की आजादी के इस महान सेनानी ने कुरान और मस्जिद दोनों का उससे भी अधिक सम्मान किया जितना कोई मुसलमान कर सकता है। शिवाजी की लड़ाई इस्लाम या भारतीय मुसलमानों से नहीं बल्कि मुसलमान हमलावरों से थी और वे भारत की आजादी के लिए लड़ने वाले एक भारतीय योद्धा की तरह उस मुगल सत्ता से लड़े, जो भारतीय जीवन धारा को हीं सुखा देना चाहती थी। एलफिन्स्टन, कैफीखां, नेहरू तथा डांगे जैसे विरोधी विचारक भी इस एक सत्य को स्वीकार करते हैं कि शिवाजी भारत के अद्वितीय युगपुरुष और राजनेता थे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दवी स्वराज्य का स्वप्न साकार करने के लिए भारत की गरीब जनता को संगठित किया और उसका बड़ी कुशलता से नेतृत्व किया। हिन्दवी का अर्थ हिन्दू-राज से नहीं था। इंशा अल्ला खां ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा था कि हिन्दवी भाषा हिन्दू या मुसलमान की नहीं बल्कि हिन्दुस्तान की भाषा है। शिवाजी ने जब हिन्दवी स्वराज्य का नारा दिया तब उन का अभिप्राय विदेशी हमलावरों को समाप्त करके देश के शासन की बागडोर हिन्दुस्तान की जनता को सौंपने से था।

अत: आज शिवाजी की पुण्य स्मृति में उनके राज्याभिषेक की त्रिशताब्दी समारोह की महत्ता इसी में है कि देशकी शोषित जनता संगठित होकर शोषण मुक्त व्यवस्था का सृजन करने का दृढ़ संकल्प धारण करे ताकि इस देश के कृत्रिम विभाजन को आसानी से मिटाया जा सके। अखण्ड भारत के इस कार्य को सम्पन्न कर ही हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

—गिरिजेश्वर

पंजाब व हिमाचल के आर्यों को आह्वान्

पंजाब सरकार की हिन्दी व संस्कृत के प्रति विरोधात्मक नीति की भर्त्सना, शराब के विरुद्ध प्रबल अभियान प्रारम्भ करने का आदेश; १६ जून को 'भारत का इतिहास' नामक पुस्तक की होली जलाने की घोषणा

२ जून १९७४ को जालन्धर में पंजाब व हिमाचल की आर्य समाजों के प्रतिनिधियों का एक विशाल सम्मेलन हुआ। इसकी अध्यक्षता सभा के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी ने की। इस अवसर पर जो प्रस्ताव पारित किए गए वह आर्य जनता की जानकारी के लिए नीचे उद्धृत किए जाते हैं।

१. भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियान की आवश्कता

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आयोजित पंजाब व हिमाचल के आर्यों का यह सम्मेलन देश में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार व नैतिक पतन को गहरी चिन्ता व निराशा की दृष्टि से देखता है। इस सम्मेलन का यह निश्चित मत है कि देश में जो भ्रष्टाचार फैल रहा है, चाहे वह राजनीति क्षेत्र में है, चाहे आर्थिक क्षेत्र में और चाहे सामाजिक क्षेत्र में, कभी सम्भव न होता यदि धार्मिक क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार ने एक भयानक रूप धारण न कर लिया होता। देश में जो नये नये भगवान पैदा हो रहे हैं, उनके द्वारा जिस प्रकार की विचार धाराओं का प्रतिपादन किया जा रहा है, उनके कारण मानव का अपने धर्म में विश्वास उठता जा रहा है। इसी के साथ ईश्वर के डर से मनुष्य भ्रष्टाचार से बचने का जो प्रयत्न किया करते थे, वह भी समाप्त हो रहा है। यही कारण है कि मानव नये नये मतों और तथाकथित धार्मिक विचार धाराओं के जाल में फंसकर वास्तविक धर्म से दूर हो रहा है और इसीलिए पथभ्रष्ट भी होता जा रहा है। यह एक ऐसी स्थिति है, जिसे आर्य समाज सहन नहीं कर सकता। उसकी कुछ नैतिक मान्यताएं रही है और उन्हीं के सहारे उसने इस देश में प्रत्येक प्रकार के पाखण्ड, अनैतिकता और धर्मान्धता के विरुद्ध संघर्ष किया हैं। आज फिर वह समय आ गया हैं, जबकि आर्य समाज एक बार फिर कटिबद्ध होकर प्रत्येक प्रकार के भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष केलिए तैयार हो जाए प्रत्येक नगर व प्रत्येक गांव में भ्रष्टाचार निरोध समितियां स्थापित की जाएं और जहां भी कोई व्यक्ति किसी प्रकार का भ्रष्टाचार करता है, उसके विरुद्ध संघर्ष किया जाए और उसे बाधित कर दिया जाए कि वह सत्य और धर्म के उन सिद्धांतों के अनुसार अपने आचरण को बनाए, जिनके कारण हमारा देश संसार में एक विशेष महत्व प्राप्त करता रहा है।

२. पंजाब सरकार की हिन्दी व संस्कृत नीति की निन्दा

इसी के साथ यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक आर्य समाजी अपने अन्दर झांक कर स्वयं भी देखे कि कहीं वह भी तो किसी प्रकार के भ्रष्टाचार का कारण तो नहीं बन रहा। प्रत्येक आर्य समाजी को वह चाहे जीवन के किसी भी क्षेत्र में काम करता है, नैतिकता के उच्चादर्शों का पालन करना चाहिए जिनके कारण आर्य समाज आज तक जनता में सर्वप्रिय रहा है। आर्य समाज की मान-मर्यादा प्रत्येक आर्यसमाजी के हाथ में है। इसीलिए यदि हमने देश से भ्रष्टाचार समाप्त करना है तो उसके विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रत्येक आर्य समाजी को कार्य क्षेत्र में कूद पड़ना चाहिए। परन्तु किसी का मार्ग प्रदर्शन करने से पहले यह आवश्यक है कि प्रत्येक आर्यसमाजी स्वयं आत्म निरीक्षण करे, उसी अवस्था में आर्य समाज सफल रूप में भ्रष्टाचार के विरुद्ध कोई आन्दोलन चला सकेगा।

३. पंजाब में शराब के बढ़ते हुए प्रयोग पर चिन्ता

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के प्रतिनिधि महानुभावों का यह सम्मेलन पंजाब सरकार की हिन्दी और संस्कृत के प्रति जो नीति अपनाई है उसकी कड़े शब्दों में भर्त्सना करता है जिसके द्वारा देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी का पंजाब में निशान तक मिटाने का प्रयत्न हो रहा है। सरकार की भाषा नीति उसकी साम्प्रदायिक मनोवृत्ति की प्रतीक हैं। अकाली सरकार की तरह कांग्रेसी सरकार भी पंजाब में हिन्दी को जीवित देखना नहीं चाहती। इसीलिए हिन्दी को अपमानित करने और उसका इस प्रदेश में अस्तित्व समाप्त करने का भरसक प्रयत्न हो रहा है। पंजाब सरकार को हिन्दी से कितनी विरोधता है, इसका

अनुमान हम इसी बात से लगा सकते हैं कि वह न केवल हिन्दी प्रेमियों को यह अधिकार देने को तैयार नहीं कि वह अपने बच्चों की शिक्षा के माध्यम का स्वयं निर्वाचन कर सके, वह हमें यह अधिकार भी देने को तैयार नहीं, जो भारत सरकार ने भाषाई अल्प संख्यकों को दे रखे हैं। भारत सरकार के उपगृहमन्त्री कई बार कह चुके हैं कि पंजाब एक भाषी नहीं है। भाषाई अल्प-संख्यकों के आयुक्त भी कई बार यह घोषणा कर चुके हैं कि पंजाब में एक वर्ग भाषाई अल्प-संख्यकों का भी हैं और हिन्दी उसकी मातृ भाषा है। भारत के उच्चतम न्यायालय का भी यह निर्णय है कि पंजाब के आर्यसमाजियों की मातृ भाषा हिन्दी है। फिर भी पंजाब सरकार अपनी साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के वशीभूत होकर हिन्दी प्रेमियों विशेषकर आर्य समाजियों के साथ न्याय करने को तैयार नहीं और उन्हें वह अधिकार भी देने को तैयार नहीं, जो दूसरे प्रान्तों में वहां की कांग्रेसी सरकारों ने वहां के भाषाई अल्प संख्यकों को दे रखे हैं। यह एक ऐसी स्थिति है, जो आर्य समाज के लिए एक चुनौती के समान है। आर्य समाज इसकी अवहेलना नहीं कर सकता। इसलिए यह सम्मेलन पंजाब के सभी आर्य समाजियों से विशेषत: और हिन्दी प्रेमियों से साधारणतया अनुरोध करता है कि वह हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए हर सम्भव प्रयत्न करें।

यह सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों से भी यह आशा रखता है कि वह पंजाब में हिन्दी को जीवित रखने और पंजाब सरकार की साम्प्रदायिक नीति का प्रबल विरोध करने के लिए कोई ऐसा पग उठायेंगे जिससे कि सरकार इस प्रांत में हिन्दी का गला घोंटने का जो प्रयत्न कर रही है, उसे छोड़ दे। यह सम्मेलन पंजाब सरकार असेम्बली पार्टी के उन सदस्यों से भी अनुरोध करता है कि जिन्होंने चुनाव के समय हिन्दी प्रेमियों को कई प्रकार के आश्वासन दिये हैं कि वह अपनी सरकार को विवश करे कि वह हिन्दी को पंजाब में वह ही सम्मान पूर्वक स्थान दें, जो देश की राष्ट्र भाषा को मिलना चाहिये यदि वह ऐसा नहीं कर सकते, तो नैतिकता की यह मांग है कि वह असेम्बली की सदयस्ता से त्याग पत्र दे दें। यदि वह ऐसा नहीं करते, तो यह उस जनता से विश्वासघात होगा जिसके वोटों से वह निर्वाचित होकर असेम्बली में गये थे। यह सम्मेलन सब आर्य समाजों को यह आदेश देता है कि वह अपने-अपने क्षेत्र के विधान सभा के सदस्य को विवश करें कि वह विधान सभा में हिन्दी के पक्ष में अवश्य आवाज उठाएं यदि वह ऐसा नहीं करता तो आने वाले चुनाव में ऐसा वातावरण पैदा किया जाये कि विधायक के लिये सफल होना असम्भव हो जाए।

४. शराब नीति के विरुद्ध अभियान चलाने का आदेश

पंजाब और हिमाचल की समाजों के प्रतिनिधियों का यह सम्मेलन पंजाब सरकार की वर्तमान शराबनीति का कड़े शब्दों में विरोध करता है। इस नीति के कारण पंजाब में न केवल भ्रष्टाचार दुराचार, नैतिकता और अनुशासन-हीनता बढ़ती जा रही है अपितु सारे प्रांत का वातावरण ही इतना दूषित होता जा रहा है कि न तो शासन ही सुचारू रूप से चल सकता है न समाज के भिन्न २ वर्गों में शान्ति स्थापित हो सकती है। पंजाब सरकार इस विषय में जो कुछ कर रही है वह हमारी सब पुरानी धार्मिक और सामाजिक परम्पराओं के विपरीत हैं। एक ओर तो कांग्रेस के नेता महात्मागांधी के अनुयायी होने का दावा करते हैं, दूसरी ओर गांधी जी के सिद्धांतों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। इस सम्मेलन के लिये यह बात और भी लज्जाजनक है कि इस समय सरकार की शराब नीति का संचालन एक ऐसे व्यक्ति के हाथ में है, जिसका कि आर्य परिवार से सम्बन्ध है। इसलिये यह और भी आवश्यक हो जाता है कि आर्य समाज सरकार की इस नीति के विरुद्ध पूरी शक्ति के साथ अपना अभियान चलायें। यह सम्मेलन पंजाब और हिमाचल की सब आर्य समाजों को आदेश देता है कि वह अपने प्रत्येक उत्सव में सत्संग और सभा और दूसरे प्रकार के प्रदर्शन में जब कभी समय मिले, जनमत को न केवल सरकार की इस नीति के विरुद्ध संगठित करने का प्रयास करें अपितु जो लोग शराब के आदी हो चुके हैं, उन्हें भी समझाने का प्रयास करें। आर्य समाज को शराब के विरुद्ध अपना यह अभियान पहले से भी अधिक शक्ति के साथ चलाने का प्रयत्न करना चाहिए।

५. 'भारत का इतिहास' की होली जलाई जाए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आयोजित यह आर्य सम्मेलन पंजाब सरकार की उस विश्वासघात की कड़े शब्दों में निंदा करता हैं, जो कि उसने पंजाब के हिन्दुओं के साथ किया है। नवीं कक्षा के लिये भारत का इतिहास नामक पुस्तक में कुछ ऐसी निन्दनीय और निराधार बातें प्रकाशित की गई थी जिनसे सारे हिन्दू जगत की भावनाओं को चोट पहुंची थी। पंजाब के मुख्यमन्त्री ज्ञानी जैलसिंह ने उस समय यह आश्वासन दिया था कि इस पुस्तक को वापिस ले लिया जायेगा या इसके आपत्तिजनक अंश निकाल दिये जाएंगे। इस आश्वासन पर आर्य समाज ने अपना आन्दोलन वापिस ले लिया था परन्तु अब मालूम हुआ है कि न ही वह किताब वापिस ली गई है और न ही उसके वह अंश, जिन पर कि जनता को आपत्ति थी, निकाले गये हैं। यह सम्मेलन सरकार के और विशेषकर मुख्यमन्त्री के इस व्यवहार को पंजाब की हिन्दू जनता से एक ऐसा विश्वासघात समझता है, जो उसके मान और प्रतिष्ठा के लिये एक चुनौती है। इसलिये यह सम्मेलन पंजाब की सब आर्य समाजों को आदेश देता है कि इस पुस्तक के विरुद्ध अपना आंदोलन फिर से प्रारंभ कर दे और इस सन्दर्भ में १६ जून १९७४ रविवार को साप्ताहिक सत्संग में आर्य समाजों में प्रस्ताव पास किये जाएं और इस पुस्तक की होली जलाई जाये। यह सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री स्वामी इन्द्रवेश जी से भी यह प्रार्थना करता है कि यदि पंजाब सरकार एक मास के अन्दर अपने दिये हुये आश्वासन को पूरा नहीं करती, तो सभा के प्रधान के नाते सरकार के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिये सारे आर्य जगत को संगठित करें और जो भी उचित पग उठाना चाहें उठाएं। *

गरीबी हटाओ बनाम गरीबी बढ़ाओ

योगेन्द्र कुमार शर्मा

भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अभी चुनाव से पूर्व 'गरीबी हटाओ' का नारा दिया परन्तु गरीबी तो मिटी नहीं, गरीब जरुर मिटते जा रहे हैं। इन महान उद्देश्यों की पूर्ति का एक ही रास्ता है, पूंजीवादी राज्य व्यवस्था समाप्त करके उत्पादन के सभी साधनों (जमीन, कारखाने, खाने) मजदूरों और किसानों के हाथ सौंप दिये जाय और फिर इन महा-मानव की सहायता से सुख सम्पन्नता से पूर्व एक नये जीवन का निर्माण किया जाए अर्थात् मौजूदा समाज को बदलकर नयी व्यवस्था कायम करनी पड़ेगी।

गरीबी हटाओ से पहले पूंजीपतियों को हटाना चाहिए था क्योंकि जब तक इस देश में पूंजीपति वर्ग छाया रहेगा तब तक गरीबी हटाओ का नारा सार्थक सिद्ध नहीं होगा। इन धन्नासेठों से बड़े-बड़े कारखाने तथा बड़े-बड़े फार्म लेकर उन पर मजदूरों तथा किसानों को व्यवस्थित करना होगा। यहां एक ओर गरीबी हटाओ का नारा दिया जा रहा है दूसरी ओर इस देश की प्रधानमन्त्री के बेटे के लिए २५ करोड़ रु. का मारुति कार का कारखाना लगाकर इस देश की भोली भाली जनता की आंख में धूल झोंक कर समाजवाद के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है।

शासक पार्टी के मौजूदा ढांचे में पूंजी-वादी सिद्धांतों का प्रभुत्व इजारेदारों को मजबूत व मेहनतकश जनता को कमजोर बनाता जा रहा है। गरीबी हटाने, जनवाद की रक्षा करने और आर्थिक स्थिति को विकसित करने की घोषणाएँ इस तरह पूरी नहीं की जा सकती। अभी पिछले वर्ष राजा महाराजाओं का प्रिवीपस समाप्ति, बैंकों का राष्ट्रीयकरण समाजवाद की ओर कदम थे। बैंकों के राष्ट्रीयकरण से लोगों में जन आशाएं बँध गयी थी कि बैंकों के जरिए छोटे किसानों, बटाईदारों, खेतिहर मजदूरों को आसान शर्तों पर ऋण मिल सकेगा जिससे महाजनों और धनी किसानों के शोषण से कुछ हद तक बच सकेंगे। यह भी उम्मीद की गयी थी कि बैंकों के सरकारीकरण का देश के विभिन्न भागों के विकास में विवेकतापूर्ण इस्ते-माल किया जा सकेगा। राष्ट्रीयकरण से पहले बैंकों पर इजारेदारों का प्रभुत्व था जिससे वे मनमाने ढंग से वित्तीय साधनों का इस्तेमाल करते थे। काले धन की अर्थव्यवस्था को सफलतापूर्वक चलाने के लिए बैंकों का प्रयोग करते थे। जनता में राष्ट्रीयकरण के प्रति नया विश्वास जगा परन्तु बैंक अपनी पुरानी विरासत से अपने को मुक्त नहीं कर पाये। अब भी उनसे अधिक ऋण बड़े पूंजीपतियों को ही मिलता है। गाँव में खेतिहर मजदूरों के पास अपनी जमीन भी नहीं है, बैंक जमीन पर स्वा-मित्व का सबूत लेकर ही ऋण दे सकते हैं। ऐसी हालत में उन्हें ऋण भी नहीं मिलती। उनको फिर महाजनों और धनी किसानों के पास ही जाना पड़ता है। महाजन लोग बैंकों से कम ब्याज पर ऋण लेकर गरीब लोगों को दुगने ब्याज पर देकर पैसा कमाते है। इससे फिर वे ही गरीब मारे जाते हैं। इस प्रकार बैंक राष्ट्रीयकरण का परिणाम भी उलटा हुआ है जिससे पूंजीपति वर्ग बैंकों से ऋण लेकर अपने उद्योग धन्धे लगाने में व्यस्त हैं जहां पर उनके भाई भतीजावाद, रिश्तेवाद, सिफारिश-वाद से ही लोगों को काम दिया जाता है। इस प्रकार साधारण वर्ग तो पिछड़ा हुआ ही रह जाता है।

आज भी सूखा, भारी वर्षा हमारे भाग्य का फैसला करते हैं। ८ करोड़ जनता फुटपाथों पर जीवन बिता रही है। हजारों गांवों में पीने के पानी का प्रबन्ध तक नहीं है। किसान फसल उगाता है, उसकी फसल का भाव सट्टा बाजार के स्वामी से तय करते हैं तथा सरकार भी मनमाने ढंग से फसल खरीद लेती है। इससे जनता के उत्पा-दन की तुलना में गरीबी बढ़ती जा रही है। ये पूंजीपति यहां तक प्रचार करते हैं कि गरीबी पिछड़ापन इसलिए है कि यहां के लोग बच्चे बहुत पैदा करते हैं इस तरह ये लोग जनता को चकमा देने का प्रयास करते हैं। आज इसी वर्ग ने जातिवाद, साम्प्रदायवाद का समाज में विष घोलकर मनुष्य को मनुष्य से भिन्न करने का भयंकर षड्-यन्त्र रच रहे हैं।

देश के चुनावों में भी काले धन के बलबूते पर यहाँ के भाग्य विधाता बन जाते है। इनको चाहे कितना कुकर्म क्यों न करना पड़े पैसा हड़ने की होड़ हर समय लगी रहती है। मैं तो यह कहूंगा कि आज जो भी विरोधी दल पूंजीपतियों से सांठ-गांठ कर जनता को चकमा देने की कोशिश कर रहे हैं वे इस देश के सबसे बड़े शत्रु हैं।

१९६८-६९ मे ३०५८.७ करोड़ की लागत से जो उत्पादन पैदा किय

गया उसमें २६,२६७ करोड़ उत्पादन व्यक्तिगत क्षेत्रों में ४,२६० करोड़ उत्पादन सरकारी क्षेत्र में किया गया। इससे स्पष्ट है कि देश की ८७ प्रतिशत दौलत व्यक्तिगत क्षेत्रों में तथा १३ प्रतिशत उत्पादन सरकारी क्षेत्र में किया गया। बेकारी, कम वेतन, उपभोग की वस्तुओं की बढ़ती हुई महंगाई, कच्चे माल के कम दाम जनता को भिखारी बनाते जा रहे हैं।

देश की सम्पत्ति का बहुत बड़ा हिस्सा धनी वर्ग ही ले जाता है। आज आजादी के २७ वर्षों बाद भी हमारी ग्रामीण जनता की औसत आमदनी ५० पैसा प्रति व्यक्ति है। जनता का बहुत बड़ा भाग मूल आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता। 'टाटा' ने १९६७ में अपनी सम्पत्ति को ५०५ करोड़ से १९६९ में ६३८ करोड़ करली। क्या यह इस पूंजीवादी व्यवस्था का परिणाम नहीं है? आज धनी लोग और अधिक धनी, गरीब और अधिक गरीब होते जा रहे हैं। इस सरकार की दोगली नीति ने बिड़ला को २ पैसे प्रति यूनिट व किसानों को २५ पैसे प्रति यूनिट बिजली देकर पूंजीवादी व्यवस्था को पनपाया है।

जो आज समाजवादी देश हैं वह भी हमारी तरह गरीब थे परन्तु इन्होंने निर्धनता का खात्मा कर नई व्यवस्था कायम कर शोषण मुक्त समाज स्थापित कर दियाहै। वह कार्य आज द. वियतनाम के रण बांकुरे कर रहे हैं जिन्हें १३ वर्षों का लगातार घमासान युद्ध भी न थका सका है। सारा अमरीकी साम्राज्यवाद भी इन्हें अपने पथ से विचलित न कर सका इसने वीरता और कुर्बानी का नया इतिहास कायम किया है।

आज समय आ गया है कि देश की मेहनतकश जनता नौजवान पीढ़ी एक संगठित मोर्चा बनाकर अन्याय के विरुद्ध तथा 'वैदिक समाजवाद' के संघर्ष के लिए एक जुट हो जाए तथा इस देश से मुनाफाखोरी, जमाखोरी, सट्टेबाजी, शराब, कुप्रथा एवं भ्रष्टाचार को खतम करने के लिए अपने आपसी मतभेदों को भुलाकर शोषण से मुक्त समाजवादी भारत के निर्माण के संघर्ष में योगदान दें।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से——

आर्यसमाज स्थापना—शताब्दी सम्मेलन

२८—२९ सितम्बर १९७४ को पानीपत में

मनाया जा रहा है।

सारे आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हरयाणा के समस्त आर्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्रतिनिधि; संन्यासी, वानप्रस्थी एवं उपदेशकों की १९ मई को करनाल में एक मीटिंग बुलाई गई जो सभा प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में हुई। मीटिंग में महत्वपूर्ण प्रस्तावों के साथ सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि—

२८-२९ सितम्बर को पानीपत में स्थापना-शताब्दी सम्मेलन

धूमधाम के साथ मनाया जायेगा। आर्य जगत् के प्रसिद्ध साधू, संन्यासी, विद्वान्, उपदेशकों एवं नेताओं को आमन्त्रित किया जा रहा है। जोर शोर से तैयारियां प्रारम्भ हो गई हैं। लाखों की संख्या में लोग पहुंच रहे हैं। हरयाणा के सभी समाजों से निवेदन है कि वे सम्मेलन के लिए पूर्ण सहयोग दें और आर्यों की संगठन शक्ति का परिचय दें। सम्मेलन पर अभूतपूर्व नगर कीर्त्तन का भी आयोजन किया जा रहा है। गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की जानकारी यथा समय आर्य जगत को मिलती रहेगी

रामचन्द्र आर्य
उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

फिल्मी अश्लीलता तथा उपचार

(गतांक से आगे)

४. भारतीय संस्कृति पर आधारित

हमारी फिल्में भारतीय सस्कृति के आदर्शों पर आधारित होनी चाहिए। अश्लीलता, नग्नता, कामुकता, स्वच्छन्दता, उच्छृंखलता तथा विलासिता हमारी संस्कृति के अनुरूप नहीं है। और न ही भारतीय जनता इन्हें पचा ही सकती है। पश्चिम के लोग स्वयं इन चीजों से दुःखी तथा बेचैन हैं। हमारी फिल्में ऐसी हों जिससे लोगों में भारतीयता तथा भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग उत्पन्न हो। हम दूसरे की आत्मा में जिन्दा नहीं रह सकते। अतः फिल्म निर्माताओं तथा फिल्म निर्देशकों को सस्ती लोकप्रियता तथा धन के लालच में आकर भारतीय संस्कृति की मान्यताओं पर वज्रपात नहीं करना चाहिए।

५. गरीबों तथा बकेसों की समस्याओं का चित्रण

हमारी ८५ प्रतिशत जनता गरीब वर्ग से सम्बन्धित है। मुट्ठीभर पूंजीपतियों के विलासिता तथा ऐशो आराम व उनकी अश्लील तथा भ्रष्ट गतिविधियों का चित्रण करने वाली फिल्में भारतीय जनता का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती। अश्लील फिल्मों की अपेक्षा ऐसी फिल्मों का निर्माण किया जाना चाहिए जो कि गरीब वर्ग, मजदूर वर्ग, श्रमिक-वर्ग, दलित एवं पतित वर्ग की समस्याओं पर प्रकाश डाल कर उन्हें सुलझाने का सुझाव प्रस्तुत करें। हमारे समाज के असंख्य ऐसे लोग हैं जिन्हें दो समय पर्याप्त भोजन भी सुलभ नहीं। काफी ऐसे लोग हैं जिन्हें तन ढांपने के लिए चिथड़ा भी नसीब नहीं जो केवल फुटपाथों पर पलते हैं और फुटपाथों पर ही ठिठुर कर अपनी जान दे देते हैं। क्या इन परिस्थितियों के बावजूद अश्लीलता तथा विलासिता को प्रोत्साहन देकर हमारे फिल्मकार हमारी भोली भाली, गरीब तथा बेकस जनता के गले पर कुल्हाड़ी नहीं चलाते हैं? जनता के मन में विलासिता के प्रति रूचि पैदा करने और सुरा तथा सुन्दरी के प्रति जिज्ञासा पैदा कर भोगवाद की भावनाओं को उकसाने के जघन्य अपराध में फिलमकार को देश का गद्दार तथा मानवता का गुनहगार क्यों न माना जाय?

६. सामाजिक तथा आर्थिक फिल्में

इस समय समाज को नाश की तरफ धकेलने की बजाय उसकी रक्षा करने की जरूरत है। आज हमारा देश आर्थिक तथा चारित्रिक संकट के दौर से गुजर रहा है। आज जरूरत है सामाजिक तथा आर्थिक कठिनाइयों को चित्रित कर उनका निदान प्रस्तुत करने की जिससे समाज को चन्द एक पूंजीपतियों के हाथों भ्रष्ट होने से बचाया जा सके। आज जरूरत है उन फिल्मों की जो यह स्पष्ट कर सकें कि ये चन्द पूंजीपति किस प्रकार भोली भाली गरीब जनता को बेवकूफ बनाते हैं, उन्हें लूटते हैं तथा उनका शोषण कर धन्नासेठ बनते जाते हैं और विलासिता तथा ऐशोआराम में सराबोर रहते और समाज में भ्रष्टाचार तथा अनाचार फैलाते हैं। आज आवश्यकता है उन फिल्मों की जो हमारी उत्पादन तथा खाद्यान समस्याओं के समाधान सुझा कर आर्थिक विकास का पथ-प्रदर्शन करें।

७. धार्मिक तथा आध्यात्मिक फिल्में

भारत एक महान् देश है जो कि अपनी धार्मिक तथा आध्यात्मिक उपलब्धियों के लिए विश्वविख्यात है। इसी लिए भारत को जगद्गुरु कह कर भी पुकारा जाता है। अतः धार्मिक तथा आध्यात्मिक फिल्मों का निर्माण करके जनता में ईमानदारी, सदाचार, नैतिकता, भ्रातृत्व, समानता, सत्यता, त्याग आदर्श तथा सिद्धान्त की भव्य भावनाओं का सचार किया जा सके। आज धर्म के नाम पर अनेक प्रकार का आडम्बर, पाखण्ड तथा अनाचार भी पनपता हे। भगवान के नाम पर लूटने वालों का पर्दाफाश करना तथा जनता को अन्धविश्वास के चंगुल से मुक्त करना भी इन फिल्मों का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए।

८. साहित्यिक फिल्में

साहित्य हमारे जीवन का सच्चा तथा वास्तविक दर्पण होता है। अतः हमारी फिल्में घटिया प्रकार के सस्ते और काल्पनिक उपन्यासों पर आधारित न हो कर वास्तविक साहित्यिक समस्याओं पर आधारित होनी चाहिए। जिससे उच्च, प्रगतिशील तथा महान् साहित्य के प्रति लोगों का अनुराग बढ़े, उनका जीवन सरस हो तथा जीवन स्तर ऊचा उठे। फिल्मों में अश्लील तथा घिनौने गानों की अपेक्षा महान् कवियों की महान् रचनाओं को महत्व दिया जाना चाहिए। छिछले, फूहड़ व निरर्थक गानों की अपेक्षा देश-भक्ति तथा समाजवादी और प्रगतिवादी गानों को प्रमुखता दी जानी चाहिए।

९, वैज्ञानिक तथा साहसिक फिल्में

आज का युग विज्ञान तथा तकनीकी का युग है। अतः आज कल ऐसी फिल्मों का निर्माण होना चाहिए जो कि

वैज्ञानिक तथा तकनीकी उपलब्धियों से ग्राम जनता को अवगत करा सके तथा उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जन्म दे सकें। कुछ साधारण वैज्ञानिक प्रयोग फिल्मों के माध्यम से दिखाये जा सकते हैं जिनका हमारे दैनिक जीवन में सदुपयोग हो सके। जहाँ तक सम्भव हो सके नये वैज्ञानिक आविष्कारों तथा महान् अनुसंधानों से भी भारतीय जनता को परिचित करा के जहां तक सम्भव हो ग्राम जनता के लिए फिल्मों के माध्यम से सुलभ कराया जा सके। उसके अतिरिक्त साहसिक फिल्मों का निर्माण होना चाहिए। जिससे उच्च सामाजिक आदर्शों तथा महान मानवीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए लोगों में अपनी जान तक से खेल जाने की प्रेरणाओं का संचार हो सके।

१०. ज्वलन्त समस्याओं पर आधारित

इस समय अश्लील, कामुक, भोगवादी तथा विलासिता से परिपूर्ण फिल्मों की आवश्यकता नहीं। आज भारत एक कठिन परिस्थिति से गुजर रहा है। प्रगति के पथ पर अग्रसर देश के समक्ष अनेक विकट समस्यायें मुंह बाये खड़ी हैं। आज देश राष्ट्र चरित्र और आर्थिक कठिनाइयों से गुजर रहा है। फिल्मी अश्लीलता से नई समस्यायें पैदा करने की अपेक्षा भारतीय फिल्मों में आज की ज्वलंत समस्याओं में झांकने की क्षमता होनी चाहिए। आज मिलावट की समस्या, चोर-बाजारी और भण्डारकों की समस्या, गरीबी, बेरोजगारी तथा साक्षरता की समस्या, भाषावाद तथा प्रान्तीयता की समस्या और सम्प्रदायवाद तथा पूंजीवाद की समस्या आदि सभी समस्यायें ज्वलंत समस्यायें हैं जो कि समाधान की प्रतीक्षा कर रही हैं। हमारे फिल्मकारों को चाहिए कि वे ऐसी फिल्में बनायें जिससे इन विकट समस्याओं को लोगों के सम्मुख रखा जा सके तथा इनके लिए उपयुक्त निदान सुझाये जा सकें।

११. महान पुरुषों की जीवनियों पर आधारित

इस समय आवश्यकता है कि युवक वर्ग के मन में गंदे तथा अश्लील मनोविकारों को ढूंढने की अपेक्षा उनमें महानता, राष्ट्रीयता, सामाजिकता तथा मानवता की भव्य भावनाओं का संचार किया जा सके। जिससे वे अपने आदर्शों अपने सिद्धान्तों, राष्ट्र सेवा और मानवसेवा के लिए प्राणों की बाजी तक लगा देने के लिये तत्पर रहें। उनका मन त्याग तथा बलिदान के विचारों से ओत-प्रोत हो। अतः महान् पुरुषों की जीवनियों पर आधारित बहुत अधिक फिल्मों का निर्माण किया जाना चाहिये जिससे हमारे देश के भावी कर्णधारों के मन में समाज सेवा तथा देश सेवा की सच्ची लगन लग जाये।

१२. राष्ट्रीय चेतना तथा जन जागरण

अधिकतर फिल्में ऐसी होनी चाहिए जो कि जनता को सामाजिक तथा राष्ट्रीय समस्याओं से भली भांति परिचित करा के जनता में राजनीतिक चेतना पैदा करें। जब-जनता में जागरुकता पैदा हो जायेगी तो जनता स्वतः ही अपनी अनेक समस्याओं को सुलझा सकेगी। इस राजनीतिक चेतना का एक अच्छा प्रभाव यह होगा कि जो चतुर लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए भोली भाली जनता का शोषण करते हैं उनकी दाल नहीं गलेगी। साथ ही कुर्सी के लालच के लिए सीधो सादी जनता को बेवकूफ बनाने वाले राजनीतिक गिरगटों के मनसूबे भी चरितार्थ नहीं हो पायेंगे। राजनीतिक चेतना तथा जन-जागरण हो जाने पर अनाचार, दुराचार तथा भ्रष्टाचार के राक्षस भी भाग खड़े होंगे। राजनीतिक चेतना अच्छे नागरिक पैदा करेगी तथा प्रजातान्त्रिक समाजवाद को सफल बनाने में पूर्णरूपेण सहायता प्रदान करेगी। जब जनता राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि से सजग और सचेत हो जायेगी तो उससे भावात्मक एकता को भी बल मिलेगा।

अगर इस बढ़ती हुई अश्लीलता को शीघ्र नियन्त्रित करके फिल्मी गति विधियों को सही दिशा प्रदान न की गई तो यह हमारे मानवीय, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय तथा सामाजिक मूल्यों के लिए घातक सिद्ध हो सकती है।

बी. आर शर्मा
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यायल

सिकन्दरपुर [मुजफ्फरनगर] में आर्यसभा का संगठन स्थापित

दिनांक १६ मई को पं. रतिराम जी कार्यवाहक प्रधान आर्य समाज सिकन्दरपुर की अध्यक्षता में आर्यसभा ब्रांच सिकन्दरपुर का गठन किया गया जिसमें रामदयालसिंह आर्य संयोजक व वेदसिंह जो सहसंयोजक नियुक्त किए गए। तदर्थ समिति भी नियुक्त की गई। आर्यसभा के प्रगतिशील कार्यक्रमों व सिद्धांतों पर प्रमुख बक्ताओं द्वारा प्रकाश डाला गया।

आर्य कुमार सभा किंग्जवे [दिल्ली]

आर्य कुमार सभा किंग्जवे की रजत जयन्ती मुकर्जी पार्क किंग्जवे चौक में १८ मई शनिवार सायं: साढ़े सात बजे स्वामी इन्द्रवेश प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अध्यक्षता में मनाई गई थी अध्यक्ष महोदय ने नवयुवकों को देश की प्रगति के लिए प्रयत्नशील रहने को कहा और साथ ही सामाजिक संगठन को शक्तिशाली बनाने के लिए कहा।

"अमर"

दीप्तराज साहिल, भिवानी

(ये बात काल्पनिक है, परन्तु इसमें स्वतन्त्रता से पहले की वास्तविकता की एक झलक अवश्य है और देश की स्वतन्त्रता के लिए बलिदान देने वाले देश के शहीदों के जीवन में ऐसी ही अनेकों वास्तविक घटनाएँ घटीं परन्तु देखना यह है कि आज हम उनके मस्तिष्कों में बने देश के चित्रण और लक्ष्यों को कहां तक पूर्ण कर पाये हैं)

पहला दृश्य

(शहर की आम सड़क की एक बन्द गली के कोने के मकान के कमरे में चारपाई पर लेटे हुए बीमार "अमर" के पास बैठी उसकी मां, कभी "अमर" के माथे पर हाथ रखती है, कभी उसके हाथों को सहलाती है तो कभी सीने पर हाथ रखती है। मगर कुछ ही क्षणों की बेचैनी के बाद "अमर" गर्दन डाल देता है।)

मां—(चीख के साथ) "बेटा अमर ! मेरा लाल" (पुकार कर रोने लग जाती है।)

(मकान के चौक के खुले, कमरे के दरवाजे से मुहल्ले का एक वृद्ध "काका" जो लंगड़ा होने के कारण सीढ़ियों के सहारे चलता है, कमरे में दाखिल होता है)

काका—"बहू क्या हुआ मेरे लाल "अमर" को ?"

"अमर हम सब को छोड़ कर इस दुनियां से चला गया।"

काका—"बहू दिल को बे काबू ना करो" तुम्हारा पति जिस काम में लगा हुआ है, उसके लिए इतना ही काफी नहीं है। (मुहल्ले की कुछ औरतें उसी दरवाजे से कमरे में आकर बैठ जाती हैं और कुछ समय के मौन शोक के बाद प्रत्येक वृद्ध काका को एक-एक दो-दो रुपया "अमर" के कफन के लिए देती हैं।)

(कमरे का गली की तरफ खुलने वाला दरवाजा एक झटके के साथ खोलकर "तरुण" कमरे में दाखिल होता है और अपने हाथों को पीठ के पीछे किए हुये ही दरवाजा बन्द करदेता है।)

तरुण—"क्या हुआ मेरे लाल को ?" (और "अमर" के सिराहने बैठ कर उसे झंझोड़ता है।)

काका—"डेढ़ महीने से सख्त बीमार था, पैसे न होने के कारण इलाज नहीं हो सका आखिर आज दम तोड़ दिया। अच्छा हुआ तुम आ गये अपने हाथों से क्रि[या] कर्म तो कर दोगे।)

तरुण—"नहीं काका क्रिया कर्म तो तुम्हीं को करना हो[गा] मुझे तो इसी समय वापिस जाना है। जिस काम [के] लिए हम दो साथी यहां आये है, उसे पूरा क[र] जल्दी ही वापिस जाना है। पुलिस हमारे पीछे है[,] तो पुलिस से बचता हुआ यहां आगया था, शा[यद] मेरा साथी तो पकड़ा भी गया हो।"

काका—"अच्छा तो ये लो पैसे अपने हाथ से "अमर [के] लिए कफन तो लाते ही जाओ।"

(तरुण पैसे लेकर कफन खरीदने चला जाता है।)

दूसरा दृश्य

(बाजार की तन्हां सड़क पर तरुण को सामने [से] आता हुआ एक सेठ मिल जाता है।)

तरुण—"सेठ जी मुझे कफन के लिए कपड़ा लेना है, ज[रा] चलकर जल्दी से दे दो।"

सेठ—तुम तो यहीं चौराहे पर ठहरो, मैं दुकान से कफन आता हूं, कहीं तुम्हारे साथ मुझे पुलिस देख लेगी [तो] रोज तंग करती रहा करेगी। मुझे तो आखिर अ[पने] बच्चों को पालना है।"

(सेठ दुकान से कफन का कपड़ा लेने चला जाता [है] तरुण चौराहे पर अकेला इधर उधर देखता हु[आ] बेचैन सा तन्हा ही खड़ा रहता है, कुछ क्षणों के ब[ाद] ही पीछे से कुछ आवाजें सुनाई देती हैं............

पुलिस अफसर—"बताओ तुम और तुम्हारा साथी तरुण [जो] इश्तिहार लेकर आये हो, वे कहां हैं ?"

क्रान्तिकारी—"हम कोई इश्तिहार लेकर नहीं आये और [मैं] इस बारे में कुछ नहीं जानता।"

पुलिस अफसर—(गरजकर) "तुम अगर वे इश्तिहार हम[ारे] हवाले कर दोगे तो, हम तुम्हें माफ कर देंगे, व[रना] पुलिस स्टेशन चलकर तुम्हारी खासा पिटाई होगी।"

क्रान्तिकारी—"मेरे पास कोई इश्तिहार नहीं है।"

पुलिस अफसर—"कान्स्टेबल, इसे कोड़े लगाओ और पुलि[स] स्टेशन ले चलकर वो पिटाई करो कि इसे छठी का दू[ध] याद आ जाये। इन कुत्तों ने हमारे नाक में दम [कर] रखा है।"

क्रान्तिकारी—"कुत्ते तुम हो, तुमने हमारी नाक में दम किया हुआ है।" (इतने में दो-तीन कोड़े लगने की आवाज के साथ क्रान्तिकारी के कराहने की आवाज आती है) (तरुण सटपटा जाता है।)

पुलिस अफसर—"बोलो, बताओगे या नहीं।

क्रान्तिकारी—"लो, ये लो वे सब इश्तिहार और मुझे छोड़ दो, मुझे पुलिस स्टेशन मत ले चलो।"

(तरुण तड़पकर जेब से एक कागज निकालता है और इस कागज व मुट्ठी में के पैसों की तरफ देखता है और बेहताश भाग जाता है।)

तीसरा दृश्य

(सेठ अपने हाथ में कफन का कपड़ा लिए चौराहे पर आता है और इधर-उधर तरुण की तलाश में नजरें दौड़ाता है, इतने में एक अन्य व्यक्ति आकर पूछता है—"सेठ जी आज इतना सुबह दुकान से कैसे आरहे हो? क्या बात है?")

सेठ—"अरे भई बात तो कुछ भी नहीं। बाजार आया था सब्जी खरीदने एक क्रान्तिकारी मिल गया उसे कफन चाहिये था सो दुकान से लेकर आया हूँ। उसे यहां पर छोड़ गया था, अब वह यहां नहीं मिला, उसे ही देख रहा था।"

अन्य व्यक्ति—"क्रान्तिकारी और कफन खरीदने के लिए?'

सेठ—"हां कोई साथी मर गया होगा और क्या? यूं ही हमें आकर तंग करने लग जाते हैं।"

अन्य व्यक्ति—"चलो नहीं मिलता तो कोई बात नहीं, पैसे तुम्हें मिल ही गये होंगे।"

सेठ—"कैसे पैसे? पैसे तो अब लेता, वो मिला ही नहीं कपड़ा भी यूँ ही फाड़कर लाया।"

अन्य व्यक्ति—"ऐसे पैसे तो पहले ही ले लिया करो, फिर मिले या न मिले तुम्हें क्या? तुम्हारे पैसे तो पूरे हो ही जायें। कहीं कोई पुलिस का आदमी दीख पड़ा होगा और बस वह भाग निकला होगा। इन क्रान्तिकारियों का इतना ही ठिकाना होता है।"

चौथा दृश्य

(तरुण एक प्रिन्टिंग प्रेस में पहुँचता है)

प्रेस मालिक—"आओ तरुण, कैसे आये?"

तरुण—"आया क्या? ये लो पैसे। जरा जल्दी से कागज मंगाकर ये इश्तिहार छाप दो। छपाई फिर दे जाऊँगा।"

प्रेस मालिक—"क्यों, क्या हुआ?"

तरुण—"हुआ क्या? हम दो साथी इस शहर में इश्तिहार लेकर आये थे, जो सारे के सारे दूसरे साथी के पास थे, वह पुलिस के हाथों पकड़ा गया और पिटाई के डर से सारे इश्तिहार पुलिस के हवाले कर दिये। आप जरा जल्दी कर दीजिए। मुझे ये इश्तिहार बांट कर जल्दी ही पार्टी को जाकर खबर देनी है, वरना बहुत गड़बड़ हो जायेगी।"

(मानो तरुण का दिल पुकार उठता है—"गुलाम मुल्क में तो आजादी की लड़ाई लड़ने वालों की औलादों की लासें बिना कफन ही जला करती हैं। कफन तो आजादी के बाद ही मिला करेगा, बेटे अमर"—इलाही वो भी दिन होगा जब अपना राज देखेंगे। जब अपनी ही जमी होगी और अपना असमां होगा।)

———परन्तु क्या देश के शहीदों के ये अरमान पूरे हुये हैं? आज भी कितने ही भूखे जिस्म, कितने ही नंगे बदन और कितनी ही बेघर रूहें हर एक रात की तीरगी में पटरियों के आलिंगन में आश्रय पाते हैं, कितने ही बच्चे एवम नवयुवक अशिक्षित रहते हैं, कितने ही व्याधिग्रस्त शरीर चिकित्सा अभाव से दम तोड़ते हैं, आज भी कितनी ही लासें बिना कफन जलती हैं। क्या आज ये जमीन अपनी है? ये आसमां अपना हुआ है? क्या वे गीत सच्चे हो पाये हैं जिनको गाते हुये देश के शहीद बलिदान देते रहे? क्या यह वही राज है जिसकी कल्पना वे बलिदान देने वाले करते रहे थे?———आज हर नवयुवक को सोचने के लिये विवश होना पड़ेगा। ★

यह अंक आपको कैसा लगा?

राजधर्म के सुविज्ञ पाठकों से प्रार्थना है कि इस अंक के लेखों एवं सम्पादकीय पर अपनी समालोचना अवश्य भेजने की कृपा करें जिससे आपकी रुचि जानकर तथा आपके सुझाव मान कर हम उत्तरोत्तर राजधर्म को एक व्यापक शक्तिशाली पत्रिका बना सकें। आपके इस सहयोग के लिए हम आपके विशेष आभारी होंगे। —व्यवस्थापक

योग, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक छ: विचारधाराओं को मिला कर एक दूसरे की सहयोगी व्याख्या करके ऐतिहासिक कार्य किया और त्रैतवाद की पुष्टि की। आज भी संसार के विद्वानों में इन दार्शनिक बातों पर मतभेद है। ईश्वर की सत्ता को मानने वाले पाश्चात्य विद्वान अधिकतर अद्वैतवाद को मानने वाले हैं किन्तु आधुनिक वैचारकों व दार्शनिकों जैसे अरविन्द, डा० राधाकृष्ण, रोम्या रोला आदि ने स्वामी जी द्वारा समर्थित त्रैतवाद को माना है। इसके साथ ही वेदों की एक ईश्वरवाद के आधार पर स्वामी जी द्वारा की गई व्याख्या को ऐतिहासिक बताया गया है। आज के वैज्ञानिक युग में स्वामी जी की दार्शनिक विचारधारा को सबसे बड़ी चुनौती भौतिकवाद व डार्विन की विकासवाद की थियोरी से मिली है। चारवाक की भांति आज भी विश्व में बहुत लोग ईश्वर की सत्ता ही स्वीकार नहीं करते किन्तु इन भौतिकवादियों के पास संसार की तर्कसगत व्याख्या नहीं है और उनके मत से स्वामी जी के ईश्वर दर्शन पर कोई आंच नहीं आती और उसकी उपयोगिता आस्तिकों के लिए ज्यों की त्यों है। अब जहां तक डार्विन के विकास-सिद्धांत की बात है तो इस सिद्धान्त के अनुसार Matter से Mind अर्थात जड़ से चेतन का विकास अर्थात् जड़ से चेतन की उत्पत्ति मानी गई है जिसके परिणाम स्वरूप जड़ और चेतन में कोई भेद ही नहीं रहा जो कि एक अमान्य बात है। इस विकास सिद्धांत का खण्डन उसी समय के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. वैलस द्वारा किया गया है। डार्विन के सिद्धांत से ससार की व्याख्या करना असम्भव है। अभी अभी प्रसिद्ध वैज्ञानिक Eric P. Poltan द्वारा लिखी गई पुस्तक Critique of the Psychophysical entity में निष्कर्ष दिया है कि हमें जड़ और चेतन की दो स्वतन्त्र सत्तायें माननी पड़ेगी। इतना ही क्यों प्रसिद्ध वैज्ञानिक आईनस्टीन का सापेक्षता का सिद्धांत जिसके अनुसार संसार की सापेक्षता दिक्-काल (Space-time continum) की अपेक्षा की जाती है और Space time continum को निरपेक्ष माना गया है, स्वामी जी की सृष्टि उत्पत्ति के सिद्धाँत का अनुमोदन करता है। इसके अनुसार जिस प्रकार चार विमावों (Four dimensional space time) वाले आकाश को हम नहीं समझ सकते और और न देख सकते। इसी प्रकार सृष्टि के आरम्भ में आविर्भूत युवा स्त्री-पुरुष का अस्तित्व तीन विभावों से अधिक विभावों में हम नहीं समझ सकते। सापेक्षता का सिद्धांत तीन विभावों (Dimensions) से अधिक विभावों में रह रहे जीव का अस्तित्व स्वीकार करता है जिसको हम तभी देख सकते हैं जब वह जीव देह धारण कर तीन विभावों वाले आकाश (Space) में आ जाता है। सिद्धांत के साथ साथ आज की (Parapsychology) द्वारा इकट्ठे किए गए प्रमाण व प्रयोग जिनके अनुसार जीता-जागता मनुष्य अदृश्य हो सकता है और फिर प्रकट हो सकता है तो स्वामी जी का यह सिद्धांत कि मनुष्य सृष्टि के आदि में युवा उत्पन्न हुआ, कैसे झूठा हो सकता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि ज्यों ज्यों विज्ञान का विकास हो रहा है स्वामी जी के सिद्धांतों की पुष्टि होती जा रही है। दूसरे यदि कोई वैज्ञानिक सिद्धांत स्वामी जी के सिद्धांत से टकराव भी खाता है तो उसके मुकाबले में विज्ञान की अपेक्षा दयानन्द की बात ज्यादा मान्य है। दर्शन के क्षेत्र में बुद्धि के मुकाबले में अनुभूति ज्यादा वजन रखती है, दूसरे बौद्धिक रास्ते (Intellectual approach) से अनुभूति का रास्ता (Intuitional approach) ज्यादा मान्य है और इसका प्रमाण यह है कि संसार के महापुरुषों Mysties के अनुभवों में कहीं विरोधाभास नहीं है जबकि विज्ञान के सिद्धांत Scientific theory बराबर बदल रही हैं। सो आज के युग में स्वामी जी के धार्मिक व दार्शनिक सिद्धांतों की पहले की अपेक्षा दुगुनी उपयोगिता है।

भौतिकवाद से असन्तुष्ट मानव समाज आज फिर आध्यात्म की शरण में आ रहा है। ऐसी परिस्थिति में उस परम शान्ति को प्राप्त करने के साधन 'योग' के बारे में आकर्षण स्वाभाविक है। योग के बारे में आज तरह तरह के भ्रम व ढोंग चल रहे हैं। कहीं हिप्पीवाद पनपा तो कहीं भोग में योग पनपा, कहीं आनन्द मार्ग तो कहीं बाल भगवान बालयोगेश्वर संसार का कल्याण कर रहे हैं तो कहीं महेश योगी पाश्चात्य का भला कर रहे हैं तो कहीं साईं बाबा भभूत बांट रहे है, कहीं ब्रह्म कुमारी ईश्वर दर्शन करा रही हैं तो कहीं हरे राम-हरे कृष्ण का कीर्तन हो रहा है। पाश्चात्य में तो थोड़े से शारीरिक व्यायाम को ही योग मान लिया है। आज मानव जितना अशान्त है उतना ही शांति के मार्ग में भटका हुआ भी है। जितना धर्म के नाम पर ढोंग होता है उससे कहीं बढ़कर आज योग के ऊपर ढोंग पनप रहा है। ऐसे भयानक समय में उस सरल हृदय योगी दयानन्द के सीधे स्पष्ट व व्यवहारिक योग मार्ग की बेहद आवश्यकता है। दयानन्द ने कोई नया योग मार्ग न देकर वही सनातन, वैज्ञानिक, प्राकृतिक महर्षि पातजलि द्वारा प्रतिपादित अष्टांग योग का अनुकरण करने को कहा जो केवल मात्र आज के अशान्त जीवन को शांति दिला सकता है।

आज संसार की अशांति व संघर्ष और विशेष कर भारत के पिछड़ेपन का महत्वपूर्ण कारण वर्तमान एकांगी शिक्षा पद्धित भी है। आज शिक्षा का उद्देश्य केवल अक्षर ज्ञान, भौतिक साधन जुटाना तथा भारत में और विदेशों में भौतिकजगत के बारे में जान लेना मात्र है। मानव जीवन का

आधुनिक जीवन के संदर्भ में स्वामी दयानन्द की उपादेयता

o भूपसिंह आर्य

ससार के इतिहास में महर्षि दयानन्द उन गिने-चुने व्यक्तियों में से एक हैं जो हर पहलू की दृष्टि से पूर्ण थे। महर्षि जी का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है चाहे वह धार्मिक है, सामाजिक है या राजनैतिक है। हम पहले उनकी धार्मिक जीवन में की गई क्रान्ति का चित्र देखते हैं। जिस समय स्वामी दयानन्द हाथ में पाखण्ड खण्डनी पताका लेकर देश के धार्मिक जीवन को आन्दोलित करने मैदान में उतरे थे उस वक्त देश में धर्म के नाम पर पाखण्ड, भ्रष्टाचार, दुराचार, अन्याय व लूट-खसोट फली हुई थी। रूढ़िवादिता, अन्धविश्वास, ऊँच-नीच जाति-पाति, का भेद-भाव, व सामाजिक जीवन में दुर्व्यवस्था बुरी तरह घर किए हुए थे। मनुष्य-मनुष्य के बीच मत-मतान्तरों की दीवार खड़ी हुई थी, साधारण लोगों का धर्म के नाम पर शोषण होता था, विशेषकर जन साधारण को धार्मिक क्षेत्र में उन्नति का अधिकार नहीं था, पोंगा-पंथी गुरुडम और ढोंग के सहारे चरित्रहीनता व आलस्य बढ़ रहा था, स्वार्थ पूर्ति के लिए सत्य सनातन वेद शास्त्र आदि धार्मिक व विद्या ग्रन्थों के मूर्खतापूर्ण व गलत अर्थ लगाये जाते थे और सबसे बढ़कर धार्मिक, अन्धविश्वास व मत-मतान्तरों के कारण राष्ट्र की एकता बिखर रही थी और देश गुलामी के शिकंजे में जकड़ा हुआ था। उस समय जिस दृढ़ता व साहस के साथ वैज्ञानिक व सार्वभौमिक सनातन वैदिक धर्म का डंका उन्होंने बजाया था, वह अद्वितीय था। सभी मत मतान्तरों की निराधार बातों का खण्डन करते हुए सत्यासत्य की विद्वतापूर्ण व्याख्या करते हुए वैदिक धर्म का प्रतिपादन किया था। अब प्रश्न उठता है, कि क्या आज के युग में भी स्वामी दयानन्द द्वारा कहे गए धर्म व सिद्धान्तों का उपयोग है? क्या ये बातें आज भी औचित्य रखती हैं? इसके उत्तर में पहली बात तो यह है कि स्वामी दयानन्द ने किसी ऐसे सिद्धान्त या धर्म का प्रचार नहीं किया था जो देश या काल से सीमित हो और प्राकृतिक या वैज्ञानिक न हो। दूसरे जहां तक परिस्थितियों का प्रश्न है वहां आज भी संसार में और विशेषकर भारत में मत-मतान्तरों व अन्धविश्वासों का बोलबाला कम नहीं है। आज भी जाति संघर्ष, साम्प्रदायिकता, धार्मिक शोषण व धर्म की आड़ में आर्थिक शोषण, ढोंग और पोंगा पंथी की भरमार है। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर धर्म व जाति संघर्ष ज्यों का त्यों दृष्टिगोचर हो रहा है। आज भी मतों के आधार पर लोगों को बांट कर, लड़ा कर, प्रेम भावना को नष्ट करके राष्ट्रीय एकता में बराबर खतरा पैदा किया जा रहा है। यदि दयानन्द के समय में धार्मिक अन्धविश्वास था तो आज धार्मिक अन्धविश्वास के साथ साथ वैज्ञानिक अन्धविश्वास ने मानव को पागल बना रखा है और किसी राष्ट्र की तो बात क्या सारी मानवता के सिर पर धागे से बंधी तलवार लटक रही है। मानव जीवन में असंतोष चरम सीमा तक पहुंच चुका है। जीवन के प्रति भौतिकवादी दृष्टिकोण ने मानव को पशु के स्तर पर लाकर छोड़ दिया है। ऐसे समय में किसी राष्ट्र क्या, सारी मानव जाति की प्रगति को ठीक दिशा देने और उसके जीवन में शान्ति स्थापित करने के लिए फिर किसी दयानन्द की आवश्यकता है और उसके द्वारा प्रतिपादित सार्वभौमिक, वैज्ञानिक वैदिक धर्म ही आधुनिक जीवन की समस्या का हल हो सकता है अन्यथा नहीं। विज्ञान ने दूरी को खत्म करके संसार को परिवार का रूप दे दिया है, इस दृष्टिकोण से भी आज कोई मत विशेष किसी राष्ट्र या राष्ट्रों का जीवन दर्शन न बन कर सार्वभौमिक वैदिक धम ही एक विकल्प है जो संसार के सामने रह जाता है। सो आज महर्षि द्वारा समर्थित धार्मिक सिद्धान्तों की सख्त आवश्यकता है और उनकी उपयोगिता है।

अब हम महर्षि के दार्शनिक सिद्धान्तों का आधुनिक जीवन की पृष्ठ भूमि में औचित्य देखते हैं। संसार में और विशेषकर भारत में दयानन्द से पहले भी विभिन्न दार्शनिक विचार धारायें थी। शंकराचार्य ने अद्वैतवाद को ब्रह्म, माया और माया से ढका ब्रह्म मान कर माना। माया सत् भी है और असत् भी आदि काल से है किन्तु अनन्त नहीं, आदि तर्क विरुद्ध तर्कों का उपयोग किया। किन्तु चाहे कुछ भी हो उनके अद्वैतवाद में भी प्रत्यक्ष या परोक्ष तीन आदि सत्ताओं ब्रह्म, माया व माया से आच्छादित ब्रह्म को माना गया है और तभी वे संसार की व्याख्या कर पाते हैं। इसी प्रकार रामानुजाचार्य के विशिष्ट अद्वैतवाद में भी माया व जीव को ईश्वर में निहित मान, तीन सत्ताओं को माना गया है। आगे चलकर बल्लभाचार्य व निम्बाकाचार्य के द्वैतवाद में भी घुमा फिरा कर तीन आदि शक्तियों को मानकर ही संसार की व्याख्या की गई है। जबकि महर्षि ने सिधा त्रैतावाद को बिना किसी लाग लपेट के ईश्वर, जीव व प्रकृति की अनादि व अनन्त सत्ता मान कर वेदों का भाष्य किया और जन साधारण में सहज ढंग से इस गूढ़ दर्शन का प्रचार किया। इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण दार्शनिक कार्य महर्षि का वेदान्त, सांख्य,

महत्वपूर्ण पहलू जिसमें ग्रात्मिक व मानसिक विकास होता है, पूरी तरह उपेक्षित कर दिया गया है जिसका दुष्परिणाम मर्यादाहीन जीवन, अशांति, भ्रम, असुरक्षा, शोषण और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भयानक संघर्ष निकला है। आज समुचित वैज्ञानिक उन्नति होने पर भी जीवन दुखी ही नहीं वरन् मानवता का अस्तित्व भी खतरे में पड़ा हुआ है। इसका बहुत बड़ा श्रेय फ्रायड व माकीनर्स आदि को जाता है। इन विद्वानों ने जीवन के एक पहलू को जरूरत से ज्यादा महत्व देकर जीवन को एकांगी बना दिया। आज फिर हमें उस देव दयानन्द की शिक्षा प्रणाली जिसमें मानव के समुचित (शारीरिक, आत्मिक, मानसिक व सामाजिक) विकास का लक्ष्य रखा गया है की सख्त आवश्यकता है। आज की वैज्ञानिक उन्नति का ठीक दिशा में लाभ तभी हो सकता है जबकि शिक्षा का उद्देश्य भोगवाद से हट कर त्यागवाद की ओर हो। मनुष्य को पशु बनने से रोकने के लिए दयानन्द की शिक्षा प्रणाली रामबाण का काम कर सकती है।

दयानन्द की उपादेयता सामाजिक जीवन के संदर्भ में भी अद्वितीय है। यह दयानन्द की ही शिक्षा की करामात है जिसके कारण संसार और विशेषकर भारत में नारी का स्थान पुरुष के समान है। जाति-पाँति, भेद-भाव, ऊँच नीच, शोषण, अन्याय, बाल-विवाह, व दूसरी सामाजिक कुरीतियों की घातक दयानन्द की शिक्षा का उपयोग तो हर समय व हर समाज में रहता ही है किन्तु इसके साथ-साथ विधवा विवाह, एक पत्नि विधान, अन्तर्जातीय विवाह, नियोग विधान आदि का आज विशेष उपयोग हो सकता है। इन सब बातों के अतिरिक्त सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य ऋषि द्वारा फिर से वर्ण-व्यवस्था को लागू करने का प्रयत्न था जिसकी आधुनिक जीवन में विशेष आवश्यकता है। दयानन्द द्वारा समर्थित वर्ण-व्यवस्था का आधार इतना वैज्ञानिक व प्राकृतिक है कि इसकी उपयोगिता देश और काल से परे है। आज समाज के जीवन में जिसको जैसा स्थान मिलना चाहिए वह प्राप्त न होने के कारण सारा सामाजिक ढांचा अस्त-व्यस्त है जिसका एक मात्र समाधान वर्णाश्रम-व्यवस्था हो सकती है।

आज दयानन्द की शिक्षाओं का उपयोग धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक व शिक्षा क्षेत्र में ही नहीं वरन् राजनैतिक क्षेत्र में भी एक बिल्लाती आवश्यकता है। ऋषि की राजनीति में वही व्यक्ति भाग ले सकता है जो जितेन्द्रिय, विद्वान, निःस्वार्थ व त्यागी पुरुष हो। जब उनकी शर्तों के अनुसार हम किसी को शासक बनाते हैं तो सभी वादों का अन्त हो जाता है। शोषण, भ्रष्टाचार अन्याय व असुरक्षा की चिन्ता खत्म हो जाती है। राजनीति का रूप एक धर्म का रूप बन जाता है। आज भ्रष्टाचार बेईमानी, घूसखोरी, अन्याय, शोषण, गुन्डागर्दी को राजनीति माना जाता है। राजनीति की इस परिभाषा को बदलने के लिए जीवन का धन के आधार पर मापदण्ड रोकने के लिए, सबको विकास का अवसर प्रदान करने के लिए, और सबको उन्नति के साधन देने के लिए दयानन्द द्वारा स्थापित राजनीति के अतिरिक्त कोई समाधान नहीं है।

ऋषि दयानानन्द ने दण्ड विधान व प्रशासन की शिक्षा मनु महाराज के अनुसार बताई, जिसकी महान् विशेषता यह है कि जो व्यक्ति जितना बड़ा हो अर्थात् जितना ज्यादा जिम्मेवार हो उसको अपराध करने पर उतना ही अधिक दण्ड दिया जाये। आज बिलकुल इसका उल्टा हो रहा है, जो जितना बड़ा है उसको दण्ड उतना ही न्यून दिया जाता है। बिडम्बना यह है कि अपराध करने से पहले दुनियाँ भर के भेद-भाव और अपराध करने के बाद सब एक समान। आज के दण्ड विधान में यही एक भयंकर भूल है जो सब अन्याय भ्रष्टाचार व शोषण को जन्म देती है। यदि हम दण्ड विधान में ऋषि का मूल मन्त्र अपना लेते हैं तो अन्याय का खात्मा हो सकता है। ऋषि एक कुशल राजनीतिज्ञ थे और यदि हम आज भी उनकी राजनीति पर चलें तो मानवता का निश्चित रूप से कल्याण हो सकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ऋषि दयानन्द की आधुनिक जीवन के संदर्भ मे प्रत्येक पहलू से एक महत्वपूर्ण उपयोगिता है और यदि हम आज उनकी शिक्षाओं पर चलें तो धरती पर स्वर्ग उतर आवे।

वैदिक समाजवाद और प्रतिक्रियायें

प्रिय अग्निवेश जी,

"वैदिक समाजवाद" की प्रति मिली। आपने बड़े साहस के साथ प्रमाण देकर समाजवादी सिद्धांत के अनेक अंशों का आविष्कार वेदों में किया है। इस प्रकार आपने अपनी आग वहां फैला दी, जहां जड़ता और जाड़ा था। पर क्या स्थिर स्वार्थ वाले आपको अपने गढ़ में जमने देंगे? विवेकानन्द ने एक प्रयास किया था। हमारे दादा शचीन्द्रनाथ सान्याल भी आपके मत के इर्द-गिर्द थे। अफसोस है कि 'बन्दी जीवन' के सिवा उनकी गंभीर कृतियाँ Out of print हैं।

मैं आपकी सर्वश: सफलता चाहता हूं यद्यपि मैं पक्का नास्तिक हूँ। कृपा

मन्मथनाथ गुप्त

प्रिय स्वामी अग्निवेश जी,

आपने मेरे पास अपनी विशेष कृति "वैदिक समाजवाद" भेजी है, इसके लिए मैं आप का अत्यन्त आभारी हूँ।

आज जबकि भारतीय संस्कृति के प्रगतिशील समाजवादी विचारों का उद्घाटन एवं प्रस्तुतीकरण देश की वर्तमान सामाजिक अवस्था के लिए अत्यन्त अनिवार्य है, उस समय विज्ञान सम्मत वैदिक सिद्धान्तों के अनुकूल "वैदिक समाजवाद" पुस्तक का प्रकाशन आज की विषम स्थिति में एक महत्वपूर्ण योगदान है।

विनीत

विजय कुमार सिन्हा, लेखक एवं पत्रकार

I.J. 31 Errammanzil Colony
Hyderabad-4(A.P.)

पुस्तक का नाम—वैदिक समाजवाद
पृ०ठ संख्या—८८ (अठ सी)
प्रथम संस्करण—५००० प्रतिलिपि
प्रकाशक—राजधर्म प्रकाशन, रोहतक
मूल्य—१)५० (डेढ़ रुपया)
लेखक—स्वामी अग्निवेश (यथा नाम तथा गुण)

आजकल, ऐरे-गैरे, नत्थू खैरे, सभी समाजवाद की तानें तोड़ रहे हैं। इसलिए सब ओर समाजवाद का बोलबाला है। पुस्तकों की बाढ़ सी आ गई है। लेकिन अधिकतर पुस्तकों में यूरोपीय समाजवाद का पोस्टमार्टम ही मिलेगा। मौलिक सुझाव नहीं पेशावर लेखकों की इन पुस्तकों का लक्ष्य राज व समाज की व्यवस्था देना नहीं है। जनता को गुमराह करके धन कमाना या रूस, चीन या पूंजीपतियों की दलाली करना है। देश के ऐसे दूषित वातावरण में स्वामी अग्निवेश जी की प्रस्तुत पुस्तक "वैदिक समाजवाद" एक मौलिक रचना है। लेखक ने उचित समय पर, पीड़ित मानवता का पथ-प्रदर्शन तो किया ही है, लक्ष्य प्राप्ति के लिए ठोस प्रोग्राम व सुझाव भी दिये हैं।

पुस्तक का मुख पृष्ठ क्रान्ति प्रतीक' रक्त वर्ण का है। बीचों बीच 'स्वस्तिक चिन्ह' ने और अधिक आकर्षक बना दिया है। सुरुचिपूर्ण छपाई व जिल्द के कारण गेटअप दर्शनीय है। छापे खाने की अशुद्धियां नगण्य हैं। पुस्तक सर्वथा पठनीय व अनुकरणीय है।

लेखक की लेखन शैली, सरल, सुगम व सुलझी हुई, होते हुए भी शब्दावलि 'अग्निवेष्टित' है। मुर्दों में भी जान डालने वाली है। भाषा और भाव का प्रभाव गूंगे का गुड़' नामक नवीन अलकार की सृष्टि करता है जो चख कर चटखारे लेने की चीज है, बताई नहीं जा सकती। संक्षेप में भाषा व भाव सजीव सम स्वभाव हैं।

'वैदिक समाजवाद' की, संक्षित व सन्तुलित व्याख्या नपे तुले, मंजे हुए शब्दों में, 'गागर में सागर' का प्रत्यक्ष दर्शन हैं। लेखनी कौशल का अद्भुत चमत्कार सिद्ध करता है कि 'संक्षेप ही बुद्धि का सार हैं। क्योंकि केवल नौ पृष्ठों में बता दिया गया है कि 'वैदिक समाजवाद' क्या है। शेष लगभग ८८ पृष्ठों में (१२ अध्यायों में) प्रश्नोत्तरी शैली अपना कर शका समाधान किया गया है। प्रश्न तीखे व चुभते हुये हैं, तो उत्तर भी उतने ही गम्भीर, सप्रमाण तथा बे लाग हैं। लम्बे उत्तरों में, कहीं-कहीं लेखनी कौशल का स्थान, भाषा में 'भाषण ध्वनि' देता सा मालूम होता है। लेकिन विषय की रोचकता ने इस 'दोष' को भी 'गुण' बना दिया है।

लेखक के प्रेरक हैं महर्षि दयानन्द सरस्वती व उनकी अमर रचना 'सत्यार्थप्रकाश'। संभवत: इसीलिए पुस्तक का नाम "वैदिक समाजवाद" चुना गया; यद्यपि लेखक 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उपासक है और अपने समाजवाद को सार्वभौम व विश्वव्यापी मानता है। हमारे विचार से यदि इस पुस्तक का नाम 'विश्व समाजवाद' रखा जाता तो अधिक उपयुक्त था। ऐसा करने पर इस विचार धारा के प्रचार व प्रसार में अधिक सुविधा होती। 'वैदिक' शब्द से जिन भारत विपक्षियों को 'सूग' आती है उनको विष वमन का अवसर भी नहीं मिल पाता।

अंत में, मैं आशा करता हूँ कि भारतीय युवा वर्ग, स्वामी अग्निवेश जी के सन्देश को देश के कोने-कोने में पहुँचायेगा। इसी अवसर पर मैं स्वामी इन्द्रवेश जी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। 'वैदिक समाजवाद उन्हीं से प्रसाद रूप में प्राप्त हुआ है।

नगण्य मूल्य पर, मूल्यवान सामग्री संकलित, मौलिक रचना है।

प्रो० उमाशंकर शर्मा

नरेला में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वाधान में—

ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर

दि० २७ जून से ३ जुलाई ७४ तक

इसमें चुने हुए १५ वर्ष से ऊपर की आयु वाले प्रतिभाशाली युवक भाग लेंगे। प्रवेश शुल्क १० रुपया प्रति युवक होगा। शुल्क तथा प्रार्थना पत्र डा० धर्मवीर चरक क्लिनिक नरेला के पते पर २४ जून ७४ तक पहुँच जाना चाहिए। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को सुन्दर प्रमाण-पत्र भी दिए जायेंगे।

इस अवसर पर आर्य समाज के उच्च कोटि के संन्यासी व विद्वान एवं भारत के ख्याति प्राप्त व्यायामाचार्य विशेष रूप से युवकों को योगासन, दन्ड, बैठक, लाठी, शिक्षा, तलवार, छुरी व खोखरी आदि का प्रशिक्षण देंगे व आर्य समाज के सिद्धातों का परिचय करायेंगे। आर्य समाज के मंत्रियों से विशेष निवेदन है कि अपनी-अपनी आर्य समाजों की ओर से आर्य युवक व उचित सहायता भेजकर आर्य समाज के क्रियात्मक प्रचार में सहयोग दें।

प्रशिक्षणार्थी को शिविराध्यक्ष की आज्ञा पालन अनिवार्य होगा। इसमें आरंभ से अन्त तक रहना आवश्यक है। शिविर में आने वाला प्रत्येक शिक्षणार्थी अपने साथ ऋतु अनुकूल बिस्तर लाठी, संचिका (कापी), पेन्सिल आदि तथा एक लोटा, थाली व कटोरी, दो लगोट, दो कटि वस्त्र ,खाकी निकर व सफेद कमीज तथा प्लीट आदि साथ लायें।

मार्ग-दिल्ली स्टेशन से नरेला के लिए ३९ ए, ४१, ४१ ए, ४१ बी, ४१ सी, आदि दिल्ली परिवहन की बसें एव रेलगाड़ी व प्राईवेट बसें हर पन्द्रह-२ मिनट के बाद आती है। शिविर स्थान निर्देश के लिए बस स्टैंड व स्टैंड पर व्यवस्था होगी।

—:निवेदक:—

प्रि. होश्यारसिंह, डा० धर्मवीर मा० सत्यव्रत प्रो० बलजीत सिंह (शिविर संयोजक) नरेला दिल्ली-४०

रोहतक में आर्यों का भव्य जलूस

आर्य वीर दल आर्य कुमार सभा रोहतक का १२ वां वार्षिक-महोत्सव भगतसिंह पार्क में ३१ मई से २ जून १९७४ तक बड़े समारोह से मनाया गया। शुक्रवार ३१ मई को सायं साढ़े चार बजे एक भव्य शोभा यात्रा (जलूस) स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता मे नगर के मुख्य बाजारों से निकाली गई। जलूस की शोभा अद्वितीय एवं सराहनीय थी। उत्सव का उद्घाटन श्री डा० सुखदयाल जी निभावन ने किया। इस शुभावसर पर स्वामी अग्निवेश जी, प्रो० उत्तमचन्द जी शरर आचार्य सत्यप्रिय जी प्रो० राम विचार जी, बहिन रूप रेखा जी एम० ए० इत्यादि आर्य समाज के प्रकांड पडितों के प्रवचन हुए तथा सर्वश्री महेन्द्रपाल जी, जयदेव जी जतोई वाले, मा० प्रेम प्रकाश जी, श्री रमेश चन्द्र जी, एवं पं. धर्मपाल जी शास्त्री इत्यादि के वैदिक सिद्धांतों पर आधारित मनोहर भजन हुए। उत्सव से पूर्व स्वामी विद्यानन्द जी विदेह द्वारा वेदकथा का रमणीय प्रबन्ध किया गया।

आर्य वीर दल के कार्य कर्त्ताओं सर्वश्री जगदीश मित्र जी, ईश्वर चन्द जी, देशराज जी, वेद प्रकाश जी, मुलखराज जी, जगदीश चन्द्र जी, ओमप्रकाश जी इत्यादि ने उत्सव एवम् शोभा यात्रा का प्रबन्ध अत्यन्त कुशलता तथा दक्षता से किया जो प्रशंसनीय है।

आर्य युवक परिषद रामामण्डी

आर्य युवक परिषद् रामामण्डी (भटिण्डा) का गठन प्रथम मई १९७४ को कर दिया गया है तथा इसके निम्नलिखित अधिकारी चुने गए हैं।

प्रधान—डा० आनन्द प्रकाश जी
मन्त्री—बलदेव आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री पवन कुमार जी

आर्य समाज मिलकपुर, तहसील बहरोड अलवर जिला आर्य सम्मेलन

दिनांक २७, २८ मई को यह सम्मेलन बड़े धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। स्वामी इन्द्रवेश जी तथा स्वामी अग्निवेश जी ने इस सम्मेलन में आर्य राष्ट्र स्थापना के प्रति अपना दृढ़ सकल्प व्यक्त किया। स्वामी अग्निवेश जी ने वैदिक समाजवाद की गम्भीर विवेचना कर लोगों को इसका अवलम्बन लेकर शोषण मुक्त आर्य राष्ट्र बनाने का आह्वान किया। ब्र० रामकिशन और श्री खेमसिंह ने अपने क्रान्तिकारी भजनों से लोगों को वर्तमान व्यवस्था को खत्म कर वैदिक समाज की स्थापना का संदेश दिया। इसी तरह भूपेन्द्रसिंह, हेतराम मत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री छोटूसिंह प्रधान आ० प्र० सभा राजस्थान, श्री बाल दिवाकर हस तथा अन्य प्रसिद्ध साधू, विद्वान एवं भजनोपदेशकों ने अपने विचारों से लोगों को अवगत कराया। दिनांक २७-५-७४ को विशाल जलूस बहरोड़ होता हुआ ५ मील की यात्रा करता हुआ आर्य समाज मिलकपुर पहुँचा।

Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

रोहतक
१२ जून १९७४

कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार (सहारनपुर)

राजधर्म प्रकाशन के लिए राजधर्म प्रेस, झज्जर रोड, रोहतक से स्वामी अग्निवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। फोन : ८८२

॥ ओ३म् ॥

पाक्षिक

राजधर्म



प्रधान सम्पादक
स्वामी अग्निवेश

सह सम्पादक
गिरजेश्वर

जून प्रथम
६ : अङ्क ११
वार्षिक शुल्क १५ रु०
एक प्रति ७० पैसे

छत्रपति शिवाजी की पुण्य स्मृति

आर्य सम्मेलन का आर्यों को आह्वान्

फिल्मी अश्लीलता तथा उपचार

"अमर" (एक मर्मस्पर्शी नाटक)

आज स्वामी दयानन्द की उपादेयता

गरीबी हटाओ बनाम गरीबी बढाओ

ादकीय

छत्रपति शिवाजी की पुण्य स्मृति

छत्रपति शिवाजी की पुण्य स्मृति में आज देश भर में उनकी राज्याभिषेक त्रि-शताब्दी मनाई जा रही है। ऐसे समारोह के आयोजन से हम जहां अपने महान नेता द्वारा अदा की गई भूमिका का तत्कालीन देश की परिस्थितियों के अनुसार मूल्यांकन करते है, वहीं हम अपने महान नेता का आज की नई परिस्थितियों के संदर्भ में भी मूल्यांकन कर उससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं। आज जब देश सांस्कृतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक दृष्टि से एक होकर धर्म के नाम पर दो भागों में विभक्त है, यद्यपि आज उसका तीन भाग बन चुका है; छत्रपति शिवाजी के अखण्ड भारत के स्वप्न का मूल्यांकन अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। शिवाजी पर बहुत से देशी-विदेशी लेखक 'अन्ध हिन्दू राष्ट्र भक्त' होने का आरोप लगाते हैं। इन लेखकों की मनोभावना हिन्दू-मुस्लिम विभेद की दिवार खड़ा कर अपने निहित स्वार्थ की पूर्ति करना रहा है। आज हमें प्रत्येक दृष्टिकोण से ठीक तर्क संगत विश्लेषण कर देश के इतिहास की व्याख्या करने की आवश्यकता है, जिससे हम अपने अतीत से सबक लेकर अपने वर्तमान और भविष्य को उन्नतशील बना सके।

१८५७ का प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम अंग्रेजों के विरुद्ध हिन्दू-मुसलमानों ने कन्धे से कन्धा मिला कर लड़ा। इस संग्राम के विफलता के बाद अंग्रेजों ने हिन्दू-मुस्लिम एकता को अपने साम्राज्य के ऊपर भयंकर प्रहार समझा। अत: उन्होंने इस देश के इतिहास को गलत चित्रित कर हिन्दू-मुस्लिम विभेद उत्पन्न करना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझा। उन्होंने समस्त मुस्लिम जगत को समस्त हिन्दुत्व को मिटाने वाले के रूप में चित्रित किया और अपने को मात्र सौदागर के रूप में। परिणाम स्वरूप गलत इतिहास पढ़कर हिन्दू मुस्लिम पागल होकर एक दूसरे को अपना जानी दुश्मन समझते हैं। आज हिन्दू-मुस्लिम दंगे तो होते हैं परन्तु हिन्दू-ईसाई दंगे सुनने को भी नहीं मिलते यद्यपि अंग्रेजों भी ने इस देश का भयंकर शोषण और अत्यधिक बर्बादी की है।

जब एक आक्रमणकारी मुगल मुसलमान तैमूरलंग इस देश पर आक्रमण करता है तो वह दिल्ली में हिन्दुओं की अपेक्षा पठान मुसलमानों का अधिक संख्या में कत्ल करता है। मुसलमान होने के कारण मुगल, पठानों पर रहम नहीं करते हैं। इसी भांति जब इरानी मुसलमान नादिरशाह आता है तो वह हिन्दुओं की अपेक्षा दिल्ली में मुगलों का अत्यधिक संख्या में कत्लयाम करता है। इससे प्रमाणित होता है कि एक धर्म में दीक्षित होने के कारण एक आक्रम[illegible]ी मुसलमान दूसरे मुसलमान को नहीं ब[illegible] अंग्रेज इतिहासकारों द्वारा "समस्त मुस्लिम जगत द्वारा समस्त [illegible]टान की बात, चित्रित करना आजीवन हि[illegible] स्वार्थ [illegible] को दृढ़ करना रहा है जिससे वे अपने साम्राज्य को अधिक दिन तक यहां कायम रख सकें। सही ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इसकी व्याख्या देशी और परदेशी के बीच लड़ाई का रहा है। परन्तु अंग्रेजों ने इतिहास को विकृत कर हिन्दू-मूस्लिम समस्या को जटिल बना दिया है। छत्रपति शिवाजी भी अंग्रेजी इतिहासकारों के इस व्याख्या से नहीं बच सके। आज भारतीय मुसलमान उन्हें अपना शत्रु मानता है। यद्यपि उन्होंने अपने जीवन में किसी भी अहिन्दू महिला का अपमान एक क्षण भी सहन नहीं किया है। उनके पिता जी की एक मुस्लिम पत्नी सुल्तान नूरुद्दीन पूना में पूर्ण सम्मान के साथ रहती थी। शिवाजी भारतीय मुसलमानों के अधिकारों का हनन करना देश हित में नहीं समझते थे। स्वयं मुसलमान इतिहासकारों ने स्वीकार किया है कि भारत की आजादी के इस महान सेनानी ने कुरान और मस्जिद दोनों का उससे भी अधिक सम्मान किया जितना कोई मुसलमान कर सकता है। शिवाजी की लड़ाई इस्लाम या भारतीय मुसलमानों से नहीं बल्कि मुसलमान हमलावरों से थी और वे भारत की आजादी के लिए लड़ने वाले एक भारतीय योद्धा की तरह उस मुगल सत्ता से लड़े, जो भारतीय जीवन धारा को ही सुखा देना चाहती थी। एलफिन्स्टन, कैफीखां, नेहरू तथा डांगे जैसे विरोधी विचारक भी इस एक सत्य को स्वीकार करते हैं कि शिवाजी भारत के अद्वितीय युगपुरुष और राजनेता थे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दवी स्वराज्य का स्वप्न साकार करने के लिए भारत की गरीब जनता को संगठित किया और उसका बड़ी कुशलता से नेतृत्व किया। हिन्दवी का अर्थ हिन्दू-राज से नहीं था। इंशा अल्ला खां ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा था कि हिन्दवीं भाषा हिन्दू या मुसलमान की नहीं बल्कि हिन्दुस्तान की भाषा है। शिवाजी ने जब हिन्दवी स्वराज्य का नारा दिया तब उन का अभिप्राय विदेशी हमलावरों को समाप्त करके देश के शासन की बागडोर हिन्दुस्तान की जनता को सौंपने से था।

अत: आज शिवाजी की पुण्य स्मृति में उनके राज्याभिषेक की त्रिशताब्दी समारोह की महत्ता इसी में है कि देशकी शोषित जनता संगठित होकर शोषण मुक्त व्यवस्था का सृजन करने का दृढ़ संकल्प धारण करे ताकि इस देश के कृत्रिम विभाजन को आसानी से मिटाया जा सके। अखण्ड भारत के इस कार्य को सम्पन्न कर ही हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

—गिरिजेश्वर

"अमर"

दीप्तराज साहिल, भिवानी

(ये बात काल्पनिक है, परन्तु इसमें स्वतन्त्रता से पहले की वास्तविकता की एक झलक अवश्य है और देश की स्वतन्त्रता के लिए बलिदान देने वाले देश के शहीदों के जीवन में ऐसी ही अनेकों वास्तविक घटनाएँ घटीं परन्तु देखना यह है कि आज हम उनके मस्तिष्कों में बने देश के चित्रण और लक्ष्यों को कहां तक पूर्ण कर पाये हैं)

पहला दृश्य

(शहर की आम सड़क की एक बन्द गली के कोने के मकान के कमरे में चारपाई पर लेटे हुए बीमार "अमर" के पास बैठी उसकी मां, कभी "अमर" के माथे पर हाथ रखती है, कभी उसके हाथों को सहलाती है तो कभी सीने पर हाथ रखती है। मगर कुछ ही क्षणों की बेचैनी के बाद "अमर" गर्दन डाल देता है।)

मां—(चीख के साथ) "बेटा अमर ! मेरा लाल" (पुकार कर रोने लग जाती है।)

(मकान के चौक के खुले, कमरे के दरवाजे से मुहल्ले का एक वृ[illegible] जो लंगड़ा होने के कारण सीढ़ियों के सहारे चलता है, कमरे में दाखिल होता है)

काका—"बहू क्या हुआ मेरे लाल "अमर" को ?"

"अमर हम सब को छोड़ कर इस दुनियां से चला गया।"

काका—"बहू दिल को बे काबू ना करो" तुम्हारा पति जिस काम में लगा हुआ है, उसके लिए इतना ही काफी नहीं है। (मुहल्ले की कुछ औरतें उसी दरवाजे से कमरे में आकर बैठ जाती हैं और कुछ समय के मौन शोक के बाद प्रत्येक वृद्ध काका को एक-एक दो-दो रुपया "अमर" के कफन के लिए देती हैं।)

(कमरे का गली की तरफ खुलने वाला दरवाजा एक झटके के साथ खोलकर "तरुण" कमरे में दाखिल होता है और अपने हाथों को पीठ के पीछे किए हुये ही दरवाजा बन्द करदेता है।)

तरुण—"क्या हुआ मेरे लाल को ?" (और "अमर" के सिराहने बैठ कर उसे झंझोड़ता है।)

काका—"डेढ़ महीने से सख्त बीमार था, पैसे न होने के कारण इलाज नहीं हो सका आखिर आज दम तोड़ दिया। अच्छा हुआ तुम आ गये अपने हाथों से क्रिया-कर्म तो कर दोगे।)

तरुण—"नहीं काका क्रिया कर्म तो तुम्हीं को करना होगा, मुझे तो इसी समय वापिस जाना है। जिस काम के लिए हम दो साथी यहां आये है, उसे पूरा करके जल्दी ही वापिस जाना है। पुलिस हमारे पीछे हैं, मैं तो पुलिस से बचता हुआ यहां आगया था, शायद मेरा साथी तो पकड़ा भी गया हो।"

काका—"अच्छा तो ये लो पैसे अपने हाथ से "अमर के लिए कफन तो लाते ही जाओ।"

(तरुण पैसे लेकर कफन खरीदने चला जाता है।)

दूसरा दृश्य

(बाजार की तन्हां सड़क पर तरुण को सामने से आता हुआ एक सेठ मिल जाता है।)

तरुण—"सेठ जी मुझे कफन के लिए कपड़ा लेना है, जरा चलकर जल्दी से दे दो।"

सेठ—तुम तो यहीं चौराहे पर ठहरो, मैं दुकान से कफन ले आता हूं, कहीं तुम्हा[illegible] पुलिस देख लेगी तो [illegible]गी। मुझे तो आखिर अपने बच्चों को पालना है।"

(सेठ दुकान से कफन का कपड़ा लेने चला जाता है, तरुण चौराहे पर अकेला इधर उधर देखता हुआ, बेचैन सा तन्हा ही खड़ा रहता है, कुछ क्षणों के बाद ही पीछे से कुछ आवाजें सुनाई देती हैं............।

पुलिस अफसर—"बताओ तुम और तुम्हारा साथी तरुण जो इश्तिहार लेकर आये हो, वे कहां हैं ?"

क्रान्तिकारी—"हम कोई इश्तिहार लेकर नहीं आये और मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता।"

पुलिस अफसर—(गरजकर) "तुम अगर वे इश्तिहार हमारे हवाले कर दोगे तो, हम तुम्हें माफ कर देंगे, वरना पुलिस स्टेशन चलकर तुम्हारी खासा पिटाई होगी।"

क्रान्तिकारी—"मेरे पास कोई इश्तिहार नहीं है।"

पुलिस अफसर—"कान्स्टेबल, इसे कोड़े लगाओ और पुलिस स्टेशन ले चलकर वो पिटाई करो कि इसे छठी का दूध याद आ जाये। इन कुत्तों ने हमारे नाक में दमकर रखा है।"

क्रान्तिकारी—"कुत्ते तुम हो, तुमने हमारी नाक में दम किया हुआ है।" (इतने में दो-तीन कोड़े लगने की आवाज के साथ क्रान्तिकारी के कराहने की आवाज आती है)
(तरुण सटपटा जाता है।)

पुलिस अफसर—"बोलो, बताओगे या नहीं।

क्रान्तिकारी—"लो, ये लो वे सब इश्तिहार और मुझे छोड़ दो, मुझे पुलिस स्टेशन मत ले चलो।"
(तरुण तड़पकर जेब से एक कागज निकालता है और इस कागज व मुट्ठी में के पैसों की तरफ देखता है और बेहताश भाग जाता है।)

तीसरा दृश्य

(सेठ अपने हाथ में कफन का कपड़ा लिए चौराहे पर आता है और इधर-उधर तरुण की तलाश में नजरें दौड़ाता है, इतने में एक अन्य व्यक्ति आकर पूछता है—"सेठ जी आज इतना सुबह दुकान से कैसे आरहे हो ? क्या बात है ?")

सेठ—"अरे भई बात तो कुछ भी नहीं। बाजार आया था सब्जी खरीदने एक क्रान्तिकारी मिल गया उसे कफन चाहिये था सो दुकान से लेकर आया हूँ। उसे यहां पर छोड़ गया था, अब वह यहां नहीं मिला, उसे ही देख रहा था।"

अन्य व्यक्ति—"क्रान्तिकारी और कफन खरीदने के लिए ?'

सेठ—"हां कोई साथी मर गया होगा और क्या ? यूं ही हमें आकर तंग क... ...

अन्य व्यक्ति—"चलो नहीं मिलता तो कोई बात नहीं, पैसे तुम्हें मिल ही गये होंगे।"

सेठ—"कैसे पैसे ? पैसे तो अब लेता, वो मिला ही नहीं कपड़ा भी यूँ ही फाड़कर लाया।"

अन्य व्यक्ति—"ऐसे पैसे तो पहले ही ले लिया करो, फिर मिले या न मिले तुम्हें क्या ? तुम्हारे पैसे तो पूरे हो ही जायें। कहीं कोई पुलिस का आदमी दीख पड़ा होगा और बस वह भाग निकला होगा। इन क्रान्तिकारियों का इतना ही ठिकाना होता है।"

चौथा दृश्य

(तरुण एक प्रिन्टिंग प्रेस में पहुँचता है)

प्रेस मालिक—"आओ तरुण, कैसे आये ?"

तरुण—"आया क्या ? ये लो पैसे। जरा जल्दी से कागज मंगाकर ये इश्तिहार छाप दो। छपाई फिर दे जाऊँगा।"

प्रेस मालिक—"क्यों, क्या हुआ ?"

तरुण—"हुआ क्या ? हम दो साथी इस शहर में इश्तिहार लेकर आये थे, जो सारे के सारे दूसरे साथी के पास थे, वह पुलिस के हाथों पकड़ा गया और पिटाई के डर से सारे इश्तिहार पुलिस के हवाले कर दिये। आप जरा जल्दी कर दीजिए। मुझे ये इश्तिहार बांट कर जल्दी ही पार्टी को जाकर खबर देनी है, वरना बहुत गड़बड़ हो जायेगी।"
(मानो तरुण का दिल पुकार उठता है—"गुलाम मुल्क में तो आजादी की लड़ाई लड़ने वालों की औलादों की लासें बिना कफन ही जला करती हैं। कफन तो आजादी के बाद ही मिला करेगा, बेटे अमर"—इलाही वो भी दिन होगा जब अपना राज देखेंगे। जब अपनी ही जमी होगी और अपना अस्मां होगा।)

——परन्तु क्या देश के शहीदों के ये अरमान पूरे हुये हैं ? आज भी कितने ही ... दूसरे नगे बदन और कित... ...हर एक रात का तोरगी में पटरियों के आलिंगन में आश्रय पाते हैं, कितने ही बच्चे एवम नवयुवक अशिक्षित रहते हैं, कितने ही व्याधिग्रस्त शरीर चिकित्सा अभाव से दम तोड़ते हैं, आज भी कितनी ही लासें बिना कफन जलती हैं। क्या आज ये जमीन अपनी है ? ये आस्मां अपना हुआ है ? क्या वे गीत सच्चे हो पाये हैं जिनको गाते हुये देश के शहीद बलिदान देते रहे ? क्या यह वही राज है जिसकी कल्पना वे बलिदान देने वाले करते रहे थे ?———आज हर नवयुवक को सोचने के लिये विवश होना पड़ेगा। ★

यह अंक आपको कैसा लगा ?

राजधर्म के सुविज्ञ पाठकों से प्रार्थना है कि इस अंक के लेखों एवं सम्पादकीय पर अपनी समालोचना अवश्य भेजने की कृपा करें जिससे आपकी रुचि जानकर तथा आपके सुझाव मान कर हम उत्तरोत्तर राजधर्म को एक व्यापक शक्तिशाली पत्रिका बना सकें। आपके इस सहयोग के लिए हम आपके विशेष आभारी होंगे। —व्यवस्थापक

योग, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक छः विचारधाराओं को मिला कर एक दूसरे की सहयोगी व्याख्या करके ऐतिहासिक कार्य किया और त्रैतवाद की पुष्टि की। आज भी संसार के विद्वानों में इन दार्शनिक बातों पर मतभेद है। ईश्वर की सत्ता को मानने वाले पाश्चात्य विद्वान अधिकतर अद्वैतवाद को मानने वाले हैं किन्तु आधुनिक वैचारकों व दार्शनिकों जैसे अरविन्द, डा० राधाकृष्ण, रोम्या रोला आदि ने स्वामी जी द्वारा समर्थित त्रैतवाद को माना है। इसके साथ ही वेदों की एक ईश्वरवाद के आधार पर स्वामी जी द्वारा की गई व्याख्या को ऐतिहासिक बताया गया है। आज के वैज्ञानिक युग में स्वामी जी की दार्शनिक विचारधारा को सबसे बड़ी चुनौती भौतिकवाद व डार्विन की विकासवाद की थियोरी से मिली है। चारवाक की भांति आज भी विश्व में बहुत लोग ईश्वर की सत्ता ही स्वीकार नहीं करते किन्तु इन भौतिक-वादियों के पास संसार की तर्कसंगत व्याख्या नहीं है और उनके मत से स्वामी जी के ईश्वर दर्शन पर कोई आंच नहीं आती और उसकी उपयोगिता आस्तिकों के लिए ज्यों की त्यों है। अब जहां तक डार्विन के विकास-सिद्धांत की बात है तो इस सिद्धान्त के अनुसार Matter से Mind अर्थात जड़ से चेतन का विकास अर्थात् जड़ से चेतन की उत्पत्ति मानी गई है जिसके परिणाम स्वरूप जड़ और चेतन में कोई [illegible] रहा जो कि एक अमान्य बात है। इस विकास (सकान्त [illegible] प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. वैलस द्वारा किया गया है। [illegible] के सिद्धांत से ससार की व्याख्या करना असम्भव है। अभी अभी प्रसिद्ध वैज्ञानिक Eric P. Poltan द्वारा लिखी गई पुस्तक Critique of the Psychophysical entity में निष्कर्ष दिया है कि हमें जड़ और चेतन की दो स्वतन्त्र सत्तायें माननी पड़ेगी। इतना ही क्यों प्रसिद्ध वैज्ञानिक आईनस्टीन का सापेक्षता का सिद्धांत जिसके अनुसार संसार की सापेक्षता दिक्-काल (Space-time continum) की अपेक्षा की जाती है और Space time continum को निरपेक्ष माना गया है, स्वामी जी की सृष्टि उत्पत्ति के सिद्धांत का अनुमोदन करता है। इसके अनुसार जिस प्रकार चार विमावों (Four dimensional space time) वाले आकाश को हम नहीं समझ सकते और और न देख सकते। इसी प्रकार सृष्टि के आरम्भ में आविर्भूत युवा स्त्री-पुरुष का अस्तित्व तीन विभावों से अधिक विभावों में हम नहीं समझ सकते। सापेक्षता का सिद्धांत तीन विभावों (Dimensions) से अधिक विभावों में रह रहे जीव का अस्तित्व स्वीकार करता है जिसको हम तभी देख सकते हैं जब वह जीव देह धारण कर तीन विभावों वाले आकाश (Space) में आ जाता है। सिद्धांत के साथ साथ आज की (Parapsychology) द्वारा इकट्ठे किए गए प्रमाण व प्रयोग जिनके अनुसार जीता-जागता मनुष्य अदृश्य हो सकता है और फिर प्रकट हो सकता है तो स्वामी जी का यह सिद्धांत कि मनुष्य सृष्टि के आदि में युवा उत्पन्न हुआ, कैसे झूठा हो सकता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि ज्यों ज्यों विज्ञान का विकास हो रहा है स्वामी जी के सिद्धांतों की पुष्टि होती जा रही है। दूसरे यदि कोई वैज्ञानिक सिद्धांत स्वामी जी के सिद्धांत से टकराव भी खाता है तो उसके मुकाबले में विज्ञान की अपेक्षा दयानन्द की बात ज्यादा मान्य है। दर्शन के क्षेत्र में बुद्धि के मुकाबले में अनुभूति ज्यादा वजन रखती है, दूसरे बौद्धिक रास्ते (Intellectual approach) से अनुभूति का रास्ता (Intuitional approach) ज्यादा मान्य है और इसका प्रमाण यह है कि संसार के महापुरुषों Mysties के अनुभवों में कहीं विरोधाभास नहीं है जबकि विज्ञान के सिद्धांत Scientific theory बराबर बदल रही हैं। सो आज के युग में स्वामी जी के धार्मिक व दार्शनिक सिद्धांतों की पहले की अपेक्षा दुगुनी उपयोगिता है।

भौतिकवाद से असन्तुष्ट मानव समाज आज फिर आध्यात्म की शरण में आ रहा है। ऐसी परिस्थिति में उस परम शान्ति को प्राप्त करने के साधन 'योग' के बारे में आकर्षण स्वाभाविक है। योग के बारे में आज तरह तरह के भ्रम व ढोंग चल रहे हैं। कहीं हिप्पीवाद पनपा तो कहीं भोग में योग पनपा, कहीं आनन्द मार्ग तो कहीं बाल भगवान बालयोगेश्वर संसार का कल्या[illegible] रहे हैं तो कहीं महेश योगी पाश्च[illegible] हैं तो कहीं साईं बाबा भभूत बांट रहे है, कहीं ब्रह्म कुमारी ईश्वर दर्शन करा रही हैं तो कहीं हरे राम-हरे कृष्ण का कीर्तन हो रहा है। पाश्चात्य में तो थोड़े से शारीरिक व्यायाम को ही योग मान लिया है। आज मानव जितना अशान्त है उतना ही शांति के मार्ग में भटका हुआ भी है। जितना धर्म के नाम पर ढोंग होता है उससे कहीं बढ़कर आज योग के ऊपर ढोंग पनप रहा है। ऐसे भयानक समय में उस सरल हृदय योगी दयानन्द के सीधे स्पष्ट व व्यवहारिक योग मार्ग की बेहद आवश्यकता है। दयानन्द ने कोई नया योग मार्ग न देकर वही सनातन, वैज्ञानिक, प्राकृतिक महर्षि पातजलि द्वारा प्रतिपादित अष्टांग योग का अनुकरण करने को कहा जो केवल मात्र आज के अशान्त जीवन को शांति दिला सकता है।

आज संसार की अशांति व संघर्ष और विशेष कर भारत के पिछड़ेपन का महत्वपूर्ण कारण वर्तमान एकांगी शिक्षा पद्धित भी है। आज शिक्षा का उद्देश्य केवल अक्षर ज्ञान, भौतिक साधन जुटाना तथा भारत में और विदेशों में भौतिकजगत के बारे में जान लेना मात्र है। मानव जीवन का

क्रान्तिकारी—"कुत्ते तुम हो, तुमने हमारी नाक में दम किया हुग्रा है।" (इतने में दो-तीन कोड़े लगने की ग्रावाज के साथ क्रान्तिकारी के कराहने की ग्रावाज ग्राती है) (तरुण सटपटा जाता है।)

पुलिस ग्रफसर—"बोलो, बताग्रोगे या नहीं।

क्रान्तिकारी—"लो, ये लो वे सब इश्तिहार ग्रौर मुझे छोड़ दो, मुझे पुलिस स्टेशन मत ले चलो।"

(तरुण तड़पकर जेब से एक कागज निकालता है ग्रौर इस कागज व मुट्ठी में के पैसों की तरफ देखता है ग्रौर बेहताश भाग जाता है।)

तीसरा दृश्य

(सेठ ग्रपने हाथ में कफन का कपड़ा लिए चौराहे पर ग्राता है ग्रौर इधर-उधर तरुण की तलाश में नजरें दौड़ाता है, इतने में एक ग्रन्य व्यक्ति ग्राकर पूछता है—"सेठ जी ग्राज इतना सुबह दुकान से कैसे ग्रारहे हो? क्या बात है?")

सेठ—"ग्ररे भई बात तो कुछ भी नहीं। बाजार ग्राया था सब्जी खरीदने एक क्रान्तिकारी मिल गया उसे कफन चाहिये था सो दुकान से लेकर ग्राया हूँ। उसे यहां पर छोड़ गया था, ग्रब वह यहां नहीं मिला, उसे ही देख रहा था।"

ग्रन्य व्यक्ति—"क्रान्तिकारी ग्रौर कफन खरीदने के लिए?'

सेठ—"हां कोई साथी मर गया होगा ग्रौर क्या? यूं ही हमें ग्राकर तंग क[illegible] [illegible]"

ग्रन्य व्यक्ति—"चलो नहीं मिलता तो कोई बात नहीं, पैसे तुम्हें मिल ही गये होंगे।"

सेठ—"कैसे पैसे? पैसे तो ग्रब लेता, वो मिला ही नहीं कपड़ा भी यूँ ही फाड़कर लाया।"

ग्रन्य व्यक्ति—"ऐसे पैसे तो पहले ही ले लिया करो, फिर मिले या न मिले तुम्हें क्या? तुम्हारे पैसे तो पूरे हो ही जायें। कहीं कोई पुलिस का ग्रादमी दीख पड़ा होगा ग्रौर बस वह भाग निकला होगा। इन क्रान्तिकारियों का इतना ही ठकाना होता है।"

चौथा दृश्य

(तरुण एक प्रिन्टिंग प्रेस में पहुँचता है)

प्रेस मालिक—"ग्राग्रो तरुण, कैसे ग्राये?"

तरुण—"ग्राया क्या? ये लो पैसे। जरा जल्दी से कागज मंगाकर ये इश्तिहार छाप दो। छपाई फिर दे जाऊँगा।"

प्रेस मालिक—"क्यों, क्या हुग्रा?"

तरुण—"हुग्रा क्या? हम दो साथी इस शहर में इश्तिहार लेकर ग्राये थे, जो सारे के सारे दूसरे साथी के पास थे, वह पुलिस के हाथों पकड़ा गया ग्रौर पिटाई के डर से सारे इश्तिहार पुलिस के हवाले कर दिये। ग्राप जरा जल्दी कर दीजिए। मुझे ये इश्तिहार बांट कर जल्दी ही पार्टी को जाकर खबर देनी है, वरना बहुत गड़बड़ हो जायेगी।"

(मानो तरुण का दिल पुकार उठता है—"गुलाम मुल्क में तो ग्राजादी की लड़ाई लड़ने वालों की ग्रौलादों की लासें बिना कफन ही जला करती हैं। कफन तो ग्राजादी के बाद ही मिला करेगा, बेटे ग्रमर"—इलाही वो भी दिन होगा जब ग्रपना राज देखेंगे। जब ग्रपनी ही जमी होगी ग्रौर ग्रपना ग्रस्मां होगा।)

——परन्तु क्या देश के शहीदों के ये ग्ररमान पूरे हुये हैं? ग्राज भी कितने ही [illegible] दूसरे नंगे बदन ग्रौर कित[illegible] हर एक रात का तोरगी में पटरियों के ग्रालिंगन में ग्राश्रय पाते हैं, कितने ही बच्चे एवम नवयुवक ग्रशिक्षित रहते हैं, कितने ही व्याधिग्रस्त शरीर चिकित्सा ग्रभाव से दम तोड़ते हैं, ग्राज भी कितनी ही लासें बिना कफन जलती हैं। क्या ग्राज ये जमीन ग्रपनी है? ये ग्रास्मां ग्रपना हुग्रा है? क्या वे गीत सच्चे हो पये हैं जिनको गाते हुये देश के शहीद बलिदान देते रहे? क्या यह वही राज है जिसकी कल्पना वे बलिदान देने वाले करते रहे थे?———ग्राज हर नवयुवक को सोचने के लिये विवश होना पड़ेगा। ★

यह अंक आपको कैसा लगा?

राजध' के सुविज्ञ पाठकों से प्रार्थना है कि इस ग्रंक के लेखों एवं सम्पादकीय पर ग्रपनी समालोचना ग्रवश्य भेजने कृपा करें जिससे ग्रापकी रुचि जानकर तथा ग्रापके सुझाव मान कर हम उत्तरोत्तर राजधर्म को एक व्यापक शक्तिशाली पत्रिका बना सकें। ग्रापके इस सहयोग के लिए हम ग्रापके विशेष ग्राभारी होंगे।

—व्यवस्थापक

योग, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक छः विचारधाराओं को मिला कर एक दूसरे की सहयोगी व्याख्या करके ऐतिहासिक कार्य किया और त्रैतवाद की पुष्टि की। आज भी संसार के विद्वानों में इन दार्शनिक बातों पर मतभेद है। ईश्वर की सत्ता को मानने वाले पाश्चात्य विद्वान अधिकतर अद्वैतवाद को मानने वाले हैं किन्तु आधुनिक वैचारकों व दार्शनिकों जैसे अरविन्द, डा० राधाकृष्ण, रोम्या रोला आदि ने स्वामी जी द्वारा समर्थित त्रैतवाद को माना है। इसके साथ ही वेदों की एक ईश्वरवाद के आधार पर स्वामी जी द्वारा की गई व्याख्या को ऐतिहासिक बताया गया है। आज के वैज्ञानिक युग में स्वामी जी की दार्शनिक विचारधारा को सबसे बड़ी चुनौती भौतिकवाद व डार्विन की विकासवाद की थियोरी से मिली है। चारवाक की भांति आज भी विश्व में बहुत लोग ईश्वर की सत्ता ही स्वीकार नहीं करते किन्तु इन भौतिकवादियों के पास संसार की तर्कसंगत व्याख्या नहीं है और उनके मत से स्वामी जी के ईश्वर दर्शन पर कोई आंच नहीं आती और उसकी उपयोगिता आस्तिकों के लिए ज्यों की त्यों है। अब जहां तक डार्विन के विकास-सिद्धांत की बात है तो इस सिद्धान्त के अनुसार Matter से Mind अर्थात जड़ से चेतन का विकास अर्थात् जड़ से चेतन की उत्पत्ति मानी गई है जिसके परिणाम स्वरूप जड़ और चेतन में कोई [illegible] ही नहीं रहा जो कि एक अमान्य बात है। इस विकास (मकान [illegible]) [illegible] का खण्डन उस[illegible] के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. वैलस द्वारा किया गया है। डार्विन के सिद्धांत से ससार की व्याख्या करना असम्भव है। अभी अभी प्रसिद्ध वैज्ञानिक Eric P. Poltan द्वारा लिखी गई पुस्तक Critique of the Psychophysical entity में निष्कर्ष दिया है कि हमें जड़ और चेतन की दो स्वतन्त्र सत्तायें माननी पड़ेगी। इतना ही क्यों प्रसिद्ध वैज्ञानिक आईनस्टीन का सापेक्षता का सिद्धांत जिसके अनुसार संसार की सापेक्षता दिक्-काल (Space-time continum) की अपेक्षा की जाती है और Space time continum को निरपेक्ष माना गया है, स्वामी जी की सृष्टि उत्पत्ति के सिद्धांत का अनुमोदन करता है। इसके अनुसार जिस प्रकार चार विमावों (Four dimensional space time) वाले आकाश को हम नहीं समझ सकते और और न देख सकते। इसी प्रकार सृष्टि के आरम्भ में आविर्भूत युवा स्त्री-पुरुष का अस्तित्व तीन विभावों से अधिक विभावों में हम नहीं समझ सकते। सापेक्षता का सिद्धांत तीन विभावों (Dimensions) से अधिक विभावों में रह रहे जीव का अस्तित्व स्वीकार करता है जिसको हम तभी देख सकते हैं जब वह जीव देह धारण कर तीन विभावों वाले आकाश (Space) में आ जाता है। सिद्धांत के साथ साथ आज की (Parapsychology) द्वारा इकट्ठे किए गए प्रमाण व प्रयोग जिनके अनुसार जीता-जागता मनुष्य अदृश्य हो सकता है और फिर प्रकट हो सकता है तो स्वामी जी का यह सिद्धांत कि मनुष्य सृष्टि के आदि में युवा उत्पन्न हुआ, कैसे झूठा हो सकता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि ज्यों ज्यों विज्ञान का विकास हो रहा है स्वामी जी के सिद्धांतों की पुष्टि होती जा रही है। दूसरे यदि कोई वैज्ञानिक सिद्धांत स्वामी जी के सिद्धांत से टकराव भी खाता है तो उसके मुकाबले में विज्ञान की अपेक्षा दयानन्द की बात ज्यादा मान्य है। दर्शन के क्षेत्र में बुद्धि के मुकाबले में अनुभूति ज्यादा वजन रखती है, दूसरे बौद्धिक रास्ते (Intellectual approach) से अनुभूति का रास्ता (Intuitional approach) ज्यादा मान्य है और इसका प्रमाण यह है कि संसार के महापुरुषों Mysties के अनुभवों में कहीं विरोधाभास नहीं है जबकि विज्ञान के सिद्धांत Scientific theory बराबर बदल रही हैं। सो आज के युग में स्वामी जी के धार्मिक व दार्शनिक सिद्धांतों की पहले की अपेक्षा दुगुनी उपयोगिता है।

भौतिकवाद से असन्तुष्ट मानव समाज आज फिर आध्यात्म की शरण में आ रहा है। ऐसी परिस्थिति में उस परम शान्ति को प्राप्त करने के साधन 'योग' के बारे में आकर्षण स्वाभाविक है। योग के बारे में आज तरह तरह के भ्रम व ढोंग चल रहे हैं। कहीं हिप्पीवाद पनपा तो कहीं भोग में योग पनपा, कहीं आनन्द मार्ग तो कहीं बाल भगवान बालयोगेश्वर संसार का कल्या[illegible] रहे हैं तो कहीं महेश योगी पाश्च[illegible] हैं तो कहीं साईं बाबा भभूत बांट रहे है, कहीं ब्रह्म कुमारी ईश्वर दर्शन करा रही हैं तो कहीं हरे राम-हरे कृष्ण का कीर्तन हो रहा है। पाश्चात्य में तो थोड़े से शारीरिक व्यायाम को ही योग मान लिया है। आज मानव जितना अशान्त है उतना ही शांति के मार्ग में भटका हुआ भी है। जितना धर्म के नाम पर ढोंग होता है उससे कहीं बढ़कर आज योग के ऊपर ढोंग पनप रहा है। ऐसे भयानक समय में उस सरल हृदय योगी दयानन्द के सीधे स्पष्ट व व्यवहारिक योग मार्ग की बेहद आवश्यकता है। दयानन्द ने कोई नया योग मार्ग न देकर वही सनातन, वैज्ञानिक, प्राकृतिक महर्षि पातजलि द्वारा प्रतिपादित अष्टांग योग का अनुकरण करने को कहा जो केवल मात्र आज के अशान्त जीवन को शांति दिला सकता है।

आज संसार की अशांति व संघर्ष और विशेष कर भारत के पिछड़ेपन का महत्वपूर्ण कारण वर्तमान एकांगी शिक्षा पद्धित भी है। आज शिक्षा का उद्देश्य केवल अक्षर ज्ञान, भौतिक साधन जुटाना तथा भारत में और विदेशों में भौतिकजगत के बारे में जान लेना मात्र है। मानव जीवन का

आधुनिक जीवन के संदर्भ में स्वामी दयानन्द की उपादेयता

० भूपसिंह आर्य

ससार के इतिहास में महर्षि दयानन्द उन गिने-चुने व्यक्तियों में से एक हैं जो हर पहलू की दृष्टि से पूर्ण थे। महर्षि जी का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है चाहे वह धार्मिक है, सामाजिक है या राजनैतिक है। हम पहले उनकी धार्मिक जीवन में की गई क्रान्ति का चित्र देखते हैं। जिस समय स्वामी दयानन्द हाथ में पाखण्ड खण्डनी पताका लेकर देश के धार्मिक जीवन को आन्दोलित करने मैदान में उतरे थे उस वक्त देश में धर्म के नाम पर पाखण्ड, भ्रष्टाचार, दुराचार, अन्याय व लूट-खसोट फली हुई थी। रूढ़िवादिता, अन्धविश्वास, ऊँच-नीच जाति-पाति, का भेद-भाव, व सामाजिक जीवन में दुर्व्यवस्था बुरी तरह घर किए हुए थे। मनुष्य-मनुष्य के बीच मत-मतान्तरों की दीवार खड़ी हुई थी, साधारण लोगों का धर्म के नाम पर शोषण होता था, विशेषकर जन साधारण को धार्मिक क्षेत्र में उन्नति का अधिकार नहीं था, पोंगा-पंथी गुरुडम और ढोंग के सहारे चरित्रहीनता व आलस्य बढ़ रहा था, स्वार्थ पूर्ति के लिए सत्य सनातन वेद शास्त्र आदि धार्मिक व विद्या ग्रन्थों के मूर्खतापूर्ण व गलत अर्थ लगाये जाते थे और सबसे बढ़कर धार्मिक, अन्धविश्वास व मत-मतान्तरों के कारण राष्ट्र की एकता विखर रही थी और देश गुलामी के शिकंजे में जकड़ा हुआ था। उस समय जिस [illegible] के साथ वैज्ञानिक व सार्वभौमिक सनातन वैदिक धर्म का डंका उन्होंने बजाया था, वह अद्वितीय था। सभी मत मतान्तरों की निराधार बातों का खण्डन करते हुए सत्यासत्य की विद्वतापूर्ण व्याख्या करते हुए वैदिक धर्म का प्रतिपादन किया था। अब प्रश्न उठता है, कि क्या आज के युग में भी स्वामी दयानन्द द्वारा कहे गए धर्म व सिद्धान्तों का उपयोग है? क्या ये बातें आज भी औचित्य रखती हैं? इसके उत्तर में पहली बात तो यह है कि स्वामी दयानन्द ने किसी ऐसे सिद्धान्त या धर्म का प्रचार नहीं किया था जो देश या काल से सीमित हो और प्राकृतिक या वैज्ञानिक न हो। दूसरे जहां तक परिस्थितियों का प्रश्न है वहां आज भी संसार में और विशेषकर भारत में मत-मतान्तरों व अन्धविश्वासों का बोलबाला कम नहीं है। आज भी जाति संघर्ष, साम्प्रदायिकता, धार्मिक शोषण व धर्म की आड़ में आर्थिक शोषण, ढोंग और पोंगा पंथी की भरमार है। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर धर्म व जाति संघर्ष ज्यों का त्यों दृष्टिगोचर हो रहा है। आज भी मतों के आधार पर लोगों को बांट कर, लड़ा कर, प्रेम भावना को नष्ट करके राष्ट्रीय एकता में बराबर खतरा पैदा किया जा रहा है। यदि दयानन्द के समय में धार्मिक अन्धविश्वास था तो आज धार्मिक अन्धविश्वास के साथ साथ वैज्ञानिक अन्धविश्वास ने मानव को पागल बना रखा है और किसी राष्ट्र की तो बात क्या सारी मानवता के सिर पर धागे से बंधी तलवार लटक रही है। मानव जीवन में असंतोष चरम सीमा तक पहुंच चुका है। जीवन के प्रति भौतिकवादी दृष्टिकोण ने मानव को पशु के स्तर पर लाकर छोड़ दिया है। ऐसे समय में किसी राष्ट्र क्या, सारी मानव जाति की प्रगति को ठीक दिशा देने और उसके जीवन में शान्ति स्थापित करने के लिए फिर किसी दयानन्द की आवश्यकता है और उसके द्वारा प्रतिपादित सार्वभौमिक, वैज्ञानिक वैदिक धर्म ही आधुनिक जीवन की समस्या का हल हो सकता है अन्यथा नहीं। विज्ञान ने दूरी को खत्म करके संसार को परिवार का रूप दे दिया है, इस दृष्टिकोण से भी आज कोई मत विशेष किसी राष्ट्र या राष्ट्रों का जीवन दर्शन न बन कर सार्वभौमिक वैदिक धम ही एक विकल्प है जो संसार के सामने रह जाता है। सो आज महर्षि द्वारा समर्थित धार्मिक सिद्धान्तों की सख्त आवश्यकता है और उनकी उपयोगिता है।

अब हम महर्षि के दार्शनिक सिद्धान्तों का आधुनिक जीवन की पृष्ठ भूमि में औचित्य देखते हैं। संसार में और विशेषकर भारत में दयानन्द से पहले भी विभिन्न दार्शनिक विचार धारायें थी। शंकराचार्य ने अद्वैतवाद को ब्रह्म, माया और माया से ढका ब्रह्म मान कर माना। माया सत् भी है और असत् भी आदि काल से है किन्तु अनन्त नहीं, आदि तर्क विरुद्ध तर्कों का उपयोग किया। किन्तु चाहे कुछ भी हो उनके अद्वैतवाद में भी प्रत्यक्ष या परोक्ष तीन आदि सत्ताओं ब्रह्म, माया व माया से आच्छादित ब्रह्म को माना गया है और तभी वे संसार की व्याख्या कर पाते हैं। इसी प्रकार रामानुजाचार्य के विशिष्ट अद्वैतवाद में भी माया व जीव को ईश्वर में निहित मान, तीन सत्ताओं को माना गया है। आगे चलकर वल्लभाचार्य व निम्बाकाचार्य के द्वैतवाद में भी घुमा फिरा कर तीन आदि शक्तियों को मानकर ही संसार की व्याख्या की गई है। जबकि महर्षि ने सिधा त्रैतावाद को बिना किसी लाग लपेट के ईश्वर, जीव व प्रकृति की अनादि व अनन्त सत्ता मान कर वेदों का भाष्य किया और जन साधारण में सहज ढग से इस गूढ़ दर्शन का प्रचार किया। इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण दार्शनिक कार्य महर्षि का वेदान्त, सांख्य,

महत्वपूर्ण पहलू जिसमें आत्मिक व मानसिक विकास होता है, पूरी तरह उपेक्षित कर दिया गया है जिसका दुष्परिणाम मर्यादाहीन जीवन, अशांति, भ्रम, असुरक्षा, शोषण और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भयानक संघर्ष निकला है। आज समुचित वैज्ञानिक उन्नति होने पर भी जीवन दुखी ही नहीं वरन् मानवता का अस्तित्व भी खतरे में पड़ा हुआ है। इसका बहुत बड़ा श्रेय फ्रायड व माकीनर्स आदि को जाता है। इन विद्वानों ने जीवन के एक पहलू को जरूरत से ज्यादा महत्व देकर जीवन को एकांगी बना दिया। आज फिर हमें उस देव दयानन्द की शिक्षा प्रणाली जिसमें मानव के समुचित (शारीरिक, आत्मिक, मानसिक व सामाजिक) विकास का लक्ष्य रखा गया है की सख्त आवश्यकता है। आज की वैज्ञानिक उन्नति का ठीक दिशा में लाभ तभी हो सकता है जबकि शिक्षा का उद्देश्य भोगवाद से हट कर त्यागवाद की ओर हो। मनुष्य को पशु बनने से रोकने के लिए दयानन्द की शिक्षा प्रणाली रामबाण का काम कर सकती है।

दयानन्द की उपादेयता सामाजिक जीवन के संदर्भ में भी अद्वितीय है। यह दयानन्द की ही शिक्षा की करामात है जिसके कारण संसार और विशेषकर भारत में नारी का स्थान पुरुष के समान है। जाति पाँति, भेद-भाव, ऊँच नीच, शोषण, अन्याय, बाल-विवाह, व दूसरी सामाजिक कुरीतियों की घातक दयानन्द की शिक्षा का उपयोग तो हर समय व हर समाज में रहता ही है किन्तु इसके साथ-साथ विधवा विवाह, एक पत्नि विधान, अन्तर्जातीय विवाह, नियोग विधान आदि का आज विशेष उपयोग हो सकता है। इन सब बातों के अतिरिक्त सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य ऋषि द्वारा फिर से वर्ण-व्यवस्था को लागू करने का प्रयत्न था जिसकी आधुनिक जीवन में विशेष आवश्यकता है। दयानन्द द्वारा समर्थित वर्ण-व्यवस्था का आधार इतना वैज्ञानिक व प्राकृतिक है कि इसकी उपयोगिता देश और काल से परे है। आज समाज के जीवन में जिसको जैसा स्थान मिलना चाहिए वह प्राप्त न होने के कारण सारा सामाजिक ढांचा अस्त-व्यस्त है जिसका एक मात्र समाधान वर्णाश्रम-व्यवस्था हो सकती है।

आज दयानन्द की शिक्षाओं का उपयोग धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक व शिक्षा क्षेत्र में ही नहीं वरन् राजनैतिक क्षेत्र में भी एक बिल्लाती आवश्यकता है। ऋषि की राजनीति में वही व्यक्ति भाग ले सकता है जो जितेन्द्रिय, विद्वान, निःस्वार्थ व त्यागी पुरुष हो। जब उनकी शर्तों के अनुसार हम किसी को शासक बनाते हैं तो सभी वादों का अन्त हो जाता है। शोषण, भ्रष्टाचार अन्याय व असुरक्षा की चिन्ता खत्म हो जाती है। राजनीति का रूप एक धर्म का रूप बन जाता है। आज भ्रष्टाचार बेईमानी, घूसखोरी, अन्याय, शोषण, गुन्डागर्दी को राजनीति माना जाता है। राजनीति की इस परिभाषा को बदलने के लिए जीवन का धन के आधार पर मापदण्ड रोकने के लिए, सबको विकास का अवसर प्रदान करने के लिए, और सबको उन्नति के साधन देने के लिए दयानन्द द्वारा स्थापित राजनीति के अतिरिक्त कोई समाधान नहीं है।

ऋषि दयानानन्द ने दण्ड विधान व प्रशासन की शिक्षा मनु महाराज के अनुसार बताई, जिसकी महान् विशेषता यह है कि जो व्यक्ति जितना बड़ा हो अर्थात् जितना ज्यादा जिम्मेवार हो उसको अपराध करने पर उतना ही अधिक दण्ड दिया जाये। आज बिलकुल इसका उल्टा हो रहा है, जो जितना बड़ा है उसको दण्ड उतना ही न्यून दिया जाता है। बिडम्बना यह है कि अपराध करने से पहले दुनियाँ भर के भेद-भाव और अपराध करने के बाद सब एक समान। आज के दण्ड विधान में यही एक भयंकर भूल है जो सब अन्याय भ्रष्टाचार व शोषण को जन्म देती है। यदि हम दण्ड विधान में ऋषि का मूल मन्त्र अपना लेते हैं तो अन्याय का खात्मा हो सकता है। ऋषि एक कुशल राजनीतिज्ञ थे और यदि हम आज भी उनकी राजनीति पर चलें तो मानवता का निश्चित रूप से कल्याण हो सकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ऋषि दयानन्द की आधुनिक जीवन के संदर्भ में प्रत्येक पहलू से एक महत्वपूर्ण उपयोगिता है और यदि हम आज उनकी शिक्षाओं पर चलें तो धरती पर स्वर्ग उतर आवे।

वैदिक समाजवाद और प्रतिक्रियायें

प्रिय अग्निवेश जी,

"वैदिक समाजवाद" की प्रति मिली। आपने बड़े साहस के साथ प्रमाण देकर समाजवादी सिद्धांत के अनेक अंशों का आविष्कार वेदों में किया है। इस प्रकार आपने अपनी आग वहां फैला दी, जहां जड़ता और जाड़ा था। पर क्या स्थिर स्वार्थ वाले आपको अपने गढ़ में जमने देंगे? विवेकानन्द ने एक प्रयास किया था। हमारे दादा शचीन्द्रनाथ सान्याल भी आपके मत के इर्द-गिर्द थे। अफसोस है कि 'बन्दी जीवन' के सिवा उनकी गंभीर कृतियाँ Out of print हैं।

मैं आपकी सर्वश: सफलता चाहता हूं यद्यपि मैं पक्का नास्तिक हूँ। कृपा

मन्मथनाथ गुप्त

प्रिय स्वामी अग्निवेश जी,

आपने मेरे पास अपनी विशेष कृति "वैदिक समाजवाद" भेजी है, इसके लिए मैं आप का अत्यन्त आभारी हूँ।

आज जबकि भारतीय संस्कृति के प्रगतिशील समाजव[illegible]न्तों का उद्घाटन एवं प्रस्तुतीकरण [illegible] वर्तमान सामाजिक अवस्था के लिए अत्यन्त अनिवार्य है, उस समय विज्ञान सम्मत वैदिक सिद्धान्तों के अनुकूल "वैदिक समाजवाद" पुस्तक का प्रकाशन आज की विषम स्थिति में एक महत्वपूर्ण योगदान है।

विनीत

विजय कुमार सिन्हा, लेखक एवं पत्रकार

I.J. 31 Errammanzil Colony
Hyderabad-4(A.P.)

पुस्तक का नाम—वैदिक समाजवाद
पृष्ठ संख्या—८८ (अठासी)
प्रथम संस्करण—५००० प्रतिलिपि
प्रकाशक—राजधर्म प्रकाशन, रोहतक
मूल्य—१)५० (डेढ़ रुपया)
लेखक—स्वामी अग्निवेश (यथा नाम तथा गुण)

आजकल, ऐरे-गैरे, नत्थू खैरे, सभी समाजवाद की तानें तोड़ रहे हैं। इसलिए सब ओर समाजवाद का बोलबाला है। पुस्तकों की बाढ़ सी आ गई है। लेकिन अधिकतर पुस्तकों में यूरोपीय समाजवाद का पोस्टमार्टम ही मिलेगा। मौलिक सुझाव नहीं पेशावर लेखकों की इन पुस्तकों का लक्ष्य राज व समाज की व्यवस्था देना नहीं है। जनता को गुमराह करके धन कमाना या रूस, चीन या पूंजी-पतियों की दलाली करना है। देश के ऐसे दूषित वातावरण में स्वामी अग्निवेश जी की प्रस्तुत पुस्तक "वैदिक समाज-वाद" एक मौलिक रचना है। लेखक ने उचित समय पर, पीड़ित मानवता का पथ-प्रदर्शन तो किया ही है, लक्ष्य प्राप्ति के लिए ठोस प्रोग्राम व सुझाव भी दिये हैं।

पुस्तक का मुख पृष्ठ क्रान्ति प्रतीक' रक्त वर्ण का है। बीचों बीच 'स्वस्तिक चिन्ह' ने और अधिक आकर्षक बना दिया है। सुरुचिपूर्ण छपाई व जिल्द के कारण गेटअप दर्श-नीय है। छापे खाने की अशुद्धियां नगण्य हैं। पुस्तक सर्वथा पठनीय व अनुकर-णीय है।

लेखक की लेखन शैली, सरल, सुगम व सुलझी हुई, होते हुए भी शब्दा वलि 'अग्निवेष्टित' है। मुर्दों में भी जान डालने वाली है। भाषा और भाव का प्रभाव गूंगे का गुड़' नामक नवीन अलंकार की सृष्टि करता है जो चख कर चटखारे लेने की चीज है, बताई नहीं जा सकती। संक्षेप में भाषा व भाव सजीव सम स्वभाव हैं।

'वैदिक समाजवाद' की, संक्षित व सन्तुलित व्याख्या नपे तुले, मंजे हुए शब्दों में, 'गागर में सागर' का प्रत्यक्ष दर्शन हैं। लेखनी कौशल का अद्भुत चमत्कार सिद्ध करता है कि 'संक्षेप ही बुद्धि का सार हैं। क्योंकि केवल नौ पृष्ठों में बता दिया गया है कि 'वैदिक समाजवाद' क्या है। शेष लगभग ८८ पृष्ठों में (१२ अध्यायों में) प्रश्नोत्तरी शैली अपना कर शंका समाधान किया गया है। प्रश्न तीखे व चुभते हुये हैं, तो उत्तर भी उतने ही गम्भीर, सप्रमाण तथा बे लाग हैं। लम्बे उत्तरों में, कहीं-कहीं लेखनी कौशल का स्थान, भाषा में 'भाषण ध्वनि' देता सा मालूम होता है। लेकिन विषय की रोचकता ने इस 'दोष' को भी 'गुण' बना दिया है।

लेखक के प्रेरक हैं महर्षि दयानन्द सरस्वती व उनकी अमर रचना 'सत्यार्थप्रकाश'। संभवत: इसीलिए पुस्तक का नाम "वैदिक समाजवाद" चुना गया; यद्यपि लेखक 'वसुधैव कुटु-म्बकम्' का उपासक है और अपने समाजवाद को सार्वभौम व विश्वव्यापी मानता है। हमारे विचार से यदि इस पुस्तक का नाम 'विश्व समाजवाद' रखा जाता तो अधिक उपयुक्त था। ऐसा करने पर इस विचार धारा के प्रचार व प्रसार में अधिक सुविधा होती। 'वैदिक' शब्द से जिन भारत विपक्षियों को 'सूग' आती है उनको विष वमन का अवसर भी नहीं मिल पाता।

अंत में, मैं आशा करता हूँ कि भारतीय युवा वर्ग, स्वामी अग्निवेश जी के सन्देश को देश के कोने-कोने में पहुँचायेगा। इसी अवसर पर मैं स्वामी इन्द्रवेश जी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। 'वैदिक समाजवाद उन्हीं से प्रसाद रूप में प्राप्त हुआ है।

नगण्य मूल्य पर, मूल्यवान सामग्री संकलित, मौलिक रचना है।

प्रो० उमाशंकर शर्मा

पंजाब व हिमाचल के आर्यों को आह्वान्

पंजाब सरकार की हिन्दी व संस्कृत के प्रति विरोधात्मक नीति की भर्त्सना, शराब के विरुद्ध प्रबल अभियान प्रारम्भ करने का आदेश; १६ जून को 'भारत का इतिहास' नामक पुस्तक की होली जलाने की घोषणा

२ जून १६७४ को जालन्धर में पंजाब व हिमाचल की आर्य समाजों के प्रतिनिधियों का एक विशाल सम्मेलन हुआ। इसकी अध्यक्षता सभा के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी ने की। इस अवसर पर जो प्रस्ताव पारित किए गए वह आर्य जनता की जानकारी के लिए नीचे उद्धृत किए जाते हैं।

१. भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियान की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आयोजित पंजाब व हिमाचल के आर्यों का यह सम्मेलन देश में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार व नैतिक पतन को गहरी चिन्ता व निराशा की दृष्टि से देखता है। इस सम्मेलन का यह निश्चित मत है कि देश में जो भ्रष्टाचार फैल रहा है, चाहे वह राजनीति क्षेत्र में है, चाहे आर्थिक क्षेत्र में और चाहे सामाजिक क्षेत्र में, कभी सम्भव न होता यदि धार्मिक क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार ने एक भयानक रूप धारण न कर लिया होता। देश में जो नये नये भगवान पैदा हो रहे हैं, उनके द्वारा जिस प्रकार की विचार-धाराओं का प्रतिपादन किया जा रहा है, उनके कारण मानव का अपने धर्म में विश्वास उठता जा रहा है। इसी के साथ ईश्वर के डर से मनुष्य भ्रष्टाचार से बचने का जो प्रयत्न किया करते थे, वह भी समाप्त हो रहा है। यही कारण है कि मानव नये नये मतों और तथाकथित धार्मिक विचार धाराओं के जाल में फंसकर वास्तविक धर्म से दूर हो रहा है और इसीलिए पथभ्रष्ट भी होता जा रहा है। यह एक ऐसी स्थिति है, जिसे आर्य समाज सहन नहीं कर सकता। उसकी कुछ नैतिक मान्यताएँ रही है और उन्हीं के सहारे उसने इस देश में प्रत्येक प्रकार के पाखण्ड, अनैतिकता और धर्मान्धता के विरुद्ध संघर्ष किया हैं। आज फिर वह समय आ गया हैं, जबकि आर्य समाज एक बार फिर कटिबद्ध होकर प्रत्येक प्रकार के भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष केलिए तैयार हो जाए। प्रत्येक नगर व प्रत्येक गांव में भ्रष्टाचार निरोध समितियां स्थापित की जाए और जहां भी कोई व्यक्ति किसी प्रकार का भ्रष्टाचार करता है, उसके विरुद्ध संघर्ष किया जाए और उसे बाधित कर दिया जाए कि वह सत्य और धर्म के उन सिद्धांतों के अनुसार अपने आचरण को बनाए, जिनके कारण हमारा देश संसार में एक विशेष महत्व प्राप्त करता रहा है।

२. पंजाब सरकार की हिन्दी व संस्कृत नीति की निन्दा

इसी के साथ यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक आर्य समाजी अपने अन्दर झांक कर स्वयं भी देखे कि कहीं वह भी तो किसी प्रकार के भ्रष्टाचार का कारण तो नहीं बन रहा। प्रत्येक आर्य समाजी को वह चाहे जीवन के किसी भी क्षेत्र में काम करता है, नैतिकता के उच्चादर्शों का पालन करना चाहिए जिनके कारण आर्य समाज आज तक जनता में सर्वप्रिय रहा है। आर्य समाज की मान-मर्यादा प्रत्येक आर्यसमाजी के हाथ में है। इसीलिए यदि हमने देश से भ्रष्टाचार समाप्त करना है तो उसके विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रत्येक आर्य समाजी को कार्य क्षेत्र में कूद पड़ना चाहिए। परन्तु किसी का मार्ग प्रदर्शन करने से पहले यह आवश्यक है कि प्रत्येक आर्यसमाजी स्वयं आत्म निरीक्षण करे, उसी अवस्था में आर्य समाज सफल रूप में [illegible] के विरुद्ध कोई आन्दोलन चला सकेगा।

३. पंजाब में शराब के बढ़ते हुए प्रयोग पर चिन्ता

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के प्रतिनिधि महानुभावों का यह सम्मेलन पंजाब सरकार की हिन्दी और संस्कृत के प्रति जो नीति अपनाई है उसकी कड़े शब्दों में भर्त्सना करता है जिसके द्वारा देश की राष्ट्र-भाषा हिन्दी का पंजाब में निशान तक मिटाने का प्रयत्न हो रहा है। सरकार की भाषा नीति उसकी साम्प्रदायिक मनोवृत्ति की प्रतीक हैं। अकाली सरकार की तरह कांग्रेसी सरकार भी पंजाब में हिन्दी को जीवित देखना नहीं चाहती। इसीलिए हिन्दी को अपमानित करने और उसका इस प्रदेश में अस्तित्व समाप्त करने का भरसक प्रयत्न हो रहा है। पंजाब सरकार को हिन्दी से कितनी विरोधता है, इसका

अनुमान हम इसी बात से लगा सकते हैं कि वह न केवल हिन्दी प्रेमियों को यह अधिकार देने को तैयार नहीं कि वह अपने बच्चों की शिक्षा के माध्यम का स्वयं निर्वाचन कर सके, वह हमें यह अधिकार भी देने को तैयार नहीं, जो भारत सरकार ने भाषाई अल्प संख्यकों को दे रखे हैं। भारत सरकार के उपगृहमन्त्री कई बार कह चुके हैं कि पंजाब एक भाषी नहीं है। भाषाई अल्प-संख्यकों के आयुक्त भी कई बार यह घोषणा कर चुके हैं कि पंजाब में एक वर्ग भाषाई अल्प-संख्यकों का भी है और हिन्दी उसकी मातृ भाषा है। भारत के उच्चतम न्यायालय का भी यह निर्णय है कि पंजाब के आर्यसमाजियों की मातृ भाषा हिन्दी है। फिर भी पंजाब सरकार अपनी साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के वशीभूत होकर हिन्दी प्रेमियों विशेषकर आर्य समाजियों के साथ न्याय करने को तैयार नहीं और उन्हें वह अधिकार भी देने को तैयार नहीं, जो दूसरे प्रान्तों में वहां की कांग्रेसी सरकारों ने वहां के भाषाई अल्प संख्यकों को दे रखे हैं। यह एक ऐसी स्थिति है, जो आर्य समाज के लिए एक चुनौती के समान है। आर्य समाज इसकी अवहेलना नहीं कर सकता। इसलिए यह सम्मेलन पंजाब के सभी आर्य समाजियों से विशेषत: और हिन्दी प्रेमियों से साधारणतया अनुरोध करता है कि वह हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए हर सम्भव प्रयत्न करें।

यह सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों से भी यह आशा रखता है कि वह पंजाब में हिन्दी को जीवित रखने और पंजाब सरकार की साम्प्रदायिक नीति का प्रबल विरोध करने के लिए कोई ऐसा पग उठायेंगे जिससे कि सरकार इस प्रांत में हिन्दी का गला घोंटने का जो प्रयत्न कर रही है, उसे छोड़ दे। यह सम्मेलन पंजाब सरकार असेम्बली पार्टी के उन सदस्यों से भी अनुरोध करता है कि जिन्होंने चुनाव के समय हिन्दी प्रेमियों को कई प्रकार के आश्वासन दिये हैं कि [illegible] सरकार को विवश करे कि वह हिन्दी को पंजाब में वह [illegible]पूर्वक स्थान दें, जो देश की राष्ट्र भाषा को मिलना चाहिये यदि वह ऐसा नहीं कर सकते, तो नैतिकता की यह मांग है कि वह असेम्बली की सदयस्ता से त्याग पत्र दे दें। यदि वह ऐसा नहीं करते, तो यह उस जनता से विश्वासघात होगा जिसके वोटों से वह निर्वाचित होकर असेम्बली में गये थे। यह सम्मेलन सब आर्य समाजों को यह आदेश देता है कि वह अपने-अपने क्षेत्र के विधान सभा के सदस्य को विवश करें कि वह विधान सभा में हिन्दी के पक्ष में अवश्य आवाज उठाएं यदि वह ऐसा नहीं करता तो आने वाले चुनाव में ऐसा वातावरण पैदा किया जाये कि विधायक के लिये सफल होना असम्भव हो जाए।

४. शराब नीति के विरुद्ध अभियान चलाने का आदेश

पंजाब और हिमाचल की समाजों के प्रतिनिधियों का यह सम्मेलन पंजाब सरकार की वर्तमान शराबनीति का कड़े शब्दों में विरोध करता है। इस नीति के कारण पंजाब में न केवल भ्रष्टाचार दुराचार, नैतिकता और अनुशासन-हीनता बढ़ती जा रही है अपितु सारे प्रांत का वातावरण ही इतना दूषित होता जा रहा है कि न तो शासन ही सुचारू रूप से चल सकता है न समाज के भिन्न २ वर्गों में शान्ति स्थापित हो सकती है। पंजाब सरकार इस विषय में जो कुछ कर रही है वह हमारी सब पुरानी धार्मिक और सामाजिक परम्पराओं के विपरीत हैं। एक ओर तो कांग्रेस के नेता महात्मागांधी के अनुयायी होने का दावा करते हैं, दूसरी ओर गांधी जी के सिद्धांतों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। इस सम्मेलन के लिये यह बात और भी लज्जाजनक है कि इस समय सरकार की शराब नीति का संचालन एक ऐसे व्यक्ति के हाथ में है, जिसका कि आर्य परिवार से सम्बन्ध है। इसलिये यह और भी आवश्यक हो जाता है कि आर्य समाज सरकार की इस नीति के विरुद्ध पूरी शक्ति के साथ अपना अभियान चलाये। यह सम्मेलन पंजाब और हिमाचल की सब आर्य समाजों को आदेश देता है कि वह अपने प्रत्येक उत्सव में सत्संग और सभा और दूसरे प्रकार के प्रदर्शन में जब कभी समय मिले, जनमत को न केवल सरकार की इस नीति के विरुद्ध संगठित करने का प्रयास करें अपितु जो लोग शराब के आदी हो चुके हैं, उन्हें भी समझाने का प्रयास करें। आर्य समाज को शराब के विरुद्ध अपना यह अभियान पहले से भी अधिक शक्ति के साथ चलाने का प्रयत्न करना चाहिए।

५. 'भारत का इतिहास' की होली जलाई जाए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आयोजित यह आर्य सम्मेलन पंजाब सरकार की उस विश्वासघात की कड़े शब्दों में निंदा करता हैं, जो कि उसने पंजाब के हिन्दुओं के साथ किया है। नवीं कक्षा के लिये भारत का इतिहास नामक पुस्तक में कुछ ऐसी निन्दनीय और निराधार बातें प्रकाशित की गई थीं जिनसे सारे हिन्दू जगत की भावनाओं को चोट पहुंची थी। पंजाब के मुख्यमन्त्री ज्ञानी जैलसिंह ने उस समय यह आश्वासन दिया था कि इस पुस्तक को वापिस ले लिया जायेगा या इसके आपत्तिजनक अंश निकाल दिये जाएंगे। इस आश्वासन पर आर्य समाज ने अपना आन्दोलन वापिस ले लिया था परन्तु अब मालूम हुआ है कि न ही वह किताब वापिस ली गई है और न ही उसके वह अंश, जिन पर कि जनता को आपत्ति थी, निकाले गये हैं। यह सम्मेलन सरकार के और विशेषकर मुख्यमन्त्री के इस व्यवहार को पंजाब की हिन्दू जनता से एक ऐसा विश्वासघात समझता है, जो उसके मान और प्रतिष्ठा के लिये एक चुनौती है। इसलिये यह सम्मेलन पंजाब की सब आर्य समाजों को आदेश देता है कि इस पुस्तक के विरुद्ध अपना आंदोलन फिर से प्रारंभ कर दे और इस सन्दर्भ में १६ जून १९७४ रविवार को साप्ताहिक सत्संग में आर्य समाजों में प्रस्ताव पास किये जाएं और इस पुस्तक की होली जलाई जाये। यह सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री स्वामी इन्द्रवेश जी से भी यह प्रार्थना करता है कि यदि पंजाब सरकार एक मास के अन्दर अपने दिये हुये आश्वासन को पूरा नहीं करती, तो सभा के प्रधान के नाते सरकार के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिये सारे आर्य जगत को संगठित करें और जो भी उचित पग उठाना चाहें उठाएं। *

गरीबी हटाओ बनाम गरीबी बढ़ाओ

योगेन्द्र कुमार शर्मा

भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अभी चुनाव से पूर्व 'गरीबी हटाओ' का नारा दिया परन्तु गरीबी तो मिटी नहीं, गरीब जरुर मिटते जा रहे हैं। इन महान उद्देश्यों की पूर्ति का एक ही रास्ता है, पूंजीवादी राज्य व्यवस्था समाप्त करके उत्पादन के सभी साधनों (जमीन, कारखाने, खाने) मजदूरों और किसानों के हाथ सौंप दिये जाय और फिर इन महा-मानव की सहायता से सुख सम्पन्नता से पूर्व एक नये जीवन का निर्माण किया जाए अर्थात् मौजूदा समाज को बदलकर नयी व्यवस्था कायम करनी पड़ेगी।

गरीबी हटाओ से पहले पूंजीपतियों को हटाना चाहिए था, क्योंकि जब तक इस देश में पूंजीपति वर्ग छाया रहेगा तब तक गरीबी हटाओ का नारा सार्थक सिद्ध नहीं होगा। इन धन्नासेठों से बड़े-बड़े कारखाने तथा बड़े-बड़े फार्म लेकर उन पर मजदूरों तथा किसानों को व्यवस्थित करना होगा। यहां एक ओर गरीबी हटाओ का नारा दिया जा रहा है दूसरी ओर इस देश की प्रधानमन्त्री के बेटे के लिए २५ करोड़ रु. का मारुति कार का कारखाना लगाकर इस देश की भोली भाली जनता की आंख में धूल झोंक कर समाजवाद के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है।

शासक पार्टी के मौजूदा ढांचे में पूंजी-वादी सिद्धांतों का प्रभुत्व इजारेदारों को मजबूत व मेहनतकश जनता को कमजोर बनाता जा रहा है। गरीबी हटाने, जनवाद की रक्षा करने और आर्थिक स्थिति को विकसित करने की घोषणाएँ इस तरह पूरी नहीं की जा सकती। अभी पिछले वर्ष राजा महाराजाओं का प्रिवीपस समाप्ति, बैंकों का राष्ट्रीयकरण समाजवाद की ओर कदम थे। बैंकों के राष्ट्रीयकरण से लोगों में जन आशाएं बँध गयी थी कि बैंकों के जरिए छोटे किसानों, बटाईदारों, खेतिहर मजदूरों को आसान शर्तों पर ऋण मिल सकेगा जिससे महाजनों और धनी किसानों के शोषण से कुछ हद तक बच सकेंगे। यह भी उम्मीद की गयी थी कि बैंकों के सरकारीकरण का देश के विभिन्न भागों के विकास में विवेकतापूर्ण इस्ते-माल किया जा सकेगा। राष्ट्रीयकरण से पहले बैंकों पर इजारेदारों का प्रभुत्व था जिससे वे मनमाने ढंग से वित्तीय साधनों का इस्तेमाल करते थे। काले धन की अर्थव्यवस्था को सफलतापूर्वक चलाने के लिए बैंकों का प्रयोग करते थे। जनता में राष्ट्रीयकरण के प्रति नया विश्वास जगा परन्तु बैंक अपनी पुरानी विरासत से अपने को मुक्त नहीं कर पाये। अब भी उनसे अधिक ऋण बड़े पूंजीपतियों को ही मिलता है। गाँव में खेतिहर मजदूरों के पास अपनी जमीन भी नहीं है, बैंक जमीन पर स्वा-मित्व का सबूत लेकर ही ऋण दे सकते हैं। ऐसी हालत में उन्हें ऋण भी नहीं मिलती। उनको फिर महाजनों और धनी किसानों के पास ही जाना पड़ता है। महाजन लोग बैंकों से कम ब्याज पर ऋण लेकर गरीब लोगों को दुगने ब्याज पर देकर पैसा कमाते है। इससे फिर वे ही गरीब मारे जाते हैं। इस प्रकार बैंक राष्ट्रीयकरण का परिणाम भी उल्टा हुआ है जिससे पूंजीपति वर्ग बैंकों से ऋण लेकर अपने उद्योग धन्धे लगाने में व्यस्त हैं जहां पर उनके भाई भतीजावाद, रिश्तेवाद, सिफारिश-वाद से ही लोगों को काम दिया जाता है। इस प्रकार साधारण वर्ग तो पिछड़ा हुआ ही रह जाता है।

आज भी सूखा, भारी वर्षा हमारे भाग्य का फैसला करते हैं। ८ करोड़ जनता फुटपाथों पर जीवन बिता रही है। हजारों गांवों में पीने के पानी का प्रबन्ध तक नहीं है। किसान फसल उगाता है, उसकी फसल का भाव सट्टा बाजार के स्वामी से तय करते हैं तथा सरकार भी मनमाने ढंग से फसल खरीद लेती है। इससे जनता के उत्पा-दन की तुलना में गरीबी बढ़ती जा रही है। ये पूंजीपति यहां तक प्रचार करते हैं कि गरीबी पिछड़ापन इसलिए है कि य[illegible] बच्चे बहुत पैदा करते हैं इस तरह ये लोग जनता को चकमा देने का प्रयास करते हैं। आज इसी वर्ग ने जातिवाद, साम्प्रदायवाद का समाज में विष घोलकर मनुष्य को मनुष्य से भिन्न करने का भयंकर षड्-यन्त्र रच रहे हैं।

देश के चुनावों में भी काले धन के बलबूते पर यहाँ के भाग्य विधाता बन जाते है। इनको चाहे कितना कुकर्म क्यों न करना पड़े पैसा हड़ने की होड़ हर समय लगी रहती है। मैं तो यह कहूंगा कि आज जो भी विरोधी दल पूंजीपतियों से सांठ-गांठ कर जनता को चकमा देने की कोशिश कर रहे हैं वे इस देश के सबसे बड़े शत्रु हैं।

१९६८-६९ में ३०५८.७ करोड़ की लागत से जो उत्पादन पैदा किया

गया उसमें २६,२९७ करोड़ उत्पादन व्यक्तिगत क्षेत्रों में ४,२९० करोड़ उत्पादन सरकारी क्षेत्र में किया गया। इससे स्पष्ट है कि देश की ८७ प्रतिशत दौलत व्यक्तिगत क्षेत्रों में तथा १३ प्रतिशत उत्पादन सरकारी क्षेत्र में किया गया। बेकारी, कम वेतन, उपभोग की वस्तुओं की बढ़ती हुई महंगाई, कच्चे माल के कम दाम जनता को भिखारी बनाते जा रहे हैं।

देश की सम्पत्ति का बहुत बड़ा हिस्सा धनी वर्ग ही ले जाता है। आज आजादी के २७ वर्षों बाद भी हमारी ग्रामीण जनता की औसत आमदनी ५० पैसा प्रति व्यक्ति है। जनता का बहुत बड़ा भाग मूल आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता। 'टाटा' ने १९६७ में अपनी सम्पत्ति को ५०५ करोड़ से १९६९ में ६३८ करोड़ करली। क्या यह इस पूंजीवादी व्यवस्था का परिणाम नहीं है? आज धनी लोग और अधिक धनी, गरीब और अधिक गरीब होते जा रहे हैं। इस सरकार की दोगली नीति ने बिड़ला को २ पैसे प्रति यूनिट व किसानों को २५ पैसे प्रति यूनिट बिजली देकर पूंजीवादी व्यवस्था को पनपाया है।

जो आज समाजवादी देश हैं वह भी हमारी तरह गरीब थे परन्तु इन्होंने निर्धनता का खात्मा कर नई व्यवस्था कायम कर शोषण मुक्त समाज स्थापित कर दियाहै। वह कार्य आज द. वियतनाम के रण बाँकुरे कर रहे हैं जिन्हें १३ वर्षों का लगातार घमासान युद्ध भी न थका सका है। सारा अमरीकी साम्राज्यवाद भी इन्हें अपने पथ से विचलित न कर सका इसने वीरता और कुर्बानी का नया इतिहास कायम किया है।

आज समय आ गया है कि देश की मेहनतकश जनता नौजवान पीढ़ी एक संगठित मोर्चा बनाकर अन्याय के विरुद्ध तथा 'वैदिक समाजवाद' के संघर्ष के लिए एक जुट हो जाए तथा इस देश से मुनाफाखोरी, जमाखोरी, सट्टेबाजी, शराब, कुप्रथा एवं भ्रष्टाचार को खतम करने के लिए अपने आपसी मतभेदों को भुलाकर शोषण से मुक्त समाजवादी भारत के निर्माण के संघर्ष में योगदान दें।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से——

आर्यसमाज स्थापना–शताब्दी सम्मेलन

२८–२९ सितम्बर १९७४ को पानीपत में

मनाया जा रहा है।

सारे आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हरयाणा के समस्त आर्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्रतिनिधि, संन्यासी, वानप्रस्थी एवं उपदेशकों की १९ मई को करनाल में एक मीटिंग बुलाई गई जो सभा प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में हुई। मीटिंग में महत्वपूर्ण प्रस्तावों के साथ सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि—

२८-२९ सितम्बर को पानीपत में स्थापना-शताब्दी सम्मेलन

धूमधाम के साथ मनाया जायेगा। आर्य जगत् के प्रसिद्ध साधू, संन्यासी, विद्वान्, उपदेशकों एवं नेताओं को आमन्त्रित किया जा रहा है। जोर शोर से तैयारियां प्रारम्भ हो गई हैं। लाखों की संख्या में लोग पहुंच रहे हैं। हरयाणा के सभी समाजों से निवेदन है कि वे सम्मेलन के लिए पूर्ण सहयोग दें और आर्यों की संगठन शक्ति का परिचय दें। सम्मेलन पर अभूतपूर्व नगर कीर्तन का भी आयोजन किया जा रहा है। गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की जानकारी यथा समय आर्य जगत को मिलती रहेगी

रामचन्द्र आर्य
उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

फिल्मी अश्लीलता तथा उपचार

(गतांक से आगे)

४. भारतीय संस्कृति पर आधारित

हमारी फिल्में भारतीय संस्कृति के आदर्शों पर आधारित होनी चाहिए। अश्लीलता, नग्नता, कामुकता, स्वच्छन्दता, उच्छृंखलता तथा विलासिता हमारी संस्कृति के अनुरूप नहीं है। और न ही भारतीय जनता इन्हें पचा ही सकती है। पश्चिम के लोग स्वयं इन चीजों से दुःखी तथा बेचैन हैं। हमारी फिल्में ऐसी हों जिससे लोगों में भारतीयता तथा भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग उत्पन्न हो। हम दूसरे की आत्मा में जिन्दा नहीं रह सकते। अतः फिल्म निर्माताओं तथा फिल्म निर्देशकों को सस्ती लोकप्रियता तथा धन के लालच में आकर भारतीय संस्कृति की मान्यताओं पर वज्रपात नहीं करना चाहिए।

५. गरीबों तथा बकेसों की समस्याओं का चित्रण

हमारी ८५ प्रतिशत जनता गरीब वर्ग से सम्बन्धित है। मुट्ठीभर पूंजीपतियों के विलासिता तथा ऐशो आराम व उनकी अश्लील तथा भ्रष्ट गतिविधियों का चित्रण करने वाली फिल्में भारतीय जनता का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती। अश्लील फिल्मों की अपेक्षा ऐसी फिल्मों का निर्माण किया जाना चाहिए जो कि गरीब वर्ग, मजदूर वर्ग, श्रमिक-वर्ग, दलित एवं पतित वर्ग की समस्याओं पर प्रकाश डाल कर उन्हें सुलझाने का सुझाव प्रस्तुत करें। हमारे समाज के असंख्य ऐसे लोग हैं जिन्हें दो समय पर्याप्त भोजन भी सुलभ नहीं। काफी ऐसे लोग हैं जिन्हें तन ढांपने के लिए चिथड़ा भी नसीब नहीं जो केवल फुटपाथों पर पलते हैं और फुटपाथों पर ही ठिठुर कर अपनी जान दे देते हैं। क्या इन परिस्थितियों के बावजूद अश्लीलता तथा विलासिता को प्रोत्साहन देकर हमारे फिल्मकार हमारी भोली भाली, गरीब तथा बेकस जनता के गले पर कुल्हाड़ी नहीं चलाते हैं? जनता के मन में विलासिता के प्रति रूचि पैदा करने और सुरा तथा सुन्दरी के प्रति जिज्ञासा पैदा कर भोगवाद की भावनाओं को उकसाने के जघन्य अपराध में फिल्मकार को देश का गद्दार तथा मानवता का गुनहगार क्यों न माना जाय?

६. सामाजिक तथा आर्थिक फिल्में

इस समय समाज को नाश की तरफ धकेलने की बजाय उसकी रक्षा करने की जरूरत है। आज हमारा देश आर्थिक तथा चारित्रिक संकट के दौर से गुजर रहा है। आज जरूरत है सामाजिक तथा आर्थिक कठिनाइयों को चित्रित कर उनका निदान प्रस्तुत करने की जिससे समाज को चन्द एक पूंजीपतियों के हाथों भ्रष्ट होने से बचाया जा सके। आज जरूरत है उन फिल्मों की जो यह स्पष्ट कर सकें कि ये चन्द पूंजीपति किस प्रकार भोली भाली गरीब जनता को बेवकूफ बनाते हैं, उन्हें लूटते हैं तथा उनका शोषण कर धन्नासेठ बनते जाते हैं और विलासिता तथा ऐशोआराम में सराबोर रहते और समाज में भ्रष्टाचार तथा अनाचार फैलाते हैं। आज आवश्यकता है उन फिल्मों की जो हमारी उत्पादन तथा खाद्यान समस्याओं के समाधान सुझा कर आर्थिक विकास का पथ-प्रदर्शन करें।

७. धार्मिक तथा आध्यात्मिक फिल्में

भारत एक महान् देश है जो कि अपनी धार्मिक तथा आध्यात्मिक उपलब्धियों के लिए विश्वविख्यात है। इसी लिए भारत को जगद्गुरु कह कर भी पुकारा जाता है। अतः धार्मिक तथा आध्यात्मिक फिल्मों का निर्माण करके जनता में ईमानदारी, सदाचार, नैतिकता, भ्रातृत्व, समानता, सत्यता त्याग आदर्श तथा सिद्धान्त की भव्य भावनाओं का सचार किया जा सके। आज धर्म के नाम पर अनेक प्रकार का आडम्बर, पाखण्ड तथा अनाचार भी पनपता है। भगवान के नाम पर लूटने वालों का पर्दाफाश करना तथा जनता को अन्धविश्वास के चंगुल से मुक्त करना भी इन फिल्मों का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए।

८. साहित्यिक फिल्में

साहित्य हमारे जीवन का सच्चा तथा वास्तविक दर्पण होता है। अतः हमारी फिल्में घटिया प्रकार के सस्ते और काल्पनिक उपन्यासों पर आधारित न हो कर वास्तविक साहित्यिक समस्याओं पर आधारित होनी चाहिए। जिससे उच्च, प्रगतिशील तथा महान् साहित्य के प्रति लोगों का अनुराग बढ़े, उनका जीवन सरस हो तथा जीवन स्तर ऊचा उठे। फिल्मों में अश्लील तथा घिनौने गानों की अपेक्षा महान् कवियों की महान् रचनाओं को महत्व दिया जाना चाहिए। छिछले, फूहड़ व निरर्थक गानों की अपेक्षा देश-भक्ति तथा समाजवादी और प्रगतिवादी गानों को प्रमुखता दी जानी चाहिए।

९, वैज्ञानिक तथा साहसिक फिल्में

आज का युग विज्ञान तथा तकनीकी का युग है। अतः आज कल ऐसी फिल्मों का निर्माण होना चाहिए जो कि

वैज्ञानिक तथा तकनीकी उपलब्धियों से ग्राम जनता को अवगत करा सके तथा उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जन्म दे सकें। कुछ साधारण वैज्ञानिक प्रयोग फिल्मों के माध्यम से दिखाये जा सकते हैं जिनका हमारे दैनिक जीवन में सदुपयोग हो सके। जहाँ तक सम्भव हो सके नये वैज्ञानिक आविष्कारों तथा महान् अनुसंधानों से भी भारतीय जनता को परिचित करा के जहां तक सम्भव हो ग्राम जनता के लिए फिल्मों के माध्यम से सुलभ कराया जा सके। उसके अतिरिक्त साहसिक फिल्मों का निर्माण होना चाहिए। जिससे उच्च सामाजिक आदर्शों तथा महान मानवीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए लोगों में अपनी जान तक से खेल जाने की प्रेरणाओं का संचार हो सके।

१०. ज्वलन्त समस्याओं पर आधारित

इस समय अश्लील, कामुक, भोगवादी तथा विलासिता से परिपूर्ण फिल्मों की आवश्यकता नहीं। आज भारत एक कठिन परिस्थिति से गुजर रहा है। प्रगति के पथ पर अग्रसर देश के समक्ष अनेक विकट समस्यायें मुंह बाये खड़ी हैं। आज़ देश राष्ट्र चरित्र और आर्थिक कठिनाइयों से गुजर रहा है। फिल्मी अश्लीलता से नई समस्यायें पैदा करने की अपेक्षा भारतीय फिल्मों में आज की ज्वलंत समस्याओं में झांकने की क्षमता होनी चाहिए। आज मिलावट की समस्या. चोरबाजारी और भण्डारकों की समस्या, गरीबो, बेरोजगारी तथा साक्षरता की स[illegible]षावाद तथा प्रान्तीयता की समस्या और सम्प्रदायवाद तथा पूजावाद की समस्या आदि सभी समस्यायें ज्वलंत समस्यायें हैं जो कि समाधान की प्रतीक्षा कर रही हैं। हमारे फिल्मकारों को चाहिए कि वे ऐसी फिल्में बनायें जिससे इन विकट समस्याओं को लोगों के सम्मुख रखा जा सके तथा इनके लिए उपयुक्त निदान सुझाये जा सकें।

११. महान पुरुषों की जीवनियों पर आधारित

इस समय आवश्यकता है कि युवक वर्ग के मन में गंदे तथा अश्लील मनोविकारों को ढूंढने की अपेक्षा उनमें महानता, राष्ट्रीयता, सामाजिकता तथा मानवता की भव्य भावनाओं का संचार किया जा सके। जिससे वे अपने आदर्शों अपने सिद्धान्तों, राष्ट्र सेवा और मानवसेवा के लिए प्राणों की बाजी तक लगा देने के लिये तत्पर रहें। उनका मन त्याग तथा बलिदान के विचारों से ओत-प्रोत हो। अतः महान् पुरुषों की जीवनियों पर आधारित बहुत अधिक फिल्मों का निर्माण किया जाना चाहिये जिससे हमारे देश के भावी कर्णधारों के मन में समाज सेवा तथा देश सेवा की सच्ची लग्न लग जाये।

१२. राष्ट्रीय चेतना तथा जन जागरण

अधिकतर फिल्में ऐसी होनी चाहिए जो कि जनता को सामाजिक तथा राष्ट्रीय समस्याओं से भली भांति परिचित करा के जनता में राजनीतिक चेतना पैदा करें। जब-जनता में जागरुकता पैदा हो जायेगी तो जनता स्वतः ही अपनी अनेक समस्याओं को सुलझा सकेगी। इस राजनीतिक चेतना का एक अच्छा प्रभाव यह होगा कि जो चतुर लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए भोली भाली जनता का शोषण करते हैं उनकी दाल नहीं गलेगी। साथ ही कुर्सी के लालच के लिए सीधो सादी जनता को बेवकूफ बनाने वाले राजनीतिक गिरगटों के मनसूबे भी चरितार्थ नहीं हो पायेंगे। राजनीतिक चेतना तथा जन-जागरण हो जाने पर अनाचार, दुराचार तथा भ्रष्टाचार के राक्षस भी भाग खड़े होंगे। राजनीतिक चेतना अच्छे नागरिक पैदा करेगी तथा प्रजातान्त्रिक समाजवाद को सफल बनाने में पूर्णरूपेण सहायता प्रदान करेगी। जब जनता राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि से सजग और सचेत हो जायेगी तो उससे भावात्मक एकता को भी बल मिलेगा।

अगर इस बढ़ती हुई अश्लीलता को शीघ्र नियन्त्रित करके फिल्मी गति विधियों को सही दिशा प्रदान न की गई तो यह हमारे मानवीय, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय तथा सामाजिक मूल्यों के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। ★

बी. आर शर्मा
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यायल

सिकन्दरपुर [मुजफ्फरनगर] में आर्यसभा का संगठन स्थापित

दिनांक १६ मई को पं. रतिराम जी कार्यवाहक प्रधान आर्य समाज सिकन्दरपुर की अध्यक्षता में आर्यसभा ब्रांच सिकन्दरपुर का गठन किया गया जिसमें रामदयालसिंह आर्य संयोजक व वेदसिंह जा सहसंयोजक नियुक्त किए गए। तदर्थ समिति भी नियुक्त की गई। आर्यसभा के प्रगतिशील कार्यक्रमों व सिद्धांतों पर प्रमुख बक्ताओं द्वारा प्रकाश डाला गया।

आर्य कुमार सभा किंग्जवे [दिल्ली]

आर्य कुमार सभा किंग्जवे की रजत जयन्ती मुकर्जी पार्क किंग्जवे चौक में १८ मई शनिवार सायं: साढ़े सात बजे स्वामी इन्द्रवेश प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अध्यक्षता में मनाई गई थी अध्यक्ष महोदय ने नवयुवकों को देश की प्रगति के लिए प्रयत्नशील रहने को कहा और साथ ही सामाजिक संगठन को शक्तिशाली बनाने के लिए कहा।

समाचार दर्शन

नरेला में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वाधान में—

ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर

दि० २७ जून से ३ जुलाई ७४ तक

इसमें चुने हुए १५ वर्ष से ऊपर की आयु वाले प्रतिभाशाली युवक भाग लेंगे। प्रवेश शुल्क १० रुपया प्रति युवक होगा। शुल्क तथा प्रार्थना पत्र डा० धर्मवीर चरक क्लिनिक नरेला के पते पर २४ जून ७४ तक पहुँच जाना चाहिए। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को सुन्दर प्रमाण-पत्र भी दिए जायेंगे।

इस अवसर पर आर्य समाज के उच्च कोटि के संन्यासी व विद्वान एवं भारत के ख्याति प्राप्त व्यायामाचार्य विशेष रूप से युवकों को योगासन, दन्ड, बैठक, लाठी, शिक्षा, तलवार, छुरी व खोखरी आदि का प्रशिक्षण देंगे व आर्य समाज के सिद्धातों का परिचय करायेंगे। आर्य समाज के मंत्रियों से विशेष निवेदन है कि अपनी-अपनी आर्य समाजों की ओर से आर्य युवक व उचित सहायता भेंजकर आर्य समाज के क्रियात्मक प्रचार में सहयोग दें।

प्रशिक्षणार्थी को शिविराध्यक्ष की आज्ञा पालन अनिवार्य होगा। इसमें आरंभ से अन्त तक रहना आवश्यक है। शिविर में आने वाला प्रत्येक शिक्षणार्थी अपने साथ ऋतु अनुकूल बिस्तर लाठी, संचिका (कापी), पेन्सिल आदि तथा एक लोटा, थाली व कटोरी, दो लगोट, दो कटि वस्त्र ,खाकी निकर व सफेद कमीज तथा प्लेट आदि साथ लायें।

मार्ग-दिल्ली स्टेशन से नरेला के लिए ३९ ए, ४१, ४१ ए, ४१ बी, ४१ सी, आदि दिल्ली परिवहन की बसें एव देल्गाड़ा व प्राईवेट बसें हर पन्द्रह-२ मिनट के बाद आती है। शिविर स्थान निर्देश के लिए बस स्टेंड व स्टेंड पर व्यवस्था होगी।

—:निवेदक:—

प्रि. होश्यारसिंह, डा० धर्मवीर मा० सत्यव्रत प्रो० बलजीत सिंह (शिविर संयोजक) नरेला दिल्ली-४०

रोहतक में आर्यों का भव्य जलूस

आर्य वीर दल आर्य कुमार सभा रोहतक का १२ वां वार्षिक-महोत्सव भगतसिंह पार्क में ३१ मई से २ जून १९७४ तक बड़े समारोह से मनाया गया। शुक्रवार ३१ मई को सायं साढ़े चार बजे एक भव्य शोभा यात्रा (जलूस) स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में नगर के मुख्य बाजारों से निकाली गई। जलूस की शोभा अद्वितीय एवं सराहनीय थी। उत्सव का उद्घाटन श्री डा० सुखदयाल जी निभावन ने किया। इस शुभावसर पर स्वामी अग्निवेश जी, प्रो० उत्तमचन्द जी शरर आचार्य सत्यप्रिय जी प्रो० राम विचार जी, बहिन रूप रेखा जी एम० ए० इत्यादि आर्य समाज के प्रकांड पडितों के प्रवचन हुए तथा सर्वश्री महेन्द्रपाल जी, जयदेव जी जतोई वाले, मा० प्रेम प्रकाश जी, श्री रमेश चन्द्र जी, एवं पं. धर्मपाल जी शास्त्री इत्यादि के वैदिक सिद्धांतों पर आधारित मनोहर भजन हुए। उत्सव से पूर्व स्वामी विद्यानन्द जी विदेह द्वारा वेदकथा का रमणीय प्रबन्ध किया गया।

आर्य वीर दल के कार्य कर्त्ताओं सर्वश्री जगदीश मित्र जी, ईश्वर चन्द जी, देशराज जी, वेद प्रकाश जी, मुलखराज जी, जगदीश चन्द्र जी, ओम-प्रकाश जी इत्यादि ने उत्सव एवम् शोभा यात्रा का प्रबन्ध अत्यन्त कुशलता तथा दक्षता से किया जो प्रशंसनीय है।

आर्य युवक परिषद रामामण्डी

आर्य युवक परिषद् रामामण्डी (भटिण्डा) का गठन प्रथम मई १९७४ को कर दिया गया है तथा इसके निम्नलिखित अधिकारी चुने गए हैं।

प्रधान—डा० आनन्द प्रकाश जी
मन्त्री—बलदेव आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री पवन कुमार जी

आर्य समाज मिलकपुर, तहसील बहरोड अलवर जिला आर्य सम्मेलन

दिनांक २७, २८ मई को यह सम्मेलन बड़े धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। स्वामी इन्द्रवेश जी तथा स्वामी अग्निवेश जी ने इस सम्मेलन में आर्य राष्ट्र स्थापना के प्रति अपना दृढ़ सकल्प व्यक्त किया। स्वामी अग्निवेश जी ने वैदिक समाजवाद की गम्भीर विवेचना कर लोगों को इसका अवलम्बन लेकर शोषण मुक्त आर्य राष्ट्र बनाने का आह्वान किया। ब्र० रामकिशन और श्री खेमसिंह ने अपने क्रान्तिकारी भजनों से लोगों को वर्तमान व्यवस्था को खत्म कर वैदिक समाज की स्थापना का संदेश दिया। इसी तरह भूपेन्द्रसिंह, हेतराम मत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री छोटूसिंह प्रधान आ० प्र० सभा राजस्थान, श्री बाल दिवाकर हस तथा अन्य प्रसिद्ध साधू, विद्वान एवं भजनोपदेशकों ने अपने विचारों से लोगों को अवगत कराया। दिनांक २७-५-७४ को विशाल जलूस बहरोड़ होता हुआ ५ मील की यात्रा करता हुआ आर्य समाज मिलकपुर पहुँचा।

पंजीयन क्रमांक RTK 28
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

राजधर्म
रोहतक
१२ जून १९७४

राजधर्म प्रकाशन के लिए राजधर्म प्रेस, झज्जर रोड, रोहतक से स्वामी अग्निवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। फोन : ८८२



* ओ३म् *

पाक्षिक

राजधर्म

युवक समुदाय के प्रति

ग्रामीण समस्या का समाधान

आर्यसमाज तब, अब और आगे

आधुनिकता और अंग्रेजी

गरीबो ! जागो ! संगठित हो जाओ ।

प्रधान सम्पादक
स्वामी अग्निवेश

सह सम्पादक
गिरिजेश्वर

जून द्वितीय
ं ६ : अङ्क १२
र्षिक शुल्क १५ रु०
एक प्रति ७० पैसे

भूमिसुधार के साथ तीव्र औद्योगिकरण आवश्यक

भारत कृषि प्रधान देश है। विशाल आबादी और सनातन समृद्ध ग्रामीण परम्पराओं वाले देश की सरकार ने पश्चिम की महत्त्वकांक्षा और उपभोग की संस्कृति से उधार लिए गये मूल्यों के अनुसार गरीबी पर दृष्टिपात कर राष्ट्र के मानस को गहरा आघात पहुचाया है। पश्चिमी सभ्यता शहरी है। इंगलैंड अथवा इटली तथा अन्य यूरोपीय छोटे देश शहरीकरण के मार्ग पर चल सकते हैं। विशाल आकार और छोटी आबादी वाले अमरीका जैसे देश के लिए भी यह रास्ता फलप्रद हो सकता है परन्तु भारत जैसा सनातन देश, जिसकी इतनी विशाल आबादी और समृद्ध ग्रामीण परम्परा हो, इसका अनुसरण करके उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो सकता हैं। विपुल प्राकृतिक सम्पदा, उर्वरा कृषि भूमि एवं विशाल श्रम शक्ति के बावजूद भारत पश्चिम के नकल का शिकार होकर स्वतंत्रता के २७ वर्षों बाद भी पूंजीवादी आर्थिक और औद्योगिक नीतियों के कारण अपेक्षित गति से विकास नहीं कर सका है। अंग्रेजों से राजनैतिक सत्ता के हस्तांन्तरण के बाद हमारे देश में पूंजीवादी समाज-व्यवस्था पनपी। परिणामस्वरूप आर्थिक क्षेत्र में अबाध शोषण, राजनैतिक क्षेत्र में मुट्ठी भर पूंजीपतियों का शासन और सांस्कृतिक जीवन में चरम आदर्शहीनता व्याप्त है। इसीलिए आज के आदर्श-हीन समाज में नैतिकता का घोर अध: पतन हुआ है और गुणात्मक दृष्टिकोण से जीवन की सम्पूर्णता पर आधारित राष्ट्रीय श्रमजीवी चिन्तन की जगह साम्प्रदायिक, क्षेत्रीय और संकीर्णतावादी स्वार्थपरक मनोवृत्ति के कारण श्रमजीवी राष्ट्रीय एकता कायम करने में असफलता प्रकट हुई है।

आज हमारे देश की आबादी के ८० प्रतिशत लोग गांवों में रहते हैं। इन ८० प्रतिशत लोगों में ७० प्रतिशत लोग खेती [र] निर्भर हैं। इस देश की ४० प्रतिशत भूमि ५ प्रतिशत बड़े किसानों के हाथों है। वैसे अनाज का पैदावार बढ़ाने में इस देश १०-१५ प्रतिशत किसान योगदान प्रदान करते हैं। रासायनिक खाद आदि का इस्तेमाल इसी वर्ग के ही किसान कर पाते । अनाज की उपज बढ़ाने के लिए करोड़ो रुपये के जो आपत्कालीन कार्यक्रम लागू किए गये, वे उत्पादन वृद्धि में योगदान न देकर बड़े किसानों और तत्संबंधित अधिकारियों को ही लाभ प्रदान कर सके। इन आकड़ों से स्पष्ट निष्कर्ष यही निकलता है कि गांवों में रहने वाले ४५ करोड़ लोगों में से सिर्फ ५-७ करोड़ ही लोग ऐसे हैं जो अनाज के मोर्चे की रखवाली करते हैं। शेष ३५-४० करोड़ ग्रामीणों में से लगभग २० करोड़ वे हैं जो गरीबी के निम्नतमस्तर पर पड़े भूमिहीन, खेतिह [illegible] कृषि से सम्बद्ध दूसरे व्यवसाय करते हैं। शेष १५-२० करोड़ किसान दरिद्रता के स्तर के कुछ ही ऊपर हैं।

अत: आज विशाल ग्रामीण आबादी की क्रयशक्ति इतनी न्यून है कि वे जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं से भी वंचित है। गरीब ग्रामीण किसानों की क्रय बढ़ाने के लिए भूमि सुधार अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु भूमि सुधार का अर्थ टुकड़े २ पर इस देश की अधिकांश जनता को फंसाकर देश के प्रबल औद्योगिक आग्रह को रोकना नहीं है। भूमि की सीमा अनार्थिक जोत वाली नहीं होनी चाहिए। जहां भूमिसुधार सुधार ठीक से क्रियान्वित किया जाय वहीं तीव्र औद्योगिकरण को भी प्रश्रय दिया जाय अन्यथा देश की भयंकर बेरोजगारी, कमर तोड़ महँगाई आदि की विकट समस्याओं से मुक्ति नहीं मिल सकती है। भूमि सुधार लागू कर और कृषि पर आधारित लघु उद्योग धंधे विकसित कर ही। हम देश के अधिकांश जनता की क्रयशक्ति बढ़ाकर आन्तरिक बाजार का विकास कर सकते हैं। तीव्र गति से औद्योगिकरण के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है।

यह तभी सम्भव होगा जब इस देश में पूंजीवाद विरोधी समाजवादी क्रान्ति सम्पन्न हो जाय क्योंकि भूमिसुधार से हम प्रत्येक ग्रामीणों को भूमि देने में असमर्थ हैं क्योंकि विशाल आबादी की अपेक्षा यहां भूमि सीमित है। यदि देश में उपलब्ध भूमि को प्रति परिवार (पांच आदमियों का) १५ एकड़ के हिसाब से भी वितरित किया जाय तो मात्र ३ करोड़ परिवार (अर्थात् १५ करोड़ लोग) ही भूमि प्राप्त कर सकते हैं। अत: देश की शेष ४० करोड़ से अधिक आबादी के लिए हमारे पास सिवा तीव्र औद्योगिकरण के अन्य कोई मार्ग नहीं है। अत: भूमि सुधार लागू कर समाजवादी क्रांति द्वारा तीव्र औद्योगिकरण ही हमारे ग्रामीण एवं देश की समस्याओं का एकमात्र हल है।

सम्पादकीय

युवा समाज की समस्याएँ और उनका कर्त्तव्य

मनुष्य श्रेष्ठ सामाजिक प्राणी है। समाज के बाहर मानवीय मूल्यों के साथ मानव का अस्तित्व असम्भव है। मनुष्यों में ज्ञान स्वयं उपार्जित नहीं होता है। यदि ऐसा होता तो अनुभव से बढ़ता और पैतृक संस्कारों के द्वारा आप ही आप वंशजों को मिलता। किन्तु ज्ञान नैमित्तिक है— दूसरे के निमित्त से मिलता है। अतः मनुष्य को स्वयं ज्ञान उपार्जित करने की स्थिति में पहुंचने के लिए एक निश्चित स्तर तक प्रारंभिक प्रावेशिक ज्ञान की नितान्त आवश्यकता है। मानव के अतिरिक्त सभी प्राणियों का जीवन सहज प्रवृत्ति से परिचालित होता है। परन्तु मनुष्य दूसरे के निमित्त से ज्ञान प्राप्त कर ही अपने जीवन का संचालन कर सकता है। अतः मनुष्य जाति के नियम बड़े विलक्षण हैं। उसके समस्त नियमों में मर्यादा है और मर्यादा में अपवाद है। शेष जितने प्राणी हैं, उनके लिए कुदरती नियम निश्चित है। वे उनको तोड़ कर अपवाद नहीं कर सकते हैं। परन्तु ज्ञान स्वातंत्र्य के कारण मनुष्य अपने नियमों को मर्यादित करता है और उस मर्यादा में ही अपवाद रखता है। मनुष्य के आहार और विहार आदि में मर्यादा और अपवाद दोनों पाये जाते हैं।

अतः मानव स्वभाव की इस युक्तिपूर्ण दार्शनिक व्याख्या से यह भलि भांति स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य, समाज की संचालक शक्ति से ही नैमित्तक और उच्च ज्ञान प्राप्त करेगा क्योंकि शिक्षा का सीधा सम्बंध समाज या देश के सत्ता के ढांचे से (Power Set-up) एवं उसके राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक स्वरूप से जुड़ा हुआ है। अतः समाज की इकाई मनुष्य, राज सत्ता के वर्ग चरित्र और देश में उपलब्ध आर्थिक व्यवस्था से अप्रभावित नहीं रह सकता है। मानवीय मूल्यों से सम्बंधित सभी समस्याएँ सत्ता से जुड़ी हुई हैं क्योंकि समाज का संचालन सत्ता से ही होता है। इसलिए सत्ता से जो शिक्षा-दीक्षा मिलेगी वहीं उसका आदर्श एवं व्यवहार होगा। ऐसी स्थिति में युवक समुदाय की समस्याओं को समाज के अन्य तमाम अंगो की समस्याओं से अलग रख कर व्याख्या करना सचाई से मुकरना है। कुछ लोग यह कहते हैं कि छात्रों अथवा नवयुवकों को राजनीति से अलग रहकर समाज और मानव संस्कृति के विषय में सोचना चाहिए। ऐसे लोगों की ईमानदारी पर समाज को संदेह करने का पर्[illegible] [illegible]शिक्ष[illegible] [illegible]पूर्ण प्रयास से नवयुवक गुमराह हो रहे हैं। युवक समुदाय तथा छात्र समुदाय आज राज-[illegible] से मुख मोड़ रहे हैं यद्यपि वे अच्छी तरह समझ रहे हैं कि सारे देश की समस्याओं के समाधान का प्रश्न शोषित वर्ग के मूल राजनैतिक प्रश्न से घनिष्ट रूप से जुड़ा हुआ है। आज हमारे समाज में वर्ग विभाजन एक वास्तविकता है। आज मनुष्य जाति अनेकों अन्तर्विरोधी वर्गों में विभक्त है। जिसमें विशेष रूप से दो वर्गों के अन्तर्विरोध की विशिष्टता विशेष रूप से परिलक्षित होती है। शोषक और शोषित अथवा आर्य और दस्यु। दूसरे शब्दों में एक पक्ष में अत्याचार से जर्जरित शोषित खान-मजदूर, श्रमिक वर्ग, खेत मजदूर, गरीब किसान और नीचले तबके के मध्यम वर्गीय तथा बुद्धिजीवी लोग और दूसरी तरफ बड़े-बडे पूंजीपति, व्यापारी, धनी किसान तथा इस शोषक वर्ग के हित में काम करने वाली शासन व्यवस्था है। यह विरोधी वर्ग और वर्ग संघर्ष समाज में उत्पादन के किसी निश्चित ऐतिहासिक विकास स्तर से उत्पन्न हुये हैं। अतः वर्ग विभाजन इतिहास के अनिवार्य नियम के अनुसार हो चुका है। इसे कोई नहीं इनकार कर सकता है।

अतः किसी भी समस्या का अध्ययन या आन्दोलन की दिशा तथा रफ्तार का निर्धारण इस ऐतिहासिक वास्तविकता की पृष्ठ भूमि के विश्लेषण द्वारा ही सम्भव है। आज वर्ग विभक्त समाज के अस्तित्व के कारण ही हमारे सामाजिक चेतना और मननशक्ति में अन्तर्विरोध है जिसके परिणाम स्वरूप समाज के अन्दर एक छोर पर शोषक और दूसरे छोर पर शोषित अनवरत संघर्ष में संलग्न हैं। इस ऐतिहासिक नियम के अनुसार चल रहे संघर्ष से ही हमारे राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक जीवन का परिचालन हो रहा है। अतः युवक समुदाय की समस्या अथवा युवकों के आन्दोलन को ठीक ठीक समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने समाज की सामान्य रूपरेखा अर्थात् वर्तमान राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति के सम्बंध में एक स्पष्ट और सही धारणा रखें। इन सभी पृष्ठ भूमियों को समझे बिना हम युवा समाज की समस्याओं को भलि-भांति नहीं समझ सकते हैं।

अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध लम्बी लड़ाई लड़ने के उपरान्त अपने देश को आजादी मिली। आजादी कैसी है? आज के बाद राजनैतिक व्यवस्था कैसी हुई? इन विषयों पर मत भेद हो सकता है। परन्तु देश के आजाद होने में किसी को

भी सन्देह नहीं है। मानव द्वारा मानव के शोषण से मुक्त समाज की रचना का लक्ष्य जो स्वाधीनता प्राप्ति से जुड़ा हुआ था, नहीं प्राप्त हुआ। शोषण के स्वरूप पर मतभेद हो सकता है। किन्तु इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि भारतीय समाज में शोषण, जुल्म और अत्याचार का शासन भारतीय जनता की छाती पर भारी बोझ की तरह स्वयं सवार होकर भारत की राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक नीतियों तथा व्यवहारों को नियंत्रित कर रहा है।

देश के शोषण के चरित्र का वर्णन करने के पूर्व युवक आन्दोलन और युवकों के सांस्कृतिक आन्दोलन के उद्देश्य के विषय में विचार करना अत्यन्त आवश्यक है। आदर्श और यथार्थ, सिद्धांत और व्यवहार एक दूसरे से घनिष्ट रूप से जुड़े हुए हैं। आदर्श की कसौटी असलियत है। अतः यदि युवक आन्दोलन, उनके सांस्कृतिक आन्दोलन और उनके ज्ञान-विज्ञान और आदर्श से जन जीवन का व्यवहारिक क्षेत्र प्रभावित नहीं होता तो युवकों के ये तमाम कार्यक्रम बिलकुल निरर्थक हैं। जब तक उनके आन्दोलन देश के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक पहलुओं को नियंत्रित नहीं करते हैं, जन जीवन को उन्नत नहीं बनाते तब तक उनके सांस्कृतिक तथा ज्ञान-विज्ञान की चर्चा से हमारे देश को कुछ भी लाभ नहीं है। ज्ञान-विज्ञान की चर्चा तथा शिक्षा का जीवन से परे कोई अर्थ नहीं है। शिक्षा और ज्ञान-विज्ञान की प्राप्ति का एक मात्र अर्थ है–जन जीवन में–दैनिक जीवन में उसका वास्तविक उपयोग जिससे जन जीवन असरदार रूप से प्रभावित हो। शिक्षा का एक विशेष तात्पर्य यह भी है कि शिक्षा मनुष्य को हर प्रकार के अन्याय, जुल्म, अत्याचार और शोषण के खिलाफ जनसाधारण को संगठित कर उनमें राजनैतिक शक्ति एवं चेतना का विकास करना सिखाती है जिससे जनता अपराजेय शक्ति के रूप में उठकर अन्त में देश के निरंकुश शासन को उखाड़ फेंक कर देश का भाग्य निर्णय कर सके। यदि शिक्षा का उद्देश्य इसके विपरित है तो समाज के व्यक्तियों में आत्मविश्वास और स्वतंत्रता की भावना नहीं उत्पन्न हो सकती और तब व्यक्तियों का सर्वांगीण विकास असम्भव है। मनुष्य, समाज का अंग होने के कारण अपने को समाज के अच्छे–बुरे प्रभाव से अलग नहीं कर सकता है। वास्तव में यदि समाज सड़ता है, क्षतिग्रस्त होता है, तो सम्पूर्ण मानव समाज की क्षति के साथ प्रत्येक की क्षति निश्चित है। इसलिए समाज की समस्या क्या है? क्यों आज का समाज द्रुतगति से अधः पतन को प्राप्त हो रहा है? इन सभी समस्याओं पर देश के नव युवक को सोचना पड़ेगा। यदि नवयुवक समाज इन समस्याओं के प्रति अपना कोई उत्तरदायित्व नहीं समझता और इनके प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्धारण नहीं करता और सामाजिक आन्दोलनों से वह अप्रभावित रहता है तो उनके ज्ञान-विज्ञान, संस्कृति और आदर्श की चर्चा मात्र ढकोसला बन कर रह जायेगी। प्रतिक्रियावादी अथवा समाज के परजीवी लोग इसे विशुद्ध ज्ञान की चर्चा कह कर इसकी प्रशंसा कर सकते हैं किन्तु कोई भी प्रगतिशील व्यक्ति इसे सही ज्ञान या विशुद्ध ज्ञान मानने के लिए तैयार नहीं। इसलिए जो युवक आन्दोलन, युवा संस्कृति आन्दोलन तथा युवा संगठन जन आन्दोलन और जन जीवन को प्रभावित नहीं करता, सामाजिक समस्याओं के प्रति हृदय[illegible] [illegible] सामाजिक प्रगति की भावना से लोगों को बेचैन नहीं करता, वह समाज के लिए निरर्थक है। अतः जब तक हमारे [illegible] नवयुवक देश और समाज की मूलभूत समस्या और उस समय की पृष्ठभूमि में अपने कर्त्तव्य का निर्धारण नहीं करते, तब तक ज्ञान-विज्ञान और संस्कृति की कोरी चर्चा मात्र मानसिक मनोरंजन और जनता को ठगने के साधन के रूप में ही परिणित रहेगी। आज जब स्वतंत्रता के २६ वर्ष बाद भी शोषण, अत्याचार तथा सामाजिक अन्यायों की बुनियाद पर स्थापित एक सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था अधिकांश जनता के सीने पर भारी चट्टान की तरह सवार है और समाज की समस्याओं के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है, तब युवा आन्दोलन तथा उनका सांस्कृतिक आन्दोलन इस मूलभूत राजनैतिक आन्दोलन से कैसे अलग रह सकता है। हमारे सामने जो समस्याएँ हैं उनका मूल कारण देश की वर्तमान राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक व्यवस्था है। इसीलिए प्रगतिशील युवा आन्दोलन शोषित जनता के बुनियादी राजनैतिक आन्दोलन से अलग नहीं रह सकता है। अतः आज युवक आन्दोलन की मूलभूत समस्या यही है कि उनके आन्दोलन शोषित जनता के शोषण से मुक्त होने के क्रान्तिकारी राजनैतिक आन्दोलन से कैसे संयुक्त हों। वर्तमान व्यवस्था को बदलना शोषण मुक्त नवीन व्यवस्था कायम करने के लिए अत्यन्त अनिवार्य है। आगामी उज्ज्वल भविष्य के मार्ग में आनेवाले बाधक पूंजीवादी उत्पादन सम्बन्धों को खत्म करना आज युवा समाज का पुनीत कर्त्तव्य है। आज भारत का वर्तमान समाज नवीन आदर्शों को जन्म देने के लिए प्रसव वेदना से व्याकुल है।

प्रत्येक देश में समाज के विकास के हर चरण में विद्यार्थी और युवा ही आगे बढ़ते हैं। समाज का व्यस्क समुदाय संदिग्ध अवस्था में रहता है अथवा रूढ़िग्रस्त होकर बिलकुल जड़ बने रहते हैं। अतः व्यस्कों से यह सम्भव नहीं कि वे समाज के अन्दर कोई तूफान उत्पन्न कर दे जो समाज की रूपरेखा को बदल डाले। अर्थात् ये व्यस्क सामाजिक परिवर्तन नहीं कर सकते, सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिए अन्त तक भी आन्दोलनों में वे कभी शामिल नहीं हुए, इतिहास इस बात का साक्षी है। समाज की रूपरेखा में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाले, नई सभ्यता के निर्माण के लिए तूफानी आन्दोलन करने वाले देश के नवयुवक ही होते हैं। ये युवक सिर्फ मध्यम और शिक्षित वर्ग के ही युवक नहीं होते हैं। शोषित वग से आने वाले ये किसान और मजदूर तथा छोटे दूकानदार आदि सभी तबके के होते हैं। (क्रमशः)

गिरिजेश्वर

आर्यसमाज तब, अब और आगे

● *विक्रम कुमार विवेकी*

अतीत के आर्यसमाज ने अपने तब के जीवनकाल में क्या क्या और कितना किया है इस बात की जानकारी हमें प्रसिद्ध विचारवान् व्यक्तियों की निम्न पंक्तियों से हो जाती है जब कि अमेरिका में बैठे हुये ऐण्डरो जैक्सन डेविस ने इस महान संस्था को एक प्रचण्ड देदीप्यमान अग्नि के रूप में देखा था और सम्पूर्ण भूमण्डल में इसके द्वारा परिवर्तन और नवनिर्माण की कल्पना की थी।

सर वैलेण्टाइन शिरोल ने तमाम भारत का दौरा करने के बाद अपनी किताब 'अनरैस्ट इन इण्डिया' की अन्तिम पंक्तियों में यह रिपोर्ट लिखी थी कि "जहां जहां आर्यसमाज है वहां वहां राजद्रोह प्रबल है।"

महात्मा गान्धी ने सत्याग्रह के परीक्षण के बाद यह घोषणा की थी कि 'जेलों में रहकर कष्ट सहने वालों में ८० प्रतिशत आर्यसमाजी हैं।"

इंग्लैंड के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री रैम्जे मैकडानल्ड ने स्वामी श्रद्धानन्द की तपस्या से खड़े गुरुकुल कांगड़ी का निरीक्षण करने के बाद ये महत्वपूर्ण बयान दिये थे कि "पहाड़ों और नदी के बीच में स्थित उस गुरुकुल नाम की भूमि में बच्चों को ऐसा प्रशिक्षण दिया जा रहा है कि जिनमें से एक भी ... शिक्षित ... नौकर बनने के लिये तैयार नहीं होगा। जिनके ... दलों में आत्मोत्सर्ग तक करके जूझने की भावनायें ठूसी जा रही हैं। माँ बाप से बिल्कुल अलग रखकर जिनको अलौकिक पाठ पढ़ा करके आर्यसमाज का सच्चा मिशनरी बनाया जा रहा है उनसे कदापि यह आशा नहीं की जा सकती कि वे किसी अत्याचार के आगे झुकेंगे।"

और एक अंग्रेज के ही शब्दों में जिसने उस जमाने में ये शब्द कहे थे कि "किसी भी आर्यसमाजी की खाल को खुरच कर देखो तो उसके अन्दर छिपा हुआ "क्रान्तिकारी देशभक्त" लिखा मिलेगा"।

वास्तव में उस समय आर्यसमाज की धमनियों में अत्याचार और शोषण को देखते ही खून खौलता था। एक अजीब उत्साह और उमंग उसके रग रग में व्याप्त था। अज्ञान, अन्याय और अभाव रूपी दानवों को समाप्त दरने के लिये वे लाल लाल खून बहाना जानते थे। श्रद्धानन्द, राजपाल, और लेखराम जैसों का शानदार बलिदान आज भी हमें चुनौती दे रहा है। जिस समाज के मस्त दिवाने और परवाने अपने स्वार्थ को लात मारकर परमार्थ की वेदी पर आहुत हो जाते थे जिसके प्रहरियों ने विद्वान बनकर कवि बनकर शास्त्रार्थ महारथी बनकर सेवक बनकर और बलिदानी बन करके विश्व का कायाकल्प करने की भूमिका अदा की है कौन से कारण हैं कि आज वह शिकायत की किताब लिये फिर रहा है?

लेखक इस लेख का विषय "तब का आर्यसमाज" नहीं बनाना चाहता। अब का आर्यसमाज कैसा और क्या है इसका इन पंक्तियों द्वारा बताता हुआ आगे बढ़ना चाहता है कि कहते हैं एक बार कुछ गुण्डे एक शरीफ आदमी को बाजार के बीच में मुक्कों, थप्पड़ों और डण्डों से पीटते हुये ले जा रहे थे। पर वह शरीफ आदमी मुस्कराता और हंसता चला जा रहा था। कुछ लोगों के द्वारा यह पूछे जाने पर कि तेरी तो मरम्मत होती जा रही है और तू हंस कैसे रहा है तो उस शरीफ का यह जवाब था कि ये गुण्डे देवदत्त को पीटना चाहते थे और मुझे ये देवदत्त समझकर पीट रहे हैं जब कि मैं यज्ञदत्त हूं। इसीलिये मुझे हंसी आ रही है।

उपर्युक्त शरीफ व्यक्ति पर हमें हंसी तो आ जायेगी पर वास्तविकता यह है कि आज आर्यसमाज की स्थिति भीकुछ ऐसी ही हो गई है। आर्य समाज का तो यह ठेका था और प्रण था कि या तो दुनियां में वह रहेगा या बुराइयां रहेंगी। आर्य समाज के रहते यह कैसे हो सकता था कि उसके शिर पर बैठकर दुष्ट, म्लेच्छ, और दस्युओं का गिरोह राज करता रहे और उसकी नजरों के सामने ठीक नाक के नीचे गौहत्या भी होती रहे, शराब भी फैलती रहे, गुण्डागर्दी, रिश्वत, चोरबाजारी आदि सब बुराइयां इसी के ही द्वारा बने आजाद देश में पनपती रहें। दुष्टों और नालायकों के हाथ कचहरियों में खुले आम न्याय की लाश तक को भी उछालते रहें। पर यह सब कुछ हो रहा है और यह शरीफ आर्यसमाज इस पर उबाल तक नहीं खाता। लेखक तो यह सारी जिम्मेदारी आर्यसमाज पर मानता है और सारे के सारे कृत्य जो आज हो रहे हैं इस में आर्य समाज का अपमान समझता है।

पर आज के नेता इसको अपना अपमान नहीं समझते। वही ठण्डी और ढीलमिल नीति से समाज की नैय्या को पार लगाना चाहते हैं। अपनी सभ्यता और संस्कृति को केवल मात्र सन्ध्या-हवन तक ही सीमित रखकर चोटी जनेऊ रख लेना और अहिंसा के वास्तविक स्वरूप को न समझकर थप्पड़ पर थप्पड़ खाते रहने में ही हम संस्कृति की पूजा समझे बैठे हुए हैं।

हम मनु की इस संस्कृति को भूले हुये हैं जो साफ आदेश करता है —

आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन् ।

आततायी को बिना विचारे ही मार देना चाहिये। संस्कृति के नाम पर एक व्यक्ति का खून होता हुआ देख कर हमारा दिल तो धड़क सकता है पर एक निर्दयी डाकू के हाथों हजारों मजदूरों को तड़फा तड़फा कर शोषण करने के दृश्य को हम भाग्यवाद के बाहों में सौंपकर निश्चिन्त बैठ जाते हैं।

भारतीय संस्कृति तो यह है कि हजारों मजदूरों को तड़फा तड़फा कर जो हिंसा बरती जा रही है ऐसी बड़ी हिंसा को रोकने के लिये अगर एक शोषक निर्दयी हिंसक की हत्या कर दी जाये तो दुनियाँ में यह सबसे बड़ा अहिंसा–धर्म है।

संस्कृति की पिलपिली परिभाषा को छोड़कर हमें अब प्रचण्ड सिंहनाद करना पड़ेगा। अब के आर्यसमाज की मान्यताओं में परिवर्तन लाकर के(जो स्वार्थी, अवसरवादी नेताओं के द्वारा घड़ी हुई है) सही नीतियों पर आधारित एक ऐसा राष्ट्र बनाने की जरुरत है जिसमें घोर विषमता न रह सके।

तब के आर्यसमाजियों ने बड़ा अनूठा काम कर के दिखाया। समाज के इतिहास के पन्नों को पलट कर देखो किस प्रकार से साधारण से साधारण आर्यसमाजी ने भी सिद्धान्तों के लिये अपनी कुर्बानी की है। नौकरी तक उन लोगों ने छोड़ दी पर समाज का सत्संग नहीं छोड़ा। आर्यसमाजी बनने पर यदि उनकी पिटाई तक भी हुई तो वे इस पर डटे रहे। बलिदान तक दे दिया पर समाज नहीं छोड़ा।

क्या वह युग अब नहीं आ सकता ? क्या वे सुनहरे दिन अब फिर नहीं लौट सकते ? यह सब कुछ हो सकता है पर इसके लिये कुर्बानी चाहिये कुर्बानी। हिम्मत हो तो आर्यसमाज विश्व का कायाकल्प कर सकता है। पर हम सरकार के साथ समझौता पूर्ण नीति 'जी हुज़ूर' भी बनाये रखें और इधर समाज में आकर्षण भी बनाये रखना चाहें यह कभी नहीं हो सकता।

हमें तो एक कांग्रेसी और उसके हिमायती का चेहरा भी वैसा ही दिखना चाहिए जैसे गौ की गर्दन पर छुरी रखे हुये एक कसाई का चेहरा दिखता है। आर्यसमाज तब तक तेजस्वी रहा जब तक वह संघर्षों से जूझता रहा और सरकार से भी टक्कर लेता रहा। आगे का आर्यसमाज भी तभी तेजस्वी बन सकता है जब वह तब के आर्यसमाज की तरह दुबारा लंगोटी बांधकर महाक्रांति का बिगुल फूंकने के लिये समराङ्गण में कूद पड़ेगा।

एक बात जिसको मैं विशेष रूप से कहना चाहता हूँ यह है कि अब आर्यसमाज आगे से अपने महान उद्देश्य को अपनाये और वास्तविक स्वरूप को समझे।

क्योंकि:—

उज्वल रहा अतीत, भविष्य भी महान है
अगर सुधारें हम, जोकि वर्तमान है।

पूर्वजों ने अपने कर्त्तव्य को निभाया। उस समय की मांग के अनुसार उन्होंने रूढ़िवाद, ढोंग, पाखण्ड और अन्धविश्वास पर प्रबल प्रहार किया। पर आज हमें युग की पुकार को समझना चाहिए। मानवता रोटी, कपड़ा और मकान मांग रही है। शोषण की चक्की में कराहती संस्कृति मानव को छोड़ चली है। अब हमारा सबसे परम पुनीत कर्त्तव्य यह है कि हम इसकी रक्षा करें। झूठे धर्म के नाम पर विषमता को भाग्यवाद पर न छोड़ें बल्कि "यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धि स धर्मः" जिससे लौकिक और पारलौकिक सुख प्राप्त हो वह धर्म है। शास्त्रों में पारलौकिक सुख के लिये लौकिक परमार्थ अनिवार्य बताया गया है। और लौकिक परमार्थ यही है और केवल यही है कि जब तक संसार के पेट में रोटी न पड़ चुका हो तब तक हम अपने पेट में न डालें। अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहते हुये प्रत्येक की उन्नति में अग्रसर रहें।

तो बताये कोई कि यदि संसार को रोटी खिलाने के महान उद्देश्य में यदि कोई बाधक बनकर हजारों का शोषण कर रहा हो तो इस महान उद्देश्य की प्राप्ति . . . हजारों की हिंसा रोकने के लिये यदि एक की हिंसा कर दी जाये तो क्या इसको अहिंसा नहीं समझनी चाहिये ?

वेद भी कहता है 'यदि नो गाँ हिंसी यद्यश्वं यदि पुरूषम् । तं त्वा सीसेन विध्यामो......'

कोई गौओं घोड़ों और पुरुषों को मारता हो तो उसको सीसों की गोली से सूट कर दो। यह है वैदिक संस्कृति जिसको अपनाकर हमें कटु कर्त्तव्यों को निभाने वाली आर्य सरकार बनानी है।

मौत का बेरहम इतिहास बदल सकते हो
पाप में पुण्य का विश्वास बदल सकते हो।
अपनी भुजाओं पर गर कर लो भरोसा तुम,
तो आर्यो! धरती क्या आकाश बदल सकते हो

आधुनिकता और अंग्रेजी पर्यायवाची नहीं

डा० वेदप्रताप वैदिक

कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि यदि अंग्रेजी हट गई तो देश के आधुनिकीकरण में बाधा पहुंचेगी। आज देश में जो भी आधुनिकता दिखाई पड़ती है, वह अंग्रेजी के कारण ही है।

ऐसी धारणा इसलिए बन गई है कि बहुत से लोगों ने आधुनिकता का ठीक-ठीक मतलब आज तक नहीं समझा है। वे अंग्रेजीकरण को, पश्चिमीकरण को ही आधुनिकीकरण मानते हैं। आखिर आधुनिकीकरण है क्या? अगर इस शब्द पर नजर डाली जाए तो काफी हद तक अर्थ स्पष्ट हो जाता है। जो अधुनातन है, बिल्कुल नया है, वह आधुनिक है। अंग्रेजी के 'मॉडर्नाइजेशन' शब्द की जो लेटिन धातु है, उसका अर्थ है—'बिल्कुल अभी'। याने जो अभी-अभी सामने आया है, पुराना नहीं है, वही आधुनिक है।

ये तो हुआ शाब्दिक अर्थ। लेकिन वास्तव में आधुनिकता का मतलब होना चाहिए—प्रकृति पर मनुष्य की विजय, सत्ता के विरुद्ध स्वतंत्रता का अभ्युदय, अन्धविश्वास के विरुद्ध तर्क का प्रतिष्ठापन और सामान्य दक्षता की अभिवृद्धि। क्योंकि ये सब बातें मनुष्य के सुदीर्घ इतिहास में प्राचीन काल के बजाय दो-तीन सौ वर्षों में विशेष रूप से उभरी हैं, [illegible] ही आधुनिक मूल्य या आदर्श कह सकते हैं। ये मूल्य किसी भी जाति या भाषा या देश की बपौती नहीं हैं। यह संयोग की बात है कि इनमें से अधिकांश मूल्य पहले यूरोप में प्रतिष्ठापित हुए। शायद इसीलिए लोगों को भ्रम हो जाता है और वे यूरोप की नकल को आधुनिकीकरण मानने लगते हैं। यूरोप की हर चीज आधुनिक नहीं है। यदि हर चीज को आधुनिक मानेंगे तो फासीवाद, नाजीवाद, साम्यवादी अधिनायकवाद–जैसी निहायत जंगली और आदिम चीज को भी आधुनिक और ग्राह्य मानना पड़ेगा।

खैर, हम बात कर रहे थे, भाषा और आधुनिकता के बारे में। यूरोप में जब पुनर्जागरण प्रारंभ हुआ, जब आधुनिकता ने यूरोप के द्वार खटखटाये तो सबसे पहला धक्का लगा, लेटिन के एकछत्र साम्राज्य को। एक साम्राज्यवादी भाषा के एकाधिकार को चुनौती दी, स्थानीय भाषाओं ने। जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी, डच, चेक, स्लोवाक आदि भाषाओं के जरिये राष्ट्रों ने अपने स्वतंत्र अस्तित्व की अभिव्यक्ति की। खुद लन्दन की स्थिति क्या थी? अदालत का काम, राज-काज का काम और बड़े-बड़े बौद्धिकों का लेखन लेटिन में चलता था। अगर कोई वकील अदालत में अंग्रेजी में बहस करता तो उस पर जुर्माना हो जाता था। अगर कोई लेखक लेटिन में नहीं लिखता था तो दूसरे दर्जे का बौद्धिक समझा जाता था। अंग्रेजी को गँवारों की भाषा माना जाता था। लेकिन ज्यों-ज्यों आधुनिकता की चेतना बढ़ी, जनता ने अपनी-अपनी भाषाओं के लिए जमकर संघर्ष छेड़ा। उनको परवान चढ़ाया। अपनी भाषा का, स्वभाषा का समुत्कर्ष आधुनिकता का एक अनिवार्य अंग है। शायद अधकचरे अंग्रेजीदां लोगों को इन तथ्यों का पता नहीं है, वरना वे भारत जैसे देश में अंग्रेजी को थोपने की बात नहीं करते। वे स्वयं अंग्रेजी के इतिहास से कुछ सबक लेने को तैयार क्यों नहीं हैं?

किसी भी राष्ट्र पर एक विदेशी भाषा का थोपना आधुनिकता के मूलभूत सिद्धांतों के विरुद्ध है। आपको एक ठोस उदाहरण देता हूँ। आप एक आधुनिक राज्य किसे कहेंगे? एक आधुनिक राज्य तो वही होगा जिसमें जनता राज-काज में पूरी तरह भाग ले। इसके विपरीत एक सामंतवादी, दकियानूसी, पोंगापंथी राज्य कैसा होगा? ऐसा होगा कि जिसमें 'कोऊ नृप होय हमें का हानि।' जनता को नीति-निर्माण से कुछ लेना देना नहीं। राजा की इच्छा ही कानून है या जैसा कि फ्रांस का लुई चौदहवां कहा करता था, "मैं ही राज्य हूं।" यह है–१७ वीं शताब्दी की बात, १८ वीं शताब्दी की बात, १९ वीं शताब्दी की बात। बिल्कुल भी आधुनिक नहीं। यही बात भारत की संसद में आज भी देखी जा सकती है। ५०० संसत्सदस्यों में से ४०० से भी ज्यादा गूंगे-बहरों की तरह सदन में बैठे रहते हैं। बहस में भाग नहीं लेते। सिर्फ हाथ उठा देते हैं। ऐसा क्यों होता है? क्या वे बोलना नहीं जानते? क्या वे राजनीति नहीं समझते? क्या वे अपनी जनता का प्रतिनिधित्व नहीं करना चाहते? नहीं नहीं, चाहते हुए भी वे बोल नहीं पाते, क्योंकि वे अंग्रेजी नहीं जानते। अंग्रेजी में बोलना प्रतिष्ठा की बात है। जो अंग्रेजी में बोलता है उसकी सुनी जाती है। प्रकाशवीर शास्त्री, राममनोहर लोहिया, अटलबिहारी वाजपेयी और मधु लिमये तो अपवाद हैं। ये नयी लीक खींचने वाले लोग रहे हैं। लेकिन जो अंग्रेजी भी नहीं जानते और हिन्दी भी नहीं जानते, वे क्या करें? जिन करोड़ों लोगों का वे प्रतिनिधित्व करते हैं, उनका नीति निर्माण में कोई हाथ

नहीं है, जैसे पुराने जमाने में राजा का दरबार कुछ 'रत्नों की सलाह पर चलता था चाहे वे नौ रत्न हों, चौदह रतन हों या चौबीस रतन, वैसे ही आज जो अंग्रेजी बोलने वाला रतन है, उसकी बहस से हिन्दुस्तान की संसद चलती है। क्या इसे आप एक आधुनिक संसद कहेंगे? क्या यह एक आधुनिक राज्य है? क्या यह प्रजातन्त्र है? यदि नहीं तो यह अंग्रेजी की मेहरबानी है।

दूसरा उदाहरण लीजिए। हमारे देश की नीतियां अंग्रेजी में बनती हैं। नेतृत्व के शिखर से लुढ़कती हुई नीतियां जनता के पाताल तक पहुंचते-पहुँचते या तो नदारद हो जाती है या वे अपना रूप खो देती हैं। हमारी पंचवर्षीय योजनाओं को या विदेश नीति के वक्तव्यों को हिन्दुस्तान की औसत जनता का कितना बड़ा भाग समझ पाता है? इसके विपरीत अंग्रेजी में बनी इन नीतियों को अमरीका और इंग्लेंड का हर गड्ढे खोदने वाला मजदूर भी समझ सकता है। क्या यह हिन्दुस्तान के आम आदमी के साथ छल नहीं हैं कि ताश के सारे पत्ते आप विदेशियों के सामने तो पसार देते हैं और हमारे देश की जनता से, जिसके खून-पसीने की कमाई से योजनाएं चलती हैं, छिपाने की कोशिश करते हैं। जब तक नीतियों को जनता अच्छी तरह समझेगी नहीं, वह सहयोग किस आधार पर करेगी? और इसके विपरीत जनता क्या चाहती है, यह भी तो शासकों को ठीक-ठीक पता चलना चाहिए। शासक लोक-भाषाओं की पुस्तकें नहीं पढ़ते, पत्रिका नहीं पढ़ते, अखबार नहीं पढ़ते। यदि आप यह जानना चाहें कि भारतीय जनता की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व कौन से अखबार करते हैं तो लोकभाषा के और अंग्रेजी के अखबारों के 'सम्पादक के नाम पत्र' स्तम्भों को उठाकर देखिए। अंग्रेजी अखबार जबकि बुद्धि विलास की नकली बहसें चलाते हैं, हिन्दी और लोक भाषाओं के अखबार एक औसत आदमी के दुःख-दर्द की करुण-गाथा पेश करते हैं। कुर्सी पर बैठे नेता को इस करुण-गाथा से कोई मतलब नहीं हैं, क्योंकि उसके लिए तो सच्चा जनमत अंग्रेजी अखबारों में प्रगट होता है। इसका नतीजा क्या होता है? जनता और नेता के बीच संप्रेषण नहीं होता और संप्रेषण, दोतरफा संप्रेषण आधुनिकता की पहली शर्त है।

दक्षता, आधुनिक समाज-व्यवस्था का एक अनिवार्य लक्षण है। याने कम समय में अधिक से अधिक काम करना और व्यवस्थित तरीके से करना। लेकिन अंग्रेजी की अनिवार्य शिक्षा ने करोड़ों बच्चों को दिमागी तौर पर अपाहिज बना दिया है। अंग्रेजी को रटने के चक्कर में बच्चे दूसरे विषयों की पढ़ाई पर भी ध्यान नहीं दे पाते। न वे अंग्रेजी अच्छी सीख पाते हैं और न ही दूसरे विषय! न खुदा ही मिला, न विसालेसनम! जब फेल होते हैं तो सबसे ज्यादा अंग्रेजी में फेल होते हैं। अगर एक बच्चा एक हफ्ते में ५ घंटे अंग्रेजी पढ़ने के लिए लगाता है तो हिसाब लगाइए कि वह १० साल तक में कुल कितने घंटे खर्च करेगा और देश के लाखों बच्चे क्या अपने जीवन के करोड़ों बहु-मूल्य घंटे अनिवार्य अंग्रेजी को सीखने में बर्बाद नहीं कर देते? १० साल तक अनिवार्य अंग्रेजी का घोटा लगवाकर देश के करोड़ों घंटे बर्बाद करने के बजाय बड़े होने पर इन्हीं बच्चों को एक या दो माह में गहन प्रशिक्षण के द्वारा कोई भी विदेशी भाषा सिखायी जा सकती है। पूना के मैक्समूलर संस्थान में आजकल डेढ़ माह में काफी अच्छी जर्मन सिखायी जाती है। यह है, आधुनिकता! कम समय में अधिक काम! मैंने स्वयं तीन मास की साधारण पढ़ाई में रूसी और पन्द्रह दिन के प्रशिक्षण में फारसी सीख ली। इसके अलावा, लाखों बच्चों को एक विदेशी भाषा सीखने की क्या जरूरत है? मुश्किल से हजार में से एक छात्र विदेश जाता है या शोध करता है और जो विदेश जाते हैं, वे सब इंग्लेंड और अमरीका ही नहीं जाते; दूसरे देशों में जाते हैं, जहां अंग्रेजी नहीं चलती। कुछेक हजार लोगों की विदेशी भाषा की जरूरतों को पूरा करने के लिए करोड़ों लोगों पर अंग्रेजी थोप देना वैसा ही है जैसे कि दो आदमियों की रोटी बनाने के लिए दस मन आटा गूंध लेना! मैं चाहता हूं कि दो आदमियों की रोटी के लिए कम आटा गूंधे और बढ़िया गूंधे। घास नहीं काटी जाए। अर्थात् विदेशी भाषाओं को थोक में पढ़ाने के बजाय, उत्कृष्ट कोटि के संस्थानों में नवीनतम विधियों के द्वारा उन्हीं को पढ़ायी जाएं, जिन्हे [illegible] जरूरत है। यह हुई आधुनिक दृष्टि! दुनिया के आधुनिक राष्ट्रों में यही हो रहा है। लेकिन आधुनिकता के नाम पर हमारे देश में उल्टी गंगा बह रही है।

जापान का उदाहरण हमारे सामने है। आधुनिकीकरण और औद्योगीकरण पहले शुरू हुआ भारत में। जापान में बाद में हुआ। लेकिन आज जापान भारत से मीलों आगे है। जापान ने पश्चिम के अनुभव का लाभ अवश्य उठाया लेकिन उसने अपनी भाषा को नहीं छोड़ा। अपने हजारों वैज्ञानिकों, किसानों, मजदूरों को उसने अपनी ही भाषा में सारा ज्ञान उपलब्ध कराया। कुछ चतुर अनुवादकों को तैयार करके उनसे हर विदेशी भाषा के ज्ञान का जापानी में अनुवाद करवा लिया। अगर भारत की तरह जापान भी अपने नागरिकों पर अनिवार्य जर्मन या अंग्रेजी थोप देता तो आज जापान इतना आगे नहीं बढ़ पाता। वैज्ञानिकों की जो शक्ति प्रयोगों में लगी, वह एक विदेशी भाषा को रटने में खर्च हो जाती, जैसा कि भारत में हुआ। दूसरे शब्दों में अंग्रेजी की अनिवार्यता ने भारत में आधुनिकता की गति को धीमा किया। ★

दुनियां को नर्क से स्वर्ग बनाने वाले—

गरीबों ! जागो ! संगठित हो जाओ !

बाबा सोहन सिंह भकना

(पहले विश्व-युद्ध के समय जब पराधीनता की कुचली हुई भारतीय जनता बिल्कुल निढाल हो चुकी थी, एक क्रान्तिकारी लहर ने राष्ट्र की सोई हुई आत्मा को झिंझोड़ कर रख दिया। इस लहर का श्रेय 'गदर पार्टी' को है।

गदर पार्टी १९१३ में, अमेरिका और कैनेडा गए हुए भारतीय श्रमिकों, निर्वासित देश भक्तों और हिन्दी के विद्यार्थियों के सामूहिक यत्नों द्वारा बनाई गई।

'गदर पार्टी' के सैंकड़ों वीर फांसियों पर झूल गए, जेलों में भयानक कष्ट सहे, लम्बी भूख हड़तालें कीं, किन्तु हर हालत में पराधीनता, अन्याय और लूट के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा। बाबा जी उसी 'गदर पार्टी' के एक सिपाही और पहले प्रधान थे)।

गरीबी मानव समाज में वह कलंक है जो मानव को इनसानियत से गिरा कर पराधीनता की गहरी खाई में फेंक देता है। गरीब अपने आप को भूलकर लालच और स्वार्थी वर्ग के पंजे में फंस जाता है, जिस वर्ग ने इसे कई किस्म के हत्थकण्डों से, जैसे :—

तलवार की पाशविक शक्ति,

आर्थिक क्षेत्र में पैदावार के साधनों से वंचित रखकर,

स्वर्ग के सब्ज बाग और नरक के डर दिखलाकर और इनकी कमाई को लूट कर विशिष्ट भोजन विलास करता है। सामाजिक दृष्टि से पूर्व कर्मों के सिद्धांत के नाम पर ऊँच नीच के आधार पर जातियों की बांट करता हैं। इसकी आड़ में सब निचली जातियों को विद्या से वंचित रखकर उनको असभ्यता के कुएँ में फेंक देता है। यहां तक कि अपनी भोग विलास की दुर्भावना को पूरा करने के लिए स्त्री जाति को शिक्षा का अधिकार भी नहीं देता। इस कूटनीति का परिणाम यह होता है कि समाज का वह परिश्रमी वर्ग जो समाज की सब आवश्यकतायें, खेती बाड़ी या दस्तकारी द्वारा पूरा करता है, अपने इन्सानी अधिकारों को भूल जाता है और इस मक्कार समूह को, जो समाज को मनुष्यता से गिरा कर पाश्विकता से भी बुरी हालत में रखता है, अपना सरदार या अन्नदाता स्वीकार कर लेता है। यह समूह राजनीति की आड़ लेकर राजे, महाराजे और सरदार आदि नामों से जनता पर अपना दबाव डालता है और यह घोषित करता है कि हम तुम्हारी जान और माल के रखवाले हैं। यदि हम न हों तो शक्तिशाली निर्बल को खा जायें। ऐसे ही लोगों के बारे में प्रसिद्ध है, "चोर भी और चालाक भी"

इसका दूसरा रूप पूंजीवाद है जो पैसे के सिर पर पिछड़े हुऐ देशों को सहायता के नाम पर ऋण देती है। इस तरह उनकी मंडियों पर कब्जा करके उन पर अपना अधिकार रखती है। जिसका उदाहरण अमरीका का पी०-एल० ४८० हमारे सामने है। इसके अनुसार अमरीका ने भारत, पाकिस्तान और दूसरे पिछड़े हुए देशों को ऋण दिया है। वह उस साहूकार की तरह है जो करजाई का भी खून चूस लेता है और साथ ही अहसान भी जतलाता है कि मैंने तुम्हारी गिरी हुई हालत को सुधारने के लिये सब कुछ किया है वरना मुझे कोई लालच न था।

मैं दूसरे देशों को नसीहत या सलाह देने नहीं बैठा हूँ। वे जाने और उनका काम। उन देशों की जनता ही अपने हानि लाभ को समझ कर अपने देश के भीतरी प्रबन्ध को ठीक कर सकती है। हां ! एक बात जरूर है। दुनियां भर के लुटेरे पूंजीवादी वर्ग का हानि लाभ लगभग मिलता जुलता है। चाहे उसके रूप भिन्न-भिन्न क्यों न हों, उनके वर्ग के हानि लाभ एक ही हैं। वे अपनी श्रेणी के हानि लाभ के लिए संगठित हो जाते हैं और संगठित हैं।

अब मैं भारतीय जनता को संबोधित करके अपनी राय पेश करना अपना कर्त्तव्य समझता हूं, क्योंकि मैं और मेरी गदर पार्टी जनता के छोटे से सेवक हैं और जनता का अंग भी। हमारा और परिश्रमी वर्ग का हानि लाभ दो नहीं एक ही है। गांधीवाद की तरह हम दो नावों में पैर नहीं रखते और न ही जनता को धोखा देते हैं कि पूंजीवाद और जनता का राज्य इकट्ठे रह सकते हैं और मिलकर चल सकते हैं। अर्थात् इनकी एकता संभव है। हम इस सिद्धांत को धोखा समझते हैं। जिस पूंजीवाद का युग अन्त पर है, उसकी आयु को बढ़ाने के ये धोखे पूर्ण नारे हैं। हमारा पूर्ण विश्वास है कि जिस तरह अन्धेरे और रोशनी का मेल नहीं हो सकता उसी तरह पूंजीवाद और समाजवाद का मेल असम्भव है। लूटे जाने वाले और लुटने वालों की एकता के वही अर्थ हैं जिस तरह चोर और घर के मालिक में समझौता की कोशिश करना।

आज का युग मेहनती जनता का युग है। इन्सान की सोच शक्ति अपने प्रकाश स्तम्भ के निकट जा पहुँची है। अब मेहनती जनता को कोई अन्धेरे में नहीं रख सकता। उसको ज्ञान हो चुका कि हमारी गरीबी का कारण, न कोई ईश्वर है और न नागलोक में बैठा धर्म-राज जो अमीरों के माथे पर अमीरी और गरीबों के माथे पर गरीबी लिख देता है। हमारा भाग्य हमारे हाथ में है, जिस तरह का चाहें बना लें।

वे यह भी समझते हैं कि हमारी गरीबी का कारण कौन और क्यों है? हमारी गरीबी का कारण न हमारे पूर्व जन्म के कर्म हैं और न ही ईश्वर और धर्मराज इसके जिम्मेदार हैं। अगर पूर्व जन्म के कर्मों के सिद्धान्त को ठीक भी माना जाय तो यह निर्णय करना पड़ेगा कि राजाओं, महाराजाओं, बादशाहों और पूंजीपतियों के कर्म शुद्ध हैं या परिश्रमी जनता के? यदि एक ऐसी हवा चल जाये जिससे दुनियां भर का मेहनती वर्ग मौत की गोद में सो जाए, तो दुनिया भर के इनसानों को मानना ही पड़ेगा कि सारी दुनियां का जीवन नष्ट हो कर नरक बन जायेगा। दुनियां के सब सुख दुःखों में बदल जायेंगे। इसके उलट दूसरी हवा चले, जिससे अमीर और पूंजीवादी वर्ग मौत के घाट उतर जाये तो आप देखेंगे कि दुनियां के सुख में जरा फर्क नहीं पड़ेगा। बल्कि दुनियां के सर से एक हराम खोर वर्ग का बोझ हलका हो जायेगा। क्या दुनियां का कोई समझदार इनसान उपरोक्त तर्क को झुठला सकता है? कभी नहीं। क्योंकि वह अच्छी तरह जानता है कि विलासिता में फंसे अमीर, पूंजीदार और चोरबाजार वर्ग केवल अपनी चालाकी से गरीबों का खून चूसते हैं। कम मजदूरी और ज्यादा काम। सस्ता खरीदना और महंगा बेचना। इस वर्ग को बेईमानी के सिवा आता क्या है? किसी सचाई का तो इनके दिमाग में नाम तक नहीं। क्या ऐसे ठग लोगों के पूर्व जन्म के कर्म शुद्ध हो सकते हैं? कौन सा ऐसा बे-समझ ईश्वर या धर्मराज होगा जो इनके माथे पर अमीरी का टीका लगा कर भेजेगा?

आप एक अमीर के सूट-बूट को देखकर वाह! वाह! कर उठते हैं कि देखो जी इनके सूट का कपड़ा और सिलाई! वाह! बूट तो किसी कारीगर ने बे-मिसाल बनाया है; परन्तु आपने कभी यह भी सोचा है कि जिसके गले में इतना बढ़िया सूट और पावों में इतने अच्छे बूट हैं, वह किसका कपड़ा बुना हुआ है, किसने इसकी सिलाई की है और बूट इतना सुन्दर किन हाथों ने बनाया है? जिसके शरीर पर सूट और पावों में बूट हैं वह तो इतना तुच्छ-बुद्धि है कि जो न ही नली में धागा डाल सकता है और न ही एक इंच कपड़ा बुन सकता है, न ही चमड़े को काट सकता है। और न ही बूट सी सकता है। तो फिर उसकी मन्द बुद्धि की प्रशंसा क्यों की जाय? क्या इसी लिए उसको अमीर माना जाये और उसकी प्रशंसा की जाये क्योंकि वह चालाक और ठग हैं, जो ठगी से पैसे कमाता है, कुछ पैसों के बदले मेहनत वालों की कमाई ठग लेता है और उनकी गरीबी से फायदा उठा कर विलासता पूर्ण जीवन बिताता है। यह गरीबी भी इस वर्ग की ही करतूतों का फल है जो तलवार और रुपये के बल से दूसरे मनुष्यों को उनके आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक अधिकारों से वंचित रख कर लाभ उठाता है। पूंजीवाद और अमीरी मनुष्य समाज के माथे पर एक धब्बा है। जब तक इस कलंक को मनुष्य समाज के माथे से दूर नहीं किया जाता तब तक मनुष्य समाज असली अर्थों में मनुष्य समाज कहलाने योग्य नहीं अपितु पशुओं का एक समूह हैं, जो एक दूसरे का खून चूस रहा है, मांस खा रहा है और इस दुनिया को स्वर्ग की जगह नर्क बना रहा है।

दूर मत जाइए। आधुनिक युग में यह वर्ग जो कुछ कर रहा है उस का अध्ययन कीजिए। यह मानना ही पड़ेगा कि बीसवीं सदी में मनुष्य समाज, ने, जो उसकी विरासत का कोष छिपा हुआ था, उसको पा लिया है। विज्ञान ने इस कोष की कुंजियां भी मनुष्य को सौंप दी हैं। यह कुंजियां भी पूंजीवादी वर्ग ने जनता की गरीबी से लाभ उठा कर वैज्ञानिकों से कुछ रुपये के बल से खरीद कर छीन ली हैं। वे स्वयं प्राकृतिक भंडारों पर कब्जा कर बैठे हैं। बमों और दूसरे परमाणु हथियारों के बल से पिछड़े हुए देशों को अपना गुलाम बना कर रखना चाहते हैं। अधिक उदाहरणों की आवश्यकता नहीं। सब कुछ आपकी आंखों के सामने हो रहा है। समस्त संसार अमरीका के इस काम की निन्दा कर रहा है। वह शक्ति के नशे में किसी की परवाह नहीं करता। रात दिन उतरी वीततनाम पर बम बरसा रहा है। बहाना यह है, "मैं दक्षिणी वीयतनाम की सहायता करता हूं ... हमारा मित्र है।" हालांकि यह दावा बिल्कुल झूठ है। अमरीका का कोई हक नहीं कि वह वीयतनाम के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप करे, परन्तु अमरीका की सरमायेदार टोली बमों और धन के बल से सारी दुनियां पर अधिकार जमाना चाहती है। बहाना यह है, "मैं अपने मित्रों को बचाने के लिए और वियतनाम की एकता और आजादी के लिए सब कुछ कर रहा हूं वरना मुझे अपना कोई स्वार्थ नहीं"। वाह! चनो के ढेर का गधा रखवाला' वाली कहावत आज अमरीका पर कितनी ठीक बैठती है। मतलब तो है वीयतनाम की जनता को लूटने का मगर यह बगुला भगत अमरीका जाहिर करता है कि मेरा

आदर्श कमजोरों को बचाना और सबल को शिक्षा देना है कि वे कमजोरों पर अत्याचार न करें। परन्तु इसकी यह नीति अब दुनियां की जनता के सामने नंगी हो चुकी है। अमरीका बमों और रुपयों के बल पर कमजोर देशों को अपना गुलाम रख कर वहां की जनता का खून चूसना चाहता है और उसकी तमाम बातें उस बगुला भगत वाली हैं जो मेंढकों को पकड़ कर खाने के लिए एक टांग पर खड़ा होकर अपने आप को तपस्वी बताता है।

दूसरे उनके साथी बगुला भगत अंग्रेज हैं। जो मुंह से तो कहते हैं कि हम अफ्रीका के लोगों को, जो दुनियां भर में पिछड़े हुए हैं, सभ्य बनाने के लिए रोडेशिया में ठहरे हैं। मगर उनकी काली करतूतों से दुनियां अनजान नहीं। दुनियां जानती है कि किस तरह हब्शी लोगों को पशुओं की तरह विदेशों में ले जाकर बेचा गया और पशुओं से भी बढ़ कर अमानवीय व्यवहार इनके साथ किया गया। अब न अमरीका, न अंग्रेज और न ही इनके दूसरे साथी अपनी [illegible] बातों और मोमन शक्ल से उठ रही नौ आबादियों और स्वतन्त्र हुई नौ-आबादियों को धोखा दे सकते हैं। अब पराधीन देशों की जनता जाग उठी है। अब न दुनियाँ भर में जागीरदारी और न ही सरमायेदारी राज्य स्थिर रह सकता है। इनका दौर समाप्ति पर है और मरने के निकट है और इनकी मौत जरूरी है। अब किस तरह मरना है यह इनके हाथ में हैं। अगर लड़ाई से मरना है तो कुछ घण्टों में नाश हो सकते हैं। यदि पूंजीवाद ने लड़कर मरने की गलती की तो स्वयं उसकी मौत तो होगी ही, परन्तु दूसरी बेगुनाह जनता को भी काफी नुकसान पहुंचेगा। बेहतर यही है कि अपने पिछले गुनाहों का पूंजीवाद पश्चाताप करे और सदा की नींद सो जाय।

गांधी का राम राज्य सत्ताइसवें साल में जा रहा है। इसने देश को विशेषतया गरीब जनता को जो बरकतें बख्शी हैं वह जनता से छुपी हुई नहीं। सब से पहली बरकत तो महंगाई है जिसकी वजह से आज गरीब जनता त्राहि त्राहि कर रही है। मध्य वर्ग और नौकरी पेशा तक की भी इस महंगाई ने वह हालत कर दी है जो विदेशी अंग्रेज के समय में भी नहीं हुई थी। सब को रोटी की चिन्ता खा रही है। यहां तक कि सरकारी कर्मचारी भी इसकी लपेट से नहीं बचे। सभी भूख हड़तालों, प्रदर्शनों और हड़तालों पर मजबूर हैं। हाहाकार कर रहे हैं। यही दशा विद्यार्थियों की भी है। उन पर दाखलों, फीसों और महंगी किताबों का इतना बोझ पड़ चुका है जो सहन शक्ति से बाहर है। सिवाय अमीरों के बच्चों के गरीब बच्चों के लिए आज शिक्षा के दरवाजे बन्द होने के बराबर हैं। गरीब विद्यार्थी आज सोचते हैं कि हमारी सरकार की पालिसी आज भी वही है जो विदेशी अंग्रेज की थी। भारतीयों को दफ्तरों में कलर्क बनाकर रखना और अंग्रेजी अफसरों के सामने कलम घसीटना। अन्तर केवल इतना ही है कि अंग्रेज विदेशी थे और आज का धनी वर्ग स्वदेशी है। जिनके पास रुपया है और जिनकी सिफारशें चलती हैं उन्हीं के बच्चे शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। ऊंचे पदों पर सिफारशों वाले ही बैठ सकते हैं। गरीबों के बच्चों के लिए सिवाय उनकी आधीनता के और कोई स्थान नहीं। यदि कोइ गरीब विद्यार्थी अपनी मेहनत और योग्यता से ऊंची शिक्षा प्राप्त कर भी ले तो फिर उसके लिए यह कठिनाई आती है कि बड़े बड़े आदमियों की सिफारश कहां से लाये।

ऐसी कठिनाइयों की शिकायत करने के लिये जब विद्यार्थी, कर्मचारी और अध्यापक आदि कोई भी प्रदर्शन करते हैं तो अहिंसा वादी गांधी रामराज उन पर लाठी चार्ज करने और गोलियां चलाने से भी परहेज नही करता। ऐसी सरकार के हिंसक कारनामे प्रतिदिन होते रहते हैं और फिर अपनी हिंसक नीति को छुपाने के लिये मुजाहरा करने वाल पर यह दोष लगाया जाता है कि उन्होने तोड़-फोड़ और लूट मार शुरु कर दी थी और कानून की रक्षा के लिने पुलिस को गोली चलानी पड़ी। तोड़-फोड़, गुण्डागर्दी और लूटमार के हक में कोई भी समझदार आदमी या पार्टी नहीं हो सकती। न ही इसके पीछे किसी राजनैतिक पार्टी का हाथ होता है। अगर इन प्रदर्शनी में कोइ तोड़-फोड़ हुई भी है या हानि होने का डर है तो गवर्नमेंट को एक निरपक्ष कमीशन नियुक्त करके जिसमें गैर सरकारी दूसरी पार्टियों के प्रतिनिधि भी हों जांच पड़ताल करवानी चाहिये, ताकि जनता के सामने तोड़ फोड़ करने वाले लोग नंगे हो जायें, परन्तु यह साहस गवर्नमेंट को क्यों नही होता? इसका कारण साफ ही है जो किसी हद तक नंगा हो चुका है। वह यह है कि गवर्नमेंट और उसकी C.I.D. से कोई बात छुपी हुई नहीं। लेकिन वह इन लोगों के हाथ डालने की जुर्रत नहीं रखती क्योंकि इन लोगों की सहायता से कांग्रेस चुनाव लड़ती है और उनके खरीदे हुए आदमी कांग्रेस के अन्दर और सरकार के ऊँचे-ऊंचे पदों पर हर एक विभाग में मौजूद हैं। उनकी ताकत और शह से ही चोरबाजारी और गुण्डागर्दी होती है। सरकार के जनता के हक में जो नाममात्र ऐलान होते हैं वह उनको भी फेल कर देते है। उदाहरणतया सरकार ने अभी अभी सस्ती दुकानें खोलने का एलान किया और व्यापारियों को कहा कि जो अनाज मण्डियों में आता है, आधा सरकार खरीदेगी और आधा व्यापारी। परन्तु चन्द दिनों के बाद रेडियो पर फिर कहा गया कि व्यापारी सरकार के साथ सहयोग नहीं देते। इसी कारण से अनाज मण्डियों में कम आता है और सरकार को मिलना कठिन है। क्या इसी का नाम सरकार है, जिसको समाजवादी सरकार कहा जाता है। गरीब जनता को धोखा दिया जाता है कि ठहरो! कुछ सालों में सरकार इस योग्य हो जाएगी और पैदावार इतनी बढ़ जाएगी जो जनता की जीवन की आवश्यकताओं से भी अधिक होगी। समाजवाद स्वयं आ जाएगा। गांधी राम राज्य में मनुष्य तो क्या कोई पशु भी भूखा नहीं मरेगा। धन्य है गांधी रामराज्य! ★

(क्रमशः)

समाचार दर्शन

युवक परिषद कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

कुरुक्षेत्र, १५ जून आर्य युवक परिषद् कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की मीटिंग सम्पन्न हुई, जिसमें युवक परिषद् के कार्य कर्त्ताओं पर सरकार द्वारा किये गये घृणित अन्याय पर विरोध प्रकट किया गया। परिषद् के कार्यकर्त्ताओं ने सर्वसम्मति से यह पारित किया कि यदि सरकार अजीतसिंह, विजयकरण एवं भूपिन्द्र सिंह पर चल रहे मुकदमों को वापिस नहीं लेगी तो युवक परिषद् को मजबूर होकर कठोर कदम उठाना पड़ेगा जिसके परिणामों का उत्तरदायित्व सरकार पर होगा। ज्ञातव्य रहे कि अजीतसिंह, विजयकरण व भूपिन्द्र सिंह को ८ अप्रैल कोलाडवा जलसे में निरपराध गिरफ्तार किया गया था। विजयकरण व भूपिन्द्र सिंह को दोबारा फिर से बिना किसी कारण गिरफ्तार किया गया था। दोनो समय उन्हें २०-२० हजार की जमानत पर रिहा किया गया है।

अजीतसिंह

सेवा में,

जी० एम०,

सुगर मील्ज, रोहतक

महोदय,

रोहतक के गन्ने का मिल जो गरीब किसानों और मजदूरों की खून-पसीने की कमाई से निर्मित है और जिसमें ६० प्रतिशत शेयर भी किसानों के हैं। अब कन्ट्रोल रेट से भी अधिक मूल्य पर किसानों को खाद व चीनी वितरित की जा रही है। परन्तु उस कन्ट्रोल का भी क्या लाभ जिससे उन्हें तुच्छ से लालच के कारण दुगनी हानि उठानी पड़ रही हो? इस भयंकर गर्मी में उन्हें दिन भर तपना पड़ता है। जितना कन्ट्रोल मिला उससे दुगना तो उनका किराये पर खर्च हो जाता है। कठिनाईयों और दिन की मजदूरी तो अलग रही। इस तपस्या के पश्चात भी उन्हें चीनी कम दी जा रही है।

तौल के लिये जबकि नये कांटे का प्रयोग हो चुका है, अब भी सदियों पुराने काठ की डांडी से तोला जा रहा है। आपत्ति उठाने पर किसानों को धमकाया जाता है। कम तोलते व इस प्रकार बची चीनी को बाहर बिना पास के भेजते तौलने वालों को कई बार पकड़ा जा चुका है। कारखाने के अधिकारियो को शीघ्र ही किसानों की कठिनाईयों की ओर ध्यान देना चाहिए।

भवदीय

अजीतसिंह, दरयावसिंह

गढ़ी (बलब) रोहतक।

सेवा में,

जी० एम०, सुगर मील्ज,
रोहतक।

श्रीमान जी,

निवेदन है कि आपके मिल में आपकी छाया के नीचे किसानों के साथ (जो इस मिल के जन्मदाता हैं) अन्याय हो रहा है। खाद व चीनी के वितरण के समय उन्हें इस भयंकर गर्मी में अत्यधिक परेशानियां उठानी पड़ रही है। खाद की बोरी के लिये उन्हें कम से कम दस या बारह दिन घूमना पड़ता है,

सन्तराम और मांगेराम जी जो चीनी कम तौलते हैं। वे इस प्रकार बची चीनी को बिना पास बाहर भेजते पकड़े भी गये हैं। नये कांटे की जगह काठ की डण्डी से चीनी तोली जा रही है। कहने पर धमकाया जाता है। अतः शीघ्र ही आप इनकी जांच पड़ताल करके व्यवस्था सुधारने का कष्ट करें।

भवदीय

सभी शेयर होल्डर

गढ़ी (बलब) रोहतक

तहसील रोहतक की आर्य-समाजों का विशाल सम्मेलन

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि तहसील रोहतक का आर्य महासम्मेलन २९, ३० जून ७४ को ग्राम भालौठ में धूमधाम के साथ सम्पन्न होने जा रहा है। जिसमें स्वामी भीष्मजी घरोण्डा, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी, प्रस्तोता स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी शक्तिवेश जी रेवाड़ी, डा० रामप्रकाश जी चण्डीगढ़, प्रो० बलजीत सिंह आर्य नरेला, रामधारी शास्त्री, जीन्द, गंगाराम एडवोकेट अध्यक्ष दलितोद्धारसभा गोहाना, विक्रमकुमार विवेकी, डा० महासिंह सोनीपत, स्वामी योगानन्द भिवानी, आचार्य हरिदेव रोहतक, आचार्य यशःपाल गुरुकुल मटिण्डू, ब्र० रामकिशन जी क्रांतिकारी भजनोपदेशक, खेमसिंह जी पलवल, पं० चन्द्रभान जीन्द, विक्रमसिंह जी रोहतक आदि विद्वान् नेता एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

इस अवसर पर स्वामी भीष्म जी की अध्यक्षता में विशाल भव्य जलूस का आयोजन किया गया है जो निकटवर्ती ८-१० गांवों में घूमता हुआ भालौठ में पहुँचेगा। सभी आर्यसमाजों से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक सहयोग देकर आर्यों की संगठन शक्ति का परिचय दे। प्रत्येक आर्यसमाज एवं गांवों के लोग ट्रैक्टर ट्राली में अपना मोटो लगा कर भारी संख्या में पहुंचें। साइकिल, घोड़े, जीप, मोटर साइकिल एवं स्कूटर वाले अपना-अपना साधन लेकर जलूस की शोभा बढ़ायें। जलूस २९ ता० को दिन के ३ बजे प्रारम्भ होगा। भोजन व्यवस्था भालौठ गांव की ओर से होगी।

संयोजक

पं० रामचन्द्र आर्य, उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्यसभा जिला जीन्द का विशाल महा सम्मेलन

आप सभी को जानकर खुशी होगी कि आर्य सभा जीन्द का विशाल सम्मेलन ५ जुलाई १९७४ को दोपहर ग्यारह बजे अनाज मण्डी जीन्द में होगा। जिसमें पूज्य स्वामी भीष्म जी घरौण्डा, आर्य-प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी, आर्यसभा के अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश जी, हरयाणा आर्य सभा के महामन्त्री श्री रामधारी शास्त्री, डा० रामप्रकाश जी चण्डीगढ़, बिशनसिंह एडवोकेट कैथल धर्मवीर जी प्रधान आर्य सभा हिसार, पं. रामचन्द्र जी रोहतक, शोभाराम जी प्रेमी, पं. चन्द्रभान जी, ब्र. रामकिशन जी आदि क्रांतिकारी नेता व भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आप सभी से प्रार्थना है कि ठीक समय पर पहुँच कर सम्मेलन की शोभा बढ़ायें।

निवेदक

वेदप्रकाश मन्त्री आर्यसभा जीन्द

आर्य युवक परिषद शिक्षण शिविर सम्पन्न; स्वामी इन्द्रवेश द्वारा दीक्षान्त भाषण

रेवाड़ी, १६ जून हरयाणा आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में स्वामी शक्तिवेश द्वारा आयोजित यहां स्थानीय वैदिकआश्रम में अस्सी युवकों का शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में स्वामी अग्निवेश, स्वामी वेदानन्द, डा० विरजेन्द्र, धर्मपाल एडवोकेट आदि ने वैदिक सिद्धान्तों के बौद्धिक प्रशिक्षण द्वारा तथा योग्य व्यायामशिक्षकों ने दण्ड-बैठक, आसन प्राणायाम, लाठी, छुरा तथा स्तूपी का शिक्षण देकर युवकों में चेतना फूंकी।

आज यहां एक विशाल सभा में दीक्षान्त समारोह मनाया गया। जिसमें जिला के हजारों आर्य समाजियों ने भाग लिया। इस अवसर पर डा० महासिंह, गंगाराम एडवोकेट, शोभाराम प्रेमी ने अपने विचार रखे। क्षेत्र की आर्य समाजों द्वारा दो तपस्वीयों स्वामी भजनानंद तथा महाशय हीरालाल का अभिनंदन किया गया। स्वामी इन्द्रवेश ने योग्य युवकों को पारितोषिक प्रदान किया तथा प्रेरणाप्रद दीक्षान्त भाषण दिया। युवकों के व्यायाम प्रदर्शन से जनता गदगद हो उठी।

★★

वेद सप्ताह पर आर्य विद्वानों की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से प्रतिवर्ष जुलाई से सितम्बर तक ३ मास तक वेद सप्ताह मनाया जाता है। हरयाणा में भी वेद सप्ताह इस वर्ष सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि ऋषि ग्रन्थों की कथाओं के रूप में मनाने का निश्चय किया है। अतः आर्य विद्वानों, आचार्य, शास्त्री, प्राध्यापकों तथा स्वाध्यायशील महानुभावों से निवेदन है कि इस पवित्र कार्य के लिए अपना अमूल्य समय अवकाश के दिनों में कम से कम एक सप्ताह का प्रदान करने की कृपा करे। अपनी सुविधा के अनुसार तिथियां लिख कर रोहतक कार्यालय को सूचित करने की कृपा करें, ताकि आदरी रूप में समय का सदुपयोग किया जा सके।

विनीत

रामचन्द्र आर्य, सभा उपमन्त्री

★★

सूचना

ज्ञात हो कि आर्य विद्या परिषद् पंजाब का कार्यालय दीवानहाल तीसरी मंजिल दिल्ली में आ जाने से स्वामी अग्निवेश जी रजिस्ट्रार परिषद् प्रायः वही मिलते हैं। प्रेमी महानुभाव निजी रूप में या फोन नं. २७६८०६ पर सम्पर्क कर सकते हैं।

'पंजाब आर्य युवक परिषद' के तत्वाधान में विशाल ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर

ज्ञानाश्रम हायर सैकेन्डरी स्कूल अमृतसर में दिनांक ७ जुलाई से १४ जुलाई १९७४ तक।

नवयुवकों को आचारशीलता धार्मिक एवं राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत करने के उद्देश्य से ३०० युवकों के शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें योगासन, प्राणायाम, लाठी आदि के प्रशिक्षण के साथ-साथ विभिन्न विषयों के विद्वानों द्वारा बौद्धिक प्रशिक्षण भी दिया जायेगा। प्रवेश शुल्क दस रुपये प्रति युवक होगा। प्रत्येक युवक को खाकी निकर, सफेद बनियान [बिना बाजू के], लंगोट, लाठी (कदानुसार) सफेद जूता, सफेद मोजा, धोती या पायजामा, डायरी, कलम, एक लोटा, कटोरी और थाली तथा ऋतुनुकूल बिस्तर अपने साथ लाना होगा। भोजन आवास इत्यादि का प्रबन्ध परिषद की ओर से होगा।

इच्छुक युवक ३० जून तक अपनी योग्यता सहित प्रार्थना-पत्र निम्नलिखित पते पर भेजें।

संयोजक शिविर
द्वारा आर्यसमाज, लक्ष्मणनगर,
अमृतसर [पंजाब]

विनीत

हेमा आर्य मन्त्री — **वेदानन्द सरस्वती** प्रधान

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में ६ से १० वर्ष तक की आयु के नये ब्रह्मचारियों का प्रवेश १ जुलाई, १९७४ से होगा। शिक्षा निःशुल्क है तथा सभी छात्र अनुशासनमय सादा जीवन व्यतीत करते हुए विशेष देखरेख में छात्रावास में रहते हैं। भोजन आदि का वास्तविक व्यय ही लिया जाता है। नियमावली निःशुल्क मंगायें।

परीक्षाओं में गड़बड़ घोटाला, शिक्षक वर्ग के घिनौने चेहरे

योगेश राही

देश में चारो ओर से विद्यार्थी वर्ग पर हर रोज नये २ आरोप लगाये जाते हैं, अनुशासनहीन, दिशाहीन, नकारवादी, आस्थाहीन, पथभ्रष्ट, लक्ष्यहीन, हिंसावादी और भी न जाने कितने ही आरोपों के घुटनमयी वातावरण में घुट रही है यह देश की युवापीढ़ी। परीक्षाओं के दिनों में विद्यार्थी वर्ग पर यह आरोप लगाया जाता है कि वे नकल करते हैं। मानता हूं वे नकल करते हैं, परीक्षा भवनों में ही नहीं, जीवन के हर क्षेत्र में नकल करते हैं, नकल करते हैं पश्चिमी सभ्यता की, अपने परम पूज्य पिताओं की, नैतिक मूल्यों के ठेकेदार अपने शिक्षकों की। कहने का अभिप्राय यह है कि वर्तमान शिक्षा पद्धति जो कुछ भी अक्ल इन्हें दे पाती है वह उसका शत प्रतिशत प्रयोग करके जीवन भर नकल करने में लगा रहता है।

नकल करने का सिलसिला कुछ कुछ यूं आरम्भ होता है। शिक्षक को पढ़ाने के लिए ४० मिनट दिये जाते हैं। विद्यार्थी काल में मैंने स्वयं इस बात को नोट किया है कि शिक्षक १० मिनट 'लेट' आता है, १० मिनट हाजरी लेने में बिता देता क्योंकि वह उसका जन्मसिद्ध अधिकार है, १० मिनट पहले छोड़ देना तो कालेजों में एक आम रिवाज बन गया है। बाकी रहे १० मिनट अब आप स्वयं अन्दाजा लगा लीजिये कि १० मिनट में शिक्षक क्या पढ़ायेगा और विद्यार्थी क्या पढ़ेगा?

यही नही कालेज में अधिक से अधिक १२० दिन पढ़ाई होती है। और उसमें भी कभी खेल, कभी भाषण प्रतियोगिता, कभी नाटक, कभी संगीत, कभी कवि सम्मेलन और कभी वैचारिक बातचीत होती। औसत ८० दिन ठीक ढंग से पढ़ाई के लिये बचते हैं। इसमें भी कई शिक्षक तो क्लास को हाजरी लेकर कई बार छोड़ देते हैं। एक साल हमें प्रधानाचार्य महोदय पढ़ाते थे, कभी उनकी मिटिंग, कभी बाहर दौरा, कभी मैनेजर का आगमन, कभी कुछ और कभी कुछ होता रहता था। परिणाम स्वरूप 'आर्थिक समस्याऐं' विषय विद्यार्थियों के लिए एक जबरदस्त सिरदर्द बन गया।

प्रश्न यह उठता है कि इतना सब कुछ शिक्षा संस्थाओं में होने के बावजूद भी विद्यार्थियों को नकल का दोषी ठहराया जाता है। परीक्षायें आरम्भ होते ही पुलिस, विश्वविद्यालय के विशेष अफसर विद्यार्थियों को नकल कराने में जूट जाते हैं। जो विद्यार्थी बदकिस्मती से फँस जाता है, उसके लिए विश्वविद्यालय के पास '३ साल' का प्रमाणपत्र पहले से तैय्यार करके रखा होता है।

पिछले साल परीक्षायें हो रही थीं। अचानक विश्वविद्यालय का विशेष 'फ्लाईंग स्कैयड' आ गया। हाल में एक ने एक विद्यार्थी को नकल करते रंगे हाथों पकड़ लिया। सारे हाल में सन्नाटा सा छा गया।

तभी लड़का बोला 'जी आप चाहते क्या हैं? चाहते क्या हैं? एक तो नकल कर रहे हो, ऊपर से रौब? लड़का फिर बोला 'जी क्या इस तरह लड़कों को पकड़ने से नकल रुक जायेगी?' नहीं तो, और किस तरह रुकेगी?' अफसर ने कहा। लड़के को गुस्सा आ गया और बड़ी तेजी से बोला हजूर चोर को पकड़ने से चोरी खत्म नहीं हुआ करती, यदि आप नकल को रोकना चाहते हो तो पहले चोर की माँ को पकड़ो (नवभारत टाइम्स में यह घटना प्रकाशित भी की गई थी)। ताकत के नशे में, अफसर ने लड़के को धमकाया भी और 'केस' बना कर भेज दिया।

असली कहानी यहीं से प्रारम्भ होती है। चोर की मां कौन है? यह एक प्रश्न था जो ऊपर एक पहेली सा बन कर रह गया है। लड़के ने जो कहा 'चोर की मां' उससे उसका अभिप्राय उन शिक्षकों की तरफ इशारा था जो स्वयं अपने लड़कों को, रिश्तेदारों को, और लड़कों की भाषा में अपने 'चमचों' को स्वयं नकल कराते हैं। नकल का सिलसिला यहीं खत्म नहीं हो जाता। यह तो रही नीचे के स्तर की हेराफेरी जो ऊपर के स्तर पर हेराफेरी की जाती है उसके बारे में बहुत कम लोगों को पता है।

मैं कॉलेज में वाणिज्य का विद्यार्थी रहा हूं। वाणिज्य में पंजाब विश्वविद्यालय द्वारा २०% की इन्टरनल ऐससमेंट निर्धारित की गई है। इस २०% ऐससमैण्ट के लिए कामर्स के शिक्षक जिस पैमाने पर विद्यार्थियों को परेशान करते हैं, उस परेशानी को विद्यार्थी ही जान सकता है। मैंने इस दर्द को बहुत नजदीक से सहा है और भोगा भी है। ऐससमेंट की धमकी से १०० रु० से लेकर १५० रु० तक की ट्यूशन रखने के लिए लड़को को मजबूर किया जाना तो आम

निता लड़के को भेज देता है तो विश्वविद्यालय कानून के अनुसार वह पास नहीं हो सकता, चाहे उसके कितने ही नम्बर पेपर में क्यों न आ जाये ? स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय की इस अपमान जनक शर्त ने शिक्षकों को विद्यार्थियों को शोषण के लिए अधिक छूट दी है।

मेरे साथ कामर्स के विभागाध्यक्ष का लड़का भी पढ़ा करता था। दिसम्बर की परीक्षाओं में हर विषय में वही प्रथम आता था क्योंकि अध्यापकों पर बाप का रोब और दोस्ती दोनों ही काम करती थीं। फलस्वरूप सबसे अधिक ऐससमैंन्ट जाती थी, यही नहीं परीक्षा में भी सभी अध्यापक 'तन-मन-धन से उसकी सहायता करते थे। बाकी रही सही कमी सब एगजामिनर के घर जाकर पूरी कर दी जाती थी।

विश्वविद्यालय द्वारा गुप्त नम्बर लगाये जाने की पद्धति भी इनके लिए कोई विशेष रुकावट नहीं होती थी। कहने का अभिप्राय यह है कि जहां शिक्षक वर्ग अपने निहित स्वार्थों के लिए, विश्वविद्यालय के कर्मचारी रिश्वत के लिए, जब इतने बड़े गड़बड़ घोटाले कर सकते हैं और करते है तो बाकी विद्यार्थियों को नकल करते पकड़ना कहां तक उचित है ? आवश्यकता इस बात की नहीं हैं नकल करते विद्यार्थियों को किस प्रकार पकड़ा जाये। बल्कि आवश्यकता इस बात की है कि विश्वविद्यालय के उच्च अधिकारी जरा आँख खोल कर सत्य को देखें और समस्या का गहराई से अध्ययन करें। शिक्षा पद्धति और परीक्षा पद्धति में आमूल चूल परिवर्तन किये बिना इस समस्या का समाधान नितान्त असम्भव लगता है। और वर्तमान स्थितियों को देखते हुए शिक्षक वर्ग को भी यह सोचना चाहिए कि वह देश की युवा पीढ़ी को अपने नीजी धनलोलुपता और स्वार्थपरता के कारण पतन के गहरे गर्त की ओर न बढ़ायें।

वास्तव में आज के शिक्षकों के चरित्र से, चाल-चलन तथा व्यवहार से ऐसा कुछ भी आदर्श प्रदर्शित नहीं होता जिसको देखकर छात्रवर्ग कुछ सीख पाये। दूर देहात से आया हुआ कोई किशोर जो ईमानदार और स्वस्थ हो, दयानन्द, विवेकानन्द, प्रेम चन्द, शरतचन्द आदि के आदर्शों से प्रेरित हो, अब तक विलासिता का दास न बना हो, जब शहर में आकर देखता है कि मास्टर साहब सिर्फ अपनी दाल, रोटी में ही लगे हैं अथवा विलासिता में ही डूबे हुये हैं तो फिर वह किशोर सिखेगा क्या ? आज जिधर भी नजर डालें पतन ही पतन दिखाई देता है। जो गुरु हैं, ज्ञान देने वाले हैं, उनके पास कोई आदर्श नहीं रह गया। आज स्वयं वे पथभ्रष्ट हैं, शिक्षा को भी उन्होंने दयनीय स्थिति की जिम्मेदारी मात्र शिक्षक समुदाय पर है—ऐसी बात नहीं है। यद्यपि सम्पूर्ण उत्तरदायित्व पूरे समाज पर ही है, फिर भी यह सही है कि प्रत्येक व्यक्ति पर भी कुछ न कुछ उत्तरदायित्व अवश्य ही रहता है। यदि कोई सोचता हो कि सामाजिक परिस्थितियों से वह चोरी करने को मजबूर कर दिया गया है, अतएव चोर बनने का उसका अधिकार है तो ऐसा सोचना उचित नहीं होगा। प्रत्येक व्यक्ति को, सामाजिक वातावरण को प्रभावित करने के उद्देश्य से अपनी स्वतंत्र भूमिका को निभाना है क्योंकि एक मनुष्य होने के कारण हर व्यक्ति की थोड़ी बहुत निजी भूमिका अवश्य रहती है। अपने पतन के लिए स्वयं वह व्यक्ति ही उत्तरदायी है। इसी प्रकार चरित्र निर्माण कार्य में भी प्रत्येक व्यक्ति को कुछ कर्त्तव्य पालन करना पड़ता है।

शिक्षक शिक्षक बनकर रहे, भक्षक बनकर नहीं। प्राध्यापकीय ठेकेदारी अगर समाप्त न हुई तो देश की क्षुब्ध युवापीढ़ी शिक्षक वर्ग के चेहरों पर ढके हुये नकाबों को उतार फेंक देगी और तब 'ठेकेदारी' के पीकदान में पड़ी मनों पीप में सड़ने के सिवा शिक्षक वर्ग के नाम पर इस कलंक के लिए दूसरा कोई चारा नहीं होगा।

वैश्य कालेज रोहतक

पंजाब प्रान्तीय स्तर पर आर्य युवक परिषद अमृतसर की ओर से शिविर

"भ्रष्टाचार और मिलावट" के देश व्यापी वातावरण से कौन है जो ऊब न गया हो। सिसकते और कराहते हुये इस घिनौने वातावरण में धन्य है युवा शक्ति। देश की एक-मात्र आशा का एक विशाल आयोजन 'ब्रह्मचर्य साधना शिविर' जो कि ८ जुलाई से १४ जुलाई तक पूज्य स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में हिन्दू सभा हा० सै० स्कूल ढ़ाब खटीकाँ अमृतसर में लगाया जा रहा है। शुल्क केवल दस रुपये।

सभी नवयुवक साथियों से प्रार्थना है कि वे अपने साथ दो सैण्डों बनियान, खाकी नेकर, लंगोट, सफेद प्लीट, सफेद जुराब, एक लाठी, एक डायरी, एक पैन, एक लोटा, एक कटोरी, एक प्लेट, एक चम्मच तथा ऋतानुकूल बिस्तर अवश्य लायें। और ७ जुल ई शाम को पहुँच जायें।

भवदीय
प्रो० विनोदपाल, प्रधान
आर्य युवक परिषद, अमृतसर

पंजीयन क्रमांक **RTK 28**
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

राजधर्म
रोहतक
२७ जून १९७४

हमारे विशेष उपहार

तथा

स्वर्ण मिश्रित औषधियाँ

च्यवनप्राश
उत्तम पौष्टिक रसायन है। दैनिक नाश्ते में च्यवनप्राश का सेवन शरीर को बलिष्ठ बनाता है। अब दो किलो के पैकिंग में उपलब्ध है।

सिद्धमकरध्वज
यौवन को स्थिर रखता है। शरीर में ताजगी लाता है।

बसन्त कुसुमाकर रस
पेशाब अधिक आने को कम करता है एवं समस्त मूत्र विकारों में लाभदायक है।

योगेन्द्र रस
अनिन्द्रा, बेचैनी, अंगों की शिथिलता में सेवन कीजिए।

श्वास चिन्तामणि रस
श्वास रोगों में लाभप्रद है।

महालक्ष्मी विलास रस
उत्तम शक्तिवर्धक रसायन है।

चन्द्रप्रभावटी
शरीर में शक्ति एवं ताजगी पैदा करती है।

गुरुकुल कांगड़ी चाय
खांसी, जुकाम, ज्वर को दूर कर शरीर में ताजगी लाती है। दैनिक प्रयोग के लिए सर्वोत्तम है।

निर्माता गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

जिला: सहारनपुर : रेलवे स्टेशन हरिद्वार। दूरभाष : ७३

शाखा कार्यालय
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, ६३, गली राजा केदारनाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६। दूरभाष: २६१४३८

... के लिए राजधर्म प्रेस, झज्जर रोड, रोहतक से स्वामी अग्निवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। फोन। ८८...

❀ ओ३म् ❀

पाक्षिक

राजधर्म



प्रधान सम्पादक
स्वामी अग्निवेश

सह सम्पादक
गिरिजेश्वर

जुलाई प्रथम
वर्ष ६ : अङ्क १३
वार्षिक शुल्क १५ रु०
एक प्रति ७० पैसे

युवक समुदाय के प्रति

संस्कृत में समाचार का प्रसारण

गरीबो ! जागो ! संगठित हो जाओ

वेद और समाजवाद

अँग्रेजी और समाजवाद

हरयाणा में सम्मेलनों की धूम

आर्य सभा की अन्तरंग ने ६ जुलाई को एक स्वर से "पांच मिनट तक संस्कृत में समाचार प्रसारण" का हार्दिक समर्थन किया और कहा कि यद्यपि सरकार का यह निर्णय विलम्ब से हुआ है कि फिर भी यह भारतीय जनता के लिए अत्यन्त शुभ निर्णय है। संस्कृत एक ऐसी भाषा है जो भारत में बोली जाने वाली सभी भाषाओं से ही नहीं विश्व की अधिकांश भाषाओं से घनिष्ट रूप से सम्बन्धित है। संस्कृत भाषा को समझने वाले काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और अटक से लेकर कटक तक फैले हुए हैं। यह ठीक है कि संस्कृत समझने वालों की संख्या बहुत कम है लेकिन जब दो प्रतिशत अंग्रेजी समझने वालों के लिए आकाशवाणी के अधिकांश समय का बलिदान किया जा सकता है तब संस्कृत के लिए पांच मिनट प्रदान करना कोई अपराध नहीं है।

भारत का सम्पूर्ण प्राचीन साहित्य केवल मात्र संस्कृत में ही उपलब्ध है। यह इस बात का प्रबल प्रमाण है कि संस्कृत एक ऐसी भाषा थी जो प्राचीन काल में समस्त भारत में सरलता पूर्वक बोली और समझी जाती थी। साहित्य के अतिरिक्त विज्ञान और कला का ऐसा कोई भी क्षेत्र न था जिसकी पुस्तकें संस्कृत में न हो। अतः पाठ्य पुस्तकें संस्कृत में ही उपलब्ध होने के कारण शिक्षा संस्कृत में ही प्रदान की जाती थी। ज्योतिष, खगोल, औषध, आधिभौतिक, मनोविज्ञान, तर्क, नैतिक–दार्शनिकता, विधि, प्राणिशास्त्र, कीटशास्त्र, भौतिकी, इतिहास, भूगोल, चित्रकला, शिल्पकला, स्थापत्यकला, सांख्यिकी अथवा गणित आदि विषयों से सम्बन्धित सभी पुस्तकें संस्कृत में थी। सभी प्रकार का मनोरंजन नृत्य, गीत-नाट्य और संगीत संस्कृत के माध्यम से होता था, यहां तक कि जन्म, मरण, विवाह, अथवा गृह-प्रवेश सभी धार्मिक कृत्य संस्कृत भाषा में ही सम्पन्न होते थे। इस से भी बढ़ कर सभी साहित्य का धारावाहिक संगीतमय काव्य में होना इस बात का प्रबल प्रमाण है कि संस्कृत सम्पूर्ण भारत में बोली और समझी जाती थी।

संसार में जितनी भी भाषाएँ हैं उनमें सबसे अधिक विस्तृत, पूर्ण और क्लिष्ट उच्चारण संस्कृत भाषा में ही हैं जो वेद भाषा के अति सन्निकट हैं। विस्तृत और क्लिष्ट उच्चारण मौलिक हैं और सरल तथा संकुचित उच्चारण अपभ्रंश हैं। जिन भाषाओं में अधिक और क्लिष्ट आवाजें हैं वे सभ्यों की हैं और प्राचीन एवं मौलिक हैं। जिन भाषाओं में कम एवं सरल आवाजें हैं वे नवीन और अपभ्रंश है। परन्तु जब कम उच्चारण वालों में विद्या और सभ्यता की उन्नति होती है और विद्वानों की संख्या बढ़ती है, तो ज्ञान, विज्ञान, कला एवं संस्कृत की उन्नति के साथ राज्य आर्थिक दृष्टिकोण से भी सम्पन्न होता है। परन्तु उनकी भाषा में उच्चारणों की वृद्धि नहीं होती। शब्दों की वृद्धि होती है, कोश भी बढ़ जाते हैं, पर आवाजों--उच्चारणों की वृद्धि नहीं होती। सभी स्वीकार करते हैं कि यूरोप की भाषाएँ आर्य भाषाओं से ली गई हैं परन्तु यूरोप वालों के पूर्वज असभ्य थे और क्लिष्ट उच्चारण नहीं कर सकते थे। इसीलिए उनकी भाषा संकुचित हो गई और आवाजें कम हो गई। ४७ आवाजों के स्थान में २८ आवाजें ही रह गयीं। आज यूरोप वालों ने हर विषय में उन्नति की परन्तु उच्चारणों में उन्नति नहीं हुई। वेद भाषा–संस्कृत भाषा की अति प्राचीनता को पश्चिमी विद्वान असंदिग्ध रूप से स्वीकार करते हैं क्योंकि यह संसार की समस्त भाषाओं से विस्तृत, विज्ञानपूर्ण और क्लिष्ट है। अतः दुनियां की शेष भाषाएं इसी की बिगड़ी हुई शाखाएं एवं प्रशाखाएं हैं। ऐसी स्थिति में संस्कृत का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

अतः भारतीय संस्कृति और परम्परा में तथा प्राचीन ज्ञान-विज्ञान में दृढ़ आस्था रखने वाले आकाशवाणी से संस्कृत में समाचार प्रसारण को सुनना अत्यधिक पसन्द करेंगे। इस प्रसारण से भारत की सभी भाषाओं को आधुनिक विषयों के सम्बन्ध में नित नयी शब्द-राशि उपलब्ध होगी क्योंकि भारतीय भाषाएँ संस्कृत से ही निकली हैं। चूंकि संस्कृत भाषा का प्रचलन विज्ञान, गणित एवं कला आदि के क्षेत्र में बहुत दिनों से बन्द हैं अतः अब इन सभी विषयों की अभिव्यक्ति के लिए संस्कृत को खुला अवसर मिलेगा। हमेशा शास्त्रीय और पारलौकिक विषयों की चर्चा में निमग्न रहने वाले संस्कृत में समाचार सुनकर राजनैतिक दृष्टिकोण से चेतनाशील होंगे। उनकी संकीर्णता और यथास्थितिवादी विचारधारा में क्रान्तिकारी परिवर्तन होगा। देश की सांस्कृतिक एकता को बल मिलेगा। सम्पर्क भाषा के विकास में आनेवाली कठिनाइयों को दूर करने में इससे बल प्राप्त होगा। भारत बहुभाषी देश होकर भी संस्कृत भाषा के कारण सांस्कृतिक दृष्टिकोण से एकताबद्ध है। आर्थिक और सामाजिक विषमता को खत्म करने के लिए हमें संस्कृत भाषा में उल्लिखित समतामूलक सांस्कृतिक तत्वों की खोज अत्यन्त आवश्यक है। इससे देश को, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक विषमता खत्म करने में विशेष बल मिलेगा। विज्ञान–ज्ञान और भाषा की उत्पत्ति, सृष्टि की उत्पत्ति और जीवन–विकास सम्बन्धी समस्याओं को संस्कृत भाषा में उपलब्ध ज्ञान के अवलम्बन से ही सुलझाने में समर्थ होगा, चाहे वह आज कितना ही हाथ पांव क्यों न मारे। संस्कृत भाषा के अध्ययन के बिना भारत अपने अतीत से अवगत नहीं हो सकता। और बिना अतीत से अवगत हुए भविष्य का निर्धारण कठिन है।

सम्पादकीय

युवासमाज की समस्याएँ और उनका कर्त्तव्य

(गतांक से आगे)

देश की आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा किसानों और मजदूरों का है। अतः इस विशाल हिस्से के युवकों को शामिल किए बिना किसी भी आन्दोलन का निर्माण नहीं हो सकता है। यदि आन्दोलन का कार्य क्षेत्र शिक्षित मध्यम वर्ग और शहरी इलाकों के युवकों के बीच तक सीमित है तो हम एक विचार मात्र ही पैदा कर सकेंगे, आन्दोलन में तीव्रता और प्रचण्डता नहीं ला सकते। अतः स्पष्ट है कि युवक आन्दोलन तथा उनके सांस्कृतिक आन्दोलन के सामने जो समस्याएँ हैं उनमें मुख्य समस्या यही है कि हर प्रकार के शोषणों के विरुद्ध चलने वाले शोषित जनता के मूल राजनैतिक आन्दोलन को युवक आन्दोलन से किस प्रकार मिला दिया जाय।

अतः युग को बदल डालने की इस लड़ाई में इतिहास ने युवा समाज के लिए उसकी भूमिका तय कर दी है। उसे सभी प्रकार के शोषण के खिलाफ शोषित वर्गों का जन आन्दोलन व्यापक रूप से संगठित करना होगा। विद्यार्थी और युवा ही क्रान्तिकारी विचारधारा से सबसे पहले उत्प्रेरित होते हैं। अतः यही वर्ग उस विचारधारा से ओत-प्रोत होकर और पूर्णतया समर्पित होकर जनसाधारण के पास जा सकता है, जनता को जागृत और संगठित कर सकता है। उसमें राजनैतिक चेतना विकसित कर सकता है, जिससे जनता के संघर्ष को क्रान्ति की स्थिति में पहुंचाया जा सके। यद्यपि यह मार्ग तकलीफदेह और कष्टदायक है फिर भी स्वाभिमान और इज्जत का रास्ता है। क्रान्ति का यह मार्ग हमें कभी भी मौत के निकट पहुँचा सकता है परन्तु यह शान की मौत होगी। चूंकि मनुष्य का जन्म लेकर मरना निश्चित है अतः समाज में बुनियादी परिवर्तन लाने के लिए शानदार मौत का वरण करना ही श्रेयस्कर है।

युवा समाज को एकजुट करने में अनेकों कठिनाइयों का सामना करना है। चूंकि युवक अलग अलग वर्गों से आते हैं अतः उनकी समस्याएँ एक जैसी नही होती। किसान युवक और मजदूर युवक की समस्या एक नहीं हो सकती। इसी भांति मध्यमवर्गीय युवक की समस्या उपरोक्त दोनों वर्गों से अलग है। ऐसे ही विद्यार्थी समुदाय तथा अन्य युवा समुदाय जो खेतों और कारखानों में काम कर रहे हैं अथवा बेकार हैं उन्हें संगठित करने में कठिनाई है। आर्थिक मांगों के आधार पर बेकार नवयुवकों को और शिक्षा सम्बन्धी मांगों के आधार पर विद्यार्थियों को एकजुट किया जा सकता है परन्तु सभी नवयुवकों को संगठित करना आसान नहीं है क्योंकि वे अनेकों वर्गों में विभक्त हैं। परन्तु इतने मात्र से युवा शक्ति और युवा आन्दोलन की महत्ता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने में युवा शक्ति की असाधारण भूमिका है। समाज का यही वर्ग भावी आदर्श की रूप रेखा से सबसे पहले प्रभावित होता है। उसमें सब कुछ जानने और समझने की चाह होती है। उसकी यही चाह उसमें समाज के प्रति दिलचस्पी पैदा करती है और लड़ाई के मैदान में उसे अगले दस्ते में ला खड़ा करती है। इसीलिए उसकी सामाजिक चेतना उसे इस शोषण पर आधारित व्यवस्था को खत्म कर शोषणहीन समाज व्यवस्था कायम करने के लिए प्रेरित करती है। अतः युवक समुदाय के लिए यह लजमी है कि वह शोषित वर्ग के संग्राम में शामिल होकर राजनैतिक पहल हमेशा अपने पास रखें। आज जनता के पास जाने, उन्हें संगठित करने और उनमें राजनैतिक शक्ति और चेतना का विकास करने का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व इतिहास ने युवा शक्ति के कन्धों पर डाल दिया है जिससे मेहनतकश जनता बुनियादी परिवर्तन द्वारा पूंजीवादी सत्ता को खत्म कर शोषण मुक्त समाज की रचना करने में समर्थ हो सके।

आज हमारे देश में युवक समुदाय के सामने जो सबसे विकट समस्या आकर खड़ी हुई है, वह है बेकारी की भयंकर समस्या और औद्योगीकरण का रुक जाना है। आज मानव के श्रम का चरित्र सामाजिक हो गया है क्योंकि कारखानों आदि में मेहनत करके वे जो भी उत्पादन करते हैं, वे मात्र अपने लिए नहीं करते हैं। सरकार भी श्रमिकों से देश की सम्पदा को ही बढ़ाने की बात करती है। इससे बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि आम जनता के श्रम से ही देश की सम्पदा बढ़ती है। अतः मजदूरों के श्रम का चरित्र सामाजिक है। श्रम के सामाजिक चरित्र के बावजूद निजी स्वामित्व का बना रहना ही उपरोक्त समस्याओं का मूल कारण है। आज मालिक वर्ग द्वारा श्रमिकों को ठग कर सामाजिक सम्पदा हड़प ली जाती है। परिणाम स्वरूप मजदूरों की क्रयशक्ति दिन प्रतिदिन घटती जा रही है और देश का आन्तरिक बाजार संकुचित होता जा रहा है। अतः देश की आबादी का जब अधिकांश भाग शोषण की चक्की में पिस रहा हो तो उद्योग धन्धों से बना माल कौन खरीदेगा। शासक वर्ग की नीति के कारण देश आज जिस दल-दल में फंस गया है, उसमें से बिना क्रांति के निकला नहीं जा सकता। भयंकर बेरोजगारी, कमरतोड़ महगाई, मुद्राविस्तार आदि की विकट समस्याओं का समाधान वर्तमान व्यवस्था के उत्पादन सम्बन्धों के ढांचे में सम्भव नहीं है। आज विदेशी और देशी इजारेदार पूंजी को खत्म कर शोषण मुक्त समाज की रचना के लिए पूंजीवाद विरोधी समाजवादी क्रान्ति की आवश्यकता है। इस आवश्यकता पूर्ति की जिम्मेदारी विद्यार्थियों और युवक समुदाय के कन्धों पर है।

पूंजीवादी व्यवस्था में यह बात बड़े गर्व से कही जाती है कि इस व्यवस्था में प्रत्येक के लिए बड़ा और सम्पन्न बनने का अवसर, बराबर बना रहता है। निर्धन वर्ग सबसे पहले इस भ्रम का शिकार होता है। प्रत्येक व्यक्ति पैसे वाला और सम्पन्न बनने के प्रयास में पूंजीवाद का दास बन जाता है। पूंजीवाद इस तरह जन साधारण की चेतना को दूषित करता है।

परन्तु जब देश में युद्ध की स्थिति होती है तो पूँजीपति देश-प्रेम का भी पाठ पढ़ाता है। देश के लिए सब कुछ न्योछावर करना ही महान कर्त्तव्य है इसका भी पाठ पढ़ाता है। जब उनके वर्ग को युद्ध की आवश्यकता नहीं रह जाती तब वे देश-प्रेम का अर्थ सब को अपने हित की हिफाजत करना ही बतलाते हैं। इस तरह गुणात्मक दृष्टिकोण से जीवन की सम्पूर्णता पर विचार करने वाले वैज्ञानिक दर्शन को वे अस्तित्व में नहीं आने देते हैं। पूंजीवाद इस तरह जन साधारण की चेतना को दूषित करता है और उसकी वर्ग चेतना को समाप्त करके उसे व्यक्तिगत अर्थ संचय और सुविधावाद का मोहरा बनाता है। इस पूंजीवादी विचारधारा के परिणाम स्वरूप समाज में आर्थिक और सामाजिक महान गैर बराबरी साकार रूप धारण करती है और निरन्तर जीवन को ऊँचा करते रहने की व्यक्तिगत इच्छा लोगों में घर करती चली जाती है। ऐसे मूल्य बोध वाले समाज के आर्थिक क्षेत्र में अबाध शोषण और राजनैतिक क्षेत्र में मुट्ठिभर पूंजीपतियों का शासन बना रहेगा और सांस्कृतिक जीवन में चरम आदर्शहीनता स्वाभाविक ढग से कायम रहेगी। और आदर्शहीन समाज में नैतिक उत्थान का प्रश्न उठ ही नहीं सकता है।

उपरोक्त तथ्यों से यह भली भांति स्पष्ट है कि गरीबी को दूर करने के लिए विषमता पर अधिारित आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था को ही खत्म करना पर्याप्त नहीं होगा क्योंकि गरीबी एक परिस्थिति ही नहीं, एक विचार, एक संस्कार, और एक मन: स्थिति भी है। इसके लिए हमें एक ऐसे दर्शन की आवश्यकता है जो मानव स्वभाव का युक्तिपूर्ण ढंग से विज्ञान सम्मत व्याख्या करती हो। ऐसा दर्शन वैदिक दर्शन ही हो सकता है। ऐसा ही दर्शन लोगों में उन्नत, सांस्कृतिक, सामाजिक, और राजनैतिक चेतना उत्पन्न कर सकता है। तभी गरीबी से उपजी हुई मन: स्थिति के कारण अनुशासनहीनता, समाजहित, विरोध और संग्रह की प्रवृत्ति जो अमीरी के लिए चेष्टारत होकर गरीबी की परिस्थिति पैदा करती, का खात्मा हो सकेगा। आर्थिक गरीबी और मानसिक गरीबी के दुश्चक्र को तोड़े बिना आगे बढ़ना मुश्किल है। अत: इस देश की पूंजी-वादी समाज व्यवस्था में निहित द्वन्द और असामन्जस्य ही तमाम सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संकट का मूल कारण है।

समाज में आर्थिक और औद्योगिक क्रान्ति तथा सांस्कृतिक एवं नैतिकता के माप-दण्ड की अग्रगति में वैज्ञानिक प्रगति को सतत प्रश्रय देना होगा। परन्तु आज विज्ञान का नियन्त्रण पूंजीपतियों के हाथ में है। वे विज्ञान का उपयोग तकनीकी के सीमित क्षेत्र में उत्पादन बढ़ाने और प्रशासन यन्त्र की जरूरतों को पूरा करने तथा उसके आधुनिकरण के लिए ही करते हैं। यदि इन पूंजीपतियों को उत्पादित माल के लिए बाजार नहीं मिलता है तो वे उत्पादन के साधनों का निरन्तर यन्त्रीकरण पसन्द नहीं करेंगे। यदि बाजार में मन्दी छायी रहे तो वे विज्ञान की प्रगति के दरवाजों को भी बन्द कर देंगे। आज वे बन्द भी कर रहे हैं। अत: भारत में क्रांति का अर्थ मजदूरों को आर्थिक शोषण से मुक्त करने की लड़ाई मात्र नहीं है। केवल बेरोजगारों के लिए रोजगार की लड़ाई को ही समाज की मुक्ति की लड़ाई नहीं समझ लेनी चाहिए। पूंजीवादी शोषण से मुक्त होकर वैदिक समाजवाद कायम करने का संघर्ष वस्तुत: पूरी उत्पादन व्यवस्था के साथ ही साथ ज्ञान, विज्ञान, कला संस्कृति को भी पूंजीवादी संस्कारों से मुक्त करने के लिए संघर्ष है। अर्थात् पूंजीवादी भौतिक और आध्यात्मिक उत्पादन सम्बन्धों को खत्म कर वैदिक समाजवाद के सिद्धान्तों पर आधारित भौतिक और आध्यात्मिक उत्पादन सम्बन्ध कायम करने का संघर्ष है। क्योंकि भौतिक उत्पादन पर समाज के जिस वर्ग का नियन्त्रण रहता है, वही वर्ग समाज के सभी चिन्तनों, सभी आदर्शों को प्रभावित करता है।

आज देश में सशक्त युवा आन्दोलन के मार्ग में बेरोजगारी आदि समस्याओं से भी बड़ी समस्या युवकों में सामाजिक समस्याओं के प्रति उदासीनता की प्रबल भावना है। स्वाधीनता संग्राम के दिनों में यही युवा समुदाय त्याग बलिदान की भावना से ओत-प्रोत होकर उसमें कूद पड़ा था क्योंकि उस समय के पराधीन देश के युवक स्वाधीन होने की भावना से तड़प रहे थे। प्रथम श्रेणी में परीक्षा पास करने वाला नौजवान अपने भविष्य को लात मारकर, परीक्षा देते-देते उसका परित्याग कर, हँसते-हँसते नि:संकोच होकर निकल पड़ा था। उसने माँ-बाप, सगे सम्बन्धी किसी की भी चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया था। हँसते-हँसते फाँसी के फंदे का आलिंगन उनके लिए आम बात थी। परन्तु आज का नौजवान शान्त है, जब समाज नवीन आदर्शों को जन्म देने वाली प्रसव वेदना से व्याकुल हैं, पुराने स्वार्थों पर आधारित आदर्श नवीन मूल्य बोधों के मार्ग में बाधक बन चुके हैं। आज युवकों में इस उदासीनता का कारण देश में स्थिति वर्तमान राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था है जैसा कि उपर स्पष्ट किया जा चुका है। इस व्यवस्था ने स्कूलों, कालेजों, विश्व विद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यक्रम के नाम पर नांच, गान और विभत्स संगीतों का आयोजन कर नवयुवकों की चेतना को पगु बनाया है। आज देश के नवयुवकों के सामने उन्हीं लोगों को तपे-तपाये देश सेवक के रूप में प्रस्तुत किया जारहा है जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में लेश मात्र भी हिस्सा नहीं लिया था। परिणाम स्वरूप आज युवक-युवतियों में स्वार्थपरता और व्यक्तिवादिता बढ़ रही है, वे अपने मस्तिष्क का प्रयोग नहीं करते। किसी भी तरह जी लेना उनका लक्ष्य बन गया है। हमारी शिक्षा व्यवस्था पूँजीवादी शासन व्यवस्था, शोषण और अत्याचार का ही पोषक है। ऐसी स्थिति में युवा आन्दोलन का निर्माण करने के लिए युवकों के अन्दर से व्यक्ति-वादी मनोभावना को निकाल फेकना होगा अन्यथा युवा आन्दोलन में किसी प्रकार की प्रचण्डता नहीं आ सकती। इसके लिए शोषण के विरुद्ध जो भी जन आन्दोलन हो, उनमें सचेत युवकों को शामिल होते हुए युवक आन्दोलन को संगठित करना होगा। आदर्श और संस्कृति के क्षेत्र में चलाये जाने वाले युवा आन्दोलन को शोषित वर्ग के बुनियादी राजनैतिक आन्दोलन के साथ संगठित करना होगा ताकि पूरे देश में एक सांस्कृतिक विप्लव के वातावरण का निर्माण किया जा सके।

आज भारत आदर्श खो बैठा है। जनता के सामने वे आदर्श और मूल्यबोध नहीं आ पा रहे हैं जो उनमें नई उमंग, नया उभार ला सके। युवा समुदाय को इस मार्ग में आने वाली अनेक असुविधाओं का सामना करते हुए समाजवादी आदर्श को जनता के सम्मुख प्रस्तुत करना होगा ताकि जनता के हृदय में यह आदर्श अपना स्थान बना ले। इसके लिए युवकों को अपने आपको प्रशिक्षित करना होगा ताकि वे स्थिति को भलीभांति प्रभावित कर सके क्योंकि विद्यार्थियों और नवयुवकों को ही नेतृत्वमूलक निर्णायक भूमिका अदा करनी है।

—गिरजेश्वर

गरीबो ! जागो ! संगठित हो जाओ ।

बाबा सोहन सिंह भकना

(गतांक से आगे)

यह सच है भारत में गांधी रामराज्य तो है। फिर जनता की घबराहट व्यर्थ है। मगर देखना यह है कि यह रामराज किस वर्ग में सफल हुआ है। क्या इस भारत में किसी पदार्थ की कोई कमी हैं ? अनाज, कपड़ा, घर और खांड सभी जीवन की आवश्यकताएँ तो हैं। तो फिर गरीब जनता, मध्यम वर्ग और विद्यार्थियों के मुजाहरों का कारण राजनैतिक पार्टियों की शरारत और इन लोगों का राजनैतिक पार्टियों के हाथ में खेलकर देश को तबाह करना नहीं तो क्या है ? क्या यह सरकार की जिम्मेवारी नहीं कि ऐसे लोगों से देश और कानून को बचाए ? सरकार ऐसे लोगों को सही रास्ते पर लाने के लिए अगर लाठीचार्ज और गोली भी चलाती है तो यह ठीक है। वह दलील तो ठीक है परन्तु देखना यह है कि आजादी और रामराज्य किन लोगों के जीवन की रक्षा करता है। समस्त देश का पदार्थ किन लोगों की भेंट होता है।

मिलता तो सब कुछ है। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता। अनाज, फल, तरकारियां, दूध और कपड़ा आदि सभी देश में मौजूद हैं। बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें और कोठियां भी देखने में आती हैं। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या गरीब वर्ग के लोगों में इन चीजों के खरीदने की शक्ति है ? इनसानी दिल रखने वाला हर आदमी यही जवाब देगा कि नहीं। खुले बाजार और सस्ते भाव, यह चीजें नहीं मिलती। इसलिए गरीब जनता के लिए ये चीजें देश में न होने के बराबर हैं। यदि मिलती भी हैं तो चोर बाजारी में। वहां जितनी और जिस किस्म की चाहे ले सकते हैं। यदि आप के पास गरीबों की मेहनत शक्ति को लूट कर चोर बाजारी से धन इकट्ठा किया हुआ है।

सरकार और दायां पक्ष (धनी लोग) आजकल अपने आप को, गरीबों पर रहम खाने वाले बड़े दानी और लोगों से सहानुभूति रखने वाले प्रकट करने की कोशिश करते हैं। वे कहते हैं कि हम ने गरीबों के लिए जगह जगह लंगर खोल दिए हैं, हम किसी बच्चे या स्त्री को भूख से नहीं मरने देंगे। वाह ! दाता लोगों ! आप बड़े दानी हैं। आपने पिछले जन्मों में भी बड़े दान किए हुए हैं जिस का फल इस जन्म में भोग रहे हैं। अब भी आप अगले जन्म के लिए बीज बो रहे हैं ! मगर यह तो बताइए कि यह अकाल या गरीबी किसी की पैदा की हुई है ? आप जैसे सज्जनों की या मेहनती जनता की ? यदि एक न्यायपूर्ण जज के हाथ यह फैसला दिया जाए कि यह गरीबी फैलाने में किस का दोष है—मेहनती जनता का या धनी वर्ग का, जो अकाल में लंगर लगा कर और काम खोल कर गरीबों की जानें बचा रहे हैं, तो कोई ईमानदार जज धनी लोगों के पक्ष में फैसला नहीं देगा।

गरीबो ! यह ठीक है कि इस दौलतमन्द श्रेणी ने तुम्हें इन्सानियत से गिरा कर पशुता से भी नीचे, कुम्भी नरक में फेंक रखा है। आर्थिक तथा राजनैतिक पहलू तो एक तरफ रहे, सामाजिक जीवन में भी तुम्हें कौओं और कुत्तों से बुरा समझ रखा है। यह सवर्ण जातियां तुम्हें मनुष्य नहीं अपितु पशु से भी बुरा समझती हैं। कुत्ता इनके चौके पर चढ़ जाए तो चौका भ्रष्ट नहीं होता, मगर तुम्हारा साया भी सवर्ण जाति के किसी आदमी पर पड़ जाए, तो वह और उस के कपड़े भी भ्रष्ट हो जाते हैं। वह कपड़े धोकर और स्नान करके ही अपने आप को शुद्ध समझता है। यह बहुत सालों की बातें नहीं। अब भी भारत में जहां सवर्ण जातियों का जोर है, दूसरे वर्गों के लिए घृणा मौजूद है। अगर चुनाव में तुम्हारे वोट लेने हों तो वे अपने आप को बड़े उदार और छूतछात से रहित सिद्ध करते हैं। अपने अन्तःकरण को छुपा कर तुम्हें धोखा देते हैं। परन्तु इन का अन्तःकरण शुद्ध नहीं केवल दिखलावा है। ये प्रचार करते हैं कि हम ने तुमको मन्दिरों में चढ़ने, कुओं से पानी भरने और वोट देने के अधिकार दिलवाये हैं। इसलिए हम तुम्हारे वोट के हकदार हैं और इस के भी आगे तुम्हारी हालत सुधारने के लिए तुम्हें किसानों की भांति खेती करने के लिए जमीन दी है, ताकि सामाजिक और आर्थिक पहलू में दूसरों के समान हो जाओ। यही आदर्श है कांग्रेस और गाँधी जी का। वाह ! खूब सच बोला। यदि इन से कोई पूछे कि महाराज आजादी और बराबरी का यह आदर्श तो आप का बहुत ऊँचा है-परन्तु इन १९-२० साल के समय में जो कांग्रेस सरकार ने काम किए हैं, और उनका जो परिणाम निकला है, उसके बारे में विरोधियों ने ही नहीं, जवाहर लाल नेहरू ने स्वयं भी माना है और सच्चे देश भक्त कांग्रेसी भी इस से इन्कार नहीं कर सकते कि इस समय में गरीब और गरीब, और अमीर, और अमीर हुआ है। नेहरू जी की मृत्यु के बाद देश की हालत और भी खराब हो गई है और यह समय हमारे लिए बहुत ज्यादा खतरनाक है !

रोजाना रेडियों और समाचार-पत्रों द्वारा प्रधानमन्त्री अपने भाषणों में किसानों और मजदूरों को उत्साह देते हैं कि

पैदावार बढ़ाओ। सरकार हर तरह बीज, खाद व पानी आदि से तुम्हारी सहायता करती है। परन्तु जमा-खर्च, जबानी-जबानी बहुत ज्यादा होता है और काम में बहुत कम आता है। दफ्तरों में बैठकर जनता की अवस्था का अंदाजा नहीं लग सकता। गांवों के किसानों और शहरों के गरीब मजदूरों की हालत का उस समय तक पता नहीं चल सकता जब तक उन की अन्दरूनी हालत का असल जायजा न लिया जाए। सच तो यह है किसानों को न तो खाद व पानी की, और न ही बीजों की सुविधा मिलती है। खाद, बीज और पानी सभी विभाग चोरबाजारी करते हैं। चोरबाजारी में तो किसी चीज की कमी नहीं, परन्तु गरीब के लिए हर विभाग के दरवाजे बन्द हैं। और यही हालत मजदूर की है। कोई काम रिश्वत के बगैर नहीं हो सकता। ऐसी हालत में, न ही किसान और न ही मजदूर को उत्साह दिया जा सकता है, उसके लिए तो त्याग और सच्ची देश भक्ति से काम करना जरूरी है।

आधुनिक अवस्था में देश आगे नहीं जा सकता। देश को यदि कोई आगे ले जा सकता है तो वे हैं मजदूर, किसान और मध्यम वर्ग, जो सभी गरीबी की लपेट में आ चुके हैं। यह ठीक है कि हमारे देश को खाने वाली गिद्धें इस अवसर की ताक में हैं कि कब जरा भारत, और गरीब हो और हम उसका बाकी मांस भी नोंच खाएँ।

लंगर लगाने और विदेशों से अनाज कर्जा पर मंगवाने से देश की गरीबी कभी दूर नहीं हो सकेगी। हमारी समस्या तब तक हल नहीं होगी, जब तक मजदूर वर्ग के हाथ हकूमत न आए, और गांधीवाद को छोड़कर समाजवाद की बुनियादों पर लोकराज कायम न किया जाए। हाथ पांव रखने वाला कोई साधु, फकीर और कोई हरामखोर मांग कर न खाए।

सही अर्थों में गौ हत्या मुसलमान या ईसाई इतनी नहीं करते जितनी ये साधु करते हैं। तीन-तीन किलो रोजाना ये लोग दूध पीते हैं, तब जा कर सर्दियों में इन की नंगे शरीर रातें कटती हैं। दूसरे पदार्थ जो खाते हैं वह अलग हैं। यह दूध कहां से आता है? यह गाय के बच्चो का दूध है जो कुदरत ने उन को पालने के लिए गाय को दिया है, ताकि वे अच्छी तरह से अपने बच्चों का पालन कर सके। परन्तु मनुष्य उस के बच्चों को भूखा मारता है और अपने बच्चों के जीवन को पालता है। यूरोप वालों की तरह बछड़े को छः मास तक अच्छी तरह दूध छोड़ कर मार देना इतना गुनाह नहीं, क्योंकि उसकी जिंदगी तरसाई नहीं जाती इस से बड़ा गुनाह बच्चे को भूखा रख कर और कमजोर करके तरसा तरसा कर मारना है।

गाय की रक्षा करनी जरूरी है। धर्म की निगाह से नहीं बल्कि दूध की निगाह से। जिस तरह दूसरे देश करते हैं। अच्छी नसल पैदा करना, उसकी और उसके बच्चों की खुराक, दूध, अनाज और चारा से पूरी करनी हमारा कर्त्तव्य व धर्म है। मुंह से तो धर्म-धर्म कहे जाना और गो रक्षा के लिए आसमान सिर पर उठाना, लेकिन रक्षा की जगह गाय को भूखे रख कर और उस के बच्चों को भूख से तरसा-तरसा कर मारना। ऐसे गाय रक्षक धर्म की तो समझ नहीं आती कि यह धर्म है या अधर्म।

रही साधु पूजा। पिछले समय में हमारे ऋषि मुनि ५० साल तक गृहस्थ मार्ग से अलग हो जाते थे। जीवन के पहले २५ साल विद्यार्थी आश्रमों में विद्या प्राप्त करते थे। इन आश्रमों में ऋषि, मुनि और संन्यासी विद्वान, सब को विद्या देते थे। मनुष्य धर्म का पूर्ण ज्ञान कराया जाता था और मनुष्य कर्त्तव्य को पूरा करने की शिक्षा दी जाती थी। विद्या द्वारा इन के दिमागों में ज्ञान की ज्योति जगा देते थे और गृहस्थ धर्म का पालन, और माता पिता सन्तान के लिए भी जो कर्त्तव्य था वे भी समझा देते थे। लोक सेवा विद्या पढ़ाने तक ही सीमित न थी परन्तु वे जीवन के दूसरे पहलुओं जैसे चिकित्सा-औषधि में भी प्रवीण थे। जो ऋषि विद्या पढ़ाते थे वे आश्रमों में रहते थे, जो आबादी से दूर जंगलों में होते थे। जो संन्यासी औषधि द्वारा लोक सेवा करते थे वे हमेशा गांवों में या शहरों में रोगियों की तलाश में फिरते रहते थे। जिस जगह भी कोई रोगी मिला उसी जगह उस के रोग का इलाज अपने थैले से दवाई निकालकर देते थे। इस का वे कुछ नहीं लेते थे। हमारे संन्यासियोंके नुख्से ऐसे मशहूर थे कि जिस को भी संन्यासी मिल गया उसके रोग का अन्त अवश्य था। ये संन्यासी एक रात से ज्यादा एक स्थान पर नहीं रहते। भाव चक्रवर्ती रहते थे। लोगों का भला दवाई से करते थे। लोक सेवा इन का धर्म था।

विद्या पढ़ाने और दवाई से लोक सेवा करने वालों के इलावा विद्वान् लेखक भी थे। उन्होंने दर्शन, उपनिषद और गीता जैसी धर्म पुस्तकें रचीं। लोगों के दिमागों में ज्ञान की ज्योति जगाई। इस तरह जो प्रचारक थे वे लोगों को सदाचार का रास्ता बताते थे। उनको मनुष्य धर्म और कर्त्तव्य की शिक्षा देते थे। इन की शिक्षा का फल ही था कि यूनानी और चीनी विद्वानों ने भारत के बारे में इतने प्रशंसापूर्ण ढंग से लिखा है। वे लिखते हैं कि भारतवर्ष में लोग देवता हैं। दुकानों के अन्दर हीरे और जवाहरात पड़े रहते हैं, परन्तु किसी दुकान पर ताला नहीं होता अर्थात् चोरी का नाम निशान नहीं। आओ अब हम आज के भारत का मुकाबला

(शेषांश पृष्ठ ११ पर)

वेद और समाजवाद

● पं० वीरसेन वेदश्रमी

मानवता के विकास का क्षेत्र समाज है

व्यक्तियों से वर्ग बनते हैं। अनेक वर्ग के व्यक्तियों से समाज का निर्माण होता है। सामाजिक भावनाओं से मानवता का विकास होता है। महर्षि चाणक्य ने—त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत। ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत।। कहा है। इसमें उत्तरोत्तर एक सामाजिक हित की भावना के लिए महानता की भावना को ग्रहण करने की प्रेरणा है। जनपद शब्द यहां बहुत कुछ समाज के भाव का ही द्योतक है।

समाज शब्द का अर्थ

संस्कृत का समाज शब्द समूह अर्थ वाची है और वह भी मानव समूह का वाचक है। अतः समाज शब्द मनुष्यों के छोटे समूह से लेकर बड़े से बड़े समूह का भी वाचक है। जब 'मानव समाज'—शब्द का प्रयोग करते हैं तो उससे समस्त मनुष्य मात्र का ग्रहण होता है। उस मानव समाज को व्यवस्थित रखने के लिए और तदन्तर्गत वर्गों में सामंजस्य, संगति, मेल, परस्पर श्रेष्ठ व्यवहार बनाये रखने के लिए व्यवस्थायें, नियम आदि जो ग्रहण या स्वीकार करने पड़ते हैं, वे सर्वमान्य सिद्धान्त के आधार पर होते हैं। अर्थात् समाज की छोटी से छोटी इकाई से लेकर बड़ी से बड़ी इकाई या समूह में अविरोध भाव, परस्पर पूरकता का भाव तथा उन्नति व्यवहार सन्दीप्त रखना मानवता के विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

वाद शब्द का अर्थ

इसे आप समष्टि धर्म, मानव धर्म, समाज धर्म किसी भी नाम से कह सकते हैं। परन्तु धर्म की परिधि में प्रत्यक्ष और परोक्ष, यह वर्तमान जीवन और पर जन्म तथा आत्मा और परमात्मा का भी समावेश होता है। इस दृष्टि से समष्टि धर्म, मानव धर्म या समाज धर्म ये नाम अपूर्ण ही हैं। इस अपूर्णता के कारण धर्म के स्थान पर स्वीकृत सिद्धान्त के लिए व्यवहृत शब्द 'वाद' का प्रयोग करना अधिक संगत है। अतः समष्टिवाद या समाजवाद ही इन को कहना अधिक संगत है। वाद शब्द का अर्थ सिद्धान्त, या मान्यताओं से ही है।

समाजवाद शब्द को रूढ़ी न बनावें

वास्तव में समष्टिवाद या समाजवाद रूढ़ी शब्द नहीं है। संस्कृत के या वेद के शब्द रूढ़ी शब्द नहीं हैं। उन्हें रूढ़ी तो हम सीमित अर्थों में प्रयुक्त करके मानने लगते हैं। यह प्रयोक्ताओं का दोष है—शब्द का नहीं। वेद एवं संस्कृत के शब्द यौगिक ही होते हैं। अब हम अपने संकुचित विचारों से प्रभावित होकर शब्दों को रूढ़ मान कर व्यवहार करते हैं तब हम व्यापक या यौगिक अर्थ के अस्तित्व से विमुख हो जाते हैं। इसी कारण आज हमने समाजवाद साम्यवाद आदि शब्दों को भी एक रूढ़ अर्थों में बांध लिया परन्तु उन्हें रूढ़ अर्थों से पृथक अस्तित्व में भी देखना व समझना होगा। रूढ़ अर्थों के कारण आज साम्यवाद या समाजवाद शब्द को सोशिएलिज्म या कम्यूनिज्म शब्द से ग्रहण किए जाने वाले अर्थों या परिभाषाओं में बंधा मान लिया है। सोशिएलिज्म या कम्यूनिज्म का पर्यायवाची शब्द साम्यवाद या समाजवाद प्रयुक्त किये जाने के बाद भी वे स्वतन्त्र सत्तावान हैं। उनका प्रचलित परिभाषाओं से सामंजस्य प्रतीत होने पर भी उनमें और भी विशाल अर्थ संयुक्त हैं।

वैदिक समाजवाद की प्राचीनता

ऐसी स्थिति में जब वेद से समष्टिवाद, समाजवाद या साम्यवाद के प्रतिपादन की चर्चा होती है तो वह सोशिएलिज्म या कम्यूनिज्म के जन्म से पूर्व के सिद्धान्त व अर्थों से भी सम्बन्धित होती हैं, जो सृष्टि के प्रारम्भ से ही वेद मन्त्रों में प्रतिपादित है। उनको आज की प्रचलित परिभाषानुसार ही मानना या समझना किसी सीमा तक असंगत एवं अयुक्त भी होता है। प्राचीन भावों या विचारों को नवीन शब्दों में कहा जा सकता है। परन्तु वह सिद्धान्त प्राचीन ही है यह मानना ही होगा।

वैदिक समाजवाद का उद्गम वेद है

प्रचलित समाजवाद आदि पर्यायवाची शब्द एक राजनीतिक इतिहास से सम्बन्धित है। यदि उनका सम्बन्ध वेद या धर्म से हो जाता है तो वे उन सोशिएलिज्म या कम्यूनिज्म के पर्यायवाची मात्र नहीं रहते हैं। जब वेद से साम्यवाद या समाजवाद का प्रतिपादन होता है तो वे शब्द अपने पृथक अस्तित्व के द्योतक हो जाते हैं। तब उन्हें किसी भाषा में प्रचलित शब्द के पर्यायवाची शब्द के रूप में प्रयुक्त नहीं हैं ऐसा

मानना चाहिए। अतः वेद में समाजवाद है—ऐसे वाक्यों से यही नहीं ग्रहण करना चाहिए कि वेद में किसी व्यक्ति विशेष के कुछ काल पूर्व के देश विशेष की स्थितियों से उत्पन्न किसी सिद्धान्त विशेष का उल्लेख है। सार्वभौम सिद्धांतों की सत्ता सृष्टि के प्रारम्भ में तथा वेद में होना आवश्यक है—उसे हमने व्यावहारिक बनाया या नहीं बनाया यह पृथक बात है।

समाजवाद का स्रोत वेद है

वेद तो समष्टिवाद, साम्यवाद, समाजवादादि का स्रोत है। अनेक सूक्तों में इनका स्पष्ट एवं सुन्दर रूप से वर्णन है। वेद मन्त्रों में बहुवचन सर्वनाम शब्दों का स्थान-स्थान पर प्रयोग समष्टिवाद, साम्यवाद या समाजवाद के आधारभूतमन्तव्य का ही द्योतक है। यद्भद्रं तन्न आसुव—धियो यो नः प्रचोदयात्—वयं स्याम पतयो रयीणाम्—अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्—आदि पदों में बहुवचन वाची सर्वनाम शब्द नः-वयं-अस्मान्-समष्टि, समाज या समूह वाची हैं। अतः वेद समष्टिवाद, समाजवाद या साम्यवाद का परम पोषक है।

वेद व्यक्तियों द्वारा निर्मित वादों से परे है

परन्तु वेद के इन वादों को सोशिएलिज्म या कम्यूनिजम का अनुगन्ता नहीं समझना चाहिए। वेद के समाजवाद के के सिद्धान्तों का स्पष्ट या अस्पष्ट बिम्ब मनुष्य के सत्यान्वेषण में तथापक्षपात रहित निर्भ्रान्ति ज्ञान में दृष्टिगोचर हो सकता है। व्यक्तियों से उत्पन्न वादों में परिस्थितियों का प्रभाव रहता है—अतः परिस्थितियों के परिवर्तन के साथ मानवजन्य वादों में परिवर्तन होता जाता है—और कालान्तर में वे अपनी मूल स्थापना से भी दूर हो जाते हैं। परन्तु वेद की यह स्थिति नहीं है। वेद में प्रतिपादित जो ज्ञान है वह समय से प्रभावित नहीं होता है अपितु समय उससे प्रभावित होता है।

यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में समाजवाद की भावना

यजुर्वेद का प्रथम मन्त्र—इषे त्वा०—है। इस मन्त्र में ही समष्टिवाद या समाजवाद का दर्शन होता है। इसमें देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे—कहा गया है। इस वाक्य का अर्थ है—सविता देव तुम सब व हम सब को सबसे श्रेष्ठ कर्म करने के लिए प्रेरित करे। यहां पर तुम व हम सबका भाव समष्टि, समाज या व्यक्ति समूहों को ही श्रेष्ठतम करने की प्रथम मन्त्र में प्रेरणा दे रहा है। सामूहिक रूप से श्रेष्ठकर्मों का अंगिकार समाजवाद, साम्वयाद या सर्वोन्नति का मूल है।

यज्ञ ही समाजवाद का जन्म-दाता है

वह श्रेष्ठतम कर्म कौन सा है जिसको सब करें, इसका उत्तर शतपथ ब्राह्मण १ ७।१।५ में—यज्ञोवै श्रेष्ठतम कर्म-इन शब्दों में दिया है। अर्थात् यज्ञ ही श्रेष्ठतम कर्म है। इसी को अगले मन्त्रों में वसु अर्थात् सबको जीवन देने वाला व्यापक होने वाला कहा है। अतः यज्ञ ही श्रेष्ठतम कर्म है। यज्ञ शब्द देवपूजा, संगतिकरण और दान इन अर्थों का वाचक है। देवपूजा का सम्बन्ध अपने साथ अन्य किन्हीं विशिष्ट गुण युक्त विविध व्यक्तियों के व्यवहार के साथ है। संगति करण का अर्थ भी अपने साथ अन्यों के मेल, सहयोग आदि से सम्बन्धित है और दान अर्थात् देना, त्याग का भी सम्बन्ध अपने और अन्यों के परस्पर व्यवहार से ही सम्बंधित है। अतः समष्टिवाद, समाजवाद का क्रियात्मक या व्यावहारिक स्वरूप यज्ञ ही है। इसीलिए यह ... है। अर्थात् समष्टिवाद या समाजवाद श्रेष्ठतम सिद्धांत या वाद है। श्रेष्ठतम होने से सब श्रेष्ठजनों को अनिवार्य रूप से स्वीकार एवं ग्राह्य भी है।

प्रथम मन्त्र की रचना में समाजवाद का दर्शन

यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में श्रेष्ठतमवाद—समाजवाद या समष्टिवाद का उपदेश है, अतः इस मन्त्र की रचना भी अन्य वेदों के प्रारम्भिक मन्त्रों से भिन्न ही प्रकार की है ऋग्वेद एवं सामवेद के प्रारम्भ के मन्त्र २४-२४ अक्षरों के विशुद्ध गायत्री छन्दों में हैं और अथर्व वेद का प्रथम मन्त्र येत्रिषप्ताः० यह ३२ अक्षर का विशुद्ध अनुष्टुप छन्द में है अर्थात् तीनों आर्षी छन्दः श्रेणी के हैं। तीनों वेदों के मन्त्रों के अक्षरों का योग २४+२४+३२=८० होता है। यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में ८० अक्षर हैं। यदि तीनों वेदों के प्रथम मन्त्रों के पद और उनमें जो सावग्रह शब्द हैं उनको पृथक्-पृथक् करके जोड़े जावें तो ९+१०+१६=३५ पद होते हैं। इतने ही पद यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में पद पाठानुसार हैं।

प्रथम मन्त्र का गद्यात्मक स्वरूप

समष्टि या समाज में समूह भाव या बाहुल्य दृष्टिगोचर होता है। उस बाहुल्य में, समष्टि में क्रम बद्धता दृष्टिगोचर नहीं होती। उसी प्रकार यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र इषेत्वोर्जेत्वा०—में छन्द भाव स्पष्ट नहीं है, अपितु गद्यात्मक स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। एक विशाल गद्यात्मक रचना प्रथम मन्त्र में प्रतीत होती है। ८० अक्षरों से बने ३५ पदों से मन्त्र में ५ या ७ वाक्य समूह हैं। सूक्ष्म दृष्टि से यदि उसमें छन्द का दर्शन करते हैं तो उसमें आर्षी और ब्राह्मी छन्दों के स्वराड् बृहती छन्द और

दो भिन्न २ श्रेणी के दो छन्दों का इसमें समावेश है। दो भिन्न छन्दों के कारण दो भिन्न-भिन्न स्वरों में गीयमान एक देवता (सविता) का एक पूर्ण मन्त्र है। इस मन्त्र के मन्त्रांशों के वैनियोगिक पृथक-पृथक देवता एवं कर्म मान लेने पर भी मन्त्र एक ही है। यही सब स्थिति समाज की आन्तरिक एवं बाह्य रूप में व्यष्टि और समष्टि रूप की यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में ग्रथित हुई प्रदर्शित हो रही है। अर्थात् अनेकत्व का एकत्व में विलय होने से एक मन्त्र हो जाता है। उस मन्त्र में शक्ति, स्वर, देवत्व, छन्द और ऋषित्व जागृत हो जाते हैं।

समाजवाद से उन्नति

इस मन्त्र में एक पद है—आप्यायध्वम्—इसका तात्पर्य है कि इस प्रकार की मन्त्रमय स्थिति बनाने से उन्नति को प्राप्त होओ—तथा इन पदों से पूर्व कहे गये श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ को करने से तुम सब उन्नति को प्राप्त होओ। यहां पर भी बहुवचन का ही प्रयोग है। इससे स्पष्ट है कि वेद समाजवाद या समष्टिवाद का प्रतिपादक है और उससे उसको रहित मानना नितान्त असंगत है। वेद में परमात्मा को पिता, माता बन्धु, राजा और सखा भी कहा है। तो क्या परमात्मा इन अनेक सम्बंधों से मानव समाज को वात्सल्य भाव, भ्रातृ भाव, सखा भाव और प्रजा भाव से लालित पालित एवं संवर्धित रखना नहीं चाहेगा? अतः परमात्मा ने मानव समाज को इन्हीं भावों के आश्रित, परस्पर प्रेम-भाव से रह कर उन्नति करने का मार्ग यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में यज्ञ करने की प्रेरणा देकर समाजवाद के द्वार में प्रवेश करा दिया।

इसी मन्त्र के प्रारम्भ के पदों में—इषेत्वा-ऊर्ज्जेत्वा ये दो वाक्य हैं। जब इस सम्पूर्ण मन्त्र का देवता सविता साथ क्रियादि के लिए अध्याहार पद भी उसी दृष्टि से—वयं सततं आश्रयाम-यह करते हैं। अर्थात् हम अन्नादि के के लिए, अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिये आपका सदा आश्रय करते हैं—बल पराक्रम, रस, आनन्द आदि प्राप्ति के लिये आपका निरन्तर आश्रय करते हैं। अर्थात् वेद के अनुसार हमारे प्रयत्न भी प्रायः सामूहिक ही होने चाहिए जिससे सभी उन्नति को, आनन्द को प्राप्त करें। यही वेद में सामूहिक उन्नति का मार्ग है जिसे समष्टिवाद या वैदिक समाजवाद कहा जा सकता है। इस वैदिक समाजवाद का सम्बन्ध ईश्वर से है, ईश्वरीय ज्ञान वेद से है। किसी व्यक्ति विशेष के प्रतिपादित देश विशेष में प्रचलित सिद्धांत या मन्तव्यों से नहीं।

समाजवाद या सबकी उन्नति के लिये यज्ञ को ही अपनाना चाहिये

यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में समाजवाद के प्रचलन के लिये यज्ञ का आदेश दिया है। उसी के बारे में यजुर्वेद के द्वितीय मन्त्र में कहा है—माह्वाः—अर्थात् उस यज्ञ कर्म को मत छोड़ो क्यों कि वह-पृथिव्यासि-विस्तृत होने वाला, फैलने एवं व्याप्त होने वाला है—अर्थात् विस्तृत होकर सब का लाभ करने वाला है और विश्वधा असि-समस्त संसार का धारण करने वाला है – ये भाव भी सार्वजनीन हित की भावना के द्योतक हैं। खण्ड भाव, असम्पूर्णता आदि भाव ही सामाजिक भावना के विनाशक हैं। अतः वेद का यज्ञवाद या समष्टिवाद अथवा वेद के समाजवाद का किसी एक वर्ग विशेष से ही सम्बन्ध नहीं है, अपितु संसार के उपकार करने रूपी उच्च भावना का जिक उन्नति हो उससे सम्बन्ध है। केवल शारीरिक सुखों या भौतिक सामग्रियों की विपुलता से ही सम्बन्ध नहीं है। जिस समाजवाद में शारीरिक या भौतिक उन्नति ही अन्तिम लक्ष्य होगा वह समाजवाद पंगु है। उससे सुख शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। जिस समाजवाद में किसी वर्ग विशेष के ही हितों का संरक्षण, एवं वृद्धि हो वह समाजवाद नहीं वर्गवाद है।

वैदिक समाजवाद के आधार-भूत कर्म यज्ञ का ब्राह्माण्ड से सम्बन्ध

इसी प्रकार यजुर्वेद के तीसरे मन्त्र में यज्ञ को—शतधारं और सहस्रधारम्—कहा है। इन शब्दों का अर्थ है कि यज्ञ अनेक प्रकार से विश्व का धारण और पालन करने वाला है और अनेक प्रकार के ब्रह्माण्ड को धारण करने वाला है। अर्थात् वैदिक समाजवाद का सम्बन्ध वर्ग विशेष, जाति विशेष किसी राष्ट्र या भू खण्ड विशेष से नहीं है अपितु समस्त ब्रह्माण्ड से है। अतः जब वेद के समाजवाद का प्रतिपादन हो तब उसे व्यक्ति विशेष, समय विशेष, राष्ट्र विशेष की परिभाषाओं से बांध कर सोचना समुचित नहीं। पवित्र एवं दिव्य भावनाओं के साथ मानव कृत वादों से ऊपर उठकर ही विचारना होगा।

इसी प्रकार यजुर्वेद के चतुर्थ मन्त्र में भी यज्ञ को विश्वायुः—विश्वकर्माः—और विश्वधायाः—कहा है। अर्थात् यज्ञ और यज्ञ में प्रयुक्त की जाने वाली वेदवाणी सब को जीवन, आयु देने वाली, संसार में कला कौशल को उत्पन्न करने वाली और सबका धारण पोषण करने वाली है। इस यज्ञ एवं वेदवाणी

(शेषांश पृष्ठ ११ पर)

अँग्रेजी और समाजवाद

● डा० वेदप्रताप वैदिक

अँग्रेजी ने हमारे देश में गैर-बराबरी को बढ़ाया है। मैं यह नहीं कहता कि हमारे देश में जो आर्थिक असमानता दिखाई पड़ती है उसका एकमात्र कारण अँग्रेजी है लेकिन यह एक निर्विवाद सत्य है कि गैर-बराबरी को कायम रखने और बढ़ाने में अंग्रेजी का पूरा-पूरा हाथ है।

अंग्रेजी तालीम के जरिये गैर-बराबरी का बीज बचपन में ही बो दिया जाता है। थोड़े-से बच्चे 'कॉन्वेन्ट' में पढ़ते हैं और बहुत से बच्चे टाटपट्टी पाठशालाओं में। इसका कारण योग्यता नहीं है बल्कि बच्चे के माता-पिता की खर्च की हैसियत है। यदि वे ज्यादा खर्च कर सकें, १०० या २०० या ३०० रुपये महीना तो उनके बच्चे 'उत्कृष्ट' स्कूलों में पढ़ेंगे, अन्यथा देश के शेष बच्चों के लिए 'निकृष्ट' स्कूलों की शिक्षा तो है ही। 'कॉन्वेन्ट' की क्या विशेषता है? कौनसी 'उत्कृष्टता' या ऊँचापन है, इनमें? 'कॉन्वेन्ट' में चमक-दमक वाली वेश-भूषा, आरामदेह मेज-कुर्सी, खेल और मनोरंजन के प्रचुर साधन तथा घर से आने-जाने के लिए वाहन की व्यवस्था तो होती ही है लेकिन उसकी आत्मा है— अंग्रेजी माध्यम की पढ़ाई! यह अंग्रेजी माध्यम की पढ़ाई बच्चे को बहुत अधिक प्रवीण बनाती हो, कुशाग्र-बुद्धि बनाती हो या उसकी समझ का विस्तार करती हो, ऐसी बात नहीं है। यह सर्वसम्मत तथ्य है कि विदेशी माध्यम की पढ़ाई बच्चे को रट्टू-तोता, नकलची और आलसी बनाती है। फिर भी माता पिता अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूलों में भेजने के लिए क्यों लालायित रहते हैं?

सिर्फ इसलिए कि अंग्रेजी एक पुल है, जो शिक्षा को नौकरी से जोड़ता है। हर माता-पिता चाहते हैं कि हमारा बच्चा इस पुल पर चढ़ जाए। भारत की हर बड़ी नौकरी के लिए, पद के लिए, लाभ के लिए, एक सभ्य और सुसंस्कृत जीवन बिताने के लिए, अंग्रेजी को अनिवार्य बना दिया गया है। इस अनिवार्यता को सहने के लिए, इस मजबूरी से पार पाने के लिए माता-पिता बच्चों को 'कॉन्वेन्ट' में भेजते हैं। 'कॉन्वेन्ट' में अपने बच्चों को कौन भेज सकते हैं? कितने लोग भेज सकते हैं? सिर्फ मुट्ठीभर लोग! यही छोटा-सा वर्ग पहले से ही सुविधासम्पन्न होता है और इसी के उत्तराधिकारी नई सुविधाओं पर कब्जा कर लेते हैं। टाटपट्टी स्कूलों में पढ़े हुए करोड़ों बच्चों के लिए कोई उम्मीद नहीं है, उबरने का कोई भरोसा नहीं है, आशा की कोई किरण नहीं है। सुविधाओं पर, अवसरों पर कब्जा करने की धारावाहिकता पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती है। क्या यह समाजवाद का पूर्ण निषेध नहीं है?

सुविधाओं और अवसरों की यह लूटपाट भी चलती रहे और जनता के सामने एक मासूम मुखड़ा भी बना रहे, इस चमत्कार को टिकाए रखने में अंग्रेजी स्कूल बड़ी मदद करते हैं। अंग्रेजी स्कूल में जानेवाले बच्चों की नसों में प्रारंभ से ही गैर-बराबरी का जहर घोला जाता है। ये बच्चे अपने आपको कुंवर, राजकुंवर समझने लगते हैं और देश के अन्य करोड़ों बच्चों को हिकारत की नजर से देखते हैं। इसका कारण यह नहीं है कि वे अधिक बुद्धिमान हैं। जो रटता है, घोटा लगाता है, वह बुद्धिमान कैसे हो सकता है? अंग्रेजी स्कूल के लड़के अपनी बुद्धि की इस कमी को पूरा करते हैं, खर्चीले ताम-झाम से जैसे कि बदसूरत औरतें सुन्दर दिखने के लिए सोना लाद लेती है। और दुर्भाग्य यह है कि अपने समाजवाद में सोने की कीमत सुन्दरता से अधिक है। नौकरियों में भविष्य के अवसरों में बुद्धि की परीक्षा नहीं होती, योग्यता की परीक्षा नहीं होती बल्कि अंग्रेजी-ज्ञान की परीक्षा होती है।

हमारी फौज की परीक्षा में क्या होता है? अंग्रेजी भाषा की अनिवार्य परीक्षा होती है और दूसरे विषयों की भी परीक्षा अंग्रेजी माध्यम से होती है। अंग्रेजी का फौज से क्या लेना-देना? दुनियां के बड़े-बड़े फौजी जनरल अंग्रेजी नहीं जानते! चंगेजखान, बाबर, नेपोलियन, शैवानी खान, रोमेल, मार्शल ग्रेचको और जनरल गियाप जैसे लोगों की फौजी शिक्षा क्या अंग्रेजी में हुई है? फौज में तो बहादुरी की, नेतृत्व की, देश-भक्ति की, निशानेबाजी की, शारीरिक क्षमता की और दुश्मन के विरुद्ध उचित रणनीति बनाने की क्षमता की परीक्षा होनी चाहिए। कोई नौजवान इन सब गुणों में निष्णात हो लेकिन यदि अंग्रेजी नहीं जाने तो फौज का अफसर नहीं बन सकता। वह एक साधारण जवान बनने के लिए अभिशप्त है। यह कहने की जरूरत नहीं है कि एक साधारण जवान और फौज के अफसरों के बीच असमानता की पाताल-जितनी गहरी खाई होती है। यह असमानता उपरोक्त अन्याय की खोज में कोढ़ का काम करती है। अफसरों के पद, जिन पर जवानों की तुलना में १०० से लेकर १००० गुना तक ज्यादा खर्च किया जाता है, केवल उसी वर्ग के लिए आरक्षित हो जाते हैं, जो 'कॉन्वेन्ट' में पढ़ा हो, जो अंग्रेजी फर्राटे से बोलता हो या अपने पुराने मालिकों

की हूबहू नकल करने में निष्णात हो। जो गरीबों के लड़के हैं, वे 'डिफेन्स एकेडेमी' की परीक्षा में बैठने का साहस भी नहीं कर सकते। योग्यता एक छोटे-से वर्ग की बपौती बनकर रह जाती है। यही वर्ग है जो सारे देश पर छाया हुआ है। यह समाजवाद कैसे ला सकता है?

एक समतामूलक समाज के निर्माण करने वाले लोगों का जनता से कुछ तो सीधा रिश्ता होना चाहिए। लेकिन जो शासकगण हैं, शासकगण से मेरा मतलब उन सब लोगों से है, जो सम्पन्न हैं, उच्च वर्ग के हैं, शहरों में रहते हैं, नीति बनाते हैं, वे जनता से बिलकुल दूर जा पड़ते हैं। जब वे बच्चे होते हैं, तो अलग-थलग स्कूलों में पढ़ते हैं और जब उनके बच्चे हो जाते हैं तो वे भी इन्हीं स्कूलों में पढ़ते हैं। इस वर्ग को क्या मालूम कि टाटपट्टी स्कूलों की टपकती हुई छत के नीचे बैठने का मतलब क्या होता है? ये क्या जाने कि पेशाब की बदबू और कक्षा की पढ़ाई में क्या रिश्ता है? इस वर्ग का बच्चा घर आकर अपने पिताजी से यह शिकायत क्योंकर करेगा कि सौ रुपल्ली पानेवाला मास्टर अपनी झुंझलाहट हम पर निकालता है। हमारे देश के नीति-निर्माता वर्ग को इन सब परिस्थितियों को भोगना ही नहीं पड़ता, इसीलिए चुनिन्दा स्कूलों पर करोड़ों रुपये खर्च किए जाते हैं और करोड़ों बच्चे जिन पाठशालाओं में पढ़ते हैं, वे अनवरत उपेक्षा की शिकार बनी रहती हैं। जिस दिन देश में 'कॉन्वेन्ट' नहीं होगा और शासक वर्ग का बच्चा भी टाटपट्टी स्कूल में पढ़ेगा और घर आकर स्कूल की बदबू की, अँधेरे की, पिटाई की चर्चा करेगा, उसी दिन देश की शिक्षा का नक्शा बदल जाएगा। जिस दिन रेल की तृतीय श्रेणी में मंत्री धक्के खाएगा, अफ़सर को पाखाने के पास खड़े होकर रात काटनी पड़ेगी और नेता को दरवाजे से लटकते हुए सफर करना पड़ेगा, उसी दिन हिन्दुस्तान की रेलों को सुधारने के लिए सही चिन्तन प्रारम्भ होगा। उसी दिन समाजवाद नारा नहीं रहकर, एक सच्चाई बन जाएगा।

लेकिन जब तक देश में अनिवार्य अँग्रेजी चलेगी—शिक्षा में, न्याय में, नौकरी में, चिकित्सा में, फौज में,—समाजवाद आ नहीं सकता। अँग्रेज़ी शिक्षा बचपन से ही बच्चों में गैर-बराबरी और पाखण्ड की भावना को जन्म देती है। आप उत्पादन और वितरण की प्रणाली में तब तक सुधार नहीं कर सकते, जब तक कि देश के बच्चों में बचपन से ही समतामूलक मनोभूमि तैयार नहीं हो। ये अँग्रेजी स्कूल समाजवाद की इस प्रथम आवश्यकता की जड़ों में निरन्तर मट्ठा डालने का प्रयत्न करते रहते हैं। ★

वेद और समाजवाद

(पृष्ठ ९ का शेषांश)

के प्रयोग कार्य को—सोमेना तनच्मि अपने हृदयस्थ सोम अर्थात् श्रद्धा, प्रेम आदर एवं आनंद भाव से संपन्न करने के लिए दृढ़ संकल्पयुक्त होता हूँ। और पाँचवें मन्त्र में तो इस सत्यव्रत को धारण करने तथा इस व्रत पर आचरण करने की प्रार्थना—अग्ने व्रतपते०-मन्त्र द्वारा की गई है। इस सत्यव्रत को आचरित करने के लिये परमात्मा सामर्थ्य प्रदान करें यह भी प्रार्थना मन्त्र में है।

वैदिक समाजवाद में समस्त विश्व, उसके रचयिता, मानवमात्र तथा प्राणि मात्र से सम्बन्धित कल्याण की भावना यज्ञ के द्वारा सम्पन्न होती है। वैदिक समाजवाद में ईश्वर का अस्तित्व, उसकी सहाय की याचना पदे-पदे है। मानवकृत समाजवाद में ईश्वर का अस्तित्व नहीं है। अतः वैदिक समाजवाद को मानवकृत समाजवाद की परिधि में बद्ध मानना भूल होगी। ★ वेद सदन-महारानीपथ, इंदौर-१

गरीबो! जागो! संगठित हो जाओ

(पृष्ठ ६ का शेषांश)

सनातन भारत से करें। वेदों के बाद उपनिषद लिखे गए जिन में गुरु शिष्य के विचार और कथाएँ हैं जिस का वर्णन करना जरूरी है।

आज हमारे कुछ नौजवान सनातन संस्कृति का नारा लगाते हैं। बड़ा उत्तम नारा है। मगर नारा लगाने वालों को स्वयं पता नहीं कि उत्तम संस्कृति किस सिद्धान्त का नाम है। सुनिये कथा—दयालक ऋषि अपने आश्रम में वन में रहते थे। एक समय उनके भाई उनको मिलने गए। जब वे आश्रम में पहुँचे तो ऋषि बाहर जंगल में शौच के लिए गए हुए थे। थकान के कारण दयालक जी के भाई को भूख भी बहुत लगी हुई थी। उसने सोचा वे तो साधु हैं। पता नहीं कब वापस आएँ, आश्रम में केले के पौधे थे और फल भी पका हुआ था। उसने सोचा कि मैं कुछ केले तोड़ कर अपनी भूख मिटाऊँ, जब ऋषि आएँगे उनको बता दूँगा। उसने जरूरत के अनुसार फल तोड़ कर खा लिए। जब ऋषि आए तो मिलने के बाद उनके भाई ने कहा कि मैंने आपकी गैर हाजरी में कुछ केले तोड़ कर खाए हैं क्योंकि भूख बहुत लगी थी। ऋषि ने कहा आपने सच बोल दिया है इस लिए मैं आप को क्षमा करता हूं वरन् किसी की गैर हाजरी में चाहे वह भाई ही क्यों न हो उसकी चीज छेड़ना वास्तव में चोरी है। ऋषि के भाई ने कहा कि यह ठीक है

कि आपने मुझे क्षमा कर दिया है, मगर मेरी आत्मा अब मुझे क्षमा नहीं करती। उसने तेज हथियार से वह हाथ काट दिया जिससे उसने केले तोड़े थे।

हमारे पूर्वजों ने चोरी और व्यभिचार की यहां तक निन्दा की है कि वे कहते हैं कि रास्ते पर चलते समय यदि किसी की कोई चीज रास्ते पर गिर जाए, तो एक बार उस पर निगाह पड़ना स्वाभाविक हैं और आंखों का धर्म भी है। परन्तु जब तुम दूसरी बार इस पर निगाह डालने की कोशिश करोगे, चाहे वह स्त्री हो या और कोई पदार्थ तो तुम जरूर लालच की दृष्टि से देखोगे। यह तुम्हारी मानसिक चोरी और मानसिक व्यभिचार होगा। जिससे तुम्हारा मन मलीन हो जाएगा। अब मैंने सनातन भारत के ऋषि मुनियों, साधु सन्तों की और पुरातन भारतीय संस्कृति का संक्षेप परिचय दिया है और वह भी उपनिषदों के हवाला से।

अब पढ़ने वाले स्वयं ही अनुमान लगा सकते हैं कि हमारे नौजवान जो सनातन संस्कृति का पवित्र नारा लगा रहे हैं, कहां तक इस पर अमल करते हैं। अमल तो यह है कि सुबह से शाम तक दूसरे भोले भाले गरीबों को झूठ बोलकर कसमें खाकर ठगा जाता है। इस प्रकार सनातन संस्कृति कैसे आ जाएगी? सनातन संस्कृति तो सच्चे अमल से आएगी। जब इन्सान इन्सान का खून चूसना छोड़ देगा, उस समय ही गाय की रक्षा का नारा भी सच्चा समझा जाएगा। आप के कामों को देख कर गाय भक्षक स्वयं शर्मिंदा होंगे कि ऐसे पवित्र जानवर का हम क्यों बध करते हैं, जो अपने दूध और मक्खन से हमारी सन्तान और हमें पालती है।

बाकी रही साधु पूजा। अगर कोई सच्चे अर्थों में साधु हो और दुःखी जनता की सेवा करना अपना धर्म समझता हो और सेवा करता हो तो उसे आवश्यकतानुसार रोटी कपड़ा देना गृहस्थी का धर्म है। परन्तु कुपात्र को देना पाप है। जो डाकू, चोर और ठग अपने आपको बचाने के लिए आज साधु बने हुए हैं, इनकी पड़ताल करना हकूमत और जनता का फर्ज है ताकि जनता इन ठगों से बच जाए, जो पवित्रता को गन्दा करते हैं। इनको कानून द्वारा पकड़ कर काम पर लगाना सरकार का कर्त्तव्य है। बाकी भिखारियों का प्रश्न है। इन हरामखोरों को भी कानून द्वारा जबरदस्ती काम पर लगाना जरूरी है, ताकि मेहनती जनता की रोटी इनसे बच सके। ऐसे लाखों हरामखोर जनता की रोटी मुफ्त खा रहे हैं। इन पर दया करना गुनाह है, और इन्सानियत के विरुद्ध है।

अब प्रश्न उठता है कि गांधीवाद और गांधीवाद पर चलने वाली सरकार की नीतियां क्या कलयुग को स्वर्ग में बदल सकती हैं? उत्तर: नहीं। क्यों? क्योंकि इसकी नीतियां मेहनतकश जनता के मुकाबले में पूंजीवाद और जागीरदारी को जिन्दा रखने की है। ये आज के विकासवादी युग के विरुद्ध हैं। इस जमाने में जो क्रान्ति दुनियां भर में आ रही है उसको युग परिवर्तन भी कह सकते हैं। इसके सामने दुनियां की कोई शक्ति नहीं ठहर सकती वह चाहे कितनी ही शक्तिशाली क्यों न हो।

इसका दूसरा कारण यह भी है कि दुनियां भर में जो अल्पमत, बहुमत को दबाए बैठा था या दबाये हुए है, इस अल्पमत की लूट की नीति बहुमत के सामने स्पष्ट हो चुकी है। और बहुमत, अल्पमत से कई गुना ज्यादा ताकतवर भी है। अल्पमत को यदि ज्यादा से ज्यादा समझा जाए और उसकी संख्या बढ़ा कर भी दिखाई जाए तो बीस प्रति० से अधिक नहीं है। सिविल और फौज भी बहुमत में से ही भरती किए जाते हैं। कारोबार, खेती बाड़ी, कारखाने, आने जाने के साधन सभी मेहनती वर्ग के हाथों में ही हैं। पूंजीदारों के हाथ में ऐटमी बमों और ऐटमी हथियारों के सिवाय कुछ भी नहीं हैं। ऐटम बम भी तब ही पूंजीवाद के हक में कोई निर्णायक काम कर सकते हैं जब परिश्रमी वर्ग सोया हुआ हो। परन्तु मजदूर वर्ग जाग पड़ा तो बम जहां पड़े हैं वहीं पड़े रहेंगे और पूंजीवादियों को इन्हें चलाने का मौका ही नहीं मिलेगा।

ऐ दुनियां के गरीबो! जागो! और सगठित हो जाओ तुम इनसान हो और मेहनतकश इनसान। दुनियां को नर्क से स्वर्ग बनाने वाले तुम ही हो। अपने आपको पहचानो। अमीरों के लंगरों पर झूठे टुकड़े मत खाओ! दाते तुम हो, जो दुनियां के जीवों को अनाज, कपड़े और आराम के लिये घर बना कर देते हो। ये अमीर कहलाने वाले अपाहिज हैं परन्तु तुम्हारी अज्ञानता और गलती के कारण ये तुम्हारे अन्नदाता बने बैठे हैं। तुम्हारी गरीबी को कोई ईश्वर या ये लोग दूर नहीं करेंगे। इस गरीबी के जाल को तुम ही तोड़ सकते हो। लेकिन यह जाल टूटेगा तब जब सब एक होकर काम करोगे। उन कबूतरों की तरह, जो पकड़ने वाले के जाल में डार की डार फंस गए थे और जीने की आशा छोड़ चुके थे, परन्तु आपस में सोच कर उन्होंने इकट्ठे एक दम जोर लगा कर उड़ने का फैसला किया। जिसका नतीजा यह हुआ कि इकट्ठी शक्ति के बल से जाल की कीलियां उखड़ गईं और वे जाल समेत सुरक्षित उड़ गए।

ऐ गरीबों को गुलाम रखने वालो अपने दिमाग में बिठा लो कि यह काफिला तब तक नहीं रुकेगा, जब तक कि दुनियां से गरीबी समाप्त नहीं हो जाती। क्योंकि अब दुनियां की दुखी जनता जाग उठी है और एकता के बल से गुलामी और गरीबी की जंजीरों को तोड़े बगैर नहीं रह सकती। ★

हरयाणा में सम्मेलनों की धूम

भालौठ ग्राम में तहसील रोहतक का आर्य महा सम्मेलन सम्पन्न

२९, ३० जून को १११ वर्षीय संन्यासी स्वामी भीष्म जी की अध्यक्षता में भालौठ में आर्य महा सम्मेलन पूरी सफलता के साथ सम्पन्न हो गया। इस का संयोजन पं० रामचन्द्र आर्य भालौठ उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब कर रहे थे। सम्मेलन में स्वामी इन्द्रवेश जी सभा प्रधान, स्वामी अग्निवेश जी प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद पंजाब, स्वामी शक्तिवेश, डा० महासिंह, आचार्य यशःपाल, ब्र० विक्रम कुमार विवेकी, ब्र० श्री गंगाराम एडवोकेट आदि नेताओं ने भाग लिया। २९ जून को डेढ़ हजार लोगों का जलूस ट्रैक्टरों द्वारा निकटवर्ती आठ ग्रामों में निकाला गया। रात्रि को सम्मेलन में बोलते हुए स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि जब तक वेद और महर्षि स्वामी दयानन्द की विचार धारा के अनुसार समाज की व्यवस्था नहीं होगी तब तक अन्याय, शोषण, पाप, अत्याचार, भ्रष्टाचार आदि बन्द नहीं हो सकता। वैदिक समाजवाद ही केवल एक मार्ग है जिससे सन्तोष, शान्ति तथा सुख मिल सकता है। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी ने अपने व्याख्यान में कहा अन्याय का मुकाबला करने के लिए आर्य समाज को अपने संगठन को सुदृढ़ बनाना चाहिए। आर्य समाज के बिना कोई दूसरी संस्था देश में ऐसी नहीं जो देश की बिगड़ती हुई दशा को सम्भाल सके। यदि देश और संसार को कोई सच्चा कार्यक्रम दे सकता है तो वह केवल आर्य समाज है क्योंकि इस के सिद्धान्त वेदों पर आधारित हैं जो अपौरुषेय हैं। उन्होंने आह्वान किया कि सभी आर्य जन पूर्णतया संगठित होकर बिगड़ते वातावरण को पूरी शक्ति के साथ सम्भाले। अध्यक्षीय भाषण में १११ वर्षीय सन्यासी स्वामी भीष्म जी ने अपना आशीर्वाद देते हुए आर्य जनता से कहा जब तक आप शासन को अपने हाथ में नहीं लेंगे तब तक कोई बात बनने वाली नहीं है। अतः हमें सभी मत भेद भुलाकर आर्य समाज का प्रचार करना चाहिए। अन्य नेताओं ने भी अपने अपने विचार रखे। गोहत्या बन्दी, शराब बन्दी, मंहगाई और किसानों पर माल गुजारी तथा टैक्स वृद्धि पर रोक लगाने के सम्बन्ध में प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किए गए। इस महासम्मेलन में जनता की उपस्थिति लगभग पांच हजार तक रही।

५ जुलाई को आर्य सभा जीन्द का महा सम्मेलन सम्पन्न

आर्य सभा जिला जीन्द का महा सम्मेलन ५ जुलाई १९७४ को अनाज मण्डी जीन्द में १५ हजार किसान-मजदूरों की उपस्थिति में बड़े धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। पूज्य स्वामी भीष्म जी ने अपने क्रान्तिकारी भजनों और उपदेशों द्वारा किसानों, मजदूरों से कहा शोषण और जुल्म के खिलाफ संघर्ष करने के लिए कमर कस लेना चाहिए और गुलामी की शान्ति को अस्वीकार कर देना चाहिए। जब तक आप उत्पीड़कों के शासन को उखाड़ नहीं फेंकते तब तक मानव द्वारा मानव का शोषण बना रहेगा। इसी तरह आर्यसभा के उप प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी, महामन्त्री श्री रामधारी शास्त्री, श्री बिशनसिंह एडवोकेट एवं श्री धर्मवीर सिंह आदि नेताओं ने उपस्थित विशाल जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा जब तक जनता मानव द्वारा मानव के शोषण को खत्म कर वैदिक समाजवाद के सिद्धांत पर आधारित आर्य राष्ट्र की स्थापना नहीं कर लेती तब तक मनुष्य स्वाभाविक ढंग से भौतिक एवं आत्मिक उन्नति नहीं कर सकता।

प्रसिद्ध एवं क्रान्तिकारी भजनोपदेशक श्री शोभाराम जी प्रेमी एवं पं० चन्द्रभान जी ने अपने क्रान्तिकारी भजनों से लोगों को प्रभावित कर चेतना शील बनाया। अंत में आर्य सभा प्रधान स्वामी अग्निवेश जी जो वैदिक समाजवाद के उद्घोषक हैं, ने अपने ढाई घण्टे के लम्बे भाषण में वैदिक समाजवाद के सिद्धान्तों से अपने ओजस्वी भाषण द्वारा जनता को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि शोषण, अन्याय और जुल्म पर आधारित वर्तमान व्यवस्था जो जनता के सीने पर भारी चट्टान की तरह सवार है, समाज की समस्याओं के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। स्वतंत्रता के उपरान्त देश में पूंजीवादी समाज व्यवस्था के पनपने के कारण ही आज आर्थिक क्षेत्र में अबाध शोषण, राजनैतिक क्षेत्र में मुट्ठीभर पूंजीपतियों का शासन और सांस्कृतिक जीवन में चरम आदर्श हीनता व्याप्त है। इसीलिए आज के आदर्शहीन समाज में नैतिकता का घोर अधः पतन हुआ है। अतः जब तक वर्तमान व्यवस्था विद्यमान है, जनता को त्राण नहीं मिल सकता। वैदिक समाजवाद के सिद्धान्तों पर आधारित समाज में ही लोगों को जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की गारण्टी प्राप्त होगी और समाज आध्यात्मिक एवं भौतिक उन्नति के पथ पर निरन्तर अग्रसर होता रहेगा।

आगामी सम्मेलनों का कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी १८ जुलाई से २९ जुलाई तक सारे हरयाणा में जिले स्तर का सम्मेलन सम्पन्न होने जा रहा है। इन सम्मेलनों में स्वामी इन्द्रवेश जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, स्वामी अग्निवेश जी प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद पंजाब मुख्यरूप से जनता को सम्बोधित करेंगे। इन सम्मेलनों में इन मुख्य नेताओं के साथ अन्य प्रसिद्ध वक्ता एवं नेतागण भी भाग लेंगे। साथ ही साथ प्रतिनिधि सभा की प्रसिद्ध भजन मण्डलियां जैसे ब्र० रामकिशन और खेमसिंह आदि भी इसमें भाग लेकर अपने प्रभावशाली, ओजस्वी एवं क्रान्तिकारी भजनों से जनता को उद्वेलित करेंगी।

भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा भिन्न-भिन्न लोगों के संयोजकत्व में निम्न प्रकार निर्धारित हुआ है।

पहला सम्मेलन १८ जुलाई को सिरसा में श्री धर्मवीर जी के संयोकत्व में। २१ जुलाई को पानीपत में ब्र० रामकिशन जी के संयोजकत्व में। २२ जुलाई को कुरुक्षेत्र में श्री बिशन सिंह जी के संयोजकत्व में। २३ जुलाई को नरवाना में श्री रामधारी जी शास्त्री के संयोजकत्व में। २४ जुलाई को बुटाना में श्री गंगाराम जी के संयोजकत्व में। २६ जुलाई को तावडू में श्री स्वामी आदित्यवेश जी के संयोजकत्व में। २७ जुलाई को बोंद में ब्र० हरदेव जी के संयोजकत्व में। २९ जुलाई को छारा में स्वामी इन्द्रवेश जी के संयोजकत्व में।

नरेला में प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

४ जुलाई नरेला। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद की दिल्ली शाखा ने २९ जून से ४ जुलाई १९७४ तक नरेला में एक ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर का आयोजन प्रो० बलजीतसिंह आर्य के संयोजन में किया जिसमें भारत के विभिन्न राज्यों से आये १०० नवयुवक-विद्यार्थियों ने भाग लिया।

शिविर में ६ दिन तक गहन बौद्धिक तथा शारीरिक प्रशिक्षण दिया गया। संध्या हवन पर पं० राजवीर शास्त्री, ब्रह्मचर्य पर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा ब्रह्मचारी बलदेव जी शुक्रताल, अनुशासन पर ब्रि० होशियारसिंह जी और स्वामी वेदानन्द जी रोपड़ के बड़े खोज पूर्ण तथा सार-गर्भित व्याख्यान हुए। ४ जुलाई को स्वामी इन्द्रवेश जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के स्वागत में एक विशाल जलूस नगर में निकाला गया जिसमें प्रशिक्षणार्थियों ने ६ दिन में सीखे अपनी कला का स्थान-स्थान पर प्रदर्शन किया।

४ जुलाई को रात्रि को नरेला शहर के बड़े बाजार में एक जलसे का आयोजन किया गया। इस जलसे में आये हजारों श्रोताओं के बीच में एक प्रशिक्षणार्थी ब्र० ओमपालसिंह एम० एस० सी० ने नैष्ठिक ब्रह्मचारी रह कर समाज के मुख्य तीन शत्रुओं– अज्ञान, अन्याय, अभाव के साथ जीवन पर्यन्त संघर्ष करने का दृढ़ संकल्प लिया। अन्त में स्वामी अग्निवेश जी ने अपने ढाई घन्टे के ओजपूर्ण व्याख्यान से जनता को झकझोर दिया। उन्होंने अपने ओजस्वी व्याख्यान में बताया कि समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, अनैतिकता, बेईमानी तथा आर्थिक एवं सामाजिक विषमता, ब्लैक-मार्केटिंग, रिश्वतखोरी और जातिवाद तथा भाई भतीजावाद का मूल कारण वर्तमान सड़ी-गली मानवता विरुद्ध पूंजीवादी अर्थव्यवस्था है। शोषण पर आधारित इस व्यवस्था के ध्वंस में ही जनता का त्राण है।

गुरुकुल प्रभात आश्रम का महोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल प्रभात आश्रम का महोत्सव गंगादशहरा मेले पर भोला झाल में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। वहां पर जिला के सर्वश्रेष्ठ भजनोपदेशक श्री शोभाराम प्रेमी जी के भजनों की अमृत वर्षा हुई। ब्रह्मचारियों के संस्कृत में भाषण, वाद विवाद, शास्त्रार्थ, अंग्रेज़ी में भाषण, सस्वर वेद पाठ आदि ने जनता पर बहुत गहरा प्रभाव डाला। वहां यजुर्वेद महायज्ञ भी बहुत ही प्रशंसनीय ढंग से हुआ। इसमें ब्रह्मचारियों ने वेद के सस्वर पाठ से आहुतियां दीं। बाहर से भी कई एक विद्वान पधारे और ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद देकर कृत कृत हुए।

ब्र० सुरेन्द्रकुमार वैयाकरण

तहसील बहरोड जि० अलवर किसान सम्मेलन

आर्य सभा बहरोड़ द्वारा दि० २०, २१, २२-६-७४ को बहरोड में गेहूं की लेवी विरोधी सफल प्रदर्शन किए गए। दि० २७. ६. ७४ को लेवी विरोधी एक तहसील किसान सम्मेलन आर्य सभा बहरोड़ के तत्वाधान में स्वामी शक्तिवेश जी वैदिक आश्रम रेवाड़ी की अध्यक्षता में हुआ। सम्मेलन में भारत प्रसिद्ध भजनोपदेशक बेगराज जी के भी ओजस्वी भजनोपदेश हुए। स्वामी शक्तिवेश जी ने किसानों को सम्बोधित करते हुए कहा कि बहरोड़ का बहादुर किसान जेल की यातनाओं से डरने वाला नहीं है क्योंकि यह उस महापुरुष की सन्तान है जिसके पैदा होने से पहले ही जेल के वारण्ट जारी होगये थे और जन्म जेल की कोठरी में ही हुआ। अब भी यह आन्दोलन जारी है। इस संघर्ष का नेतृत्व ब्र० भवानीसिंह जी, अध्यापक दिलीप सिंह जी तथा महा० डेडराज जी कर रहे हैं। तहसील के ग्राम २ में घूम-कर किसान को जगा रहे हैं।

भवानीसिंह मंत्री
आर्यसभा, बहरोड़, जि० अलवर राज०

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पिन कोड २४६४०४

प्रथम जुलाई ७३ से वेद, कला तथा विज्ञान महाविद्यालयों में नवीन छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है जो ७ अगस्त तक चलेगा। विलम्ब शुल्क सहित ३१ अगस्त तक।

विद्याविनोद (इण्टर) प्रवेश योग्यता संस्कृत सहित मैट्रिक या समकक्ष, अंग्रेजी सहित विशारद (पंजाब)

अलंकार (स्नातक) -प्रवेश योग्यता संस्कृत सहित इण्टर या समकक्ष, अंग्रेजी सहित उत्तर मध्यमा, विद्याविनोद, विशारद (पंजाब) अंग्रेजी में इण्टर सहित। वेदालंकार/विद्यालंकार उपाधि दी जाती है।

बी. एस-सी. गणित तथा जीव विज्ञान वर्ग।

एम. ए.-वेद, संस्कृत, दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास, तथा पुरातत्व, हिंदी, गणित तथा मनोविज्ञान। प्रवेश योग्यता बी. ए., बी. एस-सी., बी. काम., अलंकार, शास्त्री, आचार्य आदि। महिलायें और सैनिक व्यक्तिगत रूप से परीक्षा दे सकते हैं।

पी-एच. डी.-वेद, संस्कृत, हिन्दी तथा प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्व में। प्रार्थनापत्र १६-८-७४ अगस्त तक स्वीकार्य। योग्य छात्रों के लिए छात्रवृत्ति उपलब्ध।

सुसज्जित प्रयोगशालायें, छात्रावास पुस्तकालय, चिकित्सालय, क्रीड़ांगन, एन. सी. सी., तथा तैराकी की सुविधायें उपलब्ध। उपाधियों भारत सरकार तथा देश के प्रमुख विश्वविद्यालयों द्वारा मान्यता प्राप्त। वेद विषयों में सभी को छात्रवृत्तियां। पी-एच.डी. आवेदनपत्र तथा नियमावली ५ रु०, अन्य प्रत्येक पाठ्यक्रम २ रु० २५ पै० डाक व्यय २५ पै०। अलंकार तक छात्राओं का प्रवेश कन्या गुरुकुल, ६०, राजपुर रोड, देहरादून में। अच्छी छात्रावास सुविधा संपर्क करें।

डा० गंगाराम कुल सचिव

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद नवाशहर

गत दिवस स्थानीय आर्ययुवक परिषद की बैठक स्वामी वेदानन्दजी सरस्वती की अध्यक्षता में हुई जिसमें स्थानीय आर्य युवक परिषद को 'केन्द्रीय आर्य युवक परिषद' बना दिया जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गए।

प्रधान—श्री विद्यानाथ
मन्त्री—दिनेश कुमार खन्ना
कोषाध्यक्ष—सत्य पाल

आर्य समाज शिवाजी नगर गुड़गावां

दिनांक १०/३/७४ को आर्यसमाज शिवाजी नगर गुड़गावां की साधारण सभा हुई। जिसमें निम्नलिखित अधिकारी सर्व सम्मति से चुने गए।

प्रधान—श्री चन्द सिंह
मन्त्री—श्री किशनचन्द चुरानी
कोषाध्यक्ष—श्री सुभाषचन्द आर्य

आर्य समाज झज्जर

दिनांक ८/६/७४ को आर्य समाज झज्जर का चुनाव सम्पन्न हुआ, जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गए।

प्रधान—डा० किशनदास
मन्त्री—श्री रमेशचन्द्र
कोषाध्यक्ष—श्री रणधीरसिंह

आर्य समाज फरीदाबाद

इस समाज का चुनाव सम्पन्न हुआ और निम्नलिखित पदाधिकारी मनोनीत हुए।

प्रधाव—श्री ध्यान चन्द जी
मन्त्री—श्री सुभाषचन्द जी
कोषाध्यक्ष—श्री ईश्वर सिंह

आर्यसमाज बौन्द खुर्द

आर्य समाज बौन्द खुर्द का चुनाव दिनांक ५.३.७४ को स्वामी इन्द्रवेश के आगमन पर हुआ और निम्नलिखित पदाधिकारी मनोनीत हुए।

प्रधान—श्री रामनाथसिंह
मंत्री—श्री भोपालसिंह
कोषाध्यक्ष—श्री सुखदेवसिंह

आर्यसमाज पाली [राजस्थान]

पाली आर्य समाज का चुनाव १६-५-७४ को निम्नप्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान—मीना राम जी जोशी,
मंत्री—सुरेन्द्र सिंह चौहान आर्य
कोषाध्यक्ष-शिव लाल जी वर्मा

चुनाव समाप्ति पर सभी ने स्वामी चन्द्रवेश जी का आशीर्वाद मांगा और नमस्ते की। स्वामी चन्द्रवेश जी ने अपनी ओजस्वी वाणी में नवयुवकों को आह्वान किया कि भारत का भार तुम्हारे कंधों पर है अतः भारत का इतिहास बदल दो और आर्य राष्ट्र बनाने में जुट जाओ। वैदिक समाजवाद का नारा लगाकर आर्यावर्त को सही सकल्पों से उन्नत बनाओ।

आर्य समाज नारनौल

आर्यसमाज नारनौल मोहल्ला खड़-खड़ी का चुनाव महाशय मुरलीधर जी की अध्यक्षता में ता० २६-५-७४ दिन रविवार को सम्पन्न हुआ जिस में निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान—लाला ईश्वरदास जी
मन्त्री—श्री देवराज आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री रमलदास जी

आर्य कुमार सभा किंग्जवे दिल्ली

आर्यकुमार सभा किंग्जवे का वार्षिक चुनाव सायं सात बजे सभा के वाचनालय विजय नगर में डा० कृष्णकुमार गोस्वामी की अध्यक्षता में हुआ जो निम्नलिखित हैं।

प्रधान—श्री ओ३म् सपड़ा
मंत्री—श्री राकेश बवेला
कोषा०—श्री श्रवणकुमार

आर्य समाज रायसिंहनगर

प्रधान—श्री धर्मचन्द पाठक
उप-प्रधान-श्री चन्द अग्रवाल
मन्त्री—विलायती राम सिंगल
कोषाध्यक्ष—कुन्जलाल

आर्यसमाज नाहरी जि. सोनीपत

आर्यसमाज नाहरी का वार्षिक चुनाव १८-६-७४ को श्री सूरजभान जी की अध्यक्षता में हुआ जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए।

प्रधान श्री जिले सिंह जी
मन्त्री-श्री रमेश चन्द्र एम. ए.
कोषाध्यक्ष-श्री होश्यार सिंह जी आर्य

पंजीयन क्रमांक **RTK 28**
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

राजधर्म
रोहतक
१२ जुलाई १९७४

…पति जी,

नवयुग की कविता ऐसी हो

स्वर में खूं की ज्वाला धधके, बस महाकाल सी गूंज उठे ।
खेतों खलिहानों का क्रन्दन बन, प्रलय घटा सा झूम उठे ।।
डगमग-डगमग भू डोल उठे, नभ मण्डल भी सुन ले दरार,
हिल उठे धरा सुन कर दहाड़, वाणी बिजली सी लपकी हो ।।
नवयुग की कविता ऐसी हो ।...

जिसमें समाज की पीड़ा का, उद्घोष धरा पर बिखर पड़े ।
शोषक जन की आशाओं पर, शोषित कर क्रन्दन निखर पड़े ।।
झोंपड़ियों की पावन स्मृति, इन भवनों को झकझोर उठे ।
कर दे समाज में उथल-पुथल, भावों की सरिता ऐसी हो ।।
नवयुग की कविता ऐसी हो ।...

गांवों के दीनों का क्रन्दन, जलती ज्वाला का गान लिए ।
श्रमिकों के श्रम का जला लहू, बन लहराये तूफान लिये ।।
बड़वानल बन कर उबल पड़े, वैभव को कर दो धार-धार ।
जो हिला हिमालय चोटी दे, वाणी में पीड़ा ऐसी हो ।
नवयुग की कविता ऐसी हो ।...

परिवर्तन का स्वर लिये हुये, पग-पग पर क्रांति जगाता हो ।
श्रमिकों दीनों का करुण राग, बन प्रलय घटा सा आता हो ।।
जो पूंजी की ठेकेदारी, शोषण का मार्ग मिटाता हो ।
सोई मानवता जाग उठे, मानव में समता ऐसी हो ।।
नवयुग की कविता ऐसी हो ।...

समता की आंधी ले उपवन, पूंजी की ढेरी बिखर पड़े ।
दीनों-असहायों के करुणामय क्रन्दन से सिहर उठे ।।
जिसके कम्पनमय चीत्कार से, शिखर हिमालय पिघल पड़े ।
दे ऊंच-नीच का भेद मिटा, गायन की गीता ऐसी हो ।।
नवयुग की कविता ऐसी हो ।...

लेखनी काल के नागिन सी, व्यभिचारी को ज्यों डसती हो ।
अत्याचारी, शोषक, निर्दयी के उर-अन्तर में धंसती हो ।।
सोचो, बदलो सब कुटिल नीति, शासन को इंगित करती हो ।
निर्मित हो जिससे नव समाज, कवि की नव कविता ऐसी हो ।
नवयुग की कविता ऐसी हो ।...

राजधर्म प्रकाशन के लिए [illegible] रोहतक [illegible] एव मुद्रित । फोन : ८८२

राजधर्म

अङ्क २३
दिसम्बर १९७४
प्रधान सम्पादक : स्वामी अग्निवेश
सह-सम्पादक : गिरजेश्वर
वार्षिक १५ रु०
एक प्रति ७० पैसे

खूने शहीद कुर्बानी माँगता है

कल्पनातीत दुर्गति की ओर अग्रसर

दमन विरोधी जनाक्रोश और युवा दायित्व

जनता, राजसत्ता और सेना

क्या कीमतें घट रही हैं ?

विद्यार्थियों के शोषण पर मुनाफे का पहाड़

यदि गांधी जी होते

क्रान्तिकारी विकल्प के लिए

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की पंजाब प्रान्तीय शाखा की बैठक सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की पंजाब प्रान्तीय शाखा की एक आवश्यक बैठक दिनांक ९-११-७४ की रात्रि को पंजाब प्रान्ती। आर्य महासम्मेलन लुधियाना के अवसर पर परिषद् के प्रधान युवा हृदय सम्राट, युवक संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें पंजाब प्रान्त के विभिन्न क्षेत्रों से आये सैंकड़ों नौजवानों ने भाग लिया। बैठक में पंजाब प्रान्त में नयी आर्य युवक परिषद् के निर्माण, संगठन के कार्यों में और अधिक गतिशीलता लाने तथा संगठन की दैनिक शाखा लगाने पर विचार किया।

श्री बलजीत सिंह आर्य प्रधानाचार्य, राधाकृष्ण आर्य महाविद्यालय नवांशहर दोआबा ने संगठन को सुदृढ़ बनाने वाले विभिन्न सूत्रों पर विचार रखते हुए कहा कि एक बात जो संगठन को सुचारु रूपेण सुदृढ़ और विकसित करने के लिए आवश्यक है और अभी इसी समय से की जा सकती है, वह है संगठन की पाक्षिक पत्रिका 'राजधर्म' के सदस्य बनाने की जिम्मेदारी लेना, क्योंकि इस पत्रिका के माध्यम से नौजवान हर पन्द्रहवें दिन आपस में निकट आते रहेंगे। और हर युवक संगठन की गतिविधियों से अवगत भी होता रहेगा। स्वयं प्रि० आर्य जी ने एक मास में १०० नये सदस्य बनाने की जिम्मेदारी ली। प्रि० आर्य जी के अतिरिक्त स्वामी वेदानन्द जी और श्री भण्डारी जी के अतिरिक्त कई युवकों ने संगठन को और भी अधिक सुदृढ़ बनाने की परिचर्चायें की।

प्रि० आर्य जी ने नौजवानों को सूचना दी कि राधाकृष्ण आर्य महाविद्यालय नवांशहर में लगभग २०० आर्य नवयुवकों का एक साप्ताहिक 'ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर' २३ दिसम्बर से लग रहा है। शिविर का मुख्य उद्देश्य है नौजवानों को गिरती हुई नैतिकता, बढ़ते हुए हिप्पीवाद, यौवन को ग्रस्ती हुई शराबखोरी, हड़पती हुई फैशन परस्ती के भयंकर पंजे से मुक्ति दिलवाना।

इसके अनन्तर आर्य युवा क्रान्तिकारी स्वामी इन्द्रवेश जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने युवकों के समक्ष अपने विचार रखते हुए कहा कि अब समय की मांग है परिवर्तन। अब जबकि समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई है तो क्यों न आर्य युवक आगे आकर इस सामाजिक परिवर्तन को सही दिशा दें। उन्होंने कहा कि यदि आर्य युवक आगे आकर अपना सहयोग नहीं देंगे तो परिवर्तन गलत हाथों में जा कर गलत दिशा में जा सकता है।

अन्त में युवा हृदय सम्राट सार्वदेशिक आर्य परिषद् के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने युवकों से समय-दान का आह्वान करते हुए कहा कि भारत में कुंठाग्रस्त अपने उचित स्तर से विचलित हो रही नैतिकता को अवलम्बन देने के लिये गर्म खून वाले आर्य नौजवानों को आगे आना होगा। सामाजिक क्रान्ति में नौजवानों की उपेक्षा क्रान्ति को मृत्यु के मुंह में फेंकना है। स्वामी जी ने आगे कहा कि आज युवकों को आर्य युवक परिषदों के माध्यम से सामाजिक क्रान्ति में प्रविष्ट होना चाहिए और आर्य समाज के प्रखर रूप को प्रजा के के सामने रखना चाहिए। अन्त में स्वामी जी ने युवा वर्ग से अपील करते हुए कहा कि आर्य समाज की शताब्दी का कार्य लाखों नौजवानों को आर्य समाज में दीक्षित करना है।

१४–१५ दिसम्बर को करतारपुर चलो

आपको यह सूचित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि १९७५ को होने वाली शताब्दी के उपलक्ष में अमृतसर व लुधियाना के पश्चात् तीसरा बड़ा आर्य सम्मेलन १४-१५ दिसम्बर १९७४ को गुरु विरजानन्द स्मारक करतारपुर में बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा है। इस धार्मिक मेला को सफल बनाने के लिए भिन्न-भिन्न कमेटियां बना दी गई हैं। गुरु विरजानन्द संस्कृत विद्यालय जिसकी स्थापना महान आर्य नेता त्यागी और तपस्वी महात्मा स्वामी विरजानन्द सरस्वती के कर-कमलों द्वारा हुई थी। इस समय अठाईस ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द जी की पाठ विधि अनुसार शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। भोजन व शिक्षा निःशुल्क है। ८ दिसम्बर से प्रातः सायं यजुर्वेद परायण यज्ञ हुआ करेगा। जिसकी पूर्णाहुति १५ दिसम्बर रविवार प्रातः ९ बजे होगी। १४ दिसम्बर शनिवार यज्ञ के पश्चात् महात्माओं के प्रवचन संगीत तथा महिला सम्मेलन होगा। बाद दोपहर शोभा-यात्रा (जलूस) निकलेगा। रात्रि आर्य नेताओं के भाषण होंगे। १५ दिसम्बर रविवार को सन्त महात्माओं के उपदेश, विद्यार्थी सम्मेलन होगा, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारी शारीरिक व्यायाम, वेद पाठ तथा संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे साथ ही आर्य कन्या पाठशाला की छात्राओं का कार्यक्रम होगा। आप से सानुरोध प्रार्थना है कि अपने इष्ट मित्रों तथा परिवार सहित पधारने की कृपा करें। भोजन तथा ठहरने का प्रबन्ध स्मारक की ओर से होगा। गर्म बिस्तर साथ लाने का कष्ट करें।

सम्पादकीय

दमन विरोधी जनाक्रोश और युवा दायित्व

गत दो-तीन वर्षों से हरयाणा की जनता को भयंकर दमन का सामना करना पड़ रहा है । उनके न्यूनतम जनतांत्रिक अधिकार भी सुरक्षित नहीं है । वास्तव में हरयाणा में बन्सीलाल शासन में नागरिक स्वतन्त्रता कभी नहीं रही । शान्तिपूर्ण प्रदर्शन और आन्दोलन के मौलिक अधिकारों का हनन यहाँ आम बात है । आज यहां के समाज का प्रत्येक तबका चाहे खेत में मेहनत करने वाला गरीब किसान हो या खेतिहर मजदूर, चाहे स्कूल, कालेज और विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले छात्र हों या उनको पढ़ाने वाले अध्यापक, चाहे फैक्ट्री में काम करने वाले मजदूर हों या बिजली, रेलवे और बसों के कर्मचारी, चाहे छोटे दुकानदार हों या भोली-भाली महिलायें और चाहे सदियों से शोषण, जुल्म और अन्याय के प्रबल शिकार हरिजन, सभी कांग्रेस के घोर दमनकारी मशीनरी से उत्पीड़ित हैं । परन्तु वास्तव में दमन एवं उत्पीड़न से जन-असंतोष का शमन नहीं होता, वह दिन प्रतिदिन बढ़ता जाता है। यही कारण है कि आज दमन विरोधी जनाक्रोश हरयाणा में भी तीव्र रूप धारण करता जा रहा है । आज गुजरात के बाद मात्र बिहार ही नहीं जहाँ स्थिति विस्फोटक होती जा रही है, बल्कि सम्पूर्ण देश आज जनाक्रोश की विस्फोटक ज्वालामुखी की तरफ बढ़ता जा रहा है ।

कांग्रेसी प्रशासन के लगातार २७ वर्षों के शोषण ने देश को आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त विकट स्थिति में पहुंचा दिया । फलस्वरूप राजनैतिक क्षेत्र में मुट्ठीभर पूंजीपतियों का शासन और सांस्कृतिक जीवन में घोर आदर्शहीनता व्याप्त है । इसलिए आदर्शहीन समाज में नैतिकता का घोर अधः पतन हुआ है । आज चारों तरफ स्वार्थ एवं छीना-झपटी का साम्राज्य है । जरूरी चीजों के मूल्यों की आशातीत वृद्धि ने जन- जीवन को अत्यन्त कष्ट साध्य बना दिया है । जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से सम्बन्धित वस्तुएं जनता की क्रय शक्ति से बाहर हो गयी है क्योंकि देश की आधी से अधिक आबादी घोर विपन्नता में जीवन यापन करती है । बढ़ती भयंकर बेरोजगारी के कारण लोगों के हृदय में घोर निराशा और भयंकर अविश्वास का वातावरण व्याप्त है । आजादी की लड़ाई के त्याग और बलिदान के दिनों में लोगों के हृदय में आशा एवं विश्वास के जो अंकुर उगने शुरू हुए थे, उसे कांग्रेसी कुशासन ने अपने क्रूर हाथों से मसल डाला है। आज जिन्दगी की बेहद भयावह घड़िया स्वतन्त्रता का मजाक उड़ा रही है । वर्तमान व्यवस्था के आर्थिक ढांचे में देश की भयंकर बेरोजगारी, कमरतोड़ महंगाई, सर्वव्यापी भ्रष्टाचार एवं घोर सांस्कृतिक एवं नैतिक अधःपतन की समस्याओं का निराकरण असम्भव हो गया है । यही कारण है कि सरकार अपने निहित स्वार्थ की पूर्ति के लिए तानाशाही प्रवृत्ति की ओर दिन प्रतिदिन अग्रसर होती जा रही है ।

परन्तु जब किसी विशेष सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत शोषित वर्ग में असंतोष की मात्रा बढ़ती रहती है तो एक ऐसी अवस्था आती है जब एकाएक क्रान्ति का विस्फोट होता है और उसके फलस्वरूप पुरानी व्यवस्था समाप्त होकर नई व्यवस्था आ जाती है । आचार्य नरेन्द्र देव के शब्दों में "जिस प्रकार बच्चा मां के गर्भ में बढ़ता है किन्तु लगभग नौ मास के उपरान्त एक दिन वह अचानक माता को कड़ी प्रसव वेदना देते हुए बाहर निकल पड़ता है, उसी प्रकार पुराने समाज के भीतर नये समाज की अवस्थाएं जब परिपक्व हो जाती हैं तो अचानक क्रान्ति के द्वारा नये समाज का जन्म होता है । क्रान्ति नये समाज की प्रसव वेदना है । एक समाज से नये उन्नत समाज की ओर जाने के लिए क्रान्ति, एक अनिवार्य सीढ़ी है ।" चूंकि आज भारत का वर्तमान समाज नवीन आदर्शों को जन्म देने के लिए प्रसव वेदना से व्याकुल है अतः आम जनता के सामने वे आदर्श एवं मूल्यबोध अवश्य आने चाहिए जो उनमें नयी उमंग तथा नया उभार ला सके । युवा वर्ग ही इस महान उत्तरदायित्व का निर्वाह कर सकता है क्योंकि प्रत्येक देश में समाज के विकास के हर चरण में विद्यार्थी और युवा ही आगे बढ़ते हैं । इतिहास इस बात का साक्षी है कि समाज की रूपरेखा में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने वाले, नई सभ्यता का निर्माण के लिए तूफानी आन्दोलन करने वाले देश के नवयुवक ही होते हैं । अतः युवा शक्ति को इस मार्ग में आने वाली अनेक असुविधाओं का सामना करते हुए समाजवादी आदर्श को जनता के सम्मुख प्रस्तुत करना होगा ताकि जनता के हृदय में यह आदर्श अपना स्थान बना ले । इसके लिए युवकों को अपने आपको प्रशिक्षित करना होगा ताकि वे स्थिति को भलि-भांति प्रभावित कर सकें क्योंकि विद्यार्थियों और नवयुवकों को ही नेतृत्वमूलक निर्णायक भूमिका अदा करनी है । ऐसा करके ही विद्यार्थी क्रान्तिकारी विचार से उत्प्रेरित एवं सराबोर होकर तथा पूरी तरह समर्पित होकर जन साधारण के पास जा सकते है और उनमें राजनैतिक शक्ति विकसित कर विभिन्न स्तरों में संघर्षशील जनता के निजी संगठनों का निर्माण ग्राम एवं मुहल्लों से शुरू कर राज्य स्तर तक पहुंचा सकते हैं । तभी जनता के संघर्ष का समय आता है जिसे हम क्रान्ति कहते हैं ।

क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने में युवा शक्ति की असाधारण भूमिका है अतः युवक समुदाय के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह शोषित वर्ग के संग्राम में शामिल होकर राजनैतिक पहल अपने साथ रखें। आज जनता के पास जाने, उन्हें संगठित करने और उनमें राजनैतिक शक्ति विकसित करने का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व इतिहास ने युवा शक्ति (विद्यार्थी) के कन्धों पर डाल दिया है जिससे मेहनतकश जनता बुनियादी परिवर्तन द्वारा पूंजीवादी सत्ता को खत्म कर शोषण मुक्त समाज की रचना करने में समर्थ हो सके।

आज स्वतन्त्रता के २७ वर्षों बाद भारत में पहली बार विद्यार्थियों ने शोषण के खिलाफ शोषित वर्गों का जनान्दोलन संगठित किया है। आज भारतीय समाज में शोषण, जुल्म, अत्याचार एवं अन्याय का कांग्रेसी शासन भारतीय जनता की छाती पर भारी बोझ की तरह सवार होकर भारत की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक नीतियों तथा व्यवहारों को नियंत्रित कर रहा है तो ऐसी स्थिति में निरन्तर बढ़ती महंगाई, भयंकर बेरोजगारी, व्यापक भ्रष्टाचार और शिक्षा में आमूल-चूल परिवर्तन की मांग को लेकर चलाया गया क्रान्तिकारी सम्भावनाओं से परिपूर्ण बिहार छात्र-आन्दोलन देश के लिये एक शुभ लक्षण है। गुजरात के बाद बिहार का यह आन्दोलन आज देश के समस्त जनमानस को उद्वेलित कर रहा है। घोर सरकारी दमनकारी प्रवृत्ति के बावजूद भी जनान्दोलन एक प्रान्त तक सीमित न रह कर देश व्यापी उग्र रूप धारण करता जा रहा है। हरयाणा भी गुजरात और बिहार की राह पर अग्रसर है। चार नवम्बर को छात्र संघर्ष समिति के आह्वान पर हरयाणा में बिहार दिवस के समर्थन में जगह-जगह प्रदर्शन हुआ। परन्तु हरयाणा सरकार को विद्यार्थियों का यह शान्तिपूर्ण जलूस और प्रदर्शन भी सह्य न हुआ। दुनियां के किसी भी लोकतांत्रिक देश में शान्तिपूर्ण जलूस और विरोध प्रदर्शन पर रोक नहीं है, परन्तु भारत की सरकार शान्तिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर लाठी चार्ज करके उन्हें गैरकानूनी ढंग से गिरफ्तार करती है और लोकतांत्रिक मान्यताओं का दृढ़ समर्थक बनने का दावा करती है। अब तक कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से चार प्रमुख छात्र नेताओं को (देवेन्द्र शर्मा, जगबीर, रोशनलाल तथा आनन्द प्रकाश) को विश्व-विद्यालय से निष्कासित किया जा चुका है। छात्र-दमन विरोधी इस नीति के विरुद्ध जगह-जगह कालेजों में हड़तालें हुई और विद्यार्थियों ने जलूस भी निकाले तथा इन निष्कासित विद्यार्थियों को वापस लेने की मांग भी की। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय शान्ति और सुरक्षा के नाम पर पुलिस को सौंप दिया गया है।

हरयाणा के मुख्यमन्त्री महोदय यहीं तक सीमित नहीं रहे क्योंकि उन्हें भय है कि हरयाणा भी बिहार का रूप न धारण कर ले। इसलिए यहां के विद्यार्थियों का बिहार आन्दोलन के प्रति सहानुभूति देख कर मुख्यमन्त्री ने करनाल में कहा कि वे तय कर चुके हैं कि जो विद्यार्थी इस आन्दोलन में भाग लेंगे उन्हें सरकारी नौकरियां नहीं मिलेंगी और पुलिस थानों में उनकी हिस्ट्री शीट्स रखी जायेगी। सरकार विद्यार्थियों की हिंसा बर्दाश्त नहीं करेगी। लड़कों को तय करना है कि उन्हें पढ़ना है कि घर बैठना है। यही नहीं उन्होंने जयप्रकाश नारायण तक को कायर तथा सत्ता का भूखा कहा। २३ नवम्बर को छात्र नेता जयप्रकाश नारायण से मिल कर जब कुरुक्षेत्र आने का उन्हें निमंत्रण दिया तो उन्होंने २७ नवम्बर को यहां आना स्वीकार कर लिया। २७ नवम्बर के जलसे को असफल बनाने का हरयाणा सरकार ने पुरजोर प्रयास किया, फिर भी कक्षाएँ छोड़कर और पुलिस को चकमा देते हुए विद्यार्थी कुरुक्षेत्र पहुँचे। किले के बाहर सभा हुई। जयप्रकाश नारायण के साथ गये संसद सदस्यों ने कहा कि करनाल बाय पास पर जयप्रकाश जी के कार पर पत्थरों, ईंटों, तथा लाठियों से हमला किया गया। पुलिस इन प्रदर्शनकारियों के पीछे थी। इस हमले के फोटो लेने निकले 'स्टेट्स मैन' के फोटोग्राफर रघुराय को सिर पर पत्थर लगा और लाठी भी। वे अपनी बांह से खून पोंछते रहे।

अनेकों प्रकार के सरकारी व्यवधानों के बावजूद कुरुक्षेत्र जैसे छोटे शहर में भी १५-२० हजार आदमी इकट्ठे हो गए थे। जयप्रकाश जी ने कहा कि श्रीमती इन्दिरा गांधी और बन्शीलाल लोगों को सभा में आने से रोक कर हमें प्रजातन्त्र की अच्छी शिक्षा दे रहे है। इनके चलते प्रजातन्त्र बहुत खतरे में है और उसकी रक्षा के लिए कुरुक्षेत्र जैसे ऐतिहासिक स्थान में महाभारत आज से शुरू हो रहा है। उन्होंने बन्शीलाल की चुनौती भी मंजूर की और कहा कि विद्यार्थियों और लोगों के बुलावे पर वे फ़िर हरयाणा आयेंगे और घूमेंगे। उन्होंने अपने सौ मिनट के भाषण में बिहार आन्दोलन के पूरे मुद्दे बतलाए। उन्होंने आगे कहा कि श्रीमती इन्दिरा गांधी १९७१-७२ में जनता का प्रचण्ड बहुमत प्राप्त कर भी भ्रष्टाचार और बेरोजगारी की समस्याएँ क्यों नहीं निपटा सकी? विकास के कामों में खर्च किये गये धन में से आधा पैसा भ्रष्ट राजनीतिज्ञों, अफसरों और ठेकेदारों की जेबों में गया है। लाईसेंसों, परमिटों और दूसरे फायदों के बदले में पैसे वालों से करोड़ों रुपया लेकर चुनाव लड़ा जाता है। चुनाव में भ्रष्टाचार को रोकने और निर्वाचन पद्धति में सुधार करने के लिए सरकार उस संसदीय समिति की सिफारिशें भी मानने को तैयार नहीं जिसमें कांग्रेसियों का बहुमत था।

(शेषांश पृष्ठ १८ पर)

कल्पनातीत दुर्गति की ओर अग्रसर

○ पुरुषोत्तम सर्राफ

भारत में प्रजा पर करों के भार में बहुत अधिक वृद्धि कर दी गयी है और प्रतिवर्ष इसमें तेज रफ्तार से वृद्धि की जा रही है।

सन् १९४७ में अंग्रेजों ने जब भारत छोड़ा और देश को स्वाधीनता मिली, उस समय प्रजा पर केन्द्रीय और प्रान्तीय करों का कुल सम्मिलित वार्षिक भार ४ (चार) अरब, ४० (चालिस) करोड़ रुपये था। वर्ष १९७३-७४ में भारतीय प्रजा पर केन्द्रीय और प्रान्तीय करों का कुल सम्मिलित वार्षिक भार मोटे अनुमान के अनुसार करीब सत्तर अरब रुपये हो गया है। चालू वर्ष ७४-७५ में वार्षिक कर-भार (केन्द्रीय और प्रान्तीय कर-भार) ८० (अस्सी) अरब रुपये होने का अनुमान है। अन्तिम आंकड़ों के प्राप्त होने पर ये रकमें बढ़ना ही सम्भव है, घटेगी नहीं। (इन करों का अधिकांश भाग वस्तु-करों के रूप में सामान्य जनता से वसूल होता है।)

आर्थिक वर्ष ६८-६९ में देश की जनता पर कर-भार करीब ३७ (सैंतीस) अरब, वर्ष ६९-७० में ४२ अरब रुपये, वर्ष ७०-७१ में ४७ अरब, वर्ष ७१-७२ में ५५ अरब और वर्ष ७२-७३ में करीब ६३ अरब रुपये था। वर्ष ७२-७३ के कर भार की रकम बजट अनुमानों पर आधारित है।

जब अंग्रेजों ने भारत छोड़ा तो द्वितीय महायुद्धजनित लम्बी असामान्य स्थिति के बावजूद भी भारतीय प्रजा पर केन्द्र और प्रान्तीय करों का सम्मिलित वार्षिक भार सिर्फ ४ अरब, ४० करोड़ रुपये था। इस भार को प्रगतिवाद के चक्कर में फंसे हुए हमारे अर्थ-अनभिज्ञ भारतीय शासकों ने अल्पकाल में ही बढ़ाकर ८० अरब रुपये वार्षिक कर दिया। मोटे अनुमान के अनुसार इस समय इस कर-भार में प्रति वर्ष १० अरब रुपयों की नई वृद्धि हो रही है इतना ही नहीं, वृद्धि की मात्रा भी प्रति वर्ष बढ़ रही हैं। अगर यह क्रम भारत में १०-१५ वर्ष और चलता रहा तो देश की जो दुर्गति होगी, उसकी भयानक कल्पना से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

कागजी मुद्रा की तादाद में वृद्धि

कागजी मुद्रा की तादाद में इस समय प्रति वर्ष करीब ७-८ अरब रुपयों की वृद्धि की जा रही है। वृद्धि की मात्रा भी प्रति वर्ष बढ़ रही है। आर्थिक वर्ष १९७२-७३ में नोटों की तादाद में ६ अरब, १६ करोड़; २७ लाख रुपयों की वृद्धि की गई। एक-एक रुपये के नोटों (जिन्हें कानूनी भाषा में सिक्का कहा जाता है) की तादाद अलग है। स्पष्ट है, वृद्धि की मात्रा भी प्रतिवर्ष बढ़ रही है।

तीन सौ टन वजन

आठ अरब रुपयों के औसत नोटों का अपना वजन करीब ३०० (तीन सौ) टन होता है। तीन सौ टन वजन के नये नोट प्रतिवर्ष छपे और प्रचलित किये जा रहे हैं। पुराने नोटों के बदले में जो नये नोट प्रचलित होते हैं, उनका वजन इसमें सम्मिलित नहीं है। नोटों का आकार छोटा कर दिये जाने के बावजूद इतना वजन है। स्थिति इतनी खराब है कि नोटों के छोटे आकारों को निरन्तर अधिकाधिक छोटा करना पड़ेगा।

रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार ३१ मार्च १९७४ को प्रचलन में नोटों की कुल तादाद ६१ अरब, २६ करोड़, ५४ लाख थी। जब अंग्रेजों ने भारत छोड़ा उस वर्ष ३१ मार्च १९४७ को संयुक्त भारत में प्रचलन में नोटों की कुल तादाद सिर्फ १२ अरब, ४२ करोड़ थी। अति भयानक और लम्बे द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण नोटों की तादाद बढ़ कर इतनी हुई थी। इससे पहले ३१ मार्च, १९३९ को संयुक्त भारत में प्रचलन में नोटों की कुल तादाद सिर्फ १ अरब, ८७ करोड़ थी। यह सिर्फ ३६ वर्ष पहले की बात है।

भारत सरकार अनेक छोटी-छोटी बातों के लिए लोकसभा की स्वीकृति लेने का दिखावा करती है। नोटों की तादाद में प्रतिवर्ष इतनी भारी वृद्धि करने के लिए लोकसभा की स्वीकृत क्यों नहीं ली जाती? नोटों की तादाद में इतनी वृद्धि एक बहुत बड़ा कदम है। नोट वृद्धि का देश की अर्थ व्यवस्था पर बहुत असर पड़ता है। इस प्रश्न को शाब्दिक हेरा-फेरी में छिपा देने की बजाए भारत सरकार को प्रति-वर्ष के लिए नोटों की तादाद-वृद्धि की अधिकतम सीमा की स्वीकृति लेनी चाहिए।

सरकार पर ऋणों का बढ़ता भार

सरकारी आंकड़ों के अनुसार ३१ मार्च, १९७३ को केन्द्र और प्रान्तों पर कुल कर्ज की अनुमानित रकम २४८ अरब, १८ करोड़ रुपए थी। प्रतिवर्ष इस कर्ज की रकम में करीब १६ अरब रुपयों की वृद्धि हो रही है, यह बड़ी खतरनाक स्थिति है।

सरकार को देश के शासन पर इतना कर्ज लादने का कोई अधिकार नहीं है। इसको कौन और कब चुकायेगा

एवं पहले गरीब ... पूर्ण ... इसका ... शासकों के पास कोई जवाब नहीं है, स्वराज्य प्राप्ति के समय भारत पर कोई कर्ज नहीं था बल्कि भारत का विदेशों में १५ अरब, ४६ करोड़ रुपया जमा था।

इस समय आगामी वर्ष में लिए जाने वाले ऋण आदि को बजट में पूंजी प्राप्ति (कैपिटल रिसीट्स) के भ्रामक और और गलत नाम से दिखाया जाता है और इस पर कोई बहस नहीं की जाती। यह बड़ी गलत और असंगत परम्परा है।

बजट का घाटा

शाब्दिक व प्रणालीगत हेरा-फेरी की ओट में बजट में छिपे हुए बड़े-बड़े बिनाश- बिगाड़कारी कर्ज-वृद्धि, कर-वृद्धि आदि घटकों को छोड़ कर तथाकथित "घाटे की अर्थ-व्यवस्था" को बड़ा महत्त्व दिया जाता है। यह कहा जाता है कि यह ही अर्थ-व्यवस्था को खराब करती है। वास्तविकता यह है कि "घाटे की अर्थ-व्यवस्था" के भद्दे नाम से पुकारा जाने वाला घाटा वास्तविक घाटा नही होता है, यह तो एक बड़े घाटे का नकली ढंग से दिखाया हुआ एक अंश मात्र होता है। इस नकली घाटे का देश की अर्थ-व्यवस्था पर विशेष असर भी नहीं पड़ता है।

अर्थव्यवस्था की असमर्थता

पिछले २०-२५ वर्षों में विश्व में तथाकथित प्रगतिवादी शासकों के बेढ़गे आर्थिक कदमों से अनेक देशों के आर्थिक ढंग ढांचे और आर्थिक स्थिति-गतियां इतनी अधिक अव्यवस्थित और नव-समस्याओं से आच्छादित हो गई है, कि कालेजों और युनिवर्सिटियों में पढ़ाया जाने वाला अर्थ-शास्त्र और उपलब्ध अर्थशास्त्र की पुस्तकें इन मामलों में प्रायः व्यर्थ हो गई हैं। उन पुस्तकों में वर्तमान समय की समस्याओं के हल खोजना भी समय की बरबादी है।

असंगत ढांचे वाले बजट तैयार करना और पास कराना देश की जनता को एवं अपने आपको धोखा देना है। बजट का ढाचाँ इस प्रकार बनाया जाना चाहिये, जिससे प्रजा पर नयी कर-वृद्धि एवं करों का कुल भार, शासन पर नयी कर्ज-वृद्धि एवं कर्ज का कुल भार तथा नोटों की नयी तादाद-वृद्धि एवं प्रचलन में नोटों की कुल मात्रा आदि स्पष्ट रूप से नजर आवे।

२०/१, महर्षि देवेन्द्र रोड़,
कलकत्ता– ७१

एक विचारगोष्ठी में पढ़े गए लेख से–

यदि गांधी जी होते

यदि आज गाँधी जी होते, इतना ही प्रश्न काफी नहीं। प्रश्न यह है कि यदि आज गांधी जी होते और देश की बड़ी शक्तियां उनका सम्मान करतीं तो भारत कैसा होता। मेरा यह नम्र विचार है कि गांधी जी के शरीर की हत्या गोडसे ने की किन्तु गाँधी जी की आत्मा का हनन पं० जवाहर लाल नेहरु ने अपनी सिद्धान्तवादिता के आधार पर किया। वे स्पष्टतः हृदय से गाँधीवाद के दृढ़ विरोधी थे। गाँधीवाद का मुख्य सन्देश सत्ता और उद्योग का विकेन्द्रीकरण कर जीवन में नैतिकता और सादगी को महत्त्व देना था। कांग्रेस सरकार गाँधीवाद की आत्मा उक्त चतुः सूत्री सिद्धान्त का ही विरोधी करती है। आज देश की आर्थिक नीति में इन चारों सिद्धान्तों को कोई विशेष समर्थन नहीं मिल रहा। इसके विपरीत बड़े-बड़े उद्योगों का केन्द्रीकरण भारत की अर्थनीती है। इसी तरह सत्ता का भी घोर केन्द्रीकरण भी आज देश की मुख्य नीति बन गया है। इसमें पंचायतों का स्थान नाममात्र का है। ग्रामोद्योगों को भी प्रश्रय केवल कागजों में रह गया है। नैतिकता का आज प्रश्न उठाना फिजुल है। नशाबन्दी खद्दर, गोरक्षा आदि प्रश्न जो गाँधी जी की आत्मा और हृदय को उद्वेलित करते थे, आज गाँधी जी के अनुयायियों द्वारा उपेक्षा और उपहास का विषय बन गये हैं। घी दूध के लिए प्रसिद्ध हरियाणा आज शराब के उद्योग का प्रधान केन्द्र बन गया है। करीब चौथाई सदी बीत गई, अब तक हिन्दी राष्ट्र भाषा का स्थान नहीं ले सकी। पं० नेहरू की अदूरदर्शिता के कारण अंग्रेजी को हटासे का आन्दोलन साम्प्रदायिक आन्दोलन कहा जाने लगा है। गाँधी जी कांग्रेस को लोक सेवक दल बनाने के पक्ष में थे। किन्तु आज वह कुर्सियाँ हथियाने का एक मंच मात्र है। गाँधी जी ने जिस राम राज्य का स्वप्न लिया था और जिसके नाम पर आजादी की लड़ाई लड़ी थी, वह आज के भ्रष्टाचार शासन के रूप में बदल गया है। इस भंयकर पतन के लिए यूं तो हम सब देशवासी जिम्मेवार हैं किन्तु मुख्यतः जिम्मेवारी कॉंग्रेस सरकार की है जो गांधी जी द्वारा मिली विरासत को मटियामेट करने के लिए जाने-या अनजाने तुल गई है। राष्ट्रपति भवन हरिजन का निवास न होकर आडम्बर और शानो-शौकत का केन्द्र बन गया है। आज तो मै सोचता हूँ कि क्या हम गांधी जी का नाम लेने के अधिकारी भी हैं या नही? अब तो महात्मा गांधी की जगह इन्दिरा गांधी हमारे लिए सर्वप्रतिष्ठित देवता बन गयी है। इस तरह हमने गांधी का नाम जरूर जीवित रखा है, लेकिन उसका गाँधी के साथ कितना साम्य है, यह एक दुखद प्रश्न बन कर रह गया है।

(साभार सम्पदा)

क्या कीमतें घट रही हैं ?

○ रंजन चौधुरी

जब चीजों की कीमतें गिरनी शुरू हो गई तभी श्रीमती गान्धी को सूझा कि क्यों न इस गिरावट का श्रेय लूट लिया जाय। इसी फिराक में इतने दिनों बाद उन्होंने जखीरेबाजों को यह धमकी दी है कि उनके खिलाफ मिसा का प्रयोग किया जायेगा, जबकि कीमतें पहले ही गिरनी शुरू हो गई थी।

"इकानामिक" टाइम्स के ९ अक्तूबर के अंक में बम्बई के सम्वाददाता ने यह खबर दी है कि यहां कई चीजों की कीमतें गिरी हैं। सरकार ने भी यह दावा किया है कि सितम्बर के अन्तिम दो हफ्तों तथा चालू पूरे महीने में थोक मूल्य सूचांक नीचा रहेगा। यदि श्रीमती गाँधी की धमकी का अर्थ महंगाई को रोककर चीजों को सस्ता ही करना था तो उन्होंने यह धमकी कीमतें गिरने की शुरूआत के १५ दिनों बाद न देकर काफी पहले ही दी होती।

मामूली गिरावट

किन्तु कीमतों में जो गिरावट हुई है, वह पहले हुई वृद्धि की तुलना में बिल्कुल मामूली है। मसलन पिछले वर्ष के अगस्त महीने की तुलना में इस वर्ष अगस्त महीने में अनाज की कीमतों में ४३.५ प्रतिशत वृद्धि हुई थी। इसके पहले तो वृद्धि की दर और भी अधिक थी। जहां सरकार ने गेहूं का थोक मूल्य १५० रुपये प्रति क्विंटल तय किया है, उसी वक्त बम्बई के खुले बाजार में २५ रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से गिरावट आने के बावजूद वहां फिलहाल गेहूं के दाम १६७ रुपये प्रति क्विंटल हैं। इसी प्रकार अजमेर में ६० रुपये प्रति क्विंटल की गिरावट के बावजूद फिलहाल वहां गेहूँ के दाम २०० रुपये प्रति क्विंटल है। इसी प्रकार चीनी की कीमत भी ६०० रुपये प्रति क्विंटल से घट कर ५०० रुपये प्रति क्विंटल हुई है। इससे जाहिर है कि कीमतों में मामूली सी गिरावट के बावजूद आज भी कीमतें अधिकांश लोगों की क्रय शक्ति के बाहर हैं।

जनता को एक रुपये या उससे कम कीमत पर अनाज मुहैया करने के लिये थोक दरों में कम-से-कम और १०० रुपये प्रति क्विंटल की गिरावट जरूरी है। आज भी कीमतों के इस स्तर को हासिल किया जा सकता है, यदि सरकार अनाज के थोक व्यापार को अपने हाथ में ले ले।

तस्कर-विरोधी अभियान

यह प्रचार जोर-शोर से चल रहा है कि तस्करों के खिलाफ सरकार के अभियान की वजह से ही कीमतों में गिरावट आ रही है। इन प्रचारकों से पहला प्रश्न यह पूछा जा सकता है कि तस्करी और मंहगाई, दोनों ही, कोई नई चीज नहीं हैं, तब फिर इतने अर्से तक क्यों ऐसा कोई मुद्रा स्फीति विरोधी नहीं कदम उठाया गया? वास्तव में तस्कर विरोधी अभियान का प्रभाव-क्षेत्र बहुत सीमित है। इससे तस्करों द्वारा दबाई चन्द चीजों की दरों पर ही प्रभाव पड़ सकता है। ये चीजें इन तस्करों ने खाड़ी के देशों को भेजने के लिये ही दबा रखी थी। किन्तु इस तस्कर विरोधी अभियान को किसी भी मायने में अनाज के दामों में गिरावट से नहीं जोड़ा जा सकता है।

नि:सन्देह तस्करों को बिल्कुल समाप्त करने के हर कदम का स्वागत किया जाना चाहिए। किन्तु बुर्जुआ अखबार तक तस्करों के खिलाफ अब तक की सरकारी कार्रवाइयों को आधे मन से उठाये गये कदम के अलावा और कुछ नहीं समझ पा रहे हैं। वे साफ शब्दों में इस बात पर शक जाहिर करते हैं कि वास्तविक बदमाशों पर आंच नहीं आयेगी और अब तक जो किया गया है उसका भी मकसद कांग्रेस के चुनाव कोष में अधिक राशि देने के लिये तस्करों पर दबाव डालने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इसे नोट किया जा सकता है कि तस्करों के खिलाफ अभियान के सबसे सक्रिय चालक श्री के० आर० गणेश को श्रीमती गान्धी ने हाल ही में अपने मन्त्रिमण्डल के रद्दोबदल के दौरान दूसरे मन्त्रालय में ठेल दिया है।

मौसमी गिरावट

एक सीमा तक अनाज की दरों में गिरावट मौसमी भी है। हर वर्ष सितम्बर-अक्तूबर महीने में जमींदार लोग खरीफ की नई फसल से गोदामों को भरने के लिए अपने पुराने भण्डारों को खाली कर दिया करते हैं। परिणामत: दरों में कुछ गिरावट आ जाती है। जनवरी तक दाम फिर चढ़ जाते हैं। सिर्फ १९७३ का वर्ष इस बात का अपवाद रहा है। इस वर्ष अकाल के कारण अन्त तक अनाज जखीरों में बन्द पड़ा रहा। इस वर्ष चूंकि ऐसा नजर आता है कि खरीफ की फसल उतनी बुरी नहीं होगी, इसीलिए दरों में मौसमी गिरावट फिर सामने आ गई है।

नीचे हम पिछले तीन वर्षों के प्रासंगिक महीनों का थोक सूचकांक पेश कर रहे हैं। ये आंकड़े रिजर्व बैंक आफ इण्डिया की रिपोर्ट से लिए गये हैं :

खाद्यान्न की दरों में मौसमी उतार चढ़ाव

१९६१-६२ = १००

महीने के अन्तिम शनिवार तक	१९७१	१९७२	१९७३
अगस्त	२०८	२३५	२६७
सितम्बर	२०६	२३६	२६७
अक्तूबर	२०४	२३३	२६८
नवम्बर	२०१	२३०	२७८
दिसम्बर	२००	२३०	२८०
आगामी जनवरी	२०६	२४०	२८९

1९७१ में, खाद्यान्न की दर सितम्बर महीने में घटनी शुरु हुई जो जनवरी में फिर सितम्बर के बराबर हो गई। १९७२ में सितम्बर महीने के बाद खाद्यान्न की दरें गिरीं जो जनवरी में उससे और अधिक हो गई। सिर्फ १९७३ में दरों में गिरावट का कोई सिलसिला नजर नहीं आता है। इन तीन वर्षों में खाद्यान्न की दरें प्रायः दिन दूना रात चौगुना गति से बढ़ती गई हैं।

इस वर्ष भी मौसमी गिरावट नजर आई है। लेकिन अभी ही यह कहना मुश्किल है कि यह गिरावट दिसम्बर महीने तक भी चल पायेगी या नहीं। यदि खरीफ की फसल अन्त तक अच्छी हो जाती है तथा सरकार ५० लाख टन अनाज का आयात कर लेती है, तो सम्भव है कि जखीरेबाज अपने भण्डार का थोड़ा सा हिस्सा बाजार में छोड़ने के लिए बाध्य हो जाए। यह भी सम्भव है कि वे जखीरेबाजी की अपनी बढ़ी हुई क्षमता के चलते थोड़ा सा अनाज भी बाजार में न लाए, और हर हालत में आगामी जनवरी तक फिर खाद्यान्न की कीमतों का वही हाल हो जाए। यदि अनाज का व्यापार इसी प्रकार निजी हाथों में कायम रहा तो आम लोगों को कोई सुभीता नहीं मिल सकता है।

चीनी और कपड़ा

चीनी और कपड़े की कीमतों में गिरावट भी एक प्रकार से हवाई है क्योंकि अब भी इनकी कीमतें काफी अधिक है। सरकार ने कई महीनों तक लेवी की चीनी का मामूली अंश ही बाजार में छोड़ा। परिणामस्वरूप चीनी के दाम लगातार बढ़ते चले गए। लेकिन बाद में उपभोक्ताओं के प्रतिरोध तथा बाजार में सरकार द्वारा लेवी को चीनी के अधिक छोड़ दिए जाने पर इसकी दरों में कुछ गिरावट आ गई। लेकिन अब भी साढ़े चार-पांच रुपया किलो चीनी के दाम, आम लोगों की क्रय क्षमता के बाहर है।

कपड़े की दरों के बारे में ४ अक्टूबर के इकानामिक टाइम्स ने खबर दी हैं कि पिछले दो महीनों में कपड़े की दरों में १५ प्रतिशत की गिरावट आई हैं। किन्तु इसे भुलाया नहीं जा सकता है कि १९७२ से मई १९७४ के बीच कपड़े की दरों में ७० से १०० प्रतिशत तक वृद्धि हुई थी। १९७२-७३ तथा १९७३-७४ कपड़ा उद्योग के लिए मुनाफे की दृष्टि से स्वर्णिम वर्ष गए हैं। इस दौरान इन मिलों ने कुल कई करोड़ रुपये का अतिरिक्त मुनाफा कमाया।

किन्तु अब अधिक दामों के चलते आम लोगों की क्रय क्षमता के बिलकुल चुक जाने के कारण कपड़े की बिक्री पर प्रभाव पड़ने से कपड़े की दरों में कमी आई है। इसी लिए कपड़ा उद्योग के मालिक मनमाने ढंग से उत्पादन में ही कटौती के उपाय खोजने में जुटे हुए हैं।

औद्योगिक सामग्रियों की मांग में कमी

जहां एक ओर जनता पर जबर्दस्ती रोजमर्रे की जरूरी चीजों के अभाव को लाद दिया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर औद्योगिक सामानों के साथ दूसरी ही स्थिति है। ऊंची कीमतों की वजह से कुछ तो मांग में कमी आई है। लेकिन औद्योगिक क्षेत्र में आई मन्दी का सबसे बड़ा कारण यह है कि सरकार के सभी विकास कार्य प्रायः ठप हो चुके हैं। नए उद्योगों का विकास रूक जाने तथा इमारतों इत्यादि का निर्माण बन्द हो जाने के कारण सीमेंट और इस्पात में काला बाजार की दरों में गिरावट आई है, क्योंकि इन चीजों की खपत के प्रायः सभी जरिए ही बन्द हो गये हैं।

रेलवे के आर्डरों के खत्म हो जाने के कारण इन्जीनियरिंग उद्योग पर खासा प्रभाव पड़ा है। रेलवे यार्डों में इस्पात का भारी भंडार जाम होना शुरू हो गया है। खनिज और धातु व्यापार निगम ने यह खबर दी है कि आयात किये गये नौन-फेरस धातु तथा चट्टानी फास्फेट के भी भण्डार भरे पड़े हैं। इनसे रासायनिक खाद्य का उत्पादन होता है।

मशीनों के पुर्जों के उत्पादकों ने भी यह कहना शुरु कर दिया है कि बाजार में एक मन्दी आ गई है। हिन्दुस्तान मशीन टूल्स के चेयरमैन ने यह आशंका व्यक्त की है कि उनके उद्योग को उसी प्रकार की मंदी का सामना करना पड़ सकता है जैसी मन्दी १९६६-६९ के योजना की छुट्टी की अवधि में आई थी।

अभी वास्तव में कोई भी सरकारी योजना चालू नहीं है। इससे मशीनों का उत्पादन करने वाले उद्योगों के लिए मांग की समस्या आ गई है।

इजारेदारों का अधिकार

महंगाई ने स्थिति को बहुत जटिल बना दिया है। सरकारी साधनों की तुलना में सरकार के खर्च काफी अधिक हैं। विकास कार्यों में जितना अधिक खर्च किया जायेगा, उतना ही सरकार का घाटा बढ़ता जायेगा। फलतः उसी अनुपात में मुद्रास्फीति होगी। इसके अलावा दूसरी समस्या

(शेषांश पृष्ठ १४ पर)

जनता, राजसत्ता और सेना

O रामशरण जोशी

एक लम्बे समय से इच्छा रही है कि भारतीय सेना को समझूं उसे करीब से देखूं। १९७१ के भारत पाक युद्ध के दौरान आंशिक रूप से यह इच्छा पूरी हुई। बंगला देश (तत्कालीन पूर्व पाकिस्तान) की भूमि पर युद्ध संवाददाता के रूप में भारतीय सेना के सम्पर्क में आया। यद्यपि तीन सप्ताह के लिए। फिर भी उस अल्पकालीन सम्पर्क ने मुझ पर चन्द स्थाई प्रभाव छोड़े हैं। प्रभाव को सवालों के रूप में आपके सामने रख रहा हूं। सवाल! आखिर सेना की क्या आवश्यकता है? क्या सेना का कार्य सीमा की रक्षा करना और समय आने (या अवसर पैदा किए जाने) पर युद्ध में उसे झोंक देना है? क्या सेना तथा राजसत्ता एवं सम्बन्धित देश को जनता के मध्य कोई रिश्ता है? सेना किसके प्रति जिम्मेदार है—'जनता या राजसत्ता?' और इन सवालों के दायरे में भारतीय सेना को खड़ा किया जाए तो उसका क्या चरित्र होगा?

निःसन्देह १९४७ के पश्चात भारतीय सेना को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। तीन-तीन बार पाकिस्तान के साथ युद्ध (१९४८, १९६५ एवं १९७१) और एक बार चीन के साथ संघर्ष (१९६२) में। भारतीय सेना ने इन सभी चुनौतियों का सामना किया और १९६२ को छोड़कर तीनों अवसरों पर ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की। भारत-चीन संघर्ष के दौरान भारतीय सेना के पास जो सीमित साधन थे, सर्वविदित हैं।

इतना ही नहीं भारतीय सेना की भूमिका देश की सीमाओं से बाहर भी रही। उदाहरणतः सयुक्त राष्ट्र संघ के बुलावे पर कोरिया युद्ध विराम के समय निरीक्षण, अन्तर्राष्ट्रीय अधिक्षण और नियन्त्रण (इन्टर नेशनल कन्ट्रोल कमीशन) अयोग के एक भाग के रूप में वियतनाम, लाओस व कम्बोडिया में कार्य, मिस्र में राष्ट्र संघ की आपातकालीन सेना के दस्ते के रूप में, लेबनान और कांगों में भारतीय सैनिक अधिकारी व जवान भेजे गए आदि… आदि…। कुल मिलाकर भारतीय सेना को पांच अवसरों पर भारत से बाहर जाना पड़ा।

वैसे अंग्रेजों के शासन काल में तो भारतीय जवानों को कई बार बाहर जाना पड़ा था। प्रथम विश्व युद्ध (१९१४-१९१७) के दौरान अंग्रेजी शासकों ने अपने साम्राज्यवादी एवं औपनिवेशिक हितों की रक्षा के लिए भारतीय सेना का निर्ममता के साथ इस्तेमाल किया। भू०पू० गोरे शासकों ने भारतीय जवानों को युद्ध की आग में झोंक दिया। जबकि युद्ध साम्राज्यवादी शक्तियों (ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, रूस, इटली, अमेरिका, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, बुलगारिया, टर्की) के पारस्परिक शुद्ध हितों को लेकर हुआ था। पश्चिमी यूरोप तथा जापान आदि देशों में बढ़ते पूंजीवाद की गिद्ध नजरें एशिया व अफ्रीका की गरीब जनता पर गढ़ी हुई थी।

पश्चिमी एवं दक्षिण पूर्वी एशिया तथा अफ्रीका की जनता की खून-पसीने की कमाई को लेकर साम्राज्यवादी देशों में एक तीव्र दौड़ थी। इसी दौड़ का नतीजा प्रथम विश्वयुद्ध रहा। भारत के गरीब मजदूर-किसान के लाड़लों को साम्राज्यवादियों की क्रूर व मानवता विरोधी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के लिए हजारों की संख्या में जाने गंवानी पड़ी। सिर्फ १८ दिसम्बर १९१४ को ज्वीनेस्ची की रक्षा में भारत के दस हजार सपूत मारे गए व घायल हुए। भारतीय सेना के साथ-२ रियासती सेनाओं ने भी युद्ध में भाग लिया। १९४७ से पूर्व देशी राजा-महाराजाओं की निजी सेनाएं हुआ करती थी। साम्राज्यवादी स्वामियों को खुश करने के लिए इन स्थानीय काले शाही क्रोतो ने २० हजार भारतीय जवान भारत भूमि से बाहर भेजे। इस प्रकार प्रथम महायुद्ध में भारतीय सेना ने फ्रांस, मिश्र, टर्की, पेलेस्टिन, परसिया, ईराक और यूनान में अपनी वीरता के जोहर दिखाए। इस युद्ध में ३६ हजार ९३६ भारतीय मारे गए और ७० हजार घायल हुए। साम्राज्यवादियों, जिनके हाथों में भारत की राजसत्ता थी, ने इस महान त्याग की कीमत फकत १६ विक्टोरिया क्रास और ९९ मिलिट्री क्रास बांट कर चुकाई। फिर वही सवाल: जनता, राजसत्ता और सेना— क्या राजसत्ताधीशों ने सेना भेजते समय जनता से अनुमति ली थी? क्या भारतीय जनता व सेना के हितों से युद्ध का कोई सम्बन्ध था?

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् १९२२ में भारतीय सेना के मुख्य कमाण्डर रालिसन के नेतृत्व में भारतीय सेना का आधुनिकीकरण शुरू हुआ। प्रथम बार शाही वायु सेना तथा टैंक दल को भारत में स्थायी रूप से रखा गया। १९२० में भारतीय प्रादेशिक सेना आई० टी० एफ० का गठन किया गया। इसी दौरान भारतीय सेना का भारतीयकरण का भी कार्यक्रम चला। सेना के उच्च पदों पर भारतीयों को भी लिया जाने लगा। संडरस्ट के सैनिक कालेज में ५२ स्थान भारतीयों के लिए सुरक्षित रखे गए। देहरादून के प्रिंस आफ

वेल्स कालेज में चुने हुए भारतीय युवकों को लिया जाने लगा। इन चुने हुए भारतीयों में प्रायः सभी सामन्त, धनी एवं विशिष्ट वर्ग के युवक होते थे, जिनका की देश की गरीब जनता से कोई सम्बन्ध नहीं था। १९३२ में देहरादून में इण्डियन मिलिट्री अकादमी की स्थापना हुई और ६० व्यक्तियों को ढाई वर्ष के प्रशिक्षण के लिए प्रवेश दिया गया। १९३९ में कुल चार हजार अफसरों में से सिर्फ ४०० भारतीय थे परन्तु १९४५ में ८,३४० इमरजेंसी कमिशंड प्राप्त भारतीय अफसर थे। जबकि कुल संख्या ४२,९३० थी। सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से इन भारतीय अधिकारियों का सम्बन्ध ऊंची जाति तथा सम्पन्न वर्ग से था। इनका लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा अंग्रेज़ी या विदेशी वातावरण में हुई, फलस्वरूप भारत की पीड़ित व गुलाम जनता की वास्तविक हरारत के प्रति वे अनजान बने रहे। साथ ही अंग्रेजों ने सुनियोजित ढंग से इन्हें जनता की मुख्य धारा से अलग भी कर दिया था। मैकाले ने ठीक ही कहा था कि भारतीयों को अंग्रेजी पढ़ा कर हम उन्हें मानसिक रूप से गुलाम बना रहे हैं। यद्यपि उनका रंग काला होगा परन्तु आचार-विचार, रहन सहन से हमारे गुलाम। मैकाले की यह भविष्यवाणी [आ]ज भी कितनी सही उतरती है। मार्क्स का यहां उल्लेख [प्रा]संगिक होगा—

'हिन्दुस्तान में हुए सभी गृह-युद्ध, उस पर हुए सारे आक्रमण, वहां घटित सारी क्रान्तियां, उसकी अनेक अभिजितियां, समस्त दुर्भिक्ष एक के बाद एक—चाहे कितने ही जटिल, वेगवान और विनाशकारी क्यों न जान पड़ते हों; उनके प्रभाव गहरे न होकर मात्र सतही रहे। परन्तु इंग्लैंड ने तो भारतीय समाज का सारा ढांचा क्षत-विक्षत कर दिया और उसके नवनिर्माण के कोई लक्षण अभी तक नजर नहीं आते। इस कारण एक तरफ तो भारतीय जनता की पुरानी दुनियां खो गई है और दूसरी तरफ नई दुनिया मिली नहीं, जिससे उसकी वर्तमान दुख:पूर्ण स्थिति और भी करुण हो जाती है तथा ब्रिटिश शासन के नीचे भारत सभी प्राचीन परम्पराओं, अपने समूचे पिछले इतिहास से कट जाता है।

(न्यूयार्क डेली ट्रिब्यून २५ जून १८५३)

द्वितीय विश्वयुद्ध: साम्राज्यवादी हितों के लिए बलि

साम्राज्यवादी देशों की मक्कारी ने फिर एक बार दुनियां को युद्ध की भट्टी में झोंक दिया। भारत भी इससे बच नहीं सका। हालांकि इस बार भारतीय सेना को बाहर भेजने के प्रश्न को लेकर देश में काफी विवाद चला। परन्तु राजसत्ता ने जनता की परवाह किए बगैर सेना को देश से बाहर भेज ही दिया। इस दौरान असम, बिहार, माहर, मजहबी सिख आदि कौमों की नई रेजीमेंटें खड़ी की गई। देशी रियायतों की सेनाओं की संख्या भी ४५ हजार से बढ़कर लगभग ९० हो गई। १९३९ में भारतीय सेना की कुल संख्या ३ लाख ५२ हजार २१३ थी, जिसमें ८५ हजार ७०९ देशी राजाओं की सेनाओं की संख्या थी।

प्रथम युद्ध की भांति इस बार भी भारतीय जवानों ने अपनी जान की बाजी लगाकर साम्राज्यवादी हितों की रक्षा की, क्योंकि राजसत्ता पर शोषित जनता का अधिकार नहीं था। राजसत्ता पर एक विदेशी शोषक का कब्जा था, जो स्वेच्छाचारी ढंग से जनता और नेता का इस्तेमाल अपनी सत्ता सुदृढ़ बनाये रखने के लिये कर रहा था। इस युद्ध में भी भारतीय जवान लीबिया, ट्यूनिशिया, इटली, ईराक बर्मा, मलाया, सुदूर पूर्व आदि क्षेत्रों में लड़े और भारत के रक्त का गौरव बढ़ाया।

इस संक्षिप्त जायजे से यह बात तो साफ हो जाती है कि सेना का सही या गलत इस्तेमाल राजसत्ता के अधिकार में होता है। प्रथम एवं दूसरे विश्व युद्धों में भारतीय सेना को उन-उन स्थानों पर लड़ना पड़ा, जिनसे उनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कोई सम्बन्ध नहीं था। यहाँ तक कि भारत की जनता (परिभाषा-श्रमिक—कृषक तथा अन्य वो सभी लोग जिनका जीवन आधार सही मेहनत है, शोषण नहीं, परजीवीपन नहीं) के साथ भी कोई सम्बन्ध नहीं था। फिर भी उसे अपने जवानों को भेजना पड़ा। साम्राज्यवादी युद्धों का बोझ बर्दाश्त करना पड़ा। यहां तक कि देशी रियायतों का खर्च भी उसे ही देना पड़ा। आखिर क्यों? यह सही है कि जनता का सम्बन्ध सेना से था। क्योंकि सेना में उसके अपने लोग थे। मगर जब उसके हजारों लाल राजसत्ता के खिलाफ (१८५७ का स्वतन्त्रता संग्राम) बगावत करते हैं तो उनका कत्लेआम होता है। १९४५ में बम्बई में नाविक विद्रोह होता है तो उसे कुचला जाता है, वीर सैनिक चन्द्रसिंह गढ़वाली सत्ताधीशों के खिलाफ हथियार रखता है तो उसे जेल में ठूंसा जाता है। एक तरफ राजसत्ता हजारों सैनिकों को बगैर वजह के युद्ध की आग में झोंक देती है। मगर जब वही सैनिक अपने हितों, अपने मुद्दों, अपने अस्तित्व को लेकर आवाज उठाते हैं तो उन्हें कुचला जाता है। इससे यह जाहिर नहीं होता है कि राजसत्ता दोहरी नीति से काम लेती है? अपने हितों की रक्षा के समय जनता व सेना को अपने पक्ष में लेने के लिए धर्म, संस्कृति, देशभक्ति, राष्ट्रीयता आदि पवित्र नारों की घुट्टी पिलाती है। परन्तु जब जनता व सेना अपना हक मांगने आती है तो राजसत्ता खिलाफ हो जाती है। इतना ही नही जनता एवं सेना को विभाजित कर

(शेषांश पृष्ठ १४ पर)

लहू की लालिमा से–

खूने शहीद कुर्बानी मांगता है

O जयदेव अनल

सूख न जाये पौधा कहीं ग्राजादी का,
खून से ग्रपने हम इसलिए तर करते हैं।
दिल फ़िदा करते हैं, कुर्बान जिगर करते हैं;
खानाए वीराँ कहाँ देखिए घर करते हैं।
खुश रहो ग्रहले वतन हम तो सफर करते हैं।
जाके ग्राबाद करेंगे किसी वीराने का ॥

यह थी उस ग्रमर हुतात्मा रामप्रसाद बिस्मिल के दिल की तड़प, जो १९ दिसम्बर १९२७ की प्रातः "I wish he down fall of British Empire" तथा " विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रम् तन्न ग्रासुव।" के क्रांतिकारी उद्घोष के साथ फांसी के फन्दे को चूम कर सदा-सर्वदा के लिए ग्रमर हो गया।

दयानन्द-रचित "सत्यार्थ-प्रकाश" की पावन वाणी से प्रणोदित, तथा संन्यासी सोमदेव के चरणों में दीक्षित हो कर वह ३० वर्षीय युवक ग्रपने माँ-बाप को विलखता छोड़ कर मातृभूमि की यज्ञवेदी पर ग्रपना सर्वस्व ग्रर्पित कर देता है। जेल की कोठरी की घुटन में जीकर वह करवटें बदलता हुग्रा ग्राह भरकर कहता है—

हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रहकर।
हमको भी पाला था मां-बाप ने दुख सह-सहकर।
वक्ते रुक्सत उन्हें इतना भी न आये कहकर।
गोद में ग्रश्क़ जो टपके कभी रुख से बहकर।
तिफ़ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को।

रामप्रसाद 'बिस्मिल' ग्रौर उसके साथियों ने किसी प्रकार की भावुकता में बह कर ग्रपनी जान की बाज़ी नहीं लगाई थी, बल्कि उनकी ग्राँखों में तो भावी-भारत को खुशहाल ग्रौर शादकाम बनाने के सपने तैर रहे थे। स्वयं ग्रशफ़ाक के शब्दों में—

वतन हमेशा रहे शादकाम ग्रौर आजाद,
हमारा क्या है; हम रहें, रहें ना रहें ॥

साम्राज्यवादियों द्वारा देश की जनता का (विशेषकर श्रमजीवियों का) जो निर्ममतापूर्ण शोषर्ण किया जा रहा था, 'बिस्मिल' उस सबसे नावाकिफ नहीं था। फांसी से तीन दिन पूर्व लिखी गयी अपनी ग्रात्मकथा में उसने तत्कालीन परिस्थितियों का जो चित्रण किया था, वह ग्राज भी उतना ही सत्य है। बस, ग्रन्तर इतना है कि विदेशी के स्थान पर ग्रब शोषणकर्त्ता स्वदेशी है। एक स्थान पर वह रईसों तथा जमींदारों को सरकार के पक्षपाती कहता है। ग्रागे चल कर एक गरीब किसान पर जमींदार द्वारा ढाये जाने वाले ग्रत्याचारों का वर्णन करते हुए लिखता है— 'यदि एक किसान को जमींदार की मजदूरी करने या हल चलाने की नौकरी करने पर ग्राम में ग्राज से बीस वर्ष पूर्व दो ग्राने रोज या चार रुपये मासिक मिलते थे, तो ग्राज भी वही वेतन बंधा चला ग्रा रहा है। बीस वर्ष पूर्व वह ग्रकेला था, ग्रब उसकी स्त्री तथा चार सन्तान भी हैं। पर उसी वेतन में निर्वाह करना पड़ता है। उसे उसी पर सन्तोष करना पड़ता है। सारे दिन जेठ की लू तथा धूप में गन्ने के खेत में पानी देते देते उसे रतौंधी ग्राने लगती है। ग्रन्धेरा होते ही ग्राँख से दिखाई नहीं देता, पर उसके बदले में ग्राधा सेर चना तथा छः पैसे रोज मजदूरी मिलती है, जिसमें ही उसे ग्रपने परिवार का पेट पालना पड़ता है!"

श्रमजीवियों को शोषण तथा ग्रन्याय से मुक्त कराने के लिए सुझाव देते हुए उसने ग्रागे लिखा है — कल कारखाने, रेलवे, जहाज तथा खानों में जहां कहीं श्रमजीवी हों उनकी दशा को सुधारने के लिए श्रमजीवियों के संघ की स्थापना की जाए, ताकि उनको ग्रपनी ग्रवस्था का ज्ञान हो सके ग्रौर कारखानों के मालिक मनमाने ग्रत्याचार न कर सकें।"

मेरी यह निश्चित मान्यता है कि यदि ग्राज बिस्मिल जिन्दा होता तो उसके उक्त विचारों को पढ़कर कुछ स्वार्थी लोग उसे भी 'कम्यूनिस्ट' या 'नक्सलाइट' करार दे देते। जैसा कि ग्राज ग्रार्य-समाज में उन नवयुवकों के साथ हो रहा है, जो निर्धन-वर्ग के लिए ग्रपना सर्वस्व ग्रर्पण करने का संकल्प ले चुके हैं। वस्तुतः यह सब इन तत्वों की पूंजीवादी मनोवृति का ही परिचायक है। इन लोगों का ग्राध्यात्मवाद दूसरों के लिए ही है, जबकि स्वयं सिर से पैर तक भोगवाद के पङ्क में धँसे हुए हैं। ग्रस्तु!

शहीद ग्रशफ़ाक उल्ला, जिसे भी १९ दिसम्बर १९२७ को फैजाबाद में फांसी हुई, भी 'बिस्मिल' ही की तरह कड़े शब्दों में एक युगान्तरकारी घोषणा करता हुग्रा कहता है— " ग्राज मैं तो हर विदेशी हुकूमत को बुरा समझता हूं ग्रौर

साथ ही हिन्दुस्तान की ऐसी जमहूरी सल्तनत को भी जिसमें कि कमजोरों का हक हक न समझा जाए, या हुकूमत के सरमायादारों और जमींदारों के दिमागों का नतीजा हो, या जिसमें मसावी (समान) हिस्सा मजदूरों और काश्तकारों का न हो। मैं तो कहूँगा कि अगर हिन्दुस्तान आजाद हुआ और बज ये हमारे गोरे आकाओं के हमारे वतनी भाई सल्तनत व हुकूमत की बागडोर अपने हाथ में लें और तफ़रीकों-तमीज, अमीर व गरीब, जमींदार व काश्तकार में रहे तो ऐ खुदा मुझे ऐसी आजादी उस वक्त तक न देना जब तक तेरी मखलूक (जीवों) में मसावात (समानता) न हो जाए । मेरे इन ख्यालात से मुझे इशतिराकी (कम्यूनिस्ट) समझा जाए तो मुझे इसकी फिकर नहीं, मेरा खुदा पर भरोसा है।...... (आज) बदमाश बदमाशी से, लुटेरा लूट से, जालिम जुल्म से अपना पेट पालते हैं, वकील मुवक्किलों से, जमींदार काश्तकारों से, सरमायादार मजदूरों से जोंक की तरह चिमट कर उनका खून चूसते हैं और वह कमजोर हैं, इसलिए लुट जाते हैं। यह सब कानून खुदाबन्दी के खिलाफ है । इसका खात्मा करना निहायत जरूरी है और इसके खिलाफ़ जंग फर्ज है।"

भला जिसने अपने जीवन का दाँव लगाकर मृत्यु रूपी दुल्हन को वरण करने की सौगंध ले ली हो, वह कर्मवीर सत्-पथ का निर्भय पथिक बन कर क्यों न विचरण करे ! उसे इस बात की क्यों चिन्ता हो कि लोग उसे 'कम्यूनिस्ट' कहते हैं या और कुछ ! देश के करोड़ों अमृत-पुत्रों का दुःख दर्द उसका अपना दुःख दर्द हैं और इन्सान के लिबास में पल रहे भेड़ियों से उनकी रक्षा करना ही उसका कर्त्तव्य। उसकी आंखों में इस बात की स्पष्ट कल्पना रहती है कि उसे अपने जीवन-कुसुम को किस राह में चढ़ाना है। अपने इन्हीं सुनहले स्वपनों का भेद सा खोलता हुआ बिस्मिल कह उठता है—

भारत न अब रहेगा, हरगिज गुलाम खाना ।
आजाद होगा-होगा, आया है वो जमाना ।
हम भेड़ और बकरी बन कर न रह सकेंगे।
कर देंगे ज़ालिमों का सब बन्द जुल्म ढाना ।
अब जेल की यहां पर पर्वाह हो किसे है,
एक खेल हो रहा है, फ़ांसी पे झूल जाना ।

जिस समय गोरखपुर में क्रांतिकारी राजेन्द्र लाहिड़ी तथा रोशन सिंह के साथ 'बिस्मिल' को फांसी पर लटकाना निश्चित हो चुका था और उसी दिन फैजाबाद में अशफ़ाक की फांसी लगना तय किया गया तो शहीद 'बिस्मिल' के होठों पर एक मुस्कान सी नाच उठी। उसका सीने में छुपा हुआ दर्द होठों पर आ गया और वह कह उठा—

मरते 'बिस्मल', रोशन, लहरी, अशफ़ाक अत्याचार से,
होंगे पैदा सैकड़ों उनके रुधिर की धार से ।
उनके प्रबल उद्योग से उद्धार होगा देश का।
तब नाश होगा सर्वदा दुःख शोक के लवलेश का ।।

मैं आज जिस समय शहीदों और स्वातन्त्र्य-वीरों की जीवनी पर अपनी कलम उठाता हूं, तो केवल एक ही बात मेरे दिल में कसकती रहती है - वह यह कि हमने या हमारी सरकार ने इनका सही रूप में मूल्याङ्कन नहीं किया। अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए जी भरकर उनके नामों का सहारा लिया गया और घसीटा गया उनकी शहादत को स्वार्थ की दलदल में, पर कितने लोगों ने उनके द्वारा स्थापित आदर्शों की रक्षा के लिए प्रयास किया ? मुझे तो हँसी आती है उस समय, जबकि रात के अंधेरे में तस्करी, जमाखोरी करने वाले लोग भी अपने स्वार्थों की रक्षा के लिए दिन में शहीदों के नाम का दुरुपयोग करते हैं। उन्हें श्रद्धाञ्जलियां देकर भोली जनता को बहकाने का प्रयास करते हैं। करोड़ों जीवित इन्सानों को शोषण की कब्र में दफना कर, शहीदों को अर्पित की जाने वाली श्रद्धाञ्जलि उनकी शहादत का मजाक ही है। उनकी मजारों पर फूल चढ़ाने मात्र से काम चलने वाला नहीं है। अतः जब तक हम हजारों जीवन-दीप जल कर उनकी सूनी मजारों को रोशन नहीं करेंगे, तब तक उन्हें श्रद्धाञ्जलियां अर्पण करना एक तरह की "रस्म-अदायगी" ही समझा जायेगा ।

आवश्यक सूचना

श्री स्वामी चन्द्रवेश जी को आर्य सभा की प्राथमिक सदस्यता तथा राजस्थान आर्य सभा के संयोजक पद से निष्कासित कर दिया गया है। जयपुर में १८ से २३ अक्टूबर तक घोषित शिविर (जिसके स्थगित किये जाने की घोषणा हो गई थी) के लिए जिन भी सज्जन ने सहायता दी हो, वे स्वामी चन्द्रवेश जी से ही पत्र-व्यवहार करें। भविष्य में भी उनके किसी भी कार्य के लिए हम जिम्मेदार नहीं होंगे ।

यशपाल गुप्ता
संयोजक
आर्य युवक परिषद्, जयपुर (राज.)

आवश्यकता है

आर्य समाज हावड़ा में पुरोहित कम भजनोपदेशक की आवश्यकता है । दक्षिणा ३००) तथा आवास की व्यवस्था।

मत्री पुष्कर लाल भावुका
आर्य समाज मन्दिर हावड़ा
३८ क्षेत्र मित्र लाईन
हावड़ा

विद्यार्थियों को चूस कर मुनाफे का पहाड़ खड़ा करने की कोशिश

सरकार के कान पर जूं तभी रेंगी जब मूल्य वृद्धि और कागज तथा पुस्तकों के अभाव के कारण विद्यार्थियों का गुस्सा विस्फोट का रूप धारण करने लगा। केवल तभी वह पाठ्यक्रम की पुस्तकों और कापियों के लिए काफी मात्रा में सफेद कागज देने की योजना लेकर सामने आयी।

कागज और पुस्तकों की कीमतें किस प्रकार बढ़ी हैं और उनका अभाव किस प्रकार शिक्षा में बाधक बन रहा है, यू. एन. आई ने इसकी जांच देश के प्रायः सभी मुख्य राज्यों में की जिसकी रिपोर्ट इकानामिक टाइम्स के ५ अगस्त के अंक में छपी।

इस रिपोर्ट से देखा जाता है कि आंध्र के नोट बुकों की कीमत दूनी हो गयी और सरकारी वितरण व्यवस्था में दोष के कारण पाठ्य पुस्तकों की भी कुछ कमी है। आसाम में पाठ्य-पुस्तकों की कमी का कारण कागज नही बल्कि छापनेवालों की सुस्ती है। वे समय पर छाप कर पुस्तकें नहीं दे सके। यहां कापियों की कीमत ड्योढ़ी हो गई। केरल में कापियों की कीमत सबसे ज्यादा बढ़ी है, कही कहीं तो तिगुनी हो गयी है। राजस्थान में कागज की कमी के कारण परीक्षा लेना मुश्किल हो रहा है और पहली तथा दूसरी कक्षा में स्लेट के इस्तेमाल का आदेश सरकार की तरफ से दिया गया है। उत्तर प्रदेश में पाठ्य-पुस्तकों और कापियों की कमी के कारण स्कूलों की पढ़ाई के कम से कम दो महीने नष्ट हुए हैं। प० बंगाल में पाठ्य पुस्तक और कापियों की बेहद कमी देखी जा रही है।

इस तरह विद्यार्थी सफेद कागज के उत्पादन में धांधली और मुनाफाखोरी के शिकार बनाये गये हैं।

कागज हमारे देश में बनता है और बाहर से भी मंगाया जाता है। १९७२ में ३१ करोड़ रुपए का कागज बाहर से मंगाया गया। देश में उत्पादन की कमी और अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में कागज की कीमत ज्यादा होने के कारण उसके कम आयात से फायदा उठा कर कागज बनाने वालों ने उसका दाम बढ़ाना शुरू कर दिया। उनका कहना है कि उत्पादन की कमी और ज्यादा कीमत का कारण बिजली, कोयले और कच्चे माल की कमी तथा ज्यादा कीमतें हैं। उनका यह भी तर्क है कि कागज के कारखानों की उत्पादन क्षमता तब तक बढ़ायी नहीं जा सकती जब तक कीमतें बढ़ा कर इस उद्योग को लाभदायक नहीं बना दिया जाता।

कागज की कीमत तेजी से बढ़ते देख केन्द्रीय सरकार ने कागज उद्योग की ज्वायन्ट कमेटी के साथ १९७३ के उत्तरार्द्ध में कागज की कीमत कम करने के लिए बात आरम्भ की। जनवरी १९७४ में सरकार और कागज कारखानों के मालिकों के बीच समझौता हुआ कि ये मालिक २,७५० रु० प्रति टन के हिसाब से दो लाख टन सफेद कागज किताबों, कापियों आदि के काम के लिए सरकार और समाज के दुर्बल हिस्सों को देंगे। इस वादे को पूरा करने के बाद कागज कारखानों के मालिक दूसरी किस्मों का कागज खुले बाजार में ऊँची कीमत पर बेचेंगे।

गेहूँ के व्यापारियों की तरह कागज कारखानों के मालिकों ने भी दुरंगी नीति चली। उन्होंने निश्चित दर पर २ लाख टन सफेद कागज दिया ही नही, लेकिन खुले बाजार में कीमत ४० प्रतिशत बढ़ा कर जून में ३५०० रु० प्रति टन की जगह ४८५० रु० प्रति टन कर दी। सफेद कागज न बना कर उन्होंने दूसरी किस्मों के कागज बनाये। १ अगस्त को राज्य सभा में उद्योग विकास मन्त्री सुब्रह्मण्यम ने स्वीकार किया कि कागज कारखानों के मालिकों ने अपनी बात नहीं रखी। औद्योगिक मन्त्रालय के विशेषज्ञों के अनुसार कागज के मूल्य में ४० प्रतिशत की वृद्धि का कोई भी औचित्य नहीं।

सुब्रमन्यम ने यह भी स्वीकार किया कि जो सफेद कागज बनाया गया था उसका ज्यादातर हिस्सा चढ़ी कीमत पर बेच दिया गया है। उन्होंने राज्य सभा को सूचित किया कि पाठ्य-पुस्तकों के गैर- सरकारी प्रकाशकों को २०,००० टन सफेद कागज देने का वादा किया गया था, लेकिन दिया गया सिर्फ १,३०० टन। बाकी कारखानेदारों ने चढ़ी कीमत पर बेच दिया।

विद्यार्थियों का मनोभाव देख कर सरकार को जल्दी कदम उठाना पड़ा और उसने २ अगस्त को एसेंशियल कम्मोडिटीज ऐक्ट के अन्तगर्त दो फरमान जारी किये। पहले फरमान के मुताबिक सब कागज कारखानों को अपने कुल उत्पादन का कम से कम ३० प्रतिशत छापे का सफेद कागज बनाना होगा। दूसरी किस्म के कागजों का भी प्रतिशत निश्चित कर दिया गया। किन्तु जो कारखाने प्रतिदिन २० टन से कम कागज और कागज बोर्ड बनाते हैं, उन पर यह हुक्म लागू न होगा। दूसरे फरमान के जरिए

अनावश्यक कामों में कागज का उपयोग बन्द कर दिया गया है।

मार्के की बात है कि इन फरमानों में कागज की कीमत का जिक्र नहीं किया गया। इसलिए संभवतः यह फिलहाल २,७५० रु० प्रति टन होगी, लेकिन कागज कारखानों के मालिक दाम बढ़ाने के लिए दबाव डाल रहे हैं। ताजुब न होगा यदि कुछ समय बाद कांग्रेस सरकार घुटने टेक दे और कीमत बढ़ा दे। इसके अलावा यह भी मुमकिन है कि दूसरे कानूनों की तरह इस कानून को भी कारखानों के मालिक अगूंठा दिखा दें।

विद्यार्थियों में सबसे ज्यादा संख्या गरीब विद्यार्थियों की है जो पुस्तकें और कापियां खरीद नहीं पाते। धनियों के बच्चे तो जो चाहें, वही खरीद सकते हैं। इस सचाई को समझ कर गरीब विद्यार्थियों को इस अन्यायपूर्ण समाज को बदलने के लिए आगे आना चाहिए।

छात्रों को पूंजीवादी समाज के इस पहलू को भी नोट करना चाहिए कि यह व्यवस्था कितनी निर्दयी और वाहियात है। अपनी बेहतरीन जिन्दगी और बेहतर शिक्षा व्यवस्था के लिए लड़ने के साथ-साथ उन्हें इस पूंजीवादी समाज व्यवस्था को ध्वंस कर समाजवादी समाज के निर्माण के लिए भी लड़ना चाहिए।

(साभार स्वाधीनता)

(शेषांश पृष्ठ १० का)

दिया जाता है। इन दोनों बुनियादी पक्षों में इतना फर्क डाल दिया है कि ये दोनों परस्पर शत्रुतापूर्ण रवैया अपना लेते हैं। मसलन स्वातंत्रीय युद्ध में जनता पर अंग्रेजों द्वारा गोली चलवाना, जलियां वाला काण्ड, तेभागा, तेलंगाना के जन संघर्ष का दमन तथा पाकिस्तान, इण्डोनेशिया, श्रीलंका, कम्बोडिया चीनी, बोलीविया आदि जहां सत्ता वर्ग सेना का इस्तेमाल जनता के दमन के लिए कर रहा है।

जाति पांति और धर्म नीति

अंग्रेजों की नीति सदैव भारत में फूट डालो, राज करो" रही। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने सेना का गठन भी विभाजन की नीति के आधार पर किया। अंग्रेज चाहते थे कि भारतीय सेना को मानसिक व शारीरिक रूप से इतना पंगु बना दिया जाए कि वह कभी भी भारतीय जनता की कतार में आकर खड़ी न हो सके। इसके लिए आवश्यक था कि सेना को जनता से दूर रखा जाए। इतना ही नही सेना के अंदर भी विभाजन किया जाए ताकि जवान परस्पर सन्देह की दृष्टि से देखें और अंग्रेजों के स्वामीभक्त बने रहें।

अंग्रेजों ने भारतीय सेना का गठन जाति के आधार पर किया। सिख, राजपूत, मराठा, ब्राह्मण तथा विशेष रूप से हिन्दू व मुसलमानों के बीच भी भारतीय सेना को विभाजित किया गया। हिन्दुओं में भी ब्राह्मण के साथ-साथ ऊंची हिन्दू जातियों की भर्ती की गई और निम्न हिन्दुओं को दूर ही रखा गया। मुसलमानों में विशेष रूप से उन लोगों को प्राथमिकता दी गई जो हिन्दू धर्म छोड़कर गए थे। इसका परिणाम यह हुआ कि इस्लाम ध ' स्वीकार करने वाले निम्न जाति के हिन्दुओं में ऊंची जाति के प्रति स्थायी घृणा के बीज पनपते रहे। यही बात ईसाईयों के साथ भी थी। इस प्रकार सेना में भी परस्पर स्थायी तनाव बना रहा। १७६० में इस्ट इण्डिया कम्पनी ने तीन रेजीडेंसी सेनाओं का गठन किया था। उस समय लगभग ६० हजार की भारतीय सेना थी। इसके अलावा १३०० गोरे सैनिक थे। क्रमशः

(शेषांश पृष्ठ ८ का)

यह है कि यदि विकास कार्यों को कम कर दिया जाता है, तो समूची अर्थव्यवस्था एक प्रकार की जड़ता का शिकार हो जायेगी। उत्पादन कम हो जायेगा तथा बेरोजगारी बढ़ेगी। लेकिन चीजों की दरों में काफी अधिक गिरावट नहीं आयेगी।

कृषि और उद्योग' दोनों क्षेत्रों में इजारेदारों की स्थिति इतनी मजबूत हो चुकी है कि वे अभाव पैदा करके दरों को नहीं गिरने देंगे। दाम को ठीक रखने के लिए बिलकुल हाल ही में कपड़ा मिल मालिकों ने उत्पादन कम करने का फैसला किया है। इसी प्रकार की शिकायतें अन्य उद्योगों से भी आ रही हैं। उत्पादन में कटौती करके तथा अपने गोदामों में माल जमा करके कृत्रिम कमी पैदा कर दी जायेगी। वैसे भी हमारे जैसे गरीब देश में यदि पूरी रफ्तार से उत्पादन किया जाए तो भी अभाव से निजात सम्भव नहीं है।

इस प्रकार चीजों की ऊंची दरों से न सिर्फ गरीब ही और गरीब हुए हैं, बल्कि इससे विकास की प्रक्रिया में जटिलताएँ भी पैदा हुई हैं। कृषि और उद्योग पर इजारेदारों की गिरफ्त को समाप्त करके ही खाद्य, कच्चा माल तथा औद्योगिक सामानों की दरें घटायी जा सकती हैं। तभी इस घृणित चक्र को तोड़ा जा सकता है।

किन्तु यह सरकार मौजूदा संकट से उबरने के लिए जमीन और उद्योग के बड़े मालिकों के खिलाफ कोई कदम नहीं उठा सकती है। इसके विपरीत यह आपूर्ति, दरों तथा कुछ चुनिदा औद्योगिक इकाइयों के निर्माण के लिए साधनों के खातिर विदेशी कर्ज लेने की विकल्प नीति को अपना रही है। देश के भविष्य को इस प्रकार गिरवी रखने का कदम अन्त में आत्मघाती साबित होगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

सम्पादक के नाम पत्र

पर उपदेश कुशल बहुतेरे—१

महोदय,

बम्बई में आयोजित भारतीय व्यापार मण्डल की बैठक में दिये गये अपने भाषण में राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद ने व्यापारियों से ऐशोआराम की वस्तुएँ न बनाने की अपील की। हमारे राष्ट्रपति स्वयं ३२२ एकड़ भूमि के मध्य बने हुए ३४० कमरों वाले विशाल और सुसज्जित भवन में निवास करते हैं। भवन के साथ १७५ एकड़ भूमि में गोल्फ कोर्स का मैदान है और भवन की देख-रेख पर ८० लाख रुपयों का वार्षिक व्यय होता है। राष्ट्रपति जी के अंग रक्षकों की संख्या लगभग २०० और राष्ट्रपति भवन के कर्मचारियों की संख्या हजारों में है। राष्ट्रपति जी के हज्जाम, धोबी, ड्राईवर, रसोइया आदि विशेष ड्रेस में रहते हैं और भवन के मुगल उद्यान में ८५ प्रकार के गुलाब उगाये जाते हैं। राष्ट्रपति जी की वार्षिक वेतन और भत्ता लाखों रुपयों का होता है। साल में केवल १ या २ बार वापरने के लिए ४ घोड़ों की बग्घी, अतिथियों के लिये ५ लाख की विदेशी कार, राष्ट्रपति भवन के लिए अलग से म्युनिसिपैलिटी, सिनेमा, छापाखाना, यात्रा के लिए स्पेशल ट्रेन, वर्ष में केवल कुछ दिन ठहरने के लिए हैदराबाद, उटी, शिमला आदि अलग-अलग स्थानों पर विशेष भवन और इसी प्रकार के दर्जनों ठाट-बाट और विलासताएं जो अंग्रेजों के जमाने में साम्राज्यवाद की प्रतीक मानी जाती थी, आज भी राष्ट्रपति भवन के साथ जुड़ी हुई हैं। सही आयकर देने वाला व्यक्ति एक अरब रुपया कमा कर भी इतना व्यय अपने लिए नहीं कर सकता है जितना आज भारत के राष्ट्रपति और उनके भवन पर हो रहा है। इस स्थिति में राष्ट्रपति जी द्वारा व्यापारियों और जनता को सादगी से रहने और ऐशोआराम छोड़ने का उपदेश दिया जाना अटापटा सा प्रतीत होता है।

संविधान विरोधी आदेश—२

महोदय,

हरयाणा के मुख्यमंत्री श्री बंसीलाल ने श्री जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन की कड़ी आलोचना करते हुए करनाल में एक सभा में घोषणा की है कि आन्दोलन में भाग लेने वाले सभी छात्रों को राज्य सरकार की नौकरियों से वंचित कर दिया जावेगा। मुख्य मन्त्री ने यह भी कहा कि पुलिस थानों को आदेश दिया गया है कि वे आन्दोलनकारियों के नाम दस नम्बरियों की सूची में दर्ज कर लेवें। ज्ञातव्य है कि पुलिस थाने में अवांछनीय व्यक्तियों का एक रजिस्टर रखा जाता है और इस रजिस्टर में दर्ज व्यक्तियों को शासकीय नौकरी नहीं मिल सकती है। इसी रजिस्टर को दस नम्बरियों का रजिस्टर कहा जाता है

भारतीय संविधान में प्रत्येक नागरिक को शासकीय नीतियों और कार्यक्रम के समर्थन या विरोध में शान्त और अहिंसक प्रदर्शन करने का मौलिक अधिकार दिया हुआ है। बैंक और बीमा राष्ट्रीयकरण के अवसरों पर और शिमला समझौते के समय सत्तारूढ़ दल के कार्यकर्त्ताओं ने महीनों तक प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरागांधी के समर्थन में प्रदर्शन किये थे। युवा कांग्रेस द्वारा कई बार सत्तारूढ़ दल की नीतियों के पक्ष में दिल्ली में विशाल रैलियां आयोजित की जाती रही हैं। जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन के विरोध में देश भर में कांग्रेस और कम्यूनिस्ट पार्टियां जलूस निकाल रही हैं। नरोरा के त्रि-दिवसीय सम्मेलन में कांग्रेस आला कमान ने जो १३ सूत्रीय कार्यक्रम स्वीकार किया है उसमें देश भर में जनतंत्र बचाओ के प्रदर्शन किये जाना भी सम्मिलित है। इन परिस्थितियों में विरोधी दलों को भी अधिकार है कि वे शासन की गलत नीतियों के विरुद्ध प्रदर्शन और आन्दोलन कर सकें। मुख्यमन्त्री श्री बन्सीलाल द्वारा अपने शासन के विरोधी आन्दोलनकारियों को इस प्रकार नौकरियों से वंचित रखने का आदेश दिया जाना स्पष्ट रूप से संविधान के साथ धोखा घड़ी है। अंग्रेजों ने भी अपनी हुकूमत कायम रखने के लिए इस प्रकार के हथकण्डे नहीं अपनाये थे।

कनकमल जैन
पार्षद नगर पालिका परिषद्
जावरा, जिला रतलाम
(म. प्र.)

ओम प्रकाश वर्मा, कार्यालय "मुझे जीने दो" मुजफ्फरनगर उ० प्र० से लिखते हैं—

मैं आपका ध्यान उ० प्र० के कृषकों की समस्याओं

की ओर खींचना चाहूँगा। कृषक आज चौराहे पर खड़ा पिट रहा है क्योंकि सभी राजनीतिक दलों ने अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु किसान के नाम से अलग-अलग संगठन बनाये हुए हैं। किसानों को फुसलाने के लिए कोई भी शासन का एक चमचा अपने फोटो सहित किसान की समस्याओं के हित में समाचार पत्रों में ब्यान छपवा देता है। किसान अपनी समस्या समाधान हेतु शासन की ओर दौड़ता है लेकिन वही के भ्रम में कपास मुंह में आ जाती है। और तब किसान सभी पार्टियों को जी भर कर कोसता है। गत वर्ष गल्ले का भाव ७६ रुपये प्रति क्विंटल सरकारी रेट, बाजार भाव जबकि किसान गेहूं ले रहा था तो २०० रु० प्रति क्विंटल तथा गन्ने का भाव सरकारी रेट ७ रुपये कुछ पैसे जबकि चीनी का भाव ४ रुपये प्रति किलो था लेकिन इस वर्ष गेहूं का सरकारी रेट १०५ रुपये प्रति क्विंटल, बाजार भाव ३०० रुपये क्विंटल तथा गन्ने का भाव सरकारी रेट ८ रुपये कुछ पैसे, चीनी का बाजार भाव ६०० रुपये प्रति क्विंटल है जबकि स्व० रफी अहमद किदवई के फार्मूले के अनुसार गन्ने का रेट ३७-५० रुपये प्रति क्विंटल होना चाहिये। पिछले वर्ष केन फेडरेशन लखनऊ ने भी कम से कम गन्ने का भाव १५ रुपये प्रति क्विंटल की सिफारिश की थी। यदि शीरा और खोई का हिसाब जोड़कर केन फैडरेशन की रिपोर्ट पर ध्यान दिया जाये तो गन्ने का भाव लागत-खर्च जोड़ घटा कर ३५ रु० प्रति क्विंटल से कम नहीं होना चाहिए। मुद्रास्फीति को ध्यान में रखते हुए एवं इस वर्ष, गत वर्ष, १९६५-६६ और ६६-६७ के गेहूँ के मूल्य को ध्यान में रखते कम से कम गन्ने का भाव ३० रुपये प्रति क्विंटल से कम किसी कीमत पर नहीं होना चाहिए।

क्रान्तिकारी विकल्प के लिए

o योगेन्द्र कुमार शर्मा

आर्य समाज की स्थापना ऐसे समय में हुई जब देश में ब्रिटिश साम्राज्यवाद का बोलबाला था। यह वही समय था जब झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, तांत्याटोपे जैसे वीरों ने देश में कई जगह क्रान्ति का शंखनाद किया था। चाहे कांग्रेसी मंच हो या क्रान्तिकारी संगठन आर्य समाजी कार्यकर्त्ता अच्छी संख्या में दिखाई देते थे। ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ जहां कांग्रेस के मंच से स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय जैसे आर्य समाजी अग्रणी थे वहाँ क्रान्तिकारियों में पं० रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, मदनलाल धींगरा भी सबसे आगे क्रान्ति का बिगुल बजाने वालों में से थे।

लार्ड मैकाले ने भारत में अंग्रेजी शिक्षा की जिसका उद्देश्य नई पीढ़ी को सरकारी दफ्तरों के लायक क्लर्क तैयार करना था, एक व्यापक योजना बनाई थी। उस योजना को भी आर्य समाज ने चुनौती दी थी। तथा उन्हीं दिनों दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज और गुरुकुलों की नींव डाली। अंग्रेजी सरकार आर्यों की देश भक्ति, साहस, निष्ठा से भली भांति परिचित हो चुकी थी। परन्तु देशी रियासतों ने मजहबी जनून में आकर आर्यसमाज से कुछ जगह छेड़ खा बैठी। पटियाला में 'सत्यार्थ प्रकाश' पर वहां के तत्कालीन राजा ने प्रतिबन्ध लगा दिया। फिर क्या था चारों ओर से आर्य समाजी टूट पड़े। महाराजा के खिलाफ सत्याग्रह शुरु किये गये। अन्त में महाराजा को अकल ठिकाने लग गयी, उसे अपना आदेश वापिस लेना पड़ा। सन् १९३९ में 'हैदराबाद सत्याग्रह' तो विदेशों में भी चर्चा का विषय बन गया। आर्य समाज के इस सत्याग्रह को देख कर महात्मा गांधी ने कहा था- जितना संयम अनुशासन मैंने इस सत्याग्रह में देखा उतना दूसरा किसी सत्याग्रह में मुझे देखने को नहीं मिला। स्वयं सरदार पटेल ने कहा था - "यदि आर्य समाज ने पहले से वहां भूमिका तैयार न की होती तो हमें इतनी जल्दी सफलता मिलनी कठिन थी।

आजादी के २७ वें वर्ष आते-आते एक युग बीत गया लेकिन इंसान को जीने लायक एक सामान्य जीवन भी नहीं मिल सका है। आज वर्तमान युग में व्यक्तिगत हितों की पूर्ति के लिए गिने-चुने पूँजीपतियों द्वारा जनता का शोषण किया जा रहा है। आर्थिक हितों की पूर्ति के लिए घूसखोरी, भ्रष्टाचार व अश्लीलता का प्रचार द्वारा राष्ट्र की नैतिक व चारित्रिक पतन तीव्रगति से योजनाबद्ध रूप में किया जा रहा है। देश की $22\frac{1}{2}$ करोड़ से अधिक जनता पेट की भूख से छटपटा रही है। शरीर की लाज ढकने के लिए कपड़े से भी वंचित है। ठिठुरती सर्दी तथा घोर गर्मी में खुले आसमान के नीचे मानवता दम तोड़ रही है।

आज देश की जनता बेकारी, महँगाई, भ्रष्टाचार की मार से बुरी तरह से ग्रस्त है। दैनिक उपभोग की वस्तुएँ साबुन, तेल, घी, चीनी, खाद्यान्न आदि के लिए जैसे अकाल पड़ गया हो, जिस पर सरकार ने जमाखोरों, काले व्यापारियों, मिलावट करने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने की अपेक्षा जनता पर अधिक करों का

बोझ लाद देने वाला बजट बनाया है। रक्षा कानून का उपयोग जनता के दुश्मनों के विरुद्ध न करके जन-आन्दोलनों को कुचलने के लिए किया जा रहा है। भ्रष्टाचार की जड़ें कचहरी, थानों, सरकारी अधिकारियों से लेकर मंत्रियों की कुर्सियों तक बहुत गहरी हैं। गरीब को दो जून रोटी भी मयस्सर नहीं हो रही है, दूसरी ओर जमाखोर, मुनाफाखोर दावतें उड़ा रहे हैं।

महानगरों में तेजी से बढ़ते हुए अय्यासी होटल, कालिजों, विश्वविद्यालयों, सरकारी कार्यालयों और राष्ट्रीयकृत संस्थानों में बढ़ती हुई उच्चश्रृंखलताएँ और व्यभिचार, सिनेमा हाऊस की खिड़की से लेकर रेलवे स्टेशनों की खिड़कियों तक टिकटों की कालाबाजारी, विदेशी मालकी तस्करी। इसी नम्बर दो के माल से न्यायालयों तक भ्रष्टाचार की जड़े अधिक गहरी होती चली गयी है। लेकिन आज हमारा देश परोपजीवी वर्गों के हाथों में है। उनके लिए देश का मतलब उसकी जनता, मेहनतकश किसान-मजदूर, बुद्धिजीवी तकनीशियन नहीं है, उनके लिए देश का मतलब है मुनाफों और दरमुनाफों का। शोषण के लिए कच्चे मालों और भोले-भाले आदमियों का स्रोत। इन पूंजीवादी डाकुओं और साम्राज्यवादी लुटेरों से अपने राष्ट्र को बचाना और इसे एक सुन्दर फलते-फूलते मातृभूमि में परिणित करना ही मजदूर-वर्ग, मेहनतकश की देशभक्ति है।

जिस देश में समाजवाद का दम भरने वाली सत्तारूढ़ शक्तियाँ पूंजीवाद की दलाली करती हो, अपनी संस्कृति सभ्यता का मजाक उड़ाकर विदेशी ताकतों के हाथों देश का भविष्य गिरवी रखने की साजिश करती हो, लोकतन्त्र का गला घोटकर मेहनतकश जनता का शोषण करती हो ऐसी गली-सड़ी व्यवस्था के खिलाफ आज संघर्ष का बिगुल बजाना होगा। समाज से गरीबी, आर्थिक शोषण, अन्याय, भ्रष्टाचार, चरित्रहीनता समाप्त करने के लिए सभी संभव उपायों से संघर्ष करना होगा। जिसमें राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक की बुनियादी आवश्यकताएँ शिक्षा, चिकित्सा, न्याय भोजन, वस्त्र, मकान की पूर्ति की जा सके। यह तभी संभव है जब आर्य सभा जैसी पार्टियाँ राज्य सत्ता प्राप्त करके महर्षि के आदेशानुसार सम्पत्ति के अधिकार को समाप्त कर गुण, कर्म स्वभाव के अनुसार अधिकार दें।

वैज्ञानिक भी बेरोजगारों की कतार में

बेरोजगारी. की काली छाया जिन्दगी के किसी भी क्षेत्र के लोगों को नही बख्श रही है। गाँव और शहर के अनपढ़ गरीब मेहनतकश तो दूर की बात, बेकारों की कतार में अब लाखों की संख्या में देश के वैज्ञानिक भी शरीक हो चुके है।

बिल्कुल हाल ही में सरकारी रोजगार दफ्तर द्वारा प्रकाशित आंकड़ों से पता चलता है कि रोजगार के लिये तरसते देश के करोड़ों लोगों में अब तक २लाख २६ हजार वैज्ञानिकों के नाम भी दर्ज हो चुके हैं। रोजगार दफ्तर के इन आंकड़ों से पता चलता है कि १९७२ में जहाँ इस दफ्तर में ६८ लाख बेरोजगारों के नाम दर्ज थे, वहीं १९७३ में यह संख्या बढ़ कर ८२ लाख हो गई है। इनमें ४७ फी सदी शिक्षित बेरोजगार हैं।

अकेले पश्चिम बंगाल में ५०,५८२ वैज्ञानिक बेरोजगार हैं। बिहार में ३७,८४१, उत्तरप्रदेश में २३,५८२, तमिलनाडु में १८,११२, आन्ध्र प्रदेश में १४,७५६, केरल में १४५२३, कर्नाटक में १४,२०७, महाराष्ट्र में११,७२४, तथा दिल्ली में ५,६६० वैज्ञानिक १९७३ में रोजगार की तलाश में रोजगार दफ्तर में याचना कर चुके हैं।

इन आंकड़ों से कांग्रेसी शासकों की तमाम विकास योजनाओं और बेरोजगारी से निपटने की लफ्फाजियों की वास्तविकता बिल्कुल नंगी होकर सामने आती है।

यहाँ यह बता देना उचित होगा कि रोजगार दफ्तर द्वारा पेश की जाने वाली बेरोजगारों की सूची हर दृष्टि से अधूरी होती हैं। गाँव के बेरोजगारों का सरकारी रोजगार दफ्तर में कोई खतियान नहीं होता।

(१४ नवम्बर के "दि स्टेट्समैन" में छपी खबर के आधार पर)

शोक समाचार

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री स्वामी योगानन्दजी के पिता श्री हंसराम जी ग्राम डालनवास, जिला भिवानी के निवासी जो बड़े समाज सेवी थे और अपने समय में स्वातन्त्र्य संग्राम के सेनानी रहे तथा भारतीय सेना में अनेकों वर्ष सेवायें की तथा सामाजिक कार्यों में अग्रणी बनकर सलग्न रहते थे। उनका निधन २-११ ७४ को दिन के ढाई बजे अचानक हो गया। ऐसे समाजसेवियो की अत्यन्त कमी होती जा रही है। आपके निधन से समाज को पर्याप्त आघात पहुँचा है। राजधर्म परिवार भी उनके अभाव से संवेदना प्रकट करता है। परमात्मा से प्रार्थना हैं कि वह शोक संतप्त परिवार को सान्त्वना प्रदान करें

समाचार दर्शन

आर्य सभा उत्तर प्रदेश के तत्वाधान में आर्य महा सम्मेलन सम्पन्न

आर्य सभा उत्तर प्रदेश के तत्वाधान में भगीरथी के पावन तट पर गंगा स्नान के शुभ अवसर पर शुक्रताल (मु० नगर) में २७ से २९ नवम्बर तक आर्य महासम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसके अन्तर्गत किसान सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, भ्रष्टाचार निरोधक सम्मेलनों का आयोजन किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता ब्रह्मचारी श्रुतिकान्त (गुरुकुल काजी खेड़ा) एवं संयोजन राजपाल आर्य (महामन्त्री उ० प्र०) ने किया। इस शुभावसर पर आर्य सभा के प्रमुख वक्ता स्वामी वेदानन्द (रोपड़), विक्रम कुमार विवेकी (रोहतक), प्रेमपाल शास्त्री (महामन्त्री दिल्ली आर्य सभा), बहन विद्या भारती (लक्सर), डॉ० महिपाल सिंह (प्रधान आर्य सभा सहारनपुर), सत्यचन्द्र (छात्र नेता मेरठ) प्रमोद त्यागी (छात्र नेता मु० नगर), प्रोफेसर सत्यवीर सिंह (चौ० छोटूराम डिग्री कालेज मु० नगर), तथा क्रान्तिकारी भजनोपदेशक पं० शोभाराम प्रेमी व ऋषिपाल राठी इत्यादि ने भाग लिया। इस अवसर पर कई हजार की संख्या में भीड़ उमड़ पड़ी। उपरोंक्त कार्यक्रम की सफलता का श्रेय छात्र नेता बृजपाल सिंह, योगेन्द्र शर्मा, राजपाल आर्य, कृष्णदत्त त्यागी, हरवीर सिंह (प्रवक्ता किसान इन्टर कालेज अलीपुर खेड़ी) आदि को है।

शिविर सूचना

आप को सूचित किया जाता कि है हम यहाँ गाँव सारसा (कुरुक्षेत्र) में २५ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर तक एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन कर रहे हैं जिसमें लगभग १०० विद्यार्थी भाग लेंगे। शिविर निःशुल्क होगा

प्रत्येक शिविरार्थी को सफेद पी० टी० सूज, एक लाठी, एक बनियान, एक लोटा, एक लगोंट, भोजन के बर्तन, खाकी निकर, सफेद जुराब तथा ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लाना होगा

इस शिविर में स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी अग्निवेश जी, डा० राम प्रकाश जी, डा० अमीर सिंह (कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालय) आदि प्रमुख विद्वान विशेष रूप से भाग लेंगे।

संयोजक—श्याम सुन्दर

आर्य समाज पलवल नगर का चुनाव

रविवार दिनांक १७-११-७४ को आर्य समाज पलवल नगर का वार्षिक चुनाव महाशय योगेन्द्र पाल भारती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए :—

संरक्षक— श्रीयुत लाला कृपाराम जी, प्रधान— श्री योगेन्द्र पाल भारती, महामन्त्री— लाला भगवान दास जी, प्रचारमन्त्री—श्री सत्यपाल जी, कोषाध्यक्ष — श्री लखी राम जी, लेखा निरीक्षक— श्री वीर भान जी आर्य, पुस्तकाध्यक्ष— मा० मदनलाल जी,

---

(सम्पादकीय का शेषांश)

उन्होंने अन्त में कहा कि भारत की जनता की समस्याओं का समाधान बिना समग्रक्रान्ति के असम्भव है। अतः देश की युवा शक्ति को आगे आकर युग को बदल डालने की अपने महान ऐतिहासिक दायित्व का भार वहन करना चाहिए।

कालेज और विश्वविद्यालयों से निकलने के बाद विद्यार्थियों को बेरोजगारी की समस्या को विकरालता का सामना अवश्य करना पड़ेगा क्योंकि वर्तमान आर्थिक व्यवस्था में पूंजीवादी उत्पादन सम्बन्धों के कारण तीव्र औद्योगिककरण का दरवाजा अवरुद्ध हो गया है। अतः युवकों को संत्रस्त, कुंठित, पतनोन्मुखी एवं आश्रित जीवन व्यतीत करने की बजाए अपने आपको समाज में बुनियादी परिवर्तन लाने के उद्देश्य से और इस तरह समाज के हर व्यक्ति को सर्वाधिक उन्मुक्त, विस्तृत और तीव्र विकास का मौका देने के उद्देश्य से अपने आपको समर्पित कर देना चाहिए ताकि समाज का प्रत्येक व्यक्ति उन्नत आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक जीवन स्तर हासिल कर सके। इसके लिए विद्यार्थियों को क्रान्तिकारी समाजवादी विचारधारा से अवगत हो कर बुनियादी परिवर्तन लाने के लिए अपने आप में संघर्षशील योग्यता के साथ-साथ गवेषणात्मक बौद्धिक रुझान तथा स्वयं में जन साधारण से निरन्तर और सदैव सीखने के लिए रुझान विकसित करना होगा। तभी समस्याओं को सही समझदारी रख कर और विचारों को ठोस बना कर ठीक मार्ग का अवलम्बन किया जा सकता है और शोषण मुक्त समाज के मार्ग में आने वाली बाधाओं का सामना करते हुए सफलता की मंजिल तक पहुंचा जा सकता है।

—गिरजेश्वर

स्वास्थ्य-चर्चा

O डा. धर्मवीर

बहुत दिनों से यह इच्छा थी कि अपने राजधर्म में जहां स्वस्थ राजनीति की चर्चा होती है वहां राजनीतिज्ञों को शारीरिक व मानसिक दृष्टि से निरोग रखने के लिए स्वास्थ्य सम्बन्धी चर्चा भी होनी चाहिए । इस हेतु ही इस सन्दर्भ की चर्चा आरम्भ की जा रही है ।

स्वास्थ्य शब्द की व्याख्या भी अत्यावश्यक है । स्वस्थ शब्द से स्वास्थ्य बना है । स्वस्थ से तात्पर्य है :—

समदोष: समाग्निश्च समधातु मल: क्रिय: ।
प्रसन्नात्मेन्द्रिय मना: स्वस्थेस्त्यभि धीयते ॥
(सुश्रुत संहिता सू० १५/४८)

अर्थ— जिस पुरुष के दोष समान हैं, अग्नियाँ समान हैं, धातु, मल, ये समान परिमाण में हैं । आत्मा, इन्द्रिय व मन प्रसन्न हैं उसको स्वस्थ कहते हैं । अन्यथा अस्वस्थ हैं ।

दोष, अग्नि, धातु, मल, आत्मा, इन्द्रिय, मन क्या हैं, अब यह प्रश्न उठता है ।

संक्षिप्त रूप से इनका वर्णन निम्न है :—

दोष— शरीर को समान मात्रा में चलाने वाले परन्तु असमान मात्रा में होने पर रोग उत्पत्ति करने वाले । संख्यां में तीन होते हैं । वात, पित्त, कफ ।

अग्नि-शरीर में पाक क्रिया को करने वाली, सूर्य का प्रतिनिधि, प्रत्येक शरीराणु में व्याप्त, नव निर्माण करने वाली शक्ति का नाम अग्नि है ।

शरीर में १३ अग्नियाँ होती है :— सात धातुओं की अग्नियां, पांच भौतिक अग्नियाँ, तेहरवीं जठराग्नि ।

धातु- शरीर का धारण व पोषण करने वाली । संख्यां में ७ रस, रक्त, मांस,मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र ।

मल- शरीर से बाहर निकलने वाला पदार्थ, दुर्गन्धित । शरीर को मलीन करने वाला । मुख्यतया ३ मल- पुरीम (पाखाना),मूत्र, स्वेद । सब धातुओं के भी अपने-२ मल होते हैं ।

आत्मा- शरीर को जीवन प्रदान करने वाला । इन्द्रियों व बुद्धि का नियन्ता । संख्या में एक ।

इन्द्रिय- शरीर को चलाने वाली । पांच कर्मेन्द्रियां, पांच ज्ञानेन्द्रियां, ग्यारवीं इन्द्रिय मन ।

कर्मेन्द्रियां,—हाथ, पैर, वाणी, मुत्रेन्द्रियां, गुदा ।

ज्ञानेन्द्रियां- त्वचा, श्रोत्र (कान), चक्षु, जिह्वा, घ्राण, (नाक) ।

मन- संकल्प, विकल्प वाला (इन्द्रियों का नियन्ता । मनन करने वाला ।

उपरोक्त सब पदार्थ जब ठीक रहेंगे तभी हम व्यक्ति विशेष को स्वस्थ कहेंगे ।

इस सन्दर्भ में दो तरह की चर्चा रहा करेगी । एक स्वास्थ्य सम्बन्धी लेख, दूसरे रोग सम्बन्धी पाठकों के प्रश्नों का उत्तर । अतेव मेरा विद्वानों एवं पाठकों से निवेदन है कि वे इस सम्बन्ध के लेख व अपनी समस्यायें भेजें जिससे इस चर्चा का हम अधिक से अधिक लाभ उठा सकें ।

प्रोफेसर काय चिकित्सा
श्री मस्तनाथ आयुर्वेद महाविद्यालय
अस्थल बोहर, रोहहक
(हरियाणा)

मुद्रास्फीति का मूल:विदेशी अर्थनीती

हम तेजी से संकट की ओर जा रहे हैं । मुद्रास्फीति को रोकने के लिए सरकार ने कर भार बढ़ाने और खर्च में कटौती करने के जो तरीके अपनाये वे सब बेकार होते नजर आ रहे हैं । बजट का घाटा १२६ करोड़ तक बांध कर रखने का संकल्प टूट गया है । रिजर्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार १३ सितम्बर तक केन्द्र सरकार का घाटा ६५६ करोड़ रु० तक पहुंच गया है जो १९७३ में १४ सितम्बर तक हुए केंन्द्र के बजट घाटे से १०० करोड़ रु० अधिक है । ३१ मार्च को सरकार का श्री रोकड़ बाकी १६६ करोड़ रु० था जो १३ सितम्बर को घट कर ५७.१४ करोड़ रु० रह गया । चालू साल में कुल मिला कर ८५० करोड़ रु० के नये करों का बोझ डाल दिया है । चालू साल में इनसे सरकार को कुल मिलाकर ६२० करोड़ रु० अतिरिक्त प्राप्त होंगे । जनता पर किसी एक वर्ष में इतने करों का बोझ अभूतपूर्व है । सरकार ने १९७४-७५ में अपने खर्च में २०० करोड़ रु० की कटौती की है । अधिकांश कटौती वार्षिक विकास योजना में की गई है । फिर भी चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही का घाटा अनुमान से पांच गुना अधिक हो चुका है ।

पश्चिमी आर्थिक सिद्धांतों को अपनाना स्वयं में एक जबर्दस्त भूल थी । अब पश्चिमी देश भी कह रहे हैं कि अर्थशास्त्र के अब तक मान्य सब सिद्धान्तों को इस आर्थिक संकट ने झुठला दिया है । अब तो सर्वथा नये सिद्धान्तों का विकास करना होगा । भारत का संकट, इस चर्चा से दूना हो गया है । उसका आर्थिक ढांचा तो टूट ही रहा है, इसे संभालने के लिए उसके पास वैचारिक शक्ति भी नहीं है । नये आर्थिक विचारों के लिए भी इस देश को तब तक इन्तजार करना होगा, जब तक विदेशी विद्वान, जिन्होंने भारत के आर्थिक विकास की योजना प्रदान की, इस देश को विचारों की नयी भीख देना शुरु नहीं कर देते ।

(साभार सम्पदा)

पंजीयन क्रमांक RTK 26
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

राजधर्म
रोहतक
१२ दिसम्बर १९७४

राजधर्म प्रकाशन के लिए राजधर्म प्रेस, कच्चर रोड, रोहतक से स्वामी ओमानन्द द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। फोन। ८८२

राजधर्म

६ अङ्क २४ | प्रधान सम्पादक : स्वामी अग्निवेश | वार्षिक १५ रु०
दिसम्बर द्वितीय | सह-सम्पादक : गिरजेश्वर | एक प्रति ७० पै

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द

देश व्यापी मन्दी और भयंकर बेरोजगारी

करोड़ों की आंखों से ओझल नेत्रहीन

पूंजीवादी व्यवस्था में पैसा ही भगवान

परनिर्भरता और औद्योगिक जड़ता

एक सनातन युद्ध

जनता, राजसत्ता और सेना

सम्पादकीय

सामाजिक उत्पादन और गैर सामाजिक वितरण के बीच की खाई पाटे बिना

देशव्यापी मन्दी और बेरोजगारी से मुक्ति नहीं

भारतीय वाणिज्य एव उद्योग मण्डल संघ के अध्यक्ष श्री कृष्ण कुमार बिरला ने "गतिशील अर्थ व्यवस्था की ओर" नामक, संघ के एक 'प्रकाशन' को प्रकाशित करते हुए सरकार को चेतावनी दी है कि यदि समय पर स्थिति को सुधारने के उपाय न किये गये तो भारतीय अर्थव्यवस्था में मन्दी पूरे जोरों पर आ जायेगी। उन्होंने कहा कि सूती कपड़ा, रासायनिक धागा और वस्त्र, वैगन, मोटर कार और मशीनरी आदि उद्योगों में मन्दी शुरू भी हो गई है। इन उद्योगों में तैयार माल का स्टाक इतना जमा हो गया है कि इनके उत्पादन में कटौती का खतरा पैदा हो गया है। अगर यह प्रवृत्ति जारी रही तो मन्दी का पूर्ण रूप से आरम्भ हो जाना स्वाभाविक है और उससे किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। निजी क्षेत्र में, लोगों को रोजगार देने की क्षमता का घटना इस बात की पुष्टि करता है कि यह बात गलत नहीं है। मार्च १९६६ में जहाँ देश में निजी क्षेत्र में रोजगार पाने वालों की सख्या ६८.१ लाख थी, वहाँ एक वर्ष बाद, मार्च १९६७ में वह घट कर ६६.३ लाख रह गयी और मार्च १९६८ में तो वह और भी गिर कर केवल ६५.२ लाख हो गयी फलस्वरूप रोजगार के क्षेत्र में इस अनवरत ह्रास के कारण औद्योगिक प्रवृत्तियों में न्यूनता आ गयी है।

गत दो वर्षों में लगभग १०० मिनी स्टील के कारखाने लगे और तब खनिज मन्त्री श्री के० डी० मालवीय ने बड़े गर्व से कहा था कि अभी तो देश को ऐसे १००० कारखानों की आवश्यकता है। परन्तु आज स्थिति यह है कि उन १०० कारखानों में से अधिकांश बन्द पड़े हैं। आज मिनी स्टील उद्योगपतियों को इन उद्योगों में अपने लगे हुए रुपयों से भी हाथ धोना पड़ा है और वित्तीय संस्थाओं से लिए गए ऋण को भी चुकाना मुश्किल हो गया है। नई लगी सूती मिलें भी इसी प्रकार के संकट से गुजर रही हैं। सूती मिलों से होने वाले लाभ को देख कर सन् १९७३ में बहुत से लोगों ने लाइसेन्स लिए और मशीनों के आर्डर दे दिये। परन्तु देश व्यापी मन्दी की संकट के कारण ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गयी है कि पहले की मिलों का सूत भी नहीं बिक रहा है क्योंकि बहुत से करघे बन्द हो गये या आधे चलते हैं। आज २५००० तकुए की मिल पर लगभग ३.५० करोड़ की लागत आती है। इसी तरह १९७१-७२ में करीब २० नए वनस्पति घी के कारखाने लगे और देश में घी की उत्पादन क्षमता बढ़ कर १२ लाख टन हो गयी परन्तु आज मात्र ३.५० लाख टन ही वनस्पति घी का उत्पादन होता है।

आज खरीदारों की लम्बी सूची के अभाव में देश के मोटर उद्योगों में भी उत्पादन घट कर एक तिहाई रह गया है। हिन्दुस्तान मोटर में २५०० कार प्रतिमाह की उत्पादन दर घट कर १००० कार प्रति माह हो गयी है। जीप निर्माण करने वाला कारखाना महिन्द्रा को भी जीप-उत्पादन घटाने को विवश किया गया है। फलस्वरूप मोटर उद्योगों में हजारों मजदूरों की पहले ही छटनी हो चुकी है। अतः अब इसका प्रभाव मोटर उद्योग के सहायक कारखानों और मरम्मत आदि करने वाले कारखानों में काम करने वालों पर भी पड़ेगा। एक अनुमान के अनुसार १९७३-७४ में इन समस्त मोटर उद्योगों में ७८ लाख लोगों को रोजगार मिला हुआ था। इसी तरह सीमेंट एवं लोहे के सामान आदि के उत्पादन पर भी मन्दी का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। यही कारण है कि आज गृह निर्माण कार्यों में लगे हुए लाखों मजदूर बेकार हो चुके हैं। कच्चे माल के अभाव में और उर्जा संकट के कारण वैसे ही लाखों मजदूर ले आफ के शिकार हैं या सप्ताह में कार्य करने की उनकी काल-अवधि कम कर दी गई है।

वाणिज्य-उद्योग मण्डल संघ के अनुसार इस मन्दी के कई कारण हैं एक तो यह कि सरकार ने निजी उद्योगों के लिए ऋणों की उपलब्धि संकुचित कर दी है। नवम्बर १९७३ के बाद से निजी उद्योगों के लिए ऋण प्राप्त करना अधिकाधिक कठिन हो गया है। जब तक उद्योगों को धन पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलेगा तब तक उनकी औद्योगिक प्रवृत्तियों में वृद्धि कैसी होगी? इसके अतिरिक्त सरकार ने अतिरिक्त महंगाई भत्तों तथा वेतन वृद्धि पर रोक लगा कर और अनिवार्य जमा योजना से औद्योगिक उत्पादनों की मांग भी घटा दी है जिससे तैयार माल के खरीदार कम हो जाने से उनका बड़ा स्टाक कारखानों में जमा हो गया है। इसलिए संघ ने सरकार से अनुरोध किया है कि वह एक ओर उद्योगों के लिए धन की उपलब्धि में सुधार करे और

अर्थ व्यवस्था पनप सकती है। इसके लिए संघ ने कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं जो निम्न हैं—

सरकारी खर्च में कमी समझ बूझ कर की जाए, ताकि केवल अनुपयोगी और अनुत्पादक खर्च ही घटे, उद्योगों के लिए ऋण की प्राप्ति कम न की जाए, पूंजी निवेश की दिशा में अर्थात् शेयरों में पूंजी लगाने की रुचि पुनः जागृत की जाए, बचत को प्रोत्साहन दिया जाए, कारखानों को उत्पादन क्षमता के अधिकतम उपयोग के लिए प्रोत्साहन मिले, कृषि उत्पादन बढ़ाया जाए, अन्न की कमी आयात से पूरा किया जाए, कम्पनी कानूनों में उदारता लाकर अन्ततः कम्पनी निवेश को उन्मुक्त किया जाय, कम्पनी के ऋण और शेयर पूंजी के अनुपात को बदल कर अधिक ऋण लेने की सुविधा कम्पनियों को दी जाए और मांग को प्रोत्साहन देने के लिए आवश्यक वस्तुओं में दोहरी मूल्य नीति अपनाई जाए।

वास्तव में निजी क्षेत्र के प्रतिनिधि वाणिज्य-उद्योग मण्डल संघ का यह कथन सही है कि औद्योगिक अर्थव्यवस्था को पनपने के लिए धन की उपलब्ध और उद्योगों में बने माल के लिए बाजार की अत्यन्त आवश्यकता है। लगातार माल उत्पादन की मांग बनी रहने पर ही उद्योग-धन्धे चलते रहेंगे और बेकारी की विकराल समस्या से संत्रस्त रहने का भय भी जाता रहेगा। परन्तु इस देश की लगभग ७५ प्रतिशत जनता गाँव में बसती है और फिर उनमें से ८३ से ८५ प्रतिशत लोग मजदूर, भूमिहीन किसान और निम्न मध्यम वर्ग के किसान एवं गरीब किसान हैं। गरीब किसान कहने का मतलब उस गरीब किसान परिवार से है जिस परिवार में लगभग चार से छः खाने वाले हों लेकिन परिवार की कुल जमीन सिर्फ दो या तीन बीघे से लेकर सात-आठ बीघे तक की हो। निम्न मध्यम दर्जे के किसान वे हैं जिनके पास लगभग १५ बीघे से ज्यादा जमीन नहीं हैं। भूमिहीन किसान और खेत मजदूरों के पास तो जमीन है ही नहीं।—. इन लोगों की कुल संख्या ग्रामीण जन-संख्या का अस्सी से लेकर पच्चासी प्रतिशत है। यदि इनमें से मध्यम वर्ग वाले किसान यानी पन्द्रह बीघे से लेकर पचास-साठ बीघे वालों को अलग कर दिया जाए तो बहुत कम ही लोग रह जाते हैं जो लोग कानून की आंखों में धूल झोंक कर विभिन्न नाम से देश की ज्यादातर जमीन पर कब्जा जमाए बैठे हैं। अतः ग्रामीण जनसंख्या की ८५ प्रतिशत आबादी नाम मात्र की भी क्रय शक्ति नहीं रखती। वे अध भूखे और अध नंगे हैं। उन्हें साल भर तक काम नहीं मिलता। जितने दिन उन्हें काम मिलता है, उससे जो थोड़ा बहुत मिलता है, वह वर्ष भर गुजर-बसर के लिए अपर्याप्त होता है। उससे आधे साल का भी खर्च नहीं चलता।

इसी तरह देश की २५ प्रतिशत आबादी जो शहरों में निवास करती है, उनमें से अधिकांश मजदूर हैं जिनमें से कुछ रोजगार में लगे हुए हैं और अधिकांश बेरोजगार और अर्ध बेरोजगार हैं। जो रोजगार में लगे हुए हैं वे भी न्यायोचित मजदूरी से वंचित हैं। उनकी आमदनी रुपयों के हिसाब से पहले की अपेक्षा बढ़ी है लेकिन वस्तुओं की निरन्तर बढ़ती हुई कीमत के अनुपात में उनकी असली आमदनी लगातार घटती जा रही है। इसके अतिरिक्त घर-घर में बेकार और अर्ध बेकार युवकों से मध्यम वर्ग परिवार भरे हुए हैं। अतः जिस देश की अधिकांश जनता ऐसी विपन्न स्थिति में हो वहां बाजार में सामानों की खपत की गुंजाईश कैसे हो सकती है? लोगों की क्रय शक्ति पर ही बाजारों में खपत की गुंजाईश निर्भर करती है। यही कारण है कि इस देश में औद्योगिकरण का विकास रुक गया है। आज यदि पांच नये कारखाने बन रहे हैं तो दस पुराने कारखाने बन्द हो रहे है या आंशिक उत्पादन कर रहे हैं। इसलिए आन्तरिक बाजार के अभाव में ले-आफ, तालाबन्दी और मजदूरों की छटनी आम बात हो गयी है।

आज देश को आन्तरिक बाजार के साथ-साथ बाह्य बाजार के भी संकट का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि विश्व बाजार में भारत को विकसित राष्ट्रों के मुकाबले कठोर प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। परिणाम स्वरूप देश व्यापक मन्दी का शिकार हो गया है।

आज यदि देश में वाणिज्य उद्योग मण्डल संघ के अनुसार धन उपलब्ध भी हो जाय तो औद्योगिकरण असम्भव है। जब तक इस देश की अधिकांश जनता की क्रय शक्ति नहीं बढ़ती तब तक औद्योगिक विकास की समस्या बनीं रहेगी। चूंकि आज समाज में मालिक-मजदूर सम्पर्क के आधार पर उत्पादन होता है और उत्पादन का उद्देश्य रहता है अधिकतम मुनाफा अर्जित करना, इस लिए पूंजीपति लोग जहां अधिक मुनाफा नहीं होता, वहां अपनी पूंजी नहीं लगाते। इससे न तो शिल्प उद्योग का विस्तार हो पाता है और न ही नये नये कारखाने ही अस्तित्व में आ पाते हैं। परिणाम स्वरूप न तो रोजगार में वृद्धि होती है और न उत्पादन ही बढ़ पाता है। आज जब श्रम का चरित्र सामाजिक हो चुका है, वितरण व्यवस्था अत्यधिक मुनाफा अर्जित करने के नियमानुसार गैर सामाजिक ढंग से संचालित हो रही है। यही सामाजिक उत्पादन और गैर सामाजिक वितरण के बीच में विद्यमान खाई ही जन-जीवन की समस्त बुनियादी समस्याओं की असली जड़ है। जब तक यह खाई विद्यमान है, तब तक

देश का विशाल तबका नंगा, भूखा, रोगी और अशिक्षित बना रहेगा और देश आन्तरिक बाजार के संकट से ग्रस्त रहेगा तथा देश में व्यापक औद्योगिकरण का दरवाजा बन्द रहेगा।

अतः श्री कृष्ण कुमार बिरला के अनुसार प्रस्तुत सुझाव तब तक निरर्थक हैं जब तक अत्यधिक मुनाफा अर्जित करने की पूंजीवादी मनोवृत्ति और निजी स्वामित्व पर आधारित उत्पादन सम्बन्ध बरकरार है। श्री बिरला जी कृषि उत्पादन बढ़ाने की बात करते हैं। परन्तु आधुनिक वैज्ञानिक ढंग अपनाए बिना कृषि उत्पादन नहीं बढ़ सकता है। ऐसा करने पर कृषि क्षेत्र में बेरोजगारों की एक विशाल फौज तैयार होगी जिसे वर्तमान संकट ग्रस्त पूंजीवादी व्यवस्था काम देने में असमर्थ है। अतः घूम फिर कर वही समस्या खड़ी होती है कि इस देश की समस्त जनता को किस प्रकार का उत्पादन सम्बन्ध स्थापित कर रोजगार प्रदान किया जा सकता है क्योंकि देश की सम्पदा का वितरण उन्हीं में होगा जो रोजगार में लगे हुए हैं। परन्तु यह तभी सम्भव होगा जब व्यापक औद्योगिकरण का दरवाजा खोल दिया जाय और यह समाजवादी समाज व्यवस्था में ही सम्भव है जिसमें व्यक्तिगत स्वामित्व की जगह सार्वजनिक स्वामित्व कायम हो जाता है।

चूंकि भारत एक बड़ा खेतिहर देश है, उसकी ७५ प्रतिशत जनता कृषि पर अवलम्बित है, इसलिए उद्योग को कृषि के साथ विकसित होना अनिवार्य है। सिर्फ तभी उद्योग को कच्चा माल और बाजार मिल सकता है। ऐसा होने पर ही शक्तिशाली भारी उद्योग के लिए पर्याप्त कोष संग्रह किया जा सकता है। क्योंकि भारी उद्योग राष्ट्र के आर्थिक निर्माण का हृदय होता है। चूंकि कृषि के साथ हल्के उद्योग का घनिष्ट संबन्ध है क्योंकि कृषि के बिना हल्का उद्योग हो ही नहीं सकता। अतः भारत जैसा देश कृषि विकास और हल्के उद्योग द्वारा ही भारी उद्योग की स्थापना की ओर अग्रसर हो सकता है। वास्तव में कृषि भारी उद्योग के लिए महत्वपूर्ण बाजार बनाता है। ज्यों-ज्यों प्राविधिक विकास एवं कृषि का आधुनिकरण, ज्यादा से ज्यादा मशीनरी, खाद, जल संरक्षण एवं विद्युत शक्ति परियोजनाएं और फार्मों के लिए यातायात सुविधाएँ तथा ग्रामीण उपभोक्ताओं के लिए ईंधन एवं ईमारतें बनाने की सामग्री में धीरे-धीरे प्रगति होती जाती है, त्यों-त्यों भारी उद्योग को बाजार तथा फण्ड का आश्वासन मिलता है और भारी उद्योगों में तेजी से वृद्धि होती जाती है। इस तरह देश तीव्र औद्योगिकरण द्वारा भयंकर बेरोजगारी और व्यापक मन्दी से मुक्त होकर निरन्तर विकास की ओर अग्रसर होता जायेगा।

ऐसी स्थिति में कारखानों में ले-आफ, छटनी, तालाबन्दी और आंशिक उत्पादन का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि इस प्रक्रिया में आन्तरिक बाजार साथ-साथ विकसित होता जाता है। इस तरह मजदूरों द्वारा उत्पादन से जो लाभ होगा अथवा समाज में कुल जितनी सम्पदा पैदा होगी उसमें से देश के चतुर्दिक विकास और शिल्प उद्योग की उन्नति के लिए एक आवश्यक हिस्सा काट कर शेष हिस्सा मजदूरों को उनके हक के रूप में मिल जाया करेगा। ऐसी ही हालत में कहा जायेगा कि मजदूरों को सामाजिक न्याय-नीति के आधार पर न्यायोचित मजदूरी दी जाती है। ऐसे समाज में ही सामाजिक विकास की पूरी जरूरत को ध्यान में रख कर उत्पादन होगा और आम जनता की खरीद शक्ति से संगति स्थापित करते हुए सामानों का दाम बांधकर सुसामंजस्यपूर्ण वितरण की व्यवस्था होगी। इस तरह सामाजिक उत्पादन के साथ सामाजिक वितरण का स्वरूप कायम हो जायेगा। ★

O गिरजेश्वर

राजधर्म परिवार से अपील

राजधर्म से हमारे सुहृद् पाठक विशेष स्नेह रखते हैं। यह जानकारी पाकर हमें विशेष बल मिलता है। हम चाहते हैं राजधर्म अधिक से अधिक लोगों के पास पहुँचे। इसके लिए सभी राजधर्म के सदस्यों को एक अभियान प्रारम्भ करना चाहिए। मेरी प्रत्येक राजधर्म के सदस्य से प्रार्थना है कि प्रत्येक सदस्य ५, ५ ग्राहक अपने से अतिरिक्त अवश्य बनायें।

राजधर्म के आजीवन सदस्य

शीघ्र ही १५० रु० भेजकर राजधर्म के आजीवन सदस्य बनें, ताकि इस परिवार का गौरव बढ़े और राजधर्म प्रकाशन आपके संरक्षण में उन्नति के पथ पर अग्रसर हो।

एक सनातन युद्ध

★ स्व० पं० श्रीपाद सातवलेकर

वेदों में 'इन्द्र और वृत्र के सनातन युद्ध' का वर्णन आया है। यह युद्ध सनातन है। इस युद्ध के अन्त में इन्द्र की विजय होती है और इन्द्र की शक्ति विकसित होती है। वृत्र को इन्द्र क्यों मारता है और इन दोनों का सनातन युद्ध क्यों होता है? यह बात समझने के लिए वृत्र की कल्पना पहले होनी चाहिए। सैंकड़ों वेदमन्त्र इस युद्ध का मनोहर वर्णन करते हैं, वे सब मन्त्र यहां देना सम्भव नहीं है, तथापि इस लेख का उद्देश्य केवल 'वृत्र' का स्वरूप जानने से ही है। 'वृत्र' का स्वरूप इसी शब्द से ज्ञात होता जाता है जो चारो ओर से घेरता है उसको वृत्त कहते हैं। घेरने वाले का नाम वृत्र है। घेरने का अर्थ प्रतिबन्ध करने से है। इन्द्र अपना प्रभाव बढ़ाना चाहता है, उसको चारो ओर से जो घेर कर प्रतिबन्ध करता है, उसका नाम वृत्रासुर है। इसीलिए प्रभाव बढ़ाने वाले इन्द्र को उचित है कि प्रतिबन्ध करने वाले के साथ युद्ध करे और उसका पराभव करके अपना प्रभाव बढ़ावे। इन्द्र और वृत्र के युद्ध का यही तात्पर्य है। अब इसका स्वरूप बाह्य सृष्टि तथा आंतरिक सृष्टि से देखना चाहिए।

यदि आप अपने हृदय और बाह्य जगत में अपनी विचार की आंख खोल कर देखेंगे तो आपको पता चल जाएगा कि आपका प्रतिबन्ध करने वाली शक्तियां अनेक है। आपकी प्रगति में जो बाधा डालते हैं, वे ही आपके वृत्र हैं और उनके बीच में आप ही इन्द्र हैं। आपको उनके साथ सदा सर्वदा युद्ध करना अत्यावश्यक है। यदि आप इस युद्ध से पीछे हटेंगे तो आपकी पराजय हो जायेगी और आपकी इन्द्रशक्ति नष्ट हो जायेगी। परन्तु यदि आप बाह्य और आंतरिक प्रतिबन्धों को तोड़ कर अपनी स्वतन्त्रता सिद्ध करेंगे तो आपके प्रभाव का दिव्य तेज चारो ओर फैल जाएगा। यह इन्द्र और वृत्रों के सनातन युद्ध का सारांश में स्वरूप है। अब इसी का थोड़ा सा विस्तार करना आवश्यक है। वेद कहता है कि:—

अप्रतीतो जयति सं धनानि।
प्रतिजन्यान्यु त या सजन्या ॥ ऋक् ४।५०।९

"जो (अ-प्रति-इतः) पीछे नहीं हटता है, वही उस धन को (संजयति) उत्तम प्रकार से प्राप्त करता है, जो धन (प्रति जन्यानि) वैयक्तिक अधिकार के तथा (स-जन्यानि) समाज के अधिकार होते हैं।'

तात्पर्य यह है कि वैयक्तिक और
तब प्राप्त होगी जब युद्ध करने वाला यु
हटेगा। प्रत्येक मनुष्य प्रति क्षण युद्धरत
'जीवन-युद्ध कहते हैं। इस जीवन-युद्ध' मे
वह आपको प्रतिबन्धित करता है, अतः
आपकी अपेक्षा से वह वृत्र है। इसलिए
कि आप उसके साथ युद्ध करके उसे परा
जय-संपादन करें।

यदि आप अपने चारो ओर देखेंगे त
जिक व राष्ट्रीय कार्यक्षेत्र में बीसियों शक्ति
में बाधा डाल रही हैं। शरीर के अन्दर भ
भावनादि के अनेक असुर खड़े हैं, जो आप
रहे हैं। अपने आध्यात्मिक क्षेत्र में स
प्रतिबन्ध करने वाले, तथा आधिदैविक यु
अवर्षणादि विघ्न आपको घेर रहे हैं औ
कर उठने नहीं देते हैं। इन प्रतिबन्धक
करना और अपने अभ्युदय की सि
आवश्यक कर्त्तव्य है।

यदि आप इस पद्धति से विचार
पता लग जायेगा, कि इन्द्र–वृत्र का यु
सनातन युद्ध है। मनुष्य के हृदय स्थान
अंशावतार हुआ है, उसको उचित है कि
के मार्ग में प्रतिबन्ध करने वाले वृत्रों को
अपनी उन्नति प्राप्त करे। वेद में जो इन्
वर्णन है वह इस प्रकार सनातन युद्ध है
मानव को करना है। जिस समय पाठक
युद्ध का अनुभव करेंगे, उसी समय वेद के
उपदेश उनके ध्यान में आ सकता है
सकता है कि वेद का आशय कितना गम
प्रकार उसका सम्बन्ध मनुष्य के प्रतिदि
साथ जुड़ा है। अस्तु इस प्रकार प्रतिबन्ध
के साथ होने वाले सनातन युद्ध का स्वरू
अधिक विस्तार से वर्णन करते हैं।

(१) प्रायः असुर अभावरूप ही ह
यह शब्द ही 'सुर' का अभाव बता रह
प्रकाश का अभाव' ज्ञान का अभाव,
यद्यपि अभाव शब्द से किसी वस्तु विशेष
तथापि ये अभाव रूपी असुर स्वयं वस्तुरू

बड़े प्रतिबन्ध खड़े कर देते हैं। ज्ञान का अभाव ही अज्ञान है। अज्ञान करके कोई वस्तु या पदार्थ नहीं है तथापि यह अभावरूपी असुर स्वयं वस्तुरूप न होते हुए भी बड़े प्रतिबन्ध खड़े कर देता है। गाढ़ अंधकार प्रकाश का अभाव ही है, तथापि कई प्रकार की बाधाएं इस अन्धकार से उत्पन्न होती हैं।

(२) आत्मिक कार्य क्षेत्र में आत्मिक बल का अभाव होने के कारण शक्तियां होते हुए भी मनुष्य सबसे पीछे रहता है क्योंकि उसके अन्दर इतना हौसला नहीं होता कि वह आगे बढ़े। केवल इस बल के अभाव के कारण उसकी सब उन्नति बन्द हो जाती है –

(३) वृत्रादि असुरों का स्वरूप वेद में अंधकारमय वर्णन किया गया है, वेद कहता है कि जहां वृत्र जाता है, अंधेरा होता है, इसका तात्पर्य ऊपर वर्णन किया ही है। हर एक क्षेत्र में जहां अभाव रूप असुर भासमान होता है वहां अंधेरा बढ़ता जाता है। इन्द्र प्रकाश का प्रतिनिधि है और उसके विरोधी सब असुर अंधेरे के प्रतिनिधि हैं। इस जगत में प्रकाश और अन्धकार का युद्ध हमेशा से चल रहा है।

(४) मनुष्य की मनोभूमि में उत्साह, स्फूर्ति, उद्यमशीलता, धैर्य,गम्भीरता, धार्मिक भाव आदि सब गुण प्रकाश से सम्बन्ध रखते हैं. ये इन्द्र के सहचारी देवगुण हैं। निरुत्साह आलस्य, सुस्ती, भय, हीनवृत्ति आदि सम्पूर्ण अशुभ दुर्गुण अन्धेरे से सम्बन्ध रखते हैं और ये सब वृत्र सहचारी असुर गुण हैं। इनका विस्तार बहुत है जिसको पाठक स्वयं जान सकते हैं।

यदि पाठक इन्द्र सूक्त के मन्त्र पढेंगे तो वहां इन्द्र का प्रभाव और उत्कर्ष दिखायी देगा। यदि पाठकों के मन में इन्द्र के मन्त्रों का भाव स्थिर हो जाए, तो, उनके मन में भी अभावमुक्त प्रतिमा स्थिर रूप से विराजमान हो जायेगी और वहां से चिंता और हीनता दूर हो जायेगी ★

उखड़ते सांस

O राजेन्द्र फौगाट

कवि के शब्दों में,

तुलसी के पत्ते सूखे हैं और कैकटस आज हरे हैं
आज राम को भूख लगी हैं, रावण के गोदाम भरे हैं।

उपरोक्त पंक्तियां क्या आज के राम की मजबूरी और रावण का ऐय्याशी स्वार्थपरता का पर्दा उठाने में सक्षम नहीं? राम से अभिप्राय निष्कपट जीवन व्यतीत करने तथा सदाचार संहिता को अपनाने वाले श्रेष्ठ पुरुष समाज से है। रावण तो रावण है और उसके वंश के लोगों में दिन दुगुनी रात चौगुनी प्रगति होती जा रही हैं। रावण-सम्प्रदाय की संख्या तीव्र-गति से राक्षस-जगत का निर्माण करने में संलग्न है और अधिक से अधिक संख्या में राम-मानस को अपनी दुनियां के दायरे में अपना प्रभाव दे रही है। अगर आधुनिक रावण का प्राचीन रावण से तुलनात्मक प्रभाव देखा जाय तो आधुनिक समाज में रावण - आधुनिक का ही शायद अधिक प्रभाव होगा।

समाज में समानता, सम्पन्नता, स्वतन्त्रता व भ्रातृत्व का बोलबाला हो तो सामान्य जनता का जनाक्रोश लाख कोशिश करने पर भी नहीं फटता। आधुनिक जनाक्रोश को सरकार अपनी प्रशासकीय शक्तियों के माध्यम से दबाने की एड़ी से चोटी तक की ताकत द्वारा चेष्टा करती हैं परन्तु उत्तर फिर भी नकारात्मक ही मिलता है। आज गुजरात में तो कल बिहार में, उत्तर प्रदेश में सामान्य जनाक्रोश अपनी देहलीज लगाए बैठा है। बुद्धिजीवी वर्ग के जनाक्रोश को प्रैस की स्वतन्त्रता के हनन के माध्यम से दूषित करके रावण संप्रदाय अपनी लालिमा को निखारने का असफल प्रयास करता है। मगर बिगड़ती स्थिति क्या काबू हो पाएगी?

आखिर इस आक्रोश लहर का भी तो कोई मौलिक कारण हो सकता हैं? मरता क्या न करता वाली कहावत आधुनिक समाज पर ठीक चरितार्थ होती हैं। फांसी के फन्दो को चूमने वाले आजादी के वीर जवानों में भी आक्रोश था। उनकी आक्रोश - प्रेरणा स्वच्छ, निर्मल और देशभक्ति की मौलिक आधारशिला पर थी। देश भक्तों ने गुलामी की जंजीरों को तोड़ फैंकने के लिए सारे देश में इस आक्रोश को विशेष लहर का रूप दे कर फैलाया। सामान्य जन साम्राज्यवादी विदेशी सत्ता को उखाड़ फेंकने को तत्पर था। क्योंकि सामाजिक चेतना, अवचेतना न रह कर विभिन्न रूपों "करो या मरो" "खून का बदला खून" सत्याग्रह, व आजाद हिन्द फौज के रूप में 'दिल्ली चलो' व 'इन्कलाब जिन्दाबाद' आदि अनेक प्रयत्नों में परिणत हो कर चिनगारी के रूप में सुलगी, फलीभूत होकर देश ने आजादी की सांस ली। अनगिनत देशभक्त इस लहर के बहाव में आए और हंसते -२ बली वेदी पर अपने

(शेषांश पृष्ठ १९ पर)

भारतीय संस्कृति के संरक्षक:-

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द

O कृष्ण गोपाल माथुर

साहस, संयम भरा व्यक्तित्व, अदम्य उत्साह, हिन्दू शुद्धिकरण की अपूर्व लगन, देशप्रेम, युवापीढ़ी के प्रेरणा स्रोत-इन गुणों की प्रतिमूर्ति अगर देखनी हो तो स्वामी श्रद्धानन्द हमारे सामने आज भी मानो खड़े दिखाई देते हैं। वास्तव में स्वामी जी राष्ट्र के सच्चे सपूत और भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल रत्न थे। उन्होंने मानव सेवा एवं देश धर्म पर प्राण न्योछावर कर दिये।

जन्म और जीवन परिवर्तन

स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म सन् १८५६ में जालन्धर के खत्री श्री नानकचन्द के घर हुआ था। पहले बालक श्रद्धानन्द का नाम बृहस्पति और बाद में मुन्शीराम रखा गया। पिता ने मुन्शीराम की शिक्षा–दीक्षा का प्रबन्ध अच्छा कर दिया था, परन्तु कुसंग के कारण उनमें कई दुर्गुण आ गये थे। जिसकी चिन्ता पिता को रात दिन रहा करती थी।

एक बार महर्षि दयानन्द सरस्वती बरेली में व्याख्यान द्वारा जनता को सचेत करने के निमित्त आये। संयोग उत्तम जानकर पिता नानकचन्द अपने पुत्र मुन्शीराम को महर्षि का व्याख्यान सुनाने को अपने साथ सभा मंडप में ले गये। महर्षि का व्याख्यान जादू था, जिसने दुराचरणरत मुन्शीराम के मन पर सीधा आसन जमा लिया। उसी समय से मानो मुन्शीराम का तन-मन एक दम बदल गया। अब उन्होंने संयम, नियम, ब्रह्मचर्य और सदाचार की महिमा पहचानी, और सत्पथ पर चलने की प्रतिज्ञा कर ली।

आगे चलकर मुन्शीराम ने अपने चरित्र को इतना महान बना लिया कि इंग्लैंड के प्रधानमन्त्री रैम्जे मैक्डानल्ड ने कहा कि 'यदि कोई कलाकार ईसा की मूर्ति बनाने के लिए जीवित नमूना चाहे या कोई चित्रकार सेंन्टपीटर के चित्र बनाने के निमित्त नमूना मांगे, तो मै मुन्शीराम जैसे भव्य मानव के दर्शन करने की उसे सलाह दूंगा।

ईसाई मिशनरी के कुचक्र की पहचान

एक दिन मुन्शीराम की पुत्री वेदकुमारी एक गीत गाती हुई स्कूल से घर आ रही थी, जिसकी एक पंक्ति थी–

'ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।'

पुत्री के मुख से यह गीत सुनकर मुन्शीराम जी स्तब्ध रह गये। उन्हें यह भांपते देर नहीं लगी कि- इतनी छोटी अवस्था में अबोध लड़कियों को ईसाई बनाने का कुचक्र इन मिशन-स्कूलों में चलाया जा रहा है। इस बुराई को सदा के लिए मिटाने का वे उपाय सोचने लगे। पास इतना धन नहीं था कि कोई कारगर उपाय कार्य में परिणित किया जा सके। किन्तु नरकेसरी मुन्शीराम जी में सत्प्रेरणा, अदम्य उत्साह और सत्यार्थ को मूर्तरूप देने की काफी क्षमता थी। इसी बल पर उन्होंने किसी प्रकार धन एकत्र करके हिन्दू कन्याओं को ईसाई कुचक्र से बचाने के लिए जालन्धर नगर में कन्या महाविद्यालय की और देहरादून नगर में कन्या गुरुकुल की स्थापना कर ही डाली।

संन्यास ग्रहण और अस्पृश्यता निवारण

देश के सच्चे सपूत मुन्शीराम जी ने सांसारिक झंझटों एवं गृहस्थाश्रम को छोड़ कर सन् १९१७ ई० में संन्यास ले लिया। अब वे सामाजिक तथा राजनैतिक व देशहित के कार्यों को मनोयोग पूर्वक करने के लिए पूर्णतः स्वतन्त्र हो गये। उन्होंने देखा कि जातिगत कुरीतियों में जकड़ा हिन्दू समाज दिनोंदिन ह्रास को प्राप्त हो रहा है। इस में खास तौर पर जाति-प्रथा की रुकावट है। अतः सबसे प्रथम आपने अपनी पुत्री तथा दोनों पुत्रों का अन्तर्जातीय सुशिक्षित लड़के एवं लड़कियों के साथ वेद विधि से विवाह किया।

अस्पृश्यता की कुभावना को लोगों के दिलों से निकाल देने के विचार से स्वामी जी स्थान-स्थान पर कई भाषण दिये। भला यह कितने अचम्भे की बात है कि एक मानव दूसरे मानव को छूने में दोष समझें। जबकि भगवान की सृष्टि में प्राणी मात्र समान श्रेणी रखते हैं। इन्ही तथ्यों से परिपूर्ण उनके ओजस्वी एवं आकर्षक भाषणों का जनता पर काफी प्रभाव पड़ा। भाषण ही नहीं; स्वामीजी ने इस विषय पर अनेक लेख भी लिखें। उन्होंने गुरुकुल के नाम से कांगड़ी में जो स्थापना की थी उसके द्वारा संसार की सेवा का कार्य उनके समय से ही होने लगा था। सन् १९१८ ई० में गढ़वाल परगना भयंकर अकाल की चपेट मे आ गया था। वहाँ के लोगों की हर सम्भव उपयों से व्यथा मिटाने का स्वामीजी ने संकल्प लिया और धनसंग्रह करके उनकी सहायता की।

हिन्दी प्रेम और राजनीति में प्रवेश

सारे पंजाब प्रान्त में व्याप्त पंजाबी और उर्दू भाषा के रहते हुए भी स्वामी श्रद्धानन्द ने हिन्दी भाषा की सरलता तथा

सुबोधता वहाँ के निवासियों को समझा कर हिन्दी के प्रति श्रद्धा जागृत करवाई । इसके लिए सर्वप्रथम आपने ही यह उदाहरण पेश किया कि अपने सर्वप्रिय समाचारपत्र "सद्धर्म प्रचारक" को उर्दू छोड़कर हिन्दी में प्रकाशित करना आरम्भ किया । इस कार्य में उनको आर्थिक हानि भी उठानी पड़ी । परन्तु उस घाटे को अपनी वकालत की आमदनी से पूरा किया ।

राजनीतिक क्षेत्र में काम करने के हेतु सत्याग्रह समिति बनी । उसके प्रधान महात्मा गांधी और उपप्रधान स्वामी श्रद्धानन्द जी थे । सन् १६१६ में पंजाब में मार्शल ला लागू हुआ । इस ला के कारण पंजाब की सारी जनता के सामने जो व्यथा-व्याकुलता उत्पन्न हो गई थी, उसको दूर करने के लिए स्वामी जी पंजाब पहुंचे और अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन कराया । स्वागताध्यक्ष के रूप में आपने हिन्दी में भाषण दिया ।

इधर जैसा कि उनका ध्यान था दलितोद्धार के कार्य को कांग्रेस के द्वारा पूरा न होता देखकर दिल्ली में अखिल भारतीय दलितोद्धार सभा की स्थापना कर कांग्रेस को इन शब्दों में त्यागपत्र दे दिया कि चरित्रगठन और अस्पृश्यता निवारण द्वारा राष्ट्रीय ऐक्य के बिना कांग्रेस जैसी राजनीतिक संस्थाएँ कुछ नहीं कर सकेगी । मैं अपनी शक्ति इस कार्य में लगाना चाहता हूँ ।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हरेक काम में अपने अदम्य उत्साह, शालीनता और निर्भीकता का परिचय दिया । ३० मार्च १६१६ में दिल्ली नगर में जब वे अंग्रेजों के रोलट-एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह आन्दोलन का साहसपूर्वक नेतृत्व कर रहे थे, तब सेना के अस्त्र-शस्त्रधारी सिपाहियों ने आकर उनको चारो ओर से घेर लिया । किन्तु स्वामी जी ने बलपूर्वक उन्हें पीछे धकेलते हुए कहा —— अगर हिम्मत हो तो इस श्रद्धानन्द की खुली छाती में गोली मारो । तेजपुंज के खुले सीने देखकर सभी सेनानी सहम गये । उसके बाद ही १४ अप्रैल १६१६ ई० को मुस्लिम धर्म की प्रसिद्ध जामामस्जिद में खड़े हो कर स्वामी जी ने वेदमन्त्रों का गम्भीर उच्चराण करते हुए उपदेश दिया । यह इतिहास में पहली बात थी ।

जनसेवा और शुद्धि आन्दोलन

सन् १६१८ के मार्च मास में सन्यास लेने के बाद जनता जनार्दन को सम्बोधित करते हुए "श्रद्धानन्द" नाम धारणकर स्वामी जी ने कहा था कि मेरा सारा जीवन श्रद्धा पर आधारित रहा है । इसी श्रद्धा के साथ मैं आत्मविश्वास, उत्साह और निःस्वार्थभाव से मानव सेवा में तत्पर रहूँगा ।

अतः सबसे प्रथम स्वामी जी ने अपना प्रमुख उद्देश्य यह बनाया कि गरीब, दलित, निःसहाय, अभावग्रस्त लोगों को फुसलाकर या धन-धान्य का लोभ दिखाकर-जिन्हे हिन्दू से मुसलमान या विधर्मी बना दिया गया है, उन्हें शुद्ध कर वापस हिन्दू समाज में शामिल करना । कार्य बड़ा दुस्तर था, और यवन समाज से व्यर्थ ही वैर विरोध का सामना करना था । किन्तु इसकी तनिक भी परवाह न करते हुए स्वामी जी ने प्रत्यक्ष देखा-सुना कि पिजांरे, पिढारे लोग पहले हिन्दू थे इन्हें यवन शासनकाल में जबर्दस्ती मुसलमान बना लिया था इनके कोटुम्बिक रीति-रिवाज आज भो हिन्दुओं से मिलते जुलते है । ऐसे कई बेबस दरिद्र हिन्दू लोगों को मुस्लिम बनाकर एक जातिवृद्धि की लगन पूरी की गई थी । इधर हिन्दुओं की संस्था कम होती गई । और यही नहीं, उधर इसाई मिशनरियाँ भी विपुल धन खर्च करके हिन्दू लोगों को आज भी ईसाई बनाने में दत्तचित्त है । इसका परिणाम स्पष्ट है कि हिन्दू जाति सिमिट कर मुट्ठी भर रह जायेगी । और आगे की पीढ़ी पर तथा हिन्दू संस्कृति पर धीरे-धीरे इसका क्या कैसा कुप्रभाव पड़ेगा——यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है ।

यह सब बातें स्वामी श्रद्धानन्द जैसे आर्य हिन्दू प्रेमी संस्कृति के हामी, समाजवेत्ता, जनहितकारी, राजनीति विशारद कर्त्तव्य परायण युवक के हृदय में थी । अतः उन्होंने उत्साहपूर्वक हिन्दू शुद्धि आन्दोलन का कार्य जोरों से छेड़ दिया । देश, धर्म, तन-मन, आत्मा में जहां कहीं भी उनको जनता में मलिनता दिखाई पड़ी, उसका शुद्धि द्वारा निराकरण किया । बड़े पैमाने पर इसका प्रचार करने के निमित्त उन्होंने 'अखिल भारतीय शुद्धि सभा' की स्थापना की और हजारों की संख्या में भूखे, बिछुड़े, त्यागे हुए, दलित, पतित जबरन विधर्मी बनें भाईयों को प्रेम से गले लगाया, उन्हें सम्मान के साथ हिन्दू बनाया । उनके जीविका चलाने के मार्ग खोले । रूढ़िवादियों की तनिक भी परवाह नहीं की । यह उनके साहस, दृढ़संकल्प, कर्मनिष्ठा, जातिसेवा और हिन्दू जाति के प्रति कर्त्तव्य परायण होने का परिणाम था । इन कार्यों की उस समय सारे भारत में धूम मच गई और सभी जन शुद्धि के महत्व को भली भांति समझने लगे थे । आज भी हिन्दू के हितार्थ यह शुद्धिक्रम निरन्तर चल रहा है — जो सभी दृष्टियों से परम प्रशंसनीय, अनुकरणीय और लाभप्रद है ।

अवसान

परम श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने शानदार जीवन में अनेक क्रान्तिकारी और जनोपयोगी कार्यों वा अनु-

(शेषांश पृष्ट १६ पर)

सेठजी को बचाओ

चंडीगढ : हरयाणा राज्य विधान सभा के एक असर-रसूख रखने वाले कांग्रेसी विधायक श्री किशोरी लाल और उनके परिवार के दूसरे लोग कालका के एक धन्नासेठ को बचाने की कोशिश में लगे हुए हैं। यह कोशिश हरयाणा में ऊंचे स्तर पर की जा रही है। यही नहीं नयी दिल्ली में भी सेठ को पाक-साफ घोषित कर देने की कोशिश चल रही है, जिनके घर से आयकर अधिकारियों ने १० लाख काले रुपए जो छिपा कर रखे हुए थे, बरामद किया था। इस काले पैसे के अलावा २२ सितम्बर के छापे में तस्करी की कुछ कीमती चीजें, कुछ गैरकानूनी दस्तावेज और छुपा कर रखा गया चावल और सीमेंट भी बरामद हुआ था।

लाखों का बेहिसाबी माल

कहा जाता है कि श्री किशोरी लाल का मुख्य मन्त्री श्री बन्सीलाल से गहरा सम्बन्ध है और वह उनके एक प्रबल समर्थक हैं। छापे के दौरान जो उनके कारोबर के विभिन्न स्थानों पर दो दिन तक चलता रहा था, कहा जाता है कि आयकर अधिकारियों ने १,३०,००० रुपये नकदी और साढ़े चार लाख रुपए के सोने के आभूषणों के अलावा २ लाख रुपए से ज्यादा के विदेशी माल भी जब्त किये थे।

इस माल में विदेशी नंगी फिल्में और एक डोइज कार भी थी। अचानक मारे गये छापे के दौरान आयकर अधिकारियों ने इस धन्नासेठ के दिल्ली, चंडीगढ, कालका, अम्बाला, फरीदाबाद और करनाल के ३४ दफ्तरों की तलाशी ली थी। ये धन्नासेठ सीमेंट का कारोबार तो करते ही हैं साथ ही कई चावल और इस्पात मिलों के भी मालिक हैं। कई जगहों में इनके औजार बनाने के भी कारखाने हैं। जब्त चावल की मात्रा ४४७५ क्विंटल थी और ६१६ बेहिसाब सीमेंट के बोरे भी जब्त किये थे।

छापे के दौरान आयकर अधिकारियों ने एक रोलिंग मिल की तलाशी ली, जहां ५० लाख रुपए का माल मिला। एक पाइप फैक्ट्री में १ लाख ८० हजार रुपए का बेहिसाब माल मिला।

गैर कानूनी दस्तावेज, हिसाब-किताब के खाते और ३ लाख रुपये के बोगस ऋण-पत्र भी जब्त किये। बाद में एक किलोग्राम सोना, जवाहरात और ३०,५००० रु० रुपए के दूसरे खुशनुमा विदेशी माल भी उनके हाथ लगे। सेठ जी की कालका, चंडीगढ़, अम्बाला और करनाल की नौ तिजोरियों से बेहिसाब नकदी रुपए मिले।

सबसे बड़ा शिकार

हालांकि सेठ जी विभिन्न के दफ्तरों पर पड़े छापों को लगभग दो महीने गुजर गये, मगर इस मामले की जांच-पड़ताल के बारे में अब तक कहां तक क्या हुआ है, किसी को कुछ पता नहीं। जांच-पड़ताल में देर की बजह हरयाणा में कांग्रेस के एक प्रभावशाली विधायक बताये जाते हैं। कहा जाता हैं कि देर जानबूझकर की जा रही है क्योंकि राज्य के कुछ ओहदेदार लोग चाहते हैं कि सेठ जी को मुसीबत में फंसने से बचा लिया जाये। इसके लिए नयी दिल्ली तक की दौड़ धूप की जा रही है।

तस्करों, जमाखोरों तथा समाज-विरोधियों के खिलाफ भारत-संस्कार की कार्रवायी शुरू होने के बाद हरयाणा में सितम्बर में पड़ा यह पहला छापा था।

आयकर अधिकारियों के मुताबिक हरयाणा के छापे का यह शिकार इतना ही बड़ा था कि जांच-पड़ताल पूरी करने में कुछ महीने लग जायेंगे – सेठ जी के खिलाफ कोई मामला चलाने में तो और भी देर लग सकती है। उनको खुद भरोसा नहीं हैं कि जांच-पड़ताल कब समाप्त होगी और मामला अदालत में कब पेश होगा। उनका कहना है कि उनको सभी दस्तावेजों और हिसाब किताब के खातों की जांच करनी पड़ेगी। बेहिसाब नकदी-रुपए और विदेशी माल किन-किन स्रोतों से आये उनकी छानबीन करनी पड़ेगी इसलिए यह काम आसान नहीं है।

बहिष्कार नहीं

हालांकि राज्य के मुख्यमन्त्री श्री बन्सीलाल तथा दूसरे राज्य नेताओं ने तस्करों, जमाखोरों और काला धन-वालों के खिलाफ केन्द्रीय सरकार की कार्यवाई की सराहना तथा 'मीसा' के तहत गिरफ्तार लोगों की निन्दा की इन्होंने इस कांग्रेसी विधायक के खिलाफ एक शब्द भी नहीं कहा जिसके घरों और दफ्तरों में आयकर अधिकारियों ने तस्करी का माल, बेहिसाबी नकदी रुपये, चावल, सोना और सोने के गहने जब्त किये थे। जमाखोरों, तस्करों, कर मारने वालों और काला पैसे वालों के सामाजिक बहिष्कार की बात तो मुख्यमन्त्री ने बार-बार कही है लेकिन अब तक उक्त कांग्रेसी विधायक के सामाजिक बहिस्कार के बारे में एक बात भी नहीं कही है। यहां तक कि उन्होंने खुद भी किशोरी लाल को सामाजिक बहिष्कार नहीं किया है।

(साभार ब्लिट्ज ८ दिसम्बर,७४)

अनाथ हिन्दी और आकाशवाणी

कोई समय था, जब महात्मा गांधी तक को हिन्दी-हिन्दुस्तानी के प्रसंग में विरोध का सामना करना पड़ा था क्योंकि तब राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन जीवित थे। कोई समय था जब मौलाना आजाद तक को हिन्दी पर अनर्गल प्रहार के लिये लज्जित किया गया था क्योंकि तब राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जीवित थे। कोई समय था जब डा० गोपाल रेड्डी को हिन्दी की मूल प्रकृति से भिन्न रूप देने के कार्य से विरत किया गया था क्योंकि तब दिनकर और सेठ गोविन्द दास जीवित थे ! पर आज ...? आज हिन्दी अनाथ हो चुकी है।

आकाशवाणी 'सन्धि' या 'समझौता' से 'करार' शब्द अधिक सरल मानती है। 'बीमार मिल' का प्रयोग अंग्रेजी की शुद्ध दासता मात्र है। और, 'बर्फपात' का प्रयोग तो शत-प्रतिशत अद्भुत है ही। पता नहीं, 'हिमपात' कहने में कौन-सा वर्फानी तूफान आ पड़ेगा ? तुर्रा यह है कि हिन्दी के सरलीकरण पर नित्य दस भाषण होते हैं। पण्डित कमलापति त्रिपाठी तक के भाषण की भाषा पर प्रधानमंत्री को आपत्ति है ! क्या 'आल इंडिया रेडियो' के उर्दू समाचार सरल भाषा में आते है ? मैं निश्चित रूप से यह कह सकता हू कि 'रेडियो पाकिस्तान' से उर्दू-समाचार अधिक सरल व अधिक सहज भाषा में प्रसारित किये जाते है।

हिन्दी राजनीति की आखेट-स्थली बन गई है। जिसने कभी इस भाषा को सीखने का कष्ट नहीं उठाया वह भी इस पर 'सम्मति' देने का जन्मसिद्ध अधिकार रखता है ! जो चाहे जैसे विराम चिन्ह अपनाए जैसी भाषा लिखे, जैसा उच्चारण करे ! आकाशवाणी के 'स्पाट लाइट' जैसे कार्यक्रमों में अधिकारियों की भाषा तो 'पचास प्रतिशत अंग्रेजी और पचास प्रतिशत हिन्दी' होती है। कई कार्यक्रमों का नाम ही अंग्रेजी में हैं ! क्या इतिहास में किसी भाषा को इतनी बेदर्दी से तोड़ा-मरोड़ा और दाबा-दबाया गया है ? इस प्रश्न का उत्तर मैं पाठकों पर छोड़ना हूं।

आकाशवाणी का जालन्धर केन्द्र गुटबन्दी का शिकार:—

आकाशवाणी केन्द्र या सरकारी वेश्यालय

जालन्धर स्थित आकाशवाणी का केन्द्र गुटवन्दी का शिकार है। राजनीतिक दृष्टि से स्वयं को शक्तिशाली समझने वाला गुट अपनी मनमानी करता है तथा इस केन्द्र को अपनी सम्पत्ति माने हुए है।

इस गुट की हमेशा यह कोशिश रही है कि केन्द्र निदेशक कोई हो उसके सारे अधिकार इस गुट को प्रयोग करने हैं। इसलिए यह गुट स्वयं को "सुपर निदेशक" के रूप में मानता है। केन्द्र का जो कर्मचारी इस गुट की बात नहीं मानता उसके खिलाफ तरह तरह के विभागीय मामले बना दिये जाते हैं और केन्द्र निदेशक लाचार होकर यह तमाशा देखता रहता है। इतना ही नहीं यह गुट अपने विरोधियों को पीटना भी अपनी गतिविधियों का अनिवार्य अंग मानता है।

इन दिनों केन्द्र के इन्जिनीयरों के साथ इस गुट का शीत युद्ध चल रहा है। इन्जिनीयरों को दूसरे दर्जे का आकाशवाणी कर्मचारी समझा जाने लगा है। उनके खिलाफ इस गुट की जोरदार कार्रवाईयों का ही नतीजा है कि केन्द्र के इन्जीनीयरों को सहयोग नहीं मिल रहा। उन पर तरह-२ के मामले बनाए जाते हैं।

केन्द्र के हरिजन कर्मचारी भी इस गुट के कारनामों के शिकार हैं। हाल ही में स्वर्ण सिंह नामक एक हरिजन कर्मचारी की पदोन्नति को रुकवाने के लिए इस गुट ने एक षड़यन्त्र रचा और उसे अपदस्थ करवा दिया। स्वयं केन्द्र निदेशक ने यह माना कि वे इस मामले में लाचार हैं। बाद में इस कर्मचारी को नौकरी पर ले लिया गया। इसी बीच इसकी पत्नी का जालन्धर के एक समाचार पत्र में पत्र प्रकाशित हुआ जिसमें उसने लिखा था कि उसके पति को वेतन नहीं मिलने के कारण वह सारा परिवार परेशान है। इस पत्र के प्रकाशन के बाद स्वर्ण सिंह की वार्षिक वेतन वृद्धि रोक दी गई।

कार्यक्रमों में घोटाला

केन्द्र के कार्यक्रमों का स्तर तो गिर ही रहा है, इस मामले में पक्षपात भी बरता जाता है। कुछ लोग कार्यक्रम देने के अपने अधिकार का प्रयोग अपनी "सैक्स भूख" को पूरा करने में बरतते हैं। केन्द्र के ही एक कर्मचारी ने इस

(शेषांष पृष्ठ १६ पर)

जनता, राजसत्ता और सेना

रामसरण जोशी
(गतांक से आगे)

भारत पर तेजी से अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिये अंग्रेजों ने सेना में तेजी से वृद्धि कर ली थी।

		यूरोपियन	भारतीय
बंगाल	आर्मी-	२१,०००	१३७,०००
मद्रास	"	८,०००	४६,०००
बम्बई	"	६,०००	४५,०००
स्थाई टुकड़ियां		×	४०,०००
मिलिट्री पुलिस		×	३६,०००

इससे भारतीय जनता पर करों के रूप में काफी बोझ पड़ा। जनता की आर्थिक स्थिति में तेजी से गिरावट आती जा रही थी। भारतीय ग्रामों की जो आत्मनिर्भर आर्थिक स्थिति थी उसका स्वरूप तेजी से खत्म होने लगा क्योंकि अंग्रेजों ने यहाँ के उद्योगों को चोपट करना शुरु कर दिया था। उसके घेरेलू उद्योग मंद होने लगे। यूरोप में बना माल हम पर बलात लादा जाने लगा। १८१८-१८३६ के मध्य ग्रेट ब्रिटेन से जो सूत भारत को निर्यात किया जाता था, वह परिणाम में ५२०० गुना बढ़ गया था। १८२४ में अंग्रेजों ने दस लाख गज मलमल भारत को भेजी, जबकि १८३० में यह संख्या ६ करोड़ ४० लाख गज तक पहुंच गई। १८४६-१८५२ के बीच अंग्रेजी शासको के प्रशासकों के प्रशासनिक व्यय में १२,१४,२८४ पौंड की वृद्धि हुई। इतना ही नहीं १ करोड़ ६८ लाख पौंड निर्माण कार्यों पर खर्च किये गये। यूरोपीय सैनिकों की तादाद भारत में बढ़ा दी गई। उसका खर्चा भी भारत को उठाना पड़ा। १८५७ से पूर्व लगभग ८००० यूरोपीय सैनिक अफसर थे। पैदल सेना में छोटे लेफ्टिनेण्टो को १,०८०, लेफ्टिनेण्टो को १,३४४, कप्तानों को २,२२६, मैजरों को ,३,८१० फ्लेटिनेण्ट कर्नलों को ५,५२० तथा कर्नलो को ७६८० डालर वार्षिक वेतन मिलता था। इससे सिर्फ यह अन्दाज लगाया जा सकता है कि शासक वर्ग किस प्रकार अपने को राजसत्ता में बनाये रखने के लिये सेना का इस्तेमाल करता है तथा जनता का शोषण करता है। 'लन्दन टाइम्स' के संवाददाता श्री विलियम रस्सल ने १८५८ में भारत की स्थिति के सम्बन्ध में लिखा था "ऐसी सैनिक कम्पनियां भी हैं, जिनमें साधारण सैनिकों के पास हजारों पोण्ड का माल मौजूद है। मैंने सुना है कि एक आदमी ने बड़े आत्मसन्तोष से अपने अफसर के सामने प्रस्ताव रखा कि अगर आप कप्तान की पदवी खरीद लेना चाहें, तो मैं जितना भी धन कहेंगे, ऋण के रूप में आप को नजर कर सकता हूँ। अन्य सैनिक बड़ी-बड़ी रकमें अपने मित्रों को भेज चुके हैं। रस्सेल आगे लिखता है 'जिस साधारण सैनिक ने सोने की मोहरों और रुपयों से भरी पेटी बांध रखी हो, उसे पेटी के वजन से ही यह आश्वासन मिलता रहता है कि उसका स्वप्न साकार हो सकता है।"

इस प्रासंगिक उदाहरण से अर्थ सिर्फ यह दर्शाना है कि जनता, राजसत्ता और सेना का कितना गहरा सम्बन्ध है। जब तक कि हम इन तीनों पक्षों के पारस्परिक सम्बन्धों को सही परिप्रेक्ष्य में नहीं समझते और उनका वैज्ञानिक आधार पर विश्लेषण से इन्कार करते रहेंगे, तब तक किसी सही नतीजे पर नहीं पहुंचा जा सकता। इसको समय एवं क्षेत्र की सीमाओं में बांध कर नहीं देखा जाना चाहिये। प्रायः यह दलील दी जाती है कि सेना का कार्य सिर्फ हुक्म बजाना होता है। यह सही भी है। परन्तु किसका? आप कहेंगे, राजसत्ता का। यह भी सही है। फिर सवाल उठेगा राजसत्ता सेना का इस्तेमाल जनता के विरुद्ध क्यों करती है? (जबकि सेना में जनता ही के लोग होते हैं) हमने आंकड़ों से देखा कि अंग्रेजी राजसत्ता ने एक तरफ भारतीय सेना का भारतीयकरण कर यह दिखाने की चेष्टा की कि वह स्थानीय जनता का कितना ध्यान रखती है, परन्तु दूसरी तरफ उसी सेना की तोपों, बन्दुकों का मुंह उसकी मूल जननी (जनता) की तरफ कर दिया गया।

यह दौर १८५७ से लेकर १९४७ तक चलता रहा। राजसत्ता के विरुद्ध जनता द्वारा जितने भी आन्दोलन किये गये, सेना से कुचलवा दिये गये। जैसा पहले कहा जा चुका है कि भारतीय सेना का गठन "फूट डालो, राज करो" के सिद्धान्त के आधार पर किया गया था। इस सिद्धांत का सफल परीक्षण १८५७ में हुआ जब पंजाब की सिख सेना ने आजादी के दीवानों को कुचल दिया। मेरठ में मंगल पाण्डे के नेतृत्व में सेना की एक टुकड़ी आजादी के लिए बगावत करती है, वही भारतीय सेना की पंजाब टुकड़ी उसे दबा देती है। आखिर ऐसा क्यों? स्पष्ट कारण राज-सत्ता में जनविरोधी वर्ग का होना। अतः विवेक की कसौटी पर कसने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सेना का कार्य सिर्फ सीमाओं की रक्षा करना ही नहीं, बल्कि शासक वर्ग द्वारा लादे गए युद्धों में भाग लेना और जन विरोधी राजसत्ता के विरुद्ध जन-बगावत को कुचलना भी है। इन लक्ष्यों की

प्राप्ति के लिए सेना को जनता से दूर और विभाजित रखना राजसत्ता का परम कर्त्तव्य बन जाता है। इस कर्त्तव्य को वैज्ञानिक परिधान में ढका जाता है। आपको आश्चर्य होगा कि अंग्रेज मुस्लिम सैनिक को गाय का गोश्त और हिन्दु सैनिक को मटन देते थे। दूसरे विश्व युद्ध की एक घटना का वर्णन करते समय स्व० मानसिंह (जयपुर के भू० पू० राजा) ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है कि खारतोम में एक भयंकर गलती होते–होते बची। वायरलैस की गलत सूचना के आधार पर पता चला कि नवाब भोपाल की सेना आ रही है। स्वागत में गाय का गोश्त पकाया गया। क्योंकि नवाब भोपाल सेना में लगभग सभी मुसलमान थे। बीफ (गाय का गोश्त) पकने पर पता चला कि आने वाली रियासती सेना भोपाल की नहीं बल्कि उदयपुर से है। शीघ्र मटन तैयार कराया गया। इस प्रकार सैनिक विद्रोह को टाला गया। इस उदाहरण से पता चलता है कि अंग्रेजों ने भारतीय सेना को किस आधार पर गठित किया था।

अंग्रेजों और स्थानीय एजेन्टों ने भारत का विभाजन कर दिया। देश के विभाजन के साथ-साथ सेना का भी विभाजन हुआ। यह विभाजन साम्राज्यवादी हितों को भारत एवं पाकिस्तान में सुरक्षित रखने की दृष्टि से किया गया, मगर धर्म–नस्ल की ओट लेकर। इसका परिणाम यह हुआ सेना का बटवारा भी धर्म के आधार पर हुआ। बटवारे के समझौते के नियम के अनुसार साम्प्रदायिक आधार पर सेना और उसकी टुकड़ियों का बंटवारा हुआ। १६४८ तक लगमग सभी अंग्रेजी सैनिक भारत से चले गए।

अब भारतीय सेना के गठन का कार्य नए सिरे से शुरू हुआ। भारत, नेपाल एवं ब्रिटेन के त्रीपक्षीय समझौते के अनुसार १० गोरखा रेजीमेंटों में से ६ भारत और चार ब्रिटेन के पास रही। यह विभाजन ठीक इस प्रकार हुआ गोया कि सेना क्रय-विक्रय की वस्तु है।

रियासती सेनाओं का विलय

अप्रैल १६७४ में भारतीय देशी रियासतीय सेनाओं का प्रशासन एवं नियंत्रण भी भारतीय सेना को सौंप दिया गया हालांकि इसको लेकर भारत सरकार और सामन्ती घरानों में काफी तनाव रहा। देशी रियासतों के विलय को लेकर मानसिंह ने दुःख व्यक्त करते हुए लिखा है —

"भारतीय सेना में विलय के कारण आज रियासती सेनाओं का नामो-निशान मिट गया है। यह कार्य भी हमारे प्रथम सेनाध्यक्ष श्री करिअप्पा के दौरान होना था, जो कि वास्तव में एक दुःख भरी कहानी है"। कूच बिहार के भू० पू० नरेश कहते हैं—भारत के आजाद होने के शीघ्र ही बाद यह फैसला ले लिया गया कि देशी रियासतों ... फलस्वरूप शीघ्र ही अपरिवर्तनीय ढंग से उसका एक अलग अस्तित्व नष्ट कर दिया गया। इन दो उल्लेखों से भारतीय सामन्तों की जन-विरोधी प्रवृत्ति का पता चलता है। अपनी प्रत्यक्ष सत्ता जाने का कितना सदमा उन्हें पहुंचा है, इन उल्लेखों से अन्दाजा लगाया जा सकता है।

आजाद हिन्द सैनिकों से सौतेला व्यवहार

इस कार्य के शीघ्र ही बाद भारतीय सेना के पुनर्गठन की योजना शुरू हुई। सेना का प्रधान सेनापति राष्ट्रपति को बनाया गया। नए प्रशिक्षण केन्द्र खोले गए तथा शस्त्र उत्पादन कारखाने आरम्भ किये गए।

यहाँ एक घटना का उल्लेख करना आवश्यक समझता हूँ। १६४७ के पश्चात् नेता जी के नेतृत्व में गठित 'आजाद हिन्द सेना" के जवानों को भारतीय सेना में विलय के सवाल पर सेनाधिकारियों और सरकार के बीच काफी खींचातानी रही।

भू० पू० रक्षा सचिव श्री पी० वी० राव लिखते हैं—"आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को वापस (भारतीय) सेना में लेने के लिए काफी दबाव पड़ रहा था। परन्तु सेना मुख्यालय उन्हें लेने के विरुद्ध था जबकि सुरक्षा मंत्रालय सहमत था। इससे पूर्व कि कोई अन्तिम निर्णय लिया जाए हम तीन— मन्त्रालय की तरफ से मैं, मेजर जनरल श्री गणेय, जनरल चौधरी प्रधानमन्त्री श्री नेहरू से मिले। हमने उन्हें अपने विचार से अवगत कराया और कहा कि आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को वापस सेना में न लिया जाए। अन्य ढंग से क्षति पूर्ति कर दी जाये। कुछ चुप्पी के पश्चात् श्री नेहरु ने कहा — "मैं आप लोगों के तर्कों से सहमत नहीं हूँ। परन्तु यह मानता हूँ कि आजाद हिन्द फौज के लोग सेना में न लिए जायें। जानते हो क्यों? मैं नहीं चाहता कि राजनीति सेना में आये। यदि सेना में राजनीति आती है तो वह दुखःद दिन होगा।(वी.राव लेख ८ अप्रैल७३)

अब फिर वही प्रश्न खड़ा होता है कि जब सामंती सेनाओं को मिला लिया गया तो उन्हें क्यों बाहर रखा गया। सामंती वर्ग और नए शासक वर्ग, जिसकी घोषित नीति समाजवाद व लोकतन्त्रवाद में थी, में तो कोई समानता न थी। फिर नए शासक वर्ग जिसकी घोषित नीति समाजवाद ने सामंती वर्ग को क्या रियायत दी? आजाद हिन्द फौज के सैनिकों का सिर्फ यही राजनैतिक अपराध था कि उन्होंने मातृभूमि की मुक्ति के लिए बगावत हेतु बलिदान दिये। दूसरी तरफ सामंती घरानों की फौज भारतीय जनता पर गोली चला कर भारत की आजादी पर पहरा बैठाती रही। साम्राज्यवादी राजनैतिक षड्यंत्र का मोहरा बन सामंत और उनको फौज अपनी ही जनता के अस्तित्व को रौंदती

(शेषांश पृष्ठ १४ पर)

पूंजीवादी व्यवस्था में पैसा ही भगवान

O जयदेव अनल

अभी मुश्किल से एक दो वर्ष ही बीते होंगे- राजस्थान के प्रमुख समाचार पत्रों में एक बड़ी रोचक पर सनसनी खेज घटना को प्रकाशित हुए। घटना का सारांश इस प्रकार हैं:-

एक गुण्डा किसी पान वाले की दूकान पर गया। पनवाड़ी से उसने एक सिगरेट मांग कर सुलगाई और कश लेने लगा। जब सिगरट की कीमत चुकाने का वक्त आया तो १२ नये पैसे निकाल कर देने लगा। पनवाड़ी ने कहा कि एक सिगरेट की कीमत १२ पैसे नहीं १३ पैसे है। उन'दादा' महाशय को पान वाले की यह बात चुभ गई। बस फिर क्या था उन्होंने जेब से पिस्तोल निकाल ली और निशाना साध कर ट्रैगर दबा दिया। गोली सही निशाने पर लगी और गोली लगने के कुछ ही देर बाद पनवाड़ी महोदय अस्पताल में भगवान के प्यारे हो गये।

सचमुच कितना सस्ता हो गया है आज इन्सान! केवल नये एक पैसे के कारण उसको अपनी जान गँवानी पड़ सकती है। जिसके पास आज पैसा है वह सौ खून करके भी न्याय की गिरफ्त से बचनिकलता है और बदले में निर्दोष, बेसहारा गरीब इन्सान जेल के सीकचों में चक्की पीसता रहता है। यही है आज की व्यवस्था - चारों तरफ एक लूट सी मची हुई है। हर-एक आदमी के सामने आज एक ही उद्देश्य है बस पैसा कमाना। इस क्षुद्र उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह चोर, डाकू, शोषणकर्त्ता और यहां तक कि कातिल भी बन जाता है। पैसे के लिए बेटा बाप को मौत के घाट उतार सकता है, भाई-भाई का गला घोट सकता है और पत्नी पति की पीठ में छुरा घोंप सकती है। पैसे पर आधारित पूंजीवादी व्यवस्था में सारे रिश्ते-नाते तभी तक बरकरार रहते हैं, जब तक कि परस्पर खर्च करने के लिए जेब में पैसा हो। इधर लक्ष्मी ने मुंह मोड़ा और उधर सब बन्धु बान्धव रुष्ट हो जाते हैं।

पूंजीवादी, व्यवस्था में आज हर वस्तु बिकाऊ (For Sale) होकर रह गयी है। शिक्षा बिकती है, न्याय बिकता है, चिकित्सा बिकती है,। एक निर्धन का बेटा शिक्षा पाना तो दूर की बात है समुचित चिकित्सा के अभाव में तड़प-तड़प कर दम तोड़ देता है। उस निर्धन के पास अपने मासूम मृत बालक के अन्तिम संस्कार के लिए एक कफ़न खरीद सकने लायक भी पैसा नहीं होता, तो दूसरी ओर तनिक से जुकाम की शिकायत होने पर शहर के दस बड़े-२ डाक्टर पूंजीपति के बंगले पर पहुँच जाते हैं।

जिस व्यवस्था में हम सांस ले रहे हैं वह व्यवस्था सचमुच पैसे पर कुण्डली मार कर बैठे रहने वाले सांपों की बनायी हुई है। रात में शराब के नशे में धुत होकर वेश्यागमन करने वाले तथाकथित रईस पैसे के बल पर दिन के उजाले में "इज्जतदार" बन कर जीते हैं। वस्त्रों के अभाव में अपनी इज्जत को ढाप सकने में असमर्थ भिखारिन को निर्लज्ज और कुलटा आदि नाम दिया जाता है जबकि आलीशान होटलों और 'थियटरों' में 'कैबरे' करने वाली फूहड़ औरतें महारानियों की भांति जीवन बिता रही हैं। उनके आगे-पीछे सस्ती श्रेणी के पत्रकारों तथा विज्ञापन दाताओं की भीड़ जमा रहती है। यदि वे 'तफरीह' के लिए अथवा 'शांपिंग के बहाने कभी बाजार में निकल पड़े तो उनके सैकड़ों 'फैन' उन्हें घेर कर खड़े हो जाते हैं। उनका एक हल्का सा दीदार कर लेने मात्र से ही लोग अपने को धन्य समझते हैं। वास्तव में यही वह व्यवस्था है जिसमें —

चांदी के टुकड़ों के बदले, ईमान खरीदे जाते हैं।
शैतानों की इस दुनियां में इन्सान खरीदे जाते हैं।
एक रोटी देकर अबला के अरमान खरीदे जाते हैं।
इस बस्ती में कुछ पैसों से भगवान खरीदे जाते हैं॥

पत्थर की मूर्तियों को दूध से स्नान कराने वाली किसी सेठानी से यदि कहा जाय कि इस दूध को तू पत्थर पर न उंडेल कर उस बच्चे को पिला दे जो मन्दिर की सीढ़ियों के नीचे कब से भूखा छटपटा रहा है, तो जरूर वह 'परमेश्वर की पुजारिन' ऐसा कहने वाले को नास्तिक अथवा विधर्मी करार दे देगी। जहां तक मै मानता हूं, पूंजीपतियों का भगवान भी पैसा ही होता है। कई बार कुछ ऐसी भी घटनायें सामने आयी हैं, जबकि मन्दिर के पुजारियों तथा उसमें कैद भगवानों के आगे सिर रगड़ने वालों ने ही रात के अन्धेरों में उन पत्थर दिल भगवानों को तस्करों के हाथों बेच कर पैसा कमाया है।

जब इस पूंजीवादी व्यवस्था को बदलने की बात की जाती है तो कुछ दकियानूसी विचार धारा के लोग कहते हैं--'आप इस व्यवस्था को कैसे समाप्त करेंगे।'...यह तो मानव के जन्म के साथ ही बंधी चली आ रही है।'.. तुम तो अर्थ के महत्व और अस्तित्व को ही नहीं मानते।'—आदि-आदि। ऐसे लोगों को में एक दीवार की तरह मानता हूं, जो एक इन्सान को दूसरे इन्सान से प्रेम करने से रोकती है। हमने

भला अर्थ के महत्व को कब नकारा है? प्रत्युत हम तो यहाँ तक कहते हैं कि अर्थ के बिना कोई भी आदमी (चाहे वह संन्यासी क्यों न हो) अपना जीवन निर्वाह नहीं कर सकता। पूंजीवादी व्यवस्था को हटाकर हम जिस व्यवस्था का निर्माण करना चाहते हैं उसमें धन का केन्द्रीकरण न होकर यथायोग्य वितरण होगा। सभी की मूलभूत आवश्यकताओं (Basic Needs) को पूरा करना समाज की जिम्मेदारी होगी। प्रत्येक को अपनी अपनी रूचि और योग्यता के अनुसार काम देने का काम समाज करेगा। प्रत्येक से उसकी सामर्थ्य के अनुसार लिया जायेगा तथा प्रत्येक को उसके काम के अनुसार दिया जाएगा या दूसरे [illegible] his capacitv and to each according to his work.' के सिद्धान्त पर अमल होगा। क्या ऐसी व्यवस्था के निर्माण के लिये हमें प्रयास नहीं करना चाहिये, जिसमें सबको "तुल्य (यथायोग्य) वस्त्र, खान-पान और आसन" दिये जायें तथा जिसमें गरीबी और अमीरी क्रमशः अकर्मण्यता और परिश्रम के कारण हों तथा सभी को अपना व्यक्तिगत विकास करते हुए समष्टि के उत्थान के लिए सोचने का पूरा-पूरा अवसर प्राप्त हो।

(पृष्ठ १२ का शेषांश)

रहा। तो फिर कौनसी और कैसी राजनीति की जाए? क्या यह मान लिया जाए कि राजसत्ता और सेना का राजनीति का कोई सम्बन्ध नहीं है। क्या तीनों अलग-अलग स्तम्भ नहीं है? जो शून्य में तैर रहे हैं? इतिहास की घटनायें इस बात की साक्षी है कि इनमें से कोई भी पक्ष शून्य में नहीं जीता, बल्कि उनका अस्तित्व ठोस परिस्थितियों पर टिका हुआ है। इतिहास के दौर में होने वाले सामाजिक परिवर्तनों और समाज में सक्रिय वर्गों का गहरा प्रभाव मनुष्य एवं उसके द्वारा निर्मित संस्थाओं व मूल्यों, राजसत्ता, सेना, संस्कृति, सभ्यता, धर्म, साहित्य व औद्योगिक इकाइयों पर पड़ता है। इस प्रक्रिया में भारत को अपवाद कैसे मान लिया जाए?

रक्षा उत्पादन

खैर! आज भारतीय सेना में दस लाख से भी अधिक जवान व अफसर हैं। १९४७ में यह संख्या सिर्फ तीन लाख थी। एक लाख रिजर्व फोर्स है। प्रादेशिक सेना में लगभग ४५ हजार व्यक्ति हैं। वायु सेना में लगभग ९२ हजार और जल सेना में लगभग ३० हजार व्यक्ति सीमा की रक्षा के लिए तैनात हैं। भारतीय सेना को आत्मनिर्भर बनाने के लिए अनेक कदम उठाए जा रहे हैं। प्रशिक्षण केन्द्र, अनुसंधानशालाओं की स्थापना तथा स्वदेशी रक्षा उत्पादन को प्रोत्साहन। पंचम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत रक्षा पर ९ हजार २६० करोड़ रु० व्यय किया जाएगा। वार्षिक बजट लगभग १६०० करोड़ रु० का है। २६० करोड़ सीमान्त मार्ग के लिए खर्च होंगे। ३१ अनुसंधान एवं वैज्ञानिक संस्थाओं में २००० वैज्ञानिक कार्यरत हैं। अनुसंधान कार्यों पर ७५-७६ तक ४७ करोड़ रु० व्यय किया जाएगा। ३० आर्डिनेंस फैक्ट्रियों में एक लाख ४० हजार कर्मचारी रक्षा उत्पादक में जुटे हुए हैं। रक्षा उत्पादन संस्थानों में २२७.४४ करोड़ रु० का उत्पादन (१९७२-७३) में रहा जबकि १९६१-६२ में यह उत्पादन दर ४० करोड़ रु० का था। इन संस्थानों में सैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ नागरिक उपभोग की वस्तुओं का भी उत्पादन होता है भारतीय शस्त्रों का आज अनेक देशों में निर्यात किया जा रहा है। हमारे यहां टैंक, विमान और नौ सैनिक मिग युद्ध पोत, राकेट आदि का निर्माण शुरू हो चुका है। इसके अलावा ढेर सारी सैन्य सामग्री है, जिसकी एक लम्बी फैरिश्त बन सकती है।

रक्षा बजट में तीव्र वृद्धि

वास्तव में आज विकासशील देशों में रक्षा बजट पर जितना व्यय किया जा रहा है, उतना पहले कभी नहीं किया गया था। एशिया और अफ्रीका में कुछ पिछड़े देश तो ऐसे हैं जो कि रक्षा कार्यों पर कुल राष्ट्रीय उत्पादन का एक बहुत बड़ा हिस्सा खर्च कर देते हैं। यहाँ तक कि औद्योगिक उत्पादन के स्थान पर सैन्य सामग्री को महत्व दिया जाता है। हम दूर क्यों जाए। हमारे पड़ौसी देश ईरान ने इस क्षेत्र में सभी पिछड़े देशों से बाजी मार ली है। १९७३ में सिर्फ ईरान ने तीस खरब डालर यानि २४५ खरब रु० के हथियार खरीदे। १९६० में ईरान कुल राष्ट्रीय उत्पादन का ४.४० प्रतिशत रक्षा कार्यों पर खर्च करता था, जबकि १९७१ में यह प्रतिशत ८.५ हो गया था। अब तो और भी बढ़ गया है। अर्जेन्टाइना, सऊदी अरेबिया, थाइलैंड, इजराइल, पाकिस्तान, कुवैत आदि की भी कमोबेश ईरान जैसी स्थिति रही है।

जहां तक भारत की स्थिति का प्रश्न है, उसमें भी कई गुना वृद्धि हुई है। १९३८-३९ में रक्षा बजट सिर्फ ४८ करोड़ रु० का था। १९४७-४८ में १८६ करोड़ रु०, २५३ करोड़ रु० (५७-५८), २८१ करोड़ रु० (६०-६१), ८८५ करोड़ रु० (६५-६६), ११०१ करोड़ रु० (६९-७०) और आज रक्षा बजट लगभग १६ सौ करोड़ रु० का है। कुल राष्ट्रीय उत्पादन की दर से रक्षा बजट का प्रतिशत इस प्रकार रहा। २.१ (६०-६१), ४.१ (६५-६६), ३.३ (६९-७०) और ३.८ (७३-७४)। वास्तव में रक्षा बजट की गति भारत-चीन संघर्ष के पश्चात तेजी से ऊपर की तरफ बढ़ी है। १९५० में बजट २ प्रतिशत था। और ६३-६४ में ४.५ रहा। यदि राष्ट्रीय बजट का सही विश्लेषण करें तो रक्षा का बजट का प्रतिशत बहुत बढ़ जाएगा। आमतौर पर सरकारें रक्षा बजट को कम करके देखती, है, ताकि जनता में राजसत्ता के विरूद्ध आक्रोश न फैले। देखा जाये तो हमारे यहां सेना के अलावा, सीमान्त सेना पर्वतीय सेना, प्रादेशिक सेना, सीमा सुरक्षा दल, केन्द्रीय सुरक्षा पुलिस पर जो खर्च होता है उसे भी रक्षा बजट के अन्तर्गत आना चहिए। और भी ऐसी कई चीजें हैं, जो शामिल नहीं की गई। (क्रमशः)

अट्ठावन करोड़ की आंखों से ओझल

पचास लाख नेत्रहीन

O सुषमा नैयर

अट्ठावन करोड़ के 'इस देश में ऐसे लोगों की गिनती पचास लाख से ज्यादा है जिनकी आंखें नहीं हैं। सूरदास होना हमारे यहां बिलकुल निकम्मे हो जाना है। गाना और गा–गा कर भीख मांगना ही एक धंधा है जो समाज इन्हें देता है। इसके अलावा अन्धों के लिए कोई धंधा हम ठीक नहीं मानते। हर नागरिक को समान अवसर के नाम पर हरिजनों और पिछड़ी जातियों के लिए जितना किया गया उतना भी अगर इन लोगों के लिए किया जाता तो आज इनमें से आधे लोग समाज के लिए उपयोगी काम कर सकते थे। इनकी समस्या को समझने और उसे हल करने की कोई कोशिश नहीं की गई। आजाद हिन्दुस्तान में तीन बार जनगणना हो चुकी है लेकिन आंकड़ों की पोथियों में अन्धों की संख्या का जिक्र नहीं है। बिना गिनती के हमारे योजनाकार इनके लिए कोई योजना कैसे बना सकते हैं?

आंख की रोशनी ज्यादातर चेचक और सही खाना न मिल पाने के कारण जाती है। विटामिन 'ए' की कमी इस का खास कारण हैं। इनमें अधिकतर लोग वे हैं जो विटामिन 'एम' के मारे हैं; यानी गरीब हैं। यों भी गरीबी इस देश में लोगों को भाग्यवादी बनाती है। अन्धों की तो बात ही अलग है। वे पूरी उम्र भीख मांग कर काट सकते हैं। समाज के धनी लोगों में दया और परोपकार की भावना 'भीख की संस्था' को बनाए हुए है। भीख मांगने वाले से देने वालों की संख्या इस 'धार्मिक' देश में कहीं अधिक है। आखों का चले जाना प्राकृतिक दुर्घटना है लेकिन इस कारण नेत्रहीन को निकम्मा और भिखारी होने पर मजबूर करना सामाजिक अन्याय है। दृष्टिहीन भीख मांगते हैं लेकिन भीख से उन्हें चिढ़ है।

आंखों का चले जाना शरीर की सिर्फ एक क्षमता का खत्म होना है। हाथ-पैर, दिल-दिमाग सभी दुरुस्त रहते हैं और मुसीबतों से हार न मानने की इच्छा तो दृष्टि हीनों में सामान्य से कुछ ज्यादा ही होती है। दृष्टिहीनों ने एम. ए. पी. एच. डी. तक की डिग्रियां हासिल की हैं। दिल्ली के एक मेडिकल कालेज के दृष्टिहीन प्रोफेसर ने कई आंखवालों को पढ़ा कर डाक्टर बनाया है। जिन्हें ट्रेनिंग लेने का मौका मिला वे अच्छे कारीगर साबित हुए हैं। विश्व विकलांग दिवस पर 'राष्ट्रपति पुरस्कार पाने वाले नेत्रहीन लोगों ने सनेत्र कारीगरों की तुलना में २० से ५० प्रतिशत तक ज्यादा उत्पादन किया है। लेकिन पचास लाख नेत्रहीनों में से कितनों को मौके मिलते हैं? एक-दो हजार अगर अपने पावों पर खड़े हो भी गए तो इससे नेत्रहीनों की समस्या नहीं सुलझती।

समस्या यह है कि समाज न तो नेत्रहीनों की सही काबलियत जानता है न उनके प्रति अपनी जिम्मेदारी समझता है। ट्रेनिंग लेकर एक नेत्रहीन किसी कारखानेदार के पास पहुंचता हैं। कारखानेदार उसकी काबलियत नहीं देखता, अन्धापन देखता है। 'मशीन पर हाथ-पैर काट लेगा। इसे रखना मुसीबत मोल लेना है।' नेत्रहीनों को मकान मालिक किराए पर घर तक नहीं देते। उन्हें डर लगता है कि नेत्रहीन घर में आग लगा देगा। यह सामाजिक दुराग्रह ही नेत्रहीनों के सम्मानजनक पुनर्वास में सबसे बड़ी रुकावट है।

आज के संसार में नेत्रहीन निकम्मा हो कर भार होने के लिए मजबूर नहीं हैं। नेत्रहीनों का पढ़ना, लिखना अब कोई समस्या नहीं है। उभरे हुए अक्षरों की ब्रेल लिपि के विकास ने अन्धों की शिक्षा को बहुत उभारा है। कुछ सरकारी स्कूल और समाज सेवी संस्थाएं अन्धों को पढ़ाने का काम कर रही हैं। कालेज की पढ़ाई के लिए भी सरकार अन्धों को छात्रवृत्ति देती है। लेकिन ब्रेल लिपि के छापाखानों की काफी कमी है, ब्रेल-किताबों और छात्रवृत्ति की राशि बहुत कम होने के बावजूद कई अन्धे पढ़ रहे हैं।

लेकिन जो ऊंचे पढ़-लिख जाते हैं वे भी समाज में घुल-मिल नहीं पाते। पहले दर्जे से हायर सेकण्डरी तक उनके स्कूल अलग होते हैं। यह अलग-थलग व्यवस्था उन्हें पढ़ाई के बाद भी सारी उम्र समाज से काट कर ही रखती है।

ऐसे अन्धे जो पढ-लिख नहीं पाते, किसी तरह का काम-धंधा सीख कर अपने पैरों पर खड़ा होना चाहते हैं। देहरादून में केन्द्रीय सरकार के अन्ध संस्थान, बम्बई में नेशनल एसोसिएशन फार द ब्लाइंड के प्रशिक्षण केन्द्र और दिल्ली में ब्लाइंड रिलीफ एसोसिएशन उन्हें कुर्सी बुनने, मोमबत्ती बनाने, हाथ करघे चलाने से लेकर बिजली से चलने वाली लेथ जैसी मशीनों पर काम करना सिखाती है। लेकिन केवल प्रशिक्षण देने भर से कुछ नहीं होता; सवाल

उन्हें रोजगार में लगाने की है। और फिलहाल इस संस्थाओं ने केवल प्रशिक्षण को ही अपनी जिम्मेदारी माना है।

अन्धों का एक तीसरा वर्ग भी है जो न तो पढ़ पाता है और न किसी तरह का काम-धन्धा ही सीख पाता है। ज्यादातर इसी वर्ग के अंधों से जो ढपली बजा कर भीख मांगते हुए रेल, बस, बाजार में मिल जाते हैं-आंख वाले परिचित होते हैं।

इन तीनों वर्गों के अन्धों के लिए सरकार और समाज क्या कर सकते हैं, यह अभी तय ही नहीं हो पाया है। अन्धों के लिए कुछ न कुछ कर रही समाजसेवी संस्थाओं से भी बाकी समाज और सरकार उतनी ही कटी हुई है जितनी कि अंधों से। पिछले दिनों दिल्ली में नैशनल ब्लाइंड रिलीफ ट्रस्ट ने अंधो और दूसरे विकलांगों को समाज और सरकार के कुछ बड़े लोगों के साथ एक 'मंगल मिलन समारोह के जरिये एक जगह इकट्ठा किया। समारोह में प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी भी उपस्थित थी, प्रधानमंत्री ने कहा कि विकलांगो और अंधो की समस्याएं हल करने में सरकार ज्यादा कुछ नहीं कर सकती, समाज को इनकी समस्याओं के मूल में जा कर इनके लिये काम करना होगा। अक्सर ऐसे मिलन समारोह सुझाव समारोह में बदल जाते है। बहुत ही सफल हुये तो समारोह को आयोजित करने वाली संस्था को भी अपना काम बढ़ाने के लिए थोड़ी-बहुत सरकारी मदद ही चरित्र बदल नहीं पाता।

इन लोगों के प्रति सरकार और समाज की क्या जिम्मेदारी है? अब तक विभिन्न सेवाओं में उनके लिए स्थान सुरक्षित नहीं किये गए हैं। कुछ शहरों, कस्बों में ऐसे उत्पादन केन्द्र भी स्थापित किए जा सकते है जिनमें अंधों को नियमित नौकरी मिले। अंधों और विकलांगो को रोजगार देने वाली छोटी-मोटी गैर सरकारी फैक्टरियों को कंट्रोल और टैक्स की कुछ सहुलियतें भी दी जा सकती हैं।

दिल्ली के नेशनल ब्लाईंड रिलीफ ट्रस्ट ने कुछ अलग ढ़ंग का रास्ता अपनाने की कोशिश की है। ट्रस्ट अंधो और विकलांगो को छोटे समूहो में बांट कर कुछ उद्योग धंधे खोल रहा है। इन उत्पादन केन्द्रों पर ही इनके रहने की व्यवस्था की जाएगी। ट्रस्ट ने कुछ अंधो और विकलांगो को खेती बाड़ी में लगाने की भी योजना बनाई है, लेकिन अभी उसे जमीन नहीं मिल सकी है। ट्रस्ट कालेज के अंधे छात्रों को ब्रेल कागज देगा जिसमें वे अपनी किताबे खुद तैयार कर पाएंगे।

अंधो और विकलांगो के बीच रोटी कपड़ा और मकान बाटना कत्तई जरूरी नही है. जरूरत है उन्हें उस जगह तक पहुंचना जहां वे अपनी रोटी और कपड़ा खुद कमा सकें। उन्हें रोटी नहीं रोटी कमाने का साधन चाहिए।

(शेषांश पृष्ठ १० का शेष)

मामले में केन्द्र को सरकारी वेश्यालय की संज्ञा दी, ना जाने कितनी युवतियों को कार्यक्रम देने की लालसा की आड़ में यौवन के भूखे आकाशवाणी के कर्मचारियों के आगे आत्मसमर्पण करना पड़ा है। आकाशवाणी के जालन्धर केन्द्र के भवन की दीवारें इस मामले में काले कारनामों की बात बोलती हैं। जब से युवा वाणी कार्यक्रम शुरू हुआ है तब से सैक्स के भूखे आकाशवाणी "तथाकथित बुद्धिजीवी" कर्मचारियों को अपनी भूख मिटाने के अधिक अवसर मिलने लगें हैं।

प्रशासनिक मामलों में धन का अपव्यय होता है। आकाशवाणी की सरकारी गाड़ियों का दुरुपयोग आम बात हो गई है। इस बारे में केन्द्र के ही एक कर्मचारी का कहना था कि केन्द्र के कुछ कर्मचारी सब कुछ खा गये हैं। अलबता वे केन्द्र की दीवारें नहीं खा सके क्योंकि वे सीमेंन्ट की बनीं थी।

कुछ मास पूर्व संस्कृत कार्यक्रम पंजाबी में प्रसारित करने का निर्णय लिया गया था। परन्तु एक बार ही यह प्रसारण हुआ उसके बाद यह बन्द सा ही हो गया। इससे पहले हिन्दी में संस्कृत कार्यक्रमों का बराबर प्रसारण होता था। एक अर्थ में पंजाबी में संस्कृत कार्यक्रमों का प्रसारण ठीक निर्णय था परन्तु इस कार्यक्रम के प्रसारण का दायित्व उन लोगों को दिया गया जिन्होंने अपने हिन्दी बैर के कारण इस कार्यक्रम को भी बटे खाते में डाल दिया।

परनिर्भरता और औद्योगिक जड़ता का खुला निमंत्रण

O रंजन चौधुरी

बात और काम में फर्क कांग्रेस सरकार का मूल चरित्र है। यह बात सरकारी गतिविधियों के हर क्षेत्र में समान रूप से लागू होती है। देश की जनता को भरमाने के लिए गलत आंकड़े और अनुमान भी पेश किए जाते हैं।

उदाहरण के लिए विदेशों से तकनीकी जानकारी के आयात का प्रश्न ही क्यों न लिया जाए। मन्त्री लोग जहाँ एक ओर लगातार यही बखान देते घूमते हैं कि विदेशी तकनीक पर हमारी निर्भरता कम होती जा रही है, वहीं सहयोग सन्धियों के मातहत जो घट रहा है, उसका मन्त्रियों के बखान से कोई मेल नहीं है।

१७ अगस्त के इकानामिक टाइम्स समेत अन्य कई अखबारों में रिजर्व बैंक आफ इण्डिया द्वारा किए गए एक अध्ययन का सारांश छपा है जिसमें १०६८ सन्धियों के अनुसार भारत में चल रही विदेशी सहयोग की ८७७ कम्पनियों के बारे में विचार किया गया है।

तकनीकी जानकारी के प्रश्न पर निर्भरता से छुटकारे के लिए यह जरूरी है कि देश में शोध अनुसंधान संस्थाओं को विकसित किया जाए। किन्तु यहां तो उल्टी गंगा बह रही है। खबर के अनुसार विदेशी सहयोग से बनी कम्पनियों में से सिर्फ एक तिहाई में शोध और विकास विभाग हैं। इसके अलावे इन कम्पनियों में नौकरी करने वाले लोगों में से सिर्फ २.१ प्रतिशत लोग ही ऐसे हैं जिन्हें सुशिक्षित पेशेवर कहा जा सकता है। ऊपर से विदेशी तकनीक को भारतीय ढाँचे में ढालने का कोई प्रयास ही नहीं किया जाता है।

रिपोर्ट में ऐसे कई उदाहरण गिनाए गये हैं जहाँ मामूली सी तकनीक को विदेशियों से आयात किया गया है क्योंकि यह तकनीक या तो विदेशी पूँजी के साथ ही आती है या किसी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के उदाहरण का ठप्पा लगी होती है। यहां पर हमेशा जल्दी से जल्दी मुनाफा बटोरने की भूख लगी रहती है, तकनीक में सुधार के लिए रुपये लगाने की ओर किसी की भी नजर नहीं पड़ती है।

१९६४ से १९७० के बीच के समय में इन विदेशी सहयोग की कम्पनियों में लाभाँश, रायल्टी, तकनीक-शुल्क, विदेशी तकनीशियनों को वेतन तथा विदेशी कर्ज की मदों में कुल २६२.३ करोड़ रुपए हमारे देश से बाहर भेजे हैं।

सिर्फ यही नहीं। कच्चे माल, मशीनों के कल-पुर्जे इत्यादि की मद में ये कम्पनियाँ जितना आयात करती हैं वह इसके निर्यात से काफी अधिक होता है। इसके फलस्वरूप १९६४ से १९७० के बीच के ६ वर्षों में कुल मिला कर ८९१ करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा हमारे देश के बाहर गई है जिसमें बाहर जाने वाला मुनाफा भी शामिल है। १९७०-७१ से १९७३-७४ के चार वर्षों में आयात की मात्रा में काफी अधिक वृद्धि हुई है। इसी दौरान विदेशी कर्जों के पुनर्भुगतान में, रायल्टी तथा तकनीकी शुल्क में धीरे-धीरे वृद्धि हुई है। निर्यात में भी कुछ वृद्धि जरूर हुई है।

यह है आत्मनिर्भरता हासिल करने के श्रीमती गांधी के प्रयासों का नमूना।

भारतीय वैज्ञानिक भी इस स्थिति से क्षुब्ध हैं। सी. एस. आई. आर. से सम्बद्ध वैज्ञानिक कार्यकर्ता ऐसोसियेशन ने हाल ही में अपनी वार्षिक सभा में तकनीक के आयात के प्रश्न पर कड़े शब्दों में एक प्रस्ताव पास किया है

(स्टेट्समैन, २३ अगस्त)

इस प्रस्ताव में कहा गया है कि "प्रायः समूचा भारतीय उद्योग विदेशी तकनीक तथा सामग्रियों पर आधारित है। यहाँ तक कि हल्का पेय पदार्थ 'च्विंग गम' तथा औरतों के पेटीकोट, साये आदि तक भी प्रायः विदेशी सहयोग से बनाए जा रहे हैं। हमारी कृषि भी हाल में मशीनीकरण, रासायनिक खाद तथा किटाणुनाशक औषधियों पर अधिक बल के कारण अन्ततः विदेशी सहायता पर निर्भर हो जाती है। भारतीय तकनीक का प्रयोग बिरले ही कहीं किया जाता है।"

कई शोध कार्यों से विदेशी सहयोग द्वारा पैदा की जा रही भीषण परिस्थितियों का पता चलता है। उन्हीं खोजों का उल्लेख करते हुए प्रस्ताव में कहा गया है कि विदेशी सहयोग के परिणाम स्वरूप न सिर्फ हमारे देश की अत्यधिक सम्पत्ति ही बाहर गयी है तथा हमारे उद्योग की अक्षमता ही बढ़ी है बल्कि इसने स्थानीय तकनीकी खोजों में

(शेषांश पृष्ठ १९ पर)

प्रातः जागरण

○ डा. धर्मवीर

आदरणीय पाठकों गत लेख द्वारा स्वास्थ्य क्या है इस पर कुछ पंक्तियां मैंने आपकी सेवा में उपस्थित की थी। अब स्वास्थ्य किस प्रकार से बनाए रखा जा सकता है। इस पर प्रकाश डाल रहा हूँ। यदि मनुष्य स्वास्थ्य की रक्षा करना चाहता है तो प्रातः ब्राह्म मूहर्त में उठे जैसा कि मनुस्मृति में कहा है:—

ब्राम्हे मुहर्ते वुध्येत धर्मार्थों चानुचिन्तयेत्।
काय क्लेशांश्च तन्मूलान् वेदतत्वार्थमेव च ।।

मनुस्मृति अ०४/६८

प्रातः दो घड़ी रात से उठे और धर्म अर्थ का चिन्तन करें। उसके उपार्जन के लिए शरीर क्लेशों को भी समझे और वेद तत्वार्थ को भी समझे।

महाराज मनु० ने उपरोक्त श्लोक कहकर प्रातः जागरण के महत्त्व को समझाया है। यही भाव अष्टांग हृदयकार महर्षि वाग्भट् ने निम्न श्लोक में कहे हैं:—

"ब्राम्हे मुहूर्त्त उत्तिष्ठेत्स्वस्थो रक्षार्थमायुषः।"

अ० हृ० सूत्रस्थान २/१

स्वस्थ पुरुष आयु की रक्षा के लिए ब्राह्म मुहूर्त में उठे- यहां ब्राह्म का अर्थ है ब्रह्म सम्बन्धि, ब्रह्म अर्थात् ज्ञान इससे सम्बन्धित मुहूर्त — प्रभातकाल अर्थात् ४ बजे का समय। इस समय बुद्धि-मन सब ताजे होते हैं - थकान मिटी होती है, अतः भोर में जो याद किया जाता है वह स्मरण रहता है। इसी से चरक में कहा है :—

'कल्यः कृतक्षणः प्रातरुत्थायोपव्यूषं कृत्वाऽऽवश्यकमुपस्पृश्योदकं ......
नमस्कृत्य समे शुचौ देशे सुखोपविष्टो मनः पुर;
सराभिर्वाग्भि सूत्रमनुक्रामन् पुनः पुनरावर्त्त्येद् बुद्धया सम्यगनुप्रविश्यार्थ तत्त्वम्'

चरक वि० अ० ८/७

कल्य (स्वस्थ) और कृतक्षण (सारे व्यापार को छोड़ अध्ययन के संकल्प वाले) छात्र प्रातः काल या उपव्यूष काल (कुछ रात्रि शेष रहे) में उठकर आवश्यक शौचादि क्रिया करने के बाद विद्वानों को नमस्कार करके समतल पवित्र स्थान में सुखपूर्वक बैठकर अपने दोष एवं त्रुटियों के दूर करने हेतु और दूसरे के दोष एवं त्रुटियों को जानने के लिए अर्थतत्त्व को भली प्रकार जाने।

प्रातः जागरण से होने वाले लाभों की ओर हम ध्यान दें तो हम उनको निम्न भागों में बाट सकते है।
१. धर्म लाभ, २ निरोग काया, ३. सारा दिन सुखद, ४. धन प्राप्ति, ५. ब्रह्मचर्य प्राप्ति।

धर्म लाभ

प्रातःकाल उठने से धर्म को प्राप्ति होती है। ब्राह्म मुहूर्त्त का नाम शास्त्रकारों ने अमृतवेला या देववेला भी दिया है। इस समय मस्तिष्क चिन्ताओं से रहित होता है। अतः स्वस्थचित्त हो मनुष्य, क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए यह विचार सकता है। इस प्रकार विचार करते हुए जो-२ अच्छे कर्म हैं जिनसे प्राणी मात्र का भला हो सकता है उनका निश्चय कर सकता है। वेद भगवान के शब्दों में धर्म की परिभाषा ऐसी ही दी गई है —

"यतो ऽ भ्युदयनिः श्रेयस सिद्धिस धर्म।

प्रातःकाल जागरणके समय भगवान की प्रार्थना करने से धार्मिक लाभ होता है अतैव प्रातःकाल के मन्त्रों का महर्षि दयानन्द जी ने अलग से संकलन किया है :—

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं ......एता भवेत आदि।

(यजुर्वेद अ० ३४ म० ३४/३८)

निरोग काया

अंग्रेजी की एक कहावत है जो महात्मा गाँधी जी प्रायः कहा करते थे :—

"Early to bed and early to rise makes a man healthy, wealthy and wise."

किन्तु आजकल के मेरे साथी देर से सोना व देर से उठना अपना धर्म समझते हैं। रात्रि को देर तक व्यर्थ की गप्प शप्प मारते और सिनेमा, नाच आदि देखते रहते हैं और परीक्षा के दिनों में पढ़ने के लिए देर तक जागते रहते हैं और फिर सूर्योदय के बहुत पीछे तक सोये पड़े रहते हैं। इसलिए सदैव रोगी पड़े रहते हैं। देर से सोने वाला और देर से उठने वाला मनुष्य कभी भी बुद्धिमान, स्वस्थ, ब्रह्मचारी और भाग्यवान नहीं हो सकता क्योंकि उसका तेज सूर्य द्वारा हर लिया जाता है। शरीर के प्रत्येक अवयव पर प्रातःकाल उठने का प्रभाव पड़ता है। आंखो को ही लीजिए उनमें चक्षुष्य शक्ति बढ़ती है, वाणी में मधुरता आती है, श्रोत्र व घ्राण शक्ति भी बढ़ती है।

सारा दिन सुखद

तेज तत्त्व की प्राप्ति होने से सारा दिन मनुष्य का सुखमय बीतता है। आलस्य भागता है, काम में स्फूर्ति आती है इसलिए महापुरुष प्रातः काल ही उठते थे। किसी भी देशी या विदेशी महापुरुष का जीवन उठा कर देख लिजिए वे प्रातः काल उठते थे - महर्षि दयानन्द, विवेकानन्द, टैगोर, महात्मा गाँधी, प्लूटो, अरस्तू, नेपोलियन बोनापार्ट सब प्रातःकाल उठते थे। अंग्रेजी में कहावत है :—

"Well begun is half done"

धन प्राप्ति

प्रातः काल उठने से दिन की कार्य शक्ति बढ़ जाती है। जब कार्य का समय बढ़ेगा तो उसके बदले में प्राप्त होने वाला धन स्वयं बढ़ जाएगा।

ब्रह्मचर्य प्राप्ति

प्रात: ४ वजे के बाद के समय में ही प्राय: स्वप्न आया करते हैं। इसी स्वप्नावस्था में स्वप्नदोष सम्बन्धी रोग हुआ करता है। प्रातःकाल उठने से स्वप्नदोष जैसे भयंकर रोग से बच कर, वीर्य की रक्षा की जा सकती हैं। वीर्य की रक्षा करने से ब्रह्मचर्य की साधना होती है। ४ बजे मनुष्य को उठने के लिए सांयकाल १० बजे तक सो जाना चाहिए।

नियमित प्रातःकाल जागरण से शरीर स्वस्थ रहता है गीता में श्रीकृष्ण महाराज ने भी कहा भी है :—

युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु।
मुक्त स्वप्न बोधस्य योगो भवति दुःखहा॥

गीता अ० ६

युवको को चाहिए कि सामाजिक परिवर्तन करने के लिए सवेरे उठें, दरिद्रता, आलस्य, त्यागें तभी देश के ढांचे में परिवर्तन लाया जा सकता है।

"उत्तिष्ठत जाग्रत" उठो व जागों देखो सवेरा हो गया है, चिड़ियां चह-चहाने लगी, मूर्गा बाँग दे रहा हैं। मन्दिर का पुजारी, मस्जिद का मौलवी गा रहा है। उठ, आँख खोल, अच्छे बुरे को पहचान, यह समय सोने का नहीं जागने का है। ★

श्री मस्तनाथ आयुर्वेद महाविद्यालय
अस्थल बोहर, रोहतक

(शेषांश पृष्ठ ८ का)

...ठान तो किया ही, पर शुद्धि का पुण्ययज्ञ ऐसा किया, जिसमें उन्होंने आहुति दे दी। २३ दिसम्बर सन् १९२६ में एक धर्मान्ध मुस्लिम युवक अब्दुल रसीद ने स्वामी जी को तीन गोलियों का निशाना बनाकर शहीद कर दिया। देश के एक ऐसे सपूत, कर्मनिष्ठ और महापुरुष स्वामी श्रद्धानन्द जी के मृत्यु-संवाद से देश में हा-हाकार होना स्वाभाविक ही था।

भारत के चोटी के नेताओं ने स्वामी जी को शोक सन्तप्त हृदय से श्रद्धाजंलियां अर्पित की। लाला लाजपतराय ने सिर झुकाते हुए कहा— ऐसी इज्जत की मौत मुझे कहां नसीब हो सकती है। महात्मा गांधी ने कहा — यह शानदार जिन्दगी का शानदार अंजाम है। काश ! मुझे भी ऐसी शानदार मौत नसीब हो। राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने ये शब्द कहे "भारत के आधुनिक इतिहास में स्वामी जी का स्थान पथ-प्रदर्शक का बन गया है। जिनको स्वामी श्रद्धानन्द को देखने का साक्षात सौभाग्य प्राप्त न हुआ हो, उनको स्वामी जी का जीवन वृत्तान्त पढ़कर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होना चाहिए।" ★

(शेषांश पृष्ठ १७ का)

...ल तथा स्वदेशी तकनीक के इस्तेमाल किये जाने पर एक शक्तिशाली प्रतिबन्धक के रूप में भी काम किया है।

प्रस्ताव में ही आगे कहा गया है कि आत्मनिर्भरता एक ठोस नीति के बिना वैज्ञानिक शोध राष्ट्रीय विकास में कोई योगदान नहीं कर सकता है। विज्ञान को स्पष्ट दिशा तथा राजनैतिक चयन देना होगा। हमें अधिक पूंजीवाले बारीक कलपुर्जो का केन्द्रीभूत उद्योग नहीं चाहिए, हमें श्रम पर मूल रूप से आधारित व्यापक पैमाने पर छितरा हुआ लघु उद्योग चाहिए।

इसी दौरान, छूट देने की सरकारी नीति के कारण सहयोग सन्धियों की संख्या बढ़ने लग गई है। १९७२ में जहाँ ऐसी कुल २५७ संधियों को अनुमोदित किया गया था वहीं १९७३ में २६५ तथा १९७४ के इस मात्र ६ महीनों में २२६ सन्धियाँ अनुमोदित की जा चुकी है इसमें डा० किसिंगर की दिल्ली यात्रा के दौरान हुई संधिया नहीं सम्मिलित है। ★

शोक समाचार

दिनांक ११-१२-७४ दिन बुधवार को आर्य युवक परिषद, खन्ना की ओर से शोक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया गया कि हमारे एक कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री कैलाश चन्द्र की बड़ी बहन की अचानक मृत्यु १०-१२-७४ को अम्बाला में हो गई। परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि स्वर्गीय की आत्मा को शान्ति प्रदान करें और शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

112400

(शेषांश पृष्ठ ६ का)

प्राणों की आहुति दे डाली। गुलामी के विरुद्ध जनाक्रोश का ही प्रभाव था कि, देश भक्तों ने कहा,

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है.,
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।

सामान्य जन-आक्रोश से अभिप्राय उस भावना के उदय से है जिससे समस्त समाज प्रभावित, व एक जुट हो कर तथा कथित वस्तु के विरुद्ध खड़ा हो जाता है। सामाजिक चेतना का यह असर उस अंग को धरती में ही मिला कर रहता है चाहे वह कुछ भी क्यों न हो। रूस में जारशाहों के विरूद्ध जनवादी विचारों का प्रभाव, जार प्रशासन को खत्म करके ही रहा। अमेरिका के राष्ट्रपति रिचर्डनिक्सन के विरुद्ध गुप्त रूप से विरोधी दल की सूचनाएँ एकत्रित करने के विरोध में उसके ही दल में निक्सन के प्रति घृणा का फैलाव हुआ जिसके कारण निक्सन को पद से चलता कर दिया गया क्योंकि राष्ट्रपति पद पर आसीन होते हुए, पद की प्रतिष्ठा को ताक पर रख कर रिचर्ड निक्सन ने झूठी गवाही दी तो फिर क्या था, अन्तरात्मा की आवाज पर उसके ही साथियों ने निक्सन को राष्ट्रपति पद पर देखना नही चाहा।

मगर हमारे राजनीतिज्ञ बड़ी ही ईमानदारी से जनता के सामने पेश आने की हिम्मत किसी और ही ढ़ंग से करते है। नवनिर्वाचित वर्तमान राष्ट्पति से जब उन की सम्पत्ति का ब्योरा मांगा गया तो पार्टी के निर्देश पर उन्होंने टाल देना भी चाहा परन्तु विपक्षी आक्रोश प्रबल होता चला गया और राष्ट्रपति को आखिर उसका विवरण देना ही पड़ा। खैर राजनीतिज्ञों के अपने ही दांव-पेच होते हैं। वर्तमान में ही संसद में आयात लाइसेंस कांड का मामला उठाया गया। विपक्षी सदस्यों का क्रोध इतना उग्र हुआ कि एक सदस्य को लोक सभा के अध्यक्ष मंच तक जा धमकने की नौबत आ पहुंची ! कांड से सम्बन्धित संसद सदस्य तुल मोहनराम ने अपनी सफाई पेश करते हुए अंग्रेजी न जानने का सबूत जकड़ना चाहा कि जो कागज-पत्र हस्ताक्षरों के लिये उसके सामने पेश किये गये थे अंग्रेजी-लिपि में होने के कारण उसके लिये समझ से बाहर थे मगर फिर भी महाशय जी ने हस्ताक्षर अंग्रेजी में ही किये। आखिर इन स्कैंडलो का जन साधारण पर क्या प्रभाव पड़ेगा, कि गलती तो की ही मगर सफाई देने का भी अंग्रेजी भाषा में हस्ताक्षर करते हुए भी अंग्रेजी से हीं अज्ञानीपन ? क्या इन बातों का योगदान आक्रोश को तीव्र रूप नहीं प्रदान करता ?

लोकतन्त्रात्मक ढांचे में जब भी कभी जनसाधारण श्रमिक वर्ग, और देश के पहरेदार देशभक्त व किसान-मजदूर का उठता दिलोत्साह "मीसा, डी० आई० आर०, पी० डी० ए० के माध्यम से कुचल दिया जाता है तो [illegible] के दिन नजदीक आ जाते हैं, समझ लेना चाहिए। इसी भभक का ताजा उदाहरण, जयप्रकाश नारायण का आन्दोलन भी देखा जा सकता है। आजादी के दिवाने जो सपने लिए थे वे अधूरे ही नहीं बल्कि पथ भ्रष्ट हो चुके हैं। लगातार संस्कृति का विनाश, नैतिकता का गिराव भूखमरी का प्रभाव, मौलिक अधिकारों का अभाव और बेरोजगारी का लगातार बढ़ना एक क्रान्ति का सूत्रपात नहीं तो और क्या है ? आये दिन कर्मचारी हड़ताल करते है, उद्योगों में ताला बन्दी रहती हैं, चारो तरफ घोर रिश्वत खोरी, भाई भतीजावाद के सितारे ही नजर आते हैं। आखिर देश में न्याय, कानून और नैतिकता का इतना घोर अभाव ? आर्थिक एवं राजनैतिक स्वार्थपरता का बोलबाला, जिस कारण लोगों में स्वदेशी होने में भी शर्म का अनुभव हो क्या उसके परिणाम अच्छे निकलने की आशा की जा सकती है ?

आज भूख से तड़पता समाज, आर्थिक विनाश के कुचक्र में पिसता श्रमिक, देश को खिलाने वाला कृषक इस समाजवादी व्यवस्था की और से क्या - २ आशाएँ लगा रहा था ? मगर अव्यवस्था के कोहरे ने सब कुछ धूमिल कर दिया हैं। जो प्रसाद का निर्माण करे वही छाया के लिए तरसता फिरे ? जो पैदा करे वही भूखा मरे ? जो सहारा दे उसी की पीठ में छुरा घोंपा जाए ? आखिर यह अन्याय नहीं, तो क्या है।

आज देश का हर छात्र शिक्षा पाकर भी भिखारी बने ; दूसरों के आगे हाथ पसारे ! मैकालै पद्धति का ही तो परिणाम है। क्या हुआ अंग्रेज चले गए तो, विरासत में मिली अंग्रेजियत तो काले अंग्रेजों के पास सुरक्षित है।

प्रतिशोधक उत्तेजना उखाड़, फैंकने की शक्ति, मौलिकता बनाए रखने की भावना इत्यादि क्रान्ति का सूत्रपात तो हो चुका है, बस इस जनाक्रोश को जन-समर्थन में बदलने की ही देरी है। क्या नकली समाजवाद को असली वैदिक समाजवाद में बदला जा सकेगा ? आधुनिक लोचड़ व्यवस्था को बदल स्वच्छ, निर्मल, जनवादी व वैदिक व्यवस्था की स्थापना करनी होगी।

★

जाट कालिज, रोहतक

समाचार दर्शन

आर्य समाज मोती चौक रेवाड़ी का
तृतीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

रेवाड़ी। विगत दि० ३०-११-७४ एवम् १-१२-७४ को आर्य समाज मोती चौक, रेवाड़ी का तृतीय वार्षिक उत्सव बड़े ही धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। उत्सव की अध्यक्षता पू० स्वामी सन्तोषानन्द जी ने की। उत्सव का आरम्भ प्रातः ८ बजे से यज्ञ एवम् ध्वजारोहण से हुआ। इस अवसर पर दि० ३०-११-७४ को नगर में बैण्ड बाजों के साथ शोभा-यात्रा निकली जिसमें रेवाड़ी क्षेत्र के तथा स्थानीय आर्य नर-नारियों ने बहुत बड़ी संख्या में भाग लिया। शोभा-यात्रा का नेतृत्व ११४ वर्षीय पू० स्वामी भीष्म जी महाराज ने किया।

इसके पश्चात् अपराह्न गोरक्षा सम्मेलन आरम्भ हुआ जिसमें आचार्य श्री जैमिनी, पं० धर्मवीर जी शास्त्री, श्री सत्यप्रिय शास्त्री आदि विद्वान वक्ताओं ने गो-रक्षा के महत्त्व पर विशेष प्रकाश डाला। पू० स्वामी भीष्म जी महाराज ने कहा कि गो रक्षा तभी सम्भव हो सकती है, जब सभी आर्य सुसंगठित होकर शक्तिशाली बनेंगे। इस अवसर पर प्रसिद्ध भजनोपदेशक खेमसिंह, एवं प० ताराचन्द जीवैदिक तोप आदि ने क्रान्तिकारी भजन गाये। मंच का संचालन स्वामी शक्तिवेश जी ने किया।

दिनांक १-१२-७४ को प्रातः ८ बजे यज्ञ के पश्चात् आर्य-सम्मेलन हुआ, जिसमें पं० धर्मवीर जी शास्त्री ने आर्यत्व की व्याख्या की तथा श्री मोहन लाल जी पथिक ने भजन गाये। इस अवसर पर आर्य समाज मोती चौक रेवाड़ी द्वारा अल्प मूल्यों में सत्यार्थ–प्रकाश का वितरण किया गया।

अपराह्न २ बजे बहन मोहिनी देवी की अध्यक्षता में आर्य-महिला- सम्मेलन आरम्भ हुआ जिसमें, माता लीलावती देवी ने आज के युग में नारी जाति के अपमान का उल्लेख करते हुए बताया कि आज के मानव ने नारी को विज्ञापन सामग्री बना कर रख दिया है। अनेकों नग्न एवं अर्धनग्न चित्रों द्वारा अंगों-प्रत्यङ्गों का अभद्र प्रदर्शन करके मातृशक्ति का घोर अपमान किया जाता है। अतः हम सब को एक जुट होकर इसका घोर विरोध करना चाहिए। सम्मेलन ने यह मांग की कि भारत सरकार एवं हरियाणा सरकार ऐसे चित्रों, प्रदर्शनों और विज्ञापनों पर अविलम्ब रोक लगाये तथा ऐसे कार्य करने वालों को दण्ड दे।

महिला- सम्मेलन के ठीक पश्चात् सांय ५ बजे के लगभग पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी पधारे, जिन्होंने समाज की आवश्यकताओं एवं भावी कार्यक्रमों की चर्चा की।

इसके पश्चात् स्वामी शक्तिवेश जी की देख-रेख में आर्य-राष्ट्र सम्मेलन आरम्भ हुआ, जिसमें सरकार से यह मांग की गई कि सरकार शराब के ठेकों को बन्द करे। आर्य राष्ट्र सम्मेलन ने देश में चल रहे श्री जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन का समर्थन किया। इसके पश्चात् देश में व्याप्त भ्रष्टाचार को मिटाने हेतु आर्य राष्ट्र बनाने की शीघ्र आवश्यकता पर विशेष बल दिया। ★

राजौन्द का बी० डी० ओ० मजदूरों का १५१० रु० डकार गया

जिला जीन्द ब्लाक राजौन्द के बी. डी. ओ. श्री शोराब सिंह ने ४० मजदूरों द्वारा कार्यालय के प्रांगण में मिट्टी डलवाने की मजदूरी जो कि मुबलिग १५१० रुपए बनती है, हजम कर ली। जब मजदूर अपनी मजदूरी लेने जाते हैं तो उन्हें धक्के मार कर कार्यालय से बाहर कर दिया जाता है।

गत माह मजदूरों का एक प्रतिनिधि मण्डल श्री वेद प्रकाश, मन्त्री आर्य सभा जिला जीन्द की अध्यक्षता में बी० डी० ओ० से मिला तो वह अत्यन्त अभद्र व्यवहार के साथ पेश आया। श्री वेदप्रकाश ने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि मजदूरों को पूरी मजदूरी न दी गई तो इसके गम्भीर परिणाम निकल सकते हैं जिसकी सारी जिम्मेदारी स्वयं बी० डी० ओ० पर होगी। इस घटना से सारे इलाके के मजदूरों में अत्यन्त रोष पाया जाता है। ★

उत्तर प्रदेश आर्य सभा के महा मंत्री श्री राजपाल आर्य द्वारा:-
सरकार की नीतियों पर कटाक्ष

आज दिनांक ६-१२-७४ को मु० नगर में आर्य सभा के कार्यकर्त्ताओं की एक सभा में श्री राजपाल आर्य (महाममंत्री उत्तरप्रदेश आर्य सभा) ने सम्बोधित करते हुए कहा है कि विश्व पूँजीवादी व्यवस्था एक ऐसे जबर्दस्त आर्थिक संकट में फँसी हुई है जो अस्तित्व के लिए खतरा बन गया है। इसकी चपेट में आज हमारा अविकसित पूँजी-

वादी देश भारतवर्ष भी भीषण खाद्यान एवं आर्थिक संकट से गुजर रहा है। देश के अर्थतन्त्र का दिवाला ही निकल गया हैं। विदेशी कर्जे का भार प्रति व्यक्ति बढ़ता जा रहा है। भारत सरकार की नीतियों का दुःखद परिणाम करोड़ों लोग भोग रहे है। बंगाल, उड़ीसा, पूर्वीउत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान की स्थिति भी अब गम्भीर रूप धारण कर चुकी है। भूखमरी से मौत की खबरें प्रत्येक ओर से आ रही हैं। देश की वर्ग विषमता के परिणाम स्वरूप एक ओर स्वाधीन भारत में करोड़ों इन्सान बेघरबार, दाने दाने के मोहताज है तो दूसरी ओर शानदार दावतों के दौर चाहे वह विवाह के कारण हो, पुत्र जन्म के नाम पर हो, चुनाव में सफलता के कारण हो इत्यादि जारी है। अधिकांशतः इन दावतों में तस्करी, टैक्स चोरी, मिलावट, जखीरेबाजी के विशाल काले धन को सफेद बनाया जाता है। करोड़ो रुपया सामाजिक प्रतिष्ठा पाने के लिए इन दावतों में पानी की तरह बहाया जाता है। प्रत्येक वर्ष तस्करी से अनुमानतः ८०० से लेकर १२०० करोड़ रूपये तक की विदेशी मुद्रा की राष्ट्रीय क्षति होती है। प्रति दिन इस क्षति में अबाध गति से वृद्धि होती जा रही है। आज तस्करी के अन्दर युसुफ पटेल, हाजी मस्तान, शुक्रनारायण बखिया जैसे नामी तस्कर पकड़े गये हैं। परन्तु क्या तस्करों के साझीदार बड़े सरकारी अधिकारियों और सत्तारूढ़ दल के खद्दरधारी मंत्रियों को भी इन मगर मच्छों के साथ जेल में डाल कर भंडा फोड़ हुआ है। यदि हुआ होता तो हमेशा के लिए इन समाज के ठेकेदारों की अक्ल ठिकाने आ जाती। यदि आज भी बड़े अधिकारियों के घरों की तलाशी ली जाए तो अधिकांश के यहाँ लाखों रुपये का तस्करी का माल बरामद हो सकता है। जब तक शोषण पर आधारित वर्तमान पूंजीवादी समाज व्यवस्था एवं सत्ता विद्यमान है तब तक तस्करी काला बाजारी, मिलावट आदि सामाजिक रोग विद्यमान रहेंगे। अतः अब आमूल-चूल परिवर्तन द्वारा वर्तमान व्यवस्था को बदल कर वैदिक समाजवादी व्यवस्था लाने में हो जनता का त्राण है।

उन्होंने आगे कहा कि कुछ अपने को प्रगतिशील कहलाने वाले दल श्री जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन को प्रतिक्रान्तिकारी कह कर जनता को गुमराह करने की कोशिश कर रहे है। परन्तु उनकी ऐसी धारणा प्रतिगामिता की द्योतक है। आज जब सारा देश भ्रष्टाचार, अनाचार तथा सामाजिक विषमता की अग्नि में जल रहा हो तो ऐसे समय में जयप्रकाश नारायण द्वारा भ्रष्टाचार के खिलाफ आन्दोलन प्रतिक्रान्ति का नहीं बल्कि क्रान्तिकारी सम्भावनाओं से परिपूर्ण जनान्दोलन है जिसका संबन्ध वर्तमान भ्रष्टाचार पर आधारित व्यवस्था को आमूल चूल परिवर्तन द्वारा बदलना है। अतः हमें इस भ्रष्ट कुशासन के विरुद्ध संघर्षरत हो जाना चाहिए। ★

गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल का दशम वार्षिकोत्सव सम्पन्न

२५ नवम्बर से २९ नवम्बर तक आयोजित गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल का दशम वार्षिक महोत्सव उमंग और उत्साह के वातावरण में सानन्द निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

२५ से २७ नवम्बर तक योग साधना शिविर का कार्यक्रम निरन्तर चला जिसमें अनेक योग जिज्ञासुओं ने योगासन, प्राणायाम और ध्यान की प्रक्रियाओं का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन जनता का विशेष आकर्षण बना। २० हजार से अधिक जनता, ब्रह्मचारियों द्वारा छः सूत का लोहे का सरिया गले से मोड़ना, कांच पीसना, जजीर तोड़ना, मोंगरी घुमाना आदि प्रदर्शन देख कर उत्साहित हुई।

पण्डाल में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, आचार्य गुरुकुल झज्जर, स्वामी वेदानन्दजी, व ब्र० कृष्णदत्त जी के व्याख्यान विशेष उल्लेखनीय हैं। पण्डाल की अध्यक्षता ब्र० बलदेव जी नैष्ठिक कर रहे थे। इस समारोह में श्री धीरसिंह शास्त्री, श्री प्रेमपालसिंह प्रेम आचार्य, प्रो० जयदेव जी, श्री नन्दराम एम० एल० ए०, श्री योगेन्द्र नारायण माथुर जिलाधीश मुजफ्फरनगर आदि अनेक गण्य मान्य व्यक्तियों ने भी भाग लिया।

२५ से २९ नवम्बर तक ऋग्वेद से महायज्ञ हुआ जिसकी पूर्णाहुति २९ नवम्बर को हुई। पूर्णाहुति का दृश्य बहुत ही आकर्षक था। यज्ञ के ब्रह्मा ब्र० बलदेव जी नैष्ठिक के आह्वान पर उपस्थित विशाल जनसमूह दुर्गुण दुर्व्यसन आदि बुराइयों को छोड़कर सद्गुण ग्रहण करने की आहुति पूर्वक प्रतिज्ञायें ले रहा था। इस तरह महोत्सव अत्यन्त उत्साहजनक एवं प्रेरणादायक ढंग से सम्पन्न हुआ। ★

प्रा० बसन्तराव जगताप अध्यक्ष बने

लातूर। ३, ४, ५ नवम्बर को लातूर सम्मेलन में युवक परिषद् की बैठक हुई जिसमें आगामी वर्ष के लिए प्रा० बसन्तराव जगताप को सर्वसम्मति से अध्यक्ष घोषित किया गया तथा युवा नेता प्रदीप देशमुख ने सरचिटणीस पद का भार सम्भाल लिया। अन्य पद के अधिकारी इस प्रकार हैं:—

प्रचार सचिव- ब्र० विजय म० कुलकर्णी ककंब, सम्पर्क सचिव- श्री चौधरी अम्बाजोगाई, आन्दोलन सचिव- ब्र. शिवाजी शिन्दे वाशी, कोष सचिव- श्री सुभाष वेदपाठक, औरंगाबाद, उप सचिव- प्रा० श्री कुशलदेव शास्त्री नांदेड, उपाध्यक्ष- श्री ब्र० सुभाष निम्बालखर निलंगा, कार्यवाह- श्री जयप्रकाश माने लातूर।

प्रस्तुत पदाधिकारियों के साथ २५ सदस्यों की कार्यकारणी सभा कार्य करेगी। मार्ग दर्शनका काम आचार्य हरिश्चन्द्र गुरु जी तथा श्री ढेपे करेंगे। ★

निर्माण दिवस सम्पन्न

हरयाणा निर्माण दिवस एवम् हरियाणा मित्र मंडल निर्माण दिवस षणमुखानन्द हाल में बड़ी धूम-धाम से मनाया गया । इसमें तीन हजार सिटें हैं । मगर फिर भी जनता के उमड़े हुये भाव को रोकते हुए दरवाजों पर एवम् गैलरी में जनता जनार्दन को बैठाना पड़ा । यह जनता का अपूर्व प्यार था । जनता ने हमें जो स्नेह दिया है उसके लिये मंडल के अध्यक्ष श्री सत्य प्रकाश जी आर्य ने जनता का सम्मान करते हुए क्षमा याचना की । इस समारोह के मुख्य अतिथि सेठ श्री चन्दूलाल जी आर्य (गुरेरे वाले) जयभारत टैक्सटाईल मिल्स अहमदाबाद के डायरेक्टर थे । श्री महावीर जी अधिकारी (सम्पादक नवभारत टाईम्स बम्बई), श्री रामराव अदिम एवम् हंसराज जी मुगंरा, श्री सेठ किशोरी लाल जी अग्रवाल (आर० प्यारेलाल प्रा० लि०), श्री बालकराम अग्रवाल (बालकराम विनोद कुमार), श्री नन्दलाल जी केजरीवाला (गुलराज नन्दलाल) एवम् श्री श्यामसुन्दर जी पंसारी (श्री पंसारी टैक्सटाईल बम्बई), आदि अन्य सभी अतिथि महानुभावों का सर्व प्रथम मण्डल के अध्यक्ष श्री सत्यप्रकाश जी आर्य ने पुष्पहार से स्वागत किया । इसके बाद हरियाणा से आये हुए कवि पंडित श्री ओमप्रकाश जी शर्मा ने मुख्य अतिथि के सम्मान में एक हरियानवी भाषा में स्वागत गीत सुनाया ।

मण्डल के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री शिवकुमार जी ने सभी अतिथियों का जीवन परिचय कराया तथा सेठ श्री चन्दूलाल जी आर्य को महान दानवीर एवम् समाज सेवी, त्यागमूर्ति बतलाते हुए उनके सम्मान में मानपत्र जनता को पढ़कर सुनाया और मण्डल के अध्यक्ष ने माननीय अतिथि को मानपत्र भेंट किया । उसके बाद माननीय मुख्य अतिथि ने मण्डल की गतिविधियों की सराहना करते हुए कहा यदि मण्डल विधवा बहनों की विवाह की व उनके जीवन की सुचारुरूप से प्रबन्ध करे तो मै समझ सकता हूं कि मण्डल का नाम समस्त भारत में अग्रणी रहेगा । मुख्य अतिथि ने कहा कि हम हरियाणा के बासिन्दे हैं। हमारे हरयाणा में कोई भी विधवा बहन नहीं मिलेगी । इसी प्रकार से समस्त भारत में कोई भी विधवा बहन नहीं रहनी चाहिए । इसके बाद श्री महावीर जी अधिकारी ने कहा कि इस समारोह में मैं नया नहीं हूं । हरियाणा समाज से मेरा सम्बन्ध घर जैसा हो गया है । सभी अतिथियों ने मण्डल की सराहना की । मण्डल के महामन्त्री श्री धनपतराय जी गुप्ता ने मण्डल की गति-विधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आने वाले समय में हमें बहुत से कार्य करने हैं और करके रहेंगे ही । आज मण्डल एक बहुत बड़ा नगर बसाने जा रहा है। जिसकी बुकिंग चालू हो चुकी है । अध्यक्ष ने सन्देश देते हुए कहा कि मैं हरयाणा छोड़ सकता हूँ और मण्डल को छोड़ सकता हूं मगर मित्रों को किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ सकता (इन शब्दों के अर्थ से हरयाणा मित्र मण्डल होसकता है) । मंडल के वरिष्ठ नेता एवम् ट्रस्टी श्री रामरिछपाल जी अग्रवाल ने कहा जैसा जनता का सहयोग आज मिला हैं इसी प्रकार का यदि जनता का सहयोग मिलता रहा तो मैं दावे से कह सकता हूँ कि मण्डल बम्बई की नहीं अपितु भारत की एक आदर्श संस्था बन सकती है । मुख्य अतिथि ने ११ हजार रुपयों का दान मण्डल को देने की घोषणा की । इसी समय श्री सेठ लक्ष्मीनारायण जी बासीनाका बम्बई, ने भी ११०० रु० देने की घोषणा की । इस समारोह में श्री योगेन्द्र देसाई कृत 'परिवर्तन' नाटक को जनता के सामने प्रस्तुत किया गया । अन्त में श्री शिवकुमार चौधरी ने आये हुए अतिथि और जनता जनार्दन को धन्यवाद देते हुए सभी का आभार प्रकट किया । ★

श्री करतार सिंह जी बंसीलाल की तानाशाही के शिकार

हरयाणा किसान मजदूर सभा के संयोजक गंगाराम एडवोकेट ने श्री करतारसिंह जी महामन्त्री दिल्ली शिक्षक संघ की गोहाना पुलिस द्वारा गैरकानूनी गिरफ्तारी की घोर निन्दा की और इसे गैर प्रजातांत्रिक बताया । गंगाराम ने बताया कि दिनांक २२-१२-७४ हरयाणा शिक्षक संघ का जलसा माननीय सोहनलाल जी की अध्यक्षता में हो रहा था, जैसे ही करतार सिंह जी बस से उतर कर जलशा में जाने लगे उन्हें पुलिस ने धारा १०७/१५१ Cr.P.C. में गिरफ्फतार कर लिया । गंगाराम ने बताया कि रात्रि को करतारसिंह जी को कम्बल तक नहीं दिये गये । गंगाराम जी ने ऐलान किया है कि इस गिरफ्तारी के विरोध में तथा गोहाना पुलिस के भ्रष्टाचार के विरोध जनसंघर्ष समिति जि० सोनीपत, जनवरी के प्रथम सप्ताह में भारी प्रदर्शन व (रैली) का आयोजन करेंगे । गंगाराम ने मांग की हैं कि करतारसिंह जी पर बनाया गया मुकदमा वापिस लिया जाए । गंगाराम ने सरकार पर आरोप लगाया है कि वह शान्तपूर्ण अध्यापकों को हड़ताल करने पर मजबूर न करे ।

पंजीयन क्रमांक RTK 28
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

राजधर्म
रोहतक
२७ दिसम्बर १९७४

राजधर्म प्रकाशन के लिए ... मुद्रित एवं मुद्रित। फोन। ८८२